# भोजपुरी हिन्दी शब्दकोश

भोजपुरी लोकोक्ति-मुहावरा-पहेली सहित

डॉ० अर्जुन तिवारी

अपने देश में बेलाग धरती राग ही पाञ्चजन्य का उद्घोष है जहाँ रसराज 'लोकरस' प्रतिष्ठित है। 'रामचरित जे सुनत अघाहीं' जैसी भोजपुरी में चोट करने वाली जीवन्तता है तभी तो तुलसीदास को 'इहां कोहड़ बतिया कोउ नाहीं' लिखना पड़ा। वस्तुतः भोजपुरी में प्यार का प्रकाश है, ज्ञान की सम्पदा है जिसमें असीम शब्द सौन्दर्य है। दिव्य विश्व भाषा हिन्दी को समृद्ध बनाने वाली भोजपुरी के आकर ग्रन्थ के रूप में उपस्थापित यह शब्दकोश एक महनीय प्रयास है। शब्दकोश ऐसा ग्रन्थ है जिसमें शब्दों, घटनाओं का प्रामाणिक विवेचन होता है जिससे ग्रन्थादि के प्रणयन में सहायता मिलती है। इसे सन्दर्भ ग्रन्थ (बुक्स आफ रेफरेन्स) कहना समीचीन है।

प्रस्तुत शब्दकोश में शब्दों के वर्ण-विन्यास, अर्थ, प्रयोग, पर्याय दिए गए हैं। शब्द की विशेष अर्थबोधक शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना) साथ ही साथ शब्द-सौष्ठव, शब्द सौकर्य (सरलता, सुगमता, मुखसुख) से ग्रन्थ की सदुपयोगिता असंदिग्ध है।

भोजपुरी उत्तर भारत की मुख्य भाषा है साथ ही मॉरिशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि अनेक राष्ट्रों में इसकी लोकप्रियता एवं व्यापकता है। इसका वाचिक लोकसाहित्य प्रभावकारी है। भोजपुरी जैसी एक समृद्ध भाषा को समझने-समझाने की दिशा में डॉ० अर्जुन तिवारी की लोकभाषा के प्रति निष्ठा और उनकी अहर्निश साधना ने आज इस बहुप्रतीक्षित कमी की पूर्ति की। परिणामस्वरूप इस शब्दकोश के प्रकाशन के रूप में यह एक ऐतिहासिक कार्य हुआ है। माटी, माई, मानुष के हित में यह बृहद प्रामाणिक 'भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश' शिक्षार्थियों, संगीत प्रमियों, शोधकर्त्ताओं एवं समाज सेवी साहित्यकारों के लिए अपरिहार्य सन्दर्भ-ग्रन्थ है।

# भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश

# भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश

## भोजपुरी लोकोक्ति-मुहावरा-पहेली सहित

डॉ० अर्जुन तिवारी
काशी पत्रकारिता पीठ, वाराणसी

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

# BHOJAPURĪ - HINDĪ SHABDAKOSHA

[*Category* : Dictionary]

*by*

Dr. Arjun Tiwari



ISBN : 978-93-87643-11-6

प्रथम संस्करण : 2019 ई०

[1st Edition : 2019]

मूल्य : सात सौ पचास रुपये (Rs. 750.00)

*Publisher* | प्रकाशक

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN | विश्वविद्यालय प्रकाशन

Post Box No. 1149, | पोस्ट बॉक्स नं० 1149,

Vishalakshi Building, Chowk, | विशालाक्षी भवन, चौक,

Varanasi - 221001 [U.P. INDIA] | वाराणसी-221 001 [उत्तर प्रदेश, भारत]

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com • vvpbooks@gmail.com

Website : www.vvpbooks.com

मुद्रक

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

चौक, वाराणसी-221 001

# प्राक्कथन

## हिन्दी : सद्‌भाव, समभाव, विश्व-कल्याण की अमरवाणी

भाषा एक दैवी शक्ति है, जो प्राणियों में सद्‌भाव, सहयोग और मंगल का भाव भरती है। भावों को प्रकट करने, विचारों को बोधगम्य बनाने तथा परस्पर सौहार्द बढ़ाने का यही प्रभावकारी माध्यम है। भाषा के अभाव में मूक प्राणी निरीह बना रहता है, विचार बहरे हो जाते हैं और व्यवहार लँगड़े बन कर रह जाते हैं। भाषा के चलते मानव सुसंस्कृत बनता है, सम्मान का पात्र बनता है। भारत, भारतीयता एवं भारती का पर्याय ही हिन्दी है, जिसकी व्यापकता विश्व में बढ़ती जा रही है।

अनेक भाषाविदों ने बार-बार यही प्रमाणित किया है कि हिन्दी देवनागरी लिपि ब्राह्मी से विकसित है, जो सर्वाधिक वैज्ञानिक है। मुहम्मद गोरी ने अपना काम-काज हिन्दी में किया। उसके सिक्कों पर देवनागरी में अंकित 'श्री हम्मीर' और 'श्री महमूद साम' आज भी प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। शेरशाह सूरी ने अपने सिक्के पर देवनागरी में लिखवाया—'श्री सीरशाह'। कई सिक्कों पर 'ओऽम्' भी अंकित है। वस्तुतः हिन्दी प्रेम की भाषा है, सद्‌भाव-सहयोग की साधिका है, राष्ट्रीय एकता की सुदृढ़ कड़ी है। हिन्दी में भारत की आत्मा मुखरित होती है—

**हिन्दी का उद्‌देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य,**
**यों तो रूस और अमरीका, जितना है उसका जनराज्य,**
**बिना राष्ट्रभाषा स्वराष्ट्र की, गिरा आप गूँगी असमर्थ,**
**एक भारती बिना, हमारी भारतीयता का क्या अर्थ?**

—मैथिलीशरण गुप्त

भारतीयता हिन्दी के अभाव में व्यर्थ है क्योंकि—

**भारतीय धर्म की है घोषणा घमण्डभरी,**
**हिन्दी नहीं जाने उसे हिन्दी नहीं जानिए।**

—नाथूराम शंकर शर्मा

हिन्दी के विषय में सोचने, समझने, बोलने या उसकी भव्यता को साहित्य के रूप में ढालने का तात्पर्य विश्व-धर्म, अन्तर्राष्ट्रीय अनुशासन और मानवीय एकात्मकता का सूत्रपात करना है।

प्रेममार्ग को प्रदर्शित करने वाली भाषाओं में हिन्दी खरी उतरती है—

**अरबी, तुरकी, हिन्दुई, भाषा जेति आहि,**
**जेहि मँह मारग प्रेम का सबै सराहै ताहि।**

हिन्दी के लिए कुछ कवियों ने केवल 'भाषा' शब्द का ही प्रयोग किया है तथा इसके गुणों की चर्चा की है—

**संस्कीरत है कूप जल, भाषा बहता नीर।** —कबीर

❑ ❑ ❑

**आदि अन्त जस गाथा अहै, लिखि भाषा चौपाई कहै।** —जायसी

❑ ❑ ❑

**भाषा भनिति मोर मति थोरी।**

❑ ❑ ❑

**का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच।** —तुलसीदास

हिन्दी मानव के बुद्धि-कौशल, विवेक, चिन्तन, आचार-व्यवहार तथा संस्कृति की भाषा है। यह ऐसी जीवन्त भाषा है जिसमें अन्तर्निहित रचनात्मक शक्ति है, व्यवहारधर्मिता है और गतिमयता है। हिन्दी आर्य संस्कृति की संवाहिका है। इस भाषा का विकास भारतीय लोक-चेतना का विकास है। नवजागरण और मुक्ति की कामना के प्रसार में हिन्दी का योगदान अविस्मरणीय है। राजा राममोहन राय एवं केशवचन्द्र सेन ने हिन्दी को ही भारतवर्ष की एकमात्र मुक्तिदायिनी भाषा के रूप में अंगीकार किया। महर्षि दयानन्द तो हिन्दी के सर्वस्व माने जाते हैं। 'आनन्दमठ' के रचयिता और 'वन्दे मातरम्' के अमर गायक श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी की निम्नलिखित बात द्रष्टव्य है—

''हिन्दी एक दिन भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी, क्योंकि हिन्दी भाषा की सहायता से भारत के विभिन्न प्रदेशों में जो ऐक्य-बन्धन स्थापित कर सकेंगे, वे ही सच्चे भारतबन्धु की संज्ञा पाने योग्य होंगे।''

वस्तुतः स्वतन्त्रता की लड़ाई में इसी हिन्दी ने तोप का कार्य किया। बन्धन-मुक्ति के यज्ञ में बहादुर शाह जफर, तात्या टोपे और कुँवर सिंह ने हिन्दी में ही रणभेरी बजाई। मुहम्मद इकबाल ने 'हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा' का नारा दिया तथा राष्ट्र-हित में सर्वस्व अर्पण का मन्त्र प्रदान किया। प्रसिद्ध तत्त्वचिन्तक श्री अरविन्द, भूदेव मुखर्जी, नवीनचन्द्र राय, रामानन्द चटर्जी, चिन्तामणि घोष, जस्टिस शारदाचरण मैत्रेय आदि भारत-भक्तों ने हिन्दी के उत्थान में उल्लेख्य कार्य किया। डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी ने उद्घोषित किया कि हिन्दी एक महान् सम्पर्क-साधक भाषा है। सन् 1875 ई० में बाबू केशवचन्द्र सेन ने लिखा, 'हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्रइ प्रचलित'। बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 1876 ई० में 'बंगदर्शन' में साफ कहा, 'हिन्दी शिक्षा ना करिले, कोनो क्रमेइ चलिबे ना।'

रहीम, रसखान, आलम, शेख और उस्मान सदृश मुस्लिम कवियों ने जिस हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाया, वह केवल हिन्दुओं की भाषा नहीं है। अमीर खुसरो, सैयद इंशा अल्ला खाँ, सैयद अमीर अली मीर, कासिम अली

साहित्यालंकार, बन्दे अली फातमी, जहूरबख्श हिन्दी कोविद, नबीब बख्श 'फलक' आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिनसे हिन्दी पल्लवित-पुष्पित हुई। दक्षिण भारत के प्राचीन आचार्यों—बल्लभाचार्य, विट्ठल, रामानुज, रामानन्द आदि ने हिन्दी के माध्यम से अपने सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों के सन्त साहित्यकारों में असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के नामदेव और ज्ञानेश्वर, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने इसी हिन्दी को धर्म और साहित्य का माध्यम बनाया। महान् विद्वान् मैक्समूलर, डॉ० विलियम केरी, विलियम याट्स और जे०एच० केलाग जैसे ईसाई महापुरुषों ने हिन्दी को अपनाया तथा इसके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सत्यमेव जयते' की भावना को गुंजायमान किया। वस्तुत: हिन्दी द्वन्द्व, विद्वेष, विघटन से दूर रहकर एकता और प्रेम की शिक्षा देती है—

**इक भाषा, इक जीव, इक मति के सब लोग।**
**तबे बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग॥**

राष्ट्रभाषा का प्रश्न राष्ट्रीय चरित्र का प्रश्न है। यह विकास और क्षमता का दर्पण है। देववाणी 'संस्कृत अपनी माँ है, हिन्दी गृहणी और अंग्रेजी नौकरानी है' फादर कामिल बुल्के के इस उद्गार से हिन्दी की अपरिहार्यता स्वयंसिद्ध है। स्वच्छ, सुस्पष्ट और सरल भाषा हिन्दी भारत की ही नहीं, विश्व की एक वरेण्य भाषा है, जिसकी शब्द-सम्पदा अतुलनीय है।

हिन्दी भारत के विराट् व्यक्तित्व का अनमोल स्वर है, समन्वय-सूत्र है। यह भारतीय जन-मानस की जाह्नवी, प्रेम की मन्दाकिनी है। इसमें देश की एकता सन्निहित है। यही राष्ट्र की केन्द्रीय शक्ति है। सहजता, सरलता, सम्प्रेषणीयता के चलते हिन्दी राष्ट्रीय सीमा से ऊपर उठकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी आभा बिखेर रही है। चेक गणराज्य के ओदोलेन स्मेकल स्वीकारते हैं—

**हिन्दी-ज्ञान**
**मेरे लिए अमृत-पान**
**जितनी बार उसे पीता हूँ**
**उतनी बार लगता है—पुन: जीता हूँ।**

सन् 1999 ई० में मशीन ट्रांसलेशन सम्मिट में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो० होजमि तनाका ने अद्यतन भाषायी आँकड़ा प्रस्तुत किया। उनका सुस्पष्ट मत है कि विश्वभर में चीनी बोलने वालों का प्रथम, हिन्दी का द्वितीय तथा अंग्रेजी का तृतीय स्थान है। 'वर्ल्ड एलोमॉनिक एण्ड बुक ऑफ फैक्ट्स, मॉडर्न एसोसिएशन ऑफ अमेरिका' एवं 'अमेरिकन कौंसिल ऑफ फॉरेन लैंग्वेज' की रिपोर्ट के अनुसार विश्व की दस भाषाओं में चीनी, हिन्दी और अंग्रेजी का ही वर्चस्व है। अद्यतन आँकड़ों के अनुसार अपनी हिन्दी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

'विश्व हिन्दी दिवस' पर दैनिक जागरण (10 जनवरी 2017) के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित तथ्य प्रमाण रूप में प्रस्तुत हैं :

विश्व हिंदी दिवस

नम्बर एक के सिंहासन से मंदारिन को उतारा, हिन्दी सीखने वाले देशों में चीन आगे है, दुनिया में 64 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिन्दी

# दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बनी हिन्दी

हिन्दी के भविष्य को लेकर हम भले चिन्ता जताते हों, लेकिन सच्चाई यह है कि दुनिया में हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 2015 के आँकड़ों के अनुसार यह दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

2005 में दुनिया के 160 देशों में हिन्दी बोलने वालों की अनुमानित संख्या 1,10,29,96,447 थी। उस समय चीन की मंदारिन भाषा बोलने वालों की संख्या इससे कुछ अधिक थी। लेकिन 2015 में दुनिया के सभी 206 देशों में करीब 1,30,00,00,000 (एक अरब तीस करोड़) लोग हिन्दी बोल रहे हैं और अब हिन्दी बोलनेवालों की संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा हो चुकी है। मुम्बई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय अपनी पुस्तक 'हिन्दी का विश्व सन्दर्भ' में सारणीबद्ध आँकड़े देते हुए कहते हैं कि भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। यहाँ के पेशेवर युवा दुनिया के सभी देशों में पहुँच रहे हैं और दुनिया भर की बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में निवेश के लिए आ रही हैं। इसलिए एक तरफ हिन्दीभाषी दुनिया भर में फैल रहे हैं, तो दूसरी ओर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपना व्यवसाय चलाने के लिए अपने कर्मचारियों को हिन्दी सिखानी पड़ रही है। तेजी से हिन्दी सीखने वाले देशों में चीन सबसे आगे है। फिलहाल चीन के 20 विवि में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। 2020 तक वहाँ हिन्दी पढ़ाने वाले विश्वविद्यालयों की संख्या 50 तक पहुँच जाने की उम्मीद है। यहाँ तक कि चीन ने अपने 10 लाख सैनिकों को भी हिन्दी सिखा रखी है। अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर बढ़ी भारत की साख के कारण भी दुनिया के लोगों की हिन्दी और हिन्दुस्तान में रुचि बढ़ाई है।

## देश में 78 फीसद बोलते हैं हिन्दी

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने अपनी पुस्तक में दिए आँकड़ों में डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल द्वारा 2012 में किए गए शोध अध्ययन के अलावा, 1999 की जनगणना, द वर्ल्ड आल्मेनक एंड बुक ऑफ फैक्ट्स, न्यूज पेपर एंटरप्राइजेज एसोसिएशन अंक, न्यूयार्क और मनोरमा इयर बुक इत्यादि को आधार बनाया है। पुस्तक के अनुसार हिन्दी के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा चीन की मंदारिन है। लेकिन मंदारिन बोलने वालों की संख्या चीन में ही भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या से काफी कम है। चीनी न्यूज एजेंसी सिन्हुआ की एक रिपोर्ट के अनुसार केवल 70 फीसद चीनी ही मंदारिन बोलते हैं। जबकि भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या करीब 78 फीसद है। दुनिया में 64 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिन्दी है। जबकि 20 करोड़ लोगों की दूसरी भाषा, एवं 44 करोड़ लोगों की तीसरी, चौथी या पाँचवीं भाषा हिन्दी है। भारत के अलावा मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, गुयाना, ट्रिनिडाड और टोबैगो आदि देशों में हिन्दी बहुप्रयुक्त भाषा है। भारत के बाहर फिजी ऐसा देश है, जहाँ हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिन्दी को वहाँ की संसद में प्रयुक्त करने की मान्यता प्राप्त है। मॉरीशस में तो बाकायदा 'विश्व हिन्दी सचिवालय' की स्थापना हुई है, जिसका उद्देश्य ही हिन्दी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करना है।

## हिन्दी और उसकी सहभाषाएँ

हिन्दी वह धागा है, जिससे विभिन्न भाषाओं के पुष्पों को पिरोकर विश्व-मानव हेतु एक सुन्दर हार निर्मित होता है। आज विश्व की भाषाओं में अगली पंक्ति में प्रतिष्ठित हिन्दी की अभिवृद्धि में उसकी सहभाषाओं का महत्त्वपूर्ण अवदान है। हिन्दी की असली शक्ति उसकी तद्भव सम्पदा में है और इन तद्भवों का बड़ा स्रोत उसकी सहभाषाएँ और बोलियाँ हैं। इन जनपदीय भाषाओं में रचे साहित्य ने भक्ति- आन्दोलन और देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में विशेष योगदान किया है। हिन्दी और उसकी सहभाषाओं के बीच आदान-प्रदान सतत बना रहा और उससे हिन्दी निखरती गई। तुलसी, कबीर, सूर, रैदास, मीरा जैसी विभूतियों को लेकर ही हिन्दी 'हिन्दी' है। इन सभी महान् रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ हिन्दी की सहभाषाओं—अवधी, ब्रज, भोजपुरी और राजस्थानी में रचीं।

अपना देश मूलतः जनपदों का देश है। गाँवों के समूह से ही जनपद बनता है। गाँव-बस्तियाँ हमारी संस्कृति की आधारशिला हैं। गाँव के जीवन की जड़ें धरती का आश्रय पाकर पनपती हैं। देश के राजनीतिक संघर्षों ने ग्रामों और जनपदों को आत्मप्रतिष्ठा से भर दिया है। प्रियदर्शी अशोक ने धर्मयात्राओं का सूत्रपात किया, जिसके अनुसार जनपद जन के दर्शन और जन के साथ मिलकर धर्म की शिक्षा के केन्द्र बने। ग्रामवासिनी जनता का दर्शन, जनपदीय अध्ययन का अभीष्ट है। जनपदीय अध्ययन का विद्यार्थी जब गाँवों में जाता है तो वहाँ उसे शब्द और अर्थ के विपुल भण्डार मिलते हैं। हिन्दी जनपदीय भाषाओं से ही प्राणवन्त और ऊर्जस्वित है। जनपदीय भाषाओं में हिन्दी का वह सुरक्षित कोष है जिसके धन से वह अपनी परिपूर्णता को प्राप्त कर लेती है। वस्तुतः जनपदीय बोलियाँ साक्षात् कामधेनु हैं। प्रख्यात भाषाविद् वासुदेवशरण अग्रवाल ने 'जनपदीय अध्ययन की आँख' (प्रतिमान, जुलाई-सितम्बर 2013) में लिखा है—

''जनपदीय अध्ययन का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत और गहरा है, उनमें अपरिमित रस और नवीन प्रकाश भी है। जीवन के लिए उसकी उपयोगिता भी कम नहीं है। उस अध्ययन के सफल होने के लिए सधे हुए ज्ञान और समझदारी की भी आवश्यकता है। मानसिक सहानुभूति और शारीरिक श्रम के बिना यह कार्य पनप नहीं सकता। जनपदीय अध्ययन की आँख लोक का वह खुला हुआ नेत्र है, जिसमें सारे अर्थ दिखाई पड़ते हैं। ज्यों-ज्यों इस नेत्र में देखने की शक्ति बढ़ती है त्यों-त्यों भूतत्व में छिपे हुए रत्न और कोषों की भाँति जनपदीय जीवन के नए-नए भण्डार हमारे दृष्टिपथ में आते-जाते हैं। जनपदीय चक्षुष्मत्ता-साहित्यिक का ही नहीं, प्रत्येक मनुष्य का भूषण है। उसकी वृद्धि जीवन की आवश्यकता के साथ जुड़ी है। अशोक के शब्दों में जानपद जन का दर्शन हमारी जनपदीय आँख की सच्ची सफलता है।''

## बोलियों और भाषाओं पर मँडराता संकट

संयुक्त राष्ट्र की पहली **'स्टेट ऑफ द इंडीजीनस पीपुल्स'** रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में करीब 6900 भाषाएँ हैं, जिनमें से करीब 2500 भाषाओं पर संकट के

बादल मँडरा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने साल 2001 में इस सम्बन्ध में जब पहला अध्ययन किया था, तब विलुप्तप्राय भाषाओं की संख्या 900 के करीब थी। तब भी यूएन ने दुनिया को आगाह किया था कि भाषाओं को मरने से बचाया जाए, लेकिन तमाम आगाह के बावजूद मरती हुई भाषाएँ बची नहीं और अब ऐसी बीमार भाषाओं की संख्या तब के मुकाबले करीब 3 गुना पहुँच गई है।

**'पीपुल्स लिंग्युस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया'** के एक अध्ययन के अनुसार भारत में भाषाई विविधता के मामले में सबसे समृद्ध प्रान्त अरुणाचल प्रदेश है जहाँ 90 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं। इसके बाद महाराष्ट्र और फिर गुजरात का नम्बर आता है, जहाँ क्रमश: 50 और 47 भाषाएँ बोली जाती हैं। 47 भाषाओं के साथ उड़ीसा चौथे स्थान पर है। करीब 400 से अधिक भाषाएँ आदिवासी समुदायों और घुमन्तू व गैर अधिसूचित समुदायों द्वारा बोली जाती हैं। सबसे ज्यादा संकट इन्हीं के द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं पर है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में 130 भाषाओं पर संकट के बादल मँडरा रहे हैं, जबकि भाषिक बहुलता की दृष्टि से सबसे उर्वर क्षेत्र यही है; जहाँ कोई भी व्यक्ति औसतन देश में सबसे ज्यादा बोलियाँ बोलता है। पूर्वोत्तर के असम में 55, मेघालय में 31, मणिपुर में 28, नागालैण्ड में 17 और त्रिपुरा में 10 ऐसी भाषाएँ बोली जाती हैं, जिन पर संकट के बादल मँडरा रहे हैं।

किसी भाषा के लुप्त होने या मर जाने से मात्र अभिव्यक्ति का एक तरीका नहीं खत्म होता, न ही जीवन जीने के एक ढंग भर का विलोपन होता है। वास्तव में दुनिया के बारे में समग्र समझ, धारणा, राय और अनगिनत मौलिक अहसास हमेशा-हमेशा के लिए खो जाते हैं, जिनसे दुनिया और समृद्ध हो सकती थी। बावजूद इसके भाषाएँ मर रही हैं, और हम हैं कि रो भी नहीं रहे, इस धरोहर पर गर्व नहीं करते।

**बोली एक अमोल है जो कोई बोलै जानि।**<br>
**हिये तराजू तौल के तब मुख बाहर आनि॥**

देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है। परायी भाषा के साहित्य से ही आनन्द लेने की आदत चोरी के माल से आनन्द लूटने की चोर की आदत जैसी है। इसी सन्दर्भ में जावेद अख्तर के विचार को आत्मसात् करना चाहिए—

''अगर एक इन्सान को एक वृक्ष मान लिया जाए तो उसकी मातृभाषा उन जड़ों की तरह है जो उसे अपनी धरती, अपने समाज, अपने अतीत, अपनी परम्परा से जोड़ती हैं। उसको उसकी पहचान देती हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि हमारे लिए दूसरी भाषाओं का महत्त्व नहीं है। बड़ा पेड़ तो वही है जिसका तना आकाश छूने का जतन कर रहा हो, जिसकी शाखाएँ दूर तक फैली हों। हमें दूसरी भाषाओं से, खास तौर से अंग्रेजी जैसी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा से बहुत कुछ मिल सकता है, मगर याद रखिए कि वृक्ष जितनी ऊँची जाएँ, शाखाएँ जितनी फैलें, जड़ें भी अपनी धरती में उतनी ही गहरी उतरनी चाहिए, वरना वृक्ष गिर सकता है।''

## भोजपुरी का अन्तर्राष्ट्रीय आयाम

गाँव की संस्कृति और गाँव की भाषा को आत्मसात् करने पर हिन्दी की समृद्धि होगी। बहुभाषाविद् और साहित्यकार नागार्जुन ने जनपदीय भाषाओं के महत्त्व को समझाने के लिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रति कृतज्ञता अर्पित की—

**हिन्दी की है असली रीढ़ गँवारू बोली।**
**यह उत्तम भावना तुम्हीं ने हममें घोली॥**

भाषा की थाती साहित्य में सँजोई जाती है। भोजपुरी का फैलाव भारत के बाहर अनेक देशों में है। इसका अन्तर्राष्ट्रीय आयाम है। भोजपुरी एक कर्मठ समुदाय की सहज, सरल, प्रभावशाली भाषा है जिसके बारे में भाषाविद् डॉ० जॉर्ज ग्रियर्सन ने यह टिप्पणी की है—

''Bhojpuri is the practical language of an energetic race, which is ever ready to accommodate itself to circumstances and which has made its influence felt all over India. The Bengali and the Bhojpuri are two of the great civilizers of Hindustan, the formers with his pen and latter with his cudgel.'' (*Linguistic Survey of India*, 1894-1928, No. 5, p. 40)

इसी क्रम में उन्होंने आगे बतलाया है कि भोजपुरी जवानों ने हिन्दुस्तानी सेना में भर्ती होकर उसे सुसज्जित किया और 1857 की लड़ाई में भाग लिया। वस्तुत: भोजपुर और भोजपुरी भारत की अस्मिता का इतिहास है—

**कण-कण में जेकरा क्रांतिबीज**
**अइसन भोजपुर टप्पा हमार**
**इतिहास कहे पन्ना पसार।**

1 जनवरी 1896 ई० को महात्मा गाँधी ने कहा था, ''हिन्दी सभी प्रादेशिक भाषाओं की बड़ी बहन के समान है, अत: राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी प्रचारित होते समय अपनी सभी छोटी बहनों से शब्द-सम्पदा ले तथा उन्हें शब्द देकर आदान-प्रदान का काम करती हुई सेतु का काम भी करे। भाव यह कि सभी प्रादेशिक भाषाएँ और हिन्दी एक-दूसरे की पूरक के रूप में कार्य करें।'' महापण्डित राहुल सांकृत्यायन इसी विचार के पोषक थे। उनकी आशा थी, ''**ऊहो दिनवा आई जब भोजपुरी सरताज बनी। हिन्दी हमनी के बड़की माई ह, ओकरे सासन आ मिलकियत रही, भोजपुरी के बढंती से आपन बड़की माई के हियरा जुड़ाई आ देस-विदेस तक ऊ लहलहाए लागी।**''

अपनी भोजपुरी की परम्परा वाचिक है। जो बात दूसरे को, तीसरे को और कड़ी के रूप में पहुँचाई जाती रहे, वही वाचिक परम्परा है। वाक् की अटूट शक्ति, वाक् की परिशुद्धता, तथा परस्पर हृदय की सम्प्रेषणीयता इस वाचिक परम्परा के तत्त्व हैं। अपने यहाँ हृदय की सम्प्रेषणीयता झट से यों ही नहीं बनती। यहाँ दर्शन, स्पर्श, भाषण, श्रवण में हृदय का द्रवीभूत, आह्लादित रूप मिलता है—

**जिस हृदय में प्रेम का उठता नहीं उद्‌गार है,**
**व्यक्ति वह निस्सार है, वह मनुज भू का भार है।**

अपने यहाँ तो—

**तंत्री-नाद, कबित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।**
**अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग॥**

साथ-साथ रहते, खेलते, चलते, लड़ते-झगड़ते, रोते-गाते-हँसते रहने की परम्परा भोजपुरी में प्राप्त होती है। इसका समस्त लोक-साहित्य वाक् की अटूट शक्ति में विश्वास करता है, वाक् की परिशुद्धता की चिन्ता करता है जिससे परस्पर हृदय की सम्प्रेषणीयता सृजित होती है। इस तरह भोजपुरी लोक-साहित्य मूलत: लोकजीवन से संश्लिष्ट है। इसका मूल प्रयोजन जीवन से ही जुड़ा व्यापार है। चाहे श्रम का कार्य हो, खेती या व्यवसाय से जुड़ा कार्य हो, मांगलिक अवसर हो या ऋतुपर्व हो, किसी न किसी के साथ उनकी लय मिली हुई है। जाँत के गीत की टेक 'हो राम' वहीं रुकती है जहाँ एक घानी पूरी होती है। कजली के गीतों की टेक भी झूले के पेंग के साथ तालबद्ध होती है। संस्कार-गीतों में सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, संयोग-वियोग सबके चढ़ाव-उतार प्रतिध्वनित होते रहते हैं। संस्कार-गीतों में पारिवारिक स्नेह-वितान की आश्वस्तता रहती है, श्रमगीतों में मानव-नियति की करुणा है और उसी के साथ सामाजिक व्यवस्था की निर्ममता की चिन्ता भी है, ऋतुगीतों में चित्त के भीतर सहज उठने वाले राग का ज्वार उमड़ता है, मेले के गीतों में विश्वव्यापी चैतन्य-शक्ति के साथ एकात्मकता की अनुभूति है। लोक-मातृत्व भाव, पर्यावरण से सम्बद्ध पँक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

**बाबा निबिया कै पेड़ जिनि काटेउ, निबिया चिरइया बसेरा**
**बलइया लेउ बीरन की।**
**बाबा बिटिया न केहु दु:ख देह, बिटिया चिरइया का नइयाँ**
**बलइया लेउ बीरन की।**
**बाबा सबेरे चिरइया उड़ि जइहैं, रहि जाई निबिया अकेलि**
**बलइया लेउ बीरन की।**
**बाबा सबेरे बिटियवा जइहैं, सासुर रहि जइहैं माई अकेलि**
**बलइया 'लेउ बीरन की।**

अपनी मुखरता और अभिव्यंजना के चलते भोजपुरी एक मधुर और अनौपचारिक भाषा के रूप में समादृत होती है। इसका प्रमाण यही है कि आज भी सेना में अपनी-अपनी भाषा भुलाकर सैनिकों ने भोजपुरी को अपना लिया। अपने देश की सीमा को लाँघकर भोजपुरी जहाँ-जहाँ गई, अपना असर बनाए रखी। गिरमिट (एग्रीमेंट) या शर्तवादी के तहत परदेश जाने वाले भोजपुरी-भाषी अब सरकार के अंग बन गए। डॉ० शिवसागर रामगुलाम, डॉ० छेदी जगन, डॉ० वासुदेव पाण्डेय इसी भोजपुरी माटी के सपूत हुए, जिन्होंने मॉरीशस, सूरीनाम आदि देशों का नवनिर्माण किया।

'भोजपुरी' नाम से न केवल एक क्षेत्र की भाषा वरन् वहाँ रहने वाले जनसमुदाय का भी बोध होता है। भोजपुरी को 'भोजपुरिया, बक्सरिया, हिन्दुस्तानी, पश्चिमी,

देशवाली, खोट्टा, पूर्वीया' आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है। आदर्श भोजपुरी, पश्चिमी भोजपुरी, मधेसी, थारु, सरवरिया, नगपुरिया में बोली जाने वाली भोजपुरी भी भारत में प्रयुक्त होती है। मूल रूप से भोजपुरी उत्तर-प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और अंशत: मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ राज्यों में बोली जाती है। वर्तमान में लगभग समस्त भारत में भोजपुरी भाषाभाषी हैं। भारत के अलावा मॉरीशस, फिजी, गुयाना, नेपाल, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिडाड आदि में भी यह बोली जाती है।

अपनी भोजपुरी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी आत्मीयता, उदारता है। किसी भी भाषा के शब्दों को अपने में घुलाने, पचाने, भोजपुरिआइन बनाने में इसकी कोई सानी नहीं है। संस्कृत भोजपुरी में तो 'माई-धिया' का सगा सम्बन्ध है। भोजपुरी धन्य है जिसकी माँ, जननी देववाणी संस्कृत है और संस्कृत गद्‌गद है कि उसकी लाडली अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यशस्विनी बन रही है। वस्तुत: कोई अन्य भारतीय आर्यभाषा संस्कृत के उतना निकट नहीं है जितनी भोजपुरी। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य है—

| संस्कृत | भोजपुरी | संस्कृत | भोजपुरी |
|---|---|---|---|
| महाजन | महाजन | अहं पठामि | हम पढ़तानी |
| चिंता | चिंता | अहं चलामि | हम चलतानी |
| अवदहन | अदहन | स: याति | उ जाता |
| भर्तार | भतार | स: खादति | उ खाता। |

## मानक भाषा के रूप में भोजपुरी

सभी भाषा वैज्ञानिक मानते हैं कि मानक भाषा के लिए 4 शर्तें होती हैं—विस्तृत व्यवहार-क्षेत्र, शब्द-भण्डार, व्याकरण-व्यवस्था और सम्प्रेषणीयता। किसी शब्द का अर्थ अपने सामाजिक बुनावट, परम्परा, जीवन-तथ्य और कल्पना का ही क्रियात्मक रूप होता है। भोजपुर में 'बाटे', छपरा में 'बाड़े, बाड़न', बनारसी के 'हउवन, हई, हौ, हवन' में परिवेशगत कोमलता, कठोरता, स्थिरता और गतिशीलता के संकेत दिखते हैं। हिन्दी का कैलास, मैदा और पैसा भोजपुरी उच्चारण में कएलास, मएदा या (मयदा), पएसा या (पइसा) हो जाता है। इसी प्रकार हिन्दी में कौवा, कौड़ी और कौन भोजपुरी में कउवा, कउड़ी और कउन हो जाते हैं। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में भोजपुरी तथा हिन्दी (खड़ी बोली) में कोई अन्तर नहीं है। दोनों भाषाओं में अनुनासिक और निरनुनासिक रूप कर देने पर कुछ शब्दों का अर्थ स्पष्टत: बदल जाता है, जैसे—तागा-ताँगा, विधना-विंधना, बाध-बाँध, गाज-गाँज, पूछ-पूँछ, गोड़-गोंड़ आदि। शब्दों के उच्चारण में भोजपुरी में आदि स्वरागम की प्रवृत्ति है। हिन्दी के तत्सम शब्द स्तुति, स्नान, स्थान तथा स्टेशन भोजपुरी में क्रमश: 'अस्तुति', 'असनान', 'अस्थान', 'इस्टेसन' के रूप में बोले जाते हैं। इसी तरह भोजपुरी शब्दों के निर्माण में कुछ ध्वनियों के लोप की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। भोजपुरी में नखहरनी 'नहरनी या नहन्नी' का रूप धारण कर लेता है। भोजपुरी में हिन्दी शब्द 'इ' जुट जाता है, जैसे—आँख का 'आँखि', नाक का 'नाकि', आँच का

'आँचि' हो जाता है। इसी प्रकार हिन्दी शब्द के अन्त का 'ण' भोजपुरी में 'ड़' या 'न' हो जाता है। किसी को पुकारते समय अक्सर हिन्दी में सीधे नाम लेकर या फिर 'रे', 'अरे', 'हो' लगाकर पुकारते हैं, यथा—राम हो, सोहन हो, रामू रे। भोजपुरी में राम को बुलाते समय यदि किसी प्रकार की खीझ उत्पन्न हुई तो राम को 'रामवा' या 'रमुआ' कहेंगे। इसी प्रकार 'रामजी' का 'रमजिउवा' हो जाएगा। डॉ० अरुणेश नीरन के अनुसार—

"भोजपुरी में संस्कृत या अन्य भारतीय भाषाओं से भी जो शब्द उधार लिए जाते हैं, उनका उच्चारण भोजपुरी ध्वनियों के अनुरूप ही होता है। शिकार, लड़ाई, कुश्ती, अस्त्र-शस्त्र, कला-कौशल, व्यवसाय, यात्रा, गृहस्थी खेती-बारी, राम-रसोई, पशु-पक्षी, यात्रा आदि से सम्बन्ध रखने वाले विभिन्न विषयों के शब्दों से भोजपुरी का कोश भरा हुआ है। पक्षियों और जानवरों के नाम, उनकी हर एक अदा, उनके उड़ने का एक-एक ढंग, उन्हें फँसाने और शिकार के साधन के लिए अलग-अलग शब्द हैं। शब्दों की बहुलता देखनी हो तो बिहार के सन्त कवि धरनीदास की एक कविता में आए हुए शब्दों में भिन्न-भिन्न अवस्था और रूप की गायों के लिए अलग-अलग शब्दों को देखिए। गाय के विभिन्न रंग-रूप के लिए आए हुए शब्द—बहिला, गाभिन, बाछी, लेरू, बहरू, लाली, गोला, घबरी, पियरी, कजरी, संवरी, कबरी, टिकरी, सिंगहनी आदि। अवस्थानुसार भी गाय के लिए अनेक शब्द हैं—बिन व्यायी गाय जो साँड़ के पास जाने के योग्य हो गई है, उसे 'कलोर' कहते हैं। गर्भाधान के तुरन्त बाद की गाय 'बरदाई' है। समय के पूर्व बच्चा गिरा देने वाली गाय 'लड़ाइल' है। जो दूध देती है वह 'धेनु' है। बहुत दिनों की ब्यायी और बच्चे के बड़े होने तक दूध देने वाली 'बकेन' है। दूध देना बन्द कर देने वाली गाय 'नाठा' या 'बिसुखी' है। पहले बियान की गाय को 'अँकरे' या 'औंकर' कहते हैं। चरने के समय हरवाहे को परेशान करने वाली गाय 'हरही' कहलाती है।

इसी प्रकार संज्ञा के लिए थोड़े-थोड़े भेदों के साथ कई शब्द हैं। जैसे लाठी के लिए अनेक शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए—लऊर, लऊरि, पटकन, बोंग, गोजी, बासमत्तर, लोहबाना आदि। आकार में छोटी किन्तु मोटी लाठी के लिए—डण्डा, सोंटा, ठेंगा, दुखहरन, दुखभंजन आदि। एक क्रियापद के लिए भोजपुरी में अनेक शब्द हैं। जैसे कपड़े धोने के लिए फींचना, कचारना, खँघारना, धोना, फींचकारना। बर्तनों को धोने के लिए—माँजना, खँघारना, अमनिया करना, धोना आदि। अन्न साफ करने के लिए फटकना, पँइचना, हलोरना, अमनिया करना, अइँटना, झटकारना आदि।"

यूरोपियन विद्वानों में सर्वप्रथम जे० बीम्स ने 1868 ई० में 'नोट्स ऑन द भोजपुरी डायलेक्ट ऑफ हिन्दी ऐज स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार' जैसी रचना 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' के जर्नल में प्रकाशित करवाई। सन् 1880 ई० में हार्नले की कृति 'पूर्वी हिन्दी व्याकरण' आई, जिसमें भोजपुरी और बनारसी बोली पर गहन चिन्तन-मनन हुआ। केलांग (1875), कैमावेल (1875), गिरिन्द्रनाथ दत्त (1897) ने भोजपुरी व्याकरण के विविध पक्षों का उद्घाटन किया। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य डॉ० ग्रियर्सन द्वारा हुआ, जिससे भोजपुरी को एक प्रामाणिक पहचान मिली।

भाषा-सम्प्रेषण की दृष्टि से हिन्दी परिवार की एक उपयोगी और प्रभावशाली भाषा का नाम भोजपुरी है। सांस्कृतिक थाती होने के साथ यह उत्तर भारत के बड़े समुदाय में दैनन्दिन जीवन में प्रयुक्त होती है। भोजपुरी का लोक-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। विगत एक दशक से जनसंचार-माध्यमों में भोजपुरी की लोकप्रियता तथा इसकी सशक्त भागीदारी बढ़ी है। पारम्परिक माध्यमों (ट्रेडिशनल मीडिया) का प्राणतत्त्व भोजपुरी है तथा प्रिण्ट मीडिया का यही सम्बल है। इलेक्ट्रानिक मीडिया की जीवन्तता इसी के चलते है। फिल्म की कमाई भोजपुरी छौंक पर निर्भर है। श्रव्य-दृश्य माध्यम की सर्वग्राह्यता के मूल में इसी भोजपुरी का हाथ है। दिन-प्रतिदिन नए-नए चैनलों में भोजपुरी समाचार-विचार, गीत-संगीत, नृत्य, धारावाहिक, पर्व-त्योहार की धूम मची हुई है जिससे भोजपुरी भाषा और साहित्य की श्रीवृद्धि हो रही है।

## भोजपुरी साहित्य का उद्भव एवं विकास

सर विलियम जोंस, कर्नल जेम्स टाड ने जहाँ भोजपुरी के लोक-साहित्य पर शोध किया, वहीं जॉन बीम्स, जॉर्ज ग्रियर्सन, एस०डब्ल्यू० फैलन, जी० आर्चर, विलियम कुक ने भाषा सर्वेक्षण तथा साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया। डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, दुर्गाशंकर सिंह, रासबिहारी पाण्डेय, डॉ० अर्जुन तिवारी, आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' आदि ने प्रवर्तन, लोक-उद्बोधन, प्रबोधन, जागरण काल के अन्तर्गत भोजपुरी साहित्य के अवदान को अभूतपूर्व बताया है।

सरहपा को भोजपुरी का पहला कवि माना गया है, जिन्होंने आडम्बरों से दूर रहकर सदाचार का उपदेश सुनाया—

**जह मन पवन न संचरइ, रवि ससि नाहिं पवेस**
**तहि बट चित्त विसराम करु, सरहे कहिय उवेस॥**

सिद्ध साहित्य एवं सन्त साहित्य के बीच नाथ साहित्य को समृद्ध करने में गोरखनाथ, जालन्धरनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ तथा चौरंगीनाथ आदि ने चारित्रिक दृढ़ता पर बल दिया। उन लोगों ने गुरु को ही सर्वोपरि माना—

**गुरु कीजै गरिला निगुरा न रहिला।**
**गुरु बिन ग्यांन न पायला रे भाईला॥**
**दूधैं धोया कोइला उजला न होइला।**
**कागा कंठै पहुप माल हंसला न भैला॥**

❑ ❑ ❑

**थुलथुल काया मोटा पेट नहीं रे पूता गुरु से भेंट।**
**खड़खड़ काया दुबला पेट भई रे पूता गुरु से भेंट॥**

लोकगाथा के अन्तर्गत आल्हा, लोरकी, सोरठी, बृजभार, विजयमल, शोभानायका, बनजारा, राजा भरथरी, राजा गोपीचन्द्र जैसी रचनाओं में ललकार, गोहार,

जागरण के सन्देश मिलते हैं, जिनसे भोजपुरी की जुझारू प्रवृत्ति का अनुमान होता है—

**बारह बरिस ले कुक्कुर जिए, ओ तेरह ले जिए सियार।**
**बरिस अठारह क्षत्री जिए, आगे जीवन के धिक्कार॥**

उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा विदेशी आक्रान्ता से लोहा लेने के निमित्त क्षत्रियों को जगाने का कार्य भोजपुरी ने ही किया। 'इंडियन एंटिक्विटी' (भाग-14, सन् 1885) में ग्रियर्सन ने लिखा है—"आल्हा गाथा काव्य का पूर्वी पाठान्तर भ्रमण करने वाले गायकों के कण्ठों में आज वर्तमान है और प्राय: बिहार की बोली में पाया जाता है।" क्षणभंगुर जीवन में कुछ कर दिखाने की प्रेरणा लोकगाथा-काल के साहित्य में मिलती है। भोजपुरी के लोकगीत सरस हैं और उसकी लोकगाथाएँ समृद्ध हैं। 'सती सोरठी योगी बृजभार' 96 भागों में और 'कुँवर विजयमल्ल' 32 भागों में सम्पादित हुआ है।

सन्त-समागम, भक्ति, प्रेमकथा, संस्कार गीत इस काल की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। कबीर, दादू, कमालदास, धरनीदास, पलटूदास, बाबा कीनाराम, रूपकला, रामाजी, लक्ष्मी सखी, बूला साहब आदि ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार किया। कबीर की निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रमाण हैं—

**तोरा हीरा हेराइल बा कीचरे में,**
**केहू ढूँढ़े पूरब, केहू ढूँढ़े पछिम, केहू ढूँढ़े पानी पथरे में।**
**सुर नर मुनि अउर पीर अवलिया, भूलल बाड़े सभ नखरे में,**
**दास कबीर ई हीरा परखले, बान्हि लिहले जतन से अँचरे में।**

भोजपुरी क्षेत्र में हजारों की संख्या में लोक-कथाएँ हैं जिनमें प्रेम, युद्ध, ठगी और उपदेश की बातें मिलती हैं। कहावतों, लोकोक्तियों, मुहावरों की सहजता से भोजपुरी साहित्य समृद्ध हुआ है। व्यापार, व्यवहार, कृषि, मौसम, औषधि, पशु-पक्षी, जाति और मानव-जीवन सम्बन्धी युग-युग के अनुभव इनमें संचित हैं। यह भू-भाग चिरकाल से विचार स्वातन्त्र्य के प्रेमी, क्रान्तिकारी, साहसी, निर्भीक व्यक्तियों का कार्यक्षेत्र रहा है। यहाँ अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। महात्मा बुद्ध ने सर्वप्रथम यहीं सारनाथ में अपने विचारों को उपदेश के रूप में प्रकट किया। यहीं की काशी नगरी में सुदूर प्रान्तों तक के महान् आचार्यों ने समय-समय पर आकर अपने-अपने मतों के महत्त्व को कसौटी पर कसा।

भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 ई० से पूर्व 1765 ई० में ही भोजपुरी क्षेत्र में आंग्ल शासकों को चुनौती दी गई। चौसा, हुस्सेपुर, बक्सर, झारखण्ड में अंग्रेजों को नाकों चना चबवाया गया। बाबू कुँवर सिंह ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध मोर्चा लिया था, जिससे पूरा राष्ट्र प्रभावित हुआ। राहुल सांकृत्यायन, भिखारी ठाकुर की कृतियों से पूरे भोजपुरी क्षेत्र में नवजागरण की लहर फैली। इसी अवधि में प्रबन्ध-काव्य, खण्ड-काव्य, कथा-साहित्य, नाटक, संस्मरण, समालोचना, पत्रकारिता जैसी विधाओं का भी पल्लवन हुआ।

समाज के हाशिए पर स्थित समुदायों को लेकर दलित साहित्य रचा जा रहा है। भोजपुरी में यह वेदना 20वीं सदी के आरम्भ में ही देखी जा सकती है। पटना के हीरा डोम ने 'अछूत के शिकायत' लिखा, जिसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका में 1914 में प्रकाशित किया, जिसका प्रत्येक शब्द मननीय है—

हमनी के रात दिन दुखवा भोगत बानी,
हमनी के सहेबे से मिनती सुनाइबि।
हमनी के दुख भगवनवों न देखताजे,
हमनी के कबले कलेसवा उठाइबि।

❑ ❑ ❑

हड़वा मसुइया के देहिया ह हमनी के,
ओकरे के देहिया बभनओं के बानीं।
ओकरा के घरे-घरे पुजवा होखत बाजे,
सगरे इलकवा से लेले जजमानी।
हमनी इनार के निगिचे न जाइलेजा,
पांके में से भरि-भरि पियतानी पानी।
पनही से पिटि-पिटि हाथ गोड़ तुरि देले,
हमनी के एतनी काहे के हलकानी।

भोजपुरी के आधुनिक साहित्य में नए छन्दों में नई प्रवृत्तियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है। गजलकार तेग अली तेग का 'बदमाश दर्पण' तथा 'बिसराम का बिरहा' बेजोड़ है। अनगढ़ हीरा भिखारी ठाकुर, पुरबी के उद्भावक महेन्द्र मिसिर तथा भोजपुरी के समर्पित साधक महेन्द्र शास्त्री की उपलब्धियों से भरपूर भोजपुरी साहित्य क्षेत्रीय, राष्ट्रीय से आगे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जन-जन की धरोहर है। भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम के योद्धा कवि रघुवीर नारायण, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, सरदार हरिहर सिंह 'चंचरीक' थे, जिनकी पंक्तियाँ महात्मा गाँधी को मर्माहत करती थीं—

सुंदर सुभुमि भैया भारत के देशवा से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया

❑ ❑ ❑

अपर प्रदेस देस सुगम सुघर बेस,
मोरे हिंद जग के निचोड़ रे बटोहिया

❑ ❑ ❑

भारत बेहाल भइल लोग के इ हाल भइल
चारो ओर मचल हाय-हाय रे फिरंगिया

भोजपुरी इलाके की माटी महिमामयी है—

हाथे बा लाठी करेज शेर बब्बर के
हुमकत हियाव मरदाही के बाना बा।

देश-प्रेम के उमंग छउकत बा अंग-अंग
एह जाके लोग सभे बाँका मरदाना बा। —बच्चू पाण्डेय

मोती बी०ए० ने 'भोजपुरी सुभाव' को सही आँका था—

भोजपुरियन के हे भइया का कहेलऽ
खुली के आवऽ अखाड़ा लड़ा दीहे सँ।
तोहरे चरखा पढ़वला में का थइल बा
तोह के सगरो पहाड़ा पढ़ा दिहे सँ॥

गाँधी बाबा की पुकार पूरे भोजपुर में गूँजती रही—

गाँधी बाबा के पुकार भइया हो जा तू तइयार
तनी कन्हवा लगा दे ए लड़इया में।
गोरा करे अत्याचार, लूटे देसवा तोहार
पड़ल घर के इजतिया पाँतरवा में।

आजादी न मिलने पर भोजपुरी भाई-बहनों ने गाया—

राजा पंचम जी का एके लड़किया हो
गांधी जी से लिखल बा बिअहवा, हाय सीताराम से बनी।
जब हो गांधी दुलहा मड़उवा भिरी आवेले,
मड़वे में करें ठकठेनिया, हाय सीताराम से बनी।

❑ ❑ ❑

डिप्टी, दरोगा सबके तलब बढ़ा देहु,
हमरा के दे द सुराजवा हाय सीताराम से बनी॥

अपनी भोजपुरी लोक-संस्कृति के मूल तत्त्व अध्यात्म, धर्म, संस्कृति हैं जिनके प्राण, आधार और आधेय के रूप में देवाधिदेव शंकर, राम, कृष्ण हैं। प्रात:स्मरणीय ये देव लोक के ऊपर होकर भी लोक में अनुस्यूत हैं, व्यष्टि होकर भी समष्टि हैं। चन्दन में सुगन्ध, शरीर में प्राण, दूध में मक्खन सदृश शंकर, राम, कृष्ण जन-मन में बसे हुए हैं। 'बम-बम', 'हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे', 'राम मड़ैया', 'सीता-रसोइया', 'श्रीराम', 'जय-जय श्रीराम', 'जय राधे राधे', 'जय कन्हैया लाल की' जैसे शब्द नित-प्रति सबकी जिह्वा से उच्चरित होते रहते हैं। आराध्य देवताओं के लीला-चरित मानवता के परमोत्कर्ष प्रकाश हैं जिनमें अनन्त माधुर्य, अनुपम नव-सौन्दर्य तथा नित्य सहज समता है। सर्वसुलभ शिव को रिझाने में भक्त की चिन्ता देखिए—

का लेके शिव के मनाइबि हो शिव मानत नाहीं।
कोठा अटारी शिव के मनहीं न भावे, टूटही मड़इया कहाँ पाइबि हो।
शिव मानत नाहीं।
पूड़ी मिठाई शिवके मनहीं न भावे, भांग धतूरा कहाँ पाइबि हो।
शिव मानत नाहीं।

सीता–राम, राधा–कृष्ण के उल्लेख बिना लोक–जीवन की कल्पना नहीं हो सकती। 'रमइया' (राम) का मुण्डन है, माता कौशल्या 'गोतिन–परोसिन', 'सखियाँ–सलेहर' सबको स्वयं 'न्यौतने' जाती हैं—

**घर-घर फिरेली कौसिला रानी**
**गोतिनी बोलावेलि हो**
**गोतिनी हमरे मड़इया तरे आव**
**रमइया जी के मूड़न हो।**

अपने देवगण भक्तों की जड़ता में प्राण का संचार करते हैं। वे लोक–संग्रही हैं, भक्तवत्सल हैं। किसी के पति हैं, किसी के मीत हैं, किसी के भाई हैं, किसी के पुत्र हैं। देवताओं के जीवन की उदारता अपनत्व में विश्वत्व को अन्तर्भावित कर लेती है इसीलिए वे लोक–जीवन के सर्वस्व हैं।

जनपदीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता पारिवारिक सम्बन्धों की रसमयता है। भोजपुरी के कवि चन्द्रशेखर मिश्र ने द्रौपदी और कृष्ण के बीच भाई–बहन का नाता जोड़ा और उसमें बीरन (भाई) के रूप में कृष्ण का चित्रण बहुत मार्मिक है—

**नंगी हमैं सब देखन चाहेलें**
**घींचि ले धोती इहै चरचा बा,**
**जानऊँ न मैं बिरना मोरि भागि में**
**कइसन कौन विधान रचा बा,**
**एकै तोहैं तजि देस देसंतर**
**कै ठकुरान ऐहीं ठकचा बा,**
**बीरन जादव बंश कै नाहर**
**खाली भरोस तोहार बँचा बा॥**

भारतीय भाषाओं में हिन्दी के बाद भोजपुरी ही है, जो किसी एक प्रान्त या देश की घेरेबन्दी में नहीं है। इसके मंगल, सोहर, बधाई, बिदाई गीत मारीशस, सूरीनाम आदि देशों तक गाए जा रहे हैं। घर–घर में गाए जाने वाले गीतों के कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं—

**गाई के गोबरे महादेव अँगना लिपाई**
**गज मोतिया हो महादेव चौका पुराई**
**सुनी ऐ शिव शिव के दोहाई।**

❑ ❑ ❑

**काँच ही बाँस के बँहँगिया, बहँगी लचकत जाय**
**होई ना बलम जी कहँरिया, बहँगी घाटे पहुँचाय।**

❑ ❑ ❑

केरवा जे फरेला घेवद से, ओह पर सुगा मेड़राय
सुगवा के मरबो धनुस से, सुगा गिरिहें मुरुछाय
सुगनी जे रोवेले वियोग से, अदित होखीं ना सहाय।

❑ ❑ ❑

पुत्र जनम मनभावन मंगल गाइब हो।
रामा जुग-जुग जियै मोर ललनवा निरखि सुख पाइब हो,
रामा लेई के ललनवा के गोद बिहँसि हम खेलाइब हो
ललना के देखि कै सुरतिया त नयना जुड़ाइल हो॥

❑ ❑ ❑

बेटी! आँखि के रे पुतरिया,
दिनवाँ हरेलू ए बेटी भूखिया रे पियसिया।
रतिया रहेलू ए बेटी बाबा सुख रे निनिआ॥

'लोक' देश का ही रूप है। लोक अपने में विशाल अर्थक्षेत्र समेटता है। समस्त दृष्टिगत संसार में लोकगीत प्रकृति का सहज उद्रेक है जैसा कि प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे ने 'मानव और संस्कृति' के पृष्ठ 164-165 में लिखा है—

''लोक-गीत स्वत: स्फूर्त प्राकृतिक काव्य के अंग हैं। लोक-गीतों में उनके रचयिता या रचना-काल का प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहीं होता, उनका महत्त्व तो उनकी रसोद्रेक की शक्ति तथा सरल सौन्दर्य में रहता है। उनमें एक व्यक्ति की अनुभूति की अपेक्षा लोक-हृदय की अनुभूति ही अधिक रहती है। व्यक्ति-विशेष की भावनाओं का प्रतिनिधित्व न कर लोक-गीत समुदाय की भावना के कहीं अधिक सच्चे प्रतीक होते हैं। काल और स्थान की सीमा को लाँघ, लोक-गायकों और गायिकाओं के अधरों पर जीवित रहने वाले ये लोक-गीत अतीत की परम्परा के गीतों के बाह्य स्वरूप में कतिपय परिवर्तन अवश्य होते हैं, किन्तु उनके अनेक मूल, मूलभाव तथा अभिव्यक्ति की अपनी विशेष शैली सामान्यत: अपरिवर्तित ही रहती है।''

भिखारी ठाकुर ने अपने लोक-गीतों तथा नाटकों द्वारा भोजपुरी समाज में फैली तमाम कुरीतियों, धार्मिक अन्धविश्वासों, जातीय और लैंगिक शोषणों के खिलाफ जन-जागरण का कार्य किया। उनकी नायिका प्यारी सुन्दरी अपना दु:ख बटोही से कह रही है—

पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया।
रात नाहिं नींद दिन तनी ना चएनवाँ, ए बटोही भइया।
सहतानी बहुते कलेसवा ए बटोही भइया।
रोवत-रोवत हम भइलीं पगलिनियाँ, ए बटोही भइया।
एको ना भेजवलन सनेस, ए बटोही भइया।
नाहके जवानी हमके दिहलन विधाता, ए बटोही भइया।
कुछ दिन में पाक जाई केस, ए बटोही भइया।

आजादी के बाद भोजपुरी भाषा और साहित्य ने अपने को नए रूपरंग में ढाला और ऊर्जस्वित किया है। साहित्य की सभी विधाएँ इसमें विकसित हुईं, प्रौढ़ हुईं। गद्य के साथ भोजपुरी कविता के कथ्य में आए विस्तार तथा शैली की पुष्टि हेतु कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं—

कमइया हमार चाट जाता
इहे बाबू भइया
जेकरा आगे जोंको फीका
अइसन ई कसइया
दूहल जाता खूनो जेकर
अइसन हमनी गइया
कमइया हमार चाट जाता
इहे बाबू भइया।

—आचार्य महेन्द्र शास्त्री

अंग्रेजी में टॉमस ग्रे की 'एलेजी' और निराला की 'सरोज स्मृति' के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित पंक्तियाँ मार्मिकता में आगे हैं—

अनुरागी के देख बिरागी काहे दुनिया रोई
देहिया धइले ना जानीं कि केकर का गति होई

❑ ❑ ❑

हमरे घर के पीछे रहली ह बुढ़िया रमराजी
जिनगी भर विधवापन खेपली खइली सतुआ भाजी
जनमें उनके बपसी मरलें, गवना होते माई
सेजिया चढ़ते पिया गुजरले अइसन करम कमाई।
ससुरे उनका कोइला बरिसल नइहर भरल अन्हरिया
बोझा भइल जवानी दिन-दिन बैरिन भइल उमिरिया।

—जनार्दन पाण्डेय 'अनुरागी'

कन्याओं की विपदा पर धरीक्षण मिश्र की ये पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं—

चौदहे बरिस घर राम छोड़ि देहले त
पोथी के पोथी लोग लिखले बा कहनिया
जनमभूमि छोड़ि देत बानी आजीवन हम
माथ पे चढ़ा के माई-बाप के बचनिया
हमरी बेर बाकी त दुकाहे दो सूखि गैल
बलमीक व्यास कालिदास के कलमिया
हमरा ए त्याग पर लिखाइल ना ग्रंथ एको
एहि दुखे डोली में रोवत जाति कनिया।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, भोजपुरी संसद (काशी),

भोजपुरी साहित्य मन्दिर, भोजपुरी मैथिली अकादमी (दिल्ली), भोजपुरी परिवार (पटना), भोजपुरी मण्डल (बक्सर), भोजपुरी भाषा सम्मेलन (पटना), भोजपुरी साहित्य परिषद् (नेपाल), भोजपुरी साहित्य परिषद् (पतरातू), बंग भोजपुरी परिषद् (कोलकाता), भिखारी ठाकुर आश्रम (कुतुबपुर, छपरा), भोजपुरी भारती (छपरा) जैसे शताधिक संगठन जिस भोजपुरी भाषा और साहित्य के उन्नयन में दत्तचित्त हैं, भला उसकी बहुमुखी प्रतिभा एवं थाती से कौन अपने को दूर रखना चाहेगा। अनेक प्रान्तों में व्यवस्थित रूप से संचालित भोजपुरी अकादमी, विश्व भोजपुरी परिषद् इस अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की समृद्धि के लिए समर्पित हैं।

## भोजपुरी गायकी

लीला मिश्र, जद्दन बाई (नरगिस की माँ), बैजयन्तीमाला, कुमकुम, पद्मा खन्ना, तनूजा, पिंकी यादव जैसी प्रसिद्ध तारिकाओं ने भोजपुरी को ऊँचाई पर पहुँचाया। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार, "भारतीय स्त्री ही अधिकांश लोक-गीतों की कवयित्री ऋषिका है। इस मंगलयानी गँवारिन के सुरीले कण्ठ की अमृत-ध्वनि गीतों के रूप में मूर्त है।" दिलराज कौर, मालिनी अवस्थी, अलका याज्ञिक, ऊषा मंगेशकर, आशा भोसले ने भोजपुरी गायन को लोकप्रिय बनाया। निम्नलिखित पंक्तियाँ सबकी जिह्वा पर हैं—

**हो रामा रिमझिम झरेला सारी बुनिया**
**मगन सारी दुनिया ए रामा।**

❑ ❑ ❑

**कहे के त सभ केहू आपन, आपन कहावे वाला के बा**
**सुखवा त सभे केहू बाँटै, दुखवा बँटावेवाला के बा।**

पद्मभूषण गिरिजा देवी, श्रीमती शारदा सिन्हा, विन्ध्यवासिनी देवी, सुभद्रा वीरेन्द्र, मैना देवी, डॉ० कमला सिंह, मोनिका अग्रवाल, पद्मा गिडवानी, आरती पाण्डेय, मंजुला दिवाकर, शान्ति जैन, कुमुद अखौरी, मनोज तिवारी, भरत शर्मा 'व्यास', बालेश्वर यादव, ब्रजकिशोर दुबे द्वारा भोजपुरी गायकी को समृद्ध किया गया है।

लोक-गीत घर-घर का, हर युग का, हर व्यक्ति का इतिहास है। पद्मश्री श्रीमती शारदा सिन्हा के गीत इसके उदाहरण हैं—

**जगदंबा घर में दियरा बार अइनी हो**

❑ ❑ ❑

**पनिया के जहाज में पलटनिया बनि अइहा पिया**
**लेले अइह पिया सेन्हुरा बंगाल से**

❑ ❑ ❑

**कोयल बिन बगिया ना सोहे राजा**

❑ ❑ ❑

**राम के नगरिया से अइली बरिअतिया**
**जनक नगरिया भइले शोर हाय रे जियरा।**

सर्वश्री उदयनारायण तिवारी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, भगवतीशरण उपाध्याय, कृष्णदेव उपाध्याय, देवेन्द्रनाथ शर्मा, गणेश चौबे, विद्यानिवास मिश्र, मोती बी०ए० जैसे सपूत साहित्यकारों की जननी भोजपुरी आज विश्व-पटल पर गर्वोन्नत है। विद्यापति, कबीर, तुलसीदास से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य के विकास में भोजपुरी का अवदान अविस्मरणीय है। हिन्दी के श्रेष्ठ साधक अपने घर में ठेठ जनपदीय भाषा बोलते थे परन्तु राष्ट्र, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रोत्थान हेतु हिन्दी को ही वरेण्य मानते थे, जिसके संवर्द्धन के निमित्त उनका जीवन समर्पित था। विश्व की सम्पर्क भाषा बनने के लिए हिन्दी भोजपुरी के स्वर्णिम साहित्य से संश्लिष्ट है।

## शब्दकोश

**सब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जानै बोल।**
**हीरा तो दामों मिले, सब्दहि मोल न तोल॥** —कबीर

शब्द शक्तिशाली औषधि है, जिसका उपयोग कर मानव अपनी जीवन-यात्रा सशक्त और सफल बनाता है। विचारक काउले के अनुसार—

''Words that weep, and tears that speak.''

(कुछ शब्द रोते हैं और कुछ आँसू बोलते हैं)

कुछ शब्द बेधते हैं, सालते हैं, चकनाचूर कर देते हैं—

**जख्म तलवार के गहरे भी हों मिट जाते हैं,**
**शब्द तो दिल में उतर आते हैं भालों की तरह।**

अक्षर से शब्द, शब्द से भाषा बनती है, जिसके अभाव में व्यक्ति गूँगा, बकलोल, मूक, मौनी बन जाता है, जीवन की सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है— 'वाचामेव प्रसादेन, लोकयात्रा प्रवर्तते'। कहा जाता है कि—

''एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुष्टुप्रयुक्तः स्वर्गेलोके कामधुग् भवति।''

शब्दों में असीम शक्ति है—

**उसके गले में खुदा की अजीब बरकत है,**
**दो लफ्ज बोल के वो दुनिया खरीद लेता है।**

वस्तुतः शब्द 'शिव' है, अर्थ 'शक्ति' है। शब्द 'वृक्ष' है, अर्थ 'फूल-फल' है। जीवन-जगत् का सारा प्रपञ्च शब्द अर्थ के भाव-विवर्त्त हैं। शब्द के अर्थ अपने समाज की बुनावट, परम्परा, सभ्यता, संस्कृति के क्रियात्मक रूप होते हैं। शब्दकोश में शब्द-अर्थ की वर्ण क्रमानुसार प्रस्तुति ही नहीं होती, इसमें शुद्ध वर्तनी, व्युत्पत्ति, पर्याय, विपर्याय, प्रचलित-अप्रचलित अर्थ, क्षेत्रीयता की छौंक, लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली आदि का सुगम मनोरम समाहार होता है।

कोश-कार्य व्यावहारिक भाषा विज्ञान का विषय है, जो बहुत ही समयसाध्य,

श्रमसाध्य और व्ययसाध्य है। अंग्रेजी की 'वेब्स्टर न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी' के प्रथम संस्करण के प्रकाशन में 102 वर्षों का समय लगा। सन् 1807 ई० में नोआ वेब्स्टर ने इसका कार्य प्रारम्भ किया। एक के बाद एक चार महान् विद्वानों ने इसके सम्पादन में अपनी आहुति दी। इस कार्य में 100 संग्रहकर्ता, स्वयंसेवी के रूप में 800 पाठकों का योगदान था। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी 'फिलालॉजिकल सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' के तत्त्वावधान में 1857 ई० में शुरू हुआ और 1933 ई० में समाप्त हुआ। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से 'हिन्दी शब्द-सागर' लगातार एक दशक तक कार्य होते रहने के पश्चात् ही खण्डशः प्रकाशित होने लगा और इसके बाद ही लगभग बीस वर्षों में (1910 ई० से 1929 ई० तक) उसका सम्पादन और प्रकाशन पूरा हुआ। पूना में संस्कृत-कोश के संग्रह-सम्पादन का कार्य सन् 1948 ई० में प्रारम्भ हुआ। इस समय इस कार्य में लगभग पचास सुयोग्य कार्यकर्ता लगे हुए हैं। कोश-सम्बन्धी पर्याप्त सामग्री वहाँ सुलभ है।

भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश की परम्परा पर दृष्टिपात करें तो निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्राप्त होते हैं—

1801 - हेरासिम लेवेफेड - *'ए ग्रामर ऑफ प्योर एंड मिक्स्ड ईस्ट इण्डियन डायलेक्ट्स'*

1867 - जॉन बीम्स - *'नोट्स ऑन द भोजपुरी डायलेक्ट्स ऑफ हिन्दी स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार'*

1876 - सेमुअल केलॉग - *'ए ग्रामर ऑफ द हिन्दी लैंग्वेज'*

1878 - फैलन लाला फकीरचन्द - *'न्यू हिन्दुस्तानी इंगलिश डिक्शनरी'*

1885 - डॉ० ग्रियर्सन - *'बिहार पिजैंट लाइफ* (बोली, शब्दावली) *: लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया'*

1885 - डॉ० ग्रियर्सन और हार्नले - *'ए कम्परेटिव डिक्सनरी ऑफ दी बिहारी लैंग्वेजेज़'*

1940 - एल० सेंट जोसेफ - *'भोजपुरी शब्दकोश'* (मोतिहारी मिशन हाउस से प्रकाशित, जिसमें भोजपुरी के डेढ़ हजार शब्दों के अर्थ अंग्रेजी में प्रस्तुत)

1951- हजारीप्रसाद गुप्त - *'भारतीय औद्योगिक शब्दावली का अध्ययन'*

-डॉ० नवल किशोर राय - *'गाजीपुर के कृषक जीवन सम्बन्धी शब्दावली'*

-हरदेव बाहरी

1978 - ब्रजबिहारी कुमार - *'भोजपुरी शब्द सम्पदा'*

2003 - सुचिता रामदीन - *'भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश'*

-विद्यानिवास मिश्र - *'मारीशस की भोजपुरी का शब्दकोश'*

2005 – विद्यानिवास मिश्र, पं० गणेश – *'हिन्दी की शब्द सम्पदा', चन्दन चौक'*
चौबे एवं डॉ० अरुणेश नीरन – *'भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश'*
–शुकदेव सिंह – *'भोजपुरी एवं खड़ी बोली के व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन'*

2009 – केन्द्रीय हिन्दी संस्थान – *'भोजपुरी-हिन्दी-इंग्लिश लोक-शब्दकोश'*

शब्दकोश तो शब्दों का महासागर होता है, जिसमें अवगाहन कर बुद्धिजीवी जीवन-रत्नों को सहेजते हैं। 'लोके वेदे च' का आश्रय पाकर तत्सम, तद्भव, परिनिष्ठित प्रवहमान शब्दों के संकलन से सूझ, बूझ, बोध, अभिव्यक्ति क्षमता की वृद्धि होती है और इसी से राष्ट्रभाषा को सामर्थ्यवान् बनाया जाता है। 'भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश' मात्र शब्द, लोकोक्ति, मुहावरा, पहेली का संचयन नहीं है, यह तो मानवीय दृष्टि को व्यापक बनाने का स्रोत है जो आज के समग्र विकास के निमित्त प्रासङ्गिक ही नहीं अपितु अपरिहार्य है।

## निखरती भोजपुरी भाषा के निमित्त....

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (दिसम्बर, 1947 ई०) में अपने लिखित वक्तव्य में बताया—"हिनुतान हमनी के देस, हमनीके बड़का देस के भाखा हिनुई, भला ओकर पुछार के ना करी? हिनुई के राज समूचा हिनुतान में रही।" पहले 'हिनुतान', 'हिनुई', 'भाखा' जैसे शब्द चल जाते थे, परन्तु अब भोजपुरी के अटूट खाँटी क्षेत्र के लोगों में 'हिन्दुस्तान', 'हिन्दी', 'भाषा' ही प्रयुक्त होते हैं, जिनमें भोजपुरी का सुसंस्कृत रूप दृष्टिगत होता है। प्रारम्भ के भोजपुरी शब्दकोशों में 'य', 'व', 'श', 'ष', 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' को स्थान नहीं दिया गया है जिस पर विचार होना चाहिए। यदि हम 'य' नहीं अपनाएँगे तो 'यज्ञोपवीत, यह, यहाँ, युवक, यादव, यायावर, यार, यारी, युग, योग, योग्य, योजना, योनि' की अभिव्यक्ति सहज नहीं होगी। 'य' के बदले 'ज' अपनाने से 'जाजावर, जार, जारी, जह, जुवक, जोग, जोजना, जोनि' विचित्र अर्थ देने लगेंगे। भोजपुरी जगत् के सभी यादव अपने को 'यादव' ही लिखते हैं, 'जादव' नहीं। निरक्षर नागरिक भी 'विधान, विधायक, वहाँ, वेद, वोट, वकील, वाक्य, वाद, विभाग, विज्ञान, विकास, विवाह, व्रत, व्याख्या' का ही प्रयोग करते हैं। 'शंभु, शंकर, शक्ति, शब्द, शर्मा, शिक्षा, श्रीमंत, शुभ' को गलत लिखकर हम शर्मिन्दे होंगे, 'शंकर' संकर बनकर अमङ्गलकारी सिद्ध होंगे। 'षट्, षष्टि, षट्कर्म, षडानन, षष्ठी, षोडशोपचार' की उपस्थिति से हमारी संस्कृति गौरवदीप्त होगी। 'क्षण, क्षत्र, क्षमा, क्षात्र, क्षीर, क्षुधा, क्षेत्र' जैसे शब्द तो अपरिहार्य हैं। 'त्रेता, त्रयोदशी, त्राता, त्रिया, त्रैलोक' तो भोजपुरी में रच-बस गए हैं। 'ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञानेन्द्रिय, ज्ञापित, ज्ञेय' शब्द-समूह से ज्ञान के विविध आयाम सुस्पष्ट होंगे। आशा है भोजपुरी जगत् में इस प्रयास का स्वागत होगा। 'संज्ञा' को 'संग्या', 'ऋषि' को 'रिसि', 'लौकिक' को

'लवकिक' लिखकर खाँटी भोजपुरी का ढोंग हास्यास्पद है। तत्सम शब्दों को आत्मसात् करके हमारी भाषा प्रौढ़ होगी, उसकी अभिव्यक्ति-क्षमता में वृद्धि होगी एवं भोजपुरी के परिमार्जित साहित्यिक रूप में निखार आएगा जो असन्दिग्ध है। क्षेत्रीयता, राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित भोजपुरी ने विश्व की प्रमुख भाषाओं के शब्दों को नि:संकोच रूप से आत्मसात् किया है। इनवर्टर, कम्प्यूटर, किचेन, केटली, फ्री, फ्रीज, वाइपर, वायरल, सीवर जैसे असंख्य शब्द लोकप्रिय हैं। इस शब्दकोश में उन्हें समाहित कर भोजपुरी के अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप को प्रमाणित किया गया है।

अपना देश विश्वमंच पर बड़ी तेजी से सुप्रतिष्ठित हो रहा है। भारतीय संस्कृति को जानने, अपनाने की ललक के बढ़ने से मातृभाषाओं की ओर सबका ध्यान है। अपनी सांस्कृतिक गरिमा को ऊँचाई देने के निमित्त भाषाई उपकरण की उपलब्धता आवश्यक है। महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो० गिरीश्वर मिश्र जनपदीय भाषाओं के संवर्द्धन से हिन्दी के विराट् स्वरूप को निखारने का सारस्वत अनुष्ठान कर रहे हैं, जिससे हिन्दी गौरवदीप्त हो रही है। इनके शुभाशीर्वाद से ही कोश का शुभानुष्ठान सम्पन्न हो रहा है। 'हिन्दी शब्दसागर', 'बृहत् हिन्दी कोश', 'भोजपुरी शब्द सम्पदा', 'भोजपुरी-हिन्दी-शब्दकोश' (भोजपुरी संसद), 'भोजपुरी-हिन्दी-शब्दकोश' (सेतु-न्यास), 'कृषि कोश', 'कहावत कोश', 'पहेली कोश' प्रभृति कोशों एवं भोजपुरी कृतियों के आधार पर 'भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश (भोजपुरी लोकोक्ति-मुहावरा-पहेली-संचयन)' की प्रस्तुति में डॉ० अरुणेश नीरन, अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव, विश्व भोजपुरी सम्मेलन की सत्प्रेरणा है। अर्द्धाङ्गिनी उषा सांकृत्यायन एवं पुत्र गिरिजेश, विमलेश तिवारी का सतत सहयोग ही सम्बल है। भोजपुरी और हिन्दी के गौरववर्द्धन हेतु विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी के मोदी द्वय आदरणीय अनुरागजी का आग्रह तथा परागजी के सत्परामर्श की परिणति स्वरूप 'भोजपुरी-हिन्दी-शब्दकोश' प्रस्तुत है। शब्द-अर्थ के साथ भोजपुरी लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों का दुर्लभ संचयन इस ग्रन्थ की विशिष्टता है, जिससे शब्दकोश गरिमादीप्त है।

'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के स्रोत आदिगुरुदेव देवाधिदेव महादेव शङ्कर के चलते अपनी भोजपुरी मधुमय, मंगलमय, ममतामय, महिमामय है। इस 'भोजपुरी-हिन्दी-शब्दकोश' को सर्वाङ्गपूर्ण एवं निर्दोष बनाने में सुधीजनों का सारस्वत सहयोग सतत सुग्राह्य है। आशा है कि इसका अध्येता अवश्यमेव अक्षयकीर्तिसम्पन्न होगा। इति शुभम्!

**अर्जुन तिवारी**
काशी पत्रकारिता पीठ
एन-10/29 के-1, जानकीनगर, बजरडीहा
वाराणसी- 221109
दूरभाष - 08765628058

# संकेताक्षर विवरण

## पदपरिचय ( व्याकरणिक ) सम्बन्धी संकेत

| | |
|---|---|
| अक० | अकर्मक क्रिया |
| अनु० | अनुकरण शब्द |
| अव्य० | अव्यय |
| उप० | उपसर्ग |
| कहा० | कहावत |
| क्रि० | क्रिया |
| क्रि०वि० | क्रिया विशेषण |
| पर० | परसर्ग |
| पर्या० | पर्याय |
| पु० | पुल्लिग (संज्ञा) |
| प्रत्य० | प्रत्यय |
| मुहा० | मुहावरा |
| यौ० | यौगिक |
| लोको० | लोकोक्ति |
| वा० | वाक्य |
| वि० | विशेषण |
| व्या० | व्याकरण |
| सक० | सकर्मक क्रिया |
| सर्व० | सर्वनाम |
| स्त्री० | स्त्रीलिंग (संज्ञा) |

नोट : व्याकरणिक संकेत 'इटैलिक' में दिये गये हैं।

## स्त्रोत ( भाषा ) सम्बन्धी संकेत

| | |
|---|---|
| अं० | अंग्रेजी |
| अ० | अरबी |
| अर्द्ध० | अर्द्ध मागधी |
| अप० | अपभ्रंश |
| अव० | अवधी |
| तु० | तुर्की |
| देश० | देशज |
| पा० | पालि |
| फा० | फारसी |
| ब्रज० | ब्रजभाषा |
| सं० | संस्कृत |
| हिं० | हिन्दी |

नोट : भाषा संकेत [ ] में दिये गये हैं।

## अन्य संकेत

| | |
|---|---|
| < | से व्युत्पन्न |
| = | समान अर्थ |
| > | रूप-परिवर्तन |
| इ० | इत्यादि |
| ई० | ईसवी |
| उदा० | उदाहरण |
| क्व० | क्वचित् (कहीं-कहीं प्रयुक्त) |
| दे० | देखिए |
| प्र० | प्रसंग |
| मि० | मिलाइए |
| लोक० | लोकगीत |

# कोश देखने हेतु निर्देश

1. शब्दों को देवनागरी वर्णों में **अकारादि क्रम** में प्रस्तुत किया गया है।
2. बड़े (काले) अक्षरों में भोजपुरी के शब्द हैं, जैसे—**अँकवारी, ममहर, सूप, सेज-सेजिया, होरहा**।
3. शब्दों की व्याकरणिक कोटि दी गई है यथा—पु० (पुल्लिग), स्त्री० (स्त्रीलिंग), वि० (विशेषण), अव्य० (अव्यय)....आदि।
4. चौकोर बड़े ब्रैकेट में शब्दों की व्युत्पत्ति प्रस्तुत है जैसे—**अँउठा** [सं० अंगुष्ठ, हिं० अंगूठा], **दही** [सं० दधि], **महंथ** [सं० महत्], **रोजगार** [फा०], **रोडवेज** [अं०]।
5. शब्दों का समतुल्य अर्थ लिखा गया है यथा—तट : किनारा, कूल। बेआकुल : व्यग्र, परेशान, व्याकुल।
6. एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थों को ; (सेमिकोलन) से पृथक् किया गया है—**दिल** : एक अवयव जिससे शरीर में रक्त-संचार होता है; हृदय, मन, जी; हिम्मत; हौसला; इच्छा। **पकल** : अनाज-फल का परिपक्व होना; कच्चा न रहना; सीझना; (बालों का) सफेद होना; गर्मी में कड़ा होना।
7. शब्दों को हृदयंगम कराने के निमित्त लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों का दुर्लभ संचयन इस शब्दकोश का विशिष्ट आकर्षण है।
8. लोकप्रिय गीत, उक्ति देकर शब्दों की व्यापकता को सुस्पष्ट किया गया है। जैसे—'मइया के जीव गइया अइसन', 'रंडी केकर बहू, भड़ुआ केकर सार'।
9. प्रथित साहित्यकारों की सूक्तियों द्वारा शब्दों की सुग्राह्यता बतलाई गई है—'परहित सरिस धरम नहिं भाई' (तुलसीदास), 'कमइया हमर चाट जाता इहे बाबू भैया' (महेन्दर मिसिर)।

# अनुक्रमणिका

## परिशिष्ट



●

# भोजपुरी-हिन्दी-शब्दकोश

## अ

**अ** देवनागरी वर्णमाला का यह प्रथम अक्षर है, जो स्वर वर्ण है। कण्ठ से उच्चरित इस स्वर की सहायता से सभी व्यंजन वर्ण बनते हैं :
जैसे— क् + अ = क
प् + अ = प
कामधेनु तन्त्र में लिखा गया है—
श्रृणु तत्त्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा॥
पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तित्रयसमन्वितम्।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमत्।
बिन्दुतत्त्वमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणीम्॥
(शिव पार्वती से कहते हैं, हे सुमुखी! अकार के अति गोपनीय तत्त्व को सुनो। यह शरच्चन्द्र के समान प्रकाशमान और सदा पञ्चकोणमय है। यह वर्ण पञ्चदेवमय तथा तीनों शक्तियों से समन्वित है। निर्गुण होते हुए भी तीनों गुणों से संयुक्त तथा स्वयं मूर्तिमान कैवल्य है। यह वर्ण बिन्दुतत्त्वमय और स्वयं प्रकृतिरूपिणी शक्ति है।)
कृष्ण ने गीता में कहा है—
'अक्षराणामकारोऽस्मि' (अक्षरों में मैं 'अकार' हूँ।)
संस्कृत के स्थान, श्लोक, स्थिर जैसे शब्दों के उच्चारण में सुगमता हेतु 'अ' का आगम होता है। जैसे—अस्थान, अश्लोक, अस्थिर आदि।
भोजपुरी में प्राय: 'अ' के स्थान पर 'इ' तथा 'उ' का प्रयोग होता है, जैसे—राति (रात), बइठि (बैठ), आजु (आज), सासु (सास), सुनु (सुन), कहु (कह) आदि।

**अ** *अव्य०* व्यंजन के पूर्व में आकर यह विपरीत, निषेध या अभाव का बोध कराता है, जैसे-अधरमी, असमय, अकाज।

**अं** स्वर वर्ण का पन्द्रहवाँ अक्षर, कुछ का मत है कि यह अनुस्वार मात्र है। एकाक्षर कोश में इसका अर्थ परब्रह्म है। महाभारत (12.17.126) में महेश्वर के अर्थ में इसका प्रयोग है—
'बिन्दुविसर्ग: सुमुख:शर: सर्वायुध: सह:।'
बिन्दु, विसर्ग, सुमुख, शर, सर्वायुध और सह—ये महेश्वर के नाम हैं।

**अँ** *अव्य०* वार्तालाप के दौरान 'हाँ, सुन लिया' का बोधक।

**अँइच** *पु०* तनाव, खिंचाव।

**अंइचल** *सक०* हड़पना, खींचना।

**अँइचा** *वि०* [हिं० ऐंचा] भंगा, जिसकी आँख की पुतली एक ओर से खिंचकर दूसरी ओर चली जाती है। *लोको०* 'सवा लाख में अँइचा ताना'।

**अँइजन** *पु०* [अं० इंजिन] इंजन; पुनरावृत्ति का चिह्न; कहीं काजर लगाना।

**अँइटल** *सक०* सूप को इस प्रकार चलाना कि मोटा और पतला अनाज अलग-अलग हो जाय।

**अँइटा** *पु०* ईंट। *कहा०* 'अइँटा से गोंइठा बड़ सुकुमार'।

**अँइटी** *पु०* वह मजदूर जो मिट्टी ढोते समय कुदाल चलाने वाले मजदूर के पास हो।

**अँइठन** *पु०* [सं० आवेष्ठनम्] मरोड़, अकड़; घमण्ड, शेखी। *उदा०* 'सुतरी जर गइल, अँइठन ना गइल'।
**अँइठल** *अक०* बल दिखलाने हेतु व्यग्र होना, बल प्रदर्शित करना, जवानी के जोश में शरीर ऐंठना; मन मसोस कर रह जाना; झटक लेना, हथिया लेना।
**अँइठा** *पु०* घोंघा, शंख की तरह का पानी में रेंगने वाला कीड़ा।
**अँइठाइल** *वि०* ऐंठा हुआ।
**अँइतावल** *अक०* [सं० अवतिक्तः] नमी और सड़ने से तींतापन आ जाना।
**अँउघाइल** *वि०* ढँकी हुई, उल्टा मुँह करके रखा पात्र; अर्द्ध निद्रा की स्थिति।
**अँउघी** *स्त्री०* झपकी, तन्द्रा।
**अँउजा** *पु०* दम घुटने की स्थिति; एकदम ऊबने की स्थिति, परेशानी। **-पथारी** *यौ०* अस्त-व्यस्त, उलझन।
**अँउजाइल** *अक०* घबड़ाना, किंकर्तव्य-विमूढ़ होना।
**अँउटन** *पु०* औंटने (गर्म करने) की स्थिति।
**अँउटाई** *स्त्री०* औंटने (गर्म करने) की क्रिया।
**अँउठा** *पु०* [सं० अङ्गुष्ठः हिं० अँगूठा] हाथ या पैर की पहली मोटी छोटी अँगुली। एक पहाड़ा, जिसमें कोई संख्या साढ़े तीन से गुणित होती है। साड़ी की किनारी। **-देखावल** *मुहा०* इन्कार करना। **-लगावल** *मुहा०* किसी दस्तावेज पर अँगूठे का निशान लगाना।
**अँउठि** *वि०* घुँघराला बाल; अँगूठी-सा।
**अँउठी** *स्त्री०* [हिं० अँगूठी]। अँगुली में पहनने का आभूषण। *उदा०* 'मोर पियवा अँउठी के नगीनवा'।
**अँउसल** *अक०* नये बर्तन को प्रयोग में लाना; कच्ची वस्तु का नरम होकर सड़ने लगना।
**अँउसाइल** *सक०* नये बर्तन को प्रयोग में लाया जाना।
**अंक** *पु०* [सं०] संख्या, संख्या का चिह्न, जैसे-1, 2, 3, निशान; नाटक का एक खण्ड, रूपक का एक प्रकार; परीक्षा में प्राप्त नम्बर, पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की संख्या। **-गणित** *पु०* गणित की एक शाखा जिसमें संख्याओं की गणना हो। **-गत** *वि०* जिसे गोद लिया गया हो। **-तंत्र** *पु०* अंकों का शास्त्र। **-देहल** *मुहा०* गले लगाना। **-भरल** *मुहा०* लिपटाना, गले लगाना।
**अँकटा** *पु०* [सं०] छोटा कंकड़, एक प्रकार की घास और उसका बीज जो गेहूँ आदि के साथ मिला होता है।
**अँकटी** *स्त्री०* कंकड़ का छोटा टुकड़ा।
**अंकड़ा** *पु०* [सं०] कंकड़।
**अँकड़ी** *स्त्री०* छोटा कंकड़।
**अँकरी** *स्त्री०* [सं०] एक प्रकार की घास, जिसे पशु खाते हैं।
**अँकवार** *स्त्री०* गोद।
**अँकवारी** *पु०* [सं०] अंक, आलिंगन।
**अँकाव** *पु०* जाँचने का काम।
**अंकित** *पु०* [सं०] लिखा हुआ, चिह्नित।
**अंकुर** *पु०* [सं० अंकूरः] अंकुर, अँखुआ, कली, नुकीला भाग।
**अँकुराइल** *अक०* अंकुर आना, अंकुर निकलना।
**अंकुस** *पु०* [सं०] अंकुश
**अँकुसी** *स्त्री०* [सं०] अंकुश, लग्गी के सिरे पर बाँधी जाने वाली छोटी लकड़ी, जिससे पेड़ पर लगे हुए फल तोड़े जाते हैं; खूँटी, मुड़ी कील, टेढ़ा लोहा।

**अँकेर** *पु०* दूध बढ़ाने के लिए गाय, भैंस को दिया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ।

**अँकोर** *पु०* [सं०] गोद।

**अँख-छोपनी** *स्त्री०* [सं०] आँख ढँकने के लिए प्रयुक्त वस्तु या ढक्कन, *पर्याय०* 'अँखमुदनी'।

**अँखफोर** *वि०* नवजातों की आँख से आवरण हटने की स्थिति।

**अँखिगर** *वि०* आँखवाला।

**अँखिदेखुआ** *वि०* आँख से देखा हुआ, जिसने अपनी आँखों से देखा हो।

**अँखिफोरू** *वि०* कुत्ते आदि के बच्चों के जन्म के कुछ दिनों के बाद आँख की पपनी का खुलना, सज्ञान, बुद्धिमान।

**अँखिमुदउअल** [सं०] आँख-मिचौनी का खेल।

**अँखिया** [सं०] आँख, *लोको०* 'अँखिया मिलाके, जिया भरमाके चल दिहलऽ'।

**अँखुआ** [सं०] अंकुर, डाभ, कल्ला।

**अँखुआइल** *सक०* अंकुर निकलना *वि०* अंकुरित।

**अंग** *पु०* [सं० अङ्गकं] शरीर, शरीर के अवयव (हाथ, पैर, कान आदि); भाग, अंश। **-चारी** *पु०* घनिष्ठ मित्र। **-चालन** *पु०* अंगों को हिलाना। **-जात** *वि०* अंग से उत्पन्न (पसीना, बाल, पुत्र)। **-जाता** *स्त्री०* पुत्री। **-त्राण** *पु०* जिससे अंगों की रक्षा हो (कवच)। **-भंग** *पु०* शरीर का टूटना। **-सिहरी** *स्त्री०* (हिं०) बुखार के पूर्व का कम्पन। **-ढीला भइल** *मुहा०* थकना। **-उभरल** *मुहा०* यौवन का आगमन। **-टूटल** *मुहा०* अँगड़ाई लेना।

**अँगउछी** *स्त्री०* गमछी।

**अँगऊँ** *पु०* खलिहान में तैयार अन्न में से देवी-देवता, पुरोहित के नाम पर निकाला हुआ अंश।

**अंगड़-खंगड़** *वि०* अनावश्यक; टूटी-फूटी चीज, टूटा-फूटा, बचा-खुचा।

**अँगड़ाइल** *अक०* अँगड़ाई लेना।

**अँगड़ाई** *स्त्री०* जम्हाई के साथ अंग को तानना, *उदा०* 'ले अँगड़ाई उठ हिले धरा' —दिनकर। **-तोड़ल** *मुहा०* अँगड़ाई लेते समय किसी के कन्धे पर हाथ रखकर अपना भार देना; कुछ काम न करना।

**अँगनवा** *पु०* आँगन *कहा०* 'नाचे न जाने अँगनवा टेढ़'।

**अँगनाई** *स्त्री०* भीतर या जनानखाने का आँगन।

**अँगनैया** *स्त्री०* 'आँगन'।

**अँगरखा** *पु०* [सं० अंगरक्षक:] एक लम्बा मर्दाना पहनावा, अंगा, चपकन।

**अँगरल** *अक०* घाव में तीव्र दर्द होना, टपकना।

**अँगरा** *पु०* अंगार, पशुओं के पैर में दर्द होने का रोग।

**अँगरेज** *पु०* इंग्लैंड का निवासी, इंगलिश-मैन।

**अँगरेजियत** *स्त्री०* अँगरेजी चाल-ढाल, अंगरेजपन।

**अँगरेजी** *वि०* [हि० अँगरेज] अंगरेज़ का, अंगरेज सम्बन्धी, *स्त्री०* इंगलिश भाषा, अंगरेजों की भाषा। *कहा०* 'अंगरेजी ना फारसी बाबूजी बनारसी'।

**अंगा** *पु०* [सं० अङ्गरक्षक:] अंगरखा, कुरता, कमीज, अचकन। *कहा०* 'अंगा न टोपी सिपहिया नाँव'।

**अंगार** *पु०* [सं० अङ्गार:] दहकता हुआ कोयला, अंगारा। **-भइल** *मुहा०* क्रोध से लाल होना। **-फाँकल** *मुहा०* अनिष्ट कार्य करना।

**अंगारकाठी** *स्त्री०* दियासलाई, माचिस।

**अंगारपेटी** *स्त्री०* माचिस बॉक्स, दियासलाई की डिबिया।

**अंगारमती** *स्त्री०* [सं०] गलका, हाथ की उँगलियों में होने वाला एक रोग, बड़े-बड़े दाने और ज्यादा दर्द वाली चेचक।

**अंगारा** *पु०* दहकता हुआ कोयला, कण्डा आदि। *वि०* अंगारे जैसा लाल। **-बरसल** *मुहा०* अधिक गरमी पड़ना।

**अँगारा** *पु०* दे० 'अंगारा'।

**अंगारी** *स्त्री०* चिनगारी।

**अँगिया** *स्त्री०* [सं० अङ्गिका] चोली, कंचुकी।

**अँगिला** *वि०* आगे का, *कहा०* 'अँगिला हर जइसे चली तइसे ही नू पछिला हर'।

**अंगीकार** *पु०* [सं० अङ्गीकरणं] ग्रहण, स्वीकार।

**अंगीठी** *स्त्री०* [हिं० अंगीठा] आग रखने का बर्तन, बोरसी।

**अंगुठा** *पु०* दे० 'अँउठा'।

**अंगुरिया** *स्त्री०* दे० 'अंगुरी'।

**अंगुरियावल** सक० उँगली से खोदना।

**अंगुरी** *स्त्री०* [सं० अङ्गुलिः] हाथ-पैर की अँगुली।

**अँगूठा** *पु०* [सं० अङ्गुष्ठः] पैर, हाथ की पहली मोटी उँगली। **-चूमल** *मुहा०* खुशामद करना। **-देखावल** *मुहा०* इनकार करना, नहीं।

**अँगूठियावा** *वि०* घुँघराला (बाल)।

**अंगूर** *पु०* [फा०] दाख, द्राक्षा, लता या उसका फल जो मीठा होता है। **-खट्टा बा** *मुहा०* पहुँच के बाहर होना, असफल होने पर बहाना बनाना।

**अंगूरी** *वि०* [फा०] अंगूर का बना, अंगूर के रंग का। **-सराब** *स्त्री०* अंगूर से बनी शराब।

**अँगेजल** *सक०* सहना, स्वीकार करना, बरदाश्त करना।

**अँगेया** *पु०* भोज निमन्त्रण।

**अँगेर** *पु०* बीज के लिए काटे गए ईख के ऊपर का टुकड़ा।

**अँगोछल** *सक०* गीले कपड़े से शरीर पोंछना।

**अँगोछा** *पु०* [सं० अङ्गप्रोच्छनम्] गमछा, तौलिया, अंगोचन।

**अँगोछी** *स्त्री०* छोटा गमछा।

**अँगोगा** *पु०* किसी वस्तु का वह भाग जो उपयोग करने के पूर्व धर्मार्थ निकाला जाता है। पुरोहित को देने या देवताओं पर चढ़ाने हेतु निकली राशि, अँगऊ।

**अँगोरा** *पु०* दहकता कण्डा का टुकड़ा।

**अँगौरिया** *पु०* मजदूरी के बदले हल-बैल लेकर खेती करने वाला हलवाहा।

**अँचरा** *पु०* आँचल।

**अँचल** *पु०* [सं० अञ्चलः] आँचल; छोर, किनारा, तट, कोना।

**अँचला** *पु०* दे० 'आँचल'।

**अँचवन** *पु०* दे० 'अचवन'।

**अँचवल** *सक०* भोजनोपरान्त हाथ-मुँह धोना।

**अंजन** *पु०* [सं०] काजल, सुरमा।

**अंजना** *स्त्री०* [सं०] हनूमान की माँ; बिलनी। **-नंदन** *पु०* हनूमान

**अंजर-पंजर** *पु०* शरीर का जोड़, ठठरी, हड्डी-पसली; ढाँचा। **-ढीला भइल** *मुहा०* अंगों का शिथिल होना।

**अँजवावल** *सक०* अंजन लगवाना।

**अँजुरी** *स्त्री०* दोनों हथेलियों को मिलाने से बना आकार (गड्ढा) जिसमें भरकर कुछ दिया या लिया जाता है। *उदा०* 'भरि भरि अँजुरी में मोतिया लुटाइब हो, दुलहा दुलहिनिया के मँगिया बहोरब हो'।

**अँजोर** *पु०* उजाला, प्रकाश, *लोको०* 'गोरी के अइले अँजोर हो गइल'।

**अँजोरिया** *स्त्री०* चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। *उदा०* 'साँझ के उगली अँजोरिया ए बाबा, सुकवा उगेला भिनुसार ए'।

**अँटकर** *पु०* अन्दाज, *कहा०* 'अँटकर पच्चे डेढ़ सौ' (केवल अन्दाज पर बातें करना)।

**अँटकल** *अक०* अटकना, स्थानाभाव के चलते टँग जाना या फँस जाना। *वि०* फँसा हुआ, *उदा०* 'अँटकल बनिया देह उधार' *लोको०*।

**अंट-संट** *वि०* दे० 'अंड-बंड'।

**अँटकी** *स्त्री०* अड़चन। *लोको०* 'अँटकी से मटकी'।

**अंटा** *पु०* बड़ी गोली, बड़ी कौड़ी।

**अंटावल** *सक०* स्थान निकालकर भरना या रखना इस तरह बाँटना कि सबको मिल जाय, कमी न पड़े।

**अँटिया** *स्त्री०* घास या फसल का छोटा बोझा या पुल्ला जिसे दोनों हाथों से पकड़ा जा सके।

**अँटियावल** *सक०* पुल्ला बाँधना।

**अंटी** *स्त्री०* गाँठ, टेंट; पहलवानों का एक दाँव; मन में पड़ने वाली एक गाँठ। **-बाज** *वि०* फरेबी, दगाबाज। **-मारल** *मुहा०* कम तौलना, डाँड़ी मारना।

**अँठई** *स्त्री०* किलनी, पशुओं के शरीर पर चिपटे रहने वाले कीड़े।

**अँठली** *स्त्री०* किशोरियों का उभड़ता हुआ स्तन।

**अँठिली** *स्त्री०* आम की गुठली।

**अंठी** *स्त्री०* गिल्टी, गाँठ, गिरह, अँटली।

**अंड** *पु०* [सं०] अण्डा, अण्डकोश; फोता।

**अँड़चल** *अक०* इतराना, *उदा०* 'सेतिहा के धन पाके अँड़चल'।

**अंड-बंड** *पु०* बेसिर पैर की बात। *वि०* बेसिर-पैर का, ऊटपटाँग।

**अंडस** *स्त्री०* अड़चन, कठिनाई।

**अंड़सल** *अक०* कठिनाई में फँसना।

**अंडा** *पु०* [सं० अण्डम्] गोल पिण्ड या खोल जिसमें से साँप, चिड़िया, मछली का बच्चा निकलता है। **-फूटल** *सक०* अण्डे से बच्चे का बाहर आना। **-सेवल** *सक०* पक्षियों का अपने अण्डे पर बैठकर गरमी पहुँचाना; घर में बेकार बैठे रहना। *कहा०* 'अंडा सिखावे बच्चा के कि चींचीं कर', 'अंडा सेवे कोई, बच्चा लेवे कोई'।

**अंडी** *स्त्री०* [सं० एरण्डः] रेंड़ का पेड़ या बीज; एक रेशमी कपड़ा।

**अंड़ुआ** *पु०* वह बैल जो बधिया न हो। *कहा०* 'अंड़ुआ बैल हर के जवाल'।

**अंत** *वि०* [सं०] निकट, आखिरी; सबसे छोटा, *कहा०* 'अंत भला तऽ भला'। *पु०* समाप्ति, मृत्यु, अन्तकाल; परिणाम, सीमा। **-काल** *पु०* आखिरी समय, मृत्यु-काल लोक० 'अंतकाल कोउ न संघाती'। **-बनल** *मुहा०* अन्तिम भाग का अच्छा होना। **-बिगड़ल** *मुहा०* अन्तिम भाग का बुरा होना। **-लेहल** *मुहा०* भेद लेना।

**अँतड़ी** *स्त्री०* [सं० अन्त्रम्] आँत।

**अंतर** *वि०* [सं०] आसन्न; निकट; भीतर का, आत्मीय, *पु०* भीतर का भाग; छिद्र; बीच; मन, हृदय; अवकाश; प्रवेश। **-जातीय** *वि०* दो या दो से अधिक जातियों में पाया जाने वाला। **-विवाह** *पु०* (इंटरकास्ट मैरिज) दो विभिन्न जातियों में होने वाला विवाह।

**अँतरा** *पु०* [सं० अन्तरम्] कोना; रुकावट; एक छोड़कर दूसरा; भीतर, बीच में।

**अंतरावल** *सक०* छिपाना, भीतर करना; अलग करना।
**अंतरिख** *पु०* [सं० अन्तरिक्षम्] अन्तरिक्ष।
**अंतरिम** *वि०* दो समयों के बीच का, मध्यवर्ती; अन्तिम आदेश के पूर्व की व्यवस्था। **-आदेस** *पु०* (इंटेरिम ऑर्डर) बीच के समय के लिए जारी आज्ञा।
**अँतरिया** *वि०* एक दिन के अन्तर से आने वाला बुखार।
**अँतरीय** *पु०* [सं०] नीचे पहनने का कपड़ा, अँतरौटा। *वि०* भीतर का।
**अँतरौटा** *पु०* महीन साड़ी के नीचे पहनने का कपड़ा, अस्तर, साया।
**अन्तेवासी** *पु०* [सं०] गुरु के पास रहने वाला शिष्य।
**अंतेस्टी** *स्त्री०* [सं० अन्त्येष्टि:] अन्तिम संस्कार; मृतक कर्म।
**अंदर** *क्रि०वि०* [फा०] अन्तर; अन्दर।
**अंदरसा** *पु०* [सं० इन्द्राश:] चौरठ से बनी एक मिठाई।
**अंदाजन** *अव्य०* [फा०] अटकल से; लगभग।
**अंदाजा** *पु०* [फा०] अनुमान, अटकल।
**अंदेसा** *पु०* [फा०] सोच, चिन्ता, आशंका, दुविधा।
**अंदोर** *पु०* शोरगुल, कोलाहल, *उदा०* 'बाजन बाजहिं होइ अंदोरा'।
**अंध** *वि०* [सं० अन्ध:] अन्धा, आँख बन्द किया हुआ। **-कार** *पु०* अँधेरा; मोह; अज्ञान। **-कूप** *पु०* अंधेरा कुआँ, नरक।
**अंधरा** *पु०* अन्धा मनुष्य, *कहा०* 'अंधरा चाहे दुगो आँख', 'अंधरा लेखे जइसन दिन ओइसन रात'।
**अंधा** *वि०* [सं० अन्ध:] बिना आँख का; भला-बुरा सोचने में असमर्थ, विचारहीन, *कहा०* 'अंधा आगे रोए आपन दीदा खोए', 'अंधा गुरु बहिर चेला, माँगे गुड़ तऽ देवे ढेला'।
**अंधाधुंध** *अ०* बेहिसाब, बेतहाशा।
**अंधार** *पु०* अन्धकार।
**अंधेर** *पु०* अन्याय, अनीति; धींगा-धींगी। **-खाल** *पु०* गड़बड़, अव्यवस्था। **-नगरी** *स्त्री०* स्थान जहाँ कोई नियम व्यवस्था न हो। *कहा०* 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा'।
**अँधेरा** *पु०* [सं० अन्धकार:] अन्धकार; उदासी, *वि०* अन्धकारमय, प्रकाशहीन। **-पाख** *पु०* कृष्ण पक्ष। **-छा गइल** *मुहा०* अधिक अंधकार होना।
**अंधेरी** *स्त्री०* ईख की फसल की पहली कोड़नी।
**अंबर** *पु०* [सं०] आकाश; वस्त्र; एक विशिष्ट साड़ी।
**अँबराई** *स्त्री०* अमराई।
**अंबा** *स्त्री०* माता, अम्मा, दुर्गा।
**अंबार** *पु०* [फा०] ढेर; राशि।
**अम्बिका** *स्त्री०* [सं०] माता, दुर्गा, पार्वती।
**अंबु** *पु०* जल।
**अंबेडकर** डॉ० भीमराव रामजी। *पु०* भारतीय संविधान के निर्माता, दलितोद्धारक।
**अंभौरी** *स्त्री०* अम्हौरी।
**अँवरा** *पु०* आँवला।
**अंस** *पु०* [सं०] भाग, हिस्सा; कन्धा।
**अंसुमान** *पु०* [सं०] सूर्य।
**अंहड़ा** *पु०* बटखरा।
**अँहुड़ी** *स्त्री०* नाद, जिसमें पशु खाते हैं।
**अ** *उप०* [सं०] शब्दों के पहले लगाकर निषेधसूचक अर्थों में प्रयुक्त जैसे-अरूप, अधर्म, अनीति, अकाल।

**अइडी-मइडी** *स्त्री० यौ०* मेहनत से बचने या आलस्यवश होने की स्थिति। *उदा०* 'अँइडी-मइडी मत करऽ चल आपन पाह धर'।

**अइन** *पु०* कायदा, कानून।

**अइल** *पु०* छेद; मुँह।

**अइली** *स्त्री०* आई, *कहा०* 'अइली सौतिन करऽ सिंगार'।

**अइसन** *वि०* ऐसा, *कहा०* 'अइसन घसकट्टा के ओइसन कवलगट्टा'।

**अइसहीं** *अ०* ऐसे ही, इसी तरह।

**अइसे** *क्रि०वि०* ऐसा, इस तरह का।

**अउँजाइल** *अक०* असमंजस में होना, ऊबना।

**अउँड़िआइल** *अक०* पेट में अन्न आदि का उमड़ना-घुमड़ना, *उदा०* 'नटी तक भकोसला से पेट अउँड़िआइल बा'।

**अउँधल** *सक०* उलट देना।

**अउँसल** *अक०* वातावरण के गर्म होने से मन का व्यग्र रहना; किसी वस्तु का सड़ना।

**अउ** [अ०] और, तथा।

**अउर** [अ०] तथा, और, *उदा०* 'अउर अन्न खइलें ना गोहूँ गँठिअवले'।

**अऊलल** *अक०* गरम होना, जलना, तप्त होना।

**अएरल** *सक०* अंगीकार करना, ग्रहण करना।

**अकंटक** *वि०* [सं०] निर्विघ्न, बिना कांटे का।

**अकंठ** *वि०* [सं०] कण्ठहीन, स्वरहीन, कर्कश।

**अकंप** *वि०* [सं०] स्थिर।

**अकचकाइल** *अक०* भौंचक हो जाना, चकित रह जाना।

**अकटही** *वि०* जिस खेत में कंकड़ अधिक हो।

**अकड़** *स्त्री०* अकड़ने का भाव, ढिठाई, कड़ापन, ऐंठ, घमण्ड। **-बाज** *वि०* अकड़कर चलने वाला, घमण्डी। **-बाजी** *स्त्री० ऐंठ, घमण्ड।*

**अकड़ल** *अक०* सूखकर कड़ा हो जाना, तनना, ऐंठना; जिद करना। **अकड़ के चलल** *मुहा०* सीना तान कर चलना।

**अकड़ू** *वि०* अकड़बाज।

**अकड़ौर** *वि०* कंकड़ीली मिट्टी।

**अकतिया** *पु०* [इख्तियार] अधिकार, काबू।

**अकथ** *वि०* अकथ्य।

**अकधक** *पु०* आगा-पीछा; आशंका।

**अकबक** *पु०* अंड-बंड बातें; चिन्ता; खटका।

**अकबकाइल** *अक०* घबड़ाना, भौचक्का होना।

**अकरब** *पु०* [अ०] बिच्छू; गन्दा व्यक्ति, *कहा०* 'अकरब पियवा मरिओ न जाय। सूते के बेरिया चित फरिआय'।

**अकराध** *वि०* निष्प्रयोजन, व्यर्थ।

**अकरी** *स्त्री०* हल में लगा हुआ चोंगा जिससे बीज गिराया जाता है; एक विशेष पौधा।

**अकर्मी** *वि०* [सं०] दुष्कर्म करने वाला।

**अकलंक** *वि०* [सं०] दोष।

**अकवन** *पु०* अर्क, आक का पेड़।

**अकस** *पु०* वैर, ईर्ष्या।

**अकसर** *वि०* अकेला, *उदा०* 'कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयेहु तात'

**अकसरहाँ** [अ०] प्रायः।

**अकसरुआ** *वि०* अकेला, एकाकी।

**अकसीर** *वि०* अचूक, अव्यर्थ।

**अकह** *वि०* अनुचित, न कहने लायक।

**अकाज** *पु०* हर्ज, विघ्न, कार्यहानि।

**अकाजी** *वि०* बहुत जरूरी।

**अकाट** *वि०* न कटने वाली बात; अखण्डनीय।

**अकादमी** *पु०* [एकेडमी] कला, विज्ञान की उच्च संस्था जैसे-'भोजपुरी अकादमी'।

**अकाम** *वि०* [सं०] कामना से दूर, निष्काम, उदासीन।

**अकार** *पु०* [सं०] 'अ' अक्षर या उसकी उच्चारण ध्वनि।

**अकारत** [अ०] व्यर्थ, बेकार, निष्फल।

**अकारथ** [अ०] दे० 'अकारत'।

**अकारांत** *वि०* [सं०] जिसके अन्त में 'अ' हो।

**अकारादि** *वि०* [सं०] 'अ' से आरम्भ होने वाला क्रम।

**अकाल** *पु०* [सं०] कुसमय, अनियत समय; दुर्भिक्ष।

**अकालिक** *वि०* [सं०] असामयिक।

**अकास** *पु०* आकाश। **-दीया** *पु०* आकाशदीप। **-बँवरी** *स्त्री०* जड़हीन बेल, आकाशबेल। **-बानी** *स्त्री०* आकाशवाणी। **-बेल** *स्त्री०* अमरबेल। **-बाँधल** *मुहा०* असम्भव बात करने का प्रयास 'सूधे बात कहौ सुख पावै, बाँधन कहत अकास'।

**अकासी** *स्त्री०* एक पक्षी, चील; ताड़ी।

**अकि** *अव्य०* अथवा, फिर।

**अकियान** *पु०* ध्यान।

**अकिल** *स्त्री०* अक्ल, बुद्धि, समझ, *कहा०* 'अकिल बड़ कि भईस बड़'। **-चहू** *पु०* अक्ल दाढ़। **-धन** *पु०* बौद्धिक सम्पत्ति।

**अकुताइल** *अक०* व्यग्र होना, *उदा०* 'अकुताइल जे बउराइल ऊहे'।

**अकुलाइल** *अक०* आकुल होना, घबड़ाना, *कहा०* 'अकुलाइल नाउनि अंगुरिए काटे'।

**अकूत** *वि०* जिसका अन्दाजा न हो सके; अपरिमित।

**अकेतन** *वि०* [सं०] बेघर-बार का।

**अकेल** *वि०* [सं० एकल] दे० 'अकेला'।

**अकेला** *वि०* तनहा, बिना मित्र का, *कहा०* 'अकेला बृहस्पतियो झूठ', 'अकेला चना भांड़ ना फोड़े'। **-दम** *पु०* एक ही प्राणी, *कहा०* 'अकेला से झमेला भला'। **-दुकेला** *वि०* अकेला, इक्का दुक्का।

**अकेले** [अ०] बिना किसी सहयोगी के, केवल। **-दुकेले** *मुहा०* अकेले या एक और के साथ।

**अकोतर सौ** *वि०* [सं० एकोत्तरशतम्] सौ से एक अधिक एक सौ एक 101।

**अकौआ** *पु०* मदार; आक; गले की घण्टी।

**अक्खड़** *वि०* उजड्ड, अशिष्ट, लड़ाका। **-पन** *पु० उजड्डपन, उग्रता।*

**अक्खर** *पु०* अक्षर।

**अक्खो-मक्खो** *पु०* बालकों को बहलाने हेतु कही गयी बात। *कहा०* 'अक्खो-मक्खो दिया बरक्खो, जो मेरे बच्चे का तक्के उसकी फूटें दोनों अक्खों'।

**अखंड** *वि०* [सं०] अटूट, सम्पूर्ण। **-दुआदसी** *स्त्री०* मार्गशीर्ष; शुक्ला द्वादशी। **-पाठ** *पु०* अविराम पाठ। **-सौ सुहाग** *पु०* आमरण सौभाग्यवती बने रहना।

**अखड़ेरे** [अ०] नाहक, व्यर्थ।

**अखड़ैत** *पु०* [हिं० अखाड़ा] पहलवान।

**अखबार** *पु०* [अ०] समाचार ('खबर' का बहुवचन), समाचार-पत्र। **-नवीस** *पु०* पत्रकार। **-नवीसी** *स्त्री०* पत्रकारिता। *उदा०* 'जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो' -अकबर इलाहाबादी।

**अखबारी** *वि०* समाचार-पत्र सम्बन्धी।
**अखरल** *अक०* बुरा लगना, खलना, कष्टप्रद होना, कसक पैदा करना।
**अखरा** *पु०* बिना कुटे जौ का आटा।
**अखरोट** *पु०* [सं० अक्षोट:] मेवा और उसका पेड़।
**अखाढल** *सक०* पशुओं का सींग से दीवार, नाद को खोदना या कोड़ना।
**अखाड़ा** *पु०* कसरत करने का स्थान, कुश्ती लड़ने का स्थान; मठ।
**अखाड़िया** *वि०* दंगली।
**अखिल** *वि०* [सं०] सारा, सम्पूर्ण।
**अखिलेस** *पु०* [सं०] परमेश्वर।
**अखोर** *वि०* तुच्छ, निकम्मा। **-बखोर** *अव्य०* पूरी तरह से।
**अखोह** *पु०* ऊबड़-खाबड़ जमीन।
**अगड़धत्त** *वि०* [सं० अग्रोद्धत:] लम्बा-तगड़ा, ऊँचा।
**अगड़धत्ता** *वि०* दे० 'अगड़धत्त'।
**अगड़बगड़** *वि०* बेसिर-पैर का, *पु०* अण्डबण्ड बात या काम।
**अगड़मबगड़म** *पु०* काठ-कबाड़ का बेतरतीब ढेर।
**अगत** *वि०* [सं०] हाथी को आगे चलने हेतु महावतों द्वारा प्रयुक्त शब्द।
**अगताहे** *क्रि०वि०* पहले।
**अगते** *क्रि०वि०* पूर्व में, पहले।
**अगती** *वि०* पापी, कुकर्मी।
**अगम** *वि०* [सं०] न चलने वाला, *उदा०* 'लंका बसत दैत्य अरु दानव उनके अगम सरीरा'। **-जानी** *पु०* भविष्यद्रष्टा।
**अगर** *अव्य०* [फा०] यदि, जो। **-चे** *अव्य०* यद्यपि। **-दाई** *पु०* वह बैल जो दौनी में बाहर रहता है। **-धत** *वि०* समृद्ध। **-मगर कइल** *मुहा०* टाल-मटोल करना।
**अगराइल** *सक०* मन बढ़ाना, *कहा०* 'अगराइल बिटिया बर के आँख फोरे'।
**अगरासन** *पु०* [सं० अग्रासन] देव-पितर को अर्पित भोज्य पदार्थ।
**अगरे** *अव्य०* आगे, सामने।
**अगलगी** *स्त्री०* आग लगने की दुर्घटना।
**अगल-बगल** [अ०] आस-पास।
**अगला** *वि०* [सं० अग्र] पहले वाला, प्रथम, प्रधान।
**अगवाई** *स्त्री०* [सं० अग्रे गमनं] अग्रणी, आगे, अगवानी।
**अगवाड़ा** *पु०* [सं० अग्रवाट:] घर के आगे का भाग, 'पिछवाड़ा' का विपरीत।
**अगवानी** *स्त्री०* स्वागत करना, बारात के स्वागतार्थ कन्या पक्ष का आगे आना।
**अगवार** *पु०* पुरोहित, गुरु को देने हेतु खलियान की राशि से अलग रखा गया अन्न।
**अगसर** *अव्य०* आगे, *कहा०* 'अगसर खेती अगसर मार, घाघ कहै ये कबहुँ न हार'।
**अगहन** *पु०* [सं०] अग्रहायण या मार्गशीर्ष मास, *कहा०* 'अगहन भइले राड़ (छोटी जाति) मोटइले', 'अगहन रजपुत अहिर असाढ़, भादो भइंसा चइत चमार'।
**अगहनिया** *वि०* अगहन में होने वाला (धान)।
**अगहर** [अ०] आगे, पहले।
**अगाऊँ** *वि०* [सं० अग्र] पेशगी, आगे का।
**अगाड़** *पु०* आगे का अंश, पिछाड़ का विलोम।
**अगाड़ी** *अव्य०* [सं० अग्रे] आगे, सामने।
**अगाड़ू** *अव्य०* आगे, पहले।
**अगाध** *वि०* [सं०] अपार, अथाह, अधिक।
**अगार** *अव्य०* आगे।
**अगाह** *वि०* अथाह।
**अगिन** *स्त्री०* आग।

**अगिया** *स्त्री०* आग, *कहा०* 'अगिया लगाइ छँउड़ी बर तर ठाढ़'।

**अगियाइल** *अक०* गरम होना, उत्तेजित होना।

**अगिलगनी** *स्त्री०* झगड़ा लगाने वाली।

**अगिलग्गी** [सं०] अग्निकाण्ड।

**अगुआ** *पु०* मुखिया; विवाह तय करने वाला; आगे चलने वाला।

**अगुआइल** *सक०* आगे बढ़ जाना, *वि०* आगे बढ़ा हुआ।

**अगुआनी** *स्त्री०* आगे जाकर स्वागत करना।

**अगुआरि-पछुआरि** *क्रि०वि०* घर के आगे-पीछे।

**अगूती** *स्त्री०* घर के आगे का हिस्सा; पिछूती का विलोम।

**अगोरल** *सक०* रखवाली करना।

**अगोरा** *पु०* निगरानी।

**अगोरिया** *पु०* [सं०] रखवाली करने वाला।

**अघाइल** *अक०* तृप्त होना, जी भरना, *कहा०* 'अघाइल बकुला पोठिया तीत'।

**अघी** *वि०* [सं०] पापी

**अघोर** *पु०* [सं०] शिव का एक रूप; सौम्य; शिवोपासक सम्प्रदाय; एक पंथ जिसके खान-पान में मद्य, मांस, मल-मूत्र वर्जित नहीं।

**अघोरी** *पु०* अघोर पंथ का अनुयायी, घिनौनी वस्तुओं का प्रेमी, गन्दा।

**अचंचल** *वि०* [सं०] स्थिर, धीर, चंचलता-रहित।

**अचंड** *वि०* [सं०] उग्र स्वभाव से दूर, सौम्य।

**अचंडी** *स्त्री०* [सं०] शान्त गाय, कोप रहित।

**अचंभा** [सं०] अचम्भा, आश्चर्य।

**अकचकाइल** *अक०* चौंक उठना, विस्मित होना।

**अचके** *क्रि०वि०* अचानक, अचक्के में, अचानक, धोखे में।

**अचरज** *पु०* [सं० आश्चर्य] चमत्कार, विस्मय।

**अचवन** *पु०* आचमन।

**अचवल** *सक०* आचमन करना, पीना, भोजन के बाद मुँह धोना, कुल्ला करना।

**अचवावल** *सक०* आचमन कराना।

**अचानक** *अव्य०* [सं० अज्ञानकम्] एकाएक, असम्भावित रूप में अनपेक्षित।

**अचार** *पु०* मिर्च-मसाला लगाकर फल-तरकारी को तेल में रखने से बना चटपटा खाद्य।

**अचारज** *पु०* आचार्य।

**अचिको** *क्रि०वि०* थोड़ा भी।

**अचित** *वि०* [सं०] जो सोचा न गया हो।

**अचीता** *वि०* आकस्मिक, निश्चिन्त।

**अचूक** *वि०* खाली न जाने वाला। *अव्य०* कौशलपूर्वक, निश्चयपूर्वक।

**अच्छा** *वि०* [सं० अच्छ] बढ़िया, ठीक, सुन्दर। *कहा०* 'अच्छा के भाई बुरा के जमाई'।

**अछइत** *क्रि०वि०* रहते, रहते हुए।

**अछत** *क्रि०वि०* रहते। *पु०* अक्षत, चावल का बिना टूटा हुआ टुकड़ा, जो धार्मिक कार्यों में व्यवहृत होता है। *कहा०* 'अछत थोर देवता बहुत'।

**अछन-बिछन** *क्रि०वि०* जार-बेजार होके रोना।

**अछरंग** [सं०] लांछन, कलंक।

**अछरि** [सं०] अक्षर।

**अछरिकटू** *वि०* थोड़ा पढ़ा-लिखा (आदमी)।
**अछवानी** *स्त्री०* एक तरह की औषधि जो प्रसूता स्त्रियों को दी जाती है।
**अछूत** *पु०* हरिजन, अन्त्यज। *वि०* न छूने योग्य।
**अछूता** *वि०* जो छुआ न गया हो; कोरा, नया।
**अछूतोद्धार** *पु०* अछूतों का उद्धार, इसका यत्न या आन्दोलन।
**अछोप** *वि०* नँगा; नीच, तुच्छ।
**अछोभ** *वि०* क्षोभरहित, मोह-रहित; नीच।
**अछोह** *पु०* स्नेह, ममता का भाव। *वि०* निर्दय, निष्ठुर, क्षोभहीन।
**अज** *वि०* [सं०] अजन्मा, अनादिकाल से विद्यमान, *पु०* ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, शिव; जीवात्मा।
**अजगर** *पु०* बकरी, हिरन आदि को निगल जाने वाला विशाल साँप। *उदा०* 'अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम। दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥'
**अजगव** *पु०* [सं०] शिव का धनुष; पिनाक।
**अजगुत** *वि०* आश्चर्यजनक, विचित्र, अनुपमेय, असंगत।
**अजनबी** *वि०* [फा०] अनजान।
**अजब** *वि०* [अ०] अनोखा।
**अजमावल** *सक०* आजमाइश करना।
**अजर** *वि०* [सं०] जरारहित।
**अजवाइन** *स्त्री०* एक पौधा जिसका दाना मसाला, दवा के रूप में प्रयुक्त होता है।
**अजस** *पु०* [सं०] अयश।
**अजसी** *वि०* बदनाम।
**अजहूँ** *अव्य०* आज भी, अब तक।
**अजाती** *वि०* जाति से बहिष्कृत
**अजान** *वि०* [सं० अज्ञान] अनजान, अज्ञात।
**अजामिल** *पु०* एक पातकी जो अपने बेटे 'नारायण' का नाम लेने से सद्गति पा गया। *उदा०* 'नाम अजामिल से खल कोटि अपार नदी भव बूड़त काढ़े'।
**अजायब** *पु०* [अ० अजब का बहुवचन] विचित्र वस्तुओं का समूह। **-खाना** *पु०* [फा०] अनोखे दर्शनीय पदार्थों का भवन। **-घर** *पु०* (हिं०) दे० 'अजायब-घर'।
**अजिअउरा** *पु०* दादी के पिता या भाई का गाँव।
**अजिया** *वि०* दादा या दादी से सम्बन्धित जैसे-अजियाससुर याने ससुर के पिता या चाचा।
**अजिर** *पु०* [सं०] आँगन *उदा०* 'द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी'।
**अजी** सम्बोधन, 'जी', 'एजी' का पर्याय।
**अजीरन** *पु०* अजीर्ण।
**अजुए** *क्रि०वि०* आज ही।
**अजोग** *वि०* अयोग्य, बेमेल, नालायक।
**अजौं** *अव्य०* आज तक, अब तक।
**अज्ञा** *स्त्री०* आज्ञा। **-कारी** *वि०* आज्ञाकारी।
**अझुरा** *पु०* झंझट, उलझन, झगड़ा।
**अझुराइल** *अक०* उलझना, झगड़ पड़ना।
**अझुरा लगावल** *सक०* उलझन पैदा करना, झगड़ा लगाना।
**अझुरावल** *अक०* उलझाना।
**अटंबर** *पु०* राशि; ढेर; आडम्बर।
**अटक** *स्त्री०* रोक, उलझना; अकाज; मुश्किल।
**अटकन** *स्त्री०* रोक, अड़चन; हिचक।
**अटकन-बटकन** *पु०* बच्चों का खेल।

**अटकल** *स्त्री०* अन्दाज, अनुमान, *अक०* रुकना; उलझना, झगड़ना।
**अटकावल** *सक०* रोकना; उलझना।
**अटखेली** *स्त्री०* अठखेली, विनोद, मतवाली चाल।
**अटपटांग** *वि०* ऊटपटाँग, असम्बद्ध।
**अटपटा** *वि०* अनोखा।
**अटपटी** *स्त्री०* शरारती।
**अटपटाइल** *अक०* लड़खड़ाना।
**अटाटूट** *वि०* बेअन्दाज, बहुत।
**अटारी** *स्त्री०* महल, छत, कोठा।
**अट्ट-सट्ट** *वि०* ऊटपटाँग, अण्डबण्ड।
**अट्टा** *पु०* [सं० अष्टम] ताश का पत्ता जिस पर आठ बूँटियाँ हो।
**अट्ठाइस** *वि०* बीस और आठ, 28।
**अट्ठानबे** *वि०* नब्बे और आठ, 98।
**अट्ठारह** *वि०* दस और आठ, 18।
**अट्ठावन** *वि०* पचास और आठ, 58।
**अट्ठासी** *वि०* अस्सी और आठ, 88।
**अठ** *वि०* आठ, 8।
**अठइ** *स्त्री०* अष्टमी तिथि।
**अठकठ दाँत** *पु०* आठ महीने पर ही जमा हुआ दाँत।
**अठकठिया** *वि०* आठ कट्ठे का।
**अठखेल** *वि०* शोख, चुलबुला, खिलाड़ी। **-पन** *पु०* चुलबुलापन, शोखी।
**अठखेली** *स्त्री०* किलोल; शोखी; मस्तानी चाल।
**अठन्नी** *स्त्री०* पचास पैसे का सिक्का।
**अठवरा/अठवारा** *पु०* आठ दिन।
**अठवाँस** *वि०* आठ महीने में उत्पन्न होने वाला।
**अठान** *पु०* रूठने की क्रिया।
**अठान परल** *अक०* रूठना।
**अठारह** *वि०* दे० 'अट्ठारह'।
**अड़ंगा** *पु०* हस्तक्षेप, बाधा।
**अड़** *स्त्री०* जिद्द।
**अड़गड़ा** *पु०* फाटक; फसल बर्बाद करने वाले पशुओं को बाँधकर रखने का सार्वजनिक स्थान।
**अड़गुड़ाह** *वि०* ऊबड़-खाबड़, ऊँची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी।
**अड़चन** *स्त्री०* रुकावट, कठिनाई।
**अड़बंग** *वि०* टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम।
**अड़सठ** *वि०* साठ और आठ, 68।
**अड़हुल** *पु०* गन्धहीन बड़ा लाल पुष्प।
**अड़ान/अड़ार** *पु०* आश्रय, ठहरने का स्थान; फूस का छप्पर।
**अड़ानी/अड़ारी** *पु०* सहारा, आश्रय।
**अढ़इया** *पु०* ढ़ाई सेर का बाट।
**अड़ियल** *वि०* चलते-चलते रुक जाने वाला; हठी।
**अड़िया** *स्त्री०* साधुओं की टेक लगाकर बैठने की लकड़ी।
**अड़ूसा** *पु०* एक पौधा जिसके फूल और पत्ते श्वास की दवा हैं।
**अड़ोस-पड़ोस** *पु०* आसपास का मुहल्ला।
**अड्डा** *पु०* [सं० अट्टा] ठहरने का स्थान, बदमाशों नशेबाजों के मिलने का स्थान।
**अढ़ावल** सक० आज्ञा देना।
**अढ़ुक** *पु०* ठोकर, चोट।
**अतंक** *पु०* आतंक।
**अत** *वि०* अति *कहा०* 'अत के पत भगवाने राखस'।
**अतएव** *क्रि०वि०* अत:, इसलिए।
**अतना** *क्रि०वि०* इतना, *उदा०* 'अतना पर तऽ अइसन काजर देला पर कइसन'।
**अतने** *क्रि०वि०* इतना ही।
**अतनो** *क्रि०वि०* इतना भी।

**अतर** *पु०* ईत्र, पुष्प सुगन्ध का तत्त्व।
**अतरदान** *पु०* इत्रदान।
**अतरसों** *क्रि०वि०* वर्तमान से पिछला चौथा दिन या आने वाला चौथा दिन।
**अतवार** *पु०* रविवार।
**अतहत/एतहत** *वि०* इतना बड़ा।
**अति** *वि०* बहुत, ज्यादा, *उदा०* 'ना अति बरखा, ना अति धूप। ना अति वकता, ना अति चूप॥' —घाघ
**अतिअन्त** *वि०* अत्यन्त, सीमा से परे, हद से ज्यादा।
**अतियाचार** *पु०* अत्याचार।
**अतीथ** *पु०* गोसाईं।
**अथक** *वि०* जो न थके।
**अथाह** *वि०* जिसकी थाह न हो, बहुत गहरा।
**अथोर** *वि०* कम नहीं, बहुत।
**अथू** *सर्व०* यह, यह चीज, यह बात।
**अदंक** *पु०* आतंक, भय।
**अददियाह** *वि०* कमजोर।
**अदबद** *पु०* कड़ी या अभद्र बात, गाली।
**अदबद के/अदबदाइ (के)** *क्रि०वि०* रह-रह कर, हठ करके, अवश्य।
**अदरख** *पु०* अदरक, दवा, चटनी, अचार के रूप में प्रयुक्त।
**अदरा** *पु०* आर्द्रा नक्षत्र।
**अदहन** *पु०* भोजन बनाने के लिए गर्म किया जाने वाला जल।
**अदहन दीहल** *अक०* भोजन पकाने का पानी गर्म होने के लिए रखना।
**अदलई-बदलई** *पु०* आदान-प्रदान, अदला-बदली।
**अदवरी** *स्त्री०* उड़द आदि के दाल के बेसन की बरी।
**अदालति** *स्त्री०* अदालत।
**अदावति** *स्त्री०* शत्रुता, बैर, द्वेष।
**अदिमी** *पु०* आदमी, *उदा०* 'अदमी ना हवे, बागड़ हवे'।
**अदित** *पु०* आदित्य, रविवार।
**अदिस्ट** *पु०* दुर्भाग्य।
**अदिस्टी** *वि०* अदूरदर्शी, अभागा।
**अदीठ** *वि०* [सं० अदृष्ट] न देखा हुआ, छिपा हुआ।
**अदौरी** *स्त्री०* उर्द की सुखाई बरी।
**अध** *वि०* आधा।
**अधकचू** *वि०* अधपका, अपक्व, अकुशल।
**अधकपारी** *स्त्री०* [सं०] आधे सिर में होने वाला दर्द।
**अधजल** *वि०* आधी भरी हुई। *उदा०* 'अधजल गगरी छलकत जाय'।
**अधपेटा** *वि०* आधा पेट खाया हुआ।
**अधमरू/अधमूअल** *वि०* अर्द्धमृत।
**अधवा** *वि०* आधा, अर्द्ध।
**अधसेरा** *पु०* आधे सेर का बाट।
**अधिकई** *स्त्री०* अति करना (बुरे अर्थ में)।
**अधिका** *वि०* अधिक, *कहा०* 'अधिका जोगी मठ उजार'।
**अधिकार** *पु०* अधिकार।
**अधिकाह** *वि०* अधिक, अधिकवाला।
**अधिया** *वि०* आधा।
**अधियापक** *पु०* [सं०] शिक्षक, गुरु, उपदेष्टा।
**अधियापकी** *स्त्री०* शिक्षण, अध्यापन।
**अधियाय** *पु०* [सं०] पाठ, सर्ग, परिच्छेद।
**अधियार** *पु०* [सं०] आधे का हिस्सेदार।
**अधियावल** *सक०* आधा करना, आधा हिस्सा बाँटना।
**अधेड़** *वि०* आधी उम्र का, ढलती उम्र का।
**अधेला** *पु०* पैसे का आधा।
**अधेली** [सं०] एक पुराना सिक्का।
**अन्** *उप०* नहीं के अर्थ में प्रयुक्त उपसर्ग।

**अनकर** *वि०* दूसरे का, पराया, *कहा०* 'अनकर आस परे उपास आपन आस कर विलास'।

**अनकस/अनकुस** *वि०* अस्वाभाविक तथा कष्टप्रद।

**अनकस बरल** *सक०* अस्वाभाविक वस्तु के चलते कष्टदायक प्रतीत होना।

**अनका** *वि०* अन्य के, दूसरे के। *कहा०* 'अनका धन पर विकरम राजा'।

**अनख** *पु०* क्रोध, ग्लानि, डाट, जलन।

**अनखाती** *वि०* कुछ नहीं या थोड़ा खाने वाला, *कहा०* 'अनखाती बहुरिया के तीन बेर कलेवा'।

**अनखुला** *वि०* जो खुला न हो, अज्ञात कारण।

**अनगढ़** *वि०* बिना गढ़ा हुआ, टेढ़ा-मेढ़ा, बेडौल।

**अनगन** *वि०* अनगिनत, *उदा०* 'अनगन भाँति करी बहुलीला जसुदानंद निबाही'। *—सूरदास*

**अनगराहित** *वि०* अनुपयोगी, उपेक्षित, अनादृत।

**अनगिनत** *वि०* असंख्य, बेहिसाब, अगणित।

**अनगिनित** *वि०* दे० अनगिनत।

**अनगुताह** *पु०* प्रात:काल।

**अनगुते** *क्रि०वि०* सुबह के समय।

**अनघा** *वि०* अत्यधिक, बहुत।

**अनचितल** *क्रि०वि०* अचानक।

**अनचिन्हल** *वि०* बिना पहचाना हुआ।

**अनचिन्हार** *वि०* अजनबी, बिना पहचाना हुआ।

**अनचेतल** *क्रि०वि०* अचानक, बिना चेत किये, बिना जाने, अनजाने।

**अनजानल** *वि०* अनजान।

**अनजोखल** *वि०* बिना तौला हुआ।

**अनट कइल** *अक०* बदमाशी करना।

**अनटी** *वि०* नटखट, बदमाश।

**अनठेकान** *वि०* बिना पता-ठिकाने का।

**अनदिना** *क्रि०वि०* अन्य दिन, गलत समय पर।

**अन धन** [सं०] अन्न धन, *कहा०* 'अन धन अनेक धन, सोना-रूपा कतेक धन'।

**अननिहार** *पु०* लाने वाला।

**अनन्न** *पु०* आनन्द।

**अनपट** *क्रि०वि०* अत्यधिक।

**अन पानी** *पु०* अन्न जल।

**अनबोलता** *वि०* जो बोल न सकता हो—बच्चे, पशु इत्यादि।

**अनभल** *वि०* बुराई।

**अनमन** *वि०* हू-बहू।

**अनमना** *पु०* बहाना, मनबहलाव का साधन, उदास, खिन्न।

**अनमनाह** *क्रि०वि०* बिमारी जैसा।

**अनमुन्हइले** *क्रि०वि०* हड़बड़ी में सोकर उठते हुए।

**अनमुन्हार/ अन्हमुन्हार** *क्रि०वि०* सुबह के पहले का अन्धकारमिश्रित प्रकाश।

**अनरथ** *पु०* अनर्थ।

**अनरस** *पु०* बिना रस का, रसहीन।

**अनरसा** *पु०* एक मिठाई का नाम।

**अनराज** *वि०* नाराज।

**अनसाइल** *क्रि०* खिन्न होना।

**अनसुनी** *वि०* अश्रुत, न सुना हुआ।

**अनसोहाँत** *वि०* नापसन्दगी का, अपने आप।

**अनहोनी** *वि०* अनहोनी, अलौकिक घटना।

**अनाचार** *पु०* कदाचार।

**अनाचारी** *वि०* दुराचारी।

**अनाज** *पु०* अन्न।

**अनाथ** *वि०* असहाय, दीन।

**अनादर** *पु०* तिरस्कार।

**अनाप-सनाप** *पु०* निरर्थक।

**अनार** *पु०* पौष्टिक फल।

**अनारस** *पु०* अन्नानास।

**अनासहूँ** *क्रि०वि०* अनायास भी।

**अनासे** *क्रि०वि०* अनायास।

**अनाहार** *पु०* [सं०] भोजन-त्याग।

**अनाहूत** *वि०* अनिमन्त्रित।

**अनीति** *स्त्री०* अन्याय।

**अनु** *उप०* सामीप्यबोधक।

**अनुचर** *पु०* सेवक।

**अनुवाद** *पु०* भाषान्तर।

**अनेति** *स्त्री०* अनीति, अन्याय।

**अनेरिया/अनेरिहा** *वि०* बेकार, निरर्थक, *कहा०* 'अनेरिया गाय के राम रखवार'।

**अनेसा** *स्त्री०* अन्देशा, आशंका।

**अनोर** *वि०* अधिक।

**अन्साइल** *अक०* खिन्न होना, नापसन्द करना।

**अन्ह** *क्रि०वि०* ओझल।

**अन्ह कइल** *अक०* आँख से ओझल करना।

**अन्हड़** *पु०* आँधी, गर्द गुब्बारवाली तेज हवा।

**अन्हरिया** *स्त्री०* अन्धेरी रात, कृष्ण पक्ष। *कहा०* 'अन्हरिया घरे साँपे साँप'।

**अन्हार** *पु०* अन्धकार, कृष्ण पक्ष, 'अन्हार घरे भूत के डेरा'।

**अन्हुआइल** *क्रि०* तत्काल सोकर उठने की स्थिति में होना, पूरा होश न होना।

**अन्हेर** *वि०* अन्धेर, व्यवस्था एवं न्याय का अभाव, *उदा०* 'अन्हेर नगरी, चौपट राजा' लोक०।

**अपनायत** *स्त्री०* आत्मीयता।

**अपनावल** *क्रि०* अपनाना।

**अपने** *सर्व०* स्वत:, निजका, आप, *कहा०* 'अपने पांडे बैगन खाय दुसरा के परबोध बताय'।

**अपरम्पार** *वि०* अपरम्पार।

**अपरस** *पु०* चर्मरोग।

**अपसोस** *पु०* अफसोस।

**अपार** *वि०* [सं०] असीम, असंख्य।

**अपावन** *वि०* [सं०] अपवित्र।

**अपेल** *वि०* अटल, अकाट।

**अफड़ल** *अक०* अधिक भोजन करने से वायुविकार के चलते पेट फूल जाने का अनुभव करना।

**अफतरा परल** *क्रि०* संकट में पड़ना।

**अफनाइल** *अक०* जल्दीबाजी करना, उत्सुक होना।

**अफरात** *वि०* बहुत, बेहिसाब।

**अफवाह** *स्त्री०* [अ०] गप्प, उड़ती खबर, 'अफवाहें सुनना नहीं, सुनना तो मानना नहीं' —**गाँधी**।

**अब** *अव्य०* इस समय, फिलहाल, आगे से। **-का** वर्तमान काल का, आधुनिक। **-की** इस बार, अगली बार। **-जाके** इतनी देर बाद। **-से** आगे से। **-तब भइल** *मुहा०* मरणासन्न होना।

**अबटन** *पु०* उबटन।

**अबटल** *सक०* उबटन लगाना।

**अबर/अब्बर** *वि०* कमजोर, *कहा०* 'अबर के मेहरारू, गाँव भर के भउजाई'।

**अबगे** *क्रि०वि०* अभी।

**अबले** *क्रि०वि०* अब तक।

**अबहिंए/अबहीं** *क्रि०वि०* अभी ही, अभी।

**अबहूँ/अबहुओं** *क्रि०वि०* अभी भी।

**अबाद** *वि०* बोई रोपी हुई जमीन।

**अबो/अब्बो** *क्रि०वि०* अभी भी।

**अबीर** *पु०* अबीर।

**अबेर** *क्रि०वि०* देर।

**अभच्छ** *वि०* न खाने लायक।

**अभल** *वि०* भला नहीं, खराब।
**अभाग** *पु०* अभाग्य, भाग्यहीनता, *कहा०* 'अभागा गइल ससुरार तऽ ओतहू मट्ठा भात'।
**अभिलाख** *स्त्री०* अभिलाषा, इच्छा।
**अभेआस** *पु०* अभ्यास।
**अभै** *वि०* अभय।
**अभोग** *पु०* [सं०] भोग का अभाव।
**अमंगल** *वि०* [सं०] अशुभ, अकल्याण-कर।
**अमंद** *वि०* [सं०] तेज, सुस्त नहीं, सुन्दर।
**अमचुर** *पु०* आम को सुखाकर पीसा हुआ चूरन।
**अमझोरा** *पु०* आम को आग में पका कर बनाया गया शर्बत।
**अमड़ा** *पु०* एक प्रकार का खट्टा फल, आमले की जाति का तथा उससे बड़ा।
**अमरख** *पु०* अमर्ष, क्रोध, क्षोभ।
**अमरस** *पु०* अमावट, आम का रस।
**अमराई** *स्त्री०* आम का बगीचा।
**अमल** *पु०* [अ०] काम, क्रिया, व्यवहार, नशा। **-दखल** *पु०* कब्जा दखल। **-दरामद** *पु०* जाब्ता कारवाई। **-दारी** *स्त्री०* राज्य, अधिकार। **-पट्टा** *पु०* कार्य हेतु दिया गया अधिकार-पत्र।
**अमलतास** *पु०* एक पेड़ जिसके फूल, फल, बीज सब दवा के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
**अमवसा** *स्त्री०* अमावस्या।
**अमाइल** *अक०* अटना, प्रवेश करना।
**अमानति** *स्त्री०* अमानत।
**अमावट** *पु०* अमावट, पके आम के रस को सुखाकर बनाया गया खाद्य पदार्थ।
**अमावस** *स्त्री०* दे० 'अमवसा'।
**अमीन** *पु०* भूमि की नाप-जोख करने वाला।
**अमोला** *पु०* आम के छोटे पौधे।
**अमोला भइल** *मुहा०* (चेहरा) पीला पड़ना, चिन्ता या डर से।
**अम्हउरी** *स्त्री०* गर्मी के कारण निकली हुई छोटी छोटी फुंसियाँ, घमौरी।
**अयगुन** *पु०* अवगुण।
**अरकल** *अक०* खेत में दरार पड़ना।
**अरकी** *वि०* नया-नया, *कहा०* 'अरकी के धिया, दुअरिये खाढ़ि'।
**अरगन-परगन** *पु०* परिवार कुटुम्ब के लोग।
**अरज** *पु०* आग्रह, प्रार्थना।
**अरजा** *पु०* पनहा, वस्त्र की चौड़ाई।
**अरघ** *पु०* अर्घ्य, सूर्य आदि को जल का तर्पण।
**अरघ दीहल** *सक०* अर्घ्य देना, तर्पण करना।
**अरज गरज** *पु०* अर्ज-गर्ज, दुःख-दर्द सुनाना।
**अरथ** *पु०* अर्थ; द्रव्य।
**अरथावल** *सक०* समझाकर कहना।
**अरथी** *स्त्री०* शव ढोने की टिकठी।
**अरदुआइ** *पु०* आयु, उम्र।
**अरपल** *सक०* अर्पण करना।
**अरबराइल** *अक०* घबड़ाना।
**अरमान** *पु०* [फा०] लालसा।
**अरर-** विस्मयबोधक अव्यय।
**अरराके** *क्रि०वि०* बिना सम्भले हुए गिरना।
**अरवा** *पु०* बिना उबाले हुए धान को कूटकर बनाया हुआ चावल।
**अराम** *पु०* आराम, बाग।
**अरार** *पु०* नदी का ऊँचा किनारा।
**अरिया** *स्त्री०* मेंड़, मेंड़ से लगे हुए केत का किसान।
**अरियाइल** *सक०* लड़ने-झगड़ने के ळिए उछल-कूद करना।

**अरी** *अव्य०* स्त्रियों के लिए व्यवहृत सम्बोधन।
**अरूई** *पु०* एक प्रकार का कन्द, जिसकी सब्जी बनती है।
**अरूआइल** *क्रि०* बासी खाद्य पदार्थ का खराब होना।
**अरूझल** *क्रि०* उलझना।
**अर्रछो/अरहे** *पु०* भैंसा पुकारने का शब्द।
**अर्हावल** *सक०* किसी को कोई काम करने के लिए कहना।
**अलंग** *पु०* हिस्सा, भाग, किनारा, तरफ।
**अलकतरा** *पु०* कोलतार।
**अलख** *वि०* [सं० अलक्ष्य] नहीं दिखाई देने वाला।
**अलग** *वि०* [सं० अलग्नः] पृथक्।
**अलगल** *वि०* उभरा हुआ, उठा हुआ।
**अलगरजी** *वि०* अलगर्ज, बेफिक्र।
**अलगा** *वि०* अलग। **-बिलगी** *पु०* बँटवारा।
**अलगावल** *सक०* किसी के बोझ उठाने में मदद करना।
**अलगिया** *पु०* अलगौझा के बाद का हिस्सेदार।
**अलचार** *वि०* लाचार।
**अलम** *पु०* अवलम्ब।
**अलमगंज** *क्रि०वि०* अत्यधिक मात्रा में (होना)।
**अलवातिन** *स्त्री०* जच्चा।
**अलवारि** *पु०* मकान का हिस्सा या खण्ड।
**अलसाइल** *अक०* आलस्य का अनुभव करना, आलस्य होना।
**अलाइ बलाइ** *स्त्री०* बेकार की चीजें।
**अलुआ** *पु०* आलूकन्द, शकरकन्द।
**अलोत/अलोता** *क्रि०वि०* आड़ में, परोक्ष, ओट में।
**अलोपित** *वि०* लुप्त, गायब।
**अवँरा** *पु०* आमलकी, आँवला।
**अवकाति** *स्त्री०* सामर्थ्य, औकात।
**अवघड़** *पु०* औघड़।
**अवघड़दानी/अवढरदानी** *पु०* भगवान् शिव।
**अवजार** *पु०* औजार।
**अवरी/अउरी** *वि०* और।
**अवाजि** *स्त्री०* आवाज।
**अवतार** *पु०* अवतार।
**अवाँसल** *सक०* नए बर्तन को पहले पहल काम में लाना।
**अवार-जवार** *पु०* इलाका क्षेत्र।
**अस** *वि०* ऐसा, के जैसा, इस प्रकार।
**असक** *वि०* असमर्थ, शक्तिहीन, कमजोर।
**असकत** *पु०* दे० 'असकति'।
**असकति** *पु०* आलस्य।
**असकती/असकतिहा** *पु०* आलसी।
**असकतिआइल** *अक०* आलस करना।
**असकतिआह** *वि०* आलसी।
**असकती** *वि०* आलसी।
**असगर** *पु०* अकेला, *कहा०* 'असगर जनिया तैं पदमिनिया'।
**असगुन** *पु०* अमंगल।
**असथावर** *वि०* स्थायी।
**असथिर** *वि०* स्थिर।
**असनान** *पु०* स्नान।
**असरा** [सं०] आसरा।
**असल** *वि०* अस्ल, वास्तविक।
**असवार** *पु०* सवार।
**असवारी** *स्त्री०* पालकी, सवारी, वाहन।
**असहीं** *क्रि०वि०* ऐसे ही।
**असपताल** *पु०* अस्पताल, चिकित्सा-लय।
**असपरस** *पु०* [सं० स्पर्श] छूना, छूने का भाव।
**असबाब** *पु०* [अ०] सामान। **-माल** *यौ०* धन दौलत।

**असभ** *वि०* [सं० असभ्य] अशिष्ट।
**असमंजस** *पु०* [सं०] दुविधा।
**असमान** *पु०* दे० 'आसमान'।
**असर** *पु०* [अ०] प्रभाव।
**असरफी** *पु०* अशर्फी, *कहा०* 'असरफी के लूट कोइला पर छापा'।
**असरेसा** *पु०* आश्लेषा नक्षत्र, *कहा०* 'असरेसा माघा रोप, घने बान्हे तोप'।
**असामी** *पु०* आसामी, रैयत, काश्तकार।
**असीस** *पु०* आशीर्वाद।
**असों** *क्रि०वि०* इस वर्ष, इस साल।
**अस्सी** *वि०* अस्सी, 80, *कहा०* 'अस्सी चुटकी नब्बे ताल, तब जाने खैनी के हाल'।
**अहंकार** *पु०* गर्व, घमण्ड, *मुहा०* 'थोथा चना, बाजे घना'।
**अहक-अहकल** *अक०* आहें भरना, तीव्र लालसा की पूर्ति न होने से दुःख पाना।
**अहको डहको** *क्रि० वि०* फूट-फूट कर (रोना)।
**अहगरल** *अक०* परचना, उत्साह से भर जाना।
**अहजह** *पु०* असमंजस।
**अहथिर** *वि०* स्थिर, शान्त।
**अहदी** *पु०* आलसी।
**अहम** *वि०* [अ०] महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक।
**अहमक** *वि०* [अ०] मूर्ख, जड़।
**अहर** *पु०* (आहर) जलाशय।
**अहरा** *पु०* जलसंग्रह के लिए बँधा बाँध, जलाशय; उपलों की आग का ढेर।
**अहवल** *अक०* किसी बात से आघात मिलना।
**अहस लागल** *अक०* झिझकना।
**अहा** *अव्य०* हर्ष, विस्मयसूचक उद्‌गार।
**अहारल** *सक०* लोहार द्वारा बैडोल लकड़ी को छीलकाट कर उपयोगी बनाना।
**अहिवात** *स्त्री०* सौभाग्य, सुहाग।
**अहिवाती** *स्त्री०* सौभाग्यवती, सधवा।
**अहीर** *पु०* [सं० आभीर] गोप, यादव हिन्दुओं की एक जाति जिसका पेशा पशु-पालन है। **-गोआर** *यौ०* [सं० ग्वाल] ग्वाला।
**अहुनल** *अक०* किसी बरतन का उलट जाना; मुँह नीचे और पीठ ऊपर करके लेटना।
**अहुने-महुने** *क्रि०वि०* उल्टी-पल्टी स्थिति में।
**अहुला** *पु०* बोझ।
**अहेर** *पु०* [सं० आखेट:] शिकार।
**अहेरी** *पु०* शिकारी।
**अहो** *अव्य०* हे, अरे।
**अहोभाग** *अव्य०* अहोभाग्य।
**अहोरा-बहोरा** *पु०* ब्याह या गौने में दुलहिन का ससुराल जाकर उसी दिन वापस आना।

❑

# आ

**आ** देवनागरी वर्णमाला का दूसरा स्वर, 'अ' का दीर्घ रूप।

**आँ** *अव्य०* विस्मयबोधक शब्द।

**आँउस** *पु०* एक तरह का भदई धान।

**आँक** *पु०* अंक, अदद, अक्षर; अँकबार।

**आँकड़** *पु०* कंकड़ का बड़ा टुकड़ा।

**आँकड़ा** *पु०* अंक; हुक; पशुओं की एक बीमारी।

**आँकल** *सक०* कूतना; अन्दाज लगाना।

**आँकुस** *पु०* अँकुश, रोक, नियन्त्रण।

**आँख** *स्त्री०* आँख, *कहा०* 'आँख होखे चार, तऽ मन में जगे पियार'।

**आँखर** *पु०* बिना जुता खेत।

**आँखि** *स्त्री०* [सं० अक्षि] नेत्र; गाँठ से फूटने वाली पहली कली। **-आइल** *मुहा०* आँख में लाली और पानी की बीमारी। **-उठल** *मुहा०* नेत्र रोग होना। **-चार भइल** *मुहा०* प्यार होना। **-देखावल** *मुहा०* धमकाना। **-पर चढ़ल** *मुहा०* कुदृष्टि होना, बैर भाव होना। **-बइठल** *मुहा०* अन्धा होना। **-मटकावल** *मुहा०* इशारा करना। **-में गड़ल** *मुहा०* खटकना। **-लागल** *मुहा०* प्रेम होना; नींद आना, *कहा०* 'आँख के अन्धा गाँठ के पूरा', 'आँख देखी साखी पूछीं'।

**आँगछ** *पु०* मंगल या अमंगलप्रद वैयक्तिक लक्षण, भाग्य, शुभ लक्षण।

**आँचर** *पु०* आँचल, साड़ी का छोर।

**आँचि** *स्त्री०* आग की गर्मी, आँच।

**आँजन** *स्त्री०* [सं०] अंजन, *कहा०* 'आंजन ना सहाई, आँख के गइल सहाई'।

**आँजल** *सक०* अंजन लगाना।

**आँजुर** *स्त्री०* [सं०] अँजुरी की माप।

**आँट** *स्त्री०* अँदाज; शत्रुता।

**आँटल** *अक०* पूरा पड़ना; अँट जाना; काम आना।

**आँटी** *पु०* पुआल आदि का बण्डल।

**आँटे** *क्रि०वि०* लगभग आस-पास।

**आँठी** *स्त्री०* गुठली।

**आँत** *स्त्री०* अँतड़ी।

**आँतर** *पु०* खेत जोतते समय बैल के एकबार घूम सकने लायक स्थान।

**आँधर** *वि०* अन्धा। *लोको०* 'आँधर गुरु बहिर चेला, माँगे गुड़ लियावे ढेला'।

**आँवा** *पु०* कुम्हार के बर्तन पकाने का स्थान।

**आँहड़** *पु०* पशुओं के शरीर का वह भाग जिसमें दूध जमा रहता है।

**आँहुड़** *पु०* व्यग्र। **-काटल** *मुहा०* व्यग्र होना।

**आ** *अव्य०* और, अथवा।

**आइल** *अक०* आना, *वि०* आया हुआ, *कहा०* 'आइल बानी गवने बानी संकोचल'।

**आइल-गइल** *पु०* आवागमन, आना जाना।

**आई माई** *स्त्री०* माँ-दादी, *कहा०* 'आई-माई के सेनुर ना, बिलाई के भर माँग'।

**आउर** *क्रि०वि०* और, और अधिक।

**आकास** *पु०* आकाश, स्वर्ग।

**आकास बँवरि** *स्त्री०* एक प्रकार की परोपजीवी लता।

**आकि** *अव्य०* या, अथवा।

**आखा** *स्त्री०* बैल; घोड़े की पीठ पर अनाज लादने की थैली।

**आखाड़ल** *सक०* सींग से पशुओं का जमीन कोड़ना, गहरी जुताई करना।

**आखिर** *पु०* [अ०] अन्त। *कहा०* 'आखिर बार, बेड़ा पार'।

**आग-पाछ** *पु०* असमंजस; आगे-पीछे; शुभ-अशुभ।
**आगा** *क्रि०वि०* सामने, आगे, पहले। *कहा०* 'आगा नाथ ना पाछा पगहा'।
**आगि** *स्त्री०* अग्नि, आग। *कहा०* 'आगि लागल बेढ़ा पड़ल'। **-दिहल** *मुहा०* अन्तिम संस्कार करना।
**आगिल** *वि०* [सं० अग्र] जो पहले सम्पन्न हुआ हो। *लोको०* 'आगिल खेती आगे-आगे पाछिल खेती भागे जोगे'।
**आगु** *क्रि०वि०* आगे।
**आगे** *क्रि०वि०* पहले, पूर्व समय में, सामने, इसके बाद। उदा० 'आगे नाथ न पीछे पगहा'।
**आचार** *पु०* [फा०] मसाला लगा तेल में रखे कच्चे फल के टुकड़े।
**आछा** *वि०* अच्छा, स्वीकृतिबोधक।
**आजा** *पु०* दादा, पितामह।
**आजी** *स्त्री०* दादी, पितामही।
**आजु** *क्रि०वि०* आज, *कहा०* 'आजु के बबुई, काल्ह के नानी'।
**आजु-काल्हु** *क्रि०वि०* आज-कल।
**आड़** *स्त्री०* ओट, परदा; सहारा, बहाना। **-कइल** *क्रि०* परदा करना, ओट में होना। **-भेंटाइल** *मुहा०* आश्रय मिलना।
**आड़ल** *अव्य०* रोकना, बर्दाश्त करना; समर्थ होना।
**आढ़ा** *पु०* दो सेर आठ छटाँक की तौल।
**आतमा** *पु०* [सं० आत्मन्] मन, जीव, स्वयम्। **-कुटुम** *पु०* [सं० कुटुम्ब] नाते-रिश्तेदार। **-राम** *पु०* तोते हेतु सम्बोधन; आत्मज्ञानी।
**आतुर** *वि०* [सं०] व्याकुल, बेचैन, उत्सुक। उदा० 'आतुर के चित रहे न चेतू पुनि-पुनि कहेउ आपने हेतू'।
**आद** *वि०* [सं० आदि:] आरम्भ; प्रधान, मूल।
**आदत** *स्त्री०* [अ०] स्वभाव, अभ्यास, व्यसन।
**आदमी** *पु०* [अ०] मनुष्य; मानव-जाति; नौकर; पति।
**आदर** *पु०* [सं०] सम्मान, इज्जत।
**आदाब** *पु०* [अ०] सलाम, प्रणाम, नमस्ते।
**आदि-औलाद** *स्त्री०* सन्तति।
**आधा** *वि०* आधा। *कहा०* 'आधा तजे पंडित, सर्बस तजे गँवार'।
**आधार** *पु०* भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा जारी पहचान-पत्र
**आधि-राति** *स्त्री०* अर्द्धरात्रि।
**आन** *सर्व०* अन्य, दूसरा। *कहा०* 'आन के मरिचा पाई तऽ आँखो में लगाईं'।
**आनल** *सक०* ले आना।
**आन्ही** *स्त्री०* आँधी। *कहा०* 'आन्ही के आगे बेना के बतास'।
**आन्ही-पानी** *स्त्री०* आँधी-वर्षा; धूल भरी अन्धड़।
**आप** *सर्व०* आप, स्वयं, खुद।
**आपन** *सर्व०* अपना, *कहा०* 'आपन पगड़ी अपने हाथ'।
**आपनवाली** *स्त्री०* अपनी, निज की।
**आपा** *पु०* घमण्ड, अहंकार।
**आपुस** *पु०* आपस की।
**आफति** *स्त्री०* आफत, विपत्ति, कष्ट।
**आब** *स्त्री०* [फा०] रौनक, पानी, रौब।
**आबपासी** *स्त्री०* सिंचाई।
**आबरू** *स्त्री०* [फा०] प्रतिष्ठा, इज्जत।
**आबा-काबा** *पु०* विशेष पोशाक जैसे वकील का, नर्स का।
**आबारा** *पु०* आवारा।
**आभा** *अव्य०* अथवा; प्रभा।
**आम** *पु०* [सं० आम्रम्] रसाल।

**आमद** *स्त्री०* [फा०] आय। *उदा०* 'खुशामद से ही आमद है'।
**आमने-सामने** *क्रि०वि०* समक्ष।
**आमा** *स्त्री०* सास, माँ।
**आरँबो-ऐ जी**—एक सम्बोधन।
**आरि/आरि डँड़ार** *पु०* मेंड़।
**आलम** *स्त्री०* भीड़।
**आल्हर** *वि०* कोमल।
**आल्हा** *पु०* एक वीर पुरुष का नाम, उसकी प्रशंसा के गीत, *कहा०* 'आल्हा ना लोरिकायन दुनो साँझ रमायन'।
**आवाजाही** *पु०* आवागमन, आना-जाना।
**आश्विन** *पु०* कुआर का महीना।
**आसन** *पु०* आसन।
**आसन आइल** *मुहा०* आगमन होना।
**आसनी** *स्त्री०* [सं०] वह उपकरण (कुश की चटाई या कम्बल का टुकड़ा) जिस पर बैठकर पूजा होती है।
**आस-पास** *क्रि०वि०* [सं० आसन्न-पार्श्व:] निकट; चारों ओर; अगल-बगल; इधर-उधर।
**आसमान** *पु०* [फा०] आकाश, देवलोक।
**आसमानी** *वि०* [फा०] आसमान का, आसमान के रंग का, हल्के नीले रंग का।
**आसरम** *पु०* [सं० आश्रम:] साधु-सन्तों के रहने का स्थान, पवित्र स्थान।
**आसरा** *स्त्री०* सहारा।
**आसरे** *पु०* [सं० आश्रय:] जाति।
**आसा** *स्त्री०* [सं० आशा] उम्मीद, भरोसा। **-तिसना** *स्त्री०* [सं० तृष्णा] कामना रखने वाला।
**आसान** *वि०* [फा०] सहज, सरल, सुविधाजनक।
**आसानी** *स्त्री०* [फा०] सरलता, सुगमता।
**आसापत** *स्त्री०* [सं० आशावती] गर्भवती स्त्री।
**आसाम** *पु०* भारत की पूर्वोत्तर सीमा पर स्थित एक राज्य।
**आसा-सोंटा** *पु०* बारात में प्रयुक्त सोने या चाँदी का दण्ड।
**आसिख** *पु०* [सं० आशीष्] सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा विवाह के समय वर-वधू को दिया गया आँचल का धागा।
**आसिन** *पु०* [सं० आश्विन] एक महीना जब वर्षा ऋतु का अन्त होता है, क्वार का महीना।
**आसिरबाद** *स्त्री०* दे० 'आसीस'।
**आसीस** *स्त्री०* आशीर्वाद।
**आसुर** *वि०* [सं०] असुर का, ईश्वरीय, दैवी।
**आसुरी** *स्त्री०* [सं०] असुर स्त्री, दानवी।
**आसौं** *अव्य०* इस वर्ष।
**आस्तिक** *वि०* [सं०] ईश्वर और परलोक को मानने वाला, धर्मनिष्ठ।
**आस्ते** *अव्य०* धीरे-धीरे, आहिस्ता।
**आस्था** *स्त्री०* [सं०] आदर, विश्वास।
**आस्फोट** *पु०* [सं०] ताल ठोकने की आवाज।
**आह** *अव्य०* क्लेश, शोक, वेदना, 'निकल मत बाहर दुर्बल आह, लगेगा तुझे हँसी का शीत' -जयशंकर प्रसाद। **-खींचल** *मुहा०* आह भरना, कलपना। **-पड़ल** *मुहा०* शाप पड़ना; रुलाने का फल मिलना। **-भरल** *मुहा०* आह खींचना, कलपना।
**आहाँ** *स्त्री०* दुहाई, पुकार, निषेधसूचक शब्द।
**आहा** *अव्य०* हर्ष, आश्चर्य, अहाहा।
**आहूत** *वि०* [सं०] बुलाया, पुकारा।
**आह्वान** *पु०* [सं०] पुकारना, बुलाना; देवताओं का आवाहन।

❑

# इ

**इ** देवनागरी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

**इंक** *स्त्री०* [अं०] रोशनाई; स्याही।

**इँकड़ा** *पु०* छोटा कंकड़, मिट्टी के फूटे बर्तनों के छोटे-छोटे टुकड़े।

**इंगुर** *पु०* लाल रंग का खनिज पदार्थ जिसे सुहागिनी बिन्दी के रूप में माथे पर लगाती हैं। *कहा०* 'इंगुर सेनुर काहे लइलऽ, गुड़ लइतऽ तऽ चटतीं'।

**इँजोर** *पु०* प्रकाश।

**इँजोरिया** *पु०* शुक्ल पक्ष, चाँदनी।

**इआ** *स्त्री०* दादी।

**इआर** *पु०* मित्र।

**इआरी** *स्त्री०* मित्रता। *कहा०* 'इआरी पिआरी सरकन मुंजिआरी'।

**इकसल** *अक०* निकलना।

**इकेला** *वि०* अकेला।

**इकोतर** *वि०* एक अधिक, एकोत्तर। **-सौ०** *वि०* एक सौ एक।

**इतवार** *पु०* रविवार।

**इति** *अव्य०* [सं०] अन्त, समाप्ति।

**इतिहास** *पु०* वृत्तान्त।

**इत्र** *पु०* [अ०] अत्तर।

**इधर** *क्रि०वि०* [सं० अत्र] यहाँ, इस तरफ।

**इन** *सर्व०* इस।

**इनवर्टर** *पु०* [अ०] अल्पकालिक विद्युत् प्राप्ति का उपकरण।

**इनसान** *पु०* [अ०] आदमी, मनुष्य।

**इनसानियत** *स्त्री०* मनुष्यता।

**इनाम** *पु०* पुरस्कार।

**इमरती** *स्त्री०* एक प्रसिद्ध मिठाई।

**इमली** *स्त्री०* एक पेड़ और उसका फल जो चटनी अँचार के काम आता है। **-घोंटावल** *मुहा०* विवाह में एक रस्म जो वर-वधू के मामा को करनी होती है।

**इरादा** *पु०* [अ०] इच्छा, संकल्प, विचार।

**इलाका** *पु०* [अ०] क्षेत्र; रियासत; किसी अधिकारी का अधिकृत क्षेत्र।

**इलाज** *पु०* [अ०] रोग का उपचार, समस्या का समाधान।

**इलायचीदाना** *पु०* चीनी और चौरठ से बनी एक मिठाई।

**इलिम** *पु०* [अ० इल्म] ज्ञान; विद्या; हुनर; तरकीब।

**इसकूल** *पु०* [अं० स्कूल] पाठशाला, विद्यालय।

**इसटाम** *पु०* [अं० स्टैम्प] कागजों या दस्तावेजों पर लगाया जाने वाला टिकट या टिकट लगा सरकारी कागज; मुहर।

**इसटिशन** *पु०* [अं० स्टेशन] रेलगाड़ियों के रुकने की जगह।

**इसतिरी** *स्त्री०* [सं०—स्त्री] नारी, औरत; कलफ करने की मशीन; लोहा।

**इसतीपा-इसतीफा** *पु०* [अ० इस्तीफा] त्याग-पत्र।

**इसदोआ** *पु०* प्रार्थना, अर्ज।

**इसपात** *पु०* फौलाद, पक्का लोहा।

**इसरउल** *पु०* एक प्रकार की वनौषधि जो वातरोग में प्रयुक्त होती है।

**इसरा** *पु०* [अ० इशारः] संकेत, सैन; संक्षिप्त कथन।

**इसलेट** *पु०* [अं० स्लेट] एक प्रकार के हल्के काले पत्थर का चौकोर टुकड़ा, जिस पर लिखा जाता है; लेखनपट्ट।

**इसाई** *वि०* [फा०] ईसा से सम्बन्धित, ईसाई धर्म मानने वाला।

**इसिक** *पु०* [अ० इश्क] प्रेम; शौक।

**इसिकी** *वि०* किसी कला का विशेष शौक रखने वाला।

**इस्तमरारी** *स्त्री०* निश्चित कर की शर्त पर भूमि जोतने वाला आसामी।

**इस्तमाल** *पु०* [अं० इस्तेमाल] प्रयोग, उपयोग।

**इस्तिया-इस्तिफा** *स्त्री०* इस्तीफा, त्याग-पत्र।

**इस्तीफा** *पु०* [अ०] त्यागपत्र।

**इस्तेमाल** *पु०* [अ०] उपयोग।

**इह** *अव्य* यहाँ, इस जगह, इस लोक में। **-काल** *पु०* यह जीवन। **-लीला** *स्त्री०* इस लोक का जीवन। **-लोक** *पु०* यह जीवन।

**इहवाँ** *क्रि०वि०* [सं० इह] इसी जगह, यहीं।

**इहवें** *क्रि०वि०* इसी स्थान पर।

**इहसान** *पु०* [अ०] नेकी, भलाई। **-फरामोस** *वि०* कृतघ्न। **-मंद** *वि०* कृतज्ञ, ऋणी।

**इहाँ** *क्रि०वि०* यहाँ, इस जगह।

**इहाँ का** *सर्व०* 'इ' का आदरसूचक रूप, ये।

**इहे** *सर्व०* यही।

**इहो** *सर्व०* यह भी।

❑

# ई

**ई** देवनागरी का चौथा स्वर वर्ण। 'इ' का दीर्घ रूप।

**ईकर** *पु०* [सं० इक्कर] पान की लता का आधार स्तम्भ।

**ईखन** *पु०* झूलना, चक्कर खाना।

**ईंगुर** *पु०* कूटा हुआ जौ।

**ईङ्गुर** *पु०* एक प्रकार का बारीक सिन्दूर।

**ई** *सर्व०* यह।

**ईख** *स्त्री०* गन्ना, ऊख।

**ईजति** *स्त्री०* इज्जत।

**ईट** *पु०* ताश के पत्तों का एक प्रकार।

**ईटा** *पु०* [सं० इष्टका] साँचे से तैयार किया हुआ चौकोर या वृत्ताकार टुकड़ा, जो दीवाल बनाने के काम आता है।

**ईद** *स्त्री०* [अ०] रमजान की समाप्ति पर मुसलमानों का एक त्योहार।

**ईनर** *पु०* इन्द्र।

**ईनार** *पु०* कुँआ, कूप।

**ईमान** *पु०* [अ०] नीयत, धर्म।

**ईरघाट-बीरघाट** *क्रि०वि०* इधर-उधर, यहाँ-वहाँ, तितर-बितर।

**ईरान** *पु०* एक मुस्लिम देश।

**ईरानी** *वि०* ईरान का। *स्त्री०* घाघरा पहनकर घूम-घूम कैंची, छूरी बेचने वाली औरतें।

**ईस** *पु०* हरिस (हल) में लगी हुई लम्बी लकड़ी।

**ईसर** *पु०* [सं० ईश्वर] भगवान्, परमेश्वर, *कहा०* 'ईसर माया, कहीं धूप कहीं छाया'। *लोको०* 'ईसर पइसस दलिदर निकसस'।

**ईसवी** *वि०* [अ०] ईसा की जन्मतिथि से चलाया गया वर्ष या सन्।

**ईसाई** *पु०* ईसाई।

**ईसान** *पु०* ईशान कोण।

**ईस्वर** *पु०* परमेश्वर, जगदीश।

**ईहाँ** *क्रि०वि०* यहाँ।

**ईहाँका** *सर्व०* ये, इनका।

**ईहा** *स्त्री०* [सं०] इच्छा, चाह; चेष्टा।

**ईहे** *सर्व०* यही।

**ईहो** *सर्व०* यह भी। *कहा०* 'इहो पूत जामल होइहें तऽ छीपा बाजल होई'।

# उ

**उ** देवनागरी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

**उ** *सर्व०* यह।

**उँकवत** *स्त्री०* [सं० उत् + कण्ट + वत] दाद की तरह का एक चर्म रोग जिसकी फुंसियों से पानी निकलता है।

**उँगली** *स्त्री०* हाथ की तलहथी का अग्रभाग। **-उठल** *मुहा०* बदनामी होना। **-उठावल** *मुहा०* लांछन लगाना। **-कइल** *मुहा०* परेशान करना। **-चमकावल** *मुहा०* नखरा करना।

**उँघाई** *स्त्री०* झपकी, थोड़ी नींद।

**उँचास** *वि०* ऊँची जमीन; उनचास (संख्या)।

**उँजरिया** *स्त्री०* चाँदनी, रोशनी।

**उँजेरा** *पु०* उजाला।

**उँड़ड़ल** *सक०* उडेलना।

**उँह** *अव्य०* अस्वीकार, घृणा, वेदना, नहीं, आः।

**उकटल-उघटल** *सक०* [सं० उद्घाटनम्] किसी पर किए गए उपकार और उस व्यक्ति की कृतघ्नता को बार-बार उद्धृत करना।

**उकटा-पँइच** *पु०* अपने द्वारा किए गए उपकार और दूसरे के अपकार की चर्चा।

**उकटा-पुरान** दे० उकटा पँइच।

**उकटी** *वि०* उघटने वाला व्यक्ति। *कहा०* 'उकटी के खाये के, निकुटी के ना'।

**उकठल** *अक०* हरे पेड़ का सूख जाना।

**उकठा** *पु०* रोग विशेष जिससे वृक्ष सूख जाता है।

**उकन्हल** *अक०* [सं० अस्कन्धः] कन्धे पर से जुआ फेंक देना; बोझ उठाने के लिए तैयार न होना।

**उकरिन** *वि०* [सं० उऋणः] ऋण से मुक्त हो जाना।

**उकसावल-उसकावल** *सक०* [सं० उत्कर्षणम्] तेज करना, भड़काना; दीपक की बत्ती को ऊपर की ओर करना, लौ बढ़ाना; बैलों को हाँकना; झगड़ा के लिए प्रेरित करना; घाव में मुँह बना देना।

**उकाँव** *पु०* ओसाने के लिए रखी गई भूसा-मिश्रित अन्न की राशि।

**उक्का** *पु०* लुक्का, लुकारी, मशाल।

**उकित** *स्त्री०* [सं० उक्तिः] बुद्धि, सूझ, प्रतिभा।

**उक्ख-बीक्ख** *स्त्री०* [सं० उष्मक] बेचैनी, परेशानी। उमस से होने वाली परेशानी।

**उखड़ल** *अक०* [सं० उत्खननम्] किसी स्थापित वस्तु का अपनी जगह से अलग होना; क्रुद्ध होना; किसी अंग का जोड़ से अलग हो जाना; गायन में बेसुरा हो जाना।

**उखड़ा** *पु०* एक फैलने वाली लता।

**उखड़ल आवाज** *स्त्री०* लड़खड़ाने वाली आवाज।

**उखड़ाह** *वि०* शीघ्र क्रुद्ध होने वाला।

**उखड़ा-पखड़ी** *स्त्री०* झगड़ा, कहा-सुनी।

**उखबन्हना** *पु०* ईख बाँधने वाला गतान या रस्सी।

**उखमंजल** *अक०* जोश-खरोश का होना।

**उखम** *पु०* [सं० ऊष्मः] गर्मी।

**उखरा** *पु०* रबी की फसल का एक रोग।

**उखरी** *स्त्री०* ओखली।

**उखरे** *सक०* उखाड़ना। *उदा०* 'उखरे बाल ना, नावँ ह बरियार खाँ'।

**उखरौरा** *वि०* ओखल से गिरा हुआ (चावल)।

**उखली** *स्त्री०* ओखली। *कहा०* 'उखली में मूड़ी त चोट के का चिन्ता'।

**उखाँव** *पु०* ईख के लिए तैयार खेत।

**उखाड़ल** *सक०* [सं० उत्खननम्] किसी स्थापित वस्तु को जड़ से अलग करना; पदच्युत करना; अंग का शरीर से पृथक् करना।

**उखाब** *पु०* ईख का खेत।

**उगरह** *पु०* [सं० उग्रहः!] ग्रहण की समाप्ति का समय।

**उगरवाह** *पु०* रखवाला।

**उगल** *अक०* [सं० उद्गमनम्] चन्द्र, सूर्य, तारा, चाँदनी का उदित होना; तेजी से प्रकाश फैलाना; लिखावट का स्पष्ट उगना; उन्नति पर होना; उगना।

**उगावल** *सक०* उगाना।

**उगाहल** *सक०* [सं० उद्ग्रहणम्] वसूल करना (चन्दा आदि)।

**उगाही** *स्त्री०* संग्रह।

**उगिलल** *सक०* [सं० उद्गिरणम्] मुँह से निकालना; किसी बात को प्रकट करना; रहस्य को सामने लाना। *कहा०* 'उगिलल सँपरे ना, लीलल जाय ना'।

**उघटल** *सक०* किसी पर उपकार या अपकार को बार-बार कहना।

**उघटा** *वि०* उघटने वाला।

**उघरल** *अक०* [सं० उद्घटनम्] अनावृत्त होना, निर्वस्त्र होना; लिपटी हुई वस्तु का खुलना।

**उघार** *वि०* निर्वस्त्र।

**उघारल** *सक०* [सं० उद्घाटनम्] वस्त्र या आवरण को हटाना।

**उघेन** *पु०* बर्तन में बाँधकर कुआँ से पानी खींचने वाली रस्सी।

**उचंत** *वि०* बाहरी; गौण; अचानक या बाहर से मिलने वाला द्रव्य। **-खाता** *पु०* वह बही जिसमें अचानक प्राप्त द्रव्य का हिसाब-किताब रहता है।

**उचका** *पु०* दीवार, छप्पर, शाखा आदि के सहारे के लिए लगाया गया खम्भा।

**उचकुन** *पु०* ईंट, खपड़ा का वह टुकड़ा जो चूल्हे पर चढ़े बर्तन के नीचे लगाकर ऊँचा करने के काम आता है।

**उचक्का** *पु०* किसी व्यक्ति से किसी चीज को हथिया कर भाग जाने वाला; उठाई गीर; चाई।

**उचटल** *अक०* अचानक नींद का टूट जाना; किसी काम में मन न लगना; रंग का फीका पड़ना।

**उचरल** *अक०* शकुन से किसी बात का सामने आना, काग का शुभ सूचक शब्द बोलना (शकुन)।

**उचली** *स्त्री०* ऊबड़-खाबड़ जमीन।

**उचवड़** *पु०* छप्पर आदि में लगाया गया लकड़ी का आधार-स्तम्भ।

**उचाट** *पु०* [सं० उच्चाटः] मन का नहीं लगना, उदासीनता।

**उचाटन-उच्चाटन** *पु०* [सं०] हटाना; निकालना, उखाड़ना।

**उचार-उच्चार** *पु०* [सं०] बोलना, कहना।

**उचारन-उच्चारन** *पु०* [सं०] वर्णों को कहने का ढंग।

**उचारल** *सक०* [सं० उच्चारणम्] काग को शुभ शब्द बोलने के लिए प्रेरित करना; मन्त्रों को जोर-जोर से पढ़ना।

**उचास** *पु०* ऊँची जमीन।

**उचित** *वि०* [सं०] मुनासिब, न्याय-संगत, ठीक। *कहा०* 'उचित कहले साथी खिसियाय'।

**उचिला** *अक०* स्थानभ्रष्ट होना, पदच्युत होना, प्रतिष्ठा की हानि होना।

**उचिलावल** *सक०* महत्त्व को कम करना; भूसा मिले अनाज को हाथ से चला कर भूसे को अलग करना।

**उचुकल** *अक०* [सं० उत् + करण] पंजे पर खड़ा होकर ऊँचा होना; अपने स्थान से हटना।

**उछन्नर** *पु०* तंग, उपद्रव। **-लगावल** *मुहा०* किसी को परेशान करना।

**उछरल** *अक०* नदी आदि के भर जाने पर पानी का उछलना।

**उछलल** *अक०* [सं० उच्छलनम्] वेग से ऊपर उठना-गिरना; शरीर को झटके से इस प्रकार उठाना कि धरती से लगाव छूट जाए।

**उछार** *पु०* एक जगह काम समाप्त कर दूसरी जगह काम करने की स्थिति।

**उछाह** *पु०* [सं० उत्साह] उमंग, उत्सव।

**उछाहल** *सक०* पहले जोते हुए खेत की हलकी जुताई कर उसे खड़ा छोड़ देना, उछहन करना; किसी घर को दोबारा छाने के लिए उजाड़ना।

**उछिटन** *पु०* [सं० उच्चाटनम्] खेत कोड़े जाने के बाद खर-पात-घास को चुनकर अलग करने का काम।

**उछिटल** *सक०* जोते हुए खेत से घात-पात चुनकर अलग करना, *अक०* किसी पौधे या पेड़ या बीज का खत्म होना।

**उछिलल** *अक०* पानी या तरल पदार्थ का नदी या पात्र से अधिक होकर बहना।

**उजड्ड** *वि०* अशिष्ट, गँवार।

**उजड़** *पु०* ध्वस्त या बर्बाद गाँव।

**उजड़ल** *अक०* बर्बाद होना।

**उजबक** *वि०* मूर्ख।

**उजबुक** *पु०* [तु०] तातारियों की एक जाति।

**उजबुज** *पु०* डूबने-उतराने की स्थिति।

**उजबुजाइल** *अक०* डूबना-उतराना।

**उजर-उज्जर** *वि०* [सं० उज्ज्वलः] उजला, सफेद।

**उजरल** *अक०* ध्वस्त होना, वीरान होना (गाँव), बर्बाद होना, उजड़ना।

**उजराइल** *अक०* सफेद होना, पकना (बाल)।

**उजरा** *पु०* बिना चरवाहे का ढोर; दूसरे की फसल चरने वाला पशु।

**उजरा-थप** *पु०* अतिवृष्टि के कारण खेतों में पानी भरने से फसल के दहने और खेत के सफेद हो जाने की स्थिति।

**उजटल** *अक०* किसी पौधे का बहुत बढ़ जाना।

**उजागर** *पु०* एक प्रकार का धान; किसी छिपी बात का प्रकट होना; दीप्तिमय, प्रकाश।

**उजाड़-उजार** *पु०* वीरान, बर्बाद; जन-विहीन।

**उजाड़ू** *वि०* उजाड़ करने वाला।

**उजारन** *पु०* जो दूसरों को छोड़कर भागने के लिए विवश करता है।

**उजारल** *सक०* ध्वस्त करना; बर्बाद करना।

**उजाला** *पु०* प्रकाश, आलोक।

**उजास** *पु०* उजाला, प्रकाश-रेखा।

**उजाह** *पु०* बहुतायत में मिलने की स्थिति; निर्बाध प्राप्त करने की स्थिति।

**उजिआइल** *अक०* [सं० उत् + जीव] पढ़-लिखकर योग्य होना, अपने काम में चतुर होना जिससे वंश गौरवान्वित हो।

**उजिआगर** *वि०* [सं० उच्च आगरः] कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला, योग्य।

**उजिआवल** *सक०* मिट्टी भरे बिल से मिट्टी हटाना।

**उजुक** *पु०* रात में ठीक से नहीं सोने की स्थिति।

**उजुर** *पु०* [अ० उज्र:] आपत्ति, विरोध। **-दारी** *स्त्री०* [अ० + फा०] किसी मामले में उज्र पेश करना।

**उजेन-उजैन** *पु०* एक नगर का नाम; क्षत्रियों की एक उपजाति।

**उज्झट** *पु०* अपशब्द, फालतू बात।

**उज्झा** *पु०* वह पशु जो बिना किसी देखभाल के चरने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता है।

**उझिला** *पु०* बच्चों का एक रोग, जिसमें कै-दस्त होता है।

**उझिलल** *अक०* किसी द्रव का नीचे गिराना।

**उझुकल** *अक०* देखने के लिए ऊपर की ओर उठकर आगे झुकना और गिरना; उचकना; उभड़ना; पंजों पर खड़े होना।

**उटकनी** *स्त्री०* चिउरा कूटते समय उसे चलाने की लकड़ी।

**उटका** *पु०* अतिरिक्त, फाजिल।

**उटकेरल** *सक०* आग की ढेर को कुरेदना, कोई बात चलाना।

**उटक्कर** *पु०* अन्दाज, अनुमान।

**उटुंग** *वि०* [सं० उत्तुंग:] सामान्य नाप-जोख या आकार से कम।

**उठती** *स्त्री०* वह जमीन जो कभी परती नहीं रहती।

**उठल** *अक०* [सं० उत्तिष्ठ] उठना; खड़ा होना (लिंग); तैयार होना (मकान); मादा पशु का कामोत्तेजित होना; जागना, बिछावन छोड़ना। *कहा०* 'उठ बहुरिया साँस लऽ, ढेंकी छोड़ऽ जाँति लऽ'।

**उठल्लू** *वि०* स्थानभ्रष्ट; बेमोल; आवारा।

**उठवना** *पु०* किसी वस्तु को प्रतिदिन लेने का कार्य (दूध, अखबार आदि), प्रतिदिन सामान का व्यवहार करना।

**उठान** *पु०* [सं० उत्थानम्] उठने की क्रिया, वृद्धि, वृद्धिक्रम।

**उठानो** *पु०* अनुपयोगी गाय या भैंस।

**उठा-बइठी** *स्त्री०* बार-बार उठने-बैठने की क्रिया।

**उठावल** *सक०* गिरी हुई वस्तु को ऊपर उठाना; नींद से जगाना, लेटे हुए को बैठाना, बैठे हुए को खड़ा करना; मकान बनाना।

**उठाव-पटक** *पु०* [सं० उत्थान-पतन] झगड़ा, कहा-सुनी।

**उठौना** *पु०* प्रतिदिन नियत दर पर किसी वस्तु को देने-लेने का काम।

**उठौनिहार** *वि०* किसी वस्तु को उठाने वाला।

**उड़ंत-अड़न्त** *वि०* [सं० उड्डयनम्] चिड़िया का बच्चा जो उड़ने लायक हो गया हो।

**उड़-खुड़** *पु०* उथल-पुथल।

**उड़चन** *पु०* खाट के पैताने की मोटी रस्सियों की बन्धेज।

**उड़द** *स्त्री०* दाल वाली एक फसल, अन्न विशेष, जिससे दाल या बड़ा बनाया जाता है।

**उड़न-खटोला** *पु०* लोक-कथाओं में वर्णित उड़ने वाला खटोला, विमान।

**उड़नछू** *वि०* देखते-देखते गायब हो जाने वाला; अदृश्य।

**उड़नबाज** *वि०* उड़ने वाला, प्रपंची व्यक्ति; बदचलन।

**उड़ल** *अक०* पंख के सहारे हवा में उड़ना; विमान से यात्रा करना; हवा के साथ

डोलना; बिखर जाना; फहराना, लहराना; छलाँग भरना।

**उड़वावल** *सक०* प्रे० उड़वाना।

**उड़ान** *स्त्री०* उड़ने का काम। *कहा०* 'तीन उड़ाने तीतिर'।

**उड़ावल** *सक०* हवा में फैलाना, उछालना, लहराना; किसी वस्तु को गायब कर देना, चुराना; किसी को लेकर भाग जाना; पैसे का अपव्यय करना।

**उड़ासल** *सक०* बिछावन समेट लेना, समेटना; लगी दुकान को बन्द कर देना; उपयोग के बर्तनों को खाली करना।

**उड़ाह** *पु०* [सं० उद्‌वहः] कुँए या जलाशय की सफाई। **-ल** *सक०* (सं० उद्‌वन) कुँए, तालाब की मिट्टी को निकालकर उसकी सफाई करना।

**उड़िआइल** *अक०* धूल या धूल सदृश बारीक पदार्थ का हवा में उड़ना।

**उड़िआवल** *अक०* किसी बारीक वस्तु या धूल को हवा में उड़ाना।

**उड़िस** *पु०* [सं० उड्डिसः] खटमल। *कहा०* 'उड़िस मार के हाथ गँधवलऽ'।

**उढ़कन** *वि०* लुढ़की हुई वस्तु।

**उढ़रल** *सक०* पराए के साथ भाग जाना।

**उढ़री** *स्त्री०* परपुरुष के साथ भागी स्त्री, रखैल। *कहा०* 'उढ़री के ना गाँव के ठेकान ना नाम के ठेकान'।

**उढ़ारल** *सक०* किसी पुरुष का किसी स्त्री को फँसाना और लेकर चम्पत हो जाना।

**उढ़ुक** *पु०* ठोकर, जमीन का छोटा उठा हुआ भाग। **-लागल** *मुहा०* रोक, चोट।

**उढ़ुकल** *सक०* ऊपर के हिस्से का नीचे की ओर गिरना; सिर नीचे की ओर और पैर ऊपर की ओर होकर उलटना; ठोकर लगना।

**उतजोग** *पु०* [सं० उद्योग] प्रयास, प्रयत्न; व्यवस्था।

**उतपत-उतपति** *पु०* [सं० उत्पत्ति] उद्‌भव, आरम्भ।

**उतपन** *पु०* [सं० उत्पन्नः] पैदाइश; आरम्भ।

**उतपात** *पु०* [सं० उत्पातः] उपद्रव, अत्याचार।

**उतफाल** *पु०* उपद्रव, अत्याचार, उत्पात।

**उतम** *वि०* [सं० उत्तमम्] श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया। *उदा०* 'उतम खेती, मध्यम बान, निसिध चाकरी, भीख निदान'।

**उतर** *पु०* [सं० उत्तरम्] ध्रुवतारा की ओर की दिशा; जवाब।

**उतरउनी** *स्त्री०* नदी पार उतारने की मजदूरी।

**उतरना** *पु०* कान के ऊपरी भाग में पहनने की बाली।

**उतरल** *अक०* उतरना; स्वाद में खराबी आना; समाप्त होना (माह); दल-बल के साथ पहुँचना; पार होना (नदी); नशा या बुखार का समाप्त होना। *उदा०* 'उतरल घाँटी, होखल माटी'।

**उतरहवा** *पु०* [सं० उत्तरीयम्] उत्तरी देश या उत्तरी भाग का रहने वाला।

**उतरही** *वि०* उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली हवा।

**उतरा** *स्त्री०* उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। *कहा०* 'उतरा जान। बन्हिहऽ बान्ह'।

**उतराइल** *अक०* किसी वस्तु का पानी या तरल पदार्थ के ऊपर तैरना।

**उतराखंड** *पु०* उत्तर स्थित प्रदेश।

**उतराहुत** *क्रि०वि०* कुछ उत्तर की ओर।

**उतरी** *पु०* [सं० उत्तरीयम्] वह वस्त्र-खण्ड जो मृतक का दाह-संस्कार करने वाला पहनता है।

**उतरैया** *स्त्री०* उत्तरी (हवा)।

**उतसव** *पु०* [सं० उत्सव:] मंगल कार्य, धूम-धाम से होने वाला समारोह, यज्ञ, पूजा।

**उतसाह** *पु०* [सं० उत्साह:] उमंग, उल्लास।

**उतसाही** *वि०* उत्साह से भरा हुआ; हौसलेवाला।

**उतान** *वि०* [सं० उत्तान:] जो पीठ नीचे और छाती ऊपर किए हुए हों, चित लेटे हुए। *कहा०* 'उतान काहे चलेलऽ, भाई पहलवान बा'।

**उतार** *पु०* ऊपर से नीचे की ओर जाने की स्थिति, उतरने योग्य स्थान; घटाव; चढ़ाव का उलटा।

**उतारल** *सक०* ऊपर से नीचे ले आना; पहने गए वस्त्र या आभूषण को शरीर से अलग करना; मन्त्र-तन्त्र से भूत-प्रेत का प्रभाव दूर करना; किसी सवारी से उतारना।

**उतारा** *पु०* [सं० उत्तरम्] पत्र का उत्तर; नदी पार करना।

**उतारे** *क्रि०वि०* सदृश; समान।

**उताहुल** *पु०* व्यग्र; उत्कण्ठा, उकताया हुआ।

**उतेर** *पु०* कमजोर पौधा, जो खेत से निकाल दिया जाता है।

**उथला** *वि०* [सं० उत् + स्थल] बीच में ऊँचा और चारों तरफ क्रमश: नीचा; छिछला, कम गहरा।

**उथा-थाही** *स्त्री०यौ०* अनिश्चित।

**उथी-बीथी** *स्त्री०यौ०* अव्यवस्था, अस्त-व्यस्त।

**उदंगर** *पु०* छुट्टा पशु; अनेरिया।

**उदंत** *पु०* [सं०] समाचार, वार्ता, खबर, वृत्ति, प्रवृत्ति।

**उदकल** *अक०* उछलना-कूदना, छटकना।

**उद्घटल** *अक०* प्रकट होना।

**उदबस** *वि०* उजड़ा हुआ।

**उदवास** *पु०* तरह-तरह से परेशान करना; किसी को उसकी जगह से हटाने के लिए तंग करना। **-ल** *सक०* किसी को परेशान करना; स्थिर नहीं बैठने देना।

**उदवेग** *पु०* [सं० उद्वेग:] घबराहट, बेचैनी।

**उदम** *पु०* [सं० उद्यम:] प्रयास; परिश्रम।

**उदय** *पु०* [सं०] उगना; प्रकट होना।

**उदया** *पु०* [सं० उदय:] सूर्योदय; सूर्योदय काल की तिथि।

**उदहल** *सक०* पानी उलीचना; पानी फेंकना।

**उदाँब** *वि०* [सं० उद्दाम] अवरोधरहित; बन्धनहीन।

**उदान** *पु०* प्राण का एक प्रकार।

**उदार** *वि०* [सं०] दानी; जिसे कोई वस्तु किसी और को देने में कोई हिचक नहीं हो।

**उदास** *वि०* [सं०] अप्रसन्न; फीका।

**उदासी** *स्त्री०* उदास रहने की स्थिति; खिन्नता; विरक्ति।

**उदिआ-गुदिआ** *स्त्री०* घरेलू झगड़े में गुप्त, आन्तरिक बातें।

**उदेस** *पु०* [सं० उद्देश:] खोज, तलाश; मतलब, अभिप्राय।

**उधड़ा** *वि०* ऐसा घर, जिसमें टाट आदि नहीं हो; अस्त-व्यस्त, तितर-बितर।

**उधम** *पु०* हल्ला-गुल्ला, उत्पात।

**उधवा** *पु०* एक प्रकार का राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

**उधार** *पु०* बिना नकद भुगतान किए जो सामान लिया गया हो। बिना कीमत चुकाए हुए। *कहा०* 'उधार के बाप तगादा'।

**उधिआइल** *अक०* [सं० ऊर्ध्वम्] हवा में उड़ जाना। *कहा०* 'उधिआइल सतुआ पितरन के'।

**उधिआवल** *सक०* किसी वस्तु को हवा में उड़ा देना।

**उधिकल** *सक०* बिल में खनी मिट्टी को बाहर करना।

**उधेड़बुन** *पु०* सोच-विचार, चिन्ता, उलझन।

**उधेड़ल** *सक०* हाथ से मिट्टी हटाना; उखाड़ना।

**उधो** *पु०* उधव, उद्धव। *उदा०* 'उधो मन माने की बात' -सूर।

**उन** *सर्व०* 'उस' का बहुवचन।

**उनइस** *वि०* उन्नीस, 19।

**उनचालीस** *वि०* उन्तालीस, 39।

**उनचास** *वि०* चालीस और नौ, 49।

**उनकर** *सर्व०* उनका।

**उनति** *स्त्री०* [सं० उन्नतिः] बढ़न्ती; तरक्की।

**उनभुनाइल** *अक०* जागे रहना; न सोना न जागना।

**उनमुनी** *स्त्री०* जागे रहने का लक्षण।

**उनवल** *अक०* उमड़ना (बादल); झुकना; लटकना।

**उनसार** *पु०* उपक्रम; शुरू; किसी बन्द बात की चर्चा को पुनः शुरू करना।

**उनहल** *अक०* हवा, गर्मी या रखने की गलती के कारण किसी वस्तु का टेढ़ा हो जाना।

**उनारल** *सक०* धातु के बने किसी वृत्त या गहने के जुड़े मुँह को खींच कर अलग करना।

**उनाहल** *सक०* बोये खेत को बीज जमने के लिए पुनः जोतना।

**उनुस** *पु०* असुविधा, परेशानी।

**उनूर** *वि०* चुपचाप बैठा रहने वाला (व्यक्ति); मूर्ख।

**उन्हनका** *सर्व०* वे सब (आदरसूचक)।

**उन्हनी** *सर्व०* उन।

**उन्हुकारा** *सर्व०* उनके।

**उपकरन** *पु०* [सं०] साधन; सामग्री।

**उपकार** *पु०* [सं०] हित, दया, परोपकार।

**उपचार** *पु०* [सं०] चिकित्सा, रोग-प्रतिकार।

**उपचारक** *पु०* चिकित्सक।

**उपचावल** *सक०* अपदस्थ करना।

**उपछाल** *पु०* वमन; कै।

**उपज** *पु०* अन्न, फल का होना।

**उपजल** *अक०* [सं० उपजननम्] उपजना।

**उपजाऊ** *वि०* उर्वर।

**उपजीवी** *पु०* पराश्रित, पराधीन।

**उपटल** *अक०* [सं० उत्+पात्र] पानी से लबालब भर जाने के बाद पानी का बाहर बहना; बेंट की खुरपी, कुदाल आदि से अलग हो जाना।

**उपदरो** *पु०* [सं० उपद्रवः] उत्पात, अनाचार।

**उपदेस** *पु०* [सं० उपदेशः] भलाई की बात; ज्ञान की बात; शिक्षा। *उदा०* 'पर उपदेस कुसल बहुतेरे'।

**उपद्दर** *पु०* [सं० उपद्रवः] उत्पात; संकट; तंगी।

**उपधा** *स्त्री०* [सं०] फाजिल; बेसी, अधिक।

**उपनेत** *पु०* [सं० उपनीतः] शिव-पूजनार्थ महायज्ञ जिसमें उदारतापूर्वक अतिथियों, ब्राह्मणों और याचकों को प्रसन्न किया जाता है।

**उपरजल** *सक०* [सं० उपार्जनम्] मन में किसी बात का स्वतः पैदा होना; बात सूझना; स्वतःस्फूर्त बात निकलना।

**उपरतक्का** *वि०* [हिं० ऊपर ताकना] जो किसी वस्तु को अनायास प्राप्त करने के प्रयास में रहता है; छल करने वाला।
**उपरवार** *पु०* नीची जमीन के पास की ऊँची भूमि; ऊपर की ओर की जगह; *वि०* बाहरी; घूस, अनुचित ढंग से प्राप्त राशि या वस्तु।
**उपरवँछल** *पु०* ऊपर की ओर आने की स्थिति।
**उपराजल** *सक०* [सं० उपार्जनम्] उपार्जित करना; पैदा करना।
**उपरावल** *सक०* किसी वस्तु को कहीं से खोजकर प्राप्त करना।
**उपराहुत** *क्रि०वि०* ऊपर [हिं०]+आहूत [सं०] ऊपर की ओर।
**उपरा-उपरी** *पु०* चढ़ा-उपरी।
**उपरी** *स्त्री०* गोहरा, गोंइठा, चिपरी।
**उपरोहित** *पु०* [सं० पुरोहित] कुल पण्डित, धार्मिक कृत्य करने वाला।
**उपरोहिती** *स्त्री०* पुरोहिती का कार्य, कुल की पण्डिताई।
**उपरौंछल** *अक०* पानी के किनारे को पार करते रहना।
**उपलएन** *पु०* पानी से भर जाने पर उपट कर बह जाने की स्थिति।
**उपली** *स्त्री०* गोहरी, चिपरी।
**उपवन** *पु०* बगीचा।
**उपवास** *पु०* व्रत; फाँका।
**उपवीत** *पु०* उपनयन।
**उपसंपादक** *पु०* सहायक सम्पादक।
**उपसंहार** *पु०* समाप्ति।
**उपहार** *पु०* भेंट, सौगात।
**उपहास** *पु०* खिल्ली उड़ाना
**उपाय** *पु०* [सं०] तरकीब; व्यवस्था; इलाज।
**उपारल** *सक०* उखाड़ना।
**उपास** *पु०* [सं० उपवासः] भोजन नहीं करना (अन्नाभाव के चलते); निराहार रहना (व्रत के कारण) फाँका। *कहा०* 'उपास से पतोह के जूठ भला'।
**उपिजल** *अक०* [सं० उत्पादनम्] अन्न पैदा होना; मन में नया विचार पैदा होना; पौधे का बहुत बढ़ जाना; मजदूरी का जमा होते जाना; किसी पर किए अपकार या उपकार का दूसरे पर बोझ रहना।
**उपिजा** *पु०* पैदावार, खेत की उपज। **-ऊ** *वि०* उर्वर, उपजाऊ, अच्छी पैदावार देने वाला। **- वल** *सक०* उगाना, पैदा करना, खेती में फसल लगाना।
**उप्पा** *पु०* एक अत्यन्त छोटा अदृश्य कीड़ा जो काटता है।
**उफंगिया** *पु०* किसी प्रकार की मजदूरी लेकर काम करने वाला मजदूर।
**उफर** *पु०* तड़प कर मरने की क्रिया। **-पड़ल** *मुहा०* तड़प कर या छटपटा कर मर जाना। **-परुआ** *वि०* तड़प कर मरने वाला (गाली)।
**उफान** *पु०* बाढ़ की लहर।
**उबछल** *सक०* हाथ या किसी चीज से पानी बाहर फेंकना।
**उबटन** *पु०* ककड़ौर।
**उबरल** *अक०* [सं० उद्वारणम्] किसी विपत्ति से बच जाना; शेष बच जाना।
**उबरा** *पु०* उपयोग के बाद बची हुई वस्तु।
**उबलल** *सक०* [सं० उद्वलनम्] क्रुद्ध होकर उल्टी-सीधी बातें करना; खौलना।
**उबहन** *पु०* [सं०-उद्वहनम्] घड़े या अन्य बर्तन में बाँधकर पानी खींचने में प्रयुक्त रस्सी।
**उबहाँव** *पु०* वर्षा बन्द होने की स्थिति।
**उबाँट** *वि०* फालतू; उद्दण्ड।

**उबाँत** *स्त्री०* [सं० उद्वमनम्] वमन; कै, उलटी।

**उबान** *पु०* टोकरी आदि बुनते समय बुनाई पूरी होने के अन्त में उलटी बुनाई। *वि०* बुरी लत वाला; बेढंगा।

**उबार** *पु०* रक्षा, बचाव।

**उबारल** *सक०* रक्षा करना, किसी विपत्ति से बचाना; किसी वस्तु में से खर्च करने के बाद कुछ बचा देना।

**उबाल** *पु०* [सं०] उफान, आवेश।

**उबारा** *पु०* बचत।

**उबारू** *वि०* फालतू; असभ्य।

**उबिआइल** *अक०* ऊबना; घबड़ाना।

**उबिछन** *पु०* मवेशियों द्वारा छोड़ा गया दाना-घास-भूसा और पानी, जिसे उलीच कर नाद से बाहर निकाल दिया गया हो।

**उबिछल** *सक०* उलीचना।

**उबियावल** *अक०* तंग आ जाना, परेशान होना, घबरा जाना।

**उबेर** *पु०* [सं० उत्+बेला] वर्षा के बाद आसमान का साफ होना; चारागाह; अड़ार।

**उभड़-खाभड़** *वि०* ऊँची-नीची।

**उभरल** *अक०* किसी लपेटी हुई वस्तु का खुल जाना; चर्चा चलना, बात चलना।

**उभार** *पु०* उभरने की अवस्था।

**उभारल** *पु०* किसी लपेटी वस्तु को खोलना, उभारना; चर्चा चलाना, बात चलाना।

**उभैन** *पु०* कुआँ से पानी निकालने की डोरी।

**उमंग** *स्त्री०* उल्लास।

**उमकल** *अक०* [सं०] हर्षातिरेक में उछल कूद करना; उमंग में आना।

**उमका** *पु०* उमंग। **-वल** *सक०* घोड़ा दौड़ाना।

**उमछावन** *पु०* नापसन्दगी।

**उम-जाम** *पु०* हर्षातिरेक की दशा।

**उमड़ल** *अक०* बादल का घनीभूत होना; उमड़ना; नदी आदि का भरकर बहना।

**उमड़ाव** *पु०* उमड़ने का भाव

**उमत** *वि०* [सं० उन्मत्तः] पागल; मतवाला।

**उमतल** *अक०* किसी काम या वस्तु से मन का भाग जाना; किसी कार्य-विशेष को सम्पन्न करने का जी न करना।

**उमताइल** *अक०* [सं० उन्मत्त] किसी की राय की उपेक्षा कर देने की मनोदशा में होना।

**उमदा** *वि०* [अ० उम्दा] अच्छा, बढ़िया।

**उमर** *स्त्री०* उम्र।

**उमरा** *पु०* [अ०] सरदार।

**उमस** *स्त्री०* [सं० उष्मन्] हवा नहीं चलने से अत्यन्त गर्मी की स्थिति।

**उमसी** *स्त्री०* चने का रोग जिससे फली नहीं आती।

**उमा** *स्त्री०* पार्वती, दुर्गा, काली। **-नाथ** *पु०* शिव। **-सुत** *पु०* कार्त्तिकेय, गणेश।

**उमाह** *पु०* उत्साह, उमंग। *उदा०* 'प्रगट करौ सब चातुरी मन में विपुल उमाह'।

**उमाहल** *वि०* उत्साह से भरा हुआ।

**उमिर** *स्त्री०* [अ० उम्र] आयु, अवस्था, वय।

**उमेद** *पु०* [फा०-उम्मीद] आशा।

**उम्मी** *स्त्री०* जौ-गेहूँ की बाली; हाबुस।

**उराँट** *वि०* उद्दण्डतापूर्ण।

**उरकुस्सी** *स्त्री०* पोस्ते के खेत में होने वाली एक घास।

**उरद** *पु०* दाल के वर्ग का एक अनाज। *कहा०* 'उरद कहे हम सबसे नीका'।

**उरदी** *स्त्री०* एक प्रकार की दलहन, उड़द। [फा० वर्दी] पुलिस या सैनिक की पोशाक।

**उरदुम-खुरदुम** *पु०* घूम-घूम कर खाने वाला व्यक्ति; उपेक्षणीय।

**उरदू** *स्त्री०* [तु० उर्दू] भाषा का वह रूप जिसमें अरबी, फारसी के शब्दों की बहुलता रहती है।

**उरूआ** *पु०* [सं० उलूकः] उल्लू पक्षी।

**उरूध** *वि०* [सं० ऊर्ध्व] ऊपर की ओर चलने वाला (साँस)।

**उरेब** *वि०* [फा०] बेढंग, दोषपूर्ण, बेतरतीब।

**उरेबी** *वि०* गंजी का तिरछा काट; बिचित्र।

**उरेह** *पु०* अनुमान; सूझ; बनावट।

**उरेहल** *सक०* चित्र बनाना; रेखांकित करना।

**उलकी-मुलकी** *पु०* [यौ०] डराने-धमकाने के लिए कुछ कहने की स्थिति।

**उलखा** *पु०* [सं० उल्लेखः] हल्की-फुल्की चर्चा एवं निन्दा।

**उलंघ** *वि०* [सं० उत्+लङ्घ] बहादुर, फुर्तीला; न मानने योग्य।

**उलङ** *वि०* [सं० उल्लङ्घनम्] ऊटपटाँग बोलने और चलने वाला, ऊटपटाँग।

**उलटल** *अक०* उलटना; गाड़ी आदि का उलट जाना।

**उलटबाँसी** *स्त्री०* [हिं० उल्टा+बाँसुरी] सन्तों की मर्मभरी वाणियाँ जो सुनने में उलटी लगें; बेसुरी बात; उलटी बात।

**उलटा** *वि०* [सं० उल्लोठनम्] विपरीत; क्रम-विरुद्ध, औंधा। **-पलटी** *स्त्री०* किसी काम को प्रतिकूल ढंग से करने की स्थिति।

**उलटी** *स्त्री०* वमन; कै।

**उलटे** *क्रि०वि०* न्याय के विपरीत; नियम-विरुद्ध। *कहा०* 'उलटे चोर कोतवाल के डाँटे'।

**उलफी** *स्त्री०* फाजिल, अतिरिक्त।

**उलरुवा** *पु०* सिधवाई।

**उलवा** *वि०* उबाला या भूना हुआ अनाज।

**उलहल** *वि०* उबाला हुआ।

**उलाँक** *पु०* बड़ी नाव जिसमें एक लम्बा नुकीला सिरा पानी के ऊपर निकला रहता है।

**उलाटल** *अक०* उलटा होना, औंधा होना, विपरीत स्थिति में होना। *सक०* उलटना, औंधा करना; अस्त-व्यस्त करना।

**उलार** *वि०* गाड़ी का पीछे की ओर भारी और आगे की ओर हल्की होने की स्थिति; पिछला, पीछे का।

**उलावल** *सक०* किसी अन्न को खपड़ी में हल्का भूनना।

**उलिचल** *सक०* पानी बाहर फेंकना।

**उलिटल** *अक०* सिर नीचे और पैर ऊपर कर गिर जाना; किसी बरतन का करवट ले लेना; किसी बात को कहकर उलट जाना।

**उल्दी** *स्त्री०* काठ का कटोरा।

**उल्ल-उल्लू** *पु०* [सं० उलूकः] बेवकूफ, मूर्ख; शर्मिन्दा।

**उल्ला बाई** *क्रि०वि०* अपूर्ण; बेतरतीब, अव्यवस्थित; निरर्थक। *कहा०* 'फतेहा करना उल्ला-बाई, सिरनी पर मन लागत बा'।

**उल्ह-मेल्ह** *पु०* [यौ०] उद्विग्नता, बेचैनी।

**उल्ही** *पु०* [सं० उल्लंघनम्] वह व्यक्ति जो नियम भंग करने से खेल से वंचित कर दिया जाए।

**उसकल** *अक०* ऊपर की ओर उठना; ऊँचा होना (दीपक की बत्ती); अपने स्थान से पेट की अँतड़ी का खिसक जाना।

**उसकावल** *सक०* दीपक की बत्ती को आगे की ओर उसकाना।

**उसकी** *स्त्री०* उसकाने वाला काम (प्रेम या मजाक)। **-चलावल** *मुहा०* व्यंग्य करना।

**उसठ** *वि०* [सं० उत्+सत्व] नीरस; जिसमें रस न हो।

**उसरल** *अक०* [सं० उत्+सृ] किसी काम का पूरा होना; मेला या बाजार का समाप्त होना।

**उसराऊँ** *वि०* शीघ्र हो जाने वाला काम।

**उसार** *स्त्री०* समेटने की स्थिति।

**उसारल** *सक०* किसी काम को खत्म करना; कारोबार का समेटना।

**उसास** *स्त्री०* [सं० उच्छ्वास:] दु:ख का श्वास; जोर का श्वास; खाली। *लोको०* 'चोर लगले मोटरी। उसास भइले दाव॥'।

**उसिनल** *सक०* उबालना; वर्षा ऋतु में अत्यधिक गर्मी।

**उसिना** *वि०* उबाला (धान), उबाले धान का चावल। *कहा०* 'उसिना चाउर, दाल खेंसारी, मगध देस जनि जइह मुरारी'।

**उसिनाइल** *अक०* उबालना, उबाला जाना।

**उसिनुआ** *वि०* उबाला हुआ।

**उसूल** *पु०* [अ०] नियम, कायदा, 'असल' का बहुवचन।

**उस्तुरा** *पु०* [फा०] छुरा, बाल मुड़ने का औजार।

**उहवाँ** *क्रि०वि०* वहाँ, उस स्थान पर।

**उहाँ** *अव्य०* वहाँ।

**उहार** *पु०* पालकी पर परदे हेतु पड़ा कपड़ा।

**उहिआवल** *अक०* अनुमान लगाना।

**उहे** *सर्व०* वही। *उदा०* 'उहे बैदा बतलावे, जे रोगिया के भावे'।

**उहो** *सर्व०* वह भी।

❑

# ऊ

**ऊ** देवनागरी वर्णमाला का छठाँ स्वर, जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
**ऊँखम** *पु०* [सं० उष्मा] गर्मी।
**ऊँघ** *स्त्री०* नींद का झोका, तन्द्रा, झपकी।
**ऊँघन** *स्त्री०* हलकी नींद, झपकी।
**ऊँघल** *अक०* नींद में झूमना; ढिलाई से काम करना।
**ऊँच** *वि०* [सं० उच्च] ऊँचा। *कहा०* 'ऊँच दुकान के फींका पकवान'। **-नीच** *पु०* विषम भूमि; छोटा-बड़ा; उचित-अनुचित।
**ऊँचाई** *स्त्री०* उठान।
**ऊँचासी** *पु०/स्त्री०* ऊँची भूमि; ऊँची जगह।
**ऊँचे-ऊँचे** *क्रि०वि०* ऊपर-ऊपर, ऊपर की ओर; जोर से।
**ऊँट** *पु०* [सं० उष्ट्रः] रेगिस्तानी इलाके में पाया जाने वाला लम्बी गर्दन का ऊँचा पशु। *कहा०* 'ऊँट के मुँह में जीरा'। **-वान** *पु०* ऊँट को हाँकने वाला।
**ऊँटनी** *स्त्री०* [सं० उष्ट्र] मादा ऊँट।
**ऊँहूँ** *अव्य०* अस्वीकार, असहमति का सूचक, नहीं, कदापि नहीं।
**ऊ** *पु०* [सं०] शिव, चन्द्रमा, रक्षक। *अव्य०* -भी, *सर्व०* -वह।
**ऊअल** *अक०* उदय होना, उगना।
**ऊआ-बाई** *वि०* व्यर्थ, बेसिर-पैर का, *स्त्री०* निरर्थक बात; घबड़ाहट।
**ऊकार** *पु०* [सं०] 'ऊ' अक्षर या उसकी ध्वनि।
**ऊख** *पु०* ईख।
**ऊखी-बीखी** *स्त्री०* अत्यधिक गर्मी के कारण बेचैनी।
**ऊजर** *वि०* उजला।
**ऊटपटांग** *वि०* बेसिर-पैर का, निरर्थक, बेतुका।
**ऊतला** *वि०* उतावला; तेज।
**ऊत्तिम** *वि०* [सं० उत्तम] उत्तम, श्रेष्ठ।
**ऊधम** *पु०* शोरगुल, हंगामा।
**ऊधमी** *वि०* ऊधम मचाने वाला।
**ऊधव** *पु०* उद्धव।
**ऊन** *पु०* भेंड़ के बाल या रोंये। *वि०* -कम, न्यून, छोटा।
**ऊना-टेनी** *स्त्री०* झगड़ा, टण्टा।
**ऊना-डेबड़** *वि०* एक से दूसरा आकार एवं ऊँचाई में छोटा या कम।
**ऊनी** *वि०* ऊन से बना वस्त्र, ऊन का।
**ऊपर** *क्रि०वि०* ऊँचाई पर, ऊँचे स्थान पर; आकाश की ओर; पर। *कहा०* 'ऊपर चीकन भीतर रूखड़े' और 'ऊपर काला भीतर भाला'।
**ऊपर-ऊपरे** ऊपर बाहरी सतह पर। **-झापर** सरसरी तौर पर।
**ऊपरी** *वि०* बाहरी, बाहर का; असम्बद्ध; व्यर्थ, फालतू।
**ऊब** *स्त्री०* ऊबने का भाव; उमंग।
**ऊबट** *वि०* कठिन।
**ऊबड़-खाबड़** *वि०* ऊँचा-नीचा, अटपटा।
**ऊभ-चुभ** *अक०* डूबते हुए पानी के ऊपर नीचे होना।
**ऊमी** *स्त्री०* मडूए की कच्ची बाल।
**ऊलस** *वि०* जूठा (भोजन)।
**ऊसर** *वि०* अनुपजाऊ (भूमि), क्षारीय भूमि।
**ऊसराटौंड़** *पु०* अनुपजाऊ भूमि का क्षेत्र।
**ऊह** *अव्य०* कष्ट एवं पीड़ासूचक ध्वनि।
**ऊहूँ** *अव्य०* अस्वीकृतिसूचक शब्द।

❑

# ए

**ए** देवनागरी वर्णमाला का स्वर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।

**एँच-पेंच** *पु०* उलझन, चक्कर; चाल, घात।

**एंजिन** *पु०* [अं०] इंजन।

**एंडी** *स्त्री०* एक तरह का रेशम या उसका कीड़ा; अण्डी।

**एँड़ुआ** *पु०* गेंडुरी, कुण्डली।

**ए-** *अव्य०* [सं०] सम्बोधन; आमन्त्रण के लिए इसका प्रयोग होता है।

**एकंग** *वि०* अकेला।

**एकंगा** *वि०* एकतरफा, एक ओर का।

**एकंत** *वि०* एकान्त।

**एक** *पु०/वि०* एक की संख्या, अकेला; बेजोड़। *कहा०* 'एक अनार सौ बीमार'। **-आध** *वि०* एक या आधा, एक-दो। **-एक** *वि०* हर एक। **-टक** *वि०* बिना पलक गिराए। **-तरफा** *वि०* एक पक्षीय। **-दंत** *पु०* गणेश। **-दम** *अव्य०* एकबारगी, तुरन्त। **-दा** *क्रि०वि०* एक बार; एक समय। **-नी** *सर्व०* ये लोग। **-न्नी** *स्त्री०* एक सिक्का जिसका मूल्य रुपये का सोलहवाँ भाग होता है। **-पट** *पु०* एक ही प्रकार का रहन-सहन, खान-पान। **-पलिया** *पु०* ओढ़ने का चादर। **-पिढिआ** *पु०* [सं० पृष्ठ] एक के ठीक पहले या पीछे जन्म लेने वाला। **-पेरीया** *पु०* जिस राह से एक ही आदमी जा सके। **-फेरिया** *वि०* फसल के बालों को एक ही ओर रखकर बाँधा गया (बोझा)। **-बग्गा** *वि०* किसी बात पर अकेला डटने वाला; हठी। **-बरन** *वि०* [सं० एक वर्ण] एक ही रंग का; पूर्णत:। **-म** *पु०* प्रतिपदा तिथि। **-मत** *वि०* [सं०] एक राय या एक विचार रखने वाले (लोग)। एक राय के। **-रंगा** दे० 'एकरङा'। **-रङा** *पु०* लाल रंग का कपड़ा। **-रस** *वि०* एक ढंग का; बराबर। **-लउता** *वि०* एक ही बेटा होना; इकलौता। *स्त्री०* एक लड़की; इकलौती। **-लखत** *क्रि०वि०* लगातार, अनवरत। **-लत्ती** *पु०* एक-एक लात मारने की सजा। **-लाई** *स्त्री०* मगजीदार चादर, जिसमें कपड़े की केवल एक पर्त हो। **-ले** *पु०* व्यंजनों में लगने वाली स्वर की मात्रा-एकार, एकार का चिह्न। **-वटल** *अक०* [सं० एकवत्] एकमत होना; व्यवहार में एक होना। **-वाई** *वि०* एक तरफ ऊँची और बगल में दूसरी तरफ गाड़ी की नीची लीक। **-संझा** *वि०* वह एतवार व्रत जिसमें व्रती केवल दिन में भोजन करता है और रात में उपवास। **-संझी** *वि०* एक ही शाम दूध देने वाली गाय या भैंस। **-सठ** *वि०* [सं० एक षष्ठि] साठ और एक। **-हट्टी** *स्त्री०* बाजार में एक ही व्यापारी द्वारा किसी वस्तु के विक्रय की स्थिति। **-हत्तर** *वि०* [सं० एकसप्तति:] सत्तर और एक। **-हत्थी** *वि०* [सं० एक हस्त] वह गाय या भैंस जो किसी एक विशेष व्यक्ति के दूहने पर दूध देती है। **-हन** *वि०* [सं० एक धान्य] जिसमें एक ही प्रकार का अन्न हो। **-आँख से देखल** *मुहा०* एक सा मानना। **-चना भाड़ ना फोड़े** *मुहा०* अकेले काम न होना। **-पंथ दू काज** *मुहा०* एक काम के साथ

दूसरी भी कर लेना। **-पाँव से खड़ा रहल** *मुहा०* आज्ञाकारी होना। **-लाठी से सबके हाँकल** *मुहा०* सब के साथ एक सा बर्ताव करना।

**एकबार** *पु०* [अ० अखबार] समाचार-पत्र।

**एकबाल** *पु०* [फा० इकबाल] प्रताप; भाग्य।

**एकर** *सर्व०* इसका।

**एकरउनी** *स्त्री०* खेत की प्रथम निकौनी; पहली निराई।

**एकरार** *पु०* [अ० इकरार] कबूल, स्वीकार; वादा।

**एकवन** *पु०* [सं० अकवन] एक प्रकार का विषैला पौधा; अकवन।

**एकवान** *पु०* [हिं० इक्कावान] एक्का गाड़ी हाँकने वाला।

**एकहरा** *वि०* इकहरा, एक ही पर्त्त वाला (कपड़ा)।

**एकांत** *वि०* [सं] अकेला; जहाँ दूसरा कोई न हो; सुनसान जगह; बिना भीड़-भाड़।

**एका** *पु०* ताश का पहला पत्ता; एक प्रकार की गाड़ी जिसमें केवल एक घोड़ा जुतता है। **-ई** *स्त्री०* इकाई; अंक गणना में प्रथम। **-उरी** *स्त्री०* [सं० एकावली] रत्नों की एक माला जिसकी चर्चा लोक-कथाओं में है। **-एक** *क्रि०वि०* [फा० यकायक] सहसा, अकस्मात्। **-एकी** *क्रि०वि०* [सं० एकैकशः] एक-एक करके। **-ड़-एकाह** *वि०* जिसका प्रथम-प्रथम विवाह होने जा रहा हो। **-दसा** *पु०* [सं० एकादशाः] मरने के दिन से ग्यारहवें दिन सम्पन्न होने वाला हिन्दुओं का श्राद्ध-कर्म। **-दसी** *स्त्री०* [सं० एकादशी] पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, पक्ष की ग्यारहवीं तिथि को होने वाला व्रत। **-ध** *वि०* [सं० एक अर्द्ध] एक या दो (व्यक्ति या वस्तु)। **-नबे** *वि०* [सं० एक नवतिः] नब्बे और एक। **-हि-एकारी** *स्त्री०* वह भाला जिसमें केवल एक ओर काँटा लगा हो। **-वन** *वि०* [सं० एक पंचाशत्] पचास और एक। **-सी** *वि०* [सं० एकाशीति] अस्सी और एक।

**एकोतर सौ** *वि०* [सं० एकोत्तर शत] एक सौ एक।

**एकोरा** *क्रि०वि०* एक तरफ।

**एकोराह** *पु०* एक तरफ स्थित।

**एगारह** *वि०* [सं० एकादश] दस और एक, ग्यारह।

**एजवाँ** *क्रि०वि०* इस स्थान पर।

**एजाँ-एजूँ** *क्रि०वि०* [फा० ईजा] इसी स्थान पर।

**एजिन** *क्रि०वि०* इस स्थान पर।

**एठाई** *क्रि०वि०* इस स्थान पर।

**एठियाँ** *क्रि०वि०* इस स्थान पर।

**एड़ा** *पु०* सिधवाई, अड़ानी, हूरा।

**एड़ी** *स्त्री०* पैर का पिछला भाग।

**ए-ढहा-हेई** *अव्य०* गाय के गर्भाधान के लिए साँड़ को पुकारने की ध्वनि।

**एढ़ली** *स्त्री०* एक प्रकार का धान जो छींटकर बोया जाता है।

**एतना** *वि०* [सं० इयत्] इतना।

**एतनी-इतने** *क्रि०वि०* [सं० इयत या एतावत्] इतनी अल्प मात्रा में, इतना ही।

**एतबार** *पु०* विश्वास।

**एतवार** *पु०* [फा० इतवार] रविवार। [अ० एतबार] विश्वास।

**एतहत** *क्रि०वि०* इतना बड़ा।

**एतहाँ** *क्रि०वि०* यहाँ पर।
**एतहीं** *क्रि०वि०* इसी स्थान पर।
**एतहूँ** *क्रि०वि०* यहाँ भी।
**एता** *वि०* इतना।
**एती** *क्रि०वि०* इतना। **-बड़** इतना बड़ा। **-चुके** इतना सा।
**एतेक** *क्रि०वि०* इतना अधिक।
**एथी** *सर्व०* यह (अनिर्दिष्ट, अनिश्चित बोधक।
**एनही-एनिये** *क्रि०वि०* इधर ही।
**एनहूँ-एनियो** *क्रि०वि०* इधर भी।
**एने** *क्रि०वि०* इस तरफ; इस ओर।
**एमें** *सर्व०* इसमें, 'एह में' का संक्षिप्त रूप।
**एरे** *अव्य०* अरे, हे।
**एसिड** *पु०* [अं०] अम्ल, तेजाब।
**एसेंब्ली** *स्त्री०* [अं०] सभा, समूह।
**एसे** *सर्व०* इससे।
**एसों** *क्रि०वि०* इस साल, इस वर्ष।
**एह** *सर्व०* यह। *वि०* यह। *अव्य०* उपेक्षा, अस्वीकृति, असहमति एवं विस्मय बोधक शब्द।
**एहर** *क्रि०वि०* इधर।
**एहवात** *पु०* [सं० अहोभाग्य] स्त्रियों का सौभाग्य; सधवापन। *वि०* एहवाती- सौभाग्यवती।
**एहवार** *पु०* तमान; घाटा, नुकसान।
**एहसान** *पु०* [अ०] नेकी, भलाई। **-मंद** *वि०* कृतज्ञ।
**एहिजा** *क्रि०वि०* इसी स्थान पर।
**एहिजे** *क्रि०वि०* इसी।
**एही** *क्रि०वि०* यहीं, इसी। *कहा०* 'एही आँखे भादो खेपाई'। **-ठँइया-ठीन** *क्रि०वि०* इसी स्थान पर। **-एहें** *अव्य०* नकारात्मकसूचक ध्वनि जो किसी प्रश्न के उत्तर में प्रयुक्त होता है। **-ए हो** *अव्य०* सम्बोधनसूचक शब्द।
**एहो** *अव्य०* सम्बोधनार्थक अव्यय, हे, ए०।

❑

# ऐ

**ऐ** देवनागरी वर्णमाला का एक स्वर वर्ण है। 'ऐ' के बदले भोजपुरी में 'अय' या 'अए' चलता है।

**ऐं** *अव्य०* भली-भाँति नहीं सुनी गई या समझी गई बात को पुनः सुनने-जानने की जिज्ञासासूचक ध्वनि, विस्मयादि सूचक ध्वनि।

**ऐंचा** *वि०* तिरछा।

**ऐंचा ताना** *वि०* जिसकी पुतली ताकते समय दूसरी ओर खिंची रहे।

**ऐंछल** *सक०* झाड़ना।

**ऐंजा** *पु०* एक प्रकार का साग।

**ऐंठन** *पु०* मरोड़; तनाव; घमण्ड।

**ऐंठा** *पु०* जौ, गेहूँ की पत्तियों के सिकुड़ने का एक रोग।

**ऐंड़ा** *वि०* टेढ़ा, दर्पयुक्त।

**ऐ** *अव्य०* अपने से छोटे को सम्बोधित करने का शब्द—हे, ए।

**ऐगुन** *पु०* [सं० अवगुण] अपराध; ऐब, दोष।

**ऐन** *पु०* थन; निहाई। *वि०* ठीक, असल।

**ऐनक** *पु०* [अ०] मुँह देखने का शीशा, दर्पण; चश्मा।

**ऐना** *पु०* आईना।

**ऐपना** *पु०* [सं० अल्पना] चावल, हल्दी एवं आटेसहित विभिन्न रंगों एवं सामग्रियों से बनाया गया लेप जो मांगलिक अवसरों पर काम आता है।

**ऐब** *पु०* [अ०] दोष, अवगुण, बुराई, खराबी।

**ऐबी** *वि०* दोषपूर्ण; विकलांग।

**ऐमाल** *पु०* एक प्रकार की घास।

**ऐया** *स्त्री०* दादी, बूढ़ी स्त्री।

**ऐयार** *पु०* [अ०] चालाक, धूर्त; चलता-पुर्जा व्यक्ति।

**ऐयारी** *स्त्री०* धूर्तता, चालाकी; मित्रता।

**ऐयास** *वि०* [अ०] विलासी, भोग-विलास में लीन, कामुक।

**ऐरा-गैरा** *वि०* इधर-उधर का, तुच्छ, नगण्य। **-नत्थू खैरा** *मुहा०* तुच्छ, नगण्य जन। **-पंचकल्यानी** *मुहा०* ऐसा-वैसा व्यक्ति।

**ऐलान** *पु०* [अ०] घोषणा।

**ऐसन** *वि०* इस तरह।

**ऐसे** *अव्य०* इस प्रकार, इस ढंग से।

❑

# ओ

**ओ** देवनागरी वर्णमाला का स्वर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ है।

**ओ** *अव्य०* हे, ऐ, अरे जैसी सम्बोधन-सूचक ध्वनि।

**ओंइछल** *सक०* पीड़ित व्यक्ति को फूल अन्न या पैसे से झारना, न्यौछावर करना।

**ओंकल** *अक०* कै करना; ऊबना।

**ओंकार** *पु०* [सं०] 'ओम' मन्त्र या इसका उच्चारण; आरम्भ, श्रीगणेश।

**ओंगन** *पु०* गाड़ी की धुरी में दिया जाने वाला तेल।

**ओंगल** *सक०* गाड़ी की धुरी में तेल लगाना।

**ओंठ** *पु०* होठ। **-चबावल** *मुहा०* क्रोध दिखाना। **-चाटल** *मुहा०* स्वाद की लालसा रह जाना। **-मलल** *मुहा०* बुरा कहने पर दण्ड देना।

**ओअरगत** *पु०* सुविधाजनक; गुंजाइश।

**ओइलन** *पु०* चलाकर या फटककर अनाज से अलग किया हुआ भूसा-डण्ठल आदि।

**ओइलल** *सक०* हाथ से चलाकर या सूप से फटककर मिले हुए अनाज को या बड़े-छोटे दाने को अलग-अलग करना।

**ओइसन** *अव्य०* वैसा; उस तरह से।

**ओइसना-ओइसनी** *अव्य०* वैसे-वैसे।

**ओइसे** *अव्य०* वैसे; उस तरह से।

**ओकनी** *सर्व०* वे सब।

**ओकर** *सर्व०* उसका।

**ओकाइल** *अक०* कै करना, वमन करना; कै करने की स्थिति।

**ओका-बोका** *पु०* बच्चों का एक देशी खेल। *उदा०* 'ओका-बोका, तीन तड़ोका, लौआ-लाठी चंदन काठी...'।

**ओखर-ओखरी** *स्त्री०* अन्न कूटने के लिए लकड़ी या पत्थर का बना एक पात्र, ओखली।

**ओखाह** *पु०* मवेशियों का पेट पूर्णरूप से नहीं भरा रहना।

**ओगरल** *सक०* रखवाली करना।

**ओघासी** *स्त्री०* घर के आस-पास के पानी का बहकर किसी खेत में जमा होना।

**ओछ** *वि०* [सं० तुच्छ] छोटा, अशिष्ट, क्षुद्र; कपड़े का नाप से छोटा हो जाना।

**ओछरा** *पु०* पशुओं के रहने के स्थान पर जाड़े के दिनों में पुआल का बिछावन।

**ओछवानी** *स्त्री०* घी, सूखाफल, मेवा-जड़ी-बूटीमिश्रित वह भोज्य पदार्थ जो जच्चा को खिलाया जाता है।

**ओछी कान्ही** *वि०* बैलों की जोड़ी में कुछ छोटा बड़ा।

**ओज** *क्रि०वि०* कमी करना। *कहा०* 'भोज में ओज का।'

**ओजन** *पु०* वजन, भार। *अव्य०* उस जगह, वहाँ।

**ओजमर** *पु०* जोर-आजमाइश; परीक्षा।

**ओजमाइस** *वि०* [फा० आजमाइश] जाँच, परीक्षण।

**ओजमातल** *सक०* जाँचना, परखना।

**ओजवाँ** *अव्य०* उस जगह, वहाँ।

**ओजिन** *अव्य०* उस जगह।

**ओजिर** *पु०* [अ० वजीर] मन्त्री, अमात्य मिनिस्टर।

**ओझइआ** *पु०* झाड़-फूँक की क्रिया।

**ओझइती** *स्त्री०* झाड़-फूँक की विद्या का काम।

**ओझा** *पु०* भूत-प्रेत-डायन आदि का प्रभाव तन्त्र-मन्त्र द्वारा दूर वाला व्यक्ति; ब्राह्मणों की एक उपाधि।

**ओट** *स्त्री०* आड़; सहारा देना (खम्भे आदि के द्वारा)।

**ओटनी** *स्त्री०* वह चरखी जिससे कपास के बिनौले अलग किये जाते हैं।

**ओटल** *सक०* किसी वस्तु का पता लगाना।

**ओटा** *पु०* आड़; परदे में; घर या बरामदे में चढ़ने-उतरने के लिए ईंट या मिट्टी की छोटी सीढ़ी; खरहे के रहने की जगह।

**ओटिआवल** *सक०* किसी वस्तु का पता लगाने की फिराक में रहना।

**ओठँगन** *पु०* आधार।

**ओठँघल** *अक०* किसी चीज के सहारे बैठना, लेटना।

**ओठँघावल** *सक०* टिकाकर रखना।

**ओठ** *पु०* [सं० ओष्ठः] होंठ।

**ओठइयाँ** *अव्य०* उस जगह।

**ओठन** *अव्य०* उस जगह, वहाँ।

**ओठर** *पु०* उलाहना।

**ओड़हुल** *पु०* लाल रंग का एक प्रसिद्ध फूल, देवी फूल।

**ओड़ा** *क्रि०वि०* तरफ, ओर। *पु०* बाँस की कमाची का बना बड़ा खुला टोकरा।

**ओड़िआ** *पु०* बाँस की बनी टोकरी आदि।

**ओढ़उल** *पु०* दे० 'ओड़हुल'।

**ओढ़न** *पु०* ओढ़ने के लिए जो हो। **-पहिरन** *पु०* ओढ़ने-पहनने के लिए जो हो।

**ओढ़ना** *पु०* ओढ़ने की वस्तु (रजाई, चादर) *उदा०* 'ओढ़ना कुछ ना, दरी बिछौना'।

**ओढ़निआवल** *अक०* लुढ़काना।

**ओढ़नी** *स्त्री०* लड़कियों के ओढ़ने का वस्त्र, दुपट्टा।

**ओढ़ल** *सक०* चादर ओढ़ना, रजाई ओढ़ना; ढँकना।

**ओत** *पु०* आड़, पर्दा।

**ओतना** *क्रि०वि०* उस मात्रा में, उतना अधिक।

**ओतवत** *क्रि०वि०* उतना बड़ा।

**ओतहत** *क्रि०वि०* उतना बड़ा।

**ओतहीं** *अव्य०* वहीं, उसी जगह पर।

**ओतहुँ** *अव्य०* वहाँ भी।

**ओतेक** *क्रि०वि०* उतना, उतना अधिक।

**ओद** *वि०* [सं० आर्द्र] नमी वाला, भींगा।

**ओदर** *पु०* [सं० उदर] पेट, गर्भ।

**ओदरल** *अक०* फटना, जुड़ी हुई वस्तु का अलग होना। *क्रि०वि०* फटा हुआ, अलग-अलग हुआ।

**ओदारल** *सक०* किसी जुड़ी हुई वस्तु का निकालना, फाड़ना या अलग करना।

**ओदा-सुखी** *स्त्री०* कुछ सूखा और कुछ हरा होने की स्थिति।

**ओदी** *स्त्री०* नमी या भींगा होने की स्थिति।

**ओध** *पु०* पेड़-पौधों का झुण्ड (बाँस) बाँस-बिट्टी।

**ओनइस** *वि०* [हिं० उनईस] बीस में एक कम, 19।

**ओनचालिस** *वि०* [हिं० उनचालीस] चालीस में एक कम, 39।

**ओनचास** *वि०* [हिं० उनचास] पचास में एक कम, 49।

**ओनतीस** *वि०* [हिं० उनतीस] तीस में एक कम, 29।

**ओनसठ** *वि०* [हिं० उनसठ] साठ में एक कम, 59।

**ओनहत्तर** *वि०* [हिं० उनहत्तर] सत्तर में एक कम, 69।

**ओनहीं** *अव्य०* उधर ही।
**ओनामासीधम** *पु०* एक शिव मन्त्र 'ओऽम् नमः सिद्धम्' का तद्भव रूप, अक्षरारम्भ।
**ओनिए** *अव्य०* उधर ही।
**ओने** *अव्य०* उधर।
**ओन्हापाती-ओल्हापाती** *स्त्री०* पेड़ पर चढ़कर खेला जाने वाला खेल, दोल्हापाती।
**ओबरी** *स्त्री०* प्रसूतिका गृह, सउरी।
**ओभी** *स्त्री०* खुदाई करने वाला एक यन्त्र विशेष।
**ओम्** *पु०* [सं०] मन्त्रों के पहले और पीछे सुच्चरित पवित्र शब्द, प्रणव, ॐ। *उदा०* 'ॐ नमः शिवाय'।
**ओमें** *सर्व०* उसमें।
**ओर** *स्त्री०* तरफ, किनारा, दिशा। **-छोर** *पु०* इस किनारे से उस किनारे तक, आदि से अन्त तक।
**ओरन्त** *पु०* समाप्त।
**ओरचन** *पु०* खटिया के पायताने में लगी मोटी रस्सी जिससे खटिया को तान कर रखा जाता है; उभेचन।
**ओरदावन** दे० ओरचन।
**ओरमल** *अक०* किसी पेड़ की डाली का एक ओर झुकना।
**ओरहन** *पु०* उलाहना।
**ओरहा** *अव्य०* होरहा।
**ओराइल** *अक०* खत्म हो जाना, समाप्त हो जाना।
**ओरालडुवा** *पु०* खाँड का लड्डू।
**ओरिआनी** *स्त्री०* छप्पर का अन्तिम छोर, जहाँ से वर्षा का पानी चूता है।
**ओरी** *स्त्री०* तरफ, किनारा, दिशा, ओरिआनी। *उदा०* 'मोर दुइ नयन चुवै जस ओरी' -जायसी।
**ओल** *पु०* एक तरह का कन्द, जिसका चोखा, अचार आदि बनता है, सूरन।
**ओलरल** *अक०* शरीर को ढीला छोड़कर पसर जाना; किसी लता वाले पौधे में भरपूर फल-फूल आना।
**ओला** *पु०* बनौरी, उपल।
**ओलार** *अक०* एकतरफा अधिक भार होने से झुक जाना।
**ओलाह** *पु०* रियायती
**ओली** *स्त्री०* झोली।
**ओस** *पु०* वाष्प का जल बिन्दु में परिवर्तित रूप। *कहा०* 'ओस चटला से पिआस ना जाला'।
**ओसर** *वि०* वह गाय या भैंस जो पहली बार गाभिन हुई हो।
**ओसवनी** *स्त्री०* ओसाने का कार्य, भूसा-मिश्रित अनाज का भूसा को अलग करने का कार्य।
**ओसाइल** *अक०* बाहर रखी वस्तु पर ओस गिरना, ओस से भींगा या प्रभावित। *क्रि०वि०* जिस पर ओस पड़ी हुई है।
**ओसारा** *पु०* मकान का बाहरी या भीतरी वह हिस्सा जो सामने से खुला रहता है, बरामदा, दालान।
**ओसावल** *सक०* भूसामिश्रित दाने को ऊपर से गिराकर भूसा उड़वा देना, ओसाना। *क्रि०वि०* ओसाया हुआ।
**ओह** *अव्य०* दुःख और शोकसूचक स्थिति संकेत।
**ओहरल** *अक०* कमी पर होना।
**ओहार** *पु०* पर्दा।
**ओहारी** *स्त्री०* थाम्हने की ऊपर की कड़ी।
**ओहो** *अव्य०* आश्चर्य, हर्ष का सूचक शब्द अहो, ही, हहो।

❑

# औ

**औ** देवनागरी वर्णमाला का स्वर वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ है।

**औंकर** *पु०* एक प्रकार की घास।

**औंघाई** *स्त्री०* झपकी, नींद, ऊँघाई।

**औंजल** *अक०* ऊबना, व्याकुल होना।

**औंटन** *पु०* चारा काटने का ठीहा।

**औंटल** *सक०* औंटना; गर्म करना।

**औंधल** *अक०* उलट जाना, औंधा होना।

**औकठ** *पु०* ऐसा काठ, जिसकी लकड़ी का उपयोग किसी उपकरण के लिए नहीं, सिर्फ जलावन के लिए होता है।

**औकात** *पु०* हैसियत, शक्ति।

**औगढ़** *वि०* जो गढ़ा हुआ नहीं हो।

**औगार** दे० 'अवजार'।

**औगारल** *सक०* ज्यादा गहराई से हल जोतना।

**औघड़** *पु०* अघोरी; अपशकुन; फक्कड़।

**औचक** *अव्य०* अकस्मात्, अचानक।

**औछार** *पु०* वर्षा का झोंका, बौछार

**औजार** *पु०* [अ०] कार्य करने में उपयोगी उपकरण, जैसे–आरी, रेती, छेनी, हथौड़ा इत्यादि।

**औझड़-औझर** *क्रि०वि०* लगातार, निरन्तर।

**औझड़ाह** *क्रि०वि०* कुजगह, कुढंग।

**औटनी** *पु०* उबाले जाने वाली चीज को चलाने की कलछी या चम्मच।

**औढर** *वि०* चाहे जिधर ढल जाने वाला; थोड़े में निहाल हो जाने वाला, आशुतोष। **-दानी** *वि०* भक्त को निहाल कर देने वाला।

**औतरल** *अक०* अवतार लेना, जन्म ग्रहण करना; परम्परागत।

**औतार** *पु०* अवतार, प्राकट्य।

**औरंग** *पु०* मक्का, ज्वार, बाजरा का रोग जिससे डण्ठल पर सफेद दाग पड़ जाते हैं।

**और** *अव्य०* तथा, एवं, जोड़ने वाला शब्द। *वि०* दूसरा, अन्य, अधिक।

**औरत** *स्त्री०* [अ०] स्त्री, महिला, नारी। *कहा०* 'औरत किसकी जो पास रखे उसकी'।

**औरा** *पु०* आँवला।

**औल्हा** *पु०* पांजा।

**औलाद** *स्त्री०* [अ०] सन्तान, सन्तति, वंशज।

**औसत** *वि०* बीच का।

**औसर** *पु०* [सं० अवसरः] समय, काल। ऐसी अनुकूल स्थिति जिसमें इच्छा पूर्ति का अवसर मिले। अवकाश, फुरसत; इत्तफाक।

**औसान** *पु०* [सं० अवसानम्] विराम, ठहराव; अन्त, समाप्ति; सीमा, हद; सायंकाल; मृत्यु।

**औसावल** *सक०* भूसे में रखकर फल को पकाना।

# क

**क** देवनागरी वर्णमाला के 'क' वर्ग का पहला व्यंजन वर्ण जो कंठ से बोला जाता है। (अव्यय) सम्बन्ध कारक की विभक्ति का संक्षिप्त रूप। *उदा०* 'बनारस क पान'।

**कँइचा** *पु०* झाड़ी की बेतरतीब बढ़ी डालियों को काटने-छाँटने की बड़ी कैंची।

**कँइची** *स्त्री०* [सं० कत्तरी] कपड़ा आदि काटने का औजार।

**कँइत** *पु०* कठ बेली (छोटा बेल) के सदृश एक फल, कपित्थ फल।

**कँइया** *वि०* धूर्त, काइयाँ।

**कँउचल** *अक०* चिढ़ना।

**कँउची** *सर्व०* कौन चीज का संक्षिप्त रूप।

**कँउनी** *स्त्री०* [सं० कङ्गु] एक प्रकार का अन्न जिसका बाल बाजरे-सा होता है, टँगुनी।

**कंक** *पु०* एक पक्षी, सफेद चील; अत्यन्त गरीब, दरिद्र। *उदा०* 'कंक का लेखे मड़ुआ अन्न', 'कंक गइले कंक कींहा, कंक फारि खइलन'।

**कंकड़** *पु०* पत्थर या ईंट का छोटा टुकड़ा; सूखी सुरती या तम्बाकू जो चिलम पर चढ़ाकर पिया जाता है। *उदा०* 'बम शंकर, ई गांजा ना ह, ई कंकड़।'

–लोकगीत

**कंकड़ी** *स्त्री०* छोटा कंकड़, छर्री। *उदा०* 'कंकड़ी मोहे मारी गगरिया फोरि डारी'।

**कंकड़ीला** *वि०* कंकड़ मिला हुआ, जिसमें कंकड़ अधिक हो।

**कंकण** *पु०* (वर के हाथ में) सूत का बना हुआ वस्तु विशेष, जिसमें राई, नोन और हल्दी बँधी होती है; कंगन, विवाह-सूत्र।

**कंकराही** *वि०* कंकड़मिश्रित भूमि (कंकड़)।

**कंकरीट** *पु०* [अं० कांक्रीट] बालू, कंकड़ सीमेन्ट मिलाने से तैयार किया हुआ मसाला।

**कँकरी** *स्त्री०* एक पतला लम्बा फल जिसे खाया जाता है। *कहा०* 'कँकरी के चोर के लात मुक्का जादा'।

**कंकाल** *पु०* [सं०] शरीर का हड्डी-समूह, ठठरी, ढाँचा।

**कंकालिनी** *स्त्री०* [सं०] काली, *वि० कर्कशा नारी।*

**कंकाली** *स्त्री०* मन्त्र-तन्त्र के प्रयोग में निपुण एक देवी, कंकालिनी। *उदा०* 'जय काली कंकाली वचन ना जाये खाली'।

**कँखउरी** *स्त्री०* [सं० कक्ष+बटी] काँख का घाव।

**कँखवटल** *सक०* काँख में दाबना।

**कंगन** दे० ककना।

**कंगला** *वि०* दे० 'कंगाल'।

**कँगही** *स्त्री०* कंघी।

**कँगारू** *पु०* [अं०] आस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला जानवर।

**कंगाल** *वि०* [सं० कंकाल] निर्धन; भुक्खड़। *कहा०* 'कंगाल के महुआ मीठ'।

**कंगाली** *स्त्री०* गरीबी, निर्धनता।

**कंगुरिया** *स्त्री०* कनगुरिया।

**कंगूरा** *पु०* [फा० कुँगरा] गुम्बद, बुर्ज।

**कंघा** *पु०* [सं० कंकत:] बाल सँवारने का उपकरण।

**कंघी** *स्त्री०* छोटा कंघा।

**कंचट** *पु०* कान की जड़ में होने वाला घाव।

**कंचनचूर** *पु०* एक प्रकार का विशिष्ट धान।

**कँचाड़ल** *अक०* रौंदना, पैर से दबाना।

**कंचन** *पु०* सोना [सं० काञ्चनम्] धन-दौलत। *वि०* सुन्दर, सुहावना। *उदा०* 'हरिअर कंचन-अत्यन्त हरा, सहचर शब्द'।

**कँचलोहिया** *वि०* कच्चे लोहे से निर्मित; श्रम करने से भागने वाला।

**कंचा** *वि०* कच्चा। *उदा०* 'बान्हल बाड़े संकर लड्डआ, अँउटल कंचा दूध।'

**कंचित** *वि०* [सं० किम+चित] थोड़ा, किंचित्।

**कँचिया** *वि०* कच्चा।

**कंचु** *पु०* एक प्रकार का साग।

**कंचुक** *पु०* [सं०] अँगरखा, चोली, अँगिया; केंचुल।

**कंचुकी** *स्त्री०* चोली, अँगिया।

**कंचोरस** *पु०* ईख को पेरकर निकाला गया रस।

**कंछल** *अक०* मरोड़ना; पेट में हलका-हलका दर्द होना।

**कंछा** *स्त्री०* [सं० काङ्क्षा] इच्छा; पतली डाली।

**कंछी** *स्त्री०* पतली डाली।

**कंज** *पु०* [सं०] कमल; ब्रह्मा; केश।

**कंजई** *वि०* कंजे के रंग का, गहरा खाकी।

**कंजड़** *पु०* एक झगड़ालू घुमक्कड़ जाति, खानाबदोश; कंजूस।

**कंजड़ई** *पु०* कंजूसी।

**कंजूस** *वि०* [सं० कण+हिं० चूसना] कृपण, सूम।

**कंजूसी** *स्त्री०* कृपणता।

**कंटइया** *स्त्री०* (कंटकारी) पीले फूलवाला एक जंगली पौधा, धमोय।

**कंटा-कांटा** *पु०* [सं० कण्टक] छोटी-छोटी मुड़ी हुई काटियों का गुच्छा, जिसका उपयोग कुएँ में गिरे बर्तनों को निकालने के लिए होता है।

**कंटिया** *स्त्री०* घी-तेल रखने का लम्बी गर्दन वाला मिट्टी का बर्तन। *कहा०* 'कंटिया कोंहारे के दूध जजिमान के'।

**कंटी** *स्त्री०* [सं० कण्ठिन्] अन्न नापने का बर्तन, कांटेदार बर्तन।

**कंटेअवा** *वि०* काँटेदार।

**कंटोप** *पु०* बड़ी टोपी जिसके पहनने पर कान ढँक जाता है।

**कंठ** *पु०* गला, गले में सामने की तरफ जवानी आने पर एक मांस ग्रन्थि निकल आने की स्थिति; तोते के गले में लाल रोयें की रेखा। *क्रि०वि०* कंठायन। *कहा०* 'कंठ कोतर पेट दरार'। **-माला** *स्त्री०* गले का रोग, जिसमें लगातार शृंखलाबद्ध फोड़े निकलते हैं। **-सूल** *पु०* घोड़े के गले की भँवरी। **-हार** *पु०* हार। **-खुलल** *मुहा०* आवाज निकलना, **-बइठल** *मुहा०* गला बैठना, बेसुरा होना, **-भइल** *मुहा०* जबानी याद होना।

**कंठा** *पु०* गले में पहनने का एक आभूषण।

**कंठी** *स्त्री०* तुलसी की माला जिसे वैष्णव धारण करता है; कुदाल की धार और पासे का जोड़। *कहा०* 'कंठी भऽ गइल संठी'। *मुहा०* **कंठी बान्हल**—किसी काम को न करने का व्रत लेना। **कंठी तूरल**—किसी त्याज्य काम को कर बैठना। **कंठी देहल**—साधु द्वारा किसी को चेला बनाना।

**कँठेसर** *पु०* स्त्रियों के गले का आभूषण।

**कंठेसरी** *स्त्री०* [सं० कण्ठ+ईश्वरी] स्वर की अधिष्ठात्री देवी। *उदा०* 'कंठ बान्ह कंठेसरी, काया बान्ह परमेसरी।'-लोकमन्त्र

**कँड़रा** *वि०* [सं० स्कन्दन] उपले की राख।

**कँड़री** *स्त्री०* अँतड़ी में सूख कर कड़ा हुआ मल। -**कँड़री परल** *मुहा०* मल का सूख कर कड़ा होना (मवेशी एवं बच्चों के पेट में)।

**कँड़वानी** *स्त्री०* [सं० काण्ड+बन] वह स्थान जहाँ मूँज उपजा हो।

**कंड़ा** *पु०* [सं० काण्ड] एक प्रकार की घास जिसका उपयोग फूस का घर बनाने में होता है; सरकण्डा।

**कँड़ा** *पु०* सूखा हुआ गोबर।

**कँड़िका** *स्त्री०* (काँड़ का अल्प०) जमीन की सतह के भीतर का चूहे का बिल जिसे फोड़कर वह भाग जाता है।

**कंडील** *स्त्री०* [अ० कन्दील] बाँस की कमची और रंगीन कागज का बना दीपपात्र।

**कंडूआ** *पु०* ज्वार, बाजरे की बाल का एक रोग।

**कंत** *पु०* [सं० कान्त] प्रियतम, पति। *उदा०* 'किआ तोर सासु ससुर दुःख देले, नैहर दूर बसे, किआ तोरा कंत विदेस कवन दुःख रोएलू?'।

**कंतोड़** *पु०* काठ का छोटा बक्स।

**कंथ** *पु०* पति, प्यारा, ईश्वर।

**कंथा** *स्त्री०* [सं०] गुदड़ी, कथरी।

**कंथारी** *स्त्री०* कथरी।

**कंथी** *वि०* [सं०] गुदड़ी धारण करने वाला।

**कंद** *पु०* [सं०] पौधों की मीठी जड़, जिसका उपयोग फलाहार एवं सब्जी में होता है।

**कँदई** *स्त्री०* [सं० कर्दम] कीचड़, काँदो। *वि०* **कँदवइल** कीचड़ मिलने से कन्दा।

**कंदरी** *स्त्री०* नदी के किनारे खोदा हुआ कुआँ, गुफा, घाटी।

**कंदा** *पु०* [सं० कन्द] एक प्रकार का कन्द जिसकी तरकारी बनती है; शकरकन्द, अरूई।

**कंदुक** *पु०* [सं०] गेंद।

**कंदू** *पु०* कीचड़।

**कंदैला** *वि०* गँदला, मिट्टी कीचड़ वाला।

**कंध** *पु०* [सं०] बादल; मोथा।

**कंधनी** *स्त्री०* करधनी।

**कंधर** *पु०* [सं०] गरदन, मोथा।

**कंधा** *पु०* [सं० स्कन्ध] कोल्हू के जाठ के ऊपर का कटा हुआ भाग, कन्धा।

**कंप** *पु०* [अं० कैम्प] सरकारी अधिकारी या फौज के ठहरने का अस्थायी स्थान।

**कंपनी** *स्त्री०* [अं० कम्पनी] व्यापारिक-प्रतिष्ठान, व्यापारिक समिति, सेना का विभाग।

**कँपकँपी** *स्त्री०* [सं० कम्पन] काँपने का भाव, थरथराहट।

**कंपा** *पु०* बाँस की पतली कमची से बना बहेलियों द्वारा पक्षियों को फँसाने की एक वस्तु।

**कंपाउंडर** *पु०* [अं०] डॉक्टर का सहायक जो रोगी की सेवा करता है।

**कंपाउंडरी** *स्त्री०* कम्पाउण्डर का कार्य।

**कंपास** *स्त्री०* [अं०] दिग्दर्शक यन्त्र, परकार।

**कंपोज** *पु०* [अं०] छापने हेतु टाइप के अक्षरों को जोड़ने का काम।

**कंपोटर** *पु०* दे० 'कंपाउंडर'।

**कँवरी** *स्त्री०* पशुओं का पागुर, कउरी।

**कँवल** *पु०* कमल। *वि०* कोमल।

**कँवारथू** *पु०* पात्र में गंगाजल भरकर शिव पर चढ़ाने के लिये जाने वाला व्यक्ति; कँवरथुआ।

**कंस** *पु०* मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र और कृष्ण का मामा।

**कँसकूट** *वि०* काँस्यमिश्रित जस्ता और ताँबे आदि के योग से बनी एक धातु।

**कँसहा** *वि०* [सं० काँस्य] काँसे से बना हुआ (बर्तन)।

**कँसासुरी** *स्त्री०* वह बैल, जिसका एक सींग नीचे की ओर और दूसरा ऊपर की ओर हो।

**कँसेरा** *पु०* बर्तन बनाने और मरम्मती का काम करने वाली एक जाति।

**कँहरल** *अक०* कराहना।

**कँहरवा** *पु०* एक प्रकार का ताल।

**कँहाँ** *क्रि०वि०* कहाँ।

**कँहार** *पु०* एक जाति, जिसका पेशा पालकी ढोना और पानी भरना है। कँहरिया। *उदा०* 'लाली लाली डोलिया के सबुजी ओहरवा, लागि गइले बतीसो कहार।' –लोकगीत

**क** *वि०* कितना

**क** *क्रि०* करना जैसे—कके-करके।

**कइँची** *स्त्री०* कैंची।

**कइ** *वि०* कितने।

**कइटी** *स्त्री०* बहुत दिनों का जमा हुआ कालिख या मैल।

**कइथी** *स्त्री०* एक प्रकार की लिपि जो कायस्थों में प्रचलित थी। इसमें शिरोभाग की रेखाएँ नहीं होती हैं तथा अक्षर नागरी लिपि से कुछ-कुछ मिलते-जुलते हैं।

**कइदी** *पु०* [अ० कैदी] अभियोग में पकड़ा गया या सजा पाया व्यक्ति, बन्दी।

**कइन** *पु०* बाँस की पतली डाली, करची।

**कइनी** *सक०* किया। *कहा०* 'कइनी रोट पकाई भइल पेट पकाई' (रोटी पकाने की सुविधा हेतु विवाह किया किन्तु पत्नी भरपेट अन्न भी नहीं देती)।

**कइल** *वि०* (देशज) वह बैल, जिसके रोयें सफेद होते हैं। *सक०* किसी काम को पूरा करना। भू०कृ० कइल। डायन का मन्त्र-तन्त्र से परेशान करना।

**कइलाइल** *अक०* अन्न के दाने का पकने की स्थिति में किंचित् काला होना।

**कइसन** *वि०* [सं० कीदृशः] कैसा। *उदा०* 'रचल पोथियन बिन ई जिनगी ह कइसन' —अर्जुन।

**कइसहूँ** *क्रि०वि०* कैसे भी।

**कइसे** *क्रि०वि०* [हिं० कैसा] किस प्रकार का, किसलिए।

**कई** *वि०* [सं० कति] एक से अधिक। -तल्ला *वि०* बहुमंजिला।

**कउँचल** *अक०* रंज होना।

**कउआ** *पु०* [सं० काक] कौवा। *कहा०* 'कउआ कान लेले जाता तऽ कान टोइब धउरब ना'।

**कउआइल** *अक०* अकेले बैठे रहने पर ऊब जाना, मन नहीं लगना।

**कउआ ठोंठी** *स्त्री०* [सं० काक तुण्डी] एक जंगली पौधे का फल जिसके काँटे कौवे की चोंच की तरह आगे की ओर मुड़े होते हैं।

**कउआ ठोकर** *पु०* बच्चों का खेल।

**कउआनहान** *पु०* बहुत कम पानी में कौवे के समान स्नान का काम, हल्का स्नान।

**कउआल** *पु०* [अ० कव्वाल] कौवाली गाने वाला।

**कउआली** *स्त्री०* सूफियों के भक्तिगीत, कौव्वाली।

**कउआलुकान** *पु०* इतना बढ़ा हुआ पौधा जिसमें कौवा छिप सके।

**कउआहँकनी** *स्त्री०* लोक-कथाओं की वह रानी या स्त्री जिसे दण्डस्वरूप

नाक-कान काट कर समाज में अलग कर दिया जाता था और वह खेतों की रक्षा कर अपना जीवन-यापन करती थी।

**कउँचल** *अक०* [सं० क्रौञ्च] क्रुद्ध होना, रंज होकर जोर-जोर से बोलना।

**कउकाठ** *पु०* झंझट, झमेला।

**कउएल** *पु०* काग के रंग का मछली खाने वाला पक्षी।

**कउड़ा** *पु०* [सं० कुण्ड] जाड़े में तापने के लिए घास-पात की प्रज्ज्वलित अग्नि; अलाव।

**कउड़ी** *स्त्री०* [सं० कपर्दिका] घोंघे-सा एक समुद्री कीड़े की अस्थि, जिसका उपयोग सबसे कम मूल्य के सिक्के के रूप में होता था, कौड़ी। सरकार द्वारा लिया गया कर; कान, कण्ठ, काँख और जाँघ की जोड़ के निकट निकली गिल्टी; पागुर; जुगाली।

**कउड़ी चिन्ह** *वि०* कृपण, कंजूस।

**कउड़ी बूँट** *पु०* उजले और बड़े दानों वाला एक प्रकार का चना।

**कउरल** *सक०* दौनी के समय अनाज के डण्ठलों को छींटना या उलटना, पलटना।

**कउल** *पु०* वादा, वचनबद्धता, कउल-करार (सहचर शब्द)।

**कउवाँ** *वि०* क्रम में कौन-सा।

**कउआठोकर** *पु०* एक तरह का खेल।

**कउस** *वि०* काले एवं सफेद रोओं वाला बैल।

**कएलास** *पु०* कैलास।

**ककऊ** *पु०* काका के लिए सम्बोधन-सूचक शब्द।

**ककन** *पु०* कंकण। **-छोड़ाई** *स्त्री०* नव वर-वधू की कलाई से कंगन-त्याग का रस्म।

**ककना** *पु०* कंगन, स्त्रियों के हाथ का एक गहना; विवाह में यज्ञ कराने वाले पण्डित का मन्त्र द्वारा वर-कन्या के हाथ में बाँधा हुआ आम का पल्लव।

**ककहरा** *पु०* 'क' से 'ह' तक अक्षर, वर्णमाला, आरम्भिक मोटी-मोटी बातें, *कहा०* 'क ख ग घ आवेना, दे दे माई पोथी'।

**ककही** *स्त्री०* कंघी।

**ककिआ** *स्त्री०* काका की पत्नी।

**ककीर** *पु०* एक प्रकार का अच्छा पान।

**ककुड़ी** *पु०* तम्बाकू के पत्ते का एक रोग।

**ककुलाइल** *सक०* खुजलाना।

**ककोच** *पु०* मवेशियों का जबड़ा।

**ककोहल** *अक०* नोचना, खरोंचना, बकोटना; कंघी करना।

**ककोहिया** *पु०* खारी जमा करने का उपकरण। *सक०* ककोहल नोचल, बकोटल। चाट-पोंछ कर खाना।

**कगजही** *वि०* कागज का, कागज से सम्बन्धित, कगजही पेंसिल।

**कगभाखी** *पु०* अपशकुन बोलने वाला व्यक्ति; कुभाखी।

**कगर** *पु०* कगार, बारी, मेंड़।

**कगरिआइल** *अक०* बगल देकर निकल जाना।

**कगरी** *स्त्री०* किनारा (अल्प०)।

**कगरे** [अ०] किनारे।

**कगवल** *पु०* (काक+बलि) यज्ञादि में कागों के लिए निकाला गया भाग।

**कगार** *पु०* किनारा; टीला।

**कगवा** *वि०* काग के रंग का काग का सम्बोधन। *उदा०* 'कगवा कवन सनेसा लेई अइलस कि बोलिया सोहावन लागे।'

**कगिया** *स्त्री०* वह बैल जिसका रंग काग की तरह काला हो।

**कच** *पु०* सेब, कद्दू आद फल एवं सब्जिओं जैसे पदार्थों को काटने से निकली आवाज, अनु०। **-रस** *पु०* ईख का रस।

**कच-कच** *क्रि०वि०* कलह।

**कचउड़ी** *स्त्री०* एक प्रकार की पूड़ी जो आटे में घी मल कर बनायी जाती है; उभरते हुए उरोज का प्रतीक।

**कचकचाइल** *पु०* कुत्ता आदि काटने वाले जानवरों का आवेश में निकला शब्द।

**कच दे** *वि०* अचानक, झट से, जल्दी से।

**कचनार** *पु०* एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फूल लाल, पीला और सफेद होता है।

**कचबच** *पु०* शोर।

**कचबचिया** *स्त्री०* तारों की श्रृंखला।

**कचर-कचर** *स्त्री०* कच्चा फल खाने का शब्द।

**कचरकूट** *पु०* कसकर पीटना, डट कर खाना।

**कचर-पचर** *पु०* व्यर्थ की बातें।

**कचरमकूट** *वि०* व्यापकतापूर्वक सम्पन्न कोई कार्य, यथा-भोज, मार-पीट।

**कचरल** *सक०* शौक से मस्तीपूर्वक खाना, पान कचरना।

**कचरस** *वि०* जो किंचित् कच्चा हो, कचरसाह कच्चा रहने का भाव; गन्ने का ताजा रस।

**कचरा** *पु०* कटी फसल को बाँधने के लिए पटुए की ऐंठी रस्सी; व्यर्थ की चीज, कूड़ा-कचरा (सहचर शब्द)।

**कचरि के** *क्रि०वि०* डट कर खाना।

**कचरी** *स्त्री०* बेसन एवं प्याज का तला हुआ भोज्य पदार्थ; कच्चे हरे चने के पौधे और दाने।

**कचरो-डभरो** *क्रि०वि०* भोज में सबका डट कर भोजन करना।

**कचहरी** *स्त्री०* अदालत, इजलास, दरबार। *कहा०* 'कचहरी में भीतो हाथ पसारेला'।

**कचाइन** *स्त्री०* कच्चे स्वाद का फल।

**कचारल** *अक०* कपड़े को पटक कर धोना।

**कचिया** *स्त्री०* फसल काटने की दाँतदार हँसिया, दाँती।

**कचूमर** *पु०* कुचल कर बनाया हुआ पदार्थ।

**कचूर** *पु०* [सं० कर्चूरः] हल्दी की जाति का एक पौधा, जिसकी जड़ सुगंधित होती है।

**कचोट** *पु०* कसक, टीस। *उदा०* 'मन में कचोट रहे, तब परोसे माठा, राम-राम कहऽ मत करऽ ठाठा।' *अक०* कचोटल।

**कचोरा** *स्त्री०* कटोरा।

**कचोरी** *स्त्री०* कटोरी।

**कचौड़ी** *स्त्री०* उड़द भरकर बनाई गई पूड़ी।

**कच्चक** *पु०* छेनी।

**कच्चट** *पु०* [सं०] जलीय पौधा।

**कच्चर** *वि०* [सं०] गन्दा, बुरा, कमीना।

**कच्चा** *वि०* अनपका, अपक, अधकचरा। *कहा०* 'कच्चा खेत न जोते कोई नाहीं बीज न अँकुरे होई'। **-चिट्ठा** *पु०* पूरा विवरण। **-जबान** *स्त्री०* गाली।

**कच्चा-बच्चा** *पु०* छोटे-छोटे बच्चे और बच्चियाँ, बाल-बच्चे (सह० शब्द)।

**कच्ची** *स्त्री०* वह भोज्य पदार्थ जो घी या तेल में नहीं तला गया हो जैसे-भात-दाल आदि। कच्ची-पक्की सहचर (शब्द)।

**कच्चू** *पु०* जमीन में बैठने वाली एक प्रकार की जड़ जो सब्जी के काम में आती है; बड़ा।

**कच्छड़** *पु०* धोती पहनने का चुस्त-दुरुस्त ढंग।

**कच्छा** *पु०* चौकोर नाव।

**कछनी** *स्त्री०* पहनी धोती को कमर में कस कर, ऊपर चढ़ाकर बाँधना।

**कछवाहा** *पु०* राजपूतों की एक उपजाति।

**कछार** *पु०* नदी की बाढ़ के दायरे वाली जमीन।

**कछिया** *स्त्री०* बच्चों के पहनने का एक प्रकार का वस्त्र जो जंघे तक सीमित रहता है; चड्डी।

**कछु** *वि०* कुछ।

**कछुआ** *पु०* (सं० कच्छप:) कड़ी खोपड़ी वाला एक जल-जन्तु।

**कछुआ खाप** *पु०* वह फसल जो खेत में एक समान न उगी हो।

**कछौटा** *पु०* धोती को कस कर पहनने का ढंग; कच्छड़।

**कज** *पु०* टेढ़ा, एक तरफ झुका हुआ; टेढ़ा।

**कजई** *पु०* खोंचा, बैलों के मुँह पर लगाने के लिए रस्सी की बनी जाली।

**कजरघर** *पु०* एक मोटा धान।

**कजरवटा** *पु०* काजल रखने का बर्तन।

**कजरहटिया** *पु०* साधु वेषधारी भिक्षुक वर्ग, जो स्वभाव से धूर्त एवं बदमाश होता है।

**कजरा** *पु०* पौधों में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा; वह बैल जिसकी आँखों के चारों ओर का स्थान नीला हो; काजल।

**कजराइल** *अक०* किसी अनाज के बाल में किंचित् कालापन आने की स्थिति।

**कजरी** *स्त्री०* एक प्रकार का बरसाती गीत जो आषाढ़ से भादों तक गाया जाता है। कजली। उदा० 'मिर्जापुर कजरी के नइहर कासी में ससुरार'।

**कजना** *पु०* ईंट का भट्ठा।

**कजाक** *पु०* डाकू, लुटेरा।

**कजाहल** *वि०* अपाहिज (बैल).

**कजिया** *पु०* श्राद्ध।

**कज्जक** *पु०* छेनी।

**कटइया** *स्त्री०* मजदूरी (काटने की)।

**कट-कट** *पु०* काटने से उत्पन्न शब्द (अनु०)।

**कटकटावल** *अक०* दाँत पीसना (क्रोध में)।

**कटकेना** *पु०* निश्चित राशि पर दिया गया काम, ठीका।

**कटघरा** *पु०* कठघरा, अदालत में बना लकड़ी का घेरा।

**कटना** *पु०* जिससे कोई वस्तु काटी जाती हो।

**कटनिहार** *पु०* फसल काटने वाला।

**कटनी** *स्त्री०* अनाज के बाल पक जाने पर उसे काटने का काम; कटिया।

**कटपीस** *पु०* नए कपड़ों के टुकड़े।

**कटरनी** *स्त्री०* मोची का सूआ जिससे चमड़ा सिला जाता है।

**कटरा** *पु०* पाड़ा; कपड़ा बाजार।

**कटरो-डभरो** *पु०* पूछ-पूछकर खूब खिलाने का काम।

**कटल** *अक०* कट जाना; किसी काम से देह चुराना।

**कटसिंगी** *स्त्री०* कटे सींगवाली (भैंस)।

**कटहर** *पु०* [सं० कण्टक+फलम्] एक प्रकार का पेड़ जिसमें बड़े और काँटेदार छिलके वाला फल होता है; कटहल का फल।

**कटहरी** *स्त्री०* विवाह के बाद वर-पक्ष की ओर से वधू-पक्ष को उपहार के रूप में भेजे गए कटहल।

**कटहवा** *पु०* जिसे खाते समय मुँह में खुजलाहट पैदा होती है, सूरन, ओल। *वि०* काटने वाला (कुत्ता), कटहा।

**कटाइल** *वि०* कटा हुआ। *कहा०* 'कटाइल जजमान के सीखे नउआ'।

**कटाई** *स्त्री०* [सं० कर्तनम्] खेत काटने की मजदूरी।

**कटाउज** *पु०* दो कुत्तों की लड़ाई, जिसमें एक कुत्ता दूसरे को काटता है।

**कटान** *पु०* आमने-सामने से आती हुई गाड़ियों के एक-दूसरे को पार करने की जगह।

**कटार** *स्त्री०* [सं० कट्टारः] पतली और दुधारी बड़ी तलवार।

**कटाव** *पु०* दर्जी द्वारा सिलाई में काटने की क्रिया, काट कर बनाए हुए बेलबूटे।

**कटावदार** *वि०* बेलबूटा बनाया हुआ (वस्त्र)।

**कटावन** *पु०* काटने की स्थिति में उत्पन्न मनोदशा।

**कटावल** *सक०* सामने से आती हुई गाड़ी को जाने के लिए बगल से गाड़ी चलाना। काटल क्रिया का प्रेरणार्थक रूप। *भू०कृ०* कटावल, *व०कृ०* कटावत।

**कटाह** *वि०* काटने वाला (कुत्ता); कटाह; कड़ाह।

**कटिया** *स्त्री०* तैयार फसल को काटने का काम; कटनी।

**कटिहर** *वि०* बहुत गन्दा (वस्त्र)।

**कटीला** *वि०* काँटेदार।

**कटुआ** *पु०* काटने वाला, वैवाहिक सम्बन्ध बिगाड़ने वाला।

**कटुई** *पु०* काटकर रोपा जाने वाला आलू का बीज; खेती में लगने वाला एक कीड़ा। *वि०* छाली निकाला हुआ (दही)।

**कटोरा** *पु०* गोलाकार छोटी थाली-सा बर्तन, कचोरा।

**कटोरी** *स्त्री०* कचोरी, फूल, काँसे की प्याली।

**कटौती** *स्त्री०* किसी रकम में से कुछ कम कर देना।

**कट्ट** *पु०* पुरुषेन्द्रिय, शिश्न (व्यंग्य)।

**कट्टर** *वि०* अपने विश्वास पर अटल रहने वाला, विचार का पक्का, असहिष्णु, अनुदार विचार वाला।

**कट्टी** *स्त्री०* बेकार (भैंस)।

**कट्ठा** *पु०* बिगहा का बीसवाँ भाग (खेत)

**कठंजा** *पु०* कई तरह के मिले हुए अनाज।

**कठ** *पु०* [सं० कष्टम्] दुःख, काठ का संक्षिप्त रूप। *उदा०* कठमुल्ला।

**कठईया** *वि०* काठ का बना हुआ।

**कठऊ-कठही** *वि०* काठ का बना हुआ।

**कठउता** *पु०* काठ का बना बड़ा बर्तन, कठवत स्त्री; कठउती।

**कठकरेजी** *वि०* कठोर हृदय वाला, निर्दयी।

**कठगर** *वि०* हाड़ का ह्यमोटा, बलिष्ठ और गठीला शरीर वाला।

**कठघरा** *पु०* जेल खाना, कैदी गृह, कचहरी में बना काठ का घेरा जिसमें मुजरिम न्यायाधीश के सामने खड़ा होता है।

**कठघोड़वा** *पु०* काठ की बनी घोड़े की आकृति, जिसका उपयोग एक लोकनृत्य में होता है, दुलदुल का नृत्य।

**कठजामुन** *पु०* जंगली जामुन, जिसके फल में गूदा कम होता है।

**कठजीव** *वि०* कठोर प्रकृति का।
**कठधारा** *स्त्री०* पलड़े पर बटखरा रखकर उससे तौलना और उस तौली हुई वस्तु पर उसी बटखरे को रखकर और उसे एक इकाई मानकर तौलने की विधि, जिससे तराजू का पसंगा दूर हो जाता है।
**कठपिरी** *स्त्री०* एक प्रकार का फूल।
**कठपुतली** *स्त्री०* [सं०/काष्ठ+पुतलिका] तार के द्वारा नचाई जाने वाली काठ की पुतलियाँ।
**कठफनेल** *पु०* छोटा जामुन।
**कठफोरवा** *पु०* एक प्रकार की चिड़िया, जो काठ को खोद कर अपना घोंसला बनाती है। कठफोड़वा। *उदा०* 'काठ फोरी निकले आहो कठफोरवा हो रामा छतिया फोरी निकले गोरी के जोबनवाँ हो रामा' —लोकगीत
**कठबाँसी** *स्त्री०* पतला और घना गाँठवाला बाँस।
**कठबाप** *पु०* सौतेला पिता।
**कठबेंग** *पु०* छोटे आकार का मेढ़क जो सूखे काठ के नीचे रहता है। *स्त्री०* कठबेंगी।
**कठबेटा** *पु०* वह पुत्र, जिसे स्त्री ने पूर्व या अन्य पति से पैदा किया हो।
**कठबेली** *स्त्री०* आकार में छोटा जंगली बेल; छोटे और कड़े उरोज का प्रतीक।
**कठभाठ** *पु०* वह मिट्टी जो जोतने पर शीघ्र कड़ी हो जाती है।
**कठमउगा** *पु०* स्त्रैण स्वभाव का पुरुष।
**कठमन** *स्त्री०* कट्ठे में एक मन होने वाली फसल।
**कठमुरुकी** *स्त्री०* किंकर्त्तव्यविमूढ़-दशा।
**कठमोरवा** *पु०* काठ का बना मोर, जिसका उपयोग लोकनृत्य में होता है।
**कठरा** *पु०* काठ का बना बड़ा बर्तन, कठवत।
**कठरिआ** *पु०* थारुओं की एक उपजाति।
**कठरेंगनी** *पु०* जमीन पर फैलने वाली एक कँटीली घास।
**कठलेई** *स्त्री०* पानी में भी जोतने पर खेत के कड़ा रहने की स्थिति।
**कठवत** *पु०* खुले मुँह का लकड़ी का पात्र।
**कठही** *वि०* काठ का बना।
**कठिआइल** *अक०* (काठ) पौधे के तने में गाँठ होना।
**कठिन** *वि०* कड़ा, कठोर।
**कठिनाई** *स्त्री०* कठिन होने का भाव।
**कठुआइल** *अक०* सूख कर कड़ा होना; जाड़े में हाथ-पैर का ठिठुरना।
**कठुली** *स्त्री०* छोटा कठौता।
**कठेस** *वि०* कड़ा, कठोर, सख्त; मिट्टी में पानी डालकर सानने पर भी कड़ा रहना; ठीक से पका न हो।
**कठोर** *वि०* कड़ा, निर्दयी।
**कठौआ, कठौवा** *पु०* आभा; एक हथियार।
**कठौता** *पु०* [सं० काष्ठवत्] काठ का बड़ा बर्तन।
**कठौती** *स्त्री०* काठ का छोटा पात्र।
**कड़-कड़** *पु०* कड़े वस्त्र, कागज पर दबाव पड़ने से या तेल-घी को आँच पर खौलने से निकला शब्द, अनु०।
**कड़क** *पु०* जलन के साथ रुक-रुक कर पेशाब होने की बीमारी।
**कड़कड़ाइल** *अक०* तेल या घी को आँच पर खौलने से कड़कड़ शब्द होना।
**कड़कल** *अक०* कसक पैदा होना। *उदा०* 'इंगुरा के ठोपवा, सुरुजवा के जोतिया हो। कजरवा देखि के ना देवरा के कड़केला करेजवा हो।' –लोकगीत

**कड़क जाँघी** *पु०* वह बैल, जिसका पिछला पैर देखने में तना हुआ और सीधा लगता हो।

**कड़का** *पु०* कड़ाके की ध्वनि।

**कड़खल** *वि०* [सं० कर्करा] कड़ा, कठोर।

**कड़खा** *पु०* ऐसी बात, जिससे दिल में रोष या उत्तेजना पैदा हो।

**कड़र** *वि०* फसल का कड़ा और मोटा पौधा।

**कड़रा** दे० 'कँडरा'।

**कड़री** दे० 'कँड़री'।

**कड़रू** *पु०* भैंस का बच्चा। पड़रू।

**कड़वार** *पु०* फसल के बोझों का ढेर।

**कड़ा** *वि०* कठोर, कठिन, कड़ाई, कड़े काम का भाव या क्रिया; आभूषण; करारा।

**कड़ा-कड़ी** *पु०* तनाव।

**कड़ाई** *पु०* कड़ापन।

**कड़ाचूर** *क्रि०वि०* भरपूर, अधिकता।

**कड़ाबीन** *पु०* छोटा बन्दूक; कड़े स्वभाव का आदमी।

**कड़ाम** *पु०* दौनी के लिए बैलों को बाँधने की लम्बी रस्सी।

**कड़ाम-कड़ाम** *पु०* फुर्ती और जोर से पैर रखने पर निकली आवाज। *अनु०* तेज-तर्रार।

**कड़ाही** *स्त्री०* लोहे का छोटा गोल बर्तन जिसमें तरकारी आदि पकाई जाती है।

**कड़ियल** *वि०* कड़े स्वभाव का।

**कड़ी** *स्त्री०* मकान की छत में प्रयुक्त लकड़ी; गीत का पद; लोहे या अन्य धातु की अँगूठी जो सिकड़ी तैयार करने में एक दूसरे को जोड़ती है।

**कडुआ** *वि०* तीखा, चरपरा, तेज, जलन के साथ हाने वाला (पेशाब)।

**कड़ू-करू** *वि०* सरसों का (तेल)।

**कड़ेर** *वि०* कड़ा, कठोर।

**कड़ोरिआ** *पु०* एक खानाबदोश जाति। *स्त्री०* कड़ोरिन।

**कढ़ावल** *सक०* गीत की प्रथम कड़ी को पहले गाकर आरम्भ करना।

**कदुआ** *पु०* रात की बनी रसोई से दूसरे दिन प्रात: खाने के लिए निकाला गया अंश।

**कढ़ौर** *पु०* अन्न के बीज पर दिया जाने वाला सूद।

**कतका** *पु०* छड़ी।

**कतकी** *स्त्री०* कार्तिक में पकने वाला धान।

**कतना** *वि०* [सं० कियत्] किस परिमाण में, कितना। *स्त्री०* कतनी। *कहा०* 'कतनो चोख नेहरनी होई त ऊ गाछ ना काटी'।

**कतरन** *पु०* कागज, वस्त्र आदि के कटने से प्राप्त टुकड़ा।

**कतरनी** *स्त्री०* बाल बनाने या कपड़ा काटने का साधन। *उदा०* 'हाथ सुमिरनी बगल कतरनी, पढ़े भागवत गीता'।
–लोकगीत

**कतरपार** *पु०* ऊख की खड़ी फसल को काटने वाला (व्यक्ति)।

**कतरल** *सक०* [सं० कर्त्तनम्] कैंची से काटना।

**कतरा** *पु०* किसी फल का कटा हुआ भाग, फाँक; एक प्रकार की घास, जिसे खेत के मेंड़ पर लगा कर सीमांकन किया जाता है; बूँद।

**कतराइल** *अक०* किसी फसल के पौधों का कतरा के समान झुरमुट हो जाना; किसी काम से देह चुराना। *सक०* कैंची से काटा जाना।

**कतरी** *स्त्री०* कोल्हू में लगा तख्ता, जिस पर बैठ कर बैल हाँका जाता है; धान की फसल का एक रोग; एक प्रकार की चपटी मछली।

**कतल** *पु०* [अ० कत्ल] वध, हत्या।
**कतला** *पु०* एक तरह की अच्छी मछली।
**कतवार** *पु०* कूड़ा-करकट।
**कतवावल** *सक०* दूसरे से सूत कतवाना।
**कतहत** *क्रि०वि०* (आकार में) कितना बड़ा।
**कतहाँ, केतहाँ** *क्रि०वि०* [सं० कुत्र] कहाँ।
**कतहूँ** *क्रि०वि०* [सं० कुत्र] किसी भी स्थान पर, कहीं भी। *कहा०* 'कतहूँ बैल जइहन तऽ हरे बहिहन।'
**कता** *वि०* कितना। *उदा०* 'चिठिआ से बचलनि मने मुसुकइलनि, कता धनी लिखेली वियोगवा हो ना।' -लोकगीत।
**कतार** *स्त्री०* [अ० कतार] पंक्ति, पाँत, क्रम।
**कति** *वि०* कितना, कितने।
**कतिक** *वि०* थोड़ा, कितना।
**कतिया** *पु०* कार्तिक में तैयार होने वाला धान। *वि०* कतिकी, कार्तिक में तैयार होनेवाली (फसल)।
**कती** *वि०* कितना। *उदा०* 'कती देर से बइठल बार्नी'।
**कतेक** *वि०* कितना। *उदा०* 'डुमरी कतेक दूर?'
**कत्ता** *पु०* (कात) डोमो द्वारा व्यवहार में लाया जाने वाला बाँस काटने का हथियार, बाँकी, सरकण्डे या ईख के पत्ते का तेज किनारा।
**कत्तिन** *स्त्री०* चरखा कातने वाली स्त्री।
**कत्ती** *स्त्री०* छोटी तलवार, कटार, एक तरह की पगड़ी।
**कत्ती** *पु०* चरखा कातने वाला पुरुष।
**कत्थी** *वि०* कत्थे के रंग का।
**कथ** *पु०* [सं० क्वाथ:] खैर, कत्था।
**कथई** *स्त्री०* कत्थे जैसा रंग।
**कथक** *पु०* एक प्रकार का शास्त्रीय [illegible], ऐसे नृत्य का पेशा अपनाने [illegible]ला (व्यक्ति)।
**कथक्कड़** *पु०* लगातार बहुत कथा कहने वाला व्यक्ति।
**कथनी** *स्त्री०* [सं० कथनम्] बात, बकवास, कही हुई बात, उपदेश (व्यंग्यार्थक प्रयोग)।
**कथरी** *स्त्री०* गुदड़ी; सुजनी; देशी कंघी।
**कथल** *सक०* निरर्थक बातों को कहते रहना, व्यंग्यात्मक प्रयोग।
**कथा** *स्त्री०* आख्यान, कहानी, पौराणिक एवं धार्मिक घटनाओं का वर्णन, परम्परा से आती मौखिक कथाएँ। -**नायक** *पु०* कथा का प्रधान पात्र। -**पीठ** *पु०* कथा का प्रधान भाग। -**वस्तु** *स्त्री०* कथा का मूल रूप। -**वार्ता** *स्त्री०* अनेक प्रकार के प्रसंग। -**उठल** *मुहा०* कथा बन्द होना। -**बइठल** *मुहा०* कथा का आरम्भ होना। -**बइठावल** *मुहा०* कथा का आयोजन करना।
**कथी** *सर्व०* क्या, कौन।
**कद** *पु०* [अ०] डील-डौल, ऊँचाई।
**कदन्न** *पु०* मोटा, अन्न।
**कदम** *पु०* [सं० कदम्ब:] पीला फूल और फल वाला एक पेड़; प्राचीन या लोक-साहित्य में वर्णित यमुना के किनारे का एक वृक्ष, जिसकी डाल पर बैठ कर कृष्ण वंशी बजाते थे; चलने में दोनों पगों के बीच का अन्तर।
**कदम गाछ** *पु०* आतिशबाजी का एक भेद जो प्रज्ज्वलित होने पर कदम्ब के पेड़-सा लगता है।
**कदर** *स्त्री०* [अ० कद्र] मान, आदर, इज्जत, सम्मान।

**कदरई** *स्त्री०* कायरता; ढीलापन, आलस्य।
**कदाचन** *अक०* [सं०] कदाचित्।
**कदाचार** *पु०* बुरा आचार, व्यवहार।
**कदाचित्** अ० [सं०] कभी, शायद।
**कदरिआइल** *अक०* किसी काम को करने से देह चुराना।
**कदाप** *क्रि०वि०* [सं० कदापि] शायद, कभी।
**कदावर** *वि०* डील-डौल (कदका)।
**कदीम** *वि०* प्राचीन।
**कदीमा** *पु०* कुम्हड़ा।
**कदु** *पु०* लौका। *कहा०* 'कदु पर सितुहा चोख'।
**कदुआ** *पु०* दे० 'कदु'।
**कधोर** *पु०* कीचड़ मिला हुआ पानी।
**कन** *पु०* कण, कन्द, चावल के ऊपर का निकला महीन छिलका, धान की भूसी।
**कन** पु० [हिं० कान] कान। **-कट** *वि०* जिसका कान कटा हो। *कहा०* 'कनकट भुजकट कतरल केस, राह चलत में लागे ठेस। जे केहू पूछे जइबऽ कहवाँ भइलो काम नसाई तहवाँ।' **-खोदनी** *स्त्री०* कान खुजलाने या खोदने का औजार।
**कनइठी** *स्त्री०* कान को ऐंठने की क्रिया, कनैठी।
**कनइल** *पु०* एक प्रकार का फूल, कनेर।
**कनइली** *स्त्री०* कान का एक गोल आभूषण।
**कनई** *स्त्री०* काँदों, कनवा का सोलहवाँ भाग; पछखी; कीचड़।
**कनउसी** *स्त्री०* [सं० कर्णकुशः] कान का गहना।
**कनउजिया** *वि०* कन्नौज का मूल निवासी; हिन्दुओं की विभिन्न जातियों के उपभेद।
**कनकचूर** *पु०* एक महीन धान।
**कनकजीरा** *पु०* एक प्रकार का बारीक धान।
**कनकनी** *स्त्री०* ठण्डक लगने से अंग में हल्का कम्पन या सनसनी पैदा होना।
**कनकी** *स्त्री०* अधिक बारीक कण (धूल)।
**कनखा** *पु०* मिट्टी या धातु के बर्तन का ऊपरी हिस्सा।
**कनखियावल** *सक०* कनखी मारना, आँख मारना।
**कनखी** *स्त्री०* [सं० कन + अक्षि] आँख की पुतली को कोने में ले जाकर देखने की विधि; बंकिम नयन, कनखी मारल। *उदा०* 'मुँहवाँ से बोलऽ कनखी न मारऽ'।
**कनगर** *वि०* बात को ध्यान से सुनकर याद रखने वाला; वह नया पौधा जो तेजी से बढ़ रहा हो।
**कनगुरिआ** *स्त्री०* (कनिष्ठिका) सबसे छोटी अँगुली।
**कनगोजर** *पु०* एक प्रकार का अनेक पैरों वाला लम्बा कीड़ा, जो विषैला होता है।
**कनचिपकी** *स्त्री०* कान के पीछे चिपके सींग वाली गाय।
**कनछल** *अक०* आँव के चलते पेट में मरोड़ या दर्द होना।
**कनछी** *स्त्री०* छोटी शाखा।
**कनझटका** *क्रि०वि०* अचानक कान में पड़ी अधसुनी बात।
**कनझप्पा** *पु०* बड़ी टोपी, जिससे कान ढक जाता है।
**कनटोप** *पु०* कानों को ढकने वाली बड़ी टोपी।
**कनडेढ़** *वि०* ऐसा व्यक्ति, जिसकी आँखें तिरछी या छोटी-बड़ी हों। कनडेढ़ाह, आँख तिरछी या छोटी-बड़ी होने का भाव।
**कनपटल** *सक०* गरदन पर मारना।
**कनपटी** *स्त्री०* [सं कर्णपट्टः] कान और आँख के बीच का भाग।

**कनफटा** *पु०* योगियों का एक भेद।

**कनफुसकी** *स्त्री०* कान के निकट धीरे-धीरे कही गई बात।

**कनफुँकवा** *वि०* कान में दीक्षा या गुरुमन्त्र देने वाला।

**कनफूल** *पु०* कान का एक आभूषण, कर्णफूल।

**कनबदा** *पु०* एक प्रकार का धान।

**कनबहिर** *वि०* [सं० कर्ण+बधिर:] जो नहीं सुनता हो।

**कनभेसिंग** *पु०* [अं० कनवासिंग] किसी बात को बार-बार कहने, प्रचार करने की स्थिति।

**कनभो** *पु०* बाँध की रक्षा के लिए, फालतू पानी को बहाने के लिए किनारे पर का नाला।

**कनमन** *पु०* धीमे और अस्पष्ट शब्दों में असन्तोष व्यक्त करना।

**कनमनाइल** *अक०* किसी काम को करने में हिचकिचाना।

**कनमूल** *पु०* कान की जड़ में सूजन की बीमारी।

**कनमोर** *पु०* खेत का वह भाग, जहाँ जोतते समय खेत छूट जाता है।

**कनवई** *स्त्री०* कनवा का सोलहवाँ भाग; तेल मापने का बर्तन।

**कनवा** *पु०* एक सेर का सोलहवाँ भाग, छँटाक, एक आने का सोलहवाँ भाग।

**कनसन** *पु०* फसल को हानि पहुँचाने वाली एक घास।

**कनसुनी** *स्त्री०* उपेक्षा।

**कनसून** *वि०* कम सुनने वाला।

**कनस्तर** *पु०* [अं० कैनिस्टर] टीन का चौखुटा बर्तन, जिसमें घी, तेल आदि रखा जाता है।

**कनहा** *वि०* जिसकी आँखें छोटी-बड़ी हों।

**कना** *पु०* एक बरसाती घास, जिसके पत्तों का साग बनता है, *यौ०* कना-मना।

**कनाइल** *अक०* फल में कीड़ा लगना।

**कनाठ** *पु०* बहँगी।

**कनात** *स्त्री०* किसी स्थान को घेरने के लिए कपड़े की बनी टाटी।

**कनिया** *स्त्री०* ब्याह के बाद ससुराल में आयी हुई नई बहू, पर्दे में रहने वाली स्त्री। *कहा०* 'कनिया ना देखल, कनिया के भाई'।

**कनिआइल** *अक०* अखुँआना।

**कनिआई** *स्त्री०* विवाह के अवसर पर वर पक्ष की ओर से कन्या के लिए दी गई साड़ी।

**कनिआ-पुतरी** *स्त्री०* यौ० कपड़े की बनी गुड़िया, जिसमें छोटी लड़कियाँ खेलती हैं।

**कनिक** *पु०* आटा (गेहूँ का)।

**कने** *अ०* पास; ओर।

**कनेखी** *स्त्री०* दे० 'कनखी'।

**कनेठा** *वि०* काना।

**कनेठी** *स्त्री०* [हिं० कान+ऐंठना] कान मरोड़ने की क्रिया

**कनेर** *पु०* [सं० कणेर:] कनेर।

**कनेवा** *पु०* कर्णवेध।

**कनैली** *स्त्री०* खूँटी।

**कन्हइया** *पु०* श्रीकृष्ण; कन्धे पर बैठाने का काम।

**कन्हावरि** *स्त्री०* विशिष्ट अतिथि को दी जाने वाली पीली धोती।

**कपट** *पु०* स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रपंचपूर्ण बात। *वि०* कपटी। *कहा०* 'कपटी मित्र कोसलिया भाय, बुड़बक बेटा ठेंठ

जमाय' (कपटी मित्र, घर गृहस्थी या सामान बेचकर पैसा जुटाने वाला भाई, मूर्ख बेटा, कद से नाटा दुष्ट दामाद से बचना ही श्रेयस्कर है)

**कपटा** *पु०* एक कीड़ा, जो धान के फसल में लगता है।

**कपटी** *स्त्री०* मिट्टी की कटोरी।

**कपड़छान** *पु०* बूकी हुई काष्ठौषधि को कपड़े से चालना।

**कपड़ा** *पु०* [सं० कर्पटः] रेशम, ऊन, रूई या अन्य किसी धागे से बना वस्त्र, परिधान। *कहा०* 'कपड़ा मत देखऽ मिजाज देखऽ, देह मत देखऽ दिमाग देखऽ'।

**कपरफोरउवल** *पु०* मार-पीट।

**कपसल** *अक०* भयभीत होना। *वि०* कपसी।

**कपसा** *पु०* गन्ने में मक्खियों के चिपकने का रोग; गारा।

**कपाची** *स्त्री०* बाती।

**कपार** *पु०* [सं० कपालः] ललाट, मस्तक, खोपड़ी। *कहा०* 'कपार फूटे तऽ फूटे बाकिर पेट ना फूटे'। **-ठनकल** *अक०* आशंकित होना। **-फोरउवल** *अक०* मारपीट करना।

**कपाल** *पु०* [सं०] मस्तक, खोपड़ी, भाग्यलेख। *उदा०* 'फलति कपालं न च भूपालम्'। **-किरिया** *स्त्री०* मुर्दे की खोपड़ी को फोड़ना। **-भाती** *स्त्री०* एक विशेष प्रकार की श्वास क्रिया।

**कपालि** *पु०* [सं०] शिव।

**कपालिनी** *स्त्री०* दुर्गा।

**कपाली** *पु०* [सं०] शिव।

**कपास** *स्त्री०* [सं० कार्पासाः] एक प्रकार का पौधा, जिसके फल से रूई निकलती है, रूई।

**कपि** *पु०* बन्दर, हाथी।

**कपिल** *पु०* सांख्यदर्शन के प्रणेता।

**कपिला** *स्त्री०* भूरी गाय, छोटे और हिलते सींगोवाली गाय।

**कपुरिया** *पु०* [सं० कर्पूर] आम की एक जाति, जिससे कपूर की गमक आती है।

**कपूत** *पु०* [सं० कुपुत्रः] पुत्रधर्म का निर्वाह नहीं करने वाला लड़का। *उदा०* 'पूत कपूत तऽ का धन संचै'।

**कपूर** *पु०* [सं० कर्पूरः] एक सुगन्धित सफेद पदार्थ, जिसका उपयोग आरती में होता है।

**कपूरी** *स्त्री०* पान का एक उत्तम भेद; आम का प्रकार।

**कपोत** *पु०* छोटा कबूतर।

**कपोल** *पु०* गाल।

**कप्तान** *पु०* [अं०] कैप्टन।

**कफ** *पु०* एक प्रकार का रोग, बलगम।

**कफगीर** *पु०* डाभा।

**कफन** *पु०* [अ०] दाह-संस्कार या दफनाने के पूर्व मुर्दे के ऊपर दिया जाने वाला वस्त्र।

**कफनचोर** *पु०* अनैतिक ढंग से धन कमाने वाला व्यक्ति, कंजूस व्यक्ति।

**कफला** *पु०* तीर्थयात्रियों की जमात, काफिला।

**कब** *अ०* [सं० कदा] किस समय। *उदा०* 'कब पांड़े मरले, कब भूत भइले' - लोक०। **-का** *अ०* कितनी देर से, **-हीं** *अ०* कभी।

**कब-कब** *पु०* खाने के बाद मुँह में खुजली पैदा होने का भाव।

**कबकबाइल** *अक०* खुजलाहट पैदा होना।

**कबज** *पु०* [अ० कब्ज] मलावरोध।

**कबजा** *पु०* दखल, अधिकार; किवाड़ में जड़े जाने वाले लोहे का एक उपकरण।

**कबडी** *स्त्री०* एक प्रकार का देशी खेल, कबड्डी।

**कब दो** *क्रि०वि०* पता नहीं कब।

**कबर** *स्त्री०* [अ० कब्र] वह गड्ढा जिसमें मुर्दे दफनाए जाते हैं।

**कबरा** *वि०* सफेद रंग पर काले या लाल रंग के रोओं का मिश्रण।

**कबरिस्तान** *पु०* वह स्थान, जहाँ कब्र है, कब्रिस्तान।

**कबाब** *पु०* आग पर सीधे पकाया गया एक प्रकार का मांस। **-कइल** *मुहा०* भूनना, जलाना; कष्ट देना। **-भइल** *मुहा०* अति क्रुद्ध होना

**कबाबचीनी** *स्त्री०* मांस का एक प्रकार का मसाला।

**कबारल** *स्त्री०* [सं० उत्पाटनम्] उखाड़ना, नोचना।

**कबाला** *पु०* [अ०] बैनामा, अधिकारपत्र। **-लिखवावल** *मुहा०* मालिक बन जाना

**कबाहट** *स्त्री०* दोष, खोट, खराबी, झंझट।

**कबाहत** *स्त्री०* दे० कबाहट।

**कबि** *पु०* भाट, रचनाकार।

**कबिरहा** *वि०* कबीर के चलाए गए पंथ को मानने वाला।

**कबिरा** *पु०* कबीर की बानियों और शब्दों में उनके लिए आया नाम। *उदा०* 'कबिरा खड़ा बजार में लिए लुकाठी हाथ'।

**कबिलास** *पु०* स्वर्ग, कैलास।

**कबी** *पु०* दूसरों के बनाए हुए कवित्त आदि को पढ़ने वाला भाट, काव्य करने वाला, कवित्त रचने वाला कवि।

**कबो** *क्रि०वि०* [सं० कदापि] कभी। *कहा०* 'कबों गाड़ी नाव पर कबो नाव गाड़ी पर'।

**कबीर** *पु०* भोजपुरी के आदि सन्त कवि; होली के अवसर पर गाया जाने वाला अश्लील गीत। *उदा०* 'सुनले भइया मोर कबीर, भले जी भले', जोगीड़ा *कहा०* 'कबीरदास के उलटा बानी बरसे कम्मर भींजे पानी'।

**कबीरपंथ** *पु०* कबीर के अनुयायियों का चलाया हुआ पंथ। *वि०* कबीरपंथी।

**कबुलवावल** *सक०* स्वीकार करवाना।

**कबूतर** *पु०* [सं० कपोतः] एक प्रकार का पालतू पक्षी, परेवा।

**कबूतरी** *स्त्री०* कपोती; नर्तकी, सुन्दरी।

**कबूल** *पु०* स्वीकार, वादा, मानना। *सक०* कबूलल, कबूलवावल।

**कबूलल** *सक०* मान लेना; कबूलना।

**कबूलियत** *स्त्री०* पट्टावाले रैयतों द्वारा जमींदार को दिया गया स्वीकृति-पत्र।

**कभी** *क्रि०वि०* (कब+ही) किसी भी समय।

**कभू** *क्रि०वि०* दे० 'कभी'।

**कमंडल** *पु०* वैष्णव साधुओं का जल-पात्र, कमण्डलु; ढंढ-कमण्डल, दिखावा, प्रपंच।

**कम** *वि०* [फा०] थोड़ा, अल्प। *स्त्री०* कमी, कमती। *कहा०* 'कम काबू खीस जादा, मार खाए के इहे इरादा'। **-अकल** *वि०* मूर्ख। **-असल** *वि०* दोगला, नीच। **-कीमत** *वि०* सस्ता। **-जोर** *वि०* दुर्बल, कम ताकत, *कहा०* 'कमजोर काठ कीड़ा खाय'। **-जोरी** *स्त्री०* दुर्बलता। **-सिन** *वि०* कम उम्र, अल्हड़।

**कमकर** *पु०* एक जाति, जो पानी या पालकी ढोने का काम करती है।

**कमकरिन** *स्त्री०* कमकर की पत्नी।

**कमची** *स्त्री०* बाँस की पतली पट्टी, जिससे टोकरी बनती है।

**कमती** *स्त्री०* कम, थोड़ा, मात्रा में अल्प।
**कम्प्यूटर** *पु०* [अं०] गणक, संग्राहक, प्रसारक मशीन
**कमरकल्ला** *पु०* बन्द गोभी; सोनारों की एक उपजाति।
**कमरख** *पु०* अमड़े की जाति का एक प्रकार का खट्टा फल।
**कमरखोलाई** *यौ०* विवाह की एक रस्म।
**कमरबल्ला** *पु०* टाट, छाजन आदि को गिरने से बचाने के लिए उसके बीच में लगाया गया बाँस का टुकड़ा।
**कमरसायर** *पु०* बढ़ईखाना।
**कमरसारी** *स्त्री०* लौहागार।
**कमरसाढू** *पु०* पत्नी का अन्य प्रेमी (गाली)।
**कमरिआह** *वि०* बीमारी से, जिसकी कमर टेढ़ी हो गयी हो; कायर।
**कमरी** *स्त्री०* छोटा कम्बल; कटहल का छिलका।
**कमल** *पु०* जलीय पुष्प जो सूर्योदय होने पर खिलता और सूर्यास्त होने पर सिकुड़ता है। **-गट्टा** *पु०* [हिं०] कमल का बीज। **-नयन** *पु०* विष्णु, राम, कृष्ण। **-बाई** *स्त्री०* [हिं०] कवल रोग, पीलिया।
**कमला** *स्त्री०* मिथिला की एक नदी; पाण्डु नामक रोग, जिससे शरीर पीला हो जाता है; लक्ष्मी।
**कमवट** *पु०* खेती की हालत दुरुस्त रखने के लिए उसमें किया गया काम।
**कमवावल** *सक०* सिर के बाल को छूरे से छिलवा देना; काम कराना।
**कमसरे** *पु०* जागीर।
**कमस्सल** *यौ०वि०* दोगला, वर्णसंकर।
**कमहँड** *पु०* हत्था।
**कमहड़** *पु०* ओखर।
**कमाइल** *सक०* उद्यम से पैसा पैदा करना।
**कमाई** *पु०* पैदावार, जोतकर खेतीयोग्य की गयी (मिट्टी), मजदूरी। *कहा०* 'कमाई न धमाई रोज चाहीं मलाई'।
**कमाऊ** *वि०* काम करने वाला, अर्जित करने वाला, कमासुत।
**कमाच** *पु०* एक रेशमी कपड़ा।
**कमाची** *स्त्री०* झुकी हुई तीली।
**कमान** *स्त्री०* [फा०] धनुष, मेहराब।
**कमान** *स्त्री०* [अं०] आदेश, हुक्म, फौजी ड्यूटी।
**कमानी** *स्त्री०* लोहे की लचीली झुकाई हुई तीली।
**कमार** *पु०* बढ़ई, लोहार।
**कमाल** *पु०* [अ०] पूर्णता, जौहर।
**कमासुत** *वि०* कमाने वाला, परिश्रमी, कमाऊ। *कहा०* 'कमासुत पूत करेजा में सूत'।
**कमी** *स्त्री०* अल्पता, कम होना। **-बेसी** *स्त्री०* कम या ज्यादा होना।
**कमीज** *स्त्री०* कालरदार कुर्ता, शर्ट, अँगरखा।
**कमीना** *वि०* [फा०] नीच प्रकृति का। *पु०* छोटी जाति का दुष्ट व्यक्ति।
**कमीनी** *स्त्री०* मजदूरी, मेहनताना, आय।
**कमीसन** *पु०* [अं०] खरीद-बिक्री के कार्य में दिया गया अंश।
**कमुआ** *पु०* पौधों की जड़ में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
**कमेड़ा** *वि०* काम करने वाला।
**कमैनी** *स्त्री०* छिछली कोड़ाई।
**कमोच** *पु०* एक महीन धान।
**कमोड** *पु०* [अं०] मलत्याग हेतु चीनी-मिट्टी का पात्र।
**कय** *क्रि०वि०* कितना।

**कयदा** *अव्य०* कितनी बार।
**कया** *स्त्री०* काया।
**कयाम** *पु०* [अ०] ठिकाना, ठहराव।
**कयास** *पु०* [अ०] अनुमान, अटकल।
**करंक-करंद** *पु०* वह व्यक्ति, जो निमन्त्रित नहीं होने पर भी किसी के भोज में खाने बैठ जाता है; ठटरी, खोपड़ी।
**करंग** *पु०* काले रंग का धान, जिसका चावल लाल होता है।
**करंते** *क्रि०वि०* करने से।
**कर** *पु०* सरकार को दी जाने वाली राशि, मालगुजारी टैक्स; करवट।
**करइत** *पु०* करैत साँप।
**करइल** *स्त्री०* काली मिट्टी।
**करइला** *पु०* [हिं० करैल] करैला, एक प्रकार की सब्जी, जो स्वाद में कड़वी होती है। सुगर के रोगी के लिए उपयुक्त सब्जी।
**करकट** *पु०* कूड़ा, कतवार।
**करकस** *वि०* [सं० कर्कश] कड़ा, भारी।
**करकसा** *वि०* कड़ी बोली बोलने वाली स्त्री, कर्कशा।
**करखनिहा** *पु०* कारखाने का मजदूर, कर्मचारी।
**करगह** *पु०* दे० 'करघा'।
**करघा** *पु०* कपड़ा बुनने की मशीन।
**करचिया** *स्त्री०* बाँस की डाली।
**करची** *स्त्री०* बाँस की टहनी।
**करछल** *अक०* मन में कसक पैदा होना, मसोसना।
**करछुल** *स्त्री०* एक बर्तन, जिसका उपयोग दाल, सब्जी आदि निकालने में होता है, बड़ा चम्मच, कड़छी।
**करज** *पु०* कर्ज, निश्चित अवधि के लिए करार करके किसी से द्रव्य लेने की प्रक्रिया।
**करजा** *पु०* [अ० कर्ज] सूद पर लिया गया रुपया। **-भरल** *सक०* ऋण चुकाना। **-में डूबल** *अक०* ऋण ग्रस्त होना।
**करतब** *पु०* कर्तव्य, काम; हुनर।
**करता** *पु०* [सं० कर्ता] करने वाला व्यक्ति; परिवार का मालिक।
**करतार** *पु०* ईश्वर, ब्रह्मा।
**करताल** *पु०* काठ और लोहे की पतली पट्टी का बना एक बाजा।
**करतूत** *पु०* [सं० कर्तृत्वम्] काम।
**करदुम्म** *पु०* वह बैल, जिसकी देह उजली और पूँछ काली हो।
**करधनी** *स्त्री०* [सं० कटिधानी] कमर में पहनने का एक गहना।
**करना** *पु०* मिट्टी का छिछला बर्तन, जिसमें दही जमाया जाता है।
**करनिस** *स्त्री०* दीवार के ऊपरी भाग में बना नक्काशी।
**करनिहार** *पु०* करने वाला, कर्ता।
**करनी** *पु०* कार्य, गुण, व्यवहार, *कहा०* 'करनी कुत्ता के नाँव लछन देव'।
**करनी** *स्त्री०* राजगीरों का एक औजार; सम्बन्धियों के यहाँ भेजा जाने वाला भोज्य पदार्थ आदि।
**करब** *पु०* मक्के का कटा पौधा।
**करबीर** *पु०* एक प्रकार का पीला फूल।
**करबोला** *पु०* [अ० करबाला] वह स्थान, जहाँ ताजिये को जल में डुबा दिया जाता है।
**करम** *पु०* [सं० कर्म] काम, कार्य; भाग्य। *कहा०* 'करमे खेती करमे नार करमे मिले कुटुम दुई चार'। **-भोग** *पु०* कर्मफल। **-के धनी** *मुहा०* भाग्यशाली। **-के फूटल** *मुहा०* भाग्य फूटना।
**करम अधीन** *वि०* भाग्य पर आश्रित।
**करमइत** *वि०* भाग्यशाली।

**करमकीट** *वि० यौ०* कंजूस।

**करमचारी** *पु०* काम करने वाला, कर्मचारी, सरकार का एक मुलाजिम।

**करमजरु** *वि०* भाग्यहीन, अभागा।

**करमत** *पु०* कैथी वर्णमाला में ओकार की मात्रा।

**करमनासा** *स्त्री०* कर्मनाशा नदी।

**करमफल** *पु०* जन्म की राशि पर आधारित भाग्यफल।

**करम रेख** *पु० यौ०* जो कुछ ब्रह्मा ने भाग्य में लिखा है।

**करम साँढ़** *वि०* परम भाग्यशाली।

**करमहीन** *वि०* अभागा, *कहा०* 'करमहीन खेती को, बैल मरे सूखा पड़े'।

**करमात** *पु०* [फा०] चमत्कारपूर्ण कार्य, करिश्मा।

**करमा-धरमा** *पु०* एक व्रत, जिसका प्रचलन आदिवासियों में है।

**करमी** *स्त्री०* एक प्रकार का पौधा, जो लता के रूप में खेत का पानी सूख जाने के बाद फैलता है। साग के रूप में यह प्रयुक्त होता है।

**करमूड़न** *पु०* खेती के कार्य से फुर्सत।

**करमोआ** *वि०* वह भोज्य पदार्थ, जो कम पानी देकर भिंगोया गया हो।

**करल** *सक०* करना। *सक० वि०* करावल।

**करलूठ** *वि०* बहुत काला (व्यक्ति)।

**करवँछल** *पु०* एक प्रकार की मछली, जिसके चोंइटे पर कालापन रहता है।

**करवट** *स्त्री०* बगल के बल पर लेटने की स्थिति। *क्रि०वि०* करवटल।

**करवँट** *पु०* एक प्रकार की जंगली लता।

**करवाइन** *पु०* मछली की गन्ध; वह बर्तन जो मछली बनाने एवं खाने के काम में आता है।

**करसी** *स्त्री०* [सं० करीष] मवेशियों का सूखा गोबर।

**कराँकुल** *पु०* बगुले की जाति का एक बड़ा पक्षी, जिसकी टाँगें और गर्दन लम्बी होती है।

**कराँत** *पु०* [अ०] जमींदारी के हिस्से को व्यक्त करनेवाला एक शब्द; सोना तौलने का एक माप।

**करा** *वि०* बड़ा।

**कराती** *स्त्री०* [सं० कराली] डरावनी सूरत वाली एक देवी।

**करायल** *पु०* एक प्रकार का सुगन्धित पदार्थ, जो मिट्टी से प्राप्त होता है।

**करार** *पु०* [अ०] वादा, प्रतिज्ञा, वचन-बद्धता। *वि०* करारी, करारा।

**कराह** *पु०* किसी चीज को औंटने का बड़ा बर्तन; कराहा, आह, पीड़ा की आवाज।

**कराहल** *अक०* कराहना, आह भरना।

**करिखा** *पु०* [हिं० काला] कालिख।

**करियठ** *वि०* काले रंग का।

**करिया** *वि०* काले रंग का। *कहा०* 'करिया अच्छर भैंस बरोबर'।

**करिहाँव** *पु०* कमर, कटि।

**करीना** *पु०* [अ०] मालिक की ओर से काम करनेवाला, कारिन्दा।

**करीब** *क्रि०वि०* [अ०] नजदीक, आसपास।

**करुअइनी** *स्त्री०* एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल; बच्चों की आँख की बीमारी।

**करुआ** *पु०* करवा, घड़ा।

**करुआ** *वि०* जो स्वाद में कड़वा हो, कड़ुआ (तेल)।

**करुआइल** *सक०* कड़वाहट से मुँह बिचकाना।

**करुआर** *पु०* पतवार, नाव खेने में प्रयुक्त बाँस।

**करुई** *वि०* सरसों या तोरी से तैयार किया गया; सिकहुता।

**करूना** *स्त्री०* करुणा।

**करूर** *वि०* क्रूर।

**करेंट** *पु०* [अं०] विद्युत्-धारा

**करे** *सक०* करना। *कहा०* 'करे परपंच कहावे पंच'।

**करेज, करेजा** *पु०* हृदय, कलेजा। *स्त्री०* करेजी।

**करेर** *वि०* कड़ेर, सख्त।

**करेला, करैली** *पु०* एक तरकारी।

**करोड़** *वि०* [सं० कोटि] सौ लाख की संख्या। **-पति** *वि०* करोड़ों रुपये रखने वाला व्यक्ति, धनाढ्य।

**करौंदा** *पु०* करौना, करौंदा।

**कलंक** *पु०* लांछन, मिथ्या अभियोग, बदनामी; दाग, धब्बा।

**कलंडी** *स्त्री०* सिर का एक पहनावा, ताज पर लगाए गए पाँख, शिरोभूषण; पक्षियों के सिर।

**कलंदर** *पु०* [अ०] मुसलमान फकीरों का एक भेद; बन्दर आदि को नचाने वाला मदारी।

**कल** *अव्य०* बीता हुआ दिन। *कहा०* 'कल के बनिया आज के सेठ'।

**कल** *पु०* मशीन, पुर्जा।

**कलई** *स्त्री०* धातु के बर्तनों पर चढ़ाया जाने वाला पतला लेप।

**कलऊ** *पु०* कलियुग; दोपहर का भोजन, कलेवा।

**कलकल** *पु०* फोड़े वाली खुजली।

**कलकतिया** *वि०* कोलकाता में रहने वाला; एक प्रकार का पान।

**कलगरह** *पु०* कलह, झगड़ा।

**कलछुल** *पु०* करछुल। *कहा०* 'कलछुल राखे हाथ बचावे'।

**कलजुग** *पु०* कलियुग। *कहा०* 'कलजुग में उपकार हत्या बरोबर'। *वि०* कलजुगी।

**कलटरी** *स्त्री०* भूमि पर निर्धारित राजकीय कर; *पु०* कलेक्ट्रेट।

**कलदार** *वि०* जिसमें कोढ़ा लगा हो।

**कलप** *पु०* [सं० कल्पः, अं० कलफ] कपड़ों में लगाई गई माड़ी।

**कलपना** *पु०* दुःख, रोने की मनोदशा।

**कलपल** *अक०* अत्यन्त रोना।

**कलबल** *पु०* अधपके मक्के के दानों का भूँजा; उपाय, युक्ति; दाँव-पेंच; छल।

**कलम** *स्त्री०* वृक्ष की टहनी में दूसरे पौधे की टहनी को बाँध कर तैयार किया हुआ दूसरा पौधा। *वि०* कलमी; लिखने का साधन, लेखनी। *उदा०* 'दू में से का तहरा चाही कलम या कि तलवार'।

**कलमबाग** *पु०* कलमी पौधों का लगाया गया बगीचा।

**कलमा** *पु०* [अ० कलमः] मुसलमानों के धर्म का मूलमन्त्र।

**कलश** *पु०* कँगूरा, कलसा, घड़ा।

**कलसथापन** *पु०* आश्विन नवरात्र के प्रथम दिन पूजा के लिए स्थापित कलश।

**कलसा** *पु०* कलश।

**कलह** *पु०* झगड़ा।

**कलहर** *पु०* कल्ले के लिए व्यंग्यात्मक शब्द।

**कलहारल** *सक०* भोज्य-पदार्थों को थोड़ा गर्म करना।

**कलही** *स्त्री०* झगड़ालू स्त्री। *वि०* कल या मशीन से बना।

**कला** *स्त्री०* हुनर।

**कलाइल** *वि०* वह गरीब व्यक्ति, जिसमें खाने की भूख बराबर बनी रहती है।

**कलाई** *स्त्री०* गट्टा।

**कलाम** *पु०* [अ०] वचन, उक्ति, रचना।
**कलामत** *पु०* कलावन्त।
**कलि** *पु०* [सं०] कलह। **-जुग** *पु०* कलिकाल। **-जुगी** *वि०* कलियुग का।
**कलिया** *पु०* [अ० कलियः] भूनकर रसदार पकाया हुआ मांस।
**कली** *स्त्री०* आम के टिकोरे की खटाई।
**कलीदार** *वि०* जिसके दोनों बगल में कपड़े का टुकड़ा सिला गया हो (कुर्ता)।
**कलील** *पु०* [अ०] थोड़ा, कम।
**कलेऊ, कलेवा** *पु०* सबेरे या दोपहर का भोजन।
**कले-कले** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके।
**कलेजा** *पु०* जिगर, यकृत; छाती, दिल; साहस, हिम्मत। **-उछलल** *मुहा०* हर्ष से दिल धड़कना। **-काँपल** *मुहा०* भयभीत होना। **-काढ़ल** *मुहा०* वेदना पहुँचाना। **-फटल** *मुहा०* द्रवित होना। **-पर साँप लोटल** *मुहा०* ईर्ष्या से जल उठना। **-से लगावल** *मुहा०* प्यार करना।
**कलेजी** *स्त्री०* कलेजे का मांस।
**कलेयान** *पु०* [सं० कल्याण] भलाई।
**कलेवर** *पु०* बनावट, शरीर।
**कलेवा** *पु०* नैहर से ससुराल को मिष्ठान्न की सौगात।
**कलेस** *पु०* दुःख, कष्ट, क्लेश।
**कलेहरा** *वि०* कालापन लिये हुए।
**कलैया** *स्त्री०* कलाबाजी।
**कलोर** *स्त्री०* वह गाय जो बरदाई या ब्याई नहीं हो।
**कलौंजी** *स्त्री०* मसाला भर कर बनाए गए भण्टे, करैले की सब्जी।
**कल्ला** *पु०* गाल के भीतर का भाग, जबड़ा।
**कल्ह** *क्रि०वि०* [सं० कल्यः] बीता हुआ या आनेवाला दूसरा दिन। *वि०* **कल्हुकी।**
**कल्हरावल** *सक०* तपाना।
**कवन** *सर्व०* [सं० कः] कौन। *कहा०* 'कवन बात के डर बा, कासी में जब घर बा'।
**कवर** *पु०* एक बार मुँह में डाला जाने वाला भोजन, ग्रास, कौर। *मुहा०* 'कवर उठाते माछी परल'।
**कवरा-कौरा** *पु०* एक अँजुरी सिद्ध अन्न जो कुत्ता या पशुओं को दिया जाता है।
**कवरी** *स्त्री०* पागुर, पगुरी।
**कवलगट्टा** *पु०* कमल का फूल या बीज।
**कवल पतर** *पु०* वस्त्र की एक प्रकार की रँगाई।
**कवला** *पु०* कमल।
**कवाइत** *पु०* सिपाहियों का सामूहिक व्यायाम, कवायद; सामूहिक व्यायाम।
**कवाछ** *पु०* एक प्रकार का रोवाँदार पौधा, जिसके स्पर्श से भयंकर खुजलाहट पैदा होती है, केवाँछ।
**कवाछल** *अक०* तंग होना।
**कस** *पु०* [फा०] प्रभाव, दबाव, कसौटी। *कहा०* 'कस न बूता, साँझे सूता'।
**कसइया** *पु०* वधिक, हत्यारा। *कहा०* 'कसइया के सरापे से गइया ना मरी'।
**कसइली** *स्त्री०* सुपारी, पूँगीफल।
**कसउँझी** *स्त्री०* एक प्रकार का अचार, जो कटहल या आम के टिकोरे से तैयार किया जाता है। *उदा०* 'बनी कसउँझी वो कटहल की, औ निबुआ का बना अँचार' आल्हा।
**कसबिन** *स्त्री०* वेश्या, रण्डी। *कहा०* 'कसबिन घरे जाई चूतर फेर बतियाई'।
**कसम** *स्त्री०* शपथ, सौगन्ध।

**कसमस** *स्त्री०* कसमसाहट, अधिक लोगों के इकट्ठा होने के कारण धक्का होने की स्थिति।
**कसयपन** *पु०* निर्दयता, कसाई की क्रिया या भाव।
**कसर** *स्त्री०* कमी, न्यूनता; बदला।
**कसरत** *स्त्री०* शारीरिक श्रम-कार्य, व्यायाम।
**कसल** *सक०* जोर से बाँधना।
**कसवल** *अक०* स्वाद में कसैला लगना।
**कसबा** *पु०* बड़ा गाँव।
**कसाई** *पु०* [अ० कस्साब] बधिक, मवेशियों का गला काटने वाला, निर्दयी। *कहा०* 'कसाई के घर खस्सी के खैर'।
**कसार** *पु०* चावल के चूर्ण में चीनी या गुड़ डाल कर बनाया लड्डू।
**कसिया** *स्त्री०* पतली धार वाली कुदाली।
**कसीदा** *पु०* सुई और धागे के सहारे कपड़े पर काढ़े गए फूल या बेल-बूटे।
**कसीला** *पु०* सगुनी बैल।
**कसीस** *पु०* एक प्रकार का खनिज, जिसका उपयोग स्याही बनाने में होता है।
**कसूर** *पु०* अपराध, दोष।
**कसेरा** *पु०* बर्तन बनाने वाली एक जाति।
**कसैली** *स्त्री०* सुपारी।
**कसोरा** *पु०* मिट्टी का बना छिछला प्याला, कटोरा।
**कसौड़ा** *पु०* सफेद फूलों वाली एक प्रकार की घास।
**कसौटी** *स्त्री०* ऐसा पत्थर, जिस पर सोने को रगड़ कर परखा जाता है।
**कहँ** *अव्य०* कहाँ।
**कहँरल** *अक०* कराहना।
**कह** *सक०* [कथने] कहना।
**कहतरी** *स्त्री०* दही जमाने का बर्तन।
**कहता** *वि०* कहने वाला।
**कहतुक** *पु०* निन्दा।
**कहनाम** *पु०* कथन।
**कहनी** *स्त्री०* कथा। *कहा०* 'कहनी गइल बन में सोचऽ अपना मन में'।
**कहरनी** *स्त्री०* एक प्रकार का साग।
**कहल** *सक०* कहना।
**कहवइया** *पु०* कहने वाला। *कहा०* 'कहवइया से सुनवइया चल्हाक'।
**कहाँ** *अव्य०* किस जगह। *कहा०* 'कहाँ गरजल, कहाँ बरसल'।
**कहीं** *अव्य०* किसी स्थान पर। *कहा०* 'कहीं भूखे मरे कहीं लड्डू सड़े।'
**कहूँ** *अव्य०* किसी जगह पर। *कहा०* 'कहूँ कुँइयाँ जाय पियासल पास'।
**कहा** *पु०* [हिं०] कहना।
**कहानी** *स्त्री०* [सं० कथानिका] कथा।
**कहार** *पु०* [सं० कं० (जल) +हार] एक जाति, जो डोली ढोती है, पानी भरती है।
**कहिया** *अव्य०* किस दिन।
**कहुआ** *पु०* खाँसी की देहाती दवा।
**काँई** *वि०* धूर्त व्यक्ति।
**काँकड़ि** *स्त्री०* एक लम्बा फल, ककड़ी।
**काँकर** *पु०* कछौटा।
**काँख** *स्त्री* [सं० कक्ष] बाहुमूल के नीचे का भाग, बगल।
**काँखल** *अक०* धीरे-धीरे खाँसना, कहँरना, मलत्याग में जोर लगाना।
**काँखासूती** *पु०* जनेऊ के पहनने का ढंग, जिसमें वह बायें कन्धे से काँख तक रहता है।
**काँखी** *पु०* पौधों की गाँठ में से निकली नयी कोंपल। *स्त्री०* काँख का घाव।
**काँगड़ा** *पु०* एक पक्षी; पंजाब का एक जिला।

**काँगड़ी** *स्त्री०* कश्मीरियों के गले में लटकाने की एक अँगीठी।
**काँगरू** *पु०* कंगारू।
**काँगही** *स्त्री०* कंघी।
**कांग्रेस** *स्त्री०* [अं०] सम्मेलन, संघटन, भारतीय राष्ट्रीय महासभा इंडियन नेशनल कांग्रेस।
**कांग्रेसी** *वि०* कांग्रेस से सम्बद्ध, कांग्रेस का अनुयायी।
**काँच** *स्त्री०* शीशा; जो पका नहीं हो, अधपका, कच्चा।
**काँचन** *पु०* [सं०] सोना।
**काँचा** *वि०* कच्चा।
**कांछा** *स्त्री०* [सं० काङ्क्षा] इच्छा, अभिलाषा।
**काँजी** *स्त्री०* नमकीन घोल के रूप में प्रस्तुत खट्टा पेय, माँड़, दही या फटे दूध का पानी।
**काँट** *पु०* एक प्रकार की घास, जिसमें काँटा होता है; मछली की रीढ़ की हड्डी; रुकावट, कंटक।
**काँटा** *पु०* वह तराजू, जिसमें सही वजन करने के लिए एक नुकीला काँटा लगा रहता है, बड़ा तराजू; नोकदार चीज, पतली कील।
**काँटी** *स्त्री०* लोहे का छोटा काँटा, कील।
**काँठर** *पु०* वाती।
**काँड** *पु०* [सं०] घटना, दुर्घटना; प्रसंगानुसार किसी ग्रन्थ का सर्ग; अंश, विभाग।
**काँड़** *पु०* चूहे का बिल।
**काँड़ल** *सक०* रौंदना, खूब पीटना, कुचलना।
**काँड़ा** *पु०* गन्ने के सदृश एक प्रकार का घास, सरकण्डा।
**काँड़ी** *स्त्री०* पोरदार बाँस का टुकड़ा, जिसके एक ओर का मुँह खुला रहता है और उसका उपयोग मवेशियों के मुख में दवा आदि को पिलाने के कार्य में होता है।
**काँत** *पु०* जूए में दाँव, मौका; नदी के किनारे स्थित; प्रिय, मनोरम।
**कांता** *स्त्री०* प्रिया।
**काँती** *स्त्री०* [सं० कान्तिः] शरीर का गठन, शारीरिक सौन्दर्य।
**काँदो** *पु०* कीचड़।
**काँध** *पु०* कन्धा।
**कांधा** *पु०* कृष्ण।
**काँधी** *स्त्री०* कोल्हू के बैल के कूबड़ पर के टाट की गद्दी; कन्धा।
**काँप** *पु०* कम्पा, दबाव।
**काँपल** *अक०* [सं० कम्प] जोर से हिलना, थरथराना, काँपना।
**काँव-काँव** *पु०* कौवे की बोली।
**काँवर** *पु०* [हिं० कावड़] बाँस की बनी बँहगी, जिसके साथ लटके टोकरे में गंगाजल ढोया जाता है।
**काँवरु** *पु०* [सं०] कामरूप देश।
**काँस** *स्त्री०* घासविशेष, जिससे मड़ई बनाई जाती है।
**काँसड** *वि०* काले-उजले रोएँ वाला ऐसा बैल, जिसका अण्डकोश भी काला हो।
**काँसार** *पु०* कसेरा।
**काँसी** *स्त्री०* काँसा।
**कांस्टेबिल** *पु०* [अं०] सिपाही।
**का** *सर्व०* [सं० किम्] क्या। *कहा०* 'का चुप साधि रहा बलवाना'।
**काइयाँ** *वि०* धूर्त।
**काई** *स्त्री०* कीचड़ या गीली जमीन पर उगने वाली बारीक वनस्पति।

**काउच** *पु०* हिंसक जीव-जन्तु का खुला मुख।
**काउन** *पु०* बाजरे की जाति का छोटे दानों वाला एक अनाज।
**काउर** *पु०* धान के पुआल का महीन अंश।
**काउर-माउर** *पु०* अण्ट-सण्ट बात, बेकार चीज।
**काक** *पु०* [सं०] कौआ।
**काकरी** *स्त्री०* कंकड़ी।
**काका** *पु०* पिता का भाई, चाचा।
**काकी** *स्त्री०* काका की पत्नी।
**काकुन** *स्त्री०* मोटा अन्न।
**काकुल** *स्त्री०* जुल्फी।
**काग** *पु०* [सं० काक] काले रंग का एक पक्षी। *उदा०* 'कगवा जे बोलेला बृन्दाबन अवरों निकुंज बन। कगवा, कवन सनेसा लेइ आइल, तें बोलिया सोहावन॥' -लोकगीत
**कागज** *पु०* [फा०] लुगदी से निर्मित वस्तु, जिस पर लिखा जाता है, *कहा०* 'कागज के नाव भला कब तक चली?' **-पत्तर** *पु०* लिखी हुई बातें, सबूत। **-के रुपया** *मुहा०* नोट। **-के नाव** *मुहा०* क्षण भंगुर वस्तु। **-काला कइल** *मुहा०* व्यर्थ लिखना। **-के घोड़ा दौड़ावल** *मुहा०* केवल कागजी कार्रवाई करना।
**कागजाती** *वि०* कागज से सम्बन्धित (सबूत); कागज में लिखी बात को समझने वाला।
**कागा** *पु०* कौआ। *उदा०* 'नकबेसर कागा ले भागा, सैंया अभागा ना जागा।'
**काचल** *सक०* किसी फल या सब्जी को काटना।
**काछ** *स्त्री०* कमर के नीचे और ठेहुने के ऊपर का पैर का हिस्सा; नदी का किनारा; दलदल जमीन; खुजली।
**काछल** *सक०* किसी बर्तन में सटे सामान को हाथ से पोंछना; बहाना बनाना।
**काज** *स्त्री०* पहनावे के वस्त्र में बटन लगाने के लिए बनाई जाने वाली जगह। *पु०* काम।
**काज-परोजन** *पु० यौ०* यज्ञादि कार्य। *उदा०* 'बाबा कहेले बेटी काज परोजन, भइया कहेले छव मास। आमा कहेली बेटी नित उठि अइहऽ भउजी नएनवा ना लोर'। -लोकगीत
**काजर** *पु०* अंजन, काजल। *उदा०* 'काजर देहले के नाहऽ, मटकवलो के हऽ।'
**काजी** *पु०* मुस्लिम युग का न्यायाधीश। *उदा०* 'लइका-लइकी राजी, त का करिहें काजी।'
**काजू** *पु०* फल, मेवे के रूप में प्रयुक्त।
**काट-कपट** *पु०* [सं०] काट-छाँट करने का काम, छिपाकर काटने का काम।
**काटल** *सक०* [सं० कर्त्तम्] हथियार से खण्डित करना, घाव करना; फसल काटना।
**काटा-बान्हा** *पु०* फसल को काटने के साथ ही उसे बाँध देने की स्थिति।
**काठ** *पु०* [सं० काष्ठ] काटे पेड़ का सूखा तना; शरीर की बनावट, हाड़-काठ *यौ०*। *उदा०* 'काठ के बालक गढ़ि देहुँ त जियरा बुझाइब' -लोकगीत। **-भइल** *अक०* स्तम्भित होना। **-मारल** *अक०* लज्जित होना।
**काठी** *स्त्री०* दियासलाई की पतली तीली; घोड़े और ऊँट की जीन, जो काठ की बनी रहती है।
**काड़ा** *पु०* भैंस का नर बच्चा, जो बड़ा हो गया हो, पाड़ा; एक आभूषण, कड़ा।
**काड़ी** *स्त्री०* भैंस का मादा बच्चा, पड़िया; उपला, गोंइठा।

**काढ़ा** *पु०* एक प्रकार का औषधीय पेय, जो वनस्पतियों की कोमल पत्तियों को पानी के साथ उबाल कर बनाया जाता है। यथा- तुलसी का काढ़ा।

**काढ़ल** *सक०* निकालना; कपड़े पर बेलबूटा बनाना; कर्ज लेना। *उदा०* 'जब हो कवन लाल, काढ़ले पुतरिया। उरछि मुरछि गिरे सजन बरिअतिया।'

**कातर** *पु०* कोल्हू में लगाई हुई समतल पटरी।

**कातल** *सक०* [सं० कर्तन] चरखा द्वारा रूई से सूत निकालना। *स्त्री०* कतउनी, कातने की क्रिया या भाव, कताई, कातने की क्रिया या भाव।

**काता** *पु०* डोमों का हथियार, जिससे बाँस काटा और फाड़ा जाता है; बाँस सरकण्डे या गन्ने के पत्तों का धारदार किनारा; कता हुआ सूत।

**कातिक** *पु०* [सं० कार्तिक:] आश्विन के बाद का महीना। *उदा०* 'जोतत बोअत जनम सिरायल। फेर कातिक के कातिक आयल।' -लोकगीत।

**कातिब** *पु०* [अ०] लिखने वाला।

**कातिल** *पु०* [अ०] हत्यारा।

**काती** *स्त्री०* कैंची, कत्ती, छुरी।

**काथ** *पु०* कत्था। *उदा०* 'जहँ बीरा तहँ चून है, पान, सुपारी काथ'।

**काथरी** *स्त्री०* गुदड़ी।

**कादर** *वि०* डरपोक, भीरु; आलसी।

**काँदो** *पु०* कीचड़।

**कादो** *अव्य०* सन्दिग्ध बात के दुहराने की स्थिति; शायद।

**कान** *पु०* [सं० कर्ण] सिर का वह भाग, जिससे आवाज सुनी जाती है। **-उठावल** *मुहा०* चौकन्ना। **-उड़ल** *मुहा०* शोरगुल से कष्ट मिलना। **-कतरल** *मुहा०* नीचा दिखाना। **-करऽ** *मुहा०* ध्यान से सुनना। **-के कच्चा** *मुहा०* बिना विचारे सुनी बात पर विश्वास कर लेना। **-पकड़ल** *मुहा०* आगे के लिए चेत जाना। **-भरल** *मुहा०* किसी के बारे में धारणा बिगाड़ना।

**कानकुबुज** *पु०* (कान्यकुब्ज:) ब्राह्मण जाति का उपभेद; कन्नौजनगर।

**कानल** *अक०* [सं० क्रन्दनम्] रोना।

**काना** *वि०* जिसकी आँख टेढ़ी हो (पुरुष), एक आँख वाला (व्यक्ति)। *कहा०* 'काना पांड़े गोड़ लागीं कलह के घर इहे हऽ'। **-कानी** *स्त्री०* काना फूसी। **-फूसी** *स्त्री०* कान से लगकर धीमे-धीमे बात करना।

**कानी** *स्त्री०* खराब, सबसे छोटी कानी। *कहा०* 'कानी गाय के अलगे बथान'।

**कानू** *पु०* हिन्दुओं में बनिया जाति का उपभेद।

**कानून** *पु०* कैथी लिपि में आकार की मात्रा के लिए प्रयुक्त चिह्न।

**कानून** *पु०* [अ० केनान] सरकार द्वारा बनाया गया नियम। **-छाँटल** *मुहा०* कानून की जानकारी नहीं रहने पर भी उस पर तर्क-वितर्क करना।

**कापी** *स्त्री०* [अं०] नकल, प्रतिलिपि; सादे कागज की बही; छपने हेतु तैयार लेखादि।

**काफ** *पु०* [अ०] अरबी-फारसी वर्णमाला का एक अक्षर।

**काफिर** *पु०* [अ०] ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला; *वि०* नास्तिक, दुष्ट।

**काफिला** *पु०* [अ०] यात्रियों का समूह।

**काफी** *वि०* अधिक, प्रचुर, पर्याप्त।

**काबर** *वि॰* [सं॰ कुर्वर] अनेक रंग वाला रोंआँ; चितकबरा।

**काबा** *पु॰* [अ॰] अरब में स्थित मुस्लिम तीर्थ।

**काबिल** *वि॰* [अ॰] योग्य, विद्वान्।

**काबिस** *स्त्री॰* एक प्रकार की मिट्टी, जिसका उपयोग बर्तन रँगने में होता है।

**काबुली** *वि॰* काबुल का, काबुल का निवासी।

**काबू** *पु॰* [तु॰] शक्ति, बल, वश, प्रभाव, जोर। *कहा॰* 'काबू तऽ बाबू'।

**काम** *पु॰* [सं॰ कर्म] कार्य, पेशा। *कहा॰* 'काम पियारा हऽ चाम ना'। *वि॰* कामी। **-आइल** *मुहा॰* अवसर विशेष पर उपयोगी होना।

**काम-किरिया** *पु॰* श्राद्ध-कर्म।

**काम चलाऊँ** *वि॰ यौ॰* जिससे किसी प्रकार काम चलाया जा सके।

**कामचोर** *वि॰* काम से जी चुरानेवाला, काहिल, आलसी यौ॰।

**कामती** *स्त्री॰* खेत-खलिहान के मजदूरों से काम कराने वाला।

**कामदानी** *स्त्री॰* तार या सलमे-सितारे से बने बेलबूटे।

**काम-धाम** *पु॰* कार्य-क्रम, व्यापार, रोजगार, कर्म-धर्म।

**कामधेनु** *स्त्री॰* [सं॰] इच्छानुसार दूध देने वाली गाय।

**कायथ** *पु॰* कायस्थ, हिन्दुओं की एक जाति; कएथाँव, कायस्थों की प्रवृत्ति की कार्यविधि। *कहा॰* 'कायथ के हथियार कलम'।

**कायथ दरजी** *पु॰* सिलाई का काम करने वाली कायस्थों की उपजाति।

**कायथ बनिया** *पु॰* व्यापार करने वाली हिन्दुओं की एक जाति, जो पहले कायस्थ थी। *उदा॰* 'रहलीं कायथ, भइली कायथ बनियाँ। करम जर गइल, हो गइलीं किरतनिया' -लोकगीत।

**कायदा** *पु॰* [अ॰] नियम, ढंग।

**कायम** *वि॰* [अ॰] स्थिर, निश्चित।

**कायल** *वि॰* [अ॰] जो तर्कपूर्ण बात को सुन कर उसे मान लेता है।

**काया** *पु॰* [सं॰] हृदय, शरीर।

**कार** *पु॰* [फा॰] काम, कार्य, करनेवाला। **-कुन** *पु॰* काम करने वाला, कारिंदा। **-खाना** *पु॰* कारबार का स्थान। **-गर** *वि॰* असर करने वाला। **-नामा** *पु॰* प्रशंसनीय कार्य। **-परदाज** *वि॰* प्रबन्धक, कारिन्दा। **-बार** *पु॰* कामकाज। **-रवाई** *स्त्री॰* किसी काम को करना।

**कारी, करिया** *वि॰* काला, काले वर्ण का अनाज; पशु। *कहा॰* 'कारी खोरी राज करे, सुनरी भतार करे'।

**कारू** *पु॰* एक प्रकार की घास।

**काला** *वि॰* काले वर्ण की वस्तु।

**कालाकंद** *पु॰* एक प्रकार का धान, काले रंग का नमक विशेष, एक प्रकार की मिठाई।

**काला नमक** *पु॰* एक महीन धान।

**कालाभँवर** *पु॰* बादलों की घटाओं के साये में पड़ा जल।

**कालिका** *स्त्री॰* [सं॰] चण्डिका।

**कालिख** *स्त्री॰* स्याही; कलंक।

**कालिज** *पु॰* [अं॰ कॉलेज] हाईस्कूल से ऊपर के दरजे की पढ़ाई वाला महाविद्यालय।

**काली** *स्त्री॰* [सं॰] दुर्गा, पार्वती।

**कालीन** *पु॰* [अ॰] गलीचा।

**कावर** *अव्य॰* ओर, तरफ।

**काशीफल** *पु॰* कुम्हड़ा।

**कासिका** *स्त्री०* काशी और उसकी बोली का नाम, काशिका; संस्कृत व्याकरण का एक ग्रन्थ।

**कासी** *स्त्री०* भोजपुरी क्षेत्र की एक प्राचीन नगरी, बनारस, वाराणसी, काशी। *वि०* काशीवाला। *उदा०* 'बम बम बोल रहल बा कासी'।

**कास्तकार** *पु०* जमीन जोतनेवाला, किसान।

**काहऽ** *सर्व०* क्या।

**काहीं** *अव्य०* को।

**काही** *स्त्री०* एक रंग।

**काहे** *अव्य०* क्यों, किसलिए।

**कि** *अव्य०* अथवा, क्या। *कहा०* 'कि मुँह पान कि मुँह पनही'।

**किकुरना** *सक०* ठण्ढक के कारण शरीर के अंगों को समेटना।

**किकोरना** *अक०* खुरचना।

**किंचर** *पु०* कीचड़ (आँख का)।

**किच-किच** *पु०यौ०* बकवाद, झगड़ा; कीचड़ से व्याप्त होने की स्थिति।

**किचराइल** *अक०* आँख से कीचड़ का निकलना।

**किचेन** *स्त्री०* [अ०] रसोईघर।

**किछु** *वि०* कुछ।

**किछु-किछुओ** *वि०* थोड़ा, कुछ, कुछ भी।

**किटकिटावल** *अक०* दाँत से दाँत का टक्कर होना, दाँत पीसना।

**कित** *अव्य०* किधर, कहाँ।

**कितई** *स्त्री०* [*अव्य०* कतई] सुनिश्चित होने की स्थिति।

**किता** *पु०* संख्याबोधक एक शब्द।

**किताब** *स्त्री०* पुस्तक। *वि०* किताबी।

**कित्ता** *पु०* खेती की हुई भूमि का एक बड़ा भाग।

**किदो** *अव्य०* शायद, सम्भवत:।

**किन-किन** *पु०* यौ० दाँत के नीचे बालू रहने का अनुभव।

**किरोध** *पु०* क्रोध।

**किनक** *पु०* मन्द बूँदें।

**किनार** *पु०* छोर, कोर, नदी का तट; तीर।

**किफायत** *स्त्री०* कम खर्च करने की स्थिति।

**किमागोई** *स्त्री०* कंजूसी।

**किया** *अव्य०* क्या, या। *कहा०* 'किया खाय घोड़ा ना तऽ रोड़ा'।

**कियाम** *पु०* ठहराव, निश्चय, विश्वास।

**कियारी** *स्त्री०* खेतों का छोटा टुकड़ा।

**कियाल** *पु०* अनाज की तौल-जोख करने वाला।

**किरकिचही** *स्त्री०* एक प्रकार का कीड़ा।

**किरकिरी** *पु०* बालू का कण।

**किरतनिया** *पु०* नाचने-गाने वाला, कीर्तन-भजन करने वाला दल।

**किरपा, किरिपा** [सं० कृपा] दया, मेहरबानी।

**किरपिन** *पु०* कंजूस, कृपण। *कहा०* 'किरपिन के घर पाहुन अइले जस बदरी थहराय। मलिकाइन के छाती फाटे कब दुआर से जाय॥'

**किराइल** *वि०* कीड़ा लगा हुआ।

**किराँची** *स्त्री०* [अं० कैरेज] कूड़ा ढोने की बैल गाड़ी।

**किरान** *पु०* [अं० क्रेन] भारी चीजों को उठाने की मशीन।

**किरानी** *पु०* कार्यालयों में कागजाती कार्य करने वाला।

**किराया** *पु०* किसी वस्तु के उपभोग हेतु उसके मालिक को दी गई राशि, भाड़ा। *वि०* किरायादार।

**किरासन** *पु०* [अं० किरोसीन] मिट्टी का तेल।
**किरिन** *स्त्री०* किरण, सूर्य या चन्द्रमा की रश्मि।
**किरिमची** *स्त्री०* एक प्रकार की मिट्टी, जिसका उपयोग मकान रँगने में होता है।
**किरिया** *स्त्री०* सौगन्ध, कसम, शपथ। *कहा०* 'किरिया करम पाछ परल गले रुदराछ परल'।
**किरीरल** *सक०* पेंचदार काँटी को जोर से ऐंठकर कसकना।
**किरोध** *पु०* क्रोध।
**किरोर** *वि०* करोड़।
**किरौना** *पु०* एक प्रकार का कीड़ा; साँप।
**किल** *अव्य०* निश्चय ही।
**किलक** *स्त्री०* किलकारी।
**किलकन** *स्त्री०* किलकने की क्रिया।
**किलकारी** *स्त्री०* हर्ष भय की अवस्था में निकली चीख।
**किलकिलाइल** *अक०* किलकारी मारना।
**किलनी** *स्त्री०* छोटा कीड़ा, जो पशुओं में चिपका रहता है।
**किला** *पु०* बड़ा और सुदृढ़ मकान, राजमहल।
**किल्ली** *स्त्री०* लकड़ी का टुकड़ा, जो दो काठों को जोड़ने के लिए ठोंका जाता हो; पच्चड़, खूँटी।
**किवाड़** *पु०* कपाट। **-दिहल** *मुहा०* दरवाजा बन्द करना। **-बंद हो गइल** *मुहा०* घर में किसी का न रहना।
**किवार** *पु०* दे० किवाड़।
**किसमिस** *स्त्री०* [फा०] सुखाया हुआ अंगूर।
**किसान** *पु०* खेतिहर। *कहा०* 'किसान कमाय अघइले मजूर कमाय भुखइले'।
**किसिम** *स्त्री०* एक प्रकार का ढंग, किस्म।
**किसुन कतिका** *पु०* एक प्रकार का महीन धान।
**किसुन भोग** *पु०* एक प्रकार का स्वादिष्ट आम।
**किस्त** *स्त्री०* निश्चित समय पर दिया जाने वाला ऋण का अंश, ऋण अदा करने का निश्चित काल।
**किस्म** विभिन्न तरह का।
**किहाँ** *अव्य०* के यहाँ, के पास।
**किहें** *अव्य०* के पास।
**की** *अव्य०* अथवा, क्या
**कीअ** *पु०* सिन्दूर-पात्र।
**कींच** *पु०* काँदो, उदा० 'मीच है कबूल, पै न कीच लखनऊ की'।
**कींचड़, किचर** *पु०* आँख का सफेद मैल, कीचड़, काँदो।
**कीछु** *वि०* कुछ।
**कीटल** *अक०* दाँत का कटकटा कर क्रोध व्यक्त करना।
**कीनल** *सक०* खरीदना।
**कीनवइया** *पु०* खरीदने वाला।
**कीमत** *स्त्री०* दाम, मूल्य।
**कीरा** *पु०* कीड़ा।
**कीरी** *स्त्री०* छोटा कीड़ा, जो मल में पाया जाता है।
**कीरती** *स्त्री०* किया हुआ कार्य, कीर्ति।
**कीर्तन** *पु०* भगवान् या किसी देवता का सामूहिक गुण-गान।
**कील** *पु०* लकड़ी या लोहे का छोटा खुट्टा, चीपा, पल्ला, नल के पीछे की डाट।
**कीला** *पु०* चाक की धुरी।
**कुँअर** *पु०* [सं० कुमार] राजा का बेटा; राजकुमार; बालक, लड़का।
**कुँआ** *पु०* [सं० कूपः] पानी के लिए पृथ्वी पर खोदा हुआ गहरा गड्ढा, कूप।

**कुँआर** *वि०* अविवाहित, अविवाहिता। *पु०* कुँअरपन, अविवाहित रहने की स्थिति।
**कुँआरी** *वि०* कुमारी, अविवाहिता।
**कुँइयाँ** *स्त्री०* छोटा कुआँ।
**कुंकुम** *पु०* [सं०] केसर, रोली।
**कुंचन** *पु०* [सं०] सिकुड़ना, सिमटना।
**कुँचाइल** *अक०* भार से दब जाना या पिसा जाना।
**कुँजरा** *पु०* सब्जी बेचने वाली एक जाति।
**कुंजी** *स्त्री०* [सं० कुंजिका] चाभी।
**कुंड** *पु०* [सं०] बड़ा एवं गहरा गड्ढा। तीर्थ स्थान का पवित्र जलाशय।
**कुंडल** *पु०* सोने या चाँदी का गोलाकार गहना, जो कान में पहना जाता है, गोरख-पंथी साधुओं के कान की छोटी बाली।
**कुंडली** *स्त्री०* जन्मकुण्डली।
**कुंडा** *पु०* नाद।
**कुड़नी** *स्त्री०* मिट्टी का एक बर्तन।
**कुड़िआइल** *अक०* इकट्ठा होना।
**कुँड़िआवल** *सक०* ढेर लगाना।
**कुंड़ी** *स्त्री०* कटोरानुमा पत्थर का छोटा बर्तन, जिसमें भाँग घोटी जाती है।
**कुँड़ेसर** *पु०* मिट्टी का घड़ा।
**कुंद** *पु०* चम्पा की जाति का एक फूल।
**कुंदा** *पु०* [फा०] बन्दूक का पिछला भाग।
**कुंभ** *पु०* ज्योतिष में दशवीं राशि; बारहवें वर्ष के बाद होने वाला पर्व, जहाँ प्रमुख रूप से धर्म-प्रेमी इकट्ठा होते हैं।
**कुँहरल** *अक०* किसी प्रस्ताव को अस्वीकृत करने पर मुँह बनाना, कँहरना। *व०कृ०* कुँहरत, *भू०कृ०* कुँहरल।
**कु** *उपसर्ग०* शब्दों के पूर्व जुड़ने वाला एक उपसर्ग, जिसका प्रयोग बुरा, नीच, कुत्सा के अर्थ या भाव को व्यक्त करने में होता है जैसे-कुकर्म, कुटेव।

**कुआत** *पु०* दुःख, वितृष्णा। *वि०* कुअतल उपेक्षित।
**कुआर** *पु०* आश्विन का महीना। *कहा०* 'कुआर जाड़े के दुआर'।
**कुइयाँ** *स्त्री०* कच्चा कुआँ।
**कुइस** *पु०* जिसकी आँखों की पुतलियों का रंग काला नहीं हो।
**कुकरम** *पु०* [सं० कुकर्म] बुरा काम, नीच धन्धा।
**कुकरूँकू** *पु०* मुर्गे की बोली।
**कुकुर** *पु०* कुत्ता। *कहा०* 'कुकुर के मुँह लगाइब तऽ ऊ मुँहे चाटी'।
**कुकर दंता** *पु० यौ०* वह दाँत जो साधारण दाँतों के अलावा हो।
**कुकुरमाछी** *स्त्री० यौ०* कुत्तों या अन्य जानवरों के शरीर पर रहने वाली बड़ी जाति की मक्खी। -लागल *मुहा०* किसी चीज की प्राप्ति के लिए आवश्यक दौड़ धूप करना।
**कुकुरहो** *पु०* हल्ला-गुल्ला, कुत्तों के एक साथ बोलने से उत्पन्न हल्ला।
**कुकुरौधा** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिससे दुर्गन्ध आती है, कुकरौंधा।
**कुचकुच** *वि०* 'काला', काला शब्द के पहले लगने वाला विशेषण अत्यधिक काला।
**कुचकुचवा** *पु०* एक प्रकार की चिड़िया, उल्लू।
**कुचकुचाइल** *अक०* चिड़ियों का बोलना।
**कुचरा** *वि०* इधर की बात उधर पहुँचाने वाला, चुगलखोर।
**कुचाल** *पु०* बुरा आचरण, खराब काम।
**कुचिला** *पु०* एक प्रकार का बीज, जो दवा के काम में आता है।
**कुचुट** *पु०* चोट लगने से हल्का जख्म।

**कुच्चा** *पु०* कच्चे आम को कूँचकर बनाया गया अँचार या खटाई।
**कुछ** *वि०* थोड़ा, अल्प। *उदा०* 'कुछ हाथ के सफाई, कुछ डण्डी के फेर, दोसरा के तीन पाव बनिया के सेर'।
**कुजगह** *पु०* कुठाँव, गोपनीय जगह, वह अंग जिसे पर्दे के भीतर रखते हैं।
**कुजड़ा** *पु०* फलविक्रेता (व्यक्ति)
**कुजात** *वि०* नीच जाति का, जो जाति से बहिष्कृत हो।
**कुटंबस-कुटम्मस** *पु०* कड़ी पिटाई, खूब पीटने की क्रिया।
**कुटका** *पु०* डाँठ।
**कुट्टी** *स्त्री०* लड़ाई; करबी, चारा।
**कुटनपन** *पु०* दो में झगड़ा लगाने का काम।
**कुटवन** *पु०* कूटने का काम।
**कुटवनी** *स्त्री०* कूटने की मजदूरी।
**कुटिया** *स्त्री०* काटने से बना टुकड़ा (मछली); साधुओं की झोपड़ी।
**कुटुम** *पु०* सम्बन्धी, रिश्तेदार, परिवार।
**कुटुमायत** *पु०* [सं० कुटुम्बः] सम्बन्धी होने का भाव; कुटमैला।
**कुटुर-कुटुर** *पु०* अनु० चूहे या दाँत वाले किसी जन्तु के काटने की आवाज।
**कुटुरावल** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे खाने के लिए व्यंग्यात्मक शब्द।
**कुठौर** *पु०* कुजगह, कुठाँव। *कहा०* 'कुठौरे के घाव भसुर ओझा'। *वि०* कुठेंठ।
**कुड़नी** *स्त्री०* मिट्टी का छोटा सा बर्तन, जिसमें पानी रखा जाता है।
**कुड़मूडन** *पु०* किसी कार्य की समाप्ति के बाद का अवकाश।
**कुड़ोर** *पु०* वह स्थान, जहाँ जाने में असुविधा होती है।
**कुड़ौल** *वि०* बेढंगा, बुरे आकार का।
**कुढंग** *पु०* बेढंगा काम। *वि०* कुढंगा।
**कुतप** *पु०* गलत तपस्या, चूक।
**कुताक** *पु०* कुअवसर, कुसमय।
**कुतुआ** *पु०* अनुमानित वजन या राशि।
**कुतुरल** *पु०* चोंच या छोटे दाँत वाले जन्तुओं का काटकर टुकड़ा करना।
**कुत्त-कुत्त** *पु०* कुत्ते को पुकारने का शब्द।
**कुत्ता** *पु०* कुक्कुर। *कहा०* 'कुत्ता बाभन हाथी, ई न जात के साथी'। *स्त्री०* कुत्ती, कुतिया।
**कुदकल** *अक०* एक जगह से दूसरी जगह फाँदते रहना।
**कुदकावल** *सक०* कुदाना, बैठने की जगह से उठाते-बैठाते रहना (गाड़ी)।
**कुदरती** *वि०* ईश्वरीय माया, प्रकृति का।
**कुदार** *पु०* मिट्टी खोदने का एक हथियार, फावड़ा।
**कुदारी** *स्त्री०* जमीन कोड़ने का एक औजार; कुदाली।
**कुदिन** *पु०* बुरा दिन, कष्ट का समय।
**कुनबी** *स्त्री०* साग-सब्जी उगाने वाली जाति।
**कुनरी** *स्त्री०* परवल की तरह की एक सब्जी।
**कुन्ती** *स्त्री०* पाण्डवों की माँ।
**कुपंथ** *पु०* गलत रास्ता।
**कुपातर** *वि०* अयोग्य, अपात्र, कुपात्र। *कहा०* 'कुपातर से निरबंसे अच्छा'।
**कुफुत** *पु०* कष्ट, पीड़ा, दुःख, मानसिक कष्ट।
**कुबखत** *पु०* कुसमय।
**कुबर** *पु०* कूबड़, पीठ का टेढ़ापन। *स्त्री०* कुबरी-कंस की दासी।
**कुबान** *पु०* बिना आदत का, बुरी लत।
**कुबुधी** *वि०* बुद्धिहीन, मूर्ख।

**कुबेर** *पु०* धन सम्पत्ति के देवता।
**कुबेरा** *वि०* कुसमय, समय का अतिक्रमण।
**कुबोली** *वि०* नहीं बोलने योग्य (बात)।
**कुमत-कुमति** *पु०* बुरा विचार।
**कुमरुख** *वि०* मूर्ख। *कहा०* 'कुमरुख के सारी रात छैलवा के एक घड़ी'।
**कुमही** *स्त्री०* बटुरी मटर।
**कुमारगी** *वि०* बुरे रास्ते पर चलने वाला।
**कुमैत** *पु०* लाल रंग का (घोड़ा)।
**कुम्ह** *पु०* टेढ़ा होने की स्थिति। *वि०* कुम्हऊ।
**कुम्हड़** *पु०* कुम्हड़े की जाति का एक श्वेताभ फल, भतुआ।
**कुम्हरौटी** *स्त्री०* काली मिट्टी, जिसका उपयोग कुम्हार बर्तन बनाने में करता है।
**कुम्हार** *पु०* बर्तन बनाने वाली एक जाति।
**कुम्हिलाइल** *अक०* मुरझाना, सूखने पर होना।
**कुम्ही** *स्त्री०* पानी पर फैलने वाला एक पौधा, जलकुम्भी।
**कुरंग** *वि०* बदरंग, बुरे रंग का।
**कुरकी** *स्त्री०* किसी अपराधी या कर्जदार से वसूलने के लिए उसके जायदाद को जब्त करने का कार्य।
**कुरकुट** *पु०* छोटा टुकड़ा; पुआल का भूसा।
**कुरबानी** *स्त्री०* बलिदान।
**कुरबुराइल** *अक०* नाखुशी या असहमति व्यक्त करने के लिए अस्पष्ट शब्दों में बोलना।
**कुरमी** *पु०* कुर्मी, एक जाति, जो घरेलू कार्य करती है।
**कुरवा** *पु०* मिट्टी का बर्तन, जो पानी पीने के काम आता है।
**कुरसा** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**कुरसी** *स्त्री०* काठ या लोहे का बना एक प्रकार का फर्नीचर, जिसका उपयोग बैठने में होता है। -**नामा** *पु०* वंशवृक्ष। -**दीहल** *मुहा०* आदर देना।
**कुरान** *पु०* [अ०] मुसलमानों का धर्मग्रन्थ।
**कुराह** *पु०* गलत रास्ता, कुपंथ।
**कुरी** *स्त्री०* [सं० कुल] जाति का उपभेद; ढेर, टीला।
**कुरीत** *स्त्री०* कुप्रथा; जिसकी ऋतु (मौसम) नहीं हो।
**कुरुई** *स्त्री०* डलिया, बाँस की तोली या मूँज से बनी छोटी डाली।
**कुरूप** *वि०* बदसूरत।
**कुरुरल** *अक०* पक्षियों का बोलना। *उदा०* 'मोरे रे अँगनवा चनन कर गछिया ताहि चढ़ि कुरुरय कागरे।' -विद्यापति
**कुरेदल** *सक०* खुरचना।
**कुरेभा** *स्त्री०* वह गाय, जो साल में दो बार बच्चा दे।
**कुरेर** *स्त्री०* किलोल, क्रीड़ा।
**कुरैल** *पु०* मछली पकड़ने का छः डण्डियों वाला जाल।
**कुलंजन** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसकी जड़ गर्म और उद्दीपक होती है, वह खाँसी की दवा है।
**कुल** *पु०* वंश। *कहा०* 'कुल आ कपड़ा रखला से रहेला'।
**कुलकन्या** *स्त्री०* [सं०] कुल की कन्या, कुलीन लड़की।
**कुलकुलाइल** *अक०* भूख से व्यग्र होना।
**कुलच्छन** *पु०* बुरा लक्षण। *स्त्री०* कुलच्छनी।
**कुल देवता** *पु०* परिवार का वह देवता, जिसकी परम्परा से पूजा होती आ रही हो।

**कुलफुत** *पु०* मानसिक व्यथा, कुलफित।
**कुलबुलाइल** *अक०* व्याकुल होना, चंचल होना।
**कुलरुआ** *वि०* उपेक्षित अनाहत।
**कुलवंती** *स्त्री०* कुल की मर्यादा की रक्षा करने वाली स्त्री।
**कुलबाँसी** *वि०* मुलायम गुठली का आम।
**कुलाँच** *पु०* कूदने का काम, दौड़।
**कुलि** *क्रि०वि०* सब, बिलकुल, कुल।
**कुलेल** *पु०* आमोद-प्रमोद, मनोविनोद।
**कुल्ला** *पु०* मुखशुद्धि के लिए मुँह में पानी लेकर फेंकने का काम।
**कुल्हम** *क्रि०वि०* सब, बिलकुल, कुल।
**कुल्हर** *पु०* मिट्टी का बर्तन। *स्त्री०* कुल्हिया।
**कुल्हा** *पु०* नितम्ब का पिछला भाग; अखुँवा, कली।
**कुल्ही** *वि०* पूरा, समस्त। *कहा०* 'कुल्ही घर जर गइल बुढ़िया कहे चेंथरा गन्हाता'।
**कुस** *पु०* एक प्रकार की घास, जिसका उपयोग यज्ञादि में होता है, कुश; सीता का पुत्र एवं लव का छोटा भाई।
**कुसगुन** *पु०* अपशकुन, वैसा लक्षण, जिससे बुरी स्थिति पैदा होने का आभास मिलता है।
**कुसपुतरा** *पु०* मृतक के अभाव में दाह-संस्कार के लिए कुश की बनाई मानवाकृति।
**कुसाइत** *पु०* बुरा मुहूर्त।
**कुसुम** *स्त्री०* एक प्रकार का पौधा, जिसके रंग में वस्त्र रँगा जाता है।
**कुसुमा** *पु०* पीने के लिए तैयार की हुई भाँग।
**कुस्ट** *पु०* कोढ़, कुष्ठ।
**कुस्ती** *स्त्री०* दो व्यक्तियों में एक-दूसरे को पटकने का प्रयास, कुश्ती, मल्ल युद्ध, एक प्रसिद्ध खेल।
**कुहनी** *स्त्री०* शरीर का एक अंग।
**कुहरा** *पु०* कुहासा।
**कुहल** *अक०* पूरी पिटाई करना, खूब पीटना।
**कुहकल-कुहुकल** *अक०* कोयल का कूकना; दुःखी होना, तीव्र दुःख का अनुभव करना।
**कूँचल** *सक०* कुचलना।
**कूँचा** *पु०* [सं० कूर्चम्] झाड़ू।
**कूँची** *स्त्री०* छोटी झाड़ू।
**कूँड़** *पु०* लोहे का गहरा बर्तन, जिससे सिचाई के लिए कुएँ से पानी निकालते है।
**कूँड़ा** *पु०* मिट्टी की हाँड़ी, मिट्टी का घड़ा।
**कूँड़ी** *स्त्री०* ढेर।
**कूचल** *अक०* थूरना, पीसना, पीटना।
**कूट** *पु०* मोटा कागज, जिसका व्यवहार पुस्तकों-कॉपियों की जिल्द में होता है; मजाक; छोटा-छोटा टुकड़ा।
**कूटल** *वि०* कूटा हुआ। *कहा०* 'कूटल दवाई आ मूड़ल बैरागी ना चिन्हाय।'
**कूटी** *स्त्री०* कूटने के लिए धान को देने की क्रिया।
**कूढ़ल** *अक०* रंज होना, भिड़ना।
**कूतल** *अक०* अनुमान लगाना।
**कूदल** *अक०* [सं० कुर्दनम्] फाँदना, उछलना। *कहा०* 'कूदल, फानल तूरतल तान से पावऽ सगरो सम्मान'।
**कूप** *पु०* गड्ढा, कुँआ।
**कूप्पा** *पु०* [सं० कूपकः] चमड़े का थैला, जिसमें तेल-घी रखा जाता है।
**कूबत** *स्त्री०* शक्ति, बल।
**कूल** *पु०* [सं०] तट, किनारा।
**कूलक** *पु०* [सं०] दूह, बाँबी।
**कूलपती** *स्त्री०* नदी।
**कूला** *पु०* छोटी नहर।

**कूली** *पु०* [तु०] बोझा ढोने वाला।
**केंचुली** *स्त्री०* वह पतला चमड़ा, जिसे पुराना साँप उतार कर फेंक देता है।
**केंड़वारी** *स्त्री०* फलों का नया बगीचा।
**केंड़ी** *स्त्री०* डण्डी मारने की क्रिया।
**केंवट** *पु०* नाव खेने वाली एक जाति।
**केंवटिन** *स्त्री०* केवट जाति की स्त्री।
**केंवाड़** *पु०* किवाड़, दरवाजा।
**केंवारी** *स्त्री०* [सं० कपाट] दरवाजे को बन्द करने का पल्ला या पट।
**केंहा-केंहा** *पु०* बच्चों के रोने की आवाज, अनु०।
**के** *सर्व०* कौन।
**केकई** *स्त्री०* [सं० कैकेयी] दशरथ की एक रानी, भरत की माँ।
**केकर** *सर्व०* [सं० कस्य] किसका। *कहा०* 'केकर खेती केकर गाय, कवन पापी हटाये गाय'।
**केकरा के** *सर्व०* किसको, किसका। *कहा०* 'केकरा कुले काई ना रहे'।
**केके** *सर्व०* किसको-किसको।
**केटली** *स्त्री०* [अं०] चाय बनाने का पात्र।
**केड़ी** *स्त्री०* पेट की त्रिबली; तौलने की विधि जिसमें कम वजन के सौदे को भी पूरा दिखला दिया जाता है।
**केतना** *सर्व०* [सं० कियत्] कितना अधिक, कितना। *कहा०* 'केतना तेल लगाईं, उनकर थाह न पाईं'।
**केथुआ** *सर्व०* क्या।
**केदली** *स्त्री०* [सं० कदली] केला। *कहा०* 'केदली कटले पर फरेला'।
**केनिओ** *क्रि०वि०* किसी ओर भी।
**केना** *पु०* एक प्रकार की घास।
**केने** *क्रि०वि०* किधर, किस ओर।
**केरवा** *वि०* केला के समान लम्बा (आम)।
**केम्हर** *क्रि०वि०* [सं० कुत्र] किस ओर।
**केर** *स्त्री०* केलि; सम्बन्धकारक का चिह्न। *उदा०* 'अगहन हे सखी अगर सोहावन, चहूँदिसि उपजेला धान हे। हंस चकेउआ राम केर करतु हैं, तइसे जग संसार हे॥'
**केरवानी** *स्त्री०* केले का बागीचा।
**केरा** *पु०* [सं० कदली] केला। *कहा०* 'केरा केंकरा बिच्छी बाँस, चारू अपने जमले नास'।
**केराय** *पु०* दे० 'केराव'।
**केराव** *पु०* [सं० कलाप] एक प्रकार का मटर।
**केवई** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**केवट** *पु०* मल्लाह।
**केवड़ा** *पु०* एक प्रकार का काँटेदार पौधा जिसमें सुगंधित फूल लगता है।
**केवल** *वि०* एकमात्र। *क्रि०वि०* सिर्फ।
**केबाँच** *पु०* ग्वारफली।
**केवाल** *स्त्री०* कड़ी मिट्टी, काली मिट्टी।
**केवाला** *पु०* [अ० कबाल] बैनामा, बिक्री का दस्तावेज।
**केवाही** *स्त्री०* एक प्रकार की ईख।
**केस** *पु०* [सं० केश] सिर के बाल। *कहा०* 'केस उपरले मुरदा हलुक।' [अं० केस] मुकदमा।
**केसउर** *पु०* एक प्रकार का सफेद कन्द जो खाने में मीठा लगता है।
**केसर** *पु०* [सं०] एक प्रकार का सुगन्धित मसाला जो कश्मीर में पाया जाता है।
**केसरबाटी** *स्त्री०* बेसन की एक मिठाई।
**केसी** *पु०* [सं० केस] बच्चों का वह बाल जो किसी तीर्थ-स्थान में काट कर देवता पर चढ़ाया जाता है; भुट्टे के ऊपर के केशों का गुच्छा।
**केसौड़ा** *पु०* नहछू।

**केहर** *क्रि०वि०* किधर, किस ओर।
**केहुनी** *स्त्री०* बाँहों के बीच की गाँठ, कोहनी। *सक०* केहुनिआवल।
**केहू** *सर्व०* (कोऽपि) कोई भी। *कहा०* 'केहू के मूअल हाथी, केहू के फूटल हांड़ी, तऽ कहलस कि करिये धन पर गरह बा।'
**कैंत** *पु०* [सं० कपित्थः] छोटे बेल सरीखा एक प्रकार का खट्टा फल।
**कैच** *पु०* बल्ला, शहतीर।
**कैद** *स्त्री०* कारावास, बन्धन, अवरोध। *वि०* कैदी।
**कैन** *पु०* बाँस की एक छरन, बेंत की कैन।
**कैरा** *पु०* सर्वांग श्वेत बैल।
**कैलास** *पु०* [सं०] शिवजी का निवास-स्थान, जो हिमालय पर स्थित है।
**कोंई** *स्त्री०* पेट के दोनों बगल का हिस्सा।
**कोकड़उर** *पु०* विवाह के अवसर पर वर पक्ष की ओर से कन्या पक्ष के पास भेजा गया चावल का चीनी मिला चूर्ण; केकड़े का बिल।
**कोंकड़ा** *पु०* [सं० कर्कटः] केंकड़ा। *कहा०* 'कोंकड़ा के बिआन कोंकड़वे खाला'।
**कोंकड़िआइल** *अक०* संकुचित हो जाना, वृद्धि रुक जाना (फसल)।
**कोंकिआइल** *अक०* कुत्ते के बच्चे का बोलना।
**कोंच** *पु०* महुआ के फूल का गुच्छा। *अक०* कोंचिआइल, कोंच लगाना।
**कोंचल** *सक०* [सं० कच] घुसेड़ना, ठूसना, घुसाना। *कहा०* 'कोंचि कोंचि के मन भर खाए सुन्नर रानी नाम बताए'।
**कोंचा** *पु०* स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो चून कर सामने बाँधा जाता है; नीबी।
**कोंचिला** *पु०* एक विषैला पौधा जिसका बीज दवा के काम में आता है।
**कोंढ़** *पु०* यकृत्।
**कोंढ़ली** *स्त्री०* पानी का एक प्रकार का पौधा जिसके डण्ठल से मौर बनता है।
**कोंढ़ी** *स्त्री०* अधखिला फूल, कली। *अक०* कोढ़िआइल।
**कोंपड़** *पु०* केले का फूल। बाँस की जड़ से निकला पौधा। बैल की सींग का ऊपरी भाग।
**कोंपला** *पु०* खिड़की और दरवाजे के बगल का हिस्सा।
**कोंय** *पु०* किसी के गिरने की आवाज (अनु०)।
**कोंहड़उरी** *स्त्री०* उड़द की पीसी दाल में कुम्हड़े का टुकड़ा डाल कर बनायी गयी बटी।
**कोंहड़ा** *पु०* [सं० कुष्मांड] एक प्रकार की लता जिसका फल सब्जी के काम में आता है।
**कोंहार** दे० 'कुम्हार'।
**कोआ** *पु०* रेशम के कीड़े द्वारा बनाया गया मोटा आवरण जिसमें उसका अण्डा रहता है; कटहल का पका गूदेदार फल।
**कोइँआ** *स्त्री०* अशोक का बीज।
**कोइन** *पु०* [सं० कोशिन] महुए का बीज; अधपका बाँस; करमी; कोइन्दा।
**कोइना** *पु०* महुए का पका फल और बीज।
**कोइया** *पु०* बखार में रखे अनाज को खाने वाला एक कीड़ा।
**कोइरी** *पु०* हिन्दुओं की एक जाति जिसका मुख्य व्यवसाय सब्जी की खेती है। *कहा०* 'कोइरी के लरिका करम के हीन खुरपी लेके मोथा बीन'। *स्त्री०* कोइरिन।

**कोइल** *पु०* काले कानों वाला (बैल)।

**कोइल** *स्त्री०* (कोकिला) काले रंग की एक चिड़िया जिसकी कूक की बड़ी चर्चा होती है।

**कोइलखो** *पु०* गोरखुल।

**कोइलर** *स्त्री०* कोयल।

**कोइलाइल** *वि०* अधजली लकड़ी।

**कोइला झोकवा** *पु०* रेल के इंजन में कोयला डालने वाला।

**कोइला माता** *स्त्री०* कुँए की अधिष्ठात्री देवी।

**कोइली** *स्त्री०* गाय और भैंस की योनि का भीतरी भाग; धान का एक रोग।

**कोइलाही** *स्त्री०* विधवा स्त्री का द्योतक शब्द, जिसका उपयोग स्त्रियाँ गाली में करती हैं।

**कोकई** *स्त्री०* लोहे की छोटी काँटी।

**कोकच** *पु०* मवेशियों का खुला मुख।

**कोकटी** *स्त्री०* एक प्रकार का विशेष रंग वाला वस्त्र, जिसका अधिक प्रचलन मिथिला में है; फीका गेरुआ रंग; कपास की एक जाति।

**कोका** *पु०* कल्पित जन्तु जिसका नाम लेकर बच्चों को डराया जाता है।

**कोकिल** *पु०* [सं०] कोयल। **-कंठी** *वि०* कोयल के से गले वाली। **-नयन** *पु०* कोकिलाक्ष।

**कोकिला** *स्त्री०* [सं० कोकिल:] कोयल।

**कोकी** *स्त्री०* [सं०] मादा चकवा।

**कोकीन** *पु०* कोकेन, नशाबाज।

**कोको** *स्त्री०* कौआ।

**कोख** *स्त्री०* पचखी।

**कोखवटल** *अक०* कोख में मारना।

**कोजागरा** *पु०* आश्विन पूर्णिमा को जगकर बिताया जाने वाला उत्सव।

**कोट** *पु०* [सं० कोटि:] अनेक, ढेर, कड़ारे। अंग्रेजी ढंग का पहनावा विशेष।

**कोटा** *पु०* किसी वस्तु का नियमानुसार निश्चित हिस्सा।

**कोटी** *स्त्री०* [सं० कोटि: ] अनेक, बहुत।

**कोठ** *वि०* [सं० कुण्ठ] किसी खट्टी वस्तु के खाने के बाद दाँत की स्थिति।

**कोठरी** *स्त्री०* [सं०] मकान का छोटा कमरा।

**कोठवाली** *स्त्री०* कैथी लिपिका वह रूप जिसका प्रयोग बनिया अपना बही खाता लिखने में करते हैं।

**कोठा** *पु०* घर के ऊपर का खण्ड।

**कोठा-अटारी** *पु०* [अ० इमारत] ऊँचा-महल, विशाल मकान।

**कोठा डूमर** *पु०* एक प्रकार का जंगली गूलर जो अस्पृश्य माना जाता है।

**कोठार** *पु०* अन्न या दूसरे खाद्य पदार्थ को रखने की जगह, भण्डार-गृह।

**कोठिला** *पु०* अन्न रखने के लिए बनी छोटी कोठरी।

**कोठी** *स्त्री०* अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन, डेहरी; बड़े पदाधिकारियों का बंगला; बाँस के पौधों का एक समूह।

**कोड़ल** *सक०* मिट्टी को गहराई तक खोदना, कोड़ना।

**कोड़नी** *स्त्री०* कोड़ने का भाव या क्रिया।

**कोड़ा** *पु०* [सं० क्रोड:] डण्डे के टुकड़े में बँधी बँटे हुए सूत या चमड़े की डोरी जो घुड़सवारी में काम आती है। चाबुक।

**कोड़ार** *पु०* घर के निकट का खेत जिसे कोड़ कर साग-सब्जी की खेती की जाती है, कोला-बारी।

**कोड़िया** *स्त्री०* गोड़ाई।

**कोड़ी** *वि०* [अं० स्कोर] बीस की संख्या के लिए प्रयुक्त शब्द।

**कोढ़ा** *पु०* मकई की बड़ी बाल; आभूषण को गूँथने के लिए उसके ऊपर बना छेद।

**कोढ़ि** *पु०* कली।

**कोढ़िआइल** *वि०* वह पौधा, जिसमें कली आ गयी हो।

**कोढ़िया** *स्त्री०* कोइली।

**कोतगरदनिया** *वि०* ऐसा व्यक्ति, जिसकी गर्दन छोटी हो।

**कोतनयना** *वि०* ऐसा बैल, जिसकी आँखें लाल और भीतर धँसी हो।

**कोतरा** *पु०* एक चौड़ी तथा छोटी मछली। *स्त्री०* कोतरी।

**कोतल** *पु०* [फा०] ऐसा घोड़ा, जिसका साज-सिंगार तो होता है पर कोई चढ़ता नहीं है।

**कोतवाल** *पु०* पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी, गृह रक्षक।

**कोताह** *वि०* [फा०] छोटा, अल्प। *स्त्री०* कोताही, कमी।

**कोथाह** *पु०* नलकी, बाजरे का बाल निकलने का स्थान।

**कोदई** *स्त्री०* छोटे दाने वाली कोदो। एक भदई फसल।

**कोदवार** *पु०* धान के पौधों जैसी कोदो की जाति की एक घास।

**कोदार** *पु०* [सं० कुदाल] लोहे का बना खेत कोड़ने का औजार, कुदाल।

**कोदो** *पु०* [सं० कदन्नम्] एक प्रकार का घटिया अनाज, एक भदई फसल। *कहा०* 'कोदो के भात भईस के माठा। गारा लागे सरहज मारे ठाठा॥'

**कोनघुसरा** *वि०* घर के अन्दर रहने की प्रवृत्ति वाला (बालक)।

**कोनघर** *पु०* वह घर, जो किसी कोने में स्थित हो।

**कोनचर** *पु०* वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिलती हैं।

**कोनसिला** *पु०* कोनिया।

**कोनहरा** *क्रि०वि०* कोने में।

**कोना** *पु०* कोण, नोक, नोकीला किनारा। *वि०* कोनाह।

**कोना-कोनी** *क्रि०वि०* एक कोण से दूसरे कोण तक।

**कोनिया** *वि०* दो पाखों का जोड़।

**कोन्हरी** *वि०* कोना।

**कोन्ही** *स्त्री०* खेत का कोना; सिर के बाल बनाने की वह विधि, जिसमें बाल के निकट कोण बन जाता है।

**कोपनाइल** *अक०* दुधारू मवेशी के थन से दूध का सटक जाना।

**कोपल** *पु०* किसलय। *अक०* [सं० कोप] कुपित होना।

**कोपीन** *पु०* [सं० कौपिन] लंगोटी।

**कोबी** *स्त्री०* एक प्रकार की सब्जी, गोभी।

**कोमल** *वि०* मुलायम, सुकुमार, सुन्दर।

**कोय** *सर्व०* कोई, कौन। *कहा०* 'कोय घर कानन, कोय घर गीत, देखऽ रे दुनिया के रीत।'

**कोयल** *स्त्री०* कोकिल।

**कोयला** *पु०* पूरी तरह न जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अवशेष। *कहा०* 'कोयला के दलाली, हाथे लागी काली।'

**कोया** *पु०* पके कटहल का बीजकोष।

**कोंरजा** *पु०* रसोई के अतिरिक्त अन्य प्रकार का भोज्य पदार्थ यथा दही-चिउड़ा, पूड़ी-मिठाई; वह मजदूर जिसे मजदूरी में नकद रुपये दिये जाते हैं।

**कोर** *पु०* किनारा, छोर; कपड़े का धारीदार किनारा।

**कोरइ** *स्त्री०* वह ढाँचा, जिस पर लता चढ़ाई जाती है।

**कोरइला** *वि०* गोद में लेने योग्य छोटा बालक।

**कोरबास** *पु०* दो साँचों के बीच का अन्तर।

**कोरवर** *वि०* यथावत्, बिना किसी हेर-फेर के; बिना कुछ खाए हुए।

**कोररी** *स्त्री०* [सं० क्रोधी] दुःखी, व्यथित।

**कोरा** *वि०* नया, अप्रयुक्त वस्त्र या बर्तन; गोद, अंक। *कहा०* 'कोरा में बबुआ नगर में ढिंढोरा,' 'कोरा कागज था ये मन मेरा।'

**कोरो** *पु०* खपरैल या फूस के मकान की छजनी में प्रयुक्त लकड़ी।

**कोला** *पु०* बेढ़ा।

**कोल्हू** *पु०* एक यंत्र जिससे ईख या तेलहन पेरा जाता है। *कहा०* 'कोल्हू से उठली भुसौले में आग लगवली।'

**कोश** *पु०* [सं०] अण्डा; खजाना; शब्द-कोश। **-कार** *पु०* शब्दकोश बनाने वाला।

**कोशिश** *स्त्री०* [फा०] श्रम; उद्योग।

**कोष** *पु०* दे० 'कोश'।

**कोषागार** *पु०* [सं०] खजाना, ट्रेज़री।

**कोस** *पु०* दूरी की नाप, लगभग दो मील।

**कोसल** *सक०* निन्दा करना।

**कोसा** *पु०* मिट्टी का चौड़े-फैले मुँहवाले दीया जैसा पात्र।

**कोसाखोलाई** *स्त्री०* कोसा खोलने की विधि।

**कोसिया** *पु०* छठ व्रत की एक विधि।

**कोसिला** *स्त्री०* [सं० कौशल्या] राम की माता; संयुक्त परिवार में व्यक्ति विशेष की निजी सम्पत्ति।

**कोसिस** *स्त्री०* [फा०] प्रयास, प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश।

**कोहनाइल** *अक०* [सं० क्रोध] रूठना, नाराज होकर नहीं बोलना, अप्रसन्न होना।

**कोहबर** *पु०* वह घर जहाँ वर-वधू प्रथम मिलते हैं, कुल देवता पूजते हैं।

**कोहा** *पु०* मिट्टी का छोटा बर्तन।

**कोहाइल** *अक०* रूठना, क्रुद्ध होना।

**कोहारगिरी** *वि०* कुम्हारगिरी।

**कौंध** *पु०* चमक।

**कौआ** *पु०* कॉव-कॉव करने वाला एक काले रंग का पक्षी, कौवा।

**कौआइल** *अक०* चकपकाना, बड़बड़ाना।

**कौड़ी** *स्त्री०* घोंघा, शंख के वर्ण का कीड़ा। **-का मोल** *मुहा०* बहुत सस्ता।

**कौर** *पु०* एक बार मुँह में डाला जाने वाला भोजन। *कहा०* 'कौरे कौरे पेट बढ़े, छौए छौए खेत।'

**कौरा** *पु०* चौखट के दायें-बाँयें बाजू।

**कौरी** *स्त्री०* अंक, गोद।

**कौरो** *पु०* [सं०] कौरव।

**कौवा** *पु०* [सं० काकः] कौआ। *कहा०* 'कौवा रे कक्का, आम दे पक्का।'

**कौवाल** *पु०* [अ०] कौवाली गाने वाला; गवैया।

**कौशल** *पु०* [सं०] दक्षता, कुशलता।

**कौसल्या** *स्त्री०* राम की माता।

**क्या** *सर्व०* प्रश्नवाचक सर्वनाम।

**क्यों** *अव्य०* किस लिए।

**क्रम** *पु०* सिलसिला; नियमित व्यवस्था।

**क्रमांक** *पु०* [सं०] क्रम संख्या।

**क्रिया** *स्त्री०* कुछ किया जाना; काम करने की विधि; रचना।

**क्रीडा** *स्त्री०* [सं०] खेल-कूद।

**क्रूर** *वि०* [सं०] निर्दय, अप्रिय।

**क्रोध** *पु०* [सं०] कोप, गुस्सा।

**क्लब** *पु०* [अं०] मनबहलाव हेतु आयोजन के लिए स्थापित समिति।

**क्लर्क** *पु०* [अं०] लिखने वाला कर्मचारी, मुंशी, किरानी।

**क्लास** *पु०* [अं०] श्रेणी; कक्षा। **-टीचर** *पु०* दरजे का मुख्य अध्यापक।
**क्लिप** *स्त्री०* [अं०] चिमटी।
**क्वार** *पु०* आश्विन मास।
**क्वार्टर** *पु०* [अं०] चौथाई; आवास।
**क्ष** 'क' और 'ष' से बना संयुक्त अक्षर। *पु०* [सं०] खेत; किसान; बिजली।
**क्षण** *पु०* [सं०] छन, लमहा। **-भंगुर** *वि०* क्षण भर में मिट जाने वाला।
**क्षत्र** *पु०* [सं०] क्षत्रिय; योद्धा।
**क्षमा** *स्त्री०* [सं०] माफी, सहने की प्रवृत्ति।
**क्षात्र** *वि०* [सं०] क्षत्रिय सम्बन्धी।
**क्षार** *पु०* [सं०] खार; नमक; शोरा।
**क्षिति** *स्त्री०* [सं०] पृथ्वी।
**क्षीर** *पु०* [सं०] दूध।
**क्षुद्र** *वि०* [सं०] छोटा, खोटा; नीच।
**क्षुधा** *स्त्री०* [सं०] भूख।
**क्षेत्र** *पु०* [सं०] खेत; जमीन; स्थान।
**क्षेम** *पु०* [सं०] कुशल, मंगल।
**क्षोभ** *पु०* [सं०] हलचल, खलबली; रोष।
**क्षौर** *पु०* [सं०] हजामत। **-कर्म** *पु०* हजामत बनाना।
**क्षौरिक** *पु०* [सं०] नाई।

❑

# ख

**ख** पु० देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। आकाश, ब्रह्म

**खँइचि** *स्त्री०* बाँस वगैरह के अत्यन्त महीन रेशे जो शरीर में गड़ जाते हैं।

**खँइची** *स्त्री०* छोटी टोकरी।

**खँइन-खोंग** *पु०* काठ, बाँस या घास का वह पतला टुकड़ा जो काँटे की तरह चुभ जाता है।

**खंकर** *पु०* [सं०] लट, अलक।

**खंख** *वि०* छूँछा, खाली, रिक्त।

**खंखड़** *पु०* खाली जगह, गढ़ा।

**खँखड़ल** *पु०* उजड़ा हुआ, वीरान।

**खंखड़ी** *स्त्री०* बिना दाना के अन्न।

**खंखणा** *स्त्री०* घण्टी की ध्वनि।

**खंखर** *वि०* उजड़ा हुआ।

**खंखरी** *स्त्री०* दे० 'खंखड़ी'।

**खँखार** *पु०* कफयुक्त गाढ़ा थूक, श्लेष्मा। *सक०* खँखारल।

**खँखोरनी** *स्त्री०* एक प्रकार का औजार जिसके सहारे खेत की जमी पपड़ी को तोड़ा जाता है। *सक०* खखोरल।

**खँखोरी** *स्त्री०* खँखोरने से प्राप्त दूध या दही का अंश; खुरचन।

**खंगड़** *वि०* अक्खड़, उजड्ड।

**खंगालल** *सक०* [सं० झालनं] मजे बर्तन को फिर से धोना; सबकुछ उठा ले जाना, साफ कर देना।

**खंघारल** *सक०* दे० खंगालल।

**खँचल** *अक०* खचना।

**खँचड़ाल-खँचोड़** *वि०* बदचाल, बदमाश।

**खँचड़पेल** *वि०* परले सिरे का बदमाश, हरामी।

**खंचिया** *स्त्री०* छोटी टोकरी।

**खँचोली** *स्त्री०* भूसा आदि रखने का पात्र।

**खंज** *वि०* [सं०] लँगड़ा।

**खँजड़ाह** *वि०* वह अनाज जिसमें मिलावट हो।

**खँजड़ी** *स्त्री०* काठ या धातु के बने मंडलाकृति पात्र पर चमड़ा बढ़ने से बना एक छोटा वाद्य-यंत्र; डफली।

**खँड़** *पु०* [सं० खण्डम्] भाग, टुकड़ा, मकान की एक मंजिल।

**खँड़चर** *पु०* अवलम्ब, खम्भा।

**खँड़तर** *पु०* चटाई का टूटा हिस्सा।

**खँड़रा** *पु०* चावल के आटे का व्यंजन।

**खँड़ल** *सक०* काटना; वाद-विवाद में विपक्ष में तर्क करना।

**खँड़हर** *पु०* ध्वस्त मकान।

**खँड़ाऊँ** *पु०* खड़ाऊँ, काठ का चप्पल।

**खँड़िया** *पु०* एक प्रकार का हथियार जो काटने के काम आता है; एक प्रकार की सफेद मिट्टी।

**खँड़ी** *स्त्री०* घिरा स्थान।

**खँतरा** *पु०* दरार, अंतरा, कोना।

**खँता** *पु०* मिट्टी काटने से बना गड्ढा। वह गड्ढा जिसमें से कुम्हार मिट्टी लेते हैं।

**खंती** *स्त्री०* मिट्टी खोदने का एक औजार।

**खंदेल** *वि०* गड्ढेदार कन्धेवाली (भैंस)।

**खंधक** *पु०* खाई, बड़ा गढ़ा।

**खंभ** *पु०* स्तम्भ।

**खंभा** *पु०* दे० 'खंभ'।

**खंभिया** *स्त्री०* बाँस, ठेघनी।

**खँसल** *अक०* खोंसना।

**खँसिआ** *पु०* मिर्च, प्याज, नमक, मसाला आदि डाल कर तैयार किया गया भूँजा।

**खँसी-खस्सी** *पु०* [अ०] बकरी का नर बच्चा।

**खंहारल** *सक०* अधिक साफ करने के लिए पानी से हल्के रूप में धोना, मांजे हुए बर्तन को पानी से धोना।

**ख** *पु०* [सं०] शून्य स्थान, आकाश, शून्य, स्वर्ग। **-ग** *पु०* पक्षी, सूर्य, ग्रह। **-गोल** *पु०* आकाशमण्डल। **-ग्रास** *वि०* सर्वग्रास (ग्रहण)। **-विद्या** *स्त्री०* ज्योतिष शास्त्र।

**खइन-पइन** *पु०* भेद, रहस्य, गुप्त कार्य।

**खइनी** *स्त्री०* तम्बाकू की वह जाति, जिसमें चूना रगड़कर खाया जाता है, सुरती।

**खइहन** *पु०* वह अन्न जो खाने के लिए रखा गया हो।

**खइरी** *स्त्री०* परवल आदि सब्जी के छिलके के ऊपर की रूसी।

**खउकार** *वि०* घूस खाने वाला।

**खउफिआ** *वि०* छिपकर भेद का पता लगाने वाला।

**खउर** *पु०* दसगात्र के दिन की हजामत।

**खउरल** *सक०* किसी वस्तु को उलट-पुलट करना; सिर के बाल को छूरे आदि से मूड़ना। *लोक०* 'खउर ले बिना भेंड़ बिगड़ल बाड़ी।'

**खउरा** *पु०* कुत्ते की एक प्रकार की बीमारी जिसमें उसके बाल झड़ जाते हैं; खौरा।

**खउरा-खपटा** *पु०* झगड़ा।

**खउराह** *वि०* चीजों को तोड़ने वाला, नष्ट करने वाला।

**खउलल** *अक०* उबलना, गर्म करते समय खौलना।

**खउसिया** *पु०* थारुओं की एक उपजाति।

**खउसी** *स्त्री०* खुजली।

**खकचोदा** *वि०* नीच व्यक्ति (गाली)।

**खकचोदी** *स्त्री०* नीच के साथ गमन करने वाली स्त्री (गाली)।

**खकहा** *पु०* बुरा व्यक्ति। *उदा०* 'खकहा समधिया के काहे ना गरिआई जी'

-लोकगीत

**खकही** *वि०* निम्न स्तरीय, घटिया।

**खखँड़ा** *पु०* अन्न का वह दाना, जिसमें केवल छिलका हो।

**खखड़ी** *स्त्री०* फसलों का एक रोग।

**खखनल** *अक०* तरसना, आतुर होना।

**खखाइल-खखनल** *अक०* खाने में अतृप्त रहना, खाने की प्रबल इच्छा होना, तरसना।

**खखुआइल** *अक०* तरसना, आतुर होना।

**खखोरन** *पु०* कुरचन, मिट्टी के बर्तन या कड़ाही से खुरचा हुआ पदार्थ।

**खखोरल** *सक०* खुरचना।

**खग** *पु०* चिड़िया। *उदा०* 'खग जाने खगही के भाषा।'

**खगड़ा** *पु०* ताड़ का पत्ता, एक घास। *उदा०* 'अकलँड़ कनिया, बकलँड़ बर, खगड़ा बिछौना खड़-खड़ कर' -लोकगीत

**खगवट** *पु०* खेत का वह किनारा, जो बोते समय बाकी रह जाता है।

**खच-खच** *यौ०* *अनु०* पानी या भींगी और मुलायम वस्तु पर आघात करने से उत्पन्न शब्द; खचाखच *क्रि०वि०* निरन्तर।

**खचरा** *वि०* नीच।

**खचल** *अक०* जड़ा जाना, अंकित होना।

**खचोल** *पु०* भूसा रखने के लिए बाँस या रहेठे की छोटी टोकरी।

**खच्चर** *पु०* गधे और घोड़े की जाति का एक पशु जो इन दोनों के समागम से पैदा होता है।

**खजानची** *पु०* खजाने का प्रभारी, कोषाध्यक्ष।

**खजाना** *पु०* कोषागार, वह स्थान जहाँ द्रव्य संग्रह हो, राजस्व, ढेर।

**खजार** *पु०* परम्परागत भोजन; जूठा; ताड़ी इत्यादि निकृष्ट भोज्य पदार्थ।

**खजूरबन्ना** *पु०* खजूर के पेड़ों से भरी भूमि।

**खजुरिया** *स्त्री०* खाट की एक प्रकार की बुनाई।

**खजुरल** *सक०* पॉलिस करने के पूर्व खरोंज कर साफ करना।

**खजुला** *पु०* खाजा, एक मिठाई।

**खजुली** *स्त्री०* खुजली; छोटा खाजा।

**खजुवावल** *सक०* खुजलाना।

**खजूर** *पु०* एक प्रकार का ताड़ की जाति का पेड़ और उसका फल; मइनदार आँटे से तैयार की गयी मिठाई।

**खजूरी** *वि०* खजूर, खजूर के पत्ते के आकार का।

**खजोहरा** *पु०* एक प्रकार का रोएँदार कीड़ा जिसके स्पर्श से खुजली होती है।

**खट** *स्त्री०* दो चीजों के टकराने की ध्वनि, खाट का समास रूप। **-कीड़ा** *पु०* खटमल। **-खट** *स्त्री०* 'खट-खट' की आवाज, किचकिच। **-पट** *स्त्री०* 'खट-खट' की आवाज, अनबन, झगड़ा। **-पटिया** *वि०* झगड़ालू, उपद्रवी, चट्टी। **-खट से** *क्रि०वि०* जल्दी से।

**खट** *वि०* खट्टा।

**खटउर** *पु०* खाट की बनी हुई और पुआल से ढँकी हुई झोपड़ी।

**खटकनी** *पु०* खूँटे से लड़ने वाली (भैंस)।

**खटकरम** *वि०* शास्त्रों में वर्णित ब्राह्मणों की छह क्रियाएँ; झमेला।

**खटकल** *अक०* बुरा लगना, खलना, विरोध होना।

**खटका** *पु०* आशंका, चिन्ता।

**खटकिरवा** *पु०* खटमल।

**खटखटा** *पु०* बछड़े के गले में डाला गया डण्डा।

**खटखटावल** *सक०* खटखटाना।

**खटतुरुस** *वि०* स्वाद में किंचित् खट्टा।

**खटपरू** *वि०* रोगग्रस्त।

**खटवांगर** *वि०* ऊटपटाँग काम करने वाला व्यक्ति।

**खटमिट्ठी** *स्त्री०* ऐसा अँचार जो स्वाद में खट्टा और मीठा दोनों हो।

**खटरस** *पु०* जो स्वाद में खट्टापन लिये हो; विभिन्न स्वाद वाला पदार्थ।

**खटल** *अक०* परिश्रमपूर्वक किसी काम को करना।

**खटवसल** *अक०* बीमार पड़ना।

**खटवाँस-पटवाँस** *पु० यौ०* कुपित होकर लेटे रहने की स्थिति।

**खटहट** *वि०* आकार में छोटा और वजन में हल्का।

**खटहवा** *वि०* जो स्वाद में खट्टा हो।

**खटाई** *स्त्री०* खट्टापन; खट्टी वस्तु; नोनचा, अमचुर।

**खटाक** *पु०* गिरने का खट शब्द; किसी काम के शीघ्रतापूर्वक करने का भास। *क्रि०वि०* खटा-खट।

**खटाल** *पु०* जहाँ दुधारु पशुओं का झुण्ड रहता है।

**खटावल** *सक०* किसी से परिश्रम का काम कराना, लगातार काम कराते रहना।

**खटिआ** *पु०* छोटी खाट, खटोला, एक प्रकार की पालकी। *स्त्री०* खटोली। **-तूरल** *मुहा०* आराम करना। **-धइल** *मुहा०* बीमार पड़ना।

**खटिक** *पु०* साग-सब्जी बेचकर जीविका चलाने वाली एक जाति।
**खटिका** *स्त्री०* [सं०] खड़िया मिट्टी।
**खटिनी** *स्त्री०* [सं०] खड़िया मिट्टी।
**खटिया** *स्त्री०* छोटी चारपाई।
**खटीक** *पु०* [सं० खट्टिकः] दे० खटिक।
**खटोलना** *पु०* खटोला।
**खटोला** *पु०* छोटी खाट।
**खटोली** *स्त्री०* छोटा खटोला।
**खट्टा** *वि०* [हिं०] जिसमें खटास हो, अम्ल। **-चूक** *वि०* बहुत खट्टा। **-खाइल** *मुहा०* नीचा दिखना।
**खट्टी** *स्त्री०* नारंगी, गागल।
**खड़ंजा** *पु०* ईटों की खड़ी जोड़ाई।
**खड़उल** *स्त्री०* वह भूमि, जहाँ कुश, राढ़ी, घास पैदा होती है; खुद्दी।
**खड़-खड़** *यौ०* कड़ी वस्तु के टकराने या संघर्ष से निकला शब्द।
**खड़खड़ाइल** *अक०* आवाज होना।
**खड़खड़िया** *स्त्री०* काठ की बनी एक प्रकार की डोली, पालकी।
**खड़ग** *पु०* गैंड़े का सींग; एक प्रकार की तलवार, पशुओं की बलि देने का खाँड़ा।
**खड़तरोई** *स्त्री०* मोटे छिलके वाली एक प्रकार की तरोई।
**खड़बड़-खड़भर** *यौ०* ऊभड़-खाभड़, खलबल; उलट-फेर, हलचल।
**खड़बड़ाहल** *अक०* अस्त व्यस्त होना; खड़बड़ की आवाज होना।
**खड़बिड़ाह** *वि०* ऊँची-नीची, समतल नहीं।
**खड़मंडल** *पु०* [सं० खण्ड+मण्डल] गड़बड़-घोटाला। *वि०* उलट-पुलट।
**खड़हार** *वि०* बिल्कुल खड़ा, ऊँचा (बाँध आदि)।
**खड़ा** *वि०* ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ, तना हुआ।
**खड़ाऊँ** *स्त्री०* काठ की बनी खूंटीदार पादुका, चरण-पादुका।
**खड़ा-खड़ी** *क्रि०वि०* तुरन्त, शीघ्र, अविलम्ब।
**खड़िया** *वि०* स्थिति में। *अक०* खड़िआइल, खड़ा रहना।
**खड़ी** *स्त्री०* पालक की एक जाति।
**खड़ुआ** *पु०* पैर का एक आभूषण।
**खड़ुका** *पु०* रबी के खेत में उगने वाली एक प्रकार की घास।
**खड्ढा** *पु०* हेंगा में ढेलों को चूर करने के लिए बनाया गया गड्ढा, गड्ढा।
**खड्ढी** *स्त्री०* हल के जूए के ऊपरी भाग में बना छेद जिसमें रस्सी लगाकर बैल जोता जाता है।
**खत** *पु०* [अ०] चिट्ठी, पत्र; कनपट्टी के निकट के बाल को छुरे से काटने की स्थिति।
**खतइत** *पु०* खत पहुँचाने वाला।
**खतकस** *पु०* रेघारी लगाने का एक औजार (सूत)।
**खतना** *पु०* [अ०] मुस्लिम बच्चों के लिंग के अगले भाग की त्वचा काट देने की रस्म, सुन्नत।
**खतम** *वि०* [अ० खत्म] पूर्ण, समाप्त।
**खतरा** *पु०* अनिष्ट की आशंका, जोखिम, भय।
**खतरी** *पु०* एक क्षत्रिय वर्ण की जाति।
**खतल** *सक०* काठ पर किसी तेज हथियार से खरोच कर नक्काशी करना।
**खतहवा झिंगनी** *स्त्री०* एक प्रकार की तरकारी।
**खता** *स्त्री०* [अ०] चूक, दोष। **-कार** *पु०* गलती करने वाला। **-भइल** *मुहा०* कसूर होना।

**खतिआइल** *अक०* समाप्त होना, समाप्ति पर आना; लिख देना।
**खतिआन** *पु०* वह कागज, जिसमें रैयत के प्रत्येक खेत का खाता और खसरा नम्बर होता है; शासन द्वारा तैयार किया गया भूमि का विवरण।
**खतिआवल** *सक०* लेखा-जोखा या विवरण तैयार करना।
**खत्ती** *स्त्री०* बखारी।
**खन्ती** *स्त्री०* जमीन खोदने का एक औजार।
**खत्रा** *पु०* मेंड़; गहरा खेत।
**खत्री** *पु०* हिन्दुओं की एक जाति।
**खदंमर** *वि०* स्वभाव एवं शरीर से गंदा रहने वाला व्यक्ति।
**खदकल** *अक०* तरल पदार्थ का खौलना।
**खदका** *पु०* नींबू की फाक पर गोल मिर्च का चूर्ण एवं नमक रख कर आग पर गर्म की गयी औषधि।
**खदगौर** *पु०* जिसमें पर्याप्त खाद हो, खदौर।
**खद्दड़** *पु०* खूब खाकर भी काम न करने वाला।
**खदबद** *पु०* उबलने से उत्पन्न आवाज, हलचल अनु०।
**खदर-खदर** *क्रि०वि०* अधिक मात्रा में।
**खदर-बदर** *यौ०* किसी स्थान पर एकत्रित कीड़ों की अधिकता।
**खदरल** *अक०* मादा पशुओं की योनि से गन्दे स्राव का निकलना; पानी के बहाव से मिट्टी का कटना।
**खदहा** *पु०* वह गढा जहाँ कूड़ा-कर्कट गोबर आदि रखा जाता है। *सक०* खदिआवल।
**खदी-बदी** *स्त्री०* *यौ०* गलत-सही, अच्छा-बुरा, व्यवहार।
**खदुकई** *स्त्री०* ऋण व्यवसाय।
**खदुका** *पु०* कर्जखोर, बाकी खाने वाला व्यक्ति।
**खदेरल** *सक०* खदेड़ना, दूर भगाना।
**खदैया** *पु०* खाद रखने का छोटा गड्ढा।
**खदोना** *पु०* पत्ते की बनी छोटी टोकरी।
**खदोर** *वि०* पेटू, अधिक खानेवाला।
**खदौड़** *पु०* वह खेत, जिसमें बहुत अधिक खाद पड़ी हो।
**खधगर** *वि०* दुधारू, अधिक दूध देने वाली (मवेशी)।
**खधरल** *अक०* किसी पशु के गर्भाधान होने के पश्चात् उसके शरीर से मैल का निकलना; पानी से मिट्टी का कटाव।
**खधुक** दे० 'खदुका', कर्ज खाने वाला।
**खधेल** *पु०* पशुओं के खाने के बाद बची हुई घास।
**खधोर** *वि०* बहुत खाने वाला; गँदला।
**खधोरल** *सक०* पानी की धारा से मिट्टी का कटाव।
**खन** *पु०* [सं० क्षणम्] समय; शारीरिक गठन, सुन्दरता। *उदा०* 'खन रे बाहर खन भीतर, खन गजओबर' -लोकगीत। *वि०* खनगर।
**खनक** *स्त्री०* खनकने की क्रिया, आवाज।
**खनकल** *अक०* 'खन-खन' की ध्वनि उत्पन्न करना; खनकना।
**खनजीर** *पु०* ईंट या पत्थर का बना कुँए का गोल घेरा।
**खनतलासी** *स्त्री०* चोरी की गई वस्तु के लिए संदिग्ध व्यक्ति के घर की तलाशी।
**खनल** *सक०* खोदना, खनना (गढ़ा)।
**खनसारी** *स्त्री०* मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल।
**खनसुमारी** *स्त्री०* [फा०] जनगणना।
**खनहन** *पु०* हल्का; तेज, चंचल, फुर्तीला।

**खनाइल** *सक०* खोदा जाना।
**खनिता** *पु०* [सं०] खोदने वाला।
**खनेखराब** *पु०* बिल्कुल नष्ट, बर्बाद।
**खपच** *स्त्री०* बाँस का टुकड़ा, फाँस।
**खपचल** *सक०* नुकीली वस्तु से आघात करना।
**खपचार-खपाची** *स्त्री०* बाँस या लोहे की छोटी तीली जो शरीर में चुभ जाती हो।
**खपटा** *पु०* खपड़े का बड़ा टुकड़ा।
**खपड़इल** *वि०* खपड़ों से छाया हुआ घर।
**खपड़घर** *पु०* वह मकान, जिसकी छत खपड़े से छाई गई हो।
**खपड़ा** *पु०* [सं० खर्पर:] मिट्टी के पके बर्तन या घर छाने के उपादान का टुकड़ा।
**खपड़ोइआ** *पु०* बेल, नारियल आदि का छिलका; गड़रा।
**खपत** *स्त्री०* खर्च; बिक्री, खपने का भाव।
**खपरी** *स्त्री०* मिट्टी की हाँडी, जो अन्न भूनने के काम आती है।
**खपल** *अक०* समाप्त होना; किसी वस्तु का दूसरे वस्तु से मिलकर एक होना; काम में लाना। *सक०* खपावल।
**खपसूरत** *वि०* सुन्दर, रूपवान, खूबसूरत।
**खपाच** *स्त्री०* 'खपची', रेशम बुनने वालों का एक औजार।
**खपाची** *स्त्री०* दे० 'खपाच'।
**खपावल** *सक०* खतम कर देना; बेचना; खपाना।
**खप्पर** *पु०* मिट्टी का बड़ा छिछला बर्तन।
**खफ्त** *वि०* [अ०] विमूढ़, विवेकशून्य।
**खफा** *वि०* [अ०] नाराज, अप्रसन्न; क्रुद्ध, रुष्ट।
**खफीक** *वि०* [अ०] थोड़ा, कम, हलका; तुच्छ, क्षुद्र।
**खब-खब** *पु०* काँटा गड़ने का भाव।
**खबर** *स्त्री०* [अ०] सूचना, जानकारी, समाचार, सन्देश, वृत्तान्त। **-गीर** *वि०* खोज-खबर लेने वाला। **-दार** *वि०* सावधान, चौकन्ना, सतर्क। **- नवीस** *पु०* [फा०] समाचार लिखने वाला, संवाददाता। **-लेहल** *मुहा०* डाँटना, फटकारना, दण्ड देना।
**खबीस** *पु०* [अ०] दैत्य; कामुक व्यक्ति; वह जो बहुत दुष्ट और क्रूर हो; कंजूस, मक्खीचूस।
**खबैनी** *स्त्री०* गेहूँ की मिस्सी रोटी।
**खभड़ल** *सक०* खेत की मिट्टी को उलट-पुलट करना, किंचित् खोदना; मिलाना, उथल-पुथल नचाना।
**खभड़ा** *पु०* गड़हा, गड्ढा। *वि०* ऊँची-नीची।
**खभाड़ल** *सक०* कोड़कर जमीन को ऊबड़-खाबड़ करना।
**खभार** *पु०* सूअरों के रहने की जगह; गड्ढा।
**खम-खम** *क्रि०वि०* एक के बाद एक शीघ्रतापूर्वक दूसरे के आने की स्थिति। *वि०* टाप की आवाज।
**खमकल** *अक०* 'खम-खम' शब्द करना।
**खमजात** *वि०* [फा० कमजात] कमीना, बदमाश।
**खमसल** *अक०* [फा० खाम] कम होना, हटना; बुढ़ापे के कारण शिथिलता आना।
**खमहरुआ** *पु०* एक प्रकार की लता।
**खमीन** *पु०* [फा० खाबिन्द] मालिक, स्वामी, पति।
**खमीर** *पु०* [अ०] गुँथे आटे या साने गए पदार्थ में उत्पन्न खटास और उभार।
**खमीरा** *वि०* [फा०] खमीर वाला।

**खयानत** *स्त्री०* [फा०] अमानत रखी हुई चीज; गबन; बेईमानी।

**खयाल** *पु०* [फा०] ध्यान, चिन्ता; सोच-विचार; याद।

**खयाली** *वि०* कल्पित। **-पुलाव** *पु०* मनोराज्य।

**खरंजा** *पु०* खड़ंजा, झाँवाँ।

**खर** *पु०* खेतों में उपजने वाली घास; एक प्रकार का तृण, जो घर झाने के काम में आता है। *लोक०* 'खर के टाटी गुजराती ताला'।

**खरई** *स्त्री०* एक प्रकार की घास; अरहर आदि की डण्ठल; सरकण्डा।

**खरकटल** *अक०* किसी बर्तन में लगे भोज्य पदार्थ का सूख कर सटा रहना।

**खरकटही** *वि०* दुष्ट।

**खरका** *पु०* सूखा, कड़ा तिनका।

**खरकटिया** *स्त्री०* खर के काटने का काम।

**खरकल** *अक०* किसी बँधी वस्तु का बन्धन ढीला होने से गिर जाना, हट जाना, खिसकना; बाढ़ के पानी का हट जाना।

**खरकावल** *सक०* खिसकाना।

**खरकोंच** *पु०* खर या बाँस की पतली नोक जो गड़ जाती है।

**खरकोटी** *स्त्री०* खरिका रखने के लिए दीवार में बना छिद्र।

**खरखउकी** *स्त्री०* वह स्त्री, जो एक पति को छोड़कर दूसरा रखती हो, व्यभिचारिणी।

**खरखर** *वि०* वह सतह जो चिकनी नहीं हो; जो लेन-देन के मामले में साफ हो।

**खरखरा** *वि०* खुरखुरा।

**खरखराहट** *पु०* खरा, खराब गले की आवाज।

**खरखस** *पु०* आशंका, सम्भावित झमेला।

**खरखाह** *वि०* बहादुरी या योग्यता दिखाने के लिए कार्य या बात करने वाला व्यक्ति, उत्साही।

**खरखुरा** *पु०* गदहे की खुर जैसी खुर वाला (बैल)।

**खरंगटाह** *वि०* वह व्यक्ति, जो किसी की बात की ओर ध्यान न देकर जो उचित समझता है वही करता है, नीरस।

**खरग** *पु०* गैंडे का सींग।

**खरगिदरी** *वि०* आकार में अति छोटा (पशु)।

**खरघुसिया** *वि०* आकार में छोटा, साधारण, छोटे डील-डौल का (पशु)।

**खरच** *पु०* खर्च, व्यय, खपत। *लोक०* 'खरच तऽ खरचे सही, दे दाल में पानी।'

**खरचल** *सक०* [फा०] खर्च करना।

**खरचाल** *पु०* बालू चालने का जालीदार उपकरण।

**खरची** *स्त्री०* भोजन सम्बन्धी दैनिक खर्चा, राशन का खर्च।

**खरछाहिन** *वि०* स्वाद में अरुचिकर।

**खरछुताह** *वि०* जो परोक्ष रूप से पैदा हुआ हो; अपात्र।

**खरजिउतिया** *पु०* पुत्र हेतु दीर्घजीवन के लिए किया जाने वाला औरतों का व्रत।

**खरथुआ** *पु०* बथुआ।

**खरना** *पु०* छठ व्रत के पूर्व का वह दिन जब व्रती केवल रात्रि में भोजन करता है।

**खरनाइल** *अक०* आवेश में आना (कुत्सा); किसी उद्देश्य के लिए अत्यधिक तत्पर होना।

**खरपा** *पु०* काठ की वह पादुका जिसमें खूँटी की जगह फीता लगता है; चट्टी या कठनही।

**खरब** *पु०* सौ अरब की इकाई।
**खरबतल** *सक०* खर से छाए हुए घर पर बाती चलाना।
**खरबन** *पु०* फसल की कटनी के समय नाई, धोबी और लोहार को दी जाने वाली फसल का एक भाग।
**खरबाती** *स्त्री०* बाँस की वह बाती जो घर छाने के काम में आती है।
**खरबिरिय** दे० खरबिरवा।
**खरबिरवा** *पु०* पौधों से बनी दवा, वनौषधि, जड़ी-बूटी, घरेलू दवा।
**खरबूजा** *पु०* [अ०] एक प्रकार का लता-फल जो नदी के किनारे बालू में होता है, लालमी। *लोक०* 'खरबूजा चाहे धूप, आम चाहे मेह, नारी चाहे जोर, बालक चाहे नेह'।
**खरभर** दे० 'खड़बड़'।
**खरमंडल** *वि०* क्रम बिगड़ना, अव्यवस्थित हो जाना।
**खरमेटाव** *पु०* प्रात: का जलपान, अल्पाहार।
**खरल** *पु०* बाधा, रुकावट, विपत्ति; औषधि कूटने का बर्तन।
**खररल** *सक०* रगड़ कर साफ करना।
**खरवाँस** *पु०* धनु और मीन राशि में सूर्य की स्थिति वाला महीना, जिसमें मांगलिक कार्य वर्जित है।
**खरहरल** *सक०* खरहरे से बहारना; घोड़े के रोंये को साफ करना।
**खरहरा** *पु०* बाँस की कमाच या अरहर की टहनी का बना बड़ा झाड़ू।
**खरहा** *पु०* घास चरने वाला एक जंगली पशु, खरगोश।
**खरही** *स्त्री०* घर की छजनी में व्यवहृत एक प्रकार का बड़े आकार का खर; सरई।
**खरा** *वि०* व्यवहार या वचन से स्पष्ट, सच्चा।
**खराइल** *अक०* किसी वस्तु का इतना सूखना कि उसमें आसानी से आग पकड़ ले; मक्खन से घी निकालने हेतु खौलाना।
**खराई** *स्त्री०* प्रात: बहुत देर तक या समय पर अल्पाहार नहीं मिलने से उत्पन्न बीमारी।
**खराऊँ** *पु०* लकड़ी की चप्पल।
**खराद** *पु०* लकड़ी या धातु से बने समानों की सतह को चिकना करने का औजार।
**खराब** *वि०* निकम्मा, बुरा, घटिया, निकृष्ट, पापी, पथभ्रष्ट।
**खराबी** *स्त्री०* [फा०] दोष, बुराई।
**खरावल** *सक०* घृत को अग्नि पर इतना तप्त करना कि उसका मट्ठा जल जाय।
**खरिआतल** *सक०* खरीदा हुआ।
**खरिका** *पु०* भोजनोपरान्त दाँत में फँसे अन्न का टुकड़ा निकालने के लिए व्यवहृत तृण, दँतखोदनी, नीम की सींक।
**खरिहान** *पु०* वह स्थान जहाँ खेत की फसल काट कर इकट्ठा की जाती है और मड़ाई के बाद दाना अलग किया जाता है, खलिहान।
**खरिहानी** *स्त्री०* दँवरी या मड़ाई समाप्त होने, खलिहान के उठने के पूर्व ब्राह्मण आदि को दिया गया अन्न।
**खरी** *स्त्री०* तेलहन से तेल निकालने के बाद बचा अंश, खल्ली; तेलहन की सिट्ठी।
**खरीता** *पु०* [अ०] थैली; बड़ा लिफाफा।
**खरीद** *स्त्री०* [फा०] किसी वस्तु को मोल लेने की क्रिया।
**खरीददार** *पु०* [फा०] क्रय करने वाला, खरीदने वाला।
**खरीदल** *सक०* खरीदना।

**खरीफ** *पु०* [अ०] आषाढ़ से अगहन तक की फसल। जैसे-धान, मक्का, बाजरा।
**खरुआइल** *अक०* तैयार हो जाने के कारण केले आदि पर पकने के पूर्व दाग आना, रुखड़ा होना।
**खरुका** *पु०* पौधे में लगने वाला एक रोग।
**खरेरा** *पु०* खरहरा।
**खरोंच** *स्त्री०* छिल जाने का निशान।
**खरोचल** *सक०* खुरचना।
**खर्च** *पु०* [फा०] व्यय।
**खर्चा** *पु०* [फा०] लागत, खर्च।
**खर्चीला** *वि०* बहुत खर्च करने वाला।
**खर्राटा** *पु०* सोते समय नाक से निकलने वाली खर्र-खर्र की आवाज।
**खल** *पु०* औषधि कूटने का एक पात्र।
**खल** *पु०* प्रपञ्ची, दुष्ट, *लोक०* 'खल के दवा पीठि के पूजा'।
**खलइच** *वि०* नीचा; नीची या गहरी जमीन।
**खलखलाइल** *अक०* जोर से हँसना, कहकहा लगाना।
**खलचोइया** *पु०* छिलका; खोइया।
**खलड़ी** *स्त्री०* चमड़ा, त्वचा, खाल।
**खलबी** *पु०* शोर-गुल, हलचल।
**खलरा** *पु०* चर्म, खाल। *उदा०* 'एक चिरइया अट ओकर कान दूनू पट ओकर खलरा ओदार ओकर मास मजेदार।'
**खलल** *पु०* [अं०] अवरोध, बाधा, रुकावट। *सक०* बुरा लगना, खटकना।
**खलहल** *वि०* जिसमें अन्दर का स्थान भरा न हो।
**खलार** *स्त्री०* नीची भूमि।
**खलास** *वि०* खाली, मुक्त, खाली करने या होने की स्थिति।
**खलिआ** *वि०* वह व्यक्ति जिसके पास आवश्यकता की वस्तुएँ नहीं हो, निर्धन।
**खलिआवल** *सक०* खाली करना।
**खलिहा** *वि०* खाली।
**खली** *स्त्री०* सफेद मिट्टी, जो लिखने के काम में आती है, खड़िया, दुधिया।
**खलीफा** *पु०* [अ०] पहलवान; दरजी; खानसामा; नाई; मुसलमान राज्य में सबसे बड़ी पदवी।
**खले-खले** *क्रि०वि०* नीची भूमि से होकर चलने की क्रिया।
**खवक्कड़** *वि०* डटकर खाने वाला, बहुत खानेवाला।
**खवाई** *स्त्री०* खाने का काम।
**खवास** *पु०* [अ०] राजाओं एवं जमींदारों का खास खिदमतगार। *स्त्री०* खवासिन।
**खसकल** *सक०* नीचे की ओर सरकना, हटना, चुपके से चल देना।
**खसखस** *पु०* एक प्रकार का तेल, रुखड़ा; चावल का आँठवा भाग; अफीम का बीज।
**खसम** *पु०* [अ०] स्वामी, पति।
**खसरा** *पु०* चर्म रोग; लेखपाल का वह कागज, जिसमें खेत का नम्बर और क्षेत्रफल आदि का वर्णन, हिसाब रखता हो।
**खसल** *अक०* नीचे की ओर आना, अवनति होना।
**खसी** दे० 'खाँसल'।
**खसोटल** *सक०* छीनना, झपटना।
**खस्टी** *स्त्री०* तिथि, षष्ठी।
**खस्ता** *वि०* [फा०] घायल, खिन्न, क्लांत। **-कचौड़ी** *स्त्री०* टिकिया की शकल की मोयनदास पूड़ी। **-दिल** *वि०* भग्न चित्त। **-हाल** *वि०* खिन्न, विपन्न, फटेहाल।
**खहराइल** *अक०* गिरना (पत्ता)। *उदा०* 'एक दिन अइहें रामा जुलुमी बेयरिया से डाड़ पात जइहें खहराइ रे बिदेसिया।'

**खाँ** *पु०* समय, जैसे राति खाँ।
**खाँइस** *स्त्री०* [फा०] इच्छा।
**खाँखड़** *पु०* कुँआ निर्माण के लिए खोदा गया गड्ढा; सुराख वाला बर्तन।
**खाँच** *पु०* बाँस की कमची का बना टोकरा, जिसमें भूसा ढोया जाता है।
**खाँचल** *अक०* लकड़ी या धातु में खींचने, लकीर बनाने की क्रिया; पैर में मिट्टी, गोबर आदि को रौंदना या सानना।
**खाँचा** *पु०* बड़ा टोकरा; लकड़ी या धातु में बनाया गया चिह्न।
**खाँची** *स्त्री०* छोटी टोकरी।
**खाँजी** *स्त्री०* फल रखने का एक प्रकार का जाल।
**खाँटी** *वि०* विशुद्ध, बिना मिलावट के, खरा शुद्ध।
**खाँड़** *पु०* सूखी हुई दानेदार शक्कर, भुर्रा, भूरा।
**खाँड़ा** *पु०* आधा (फल, रोटी), टुकड़ा; एक धारदार हथियार।
**खाँनल** *वि०* लात से कुचला हुआ, कुचला हुआ।
**खाँव** *पु०* मूलत: पठानों की उपाधि, मुसलमान राजाओं द्वारा हिन्दुओं को दी गई उपाधि, जो वीरता या कर्त्तव्य-पालन का द्योतक है।
**खाँसल** *सक०* खाँसना।
**खाँहाँ** *पु०* तैयार, ख्वाहिशमन्द।
**खाइके** *सक०* खाकर *लोक०* 'खाइके पर जा, मारि के टर जा', 'खाइके पान बनारस वाला'।
**खाइब** *सक०* भोजन करना, *लोक०* 'खाइब गोहूँ ना तऽ रहब एहूँ', 'खाइब हम नाना के रोटी, कहाइब हम दादा के पोती।'
**खाइल** *सक०* भोजन करना। **-पीयल** *पु०* खान-पान।
**खाई** *स्त्री०* प्राचीन खण्डहरों की सुरक्षा के लिए उसके चारों तरफ खोदा गया गड्ढा, खन्दक।
**खाउर-भाउर** *पु०* अप्रिय या हानिकारक बात, *यौ०।*
**खाऊ** *वि०* पेटू; घूसखोर, दूसरे का रुपया पचा लेने वाला।
**खाएक** *पु०* भोजन।
**खाक** *स्त्री०* राख, धूल। *वि०* नगण्य, तुच्छ। **-उड़ल** *मुहा०* तब्गह, बदनामी। **-कइल** *मुहा०* जलाकर राख कर देना, बरबाद कर देना। **-के पुतला** *मुहा०* मानव। **-चाटल** *मुहा०* दीनता दिखाना। **-धानल** *मुहा०* मारा-मारा फिरना। **-में मिलल** *मुहा०* बरबाद होना।
**खाकीबाबा** *पु०* वह साधु, जो शरीर में सदा राख लपेटे रहता है, गेरुआधारी।
**खाखाइल** *अक०* अतृप्त इच्छा से ग्रसित होना, लालायित होना।
**खाखी** *स्त्री०* पहाड़ों से घिरी तंग घाटी।
**खाजा** *पु०* मैदे की बनी एक लम्बी और परतदार मिठाई, खाझा; ताड़ के फल का गूदा।
**खाट** *स्त्री०* [सं० खाट:] बड़ा खटिया। चारपाई, पलंगड़ी, माचा। **-खटोला** *पु०* [हिं०] गृहस्थी का सामान। **-पर पड़ल** *मुहा०* बीमार होना। **-से लगल** *मुहा०* रोग के चलते उठने-बैठने में अशक्त होना।
**खाटा** दे० 'खट्टा'।
**खाटी** *स्त्री०* खाट (छोटा)। **-डँसावल** *सक०* खाट बिछाना।
**खाढ़** *वि०* खड़ा।
**खाड़ा** दे० 'खड़ा'।
**खाड़ी** *स्त्री०* तीन ओर जमीन से घिरा समुद्र का भाग।

**खात-पहिरत** *क्रि०वि०* खाते-पहनते।
**खात-पीयत** *क्रि०वि०* खाते-पीते।
**खाता** *पु०* वह वही, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का पृथक्-पृथक् रुपये या खेत का ब्यौरा रहता है; खेत के चारो तरफ खोदा गया गड्ढा।
**खाता-नागा** *पु०* दुर्घटना; छोटी-छोटी भूलें, *यौ०*।
**खातिर** *स्त्री०* [अ०] सम्मान, आदर। *अव्य०* अर्थ, निमित्त, वास्ते, लिए। *उदा०* 'तोहरा खातिर आहो मोहन घर बार छोड़नी, छोड़नी नगर के लोग।'-लोकगीत
**खान** *पु०* ढेर, समूह; धरती के नीचे दबी कोयले सोने की परत।
**खानगी** *वि०* [फा०] निजी, अपना, घरेलू, दूसरे से सम्बन्ध न रखने वाला। *स्त्री०* तुच्छ, वेश्या।
**खाद** *स्त्री०* वह रासायनिक या जैविक पदार्थ, जिसे उपज बढ़ाने के लिए खेत में डाला जाता है। *लोक०* 'खाद पड़े तऽ खेत ना तऽ कूड़ा रेत।'
**खादर** *पु०* गोबर तथा कूड़ा-कर्कट को सड़ा गला कर तैयार की गयी खाद; नीची जमीन, कछार।
**खादी** *स्त्री०* खद्दर।
**खाधुर** *वि०* पेटू, अधिक भोजन करने वाला।
**खानदान** *पु०* [फा०] कुल, वंश। *वि०* खानदानी।
**खानपान** *पु०* खाना-पीना, खाने-पीने का सम्बन्ध एवं व्यवहार, *यौ०*।
**खान-पियन** *पु०* खान-पान।
**खान-बिखान** *वि०* तरह-तरह का।
**खानल** *सक०* कूटना, पैरों से रौंदना।
**खानसामा** *पु०* [फा०] मुसलमानों एवं अंग्रेजों का खाना बनाने वाला व्यक्ति। रसोइया।
**खाना** *पु०* भोजन की सामग्री, तैयार भोजन।
**खानापुरी** *पु०* औपचारिकतावश किया गया कार्य। फर्जअदायगी।
**खानि** *पु०* समय, अवसर। *वि०* सदृश।
**खानी** *वि०* की तरह।
**खान्ही** *पु०* केले का घवद।
**खाप** *पु०* नकदी मालगुजारी पर दी गई जमीन, हुण्डा।
**खापल** *सक०* कुदाल से मेंड़ के नजदीक कोड़ना।
**खापसूरत** *वि०* [फा० खूबसूरत] सुन्दर, सुहावना, मनोहर।
**खाब** *पु०* [फा० ख्वाब] स्वप्न, सपना।
**खाभर** *पु०* एक तरह की जिरात।
**खाभल** *सक०* जमीन को हल्का कोड़ना।
**खाम** *स्त्री०* दोष।
**खामी** *स्त्री०* कमी, त्रुटि; कचाई, कच्चापन।
**खामोखाह** *अव्य०* कोई चाहे या नहीं, जानबूझ कर हठात्।
**खायेक** *पु०* भोजन की सामग्री।
**खार** *पु०* ईर्ष्या, डाह, जलन।
**खारा** *पु०* एक प्रकार का रोग, जिसमें चमड़े पर दरार-सा नजर आता है।
**खारिज** *वि०* [अ०] रद्द, अलग किया हुआ, बहिष्कृत, निकाला हुआ।
**खारी** *स्त्री०* रेह मिट्टी से तैयार किया गया एक प्रकार का लवण।
**खारु** *पु०* बार-बार रोपा जाने वाला बीज।
**खाल, खाला** *पु०* शरीर का चमड़ा, छिलका। *वि०* नीची भूमि।
**खालसा** *वि०* जिस पर राज्य या सरकार का अधिकार हो (भूमि); सिक्खों का एक सम्प्रदाय।
**खाला** *वि०* [फा०] नीचा।
**खाला डाबा** *पु०* बच्चों का एक प्रकार का फेफड़े का रोग।

**खाली** *वि०* रिक्त। **-कइल** *सक०* छोड़ देना। **-भइल** *अक०* हट जाना। **-हाथ** *मुहा०* दरिद्र, अकिंचन। *लोक०* 'खाली मड़वा बाजे ढोल, लइका भइले डाँवा डोल'।

**खाले** *सक०* खाना। *लोक०* 'खाले जीभ लजाले आँख।'

**खावा** *पु०* तालाब के चारों ओर का बाँध, मेड़।

**खास** *वि०* विशेष, मुख्य; अपना, खुद। **-कर** [अ०] खास तौर से, विशेषतः। **-खास** *वि०* चुने हुए प्रमुख लोग।

**खासर** *वि०* वह मवेशी जिसके थन से आसानी से दूध निकलता हो।

**खासलत** *स्त्री०* आदत, स्वभाव।

**खासा** *वि०* बड़ा, अच्छा; स्वस्थ, निरोग; भरपूर, सर्वांगपूर्ण।

**खास्ता** *वि०* मुलायम, ताजा (तला हुआ भोजन)।

**खाहिन** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान।

**खिंचल** *अक०* खिंचना, तनना।

**खिअंता** *वि०* घिसा हुआ, घिसने की क्रिया।

**खिआइल** *अक०* [सं० क्षय] रगड़ से घिस जाना।

**खिआनत** *पु०* धरोहर में रखी गई वस्तु या राश का नहीं लौटाना।

**खिआवल** *सक०* खिलाना।

**खिकरी** *स्त्री०* छोटी-पतली पूड़ी।

**खिचड़वार** *पु०* खिचड़ी का त्योहार। मकरसंक्रान्ति।

**खिचड़ी** *स्त्री०* चावल एवं दाल को मिलाकर तैयार किया गया भोज्य पदार्थ; मकर संक्रान्ति का पर्व; भेजा गया उपहार। *लोक०* 'खिचड़ी के चार यार पापड़, दही, घी, अचार।'

**खिचवावल** *सक०* खिंचने का कार्य दूसरे से कराना।

**खिजमत** *स्त्री०* [अ०] खिदमत, खुशामद, सेवा।

**खिजमतिया** *पु०* सेवक, नौकर।

**खिजमती** *पु०* पहली बार का कूटा चावल, जिसमें धान और चावल मिले होते हैं।

**खिजाव** *पु०* [अ०] सफेद बालों को काला करने का एक प्रकार का रंग।

**खिझ** *स्त्री०* खीझ।

**खिझल** *अक०* खीझना।

**खिझावल** *सक०* चिढ़ाना, छेड़ना।

**खिझियाइल** दे० 'खिसिआइल'।

**खिड़की** *स्त्री०* जँगला, वातायन; घर से सटे बाहर, परिवार की महिलाओं का शौचादि का स्थान; घर के पीछे या बगल का दरवाजा।

**खिड़लिच** *स्त्री०* उत्तरा-फाल्गुनी और हस्त नक्षत्र में प्रकट होने वाली एक छोटी चिड़िया, खंजन।

**खियाता** *अक०* [खी-क्षयणे] घिसना।

**खियाल** *स्त्री०* [अ० ख़्याल]मजाक, याद।

**खिरका** *पु०* ईंटों की पंक्तियाँ।

**खिरकादंत** *पु०* छींट कर बोया जाने वाला एक धान।

**खिरनी** *स्त्री०* [सं० क्षीरिणी] एक छोटे एवं मीठे फल का वृक्ष, खीरी।

**खिरसा** *पु०* मवेशियों का वह दूध जो बच्चा देने के बाद 12 दिनों तक निकलता है, फेन्सा, फेनुस, खीस।

**खिरौदा** *पु०* चावल के आटे की रोटी।

**खिल** *पु०* [सं०] परती जमीन, ऊसर।

**खिलकत** *पु०* [अ०] प्रपंचपूर्ण कार्य, गुप्त कार्य। *स्त्री०* सृष्टि, रचना।

**खिलचा** *पु०* प्रभाव।
**खिलल** *अक०* फूल खिलना; प्रसन्न होना।
**खिलवाड़** *पु०* दे० खेलवाड़।
**खिलवावल** *सक०* दूसरे से परसवाकर दूसरे को भोजन कराना।
**खिलवार** *पु०* दे० खिलवाड़।
**खिलाई** *स्त्री०* खिलाने का काम।
**खिलाड़** *वि०* खिलाने का काम, खिलाने का नेग।
**खिलाड़ी** *वि०* खेलने वाला।
**खिलाफ** *वि०* [अ०] विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत।
**खिलोरनी** *स्त्री०* खिखोरनी।
**खिलौना** *पु०* खेलने की चीज।
**खिल्ली** *स्त्री०* मवेशियों के दूध के दाँत; मजाक, दिल्लगी; पान का बीड़ा, सुरती की वह मात्रा जो एक बार में मुख में रखी जाती है; कील, काँटा।
**खिसकल** *अक०* खिसकना।
**खिसिआइल** *अक०* खिसियाना।
**खिस्सा** *पु०* किस्सा, कहानी, कहावत।
**खींचल** *सक०* [सं० कर्षणं] पकड़ कर बलपूर्वक अपनी ओर लाना, घसीटना; आकर्षित करना।
**खींच-खाँच** *स्त्री०* खींचातानी, *यौ०*।
**खींचा-तानी** *स्त्री०* दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा परस्पर-विरोधी प्रयत्न, *यौ०*।
**खींची** *स्त्री०* पशुओं के द्वारा पद-दलित फसल।
**खी-खी** *स्त्री०* हँसने की आवाज; खीखी।
**खीझल** *अक०* रुष्ट होना।
**खीझि** *स्त्री०* रोष।
**खीन** *वि०* दुबला। **-होखल** *मुहा०* दुबला होना।
**खीप** *पु०* ईंट, पकी हुई मिट्टी या पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े।
**खीर** *स्त्री०* [सं० क्षीरम्] दूध, चावल और शक्कर या गुड़ मिलाकर बनाया गया भोज्य पदार्थ।
**खीरकदम** *पु०* छेने की मिठाई।
**खीरा** *पु०* [सं० क्षीरकः] ककड़ी की जाति का एक फल।
**खीरी** *स्त्री०* एक प्रकार का छोटा मीठा फल।
**खील** *स्त्री०* भुना हुआ धान, लावा।
**खील** *पु०* गाय या भैंस के बच्चा देने के बाद उसके स्तन से निकला प्रथम बार का दूध; घाव के मवाद के साथ निकला कड़ा पदार्थ जिसके निकल जाने से घाव सूख जाता है; भूना धान, परती खेत।
**खीला** *पु०* कील, खूँटी।
**खीली** *स्त्री०* बीड़ा (पान का)।
**खीस** *स्त्री०* [हिं० खीज] क्रोध, रोष, गुस्सा, अप्रसन्नता, नाराजगी।
**खुँटरा** *पु०* मचान बनाने में प्रयुक्त खूँटा। खम्भा।
**खुँटराकस** *पु०* दुष्ट प्रकृति का आदमी।
**खुँटहरा** *पु०* पुराना हल।
**खुआव** *पु०* [फा० ख्वाब] स्वप्न।
**खुखड़ी** *स्त्री०* विवाह के लिए मौर बनाने की लकड़ी; नेपालियों का एक हथियार।
**खुखसा** *पु०* एक प्रकार की घास, जो धान के खेत में होती है।
**खुखड़ल** दे० 'खँखड़ल'।
**खुखुड़ी** *स्त्री०* मक्का के भुट्टे में से दाना निकलने के बाद बचा हिस्सा, लेंढ़ा।
**खुखुना** *वि०* अत्यन्त मोटा व्यक्ति, गोल-मटोल।

**खुक्खा** *पु०* पइया।
**खुच-खुच** *क्रि०वि०* थोड़ा-थोड़ा।
**खुचुर** *स्त्री०* जल्दी-जल्दी, थोड़ा-थोड़ा, झूठमूठ अवगुण दिखलाने वाले का कार्य; ऐबजोई।
**खुजली** *स्त्री०* चर्मरोग (खुजुली)।
**खुज्जा** *पु०* रेशा।
**खुट** 'खोट', 'खोटा' का समासगत रूप। **-चाल** *स्त्री०* खोटापन, दुष्टता। **-चाली** *वि०* खोटा, दुष्ट। **-पना** *पु०* पाजीपन।
**खुटकावल, खुदकावल** *सक०* किसी को कुछ कहने के लिए उकसाना, उत्प्रेरित करना, खटकाना, आवाज करना।
**खुट-खुट** *क्रि० वि०* छोटे बच्चों या मवेशियों के चलने से उत्पन्न ध्वनि; पेट में होने वाली अपच।
**खुटराकस** *पु०* अपने ही कुल को खाने वाला, कुलकलंकी।
**खुटीखाप** *पु०* छोटा-छोटा बना देने का कार्य।
**खुटुकचाली** *वि०* दुष्ट, प्रपंची, दुराचारी।
**खुटुकावल** दे० 'खुटकावल'।
**खुटुर-खुटुर** *पु०* खड़ाऊँ पहनकर चलने से उत्पन्न आवाज।
**खुटेरा** *पु०* खूँटी का बड़ा रूप; कटाई के बाद खेत में जड़ से लगा तने का नुकीला भाग।
**खुट्टा** *पु०* खूँटा, ढेंकी का वह स्तम्भ जो जमीन में गड़ा रहता है।
**खुड़हेरल** *सक०* उलट-पुलट करना, जमीन की ऊपरी सतह पर से मिट्टी पर घास आदि का हटाना।
**खुड़ारी** *स्त्री०* जोते हुए खेत में आदमी के चलने से बना पतला रास्ता, पतली पगडण्डी।
**खुडिया** *स्त्री०* गेहूँ की दौनी में प्रयुक्त एक टेढ़ी नुकीली छड़ी। अखइन।
**खुड्डर** *पु०* पतली पगडण्डी।
**खुढ़ेरल** दे० 'खुड़हेरल'।
**खुद** *अव्य०* [फा०] स्वयं, आप। **-कुसी** *स्त्री०* आत्महत्या। **-गरज** *वि०* स्वार्थी। **-ब-खुद** *अव्य०* अपने आप। **-मुख्तार** *वि०* स्वतन्त्र। **-मुख्तारी** *स्त्री०* स्वाधीनता।
**खुदकावल** *सक०* कुछ कहने के लिए हाथ से किसी को खोदना।
**खुदनी** *स्त्री०* खोदने का छोटा औजार।
**खुदरा** *पु०* [सं० क्षुद्रः] फुटकर; छोटी और साधारण वस्तु; रेजगारी।
**खुदराह** *वि०* जो चिकना नहीं हो, ऊबड़-खाबड़, खुरदरा।
**खुदसर** *वि०* व्यक्तिविशेष, खास, निजी।
**खुदा** *पु०* [फा०] मालिक, ईश्वर, स्वयंभू। **-ई** *स्त्री०* ईश्वर की महिमा, सृष्टि, दुनिया। **-के मार** = ईश्वर का कोप। **-के सान** = विभूति। **-न खास्ता** = ईश्वर न करे (ऐसा हो)।
**खुदिआइल** *अक०* छोटे-छोटे टुकड़ा होना; फटने के पहले दूध की स्थिति।
**खुदी** *स्त्री०* अन्न का छोटा टुकड़ा, खुद्दी; गर्व, आपा।
**खुद्दी** *पु०* दे० 'खुदी'।
**खुनि** दे० 'खानि'।
**खुनुस** *स्त्री०* [सं० खिन्न मनस्] क्रोध, रोष, गुस्सा।
**खुनुसाइल** *अक०* क्रोध करना।
**खुनसी** *वि०* क्रोधी।
**खुफिया** *वि०* छिपा हुआ।
**खुमार** *पु०* [अ०] नशा। **-तोड़ल** *मुहा०* नशे के अवसाद को दूर करने हेतु थोड़ी शराब पीना।

**खुमारी** *स्त्री०* [अ० खुमार] नशे के उतरने के बाद की शिथिलता, रात भर जगने की थकावट।

**खुर** *पु०* पशुओं का नखवाला भाग। *स्त्री०* खुरी।

**खुरकी** *स्त्री०* एक प्रकार की घास।

**खुर-खार** *सक०* इधर-उधर करना; जरा-जरा सा काम।

**खुर-खुर** *स्त्री०* एक प्रकार की आवाज, जो गले में कफ के कारण साँस लेते समय होती है; घर-घर का शब्द; घरघराहट। *अक०* खुरखुराइल।

**खुनखून** *पु०* अति व्यग्रता दिखलाने की स्थिति; पशुओं के द्वारा पद-दलित फसल।

**खुरचन** *पु०* छोलनी, जो खुरचने का काम करता है, सब्जी चलाने वाला घरेलू उपकरण; मिठाई; वह वस्तु जो खुरच कर निकाली जाय।

**खुरट** *पु०* खुरपका रोग।

**खुरदन** *पु०* रौंदने की क्रिया।

**खुरदरा** *वि०* खुरखुरा।

**खुरपा** *पु०* [सं० क्षुरप्रः] घास छीलने या निकौनी करने का औजार। *स्त्री०* खुरपी।

**खुरपिआवल** *सक०* खुरपी से खेत का घास-पात निकालना।

**खुरपी** *स्त्री०* छोटा खुरपा।

**खुरपेड़िया** *स्त्री०* खेत में आदमी के चलने से बनी पगडण्डी।

**खुरफा** *पु०* कुल्फे का साग।

**खुरफात** *पु०* [अ०] उपद्रव, बखेड़ा, झगड़ा।

**खुरमा** *पु०* एक प्रकार की मिठाई; बालूशाही।

**खुरसनिया** *पु०* एक प्रकार की छोटी पर तीखी मिर्चा।

**खुरहेटी** *स्त्री०* मवेशियों द्वारा चलने से जमीन पर बना चिह्न।

**खुरा** *पु०* खुर-पका रोग; फाल की दृढ़ता के लिए लगाया जाने वाला काँटा।

**खुराक** *स्त्री०* [फा०] आहार, खाना, दवा की एक मात्रा; एक आदमी का एक समय का नियत भोजन।

**खुराकी** *वि०* अधिक खाने वाला। *स्त्री०* खुराक के बदले दिया जाने वाला पैसा दैनिक भोजन व्यय।

**खुराफात** *स्त्री०* [अ०] बकवास, शरारत, बखेड़ा।

**खुराफाती** *वि०* खुराफात करने वाला।

**खुर्राट** *वि०* बूढ़ा; चालाक; अनुभवी।

**खुरपा** *पु०* घास गढ़ने का उपकरण।

**खुरुपी** *स्त्री०* छोटा खुरपा।

**खुलता** *वि०* खुला हुआ।

**खुलम खुल्ला** *क्रि०वि०* खुलेआम, सभी के सामने।

**खुलल** *अक०* बंधन से मुक्त होना, बादल का हटना।

**खुलहा** दे० 'खुलता'।

**खुलावल** *वि०* बन्धनमुक्त (मवेशी)।

**खुलासा** *वि०* [अ०] स्पष्ट, साफ।

**खुवाड़** *पु०* आवारा पशुओं की जगह।

**खुस** *वि०* [फा०] प्रसन्न, आनन्दित, खुश।

**खुसखबरी** *स्त्री०* सुखद समाचार।

**खुसनामा** *पु०* खुशी की बात।

**खुसबू** *स्त्री०* [फा०] सुगन्ध, सौरभ।

**खुसहाल** *वि०* [फा०] सुखी, सम्पन्न।

**खुसामद** *स्त्री०* [फा०] चापलूसी, झूठी, प्रशंसा, दूसरे के खुश रहने के लिए किया गया कार्य। *वि०* खुशामदी

**खुसुक** *वि०* [सं० शुष्क] सूखा, खुश्क, जो तर न हो।

**खूंख** *वि०* छूँछा, रिक्त, खाली; निर्धन।
**खूँट** *पु०* [सं० खण्ड:] छोर, कोना, भाग; बाँस का झुरमुट; वंश-परम्परा। *स्त्री०* कान का मैल।
**खूँटा** *पु०* लकड़ी का गड़ा हुआ टुकड़ा, जिसका उपयोग पशु बाँधने या खेत की सीमा को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। *लोक०* 'खूँटा के बल पर बछवो कूदेला।'
**खूँटी** *स्त्री०* छोटा खूँटा।
**खूझा** *पु०* नारियल या ताड़ के फल का भीतरी रेशेदार भाग, उलझा हुआ रेशेदार लच्छा; खुज्झा।
**खून** *पु०* [फा०] रक्त, लहू; हत्या, कतल। **-खराबा** *पु०* मारकाट, खून-कतल। **-खून के घूंट पीयल** *मुहा०* सह लेना। **-खउलल** *मुहा०* अति क्रोधित होना। **-पानी एक कइल** *मुहा०* खून पानी की तरह बहना। **-बहावल** *मुहा०* रक्तपात करना।
**खूनी** *पु०* [फा०] कातिल।
**खूब** *वि०* [फा०] अच्छा, उत्तम, यथेष्ट, बहुत। *क्रि०वि०* भलीभाँति, अच्छी तरह से।
**खूबी** *स्त्री०* अच्छाई, विशेषता; रामदाने की लाई।
**खूहल** *अक०* समागम के लिए व्यग्र मादा पशु की गर्मी शान्त हो जाना।
**खूहा** *स्त्री०* दवनी हेतु छींटे गए डण्ठल।
**खेंखर** *पु०* लोमड़ी; व्यर्थ हँसते रहने वाला व्यक्ति। *स्त्री०* खेंखरी।
**खेंखरिआ** *वि०* खेखर का; लोमड़ी का।
**खेचर** *वि०* [सं०] आकाश में चलने वाला। *पु०* ग्रह, तारा, पक्षी, भूत-प्रेत; शिव।
**खेचरी** *वि०* आकाशचारिणी। *स्त्री०* दुर्गा, परी।
**खेट** *पु०* [सं०] किसानों का गाँव, खेड़ा।
**खेंडुकी** *स्त्री०* बच्चे-बच्चियों द्वारा व्यवहृत वस्त्र-खण्ड।
**खेंढ़ी** *स्त्री०* वृक्ष में स्वत: बना हुआ स्थान जिसके सहारे कोई ऊपर चढ़ सकता है, पायदान, सीढ़ी, सोपान।
**खेंसरार** *पु०* एक प्रकार का जलीय पक्षी जिसका रंग काला सिर पर सफेद धारी रहती है।
**खेआल** *पु०* [अ० ख्याल] याद, स्मरण; विचार, सहानुभूति।
**खेंखरा** *पु०* बीमारी का बहाना।
**खेड़ही** *स्त्री०* एक प्रकार का फूल।
**खेड़ी** *स्त्री०* शिशु की नाभि और गर्भाशय से जुड़ा मांस-खण्ड।
**खेढ़ा** *पु०* रहस्य, भेद; एक प्रकार का धान।
**खेत** *पु०* जीन का टुकड़ा, जो जोता-बोया जाय। *लोक०* 'खेत खाय गदहा, मार खाय जोलहा।'
**खेतिहर** *पु०* खेती करने वाला, किसान। *लोक०* 'खेतिहर गइल घर दाएँ बाएँ हर।'
**खेती** *स्त्री०* खेत जोतने-बोने का काम, किसानी। **-बारी** *स्त्री०* कृषि कर्म। *लोक०* 'खेती राजरजावे खेती भीख मँगावे।'
**खेद** *पु०* [सं०] दु:ख, रंज, उदासी, व्यथा।
**खेदल** *सक०* शिकार का पीछा करना, खदेड़ना।
**खेप** *स्त्री०* माल, बोझ।
**खेपल** *सक०* बिताना।
**खेपाइल** *अक०* स्वत: शान्त या सन्तोष-पूर्वक रह जाना।
**खेपान** *पु०* गन्ने के रस का उतना परिमाण, जिनता एक बार में उबाला जा सके।

**खेमटा** *पु०* (देश०) छः मात्राओं का एक ताल, इस ताल पर होने वाला गान या नाच।

**खेमा** *पु०* [अ०] डेरा, तम्बू, कैम्प।

**खेमाता** *स्त्री०* [सं० क्षमता] हिम्मत, सामर्थ्य, शक्ति।

**खेल** *पु०* क्रीड़ा, व्यायाम के लिए दौड़-धूप।

**खेलल** *अक०* खेलना।

**खेलक्कड़** *पु०* खिलाड़ी।

**खेलवना** *पु०* बच्चों के खेलने का साधन। *उदा०* 'चिरई के जान जाए, लइका के खेलवना।' (लोकोक्ति)

**खेलनी** *वि०* बहाना बनाने वाली स्त्री।

**खेलवाड़** *पु०* तमाशा, मनबहलाव, दिल्लगी। *वि०* खेलवाड़ी।

**खेलाड़ा** *वि०* रहस्य को तुरन्त ताड़ने वाला व्यक्ति।

**खेलाड़ी** *वि०* खेलने वाला व्यक्ति।

**खेलौनिया** *वि०* बच्चों को खेलाने वाला; हास्य-पात्र।

**खेवट** *पु०* नाविक, नदी पार कराने वाला; वह कागज, जिसमें जमींदारी और उसके अधिकार का लेखा रहता है, पटवारी का एक कागज, जिसमें हर पट्टीदार का नाम और हिस्सा लिखा रहता है।

**खेवल** *सक०* नाव चलाना, पार लगाना।

**खेवा** *पु०* नाव का किराया, केवट द्वारा लिया गया शुल्क। *उदा०* 'खेवा देवे के आ दहाइल जाए के।' (लोकोक्ति) **-खरचा** *पु०* राहखर्च।

**खेवाई** *स्त्री०* नाव को चलाने की क्रिया, नाव चलाने की मजदूरी।

**खेसरा** *पु०* प्रत्येक खेत के नम्बर आदि का उल्लेख सम्बन्धी कागज।

**खेसारी** *स्त्री०* [सं० कृसरः] एक प्रकार का निम्नकोटि का दलहनविशेष।

**खेस्टा** *पु०* अनिबन्धित (दस्तावेज या शर्तनामा); साधारण, मोटा (वस्त्र)।

**खेह** *पु०* धूल, गर्दा, पत्ता या अन्न के डंठल का अति बारीक चूर्ण।

**खैका** *पु०* भोजन।

**खैनी** *स्त्री०* जो चूने से मसलकर होठों में दबाई जाती है।

**खैर** *पु०* खैरा की लकड़ी के रस से तैयार की गयी वस्तुविशेष, कत्था। *स्त्री०* क्षेम। *अव्य०* अस्तु, अच्छा।

**खैरा** *पु०* एक पेड़ जिसकी लकड़ी से कत्था तैयार किया जाता है; धान में लगने वाला रोग।

**खैरात** *स्त्री०* [अ०] दान, निःशुल्क दी गई वस्तु। *वि०* खैराती।

**खैरियत** *स्त्री०* [फा०] कुशलक्षेम, राजीखुशी, भलाई, कल्याण।

**खोंइछ** *पु०* देवी की पूजा में आँचल में अनाज रखने की क्रिया।

**खोंइछा** *स्त्री०* बेटी या बहू को विदाई के समय आँचल में दिया जाने वाला चावल एवं पैसा।

**खोंखड़** *वि०* जिसके भीतर कुछ न हो, पोला।

**खोंखल** *अक०* खाँसना।

**खोंखिआइल** *अक०* क्रुद्ध होकर बोलना, झुंझला उठना।

**खोंखी** *स्त्री०* खाँसी, कफजनित रोग।

**खोंख** *पु०* लकड़ी या धातु का नुकीला भाग।

**खों-खों** *पु०* खाँसने की आवाज।

**खोंखा** *वि०* खाली।

**खोंखल** *अक०* खाँसना।

**खोंखी** *स्त्री०* खाँसी। **-खराई** *स्त्री०* जुकाम, ज्वर।

**खोंच** *पु०* खरोच।
**खोंचल** *सक०* [सं० खोच] लकड़ी या बाँस के टुकड़े से खोदना।
**खोंचा** दे० 'खोंच'।
**खोंचिया** *स्त्री०* धोबी या किसी अन्य व्यक्ति (मजदूर) को कार्य के समय दिया गया थोड़ा सा अन्न।
**खोंची** *स्त्री०* शुभ सन्देश या बायन देनेवाली नाइन या मजदूरन को अन्न के रूप में दी गयी मजदूरी।
**खोंट** *पु०* कान का मैल।
**खोंटल** *सक०* नख के द्वारा किसी वस्तु या पौधों के ऊपरी भाग को तोड़ना।
**खोंठिला** *पु०* एक प्रकार का नाक का गहना।
**खोंठी** *स्त्री०* घाव के ऊपर की पपड़ी।
**खोंड़ी** *स्त्री०* खूँटी।
**खोंढ़** *वि०* खण्डित, अपूर्ण।
**खोंढ़िआवल** *सक०* खोखला बनाना।
**खोंढ़र** *पु०* वृक्ष के तने में बना गड्ढा, खोखला।
**खोंढ़रा** *पु०* तरुकोटर।
**खोंढ़िला** *पु०* कोठी में बना ताख; दाँत की बीमारी।
**खोंढ़ी** *स्त्री०* दाँत का छिद्र।
**खोंता** *पु०* (देश०) घोसला, नीड़।
**खोंप** *पु०* भूसा रखने का छाजनदार घेरा; केश-विन्यास।
**खोंपड़ी** *स्त्री०* सिर का ऊपरी भाग, कपाल, सिर, खोपड़ी।
**खोंपा** *पु०* जूड़ा; छल्ला, छल्ली!
**खोंपी** *स्त्री०* ढक्कन।
**खोंसल** *सक०* घुसाना।
**खोआ** *पु०* दूध का बना ठोस पदार्थ, जो औटकर और उसका पानी जलाकर तैयार किया जाता है, खोवा।
**खोआब** *पु०* सपना, स्वप्न।
**खोइला** *पु०* छिलका, रस निकल जाने के बाद का गन्ने का डण्ठल।
**खोइआ** *पु०* बाँस या बाँस का उपकरण जिसका उपयोग किसी वस्तु को उकसाने के लिए होता है। *सक०* खोइलावल।
**खोखा** *पु०* वह कागज जिस पर हुंडी लिखी हो; खाली डब्बा।
**खोगीर** *पु०* अनावश्यक वस्तु।
**खोज** *स्त्री०* तलाश; शोध।
**खोजड़ा** *पु०* पाला आदि से ग्रस्त ज्वार बाजड़ा एवं मकई की फसल।
**खोजवा** *स्त्री०* नामर्द, हिंजड़ा।
**खोजवार** *पु०* थारुओं की एक उपाधि।
**खोजा** *पु०* [फा० ख्वाजा] वह नपुंसक व्यक्ति, जो मुसलमानी हरमों में सेवक की भाँति रहता हो, सेवक, नौकर।
**खोजी** *वि०* अन्वेषक।
**खोट** *पु०* [सं० क्षोट्] छोटा, बुरा, ऐब, दोष; किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।
**खोटा** *वि०* [सं० क्षोट्] घटिया, जिसमें खोट हो, मिलावट, खल। **-खरा** *वि०* भला-बुरा, घटिया-बढ़िया। **-माल** *पु०* मिलावटी माल। **-सिक्का** *पु०* जाली सिक्का।
**खोटि** *स्त्री०* [सं०] चालबाज औरत।
**खोड** *वि०* [सं०] लँगड़ा-लूला।
**खोद-खाद** *पु०* खोदने का कार्य।
**खोदल** *सक०* शरीर में किसी वस्तु को गड़ाना, चुभाना, हाथ से हलका ठोकर देना।
**खोदाय** *पु०* [फा० खुदा] ईश्वर।
**खोनल** *अक०* खोदना।
**खोनसाइल** *अक०* क्रुद्ध होने की स्थिति।

**खोन्चा** *पु०* बड़ा पात्र जिसका प्रयोग फेरी वाले करते हैं।
**खोपचारी** *स्त्री०* बाँस का नुकीला टुकड़ा।
**खोपड़ा** *पु०* कपाल, खोपड़ी।
**खोपड़ी** *स्त्री०* सिर।
**खोबसन** *पु०* उलाहना, प्रताड़ना।
**खोबसल** *सक०* उलाहना देना, प्रताड़ित करना।
**खोभल** *अक०* छेदना, किसी तीखे औजार को घुसेड़ना।
**खोभा** *पु०* कड़ी पीड़ा, पेट में चुभने वाला दर्द।
**खोभाड़** *पु०* सूअरबाड़ा।
**खोर** *पु०* लकड़ी का पका भाग।
**खोरहा** *पु०* खुर पकने का रोग।
**खोरही** *स्त्री०* दे० खोरहा। *लोक०* 'खोरही कुतिया, रेशम के झूल।'
**खोरनाठी** *स्त्री०* लकड़ी का अधजला टुकड़ा; आग हटाने का साधन।
**खोरल** *सक०* आग को लकड़ी से उलट-पुलट करना।
**खोरहा** *पु०* खुर पकने का रोग।
**खोरा** *पु०* कटोरा। *स्त्री०* खोरिआ।
**खोराक** *पु०* एक बार में दी जाने वाली दवा की मात्रा; भोजन की मात्रा।
**खोरा** *पु०* कटोरा जैसा बड़ा पात्र।
**खोराकी** *स्त्री०* खुराक, राशन।
**खोरि** *स्त्री०* गली, सड़क।
**खोरी** *स्त्री०* तंग गली; ऐब, दोष।
**खोरिस** *स्त्री०* [फा०] खाने के लिए दिया हुआ धन या जमीन।
**खोल** *पु०* किसी वस्तु पर लगाया गया आवरण, गिलाफ; मोटी चादर।
**खोलल** *सक०* अवरोध हटाना, बन्धन हटाना, खोलना।
**खोलड़ी** *स्त्री०* मवेशियों के शरीर का ताजा चमड़ा; बीजकोष के ऊपर का छिलका।
**खोलि** *स्त्री०* [सं०] तरकश।
**खोह** *स्त्री०* गुफा, कन्दरा।
**खौंचा** *पु०* मिठाई आदि खाने की चीजें रखने का सन्दूक।
**खौफ** *पु०* भय, आशंका।
**खौरहा** *वि०* खौरा रोगवाला।
**खौलल** *अक०* उबलना, जोश खाना।
**खौहा** *वि०* अधिक खाने वाला।

❑

# ग

**ग** देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का तीसरा व्यंजन, उच्चारण-स्थान कण्ठ है।

**गँइच** *वि०* तिरछा।

**गँइचा** *पु०* एक प्रकार की चिकनी मछली, जिसका मुँह और पूँछ नुकीली होती है। *स्त्री०* गँइची।

**गँइता** *पु०* कड़ी मिट्टी खोदने वाला नुकीला औजार।

**गँइला** *पु०* ईंट खोदने का एक हथियार, गँइता।

**गँई** *स्त्री०* ढंग, प्रकार।

**गँउँआ लेहर** *पु०* गाँव की सामूहिक विचार या कार्यपद्धति, *यौ०*, गाँव के प्रत्येक परिवार के योगदान का भाव।

**गँउछी** *स्त्री०* नयी शाखा; अरहर के फलों का गुच्छा।

**गंग** *स्त्री०* गंगा।

**गंगई** *स्त्री०* मैना जाति की एक चिड़िया।

**गंगका** *स्त्री०* गंगा।

**गंगा** *स्त्री०* [सं०] भारत की पवित्रतम नदी, भागीरथी, जाह्नवी। **-गति** *स्त्री०* गंगा लाभ, मोक्ष। **-जमुनी** *वि०* [हिं०] दो रंगा, काला-उजला, मेल-मेलाप वाला। **-जल** *पु०* पवित्र जल, *उदा०* 'सोने सुराही गंगाजल पानी।' **-दुअर** *पु०* हरिद्वार। **-धर** *पु०* शिव, समुद्र। **-पार** *पु०* गंगा का दूसरा तट। **-पुजैया** *स्त्री०* [हिं०] गंगा की पूजा। **-लाभ** *पु०* मृत्यु, निधन। **-सागर** *पु०* तीर्थ, जहाँ गंगा सागर से मिलती है। **-नहाइल** *मुहा०* कठिन कार्य को पूरा करना। *लोक०* 'गंगा के धार, हाकिम के मन, केहू ना जाने।'

**गंगट** *पु०* एक प्रकार की मछली।

**गंगवट** *पु०* गंगा की मिट्टी जो चन्दन लगाने के काम में आती है।

**गंगला** *पु०* एक प्रकार का शलजम।

**गंगाजली** *स्त्री०* वह धातु काँच या मिट्टी की सुराही, जिसमें गंगाजल लाया जाता है; यज्ञादि अवसर पर भोजन के समय पानी चलाने का पात्रविशेष।

**गंगेआ** *पु०* पूर्वी चम्पारण जिले में वेदीवन के खँडहर के निकट का प्राचीन बड़ा तालाब; प्राचीनकाल में राजमहल के चारों ओर सुरक्षा की दृष्टि से खोदा गया गहरा गड्ढा, जो अब झील की शक्ल में उपलब्ध है।

**गंगोतरी** *स्त्री०* गंगोत्री। वह स्थान जहाँ से गंगानदी निकलती है।

**गंज** *स्त्री०* [फा०] राशि, ढेर; बाजार अनाज की मंडी। *पु०* सिर के बाल उड़ने का रोग, चाई; खल्वाट।

**गंजन** *पु०* परेशानी, कष्ट; अवज्ञा, तिरस्कार, नाश।

**गँजही** *वि०* गाँजा पीने की चिलम।

**गंजा** *वि०* गंज रोग वाला।

**गंजाई** *स्त्री०* फसल को एक स्थान पर एकत्रित करने की प्रक्रिया।

**गंजाड़ल** *सक०* घास-पात को सड़ाने के लिये पानी वाले खेत की जुताई करना।

**गँजाड़ा** *पु०* लोहे के छेदों से बना घेरा।

**गँजावल** *पु०* गाँज लगवाना, इकट्ठा करवाना।

**गंजास** दे० 'गँजास'।

**गँजास** *पु०* खरपात के लगा रहने या उगने से उत्पन्न गन्दगी।

**गँजिआ** *स्त्री०* [सं० गञ्जिका] छोटी थैली या बोरिया, घास रखने की रस्सी की थैली।

**गंजी** *स्त्री०* छोटी कुरती, जो शरीर में चिपकी रहती है; कन्दा, शकरकन्द।

**गँजेड़ी** *वि०* गाँजा पीने वाला। *लोक०* 'गँजेड़ी यार किसके, दम लगाके खिसके।'

**गँजोरल** *सक०* किसी स्थान में बहुत सी चीजों को ठूसना या रखना।

**गँठकटा** *पु०* [हिं० गाँठ+काटना] चोर, ग्रन्थिभेदक।

**गंठजोड़ा** *पु०* [हिं० गाँठ+जोड़ना] गँठबन्धन।

**गठबंधन** *पु०* [सं० ग्रन्थिबन्धनं] वैवाहिक रस्म।

**गंड** *पु०* [सं०] गाल, कनपटी; घेघा, गाँठ। **-माला** *स्त्री०* [सं०] कण्ठमाला। **-माली** *वि०* गण्डमाला रोग से ग्रस्त।

**गँडतर** *पु०* शिशुओं के मलमूत्र विसर्जन हेतु उनके नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा।

**गँडिआवल** *सक०* गठरी बाँध देना, धोती की लपेट में छिपा देना।

**गँड़उघरा** *वि०* जिसका चूतड़ उघार हो, बेशर्म।

**गंडक** *पु०* गण्डकी नदी का तटस्थ भाग। *स्त्री०* गण्डकी।

**गँड़कटउअल** *पु०* परस्पर हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति या कार्य।

**गँड़गस्त** *स्त्री०* व्यभिचारिणी स्त्री। *उदा०* 'छउड़ी छिनार गँड़गस्ता कहाँ बाजार कहाँ रासता।' लोक०

**गँड़गोआर** *पु०* एक प्रकार का कीड़ा, जिसके बहुत से पैर होते हैं।

**गँड़जर** *वि०* जरा सी बात में नाराज हो जाने वाला व्यक्ति, तुनुकमिजाज।

**गँड़जोरिया** *वि०* जिसका चूतड़ जुटे हों, ऐसा कीड़ा।

**गँड़तर** दे० 'गँडतर'।

**गँड़ पोंछना** *पु०* बच्चे का मल साफ करने का टुकड़ा।

**गँड़फट्टो** *पु०* अति कष्टकर स्थिति।

**गँड़बहबल** *पु०* नासमझ, विवेकहीन।

**गँड़बाजी** *पु०* बदमाशी।

**गँड़बेटा** *पु०* वह पुत्र, जो पुरुष के गुदामार्ग से पैदा हुआ हो (व्यंग्यात्मक मजाक)।

**गँड़भवनिया** *वि०* मूर्ख; गैरजिम्मेदार।

**गँड़मुड़िया** *पु०* ऐसी स्थिति, जहाँ सोने में लोगों को यह विचार नहीं हो कि किधर सिर हो और किधर पैर।

**गँड़मोथी** *स्त्री०* मोथा की जाति की एक पतली और छोटी घास।

**गँड़हरुआ-गँड़हर** *स्त्री०* एक प्रकार की घास।

**गंडा** *पु०* चार कौड़ियों की इकाई, चार वस्तुओं की इकाई, ताबीज।

**गंडाढार** *पु०* ऊख की पहली सिंचाई।

**गँड़ारी** *पु०* क्यारी।

**गँड़ास** *पु०* चौपायों के लिए चारा काटने का लोहे का हथियार।

**गँड़ासा** *पु०* एक प्रकार का लोहे का हथियार, जिसका उपयोग मार-काट में होता है।

**गँड़ासी** *स्त्री०* चारा, घास काटने का उपकरण।

**गँड़िआठ** *पु०* चूतड़ का ऊपरी भाग।

**गँड़िआह** *वि०* बदमाश; जिस पर कोई भरोसा नहीं किया जा सके।

**गँड़ेरी** *स्त्री०* एक जाति, जो भेड़ पालती है।

**गंद** *स्त्री०* [फा०] गन्दगी, सड़ान्ध।
**गंदगी** *स्त्री०* [फा०] दे० 'गंद'।
**गँदला** *वि०* गन्दा; मैला-कुचैला।
**गंदा** *वि०* मलिन, अशुद्ध; कलुषित।
**गँदौरा** *पु०* खाद; बुहारन।
**गंध** *स्त्री०* महक; दुर्गन्ध।
**गंधक** *पु०* [सं०] खनिज पदार्थ।
**गंधकी** *स्त्री०* एक मक्खी, जो धान के पौधों को हानि पहुँचाती है।
**गंधरप** *स्त्री०* गायन-वृत्ति अपनाने वाली एक जाति, गन्धर्व।
**गंधरब** दे० 'गंधरप'।
**गंधाइल** *अक०* महकना, दुर्गन्ध आना।
**गंधिक** *वि०* [सं०] गन्धवाला, *पु०* इत्रफरोश, गन्धक।
**गंधिया** *पु०* दुर्गन्ध करने वाला एक बरसाती कीड़ा, गन्धक।
**गंधी** *पु०* [सं०] इत्रफरोश; खटमल।
**गंधीला** *वि०* गन्दा, *उदा०* 'बहता पानी निर्मला, बँधा गंधीला होय।'
**गँव** *स्त्री०* घात, दाँव।
**गँव-गँई** *स्त्री०* ढंग, तरीका, युक्ति, उपाय।
**गँवई** *स्त्री०* गाँव की बस्ती।
**गँवरऊ** *वि०* ग्रामीणों का; गँवारों का।
**गँवरमसला** *पु०* गँवारों की कहावत, गाँवों में प्रचलित कहावत।
**गंवहिं** *अव्य०* चुपके से, धीरे से, गौंसे।
**गँवार** *वि०* गाँव में रहने वाला, देहाती; असभ्य, मूर्ख।
**गँवारा** *पु०* ताजिया के विसर्जन के एक रोज पूर्व का दिन जब ताजिया गाँव में द्वार-द्वार पर घुमाया जाता है; सत्य जो असह्य हो।
**गँवारी** *वि०* छोटा नागपुर की वन्य जातियों द्वारा प्रयुक्त आर्य भाषा का विकृत रूप।
**गँवावल** *सक०* उम्र बिताना; पास के धन को बर्बाद कर देना, गँवा देना।
**गँवे-गँवे** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।
**गँहकी** *स्त्री०* खरीददार।
**गइनी** *स्त्री०* मुसलमानों द्वारा गौ की कुर्बानी।
**गइरी** *स्त्री०* एक प्रकार का जलपक्षी।
**गइल** *अक०* जाना, हाथ से निकल जाना, घाटे में पड़ना। *लोक०* 'गइल मरद जे खाय खटाई।' *उदा०* 'गइल भँइसिया पानी में। दुधवो ना देलस जवानी में॥' - लोकगीत
**गइँची** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**गउँजिआइल** *अक०* धूएँ और हवा का बाहर नहीं निकलना; मन की बातों का प्रकट नहीं होना।
**गऊ** *स्त्री०* गाय।
**गउगरास** *पु०* गोचर भूमि; गाय के लिए निकाला हुआ व्यंजन।
**गउतम** *पु०* एक ऋषि, जिनके नाम पर हिन्दुओं का एक गोत्र चलता है।
**गउदान** *पु०* मृत्युकाल निकट आने पर संकल्प कर ब्राह्मण को दिया जाने वाला गोदान।
**गउवध** *पु०* गोहत्या।
**गउर-गनेस** *पु०* गोबर की पिड़िया, जिसे गौरी और गणेश का प्रतीक माना जाता है, *यौ०*।
**गउरछनी** *स्त्री०* गौ की रक्षा और पालन-पोषण के लिए बनी समिति, गोरक्षिणी।
**गउरा** *स्त्री०* गौरी के लिए आदरसूचक शब्द, गौरा, पार्वती।
**गउरिया** *स्त्री०* केले की एक जाति, जो तरकारी के लिए अच्छी समझी जाती है।
**गउरिहार** *पु०* थारुओं की एक उपजाति।

**गउरी** *स्त्री०* शिव की पत्नी, गौरी।
**गउरो-गुरो** *पु०* थारुओं की उपाधि।
**गउसाला** *स्त्री०* गोशाला।
**गउला** *पु०* अफवाह।
**गगन** *पु०* [सं०] आकाश, शून्य। **-कुसुम** *पु०* आकाश-कुसुम। **-गति** *वि०* आकाशचारी। **-गिरा** *स्त्री०* आकाश-वाणी। **-चुम्बी** *वि०* बहुत ऊँचा। **-पति** *पु०* इन्द्र। **-भेदी** *वि०* प्रचण्ड।
**गगरा** *पु०* लोहे, पीतल या ताँबे का बना घड़ा, कलश।
**गगरी** *स्त्री०* कलशी। *लोक०* 'गगरी अनाज भइल, जोलहन के राज भइल।' तथा 'गगरी भरल खिंचाते नइखे, सास ननद के ओठर हमरा से सहाते नइखे।'
**गचकल** *सक०* हजम करना; छिपाना; खा जाना।
**गचपच** *वि०* घिचपिच।
**गचकी** *स्त्री०* सड़क के टूटने से बने छोटे-छोटे गड्ढे।
**गचाक** *पु०* पानी में डूबने से उत्पन्न शब्द।
**गच्च** *पु०* खुश, अति प्रसन्न; पानी में डूबने का शब्द।
**गच्चों** *पु०* बच्चों का एक प्रकार की गोटी का खेल।
**गछउनी** *स्त्री०* पेड़ की छाया वाला स्थान।
**गछपक** *वि०* जो फल पेड़ पर ही पक जाता है।
**गछल** *अक०* [सं०] चल देना; स्वीकार करना।
**गछाइल** *अक०* पौधे का बड़ा और विस्तृत होना।
**गछाड़** *पु०* वृक्ष की छाया।
**गछुली** *स्त्री०* नया बाग; नया पेड़ जो अभी छोटा हो।
**गज** *पु०* [फा०] काठ या छड़, जिससे बन्दूक की नाल साफ की जाती है; हाथी; कपड़ा नापने का माप-दण्ड। 0.91 मीटर, 36 इंच अथवा 3 फीट।
**गजओबर** *पु०* प्रसव-घर।
**गजक** *पु०* तिल और चीनी से बना मिष्ठान्न।
**गजट** *पु०* सुनिश्चित, पक्का, सरकारी घोषणापत्र।
**गजपत्ता** *पु०* एक मोटा धान।
**गजब** *पु०* विचित्र, अद्‌भुत।
**गजबाँक** *पु०* हाथी का अंकुश।
**गजभरता** *पु०* अनेक प्रकार का काम; अनेक वस्तुओं का मिश्रण।
**गजमुकता** *स्त्री०* एक प्रकार का मोती, जो हाथी के मस्तक पर पाया जाता है। लोक विश्वास है कि स्वाती की बूँद पड़ने से ऐसा मोती पैदा होता है।
**गजबज** *पु०* अनेक बातों या कामों को एक साथ मिलकर गड़बड़ हो जाने की स्थिति।
**गजर-बजर** *पु०* यौ० कई अन्नों का मिश्रण।
**गजरा** *पु०* फूलों का हार; एक प्रकार का कन्द, गाजर।
**गजल** *स्त्री०* एक प्रकार की विधा, जिसका अधिक व्यवहार अरबी, फारसी और उर्दू में होता है; शृंगार कविता।
**गजाधर** *पु०* गदाधर।
**गजानन** *पु०* [सं०] गणेश।
**गजिया** *स्त्री०* एक औजार।
**गजी** *स्त्री०* [सं०] हथिनी।
**गजी** *पु०* हाथ का बुना कपड़ा, गाढ़ा। **-गाढ़ा** *पु०* मोटा, सस्ता कपड़ा।
**गजुआइल** *अक०* आँख में कीचड़ का आना; छोटे पौधे का बढ़कर खूब हरा होना।

**गजुर** *पु०* भिगोये अन्न से निकला अंकुर।
**गज्जन** दे० 'गंजन'।
**गझंडी** *स्त्री०* एक जंगली झाड़।
**गझिन** *पु०* घना, मोटा।
**गट** *स्त्री०* घोंटने, निगलने की आवाज।
**गटई** *स्त्री०* गला, गर्दन।
**गटकल** *सक०* गले के नीचे उतारना। निगलना, गटकना।
**गटगट-गटर-गटर** पानी या दूध जैसे तरल पदार्थ के पीने में गले से उत्पन्न शब्द, *अनु०*।
**गट पट** *स्त्री०* अवैध सम्बन्ध, लटपट।
**गट्टा** *पु०* पहुँचा; हुक्के की नली, जिसपर चिलम रहता है।
**गट्टी** *स्त्री०* आन्तरिक विचार।
**गठकोबी** *स्त्री०* तरकारीविशेष।
**गठरी** *स्त्री०* कपड़े में बँधा सामान। **-मोटरी** *स्त्री०* यात्री का सामान। **-कटल** *मुहा०* भारी रकम हाथ से निकल जाना। **-बाँधल** *मुहा०* यात्रा की तैयारी। **-मारल** *मुहा०* हथियाना, दूसरे का धन हड़पना।
**गठल** *अक०* सटे रहना; अधिक संख्या में एकत्रित होना।
**गठिया** *स्त्री०* सन्धिवात।
**गठियाइल** *सक०* गाँठ देना।
**गठीला** *वि०* गठा हुआ।
**गड़गड़** *स्त्री०* बादल की गरज; पीते समय हुक्का से निकला शब्द।
**गड़गड़ा** *पु०* एक प्रकार का हुक्का जिसकी नली बहुत लम्बी होती है।
**गड़गड़ाहट** *स्त्री०* गड़गड़ाने की आवाज।
**गड़बड़** *वि०* अस्त-व्यस्त, अनुचित।
**गड़बड़ाइल** *अक०* अव्यवस्थित होना।
**गड़ल** *अक०* दर्द करना, चुभना, धँसना। *वि०* गड़ा हुआ (धन)।
**गड़हा** *पु०* गड्ढा। *स्त्री०* गड़ही, गुड़ही।
**गड़ा** *पु०* काठ की गाड़ी; ढेर।
**गड़ाकू** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**गड़ाप** *पु०* गड़प।
**गड़ाम** *पु०* अचानक तेजी से आ जाने की आवाज।
**गड़ार** *पु०* पेड़ों में छेद कर रहने वाला एक सफेद कीड़ा।
**गड़ारी** *स्त्री०* गोल और घूमने वाला पहिया जिसके सहारे कुँए से पानी खींचा जाता है।
**गड़ावल** *सक०* चुभाना, धसाना, गड़ाना।
**गड़ियास** *पु०* ठीहा। जिस पर रखकर कुछ काटा जाता है।
**गड़िवान** *पु०* गाड़ी हाँकने वाला।
**गड़ी** *स्त्री०* छकड़ा। *उदा०* 'कबहूँ गड़ी पर नाव कबहूँ नाव पर गड़ी' *-लोकोक्ति*।
**गड़ुरायन** *पु०* चम्पारण जिले के सोमेश्वर में पाया जाने वाला पौधा।
**गड़ूर** *पु०* एक विशालकाय पक्षी, जो विष्णु का वाहन माना जाता है। गरुड़।
**गड़ेर** *पु०* भेड़-बकरी का रखवाला।
**गड़ोरल** *सक०* एकटक देखना, टकटकी लगाकर देखना।
**गढ़** *पु०* राजाओं एवं जमींदारों का निवास स्थान; विशाल भवन, प्राचीन खण्डहर। **-पति** *पु०* गढ़ का प्रधान। **-वार** *पु०* गढ़वाल। **-जीतल** *मुहा०* कठिन, बड़ा काम करना।
**गढ़ल** *सक०* कुछ बनाना, निर्माण करना, *लोक०* 'गढ़ल बात रूखर होला।'
**गढ़ा** *पु०* गर्त, गार, धँसी जगह। **-खोदल** *मुहा०* नुकसान पहुँचाने का काम करना। **-भरल** *मुहा०* घाटा पूरा करना। **-में गिरल** *मुहा०* पतन होना।

**गढ़ाई** *स्त्री०* गढ़ने का काम।
**गढ़िया** *पु०* गढ़ने वाला।
**गढ़ी** *स्त्री०* छोटा गढ़।
**गढ़ीमाई** *स्त्री०* नेपाल की तराई की एक देवी, जहाँ हर पाँचवें वर्ष मेला लगता है।
**गढ़ू** *पु०* कठिन काम।
**गत** *वि०* बीता हुआ, मरा हुआ।
**गतर** *पु०* अंग।
**गतल** *वि०* दिवंगत; गया गुजरा।
**गतान** *पु०* वह करची या रस्सी, जिससे बोझा बाँधा जाता है, गाँत।
**गताल-खाता** *पु०* गयी-बीती या वसूल नहीं होने वाली रकम की लेखा-बही।
**गति** *स्त्री०* [सं०] जाना, गमन, रफ्तार, प्रवाह। **-भेद** *पु०* गाने की लय का टूटना। **-विधि** *स्त्री०* चेष्टा। **-सील** *वि०* गतिमान। **-हीन** *वि०* असहाय, गतिरहित।
**गते-गते** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे, समय बीतने के साथ-साथ।
**गतौरा** *पु०* ईख बाँधने की रस्सी।
**गत्ता** *पु०* कागज के कई परतों को जोड़कर तैयार किया गया कूट।
**गद** *पु०* ढोलक या तबले का वह भाग, जहाँ से गम्भीर ध्वनि निकलती है; रोग, विष।
**गदका** *पु०* लकड़ी के खेल में व्यवहृत काठ का ढाल जिस पर चमड़ा मढ़ा रहता है।
**गदगद** *क्रि०वि०* अति आनन्दित।
**गदगरल** *अक०* किसी वस्तु की यथेष्ट प्राप्ति के बाद अनिच्छा की स्थिति में रहना।
**गदपुरना** *पु०* एक प्रकार की वनौषधि; पुनर्नवा।
**गदबेर** *स्त्री०* गोधूलि, सन्ध्या।
**गदबेरा** *पु०* सन्ध्या, जब सूर्यास्त हो रहा हो, गोधूलि।
**गदर** *पु०* [अ०] क्रान्ति, विद्रोह, हलचल; एक प्रकार का धान, जो बसन्त ऋतु में तैयार होता है।
**गदरा** *पु०* कच्चा धान, भदरा।
**गदराइल** *अक०* फल आदि का पकने पर होना; जवानी में अंगों का भरना, गदराना।
**गदरावल** *सक०* इतना कुछ खिला देना जिससे अधिक खाने की स्थिति न हो।
**गदला** *पु०* थारुओं द्वारा तैयार देशी शराब।
**गदहई** *स्त्री०* मूर्खता।
**गदह-पचीसी** *स्त्री०* सोलह से पच्चीस वर्षों तक की आयु जब युवक अनुभवहीन होता हो, अनवधानता।
**गदहपूरना** *पु०* दे० 'गदपुरना'।
**गदहलोट** *स्त्री०* वह मिट्टी जहाँ गदहे लोटते हैं।
**गदहा** *पु०* दे० 'गधा'। *लोक०* 'गदहा दूबर सावन मास।'
**गदहिआ** *पु०* एक खानाबदोश जाति; गदही, मादा गदहा।
**गदही** *स्त्री०* चने और मटर की फसल को नुकसान करने वाला कीड़ा।
**गदानल** *अक०* महत्त्व देना, आदर देना।
**गदाल** *स्त्री०* चिड़ियों का झुण्ड, शोर।
**गदेना** *पु०* एक वनौषधि।
**गदेल** *वि०* गोदी का बच्चा।
**गदेला** *वि०* कम उम्र वाला।
**गद्दा** *पु०* रूई आदि भरकर बनाया गया तोसक।
**गद्दी** *स्त्री०* राजसिंहासन, मठ-मंहत का आसन; रूई भरकर बनाया गया मुलायम बिछौना।
**गद्य** *पु०* [सं०] पद्य का विलोम, जो छन्द में न हो। **-काव्य** *पु०* गद्य में की गई काव्य के गुण की रचना। **-पद्य** *पु०* वह रचना जिसमें गद्य पद्य दोनों हो।

**गधा** *पु०* खर, गदहा, रासभ। **-पन** *पु०* मूर्खता। **-पीटला से घोड़ा ना होला** *मुहा०* समझाने से कोई भला नहीं होता। **-पर चढ़ावल** *मुहा०* बेइज्जत करना।

**गन** *पु०* अनुचर, दूत, सेवक।

**गनगन** *स्त्री०* किसी वस्तु के तेजी से चलने की आवाज, *अनु०;* शरीर में कम्पन्न या सनसनी पैदा होने की स्थिति।

**गनगर** *वि०* वैसी गाय या भैंस जो अधिक दूध देती है।

**गनती** *स्त्री०* एक से सौ तक और उससे भी अधिक अंकमाला; संख्या निश्चित करने की विधि।

**गनना** *स्त्री०* विवाह के पूर्व वर-वधू की कुंडली से मंगल, अमंगल जानना एवं उपयुक्तता की गणना।

**गनल** *सक०* गिनना, संख्या निश्चित करना, एक दो कहते हुए पढ़ना।

**गनावल** *सक०* गिनती कर निश्चित संख्या का पता देना; किसी काम को करने की इच्छा नहीं रहने पर भी केवल मौखिक ब्यौरा देना।

**गनाल** *स्त्री०* एक तरह की तोप।

**गनिका** *स्त्री०* गणिका।

**गनियारी** *स्त्री०* छोटी अरनी, एक झाड़, जिसकी लकड़ी रगड़ने से आग उत्पन्न होती है।

**गनी** *स्त्री०* [अं०] पटसन का बना मोटा टाट, जिसके बोरे बनते हैं। **-बैग** *पु०* बोरा।

**गनी-गरीब** *वि०यौ०* धनी-गरीब।

**गने-गने** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।

**गनेस** *पु०* शिव के पुत्र, गणेश, मंगलमूर्ति।

**गन्ना** *पु०* ईख, ऊख।

**गप** *स्त्री०* इधर-उधर की निष्प्रयोजन बातें, झूठी बात, डींग। **-उड़ावल** *मुहा०* झूठी खबर फैलाना। **-मारल या हाँकल** *मुहा०* बकवास करना।

**गपडेढ़वा** *पु०* बढ़ा-चढ़ाकर बात को करने की क्रिया।

**गपागप** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक निगलने का काम।

**गपकावल** *सक०* चटपट निगल जाना।

**गपडोल** *पु०* डावाँडोल।

**गपस** *वि०* सघन (बुनाई)।

**गपसप** *पु०* मनोविनोद।

**गपोल** *वि०* गप हाँकने वाला।

**गप्फा** *पु०* बड़ा कौर।

**गब** *पु०* एक बार में रोपा जाने वाला धान के बीज का परिमाण।

**गबगब** *क्रि०वि०* बिना सोचे-समझे बोलना; जल्दी-जल्दी खाना।

**गबड़ा** *वि०* वह धान जिसमें अनेक प्रकार के धानों का मिश्रण हो।

**गबदी** *स्त्री०* वह भैंस, जिसका थन बड़ा हो और अधिक दूध देती हो।

**गब्बर** *वि०* घमण्डी, निडर, ढ़ीठ।

**गभड़ल** *अक०* अन्न के पौधों का बाल निकलने की पूर्व स्थिति में पहुँचना, गाभा लगना।

**गभड़ू** *वि०* चढ़ती जवानी वाला, बलिष्ठ शरीर वाला (नौजवान), गबरू।

**गभिना** *वि०* वह मादा पशु जिसके पेट में बच्चा हो।

**गभिनाइल** *अक०* मवेशियों का पाल खाना।

**गभुआइल** *अक०* क्षुब्ध होकर मौन रहना; क्रोध भरी बातें करना।

**गम** *पु०* ख्याल, ध्यान, दुःख। **-खाइल** *मुहा०* सह लेना।

**गमक** *पु०* सुगन्ध, महक।
**गमकल** *अक०* सुगन्ध देना, महकना।
**गमगम** *वि०* सुगन्धयुक्त।
**गमगमावल** *अक०* वातावरण में विशेष गंध लाना।
**गमगर** *वि०* गम्भीर, परिस्थितियों को समझनेवाला, शान्त प्रवृत्ति का।
**गमछा** *पु०* अँगोछा, कन्धे पर रखने की छोटी चादर।
**गमछी** *स्त्री०* अँगोछी।
**गमड़ि** *स्त्री०* एक प्रकार का भदैया धान।
**गमला** *पु०* (अ० गम) फूल, पेड़, पौधा लगाने का बर्तन, कमोड।
**गमागम** *पु०* [सं०] आना-जाना।
**गमार** *वि०* गँवार।
**गमि** *स्त्री०* पहुँच, *उदा०* 'अगम अगोचर गमि नहीं तहाँ जगमगै जोति।'
**गमी** *स्त्री०* मृत्यु।
**गम्हाउर** *स्त्री०* गर्मी।
**गम्हार** *पु०* एक प्रकार का वृक्ष, जिसकी लकड़ी में सुगन्ध होती है।
**गम्हीर** *वि०* गम्भीर।
**गय** *पु०* [सं०] एक राक्षस, जिसको ब्रह्मा, विष्णु आदि से मिला हुआ वरदान गया के तीर्थत्व का कारण बना।
**गय** *पु०* गज, हाथी।
**गयल** *स्त्री०* गली, रास्ता।
**गयवाल** *पु०* गया का पण्डा।
**गया** *पु०* दक्षिण बिहार में स्थित एक तीर्थ, जहाँ पिण्डदान किया जाता है, गया में होने वाला पिण्डदान।
**गयारी** *स्त्री०* ग्रामवासियों के काम आने वाली वस्तु सार्वजनिक उपयोग की चीज।
**गयेंण** *पु०* गाँव। लोगों के निवास का स्थान।
**गरंथ** *पु०* मोटी पुस्तक, हस्तलिखित पोथी, ग्रन्थ।
**गर** *पु०* [हिं० गल] गला। *लोक०* 'गर परल ढोलक बजावहीं के पड़ी।'
**गरई** *स्त्री०* एक प्रकार की छोटी मछली।
**गरक** *वि०* [अ०] डूबा हुआ, नष्ट।
**गरकाब** *वि०* [अ०] डूबा हुआ।
**गरकिया** *पु०* गलकी; मजे की वर्षा।
**गरगज** *पु०* जोर की आवाज; फाँसी की टिकठी; तख्तों से बनी हुई नाव की छत।
**गरगट** *पु०* किसी वस्तु के गले से नीचे उतरने में रुकावट की स्थिति।
**गरचुनी** *स्त्री०* गरई मछली का थोड़ा बड़ा बच्चा।
**गरज** *स्त्री०* मतलब, जरूरत. आशय, प्रयोजन, इच्छा।
**गरजल** *अक०* जोर-जोर से बोलना; बादल का गरजना।
**गरजी** *वि०* गरजमन्द।
**गरजुआ** *पु०* एक प्रकार की खुभी।
**गरजू** *वि०* गरजी।
**गरदन** *स्त्री०* गला, ग्रीवा।
**गरदनियाँ** *स्त्री०* गर्दन में हाथ लगाकर धकेलने की स्थिति।
**गरदाँव** *पु०* मवेशियों के गले की रस्सी; गिराँव।
**गरदा** *पु०* [फा० गर्द] धूल, अति छोटा कण, गुबार, खाक।
**गरदाखोर** *वि०* धूल पड़ने से तुरन्त गन्दा या खराब नहीं होने वाला।
**गरदाज** *पु०* अंगीकार, स्वीकार।
**गरदेल** *सक०* खुरपी से खेत की घास निकालकर अलग करना।
**गरब** *पु०* गर्व, घमण्ड।

**गरबई** *स्त्री०* घमण्ड, अभिमान।
**गरबाइल** *अक०* गर्व करना।
**गरबझू** *वि०* गले से स्पष्ट बोली नहीं निकलने की स्थिति।
**गरभ** *पु०* पेट के अन्दर बच्चा रहने की स्थिति, गर्भवती; घर का भीतरी भाग।
**गरभखीला** *स्त्री०* दो पटरियों को जोड़ने के काम में आनेवाली ऐसी काँटी, जिसमें दोनों ओर नोक हो।
**गरम** *वि०* [फा० गर्म] तप्त, उष्ण, गर्म।
**गरम-गरमागरम** *वि०* ताजा, गर्म-गर्म।
**गरमल** *अक०* बिना सुखाये या भींगे अन्न का गर्म होना।
**गरमसल** *अक०* वातावरण का गर्म होना।
**गरमा** *पु०* ग्रीष्म ऋतु में पैदा होने वाली फसल।
**गरमाइल** *अक०* तप्त होना, गर्म होना; क्रुद्ध होना।
**गरमावल** *अक०* वातावरण में गर्मी रहना।
**गरमिआह** *वि०* वह व्यक्ति, जो सुजाक की बीमारी से पीड़ित हो।
**गरल** *अक०* पानी आदि तरल पदार्थ का चूकर एकत्रित होना।
**गरसल** *सक०* [सं० ग्रसनम्] लीलना, निगलना।
**गरह** *पु०* सौर-मण्डल के नव प्रमुख तारे, जिनकी गति का प्रभाव मनुष्य के ऊपर पड़ता हो; कष्ट, तकलीफ; ग्रह का प्रकोप।
**गरहन** *पु०* पुराणों के अनुसार राहु द्वारा चन्द्रमा और सूर्य के ग्रसने की स्थिति—ग्रहण; पकड़ने या लेने की क्रिया; स्वीकार, मंजूरी।
**गरहन पेरू** *वि०* ग्रहण के कारण जो विकलांग हो गया हो, ऐसा बच्चा।
**गरारी** *स्त्री०* कुल्ला; कुल्ली करने की दवा।
**गरिआवल** *सक०* गाली देना, अपशब्द कहना।
**गरियार** *पु०* काम में बैठ जाने वाला बैल।
**गरी, गड़ी** *स्त्री०* नारियल के फल के भीतर का मुलायम गूदा।
**गरीब** *वि०* [अ०] निर्धन, दीन-हीन। **-खाना** *पु०* कुटिया (नम्रतावश अपने घर को कहते हैं)। **-गुरबा** *पु०* दीन-दरिद्र। **-निवाज** *वि०* दीन या दयालु। **-परवर** *वि०* गरीबों का पालन करने वाला।
**गरीबी** *स्त्री०* [अ०] निर्धनता, दीनता।
**गरू** *वि०* भारी; वजनदार; गम्भीर।
**गरुअ** *वि०* वजनदार।
**गरुअट** *पु०* रोली।
**गरुआरी** *स्त्री०* पशुओं की सेवा-टहल।
**गरूर** *पु०* [अ०] गर्व, घमण्ड।
**गरूहन** *पु०* वह धान, जो अधिक पानी में होता है।
**गरेरी** *स्त्री०* चरखी, घिरनी।
**गरेसल** *सक०* तंग करना; किसी के साथ दुराग्रह पूर्ण बातें करना।
**गरोह** *स्त्री०* झुण्ड, जत्था, जमात, गिरोह।
**गर्द** *वि०* [सं०] चिल्लाने वाला। *स्त्री०* [फा०] धूल, राख। **-खोर** *वि०* धूल को सोखने वाला।
**गर्दी** *स्त्री०* छोटे-छोटे धूलकण; घुन के काने से निकली अन्न की धूली।
**गर्बीला** *वि०* घमण्डी।
**गर्हन** *स्त्री०* बनावट, गठन, आकृति।
**गर्हल** *सक०* काठ, मिट्टी, धातु या पत्थर को काट-छाँट कर कोई वस्तु बनाना।
**गर्हुआइल** *अक०* भारी होना, गम्भीर होना, घना होना।

**गई़** *वि०* कठिन; गरिष्ठ।

**गलंस** *पु०* वह सम्पत्ति जिसका कोई मालिक न हो।

**गलइचा** *पु०* मोटे तागे से निर्मित बेलबूटेदार कालीन।

**गलकंबल** *पु०* गाय-बैल के गले के नीचे लटकने वाला भाग, झालर।

**गलगंड** *पु०* घेघा।

**गलगल** *वि०* अत्यन्त मुलायम; आर्द्र, तर, गीला। *स्त्री०* एक प्रकार का बड़ा नींबू; एक प्रकार का रोग।

**गलगलाइल** *अक०* मुँह में पानी भर जाने पर या दबे गले से अस्पष्ट शब्द करना।

**गलघोंघी** *स्त्री०* गले के भीतर की जगह (मवेशियों की)।

**गलचउड़ी** *स्त्री०* हँसी, मजाक; गलचौरी।

**गलजोरा** *पु०* मवेशियों के गले की रस्सी।

**गलतंस** *वि०* गया-गुजरा, निकृष्ट।

**गलत** *वि०* [अ०] अशुद्ध, झूठ; मिथ्या, भ्रममूलक।

**गलतकिया** *स्त्री०* छोटा और मुलायम तकिया, जो गाल के नीचे रखा जाता है।

**गलथेंथरई** *स्त्री०* दुराग्रहपूर्वक गलत बातें बोलना।

**गलफर** *पु०* गाल के निकट या मुख तक का भाग; जल जन्तुओं का वह अवयव, जिससे वे पानी में साँस लेते हैं, गलफड़ा।

**गलफुल्ला** *वि०* वह व्यक्ति, जिसके गाल पर मांस हो।

**गलबँहिआ** *स्त्री०* किसी के गले में बाँह डालकर चलने की क्रिया, आलिंगन।

**गलबल** *पु०* कच्चे मक्के या बिना सुखाए मक्के का भूँजा; डभका; मनुष्यों के बोलने की अस्पष्ट ध्वनि।

**गलमोंछा** *पु०* गाल तक रखी गई मूँछ।

**गलसोद** *पु०* कान के निकट सूजन की बीमारी।

**गलर-गलर** *वि०* मुलायम।

**गलरल** *अक०* पानी में गलकर मुलायम होना (पौधा)।

**गलल** *अक०* गलना, पिघलना; दुर्बल होना, नष्ट होना।

**गलवठल** *सक०* खाद्य-पदार्थ को इतनी अधिक मात्रा में ले लेना कि गाल भर जाए।

**गलहर** *पु०* हरिस और हल के बीच का हिस्सा।

**गला** *स्त्री०* गर्दन, कण्ठ, हलक, स्वर। **-बाज** *पु०* अच्छा गायक। **-बाजी** *स्त्री०* ताल-सुर से गाना। **-कटावल** *मुहा०* जान देना, हानि उठाना। **-काटल** *मुहा०* धोखा देना, वध करना। **-खुलल** *मुहा०* आवाज का साफ होना। **-घोंटल** *मुहा०* जान लेना। **-बैठल** *मुहा०* स्वर विकृत होना। **-रेतल** *मुहा०* हलाल करना, पीड़ा देना।

**गलाऊ** *वि०* गलने वाला।

**गलावल** *सक०* ठोस पदार्थ को पानी में डालकर या आग पर चढ़ाकर तरल बनाना।

**गलिआइल** *अक०* डूबते समय गाल तक पानी का पहुँच जाना।

**गलिआरी** *स्त्री०* स्त्रियों के निजी कार्य के लिए घर का सुरक्षित भाग, गली की तरह का छोटा रास्ता।

**गलिआवल** *सक०* किसी मवेशी का गाल दबाकर काढ़ी या ढरकी से खली या कोई दवा पिलाना।

**गली** *स्त्री०* घरों की कतार के बीच का रास्ता, स्त्रियों के निजी काम के लिए बना घेराव। **-कूचा** *पु०* गली।

**गलीचा** *पु०* सूत या ऊन के धागे से बनी कालीन।
**गलीज** *पु०* [अ०] गन्दी जगह; मैला, कूड़ा करकट, पाखाना, मल। *वि०* अशुद्ध, नापाक, गन्दा, मैल।
**गलीत** *वि०* जीर्ण, गलित।
**गल्ला** *पु०* अन्न, अनाज; वह थैली, जिसमें पैसा रहता है।
**गवँई** *वि०* गाँव का।
**गवइया** *वि०* गाने वाला, गायक।
**गवई** *स्त्री०* छोटी चिड़िया। *उदा०* 'देखे में गवई, लीलेके गूलर' -लोकोक्ति।
**गवठल** *अक०* अधिक भोजन से गले तक भर जाना; अघाए रहना।
**गवत** *पु०* मवेशियों का चारा।
**गवतचोर** *वि०* वह मवेशी, जो चारा कम खाता है।
**गवदारी** *स्त्री०* भोजन-खर्च।
**गवनई** *स्त्री०* गायन।
**गवनहरी** *स्त्री०* वह वधू, जो प्रथम बार पति-गृह जाती है; गीत गाने वाली स्त्री।
**गवना** *स्त्री०* विवाह के बाद वधू का प्रथम बार अपने पति के घर जाने की रस्म।
**गवनिहार** *पु०* गायक।
**गवर** *पु०* सलाह, विचार; गौर।
**गवरइया** *स्त्री०* एक प्रकार की चिड़िया, जो घरों में घोसला बनाकर रहती है।
**गवा** *पु०* अण्डी का फल।
**गवाह** *पु०* [फा०] साक्षी, सच्चाई को बताने वाला व्यक्ति।
**गवाही** *स्त्री०* [फा०] साक्ष्य, गवाह का बयान।
**गवें-गवें** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।
**गस** *पु०* [फा०] मूर्च्छा, बेहोशी।
**गसबन** *वि०* अनधिकृत।
**गसल** *सक०* कसकर बाँधना, जकड़ना। *वि०* सटा हुआ, सघन।
**गसिआवल** *सक०* कसना; किसी प्रकार की रियायत नहीं करना।
**गस्त** *पु०* घूमना, चक्कर, भ्रमण; दौरा।
**गस्सा** *पु०* दो अँगुलियों के बीच का भाग।
**गह** *स्त्री०* दो काठ को जोड़ने पर बीच का खाली स्थान, टेक।
**गहगड्ड** *वि०* गहरा रंग; कड़ा नशा।
**गहगह** *वि०* आनन्द-उल्लास से भरा हुआ। [अ०] धूमधाम से, उत्साह से।
**गहे-गहे** [अ०] धूमधाम से।
**गहदल** *अक०* अपने को किसी बात में पूर्ण जानकर गर्व अनुभव करना।
**गहना** *पु०* जेवर, आभूषण।
**गहबर** *वि०* दुर्गम, गह्वर।
**गहमह** *स्त्री०* चहल-पहल।
**गहरा** *वि०* उथला का उलटा, निम्नगामी।
**गहराई** *स्त्री०* गहरेपन की माप।
**गहरेबाजी** *स्त्री०* खूब तेज दौड़ाने की क्रिया।
**गहाई** *स्त्री०* गहन, पकड़।
**गहागह** *वि०* गम्भीर, घना। प्रफुल्ल, प्रसन्नता से भरा हुआ।
**गहिर** *वि०* गहरा; किसी बात के तह तक जाने वाला।
**गहिरावल** *सक०* अधिक गहरा बनाना।
**गहुँअन** *पु०* गेहूँ के रंग का एक विषैला सर्प।
**गहुँआ** *वि०* गेहूँ के रंग का, गेहुँआ।
**गहुआ** *पु०* हाथ-पैर से सँड़सी की तरह पकड़ने की क्रिया।
**गहुँआना** *वि०* गेहुँआ रंग का (साँप)।
**गहूँ** *पु०* गेहूँ।
**गाँइस** *स्त्री०* खोज।

**गांगी** *स्त्री०* गंगा से निकली धारा। -**जमुनी** *वि०* एक बड़ा और दूसरा छोटा हँसुली नामक आभूषण।

**गांङ** *पु०* झगड़ा।

**गाँज** *पु०* बाँस की कमचियों का बना मछली पकड़ने का हथियार; राशि; ढेर।

**गाँजल** *सक०* ठूँस-ठूँस कर खाना; ढेर लगाते जाना, छोटी जगह में अधिक वस्तुओं का रखना।

**गाँजा** *स्त्री०* मैदे की बनी एक मिठाई।

**गाँजा** *पु०* भाँग की जाति का नशीला पदार्थ।

**गाँठ** *स्त्री०* [सं० ग्रन्थि] गुत्थी, गिरह, टेंट, गट्टा। -**कतरा** *पु०* जेब काटने वाला, पॉकेटमार, ठग। -**गोभी** *स्त्री०* जड़ से ऊपर तक गाँठ वाली गोभी। -**कटल** *मुहा०* जेब कटना, ठगा जाना। -**खुलल** *मुहा०* उलझन दूर होना। -**जोड़ल** *मुहा०* गठबंधन करना। -**पड़ल** *मुहा०* मन में बैर-बुराई पैदा होना। -**बाँधल** *मुहा०* अच्छी तरह बात याद करना।

**गाँठल** *सक०* गिरह लगाना, जोड़ना।

**गाँठी** *स्त्री०* डण्ठल का गाँठदार टुकड़ा।

**गाँड़** [सं०] गुदा।

**गाँड़ा** *पु०* ईख बोने हेतु काटा हुआ टुकड़ा।

**गाँड़ी** *स्त्री०* गाँड़ *लोक०* 'गाँड़ी परना लत्ता, चले कलकत्ता।'

**गाँडू** *वि०* अप्राकृतिक यौनाचार (गुदा-मैथुन) कराने वाला।

**गाँतल** *सक०* किसी वस्त्र को शरीर में लपेटे रहना।

**गाँती** *स्त्री०* कपड़े का टुकड़ा, जिसका उपयोग जाड़े से बचने के लिए गले में बाँधकर किया जाता है।

**गाँथल** *सक०* [सं० ग्रन्थने] गूँथना, मोटी सिलाई करना।

**गाँधी** *पु०* गुजराती वैश्यों की उपाधि; महात्मा गाँधी।

**गाँव** *पु०* ग्राम, ग्रामीणों के बसने की जगह।

**गाँव-गिराव** *पु०* ग्राम, गाँव-जवार।

**गाँसल** *अक०* चुभनी और तीखी बातें बोलना; गूँथना, सालना, छेदना, चुभोना।

**गाँसा** *पु०* दो अँगुलियों के बीच की जगह।

**गाँसी** *स्त्री०* ताना, व्यंग्य; कपट, छलछन्द।

**गाइ** *स्त्री०* गाय। *लोक०* 'गाइ गुन बछरू।'

**गाइड** *पु०* [अं०] पथ-प्रदर्शक।

**गाऊँज-माऊँज** *वि०* *यौ०* गड़बड़, अनियमित।

**गाउज** *पु०* मुँह से नकला कफ सा सफेद पदार्थ, फेन, गाज।

**गागर** *पु०* घड़ा। *स्त्री०* गगरी।

**गागर-गागल** *पु०* एक बड़ी जाति का नींबू।

**गाछ** *पु०* बड़ा पेड़। *उदा०* 'गाछे कटहल ओठे तैल।'

**गाछी** *स्त्री०* वाटिका, बगीचा; छोटा पौधा।

**गाज** *पु०* फेन, झाग।

**गाजर** *स्त्री०* एक प्रकार का कन्द। *लोक०* 'गाजर चलेलन न्योतन सकरकंद के।'

**गाजल** *अक०* अति हर्षित होना, उत्साहित होना।

**गाजा-बाजा** *पु०* हर्ष के अवसर पर उत्सव मनाने के लिए वाद्य यंत्र।

**गाटा** *पु०* कलाई।

**गाठल** *सक०* घुसाना; रोब जमाना।

**गाड़ल** *सक०* गड्ढे के अन्दर किसी वस्तु को गाड़ देना, जमीन में दफनाना, धरती में धँसाना; छिपाना, गुप्त रखना।

**गाडर** *पु०* लोहे का मोटा और मजबूत खम्भा जो मकान या पुल में लगता है, गार्डर।

**गाड़ी** *स्त्री०* पहिये के सहारे चलने वाली सवारी। **-खाना** *पु०* गाड़ी रखने का स्थान। **-वान** *पु०* गाड़ी हाँकने वाला।
**गाढ़** *पु०* संकट, कठिनाई; करघा।
**गाढ़ा** *वि०* जो अधिक पतला न हो, गहरा। **-दिन** *मुहा०* मुसीबत के दिन।
**गाढ़े** [अ०] कसकर, जोर से, अच्छी तरह।
**गात** *पु०* [सं० गात्रम्] शरीर की बनावट; बोझा बाँधने वाली घास की रस्सी।
**गाता** *पु०* जिल्द, मोटा कागज, कूट, गत्ता।
**गाद** *स्त्री०* तेल के नीचे बैठी हुई मैल, तलछट।
**गादा** *पु०* गदा, देशी मुगदर, जिसका उपयोग पुरातन युग में युद्ध करने के लिए होता था; देहाती पान का हरा पत्ता; अधपका अन्न।
**गादी** *स्त्री०* बैठने का स्थान, गद्दी।
**गादुर** *पु०* चमगादड़।
**गाध** *वि०* [सं०] उथला, थाह।
**गाधि** *पु०* [सं०] विश्वामित्र के पिता।
**गाधेय** *पु०* [सं०] विश्वामित्र।
**गाधेया** *स्त्री०* [सं०] सत्यवती।
**गान** *पु०* [सं०] गीत, गाना।
**गाना** *पु०* गीत, संगीत।
**गाफल** *सक०* विवश करना, घेर लेना, धक्का देना।
**गाफिल** *वि०* बेसुध, असावधान, भूलने वाला।
**गाब-टोंई** *स्त्री०* एक प्रकार का गोटी का खेल।
**गाभ** *पु०* गाभा।
**गाभा** *पु०* फूटने के पूर्व पत्ते से लिपटा धान या गेहूँ का बाल।
**गाभाइल** *अक०* धान या गेहूँ में बाल फूटने के पूर्व पौधे के ऊपरी भाग का मोटा होना; पौधे का गर्भधारण करना।
**गाभिन** *वि० स्त्री०* गर्भवती मवेशी।
**गाभी** *स्त्री०* व्यंग्य, कटाक्ष।
**गाम** *पु०* ग्राम।
**गामी** *वि०* चलने वाला, गमन करने वाला।
**गामुक** *वि०* [सं०] जाने वाला।
**गाय** *स्त्री०* [सं० गौ] दूध देने वाला पशु, बैल की मादा; बहुत सीधा मनुष्य। *लोक०* 'गाय बाभन के घूमले से पेट भरेला।'
**गाय** *पु०* [सं०] गाना।
**गायक** *पु०* [सं०] गवैया।
**गायकी** *स्त्री०* गाने की कला।
**गायतल** *पु०* गैतल (बेकार)
**गायत्री** *स्त्री०* [सं०] वैदिक मंत्र *उदा०* 'गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री तेन कथ्यते', गायत्री मंत्र 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।'
**गायब** *वि०* [अ०] लुप्त, छिपा हुआ।
**गायवाना** *क्रि०वि०* पीठ पीछे, अनुपस्थिति में।
**गायेब** *वि०* [अ०] लुप्त, लापता।
**गारत** *वि०* बर्बाद, नष्ट।
**गारद** *पु०* [अं० गार्ड] सिपाहियों का जत्था।
**गारल** *सक०* निचोड़ना। *उदा०* 'आछो गात अकारथ गारल' लोक०।
**गारा** *पु०* कण्ठावरोध; मिट्टी, सीमेण्ट-बालू या चूना-सुर्खी का लेप, जिससे ईंटों की जुड़ाई होती है।
**गारी** *स्त्री०* दुर्वचन, अपशब्द; मजाक, विवाह में समधी को जेंवाते समय गाया जाने वाला गीत। **-गावल** *अक०* गाली गाना (वैवाहिक रस्म)।

**गाल** *पु०* कपोल, रुखसार। **-गूल** *पु०* व्यर्थ बात। **-फुलावल** *मुहा०* रूठना। **-बजावल** *मुहा०* बढ़-चढ़कर बातें करना।

**गालि** *स्त्री०* गाली।

**गाली** *स्त्री०* अपशब्द, अश्लील।

**गालू** *वि०* सच्ची बात को छिपाकर उसकी जगह मिथ्या बोलने वाला; गाल बजाने वाला, बकवादी, गप्पी, धोखा देने वाला।

**गाव** *पु०* [फा०] गाय-बैल। **-कुसी** *स्त्री०* गोवध। **-घप** *वि०* दूसरे के माल को हजम करने वाला। **-जोरी** *स्त्री०* बल, हाथापाई। **-तकिया** *पु०* बड़ा तकिया, मसनद। **-दी** *वि०* मूर्ख। **-जोरी दिखावल** *मुहा०* बल दिखलाना।

**गावन** *स्त्री०* गाने का ढंग।

**गावा** *पु०* धान के बीजों का समूह, जो एक बार में बोया जाय।

**गावा-परवाह** *पु०* धान की रोपनी की समाप्ति का दिन, यौ०।

**गावल** *सक०* गीत गाना; किसी बात को बार-बार और बहुत देर तक कहते रहना।

**गाविस** *स्त्री०* एक प्रकार की मिट्टी, जिसका उपयोग बर्तन रँगने में होता है।

**गास** *वि०* घना, तंग (चूड़ी चोली आदि)।

**गासल** *सक०* अच्छी तरह से रिक्त स्थान में पौधे को घना होने के लिए लगाना।

**गासा** *पु०* दो अँगुलियों के बीच की जगह।

**गाह** *वि०* जो आसानी से कोई वस्तु न दे; भारी धूर्त।

**गाहक** *पु०* ग्राहक, खरीददार।

**गाहकी** *स्त्री०* बिक्री।

**गाहा** *स्त्री०* गाथा।

**गाही** *स्त्री०* पाँच-पाँच का गिनने का एक मान।

**गाहे-बेगाहे** *क्रि०वि०* कभी-कभी।

**गिआन** *पु०* ज्ञान।

**गिउ** *स्त्री०* गला।

**गिचपिच** *वि०* पास-पास लिखा हुआ, अस्पष्ट।

**गिचर-पिचर** *वि०* घिचपिच।

**गिजगिजा** *वि०* पिलपिला, गीला।

**गिजा** *स्त्री०* [अ०] आहार।

**गिट-पिट** *स्त्री०* (अनु०) अंग्रेजी की अस्पष्टता, दुर्बोधता को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द।

**गिट्टी** *स्त्री०* कंकड़, ईंट आदि का छोटा टुकड़ा; तागे का छोटा गोला; ठीकरी; चिलम की गिट्टक।

**गिड़गिड़ाइल** *अक०* दीनतापूर्वक प्रार्थना करना।

**गिड़गिड़ाहट** *स्त्री०* गिड़गिड़ाने का भाव।

**गिटार** *पु०* एक बाजा।

**गिदगिदावल** *सक०* तंग करना, परेशान करना, बुरी तरह परेशान करना।

**गिदरा बोल** *वि०* एक व्यक्ति द्वारा किसी बात को करने के पश्चात् सबों का वही बोल उठने की स्थिति, यौ०।

**गिदरोई** *वि०* बतिया।

**गिधवा-धाँव** *स्त्री०* कष्टसाध्यकार्य, यौ०।

**गिनगिनाइल** *अक०* रोमांच होना; देह काँपना।

**गिनती** *स्त्री०* गिनने की क्रिया।

**गिनल** *सक०* गणना करना, हिसाब लगाना।

**गिन्नी** *स्त्री०* सोने का सिक्का।

**गिरगिट** *स्त्री०* छिपकली की जाति का एक जन्तु जो अपना रंग बदलता रहता है।

**गिरजा** *स्त्री०* शिव की पत्नी, पार्वती। *पु०* ईसाइयों का प्रार्थना-मन्दिर; गिरजाघर।

**गिरधर** *पु०* अपनी अँगुली पर पर्वत उठाने वाले, श्रीकृष्ण।

**गिरफ्तार** *वि०* [फा०] पुलिस द्वारा पकड़ा गया अपराधी। *स्त्री०* गिरफ्तारी।

**गिरमितिया** *पु०* शर्तनामा या वह इकरारनामा, जिसके आधार पर भोजपुरी क्षेत्र के निवासी बाहरी क्षेत्रों में काम पर जाते थे, गिरमिटिया।

**गिरल** *अक०* किसी ऊँची जगह से फिसलकर नीचे आना, ऊपर से धरती पर आ जाना।

**गिरवावल** *सक०* गिराने का काम दूसरे से कराना, *प्रे०*।

**गिरवी** *स्त्री०* [फा०] बन्धक, रेहन। **-गाँठा** *पु०* बन्धक। **-दार** *पु०* बन्धक रखने वाला। **-नामा** *पु०* रेहननामा।

**गिरस्ती** *स्त्री०* गृहस्थी।

**गिरह** *स्त्री०* [फा०] गाँठ, बन्धन, गुत्थी, उलझन, जेब, टेंट। **-कट** *पु०* पॉकेटमार। **-गीर** *वि०* गाँठवाला, पेंचदार। **-बाज** *पु०* वह कबूतर जो उड़ते हुए कलाबाजी करता है। **-काटल** *मुहा०* गाँठ काटना।

**गिरहथ** *पु०* खेतिहर, किसान; बाल-बच्चों वाला व्यक्ति। *स्त्री०* गिरहस्ती, घर पर रहने और खेती करने का भाव।

**गिरही** *स्त्री०* गृह, आवास।

**गिरा** *स्त्री०* [सं०] वाणी, सरस्वती, बोली, जबान।

**गिरावल** *सक०* नीचे फेंकना, गिराना।

**गिरानी** *स्त्री०* महँगी; अन्नाभाव, कमी।

**गिरि** *पु०* [सं०] पर्वत, संन्यासियों की उपाधि। **-कानन** *पु०* पहाड़ के ऊपर का बाग। **-जा** *स्त्री०* पार्वती; गंगा। **पति** *पु०* शिव। **-धर** *पु०* कृष्ण। **-राज** *पु०* हिमालय।

**गिरेह** *स्त्री०* गाँठ, गिरह; गज का सोलहवाँ भाग।

**गिरेहकट** *वि०* पाकिटमार, जेबकतरा; चाई।

**गिरेह-गाँठ** *स्त्री०* सहजरूप में नहीं खुलने वाला बन्धन।

**गिरेहबाज** *पु०* [फा०] कबूतर की एक जाति, जो उड़ते समय उलटती हुई कलाबाजी दिखलाती है, कलाबाजी दिखाने वाला व्यक्ति।

**गिलट** *पु०* एक हल्की एवं सस्ती चाँदी-सी धातु।

**गिलटी** *स्त्री०* किसी रोग की पूर्व सूचना के रूप में शरीर पर उभर आई छोटी-छोटी मांस-ग्रन्थियाँ।

**गिलबिल** *क्रि०वि०* अस्पष्ट बात।

**गिलम** *स्त्री०* ऊनी कालीन, गद्दा। *उदा०* 'गुलगुली गिलमै गलीचा है गुनीजन हैं'
......पद्माकर

**गिलहरी** *स्त्री०* चिखुरी, गिलाई।

**गिला** *पु०* [सं०] उलाहना, शिकायत।

**गिलाफ** *पु०* [फा०] तकिए की खोली, लिहाफ।

**गिलाय** *स्त्री०* गिलहरी।

**गिलावा** *पु०* मिट्टी का गारा।

**गिलास** *पु०* [अं० ग्लास] पानी पीने का गोल एवं लम्बा पात्र।

**गिल्ली** *स्त्री०* ठूँठ बाँस, गुल्ली।

**गिलेफ** *पु०* दे० 'गिलाफ'

**गिलोय** *स्त्री०* [फा०] गुडुच।

**गिलौरी** *स्त्री०* पान का तिकोना बीड़ा। **-दान** *पु०* पनडब्बा।

**गिल्टी** *स्त्री०* गिलटी।

**गिल्ली** *स्त्री०* गुल्ली।

**गिहथिन** *स्त्री०* गृहकार्य में चतुर स्त्री।

**गींजल** *सक०* खाद्य पदार्थ को भद्दे तरीके से मिलाना; छेड़-छाड़ करना।

**गीजन** दे० 'गंजन'।

**गीत** *पु०* ताल, लय आदि से नियमित गान, काव्य के नियमों को ध्यान में रखकर रचे गए गीत। **-गोविंद** *पु०* जयदेव-रचित संस्कृत का गीतिकाव्य। **-रूपक** *पु०* वह नाटक, जिसमें पद्य की प्रधानता।

**गीतक** *पु०* गान, स्तोत्र।

**गीता** *स्त्री०* [सं०] श्रीमद्भगवद्गीता, जो महाभारत का एक अंश है; गाथा, कथा।

**गीति** *स्त्री०* [सं०] गीत।

**गीती** *वि०* गाकर पढ़ने वाला, पाठ करने वाला।

**गीदड़** *पु०* सियार, शृगाल। **-भभकी** *स्त्री०* डराने हेतु झूठी धमकी देना।

**गीदर** *पु०* एक जंगली जन्तु, सियार; गीदड़। *वि०* डरपोक, कायर। *लोक०* 'गीदर रखे माँस की थाती।'

**गीध** *पु०* एक मांसाहारी पक्षी, गिद्ध।

**गीर** *पु०* संन्यासियों का एक भेद; अतिथों की उपाधि।

**गील** *वि०* भींगा हुआ; अति हर्षित।

**गीला** *वि०* नम, आर्द्र।

**गुंग** *वि०* गूँगा।

**गुंगा** *वि०* गुंग।

**गुंगी** *वि०* गुंगी।

**गुँगुआइल** *अक०* गूँगे की तरह बोलना।

**गुंचा** *पु०* [फा०] कली, झुरमुट।

**गुँज** *स्त्री०* एक गहना; गुच्छा।

**गुंजन** *पु०* [सं० गुञ्जनम्] भनभनाना, गुंजार।

**गुंजा** *पु०* किसी छिद्र में ठोका गया लकड़ी या बाँस का टुकड़ा।

**गुंजाइस** *स्त्री०* [फा०] किसी कार्य के लिए सहूलियत; समाई, अँटने की जगह।

**गुंड** *पु०* एक राग।

**गुंडई** *स्त्री०* दुष्टता।

**गुंडली** *स्त्री०* कुण्डली।

**गुंडा** *वि०* बदचलन, बदमाश।

**गुंबज** *पु०* [फा०] छत पर बनाए गए गोल खम्भे, गुम्बद।

**गुगुल** *पु०* एक पेड़ का गोंद, जो सुगन्ध या औषधि के काम में आता है। होम की एक सामग्री, गुग्गुल।

**गुड़ुआइल** *अक०* बन्द घर में धुँए का जमा होना।

**गुच्ची** *स्त्री०* गुल्ली डण्डा के खेल में बना गड्ढ़ा, जिसमें गुल्ली रखकर उसे डण्डे से उड़ाया जाता है।

**गुच्छ** *पु०* [सं०] गुच्छा, गुलदस्ता; झाड़। **-पच** *पु०* ताड़ का पेड़। **-फल** *पु०* अंगूर।

**गुच्छक** *पु०* [सं०] गुच्छ।

**गुच्छल** *पु०* [सं०] एक तरह की घास।

**गुच्छा** *पु०* पत्तों या फलों का समूह; फूँदना, झब्बा।

**गुच्छी** *स्त्री०* एक आभूषण।

**गुज-गुज** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे देर तक कार्य करने की स्थिति।

**गुजगुज्जा** *पु०* धान के खेत में पाई जाने वाली एक प्रकार की घास, जिसका फूल सफेद होता है।

**गुजर** *पु०* [अ०] निर्वाह, गुजारा। **-कट्टू** *वि०* किसी प्रकार काम चलाने योग्य। **-गुजारा** *पु०* काल-यापन। **-बसर** *पु०* निर्वाह। **-कइल** *मुहा०* दिन काटना। **-भइल** *मुहा०* निर्वाह होना।

**गुजरल** *अक०* उम्र बीतना, मौत होना।

**गुजरात** *पु०* भारत का एक प्रदेश, जहाँ महात्मा गाँधी एवं नरेन्द्र भाई मोदी जैसे अनेक महापुरुष हुए हैं।

**गुजराती** *वि०* गुजरात का; गुजरात की भाषा।

**गुजरिया** *स्त्री०* सुन्दरी। उदा० 'नइहर जाली रे गुजरिया'।

**गुजरी** *स्त्री०* ब्रजबनिता; कलाई का आभूषण, पहुँची।

**गुजार** *वि०* [फा०] अता करने वाला, जैसे शुक्रगुजार।

**गुजारल** *सक०* बिताना, काटना।

**गुजारा** *पु०* [फा०] रास्ता, घाट; निर्वाह।

**गुजारिस** *स्त्री०* [फा०] निवेदन, प्रार्थना।

**गुजी** *स्त्री०* नकटी।

**गुजुर-गुजुर** *क्रि०वि०* संख्या में अधिक; बार-बार।

**गुझिया** *स्त्री०* एक प्रकार का मिष्ठान्न; खोये या सेवई का एक पकवान।

**गुटका** *पु०* [सं०] छोटे आकार की पुस्तक, छोटी पर असरदार पुस्तक; पान में खाने का मसाला।

**गुट्ट** *पु०* [सं० गोष्ठ:] जमात, समूह; दल, यूथ।

**गुड़** *पु०* ईंख के रस को गाढ़ा करके बनाई हुई भेली। **-धनिया** *स्त्री०* लड्डू। **-खाइल आ गुलगुला से परहेज** *मुहा०* बड़ी बुराई करना, छोटी से बचना। **-गोबर कइल** *मुहा०* नष्ट करना।

**गुड़-गुड़** *पु०* हुक्का पीने से होने वाला शब्द।

**गुड़कल** *अक०* बैठ कर पैरों के बल चलना; गोल वस्तु में गति आना।

**गुड़गड़ी** *स्त्री०* एक प्रकार का नली वाला हुक्का, सटक; फरशी, गुड़गुड़ी।

**गुड़गुड़ाइल** *अक०* गुड़-गुड़ शब्द करना।

**गुड़हा** *पु०* गड्ढा। *स्त्री०* गडही।

**गुड़हा-गुड़ही** *पु० यौ०* वैसी जमीन, जो समतल नहीं हो।

**गुड़ही** दे० 'गड़हा'।

**गुड़िया** *स्त्री०* कपड़े की बनी पुतली। **-के खेल** *मुहा०* आसान काम। **-गुड़ी** *स्त्री०* गुड्डी, सिकुड़न। **-गुड़ीला** *वि०* गुड़ जैसा मीठा।

**गुड्डी** *स्त्री०* कागज की बनी पतंग, कनकौवा, चंग।

**गुड़ेरल** *सक०* आँख फाड़ कर देखना, क्रुद्ध होकर देखना, गुरेरना, घूरना।

**गुढ़ी** *स्त्री०* पौधे के कलम में बाँधी गई मिट्टी रोकने की रस्सी, मोजर।

**गुद** *पु० स्त्री०* गुदा, मलद्वार।

**गुदगर** *वि०* मांसल, जिसमें अधिक मांस हो; जिसमें गूदा अधिक हो ऐसा फल।

**गुद-गुदाइल** *अक०* काँख आदि स्थानों में स्पर्श करने से मीठी सनसनी का पैदा होना।

**गुदना** *पु०* दे० 'गोदना'।

**गुदरा** *पु०* फटे-पुराने कपड़ों को सीकर बनाया गया बिछावन, गुदड़ा।

**गुदरी** *स्त्री०* फटे-पुराने कपड़ों का बनाया गया बिछौना।

**गुदरी बाजार** *स्त्री०* वह बाजार, जहाँ टूटी-फूटी या पुरानी वस्तुएँ बिकती हैं।

**गुदस** *पु०* व्यतीत होने की स्थिति।

**गुदानल** *सक०* आदर देना, महत्त्व देना।

**गुदार** *पु०* फसल काटने की मजदूरी।

**गुदारा** *पु०* दिनौरा।

**गुदिला** *पु०* मटर की हरी छिम्मी का दाना।

**गुदुली** दे० 'गुदिला'।

**गुन** *पु०* गुण। **-कारी** *वि०* गुणकारी। **-गाहक** *वि०* गुणग्राहक। **-वंत** *वि०* गुणवान।

**गुनखराह** *वि०* वैसा जनेऊ, जिसका तागा टूटा हो।

**गुनगुनाइल** *अक०* धीरे-धीरे बोलना या गाना; गुन-गुन की आवाज होना।

**गुनल** *अक०* गुनना, महत्त्व देना; रस्सी का बँटना।

**गुनवाह** *पु०* नाव की रस्सी खींचने वाला।

**गुना** *पु०* किसी संख्या का अन्य संख्या से गुणित होने की प्रक्रिया, रस्सी के बँटने में पड़ने वाली ऐंठन।

**गुनावन** *पु०* चिन्ता; चिन्तन।

**गुनाह** *पु०* [फा०] पाप, अपराध, कसूर।

**गुनिया** *स्त्री०* अमीनों एवं राजगिरों का एक यंत्र।

**गुनी** *वि०* जिसमें गुण हो; मंत्र-तन्त्र जानने वाला।

**गुनीला** *वि०* गुणों वाला।

**गुनीली** *स्त्री०* दूध-घी दोनों में समृद्ध (गाय)।

**गुने** *पु०* गुण पर, कार्यक्षमता पर।

**गुंपपाक** *पु०* गोंदपाग, एक मिठाई।

**गुपती** *स्त्री०* [सं० गुप्त] वह छड़ी, जिसके भीतर गुप्त रूप से पतली तलवार रहती है।

**गुपुत** *वि०* छिपा हुआ, गुप्त; मौन, गूढ़।

**गुप्तदान** *पु० यौ०* वह दान, जिसे केवल देने वाला ही जानता है।

**गुफुरल** *अक०* रुष्ट होकर नहीं बोलना, मौन रहना।

**गुब-गुब** *क्रि०वि०* बिना सोचे-समझे, जल्दी-जल्दी।

**गुबुर-गुबुर** *क्रि०वि०* अति शीघ्रतापूर्वक कुछ बोलने या खाने की क्रिया।

**गुमनाम** *वि०* [फा०] बिना नाम-पता का, अज्ञात।

**गुमसल** *अक०* नमी के कारण किसी अनाज के सड़ने के पूर्व की स्थिति।

**गुमसुम** *वि०* चुप-चाप, गतिहीन, उदास।

**गुमाटी** *स्त्री०* काठ का बना अत्यन्त छोटा कमरा। रेलवे चौकीदारों के रहने का छोटा मकान, गुमटी।

**गुमान** *पु०* [फा०] अभिमान, घमण्ड।

**गुमानी** *वि०* घमण्डी।

**गुमिटल** *अक०* लपेटना।

**गुमेख** *पु०* [फा०] गोल सिरे वाली एक प्रकार की बड़ी कील।

**गुर** *पु०* हिसाब निकालने का कायदा, उपाय।

**गुरगा** *पु०* नौकर, टहलू, दुष्ट सेवक।

**गुरगाबी** *पु०* मुँड़ा जूता।

**गुरगुराइल** *अक०* गुर्राना।

**गुरच** *स्त्री०* गुडुच।

**गुरचिआइल** *अक०* सिकुड़कर टेढ़ा हो जाना।

**गुरची** *स्त्री०* सिकुड़न।

**गुरछा** *पु०* गुच्छा।

**गुरदम** *पु०* लकड़ी की छोलनी, जिससे ईख का रस या गुड़ चलाया जाता है।

**गुरदा** *पु०* [फा०] वृक्क।

**गुरदेल** *पु०* वह धनुष, जिसमें मिट्टी या पत्थर की गोलियाँ चलाई जाती हैं। गुलेल।

**गुरधवल** *वि०* फल के पकने की पहली स्थिति।

**गुरनाइल** *अक०* क्रुद्ध होना, आँखे दिखाना।

**गुर-पीर** *यौ०* गुरु-पीर; आदरणीय व्यक्ति।

**गुरमा-गुरमी** *पु०* एक प्रकार की लता, जिसके फल को सुखा कर व्यंजन बनाते हैं। *स्त्री०* गुरमी।

**गुरमूसल** *अक०* रुष्ट होकर मौन रहना।

**गुरहथल** *सक०* वर के जेठे भाई द्वारा कन्या-निरीक्षण की एक विधि। *स्त्री०* गुरहत्थी।

**गुरहन** *पु०* कास की जाति की एक घास।
**गुराई** *स्त्री०* गोरापन।
**गुराव** *पु०* चारा काटना, गँड़ासा।
**गुरिआ** *स्त्री०* छोटी गोली, मनका, बोटी।
**गुरु** *पु०* [सं०] अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, दीक्षा देने वाला, शिक्षक, आचार्य। *लोक०* 'गुरु गुड़ रहि गइले चेला चीनी हो गइले।'
**गुरुआइन** *स्त्री०* गुरु की पत्नी, गुरुआनी।
**गुरुकुल** *पु०* विद्यापीठ, जहाँ प्राचीन भारतीय पद्धति से विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है।
**गुरुगादी** *स्त्री०* गुरु का स्थायी निवास-स्थान।
**गुरु घंटाल** *यौ०* अतिधूर्त व्यक्ति, बहुत चालाक।
**गुरुच** *स्त्री०* एक प्रकार की वनौषधि, गिलोय।
**गुरुदछिना** *स्त्री०* शिष्य द्वारा (अध्ययन-समाप्ति पर) गुरु को दी गई भेंट में द्रव्य, गुरुदक्षिणा।
**गुरुभाई** *पु०* एक ही गुरु के शिष्य।
**गुरुम्हा** *पु०* आटा, गुड़, खटाई और मसालों के योग से बना व्यंजन।
**गुरू** *पु०* गुरु। **-घंटाल** *वि०* धूर्त, काइयाँ। **-डम** *पु०* गुरुडम।
**गुरेरल** *सक०* घूरना।
**गुरो** *पु०* थारुओं की उपाधिविशेष।
**गुल** *पु०* [फा०] दीया, बत्ती के बुझ जाने की स्थिति; फूल।
**गुलगंज** *पु०* कोलाहल, हल्ला।
**गुल-गेंठ** *वि०* मोटा एवं नाटा (व्यक्ति)।
**गुलजार** *वि०* हरा-भरा, आबाद। *उदा०* 'मिर्जापुर के कइलऽ गुलजार, कचौड़ी गली सून कइलऽ बलमू' -कजली गीत।
**गुल-गुल** *वि०* नरम, मुलायम।
**गुलगुला** *पु०* आँटे की मिठाई, जो मुलायम होती है।
**गुलती** *स्त्री०* गुलेल।
**गुलथुल** *वि०* स्थूलकाय।
**गुलफा** *पु०* कुलफा, एक साग।
**गुलबकावली** *स्त्री०* एक प्रकार का फूल; लोक-कथाओं की शाहजादी।
**गुलबंद** *पु०* मफलर।
**गुलबाँस** *पु०* एक प्रकार का कटीला जंगली पौधा, जिससे सुगन्ध आती है।
**गुलाइचल** *स्त्री०* एक प्रकार का फूल।
**गुलाब** *पु०* [फा०] एक प्रकार का सुगन्धित फूल। *वि०* गुलाबी।
**गुलाब कांड़ा** *यौ०* एक प्रकार का सरकण्डा, जिससे सुगन्ध आती है।
**गुलाब कजूर** *पु०* एक मिठाई।
**गुलाब जल** *यौ०* [फा०] गुलाब का अर्क।
**गुलाब जामुन** *पु०* खोये से बनी एक मिठाई।
**गुलाब पास** *पु० यौ०* बारात आदि में गुलाब जल छिड़कने का पात्रविशेष।
**गुलाबा** *पु०* दरवाजे के ऊपरी चौखट में लगी अँकुसी।
**गुलाबी** *वि०* गुलाब के रंग का, हलका लाल।
**गुलाम** *पु०* [अ०] खरीदा हुआ नौकर, आज्ञाकारी नौकर, खुशामद में निरत व्यक्ति; तास के खेल का एक पत्ता।
**गुलामी** *स्त्री०* गुलाम बनने या खुशामद करने का भाव; सेवा, नौकरी; पराधीनता, परतन्त्रता।
**गुलाल** *पु०* अबीर।
**गुलिका** *स्त्री०* [सं०] गुली, खेलने का छोटा गेंद।

**गुली** *स्त्री०* [सं०] गोली, चेचक।
**गुल्ठी** *स्त्री०* चोट लगने से शरीर में बनी गोली।
**गुल्ली** *स्त्री०* लकड़ी की कील या खूँटी।
**गुह** *पु०* विष्ठा, पाखाना।
**गुहल** *अक०* गूँथना।
**गुहरावल** *सक०* पुकारना।
**गुहाँजनी** *स्त्री०* बिलनी।
**गुहा** *स्त्री०* [सं०] गुफा, खोह।
**गुहाई** *स्त्री०* गूथने-गूहने की मजदूरी।
**गुहार** *स्त्री०* दोहाई।
**गूँ** *पु०* [फा०] रंग, वर्ण; ढंग।
**गूँग** *पु०* व्यक्ति जो बोल न सके; मूक।
**गूँगा** *वि०* [फा०] दे० 'गूँग'।
**गूँगी** *वि०* न बोलने वाली।
**गूँच** *स्त्री०* घुघुची।
**गूँज** *पु०* कान की मैल; खूँट।
**गूंजल** *अक०* गुंजार होना।
**गूट** दे० 'गुट्ट'।
**गूठल** *वि०* घना, सटा हुआ, गठित।
**गूढ़** *वि०* गुप्त, रहस्यमय।
**गूथ** *पु०* [सं०] मल, विष्ठा।
**गूथल** *सक०* धागे में पिरोना, लड़ी बनाना, टाँकना।
**गूद** *पु०* गूदा।
**गूदड़** *पु०* चीथड़ा।
**गूदा** *पु०* किसी फल का भीतरी भाग, जो मुलायम होता है; गीरी; भेजा, मगज।
**गूदी-गूदी** *स्त्री०* फल का भीतरी मुलायम भाग; सिर के भीतर का मुलायम भाग।
**गूमल** *अक०* अन्न के बालों का मुलायम होना।
**गूमा** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जो दवा के काम आता है; द्रोणपुष्पी।
**गूरी** *स्त्री०* कूटा हुआ जौ।
**गूलर** *पु०* एक प्रकार का जंगली फल, जो पेट के रोग की दवा है।
**गूलल** *सक०* मोटी सिलाई करना।
**गूलार** *पु०* पुआल का बड़ा बोझा।
**गूली** *स्त्री०* लकड़ी, बाँस या धातु का छोटा टुकड़ा।
**गूह** *पु०* दे० 'गुह'।
**गूहल** *सक०* सीधी-सिलाई करना, गूँथना।
**गूहा-गींजन** *यौ०* अति घृणित, कष्टदायक काम।
**गूहगींजनी** *स्त्री०* आँख की पलक पर होने वाली फुँसी, गुहौरी।
**गेंग** *पु०* झगड़ा, मारपीट।
**गेंठ** *पु०* गाँठ, गिरह। **-बन्हन** *पु०* शुभ कार्य के समय पति-पत्नी के वस्त्रों को परस्पर बाँधने की स्थिति।
**गेंठरी** *स्त्री०* गाँठ देकर बाँधी गई पोटली, गठरी।
**गेंठवन** *पु०* एक गन्धयुक्त पौधा, जिसकी गन्ध से छुछुन्दर घर छोड़कर भाग जाता है।
**गेंठिआ** *पु०* बोझा; एक प्रकार का रोग, गठिया।
**गेंठिआवल** *सक०* गठरी बाँधना, यज्ञोपवीत में गाँठ लगाकर उसे धारण योग्य करना।
**गेंठी** *स्त्री०* एक प्रकार का कन्द; गाँठ। *उदा०* 'ना गेंठी कुछ दाम।'
**गेंठीमध** *पु०* एक प्रकार की काष्ठौषधि।
**गेंड़** *पु०* गन्ने का बड़ा टुकड़ा, ईख के ऊपर का पत्तियों सहित भाग।
**गेंड़हरुआ** *पु०* जौ के खेत में होने वाली एक घास।
**गेंड़छिला** *पु०* ईख काटने वाला व्यक्ति।
**गेंड़ल** *सक०* छोटे-छोटे टुकड़े करना, पृथक् करना, गेंड़ना; पानी रोकने के लिए मेड़ या बाँध बनाना।

**गेंड़ा** *पु०* एक जंगली जानवर; टुकड़ा (*स्त्री०* गेड़ी)।

**गेंड़ी** *स्त्री०* ईख का अगला भाग।

**गेंडुआ** *पु०* टोंटीदार जलपात्र। *उदा०* 'झांझर गेंडुआ गंगाजल पानी'।

**गेंडुआवा** *पु०* कुँए की दीवार के लिए बनाई गई एक विशेष प्रकार की ईंट, जो गोल होती थी।

**गेंडूआर** *पु०* गंड़गोआर, एक प्रकार का कीड़ा, जिसके सैकड़ों पाँव होते हैं।

**गेंडूर** *पु०* गोलाकार, वृत्ताकार; विष्णु की सवारी एक पक्षी, गरुड़।

**गेंडूली** *स्त्री०* [सं० कुण्डली] रस्सी घास या कपड़े का बना हुआ मेंड़रा, जिस पर घड़ा रखते हैं; ईंडूरी, बिड़ई; फेंटा, कुण्डली।

**गेंदा-गेंदी** *पु० यौ०* छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियाँ।

**गेन** *स्त्री०* गेंद।

**गेना** *पु०* एक प्रकार का पीला फूल; गेन्दा, जिसे उरोज का प्रतीक माना जाता है।

**गेर** *पु०* एक प्रकार की पहाड़ी लाल मिट्टी, गेरु।

**गेरुआ** *वि०* गेर के रंग का वस्त्र; ऊख की जड़ को काटने वाला कीड़ा।

**गेल्हनी** *स्त्री०* पचफरिया।

**गेल्हा** *पु०* एक प्रकार का कड़ा फल, जिससे मलमल के कुरते की बाँह पर चून चढ़ाया जाता है; ईख का मुलायम तना, जो हाल का निकला रहता है।

**गेहुँआ** *वि०* गेहूँ के रंग का।

**गेहूँ** *पु०* एक अन्न, जिसकी फसल चैत में होती है।

**गेहेमेही** *वि०* आलसी।

**गेहेसूर** *वि०* [सं० गेहेशूरः] घर में बहादुरी दिखाने वाला, कायर।

**गैंड़ा** *पु०* विशालकाय जन्तु, जिसके चमड़े की ढाल बनाई जाती है।

**गैंती** *स्त्री०* खोदने का औजार।

**गैतल** *पु०* निकृष्ट, बेकार।

**गैन** *पु०* रास्ता, गैल।

**गैना** *पु०* नाटा बैल।

**गैब** *पु०* [अ०] छिपा होना, परोक्ष।

**गैबी** *वि०* [अ०] ईश्वरीय, अज्ञात।

**गैया** *स्त्री०* गाय।

**गैर** *वि०* [अ०] अन्य, भिन्न, बेगाना, पराया। **-आबाद** *वि०* उजाड़, परती। **-इलाका** *पु०* दूसरा गाँव। **-जरूरी** *वि०* अनावश्यक। **-मजरूआ** *वि०* परती (जमीन), सार्वजनिक उपयोग की जमीन। **-मुमकिन** *वि०* असम्भव। **-मुल्की** *वि०* विदेशी। **-सरकारी** *वि०* जो सरकारी न हो। **-हाजिर** *वि०* अनुपस्थित। **-हाजिरी** *स्त्री०* नागा, अनुपस्थित।

**गैरत** *स्त्री०* [अ०] लज्जा, हया।

**गैरी** *स्त्री०* एक तरह की मछली।

**गैल** *स्त्री०* रास्ता।

**गैलरी** *स्त्री०* [अं०] नाट्यशाला, बैठने का स्थान।

**गैस** *स्त्री०* [अं०] वायुरूप सूक्ष्म फैलने वाली वस्तु।

**गोंइची** दे० 'गँइच'।

**गोंगिआइल** *अक०* गों गों की आवाज पेट से होना।

**गोंचल** *अक०* गुनना, चिन्तन करना।

**गोंजल** *सक०* कई प्रकार की वस्तुओं का एक साथ अव्यवस्थित ढंग से ढेर लगा देना; ठूँस-ठूँस कर रखना।

**गोंजा** *पु०* सफेद गुंजा।

**गोंड़, गोंढ़** *पु०* एक जाति विशेष, जिसका कार्य सत्तू और भूँजा तैयार करना होता है।

**गोंड़ी, गोढ़ी** *पु०* एक जाति, जिसका व्यवसाय मछली मारना है।

**गोंत** *पु०* गोमूत्र।

**गोंतल** *सक०* मवेशियों के खाने के लिए पानी में घास, दाना, खली आदि मिलाना।

**गोंद** *पु०* बबूल के पेड़ से निकला लस्सा, लासा।

**गोंयड़ा** *वि०* घर के निकट की भूमि, गाँव के नजदीक का खेत।

**गो** *अव्य०* संख्यावाचक परसर्ग जैसे तीन-गो, चारगो, पाँचगो, आठगो।

**गोअल** *सक०* ज्ञात तथ्य को इनकार करना, किसी बात को छिपाना, गोपनीय रखना।

**गोआर** *पु०* हिन्दुओं की एक उपजाति; ग्वाला, दूध बेचने वाला, अहीर। *वि०* मन्दबुद्धि।

**गोआलिन** *स्त्री०* अहीरिन, दही बेचने वाली।

**गोआस** *पु०* गौवों के रहने का स्थान, जो घरसे पृथक् रहता है, गोंठा, बथान, गोष्ठ।

**गोआह** *पु०* [फा० गवाह] साक्षी। *स्त्री०* गवाही, गवाह होने का भाव या क्रिया।

**गोइँठा** *पु०* [सं० गो+विष्ठा] कण्डा, उपला, गोइँठा। *स्त्री०* गोंइठी।

**गोइँया** *पु०* किसी खेल में एक दल का व्यक्ति।

**गोएँड़** *पु०* गाँव के पास की जमीन, *लोक०* 'गोयँड़ा के खेती, सिखा के साँप, मैभा कारन बैरी बाप।'

**गोई** *स्त्री०* बड़ी मछलियों को पकड़ने के लिए अलग-अलग कमची वाला औजार।

**गोखुल-गोखुला** *पु०* ब्रज की भूमि, जहाँ भगवान् कृष्ण ने बचपन बिताया था, गोकुल; एक प्रकार की काँटेदार घास।

**गोखुलचन** *पु०* एक प्रकार का मध्यम श्रेणी का धान।

**गोचरिया** *पु०* ग्राम देवताओं की पूजा के अवसर पर गीत गाने वाला व्यक्ति।

**गोचरो** *पु०* चर्चा, कानाफूसी।

**गोजई** *स्त्री०* गेहूँ और जौ का मिश्रण।

**गोजटा** *पु०* एक प्रकार की बड़ी मछली, जिसका मांस कड़ा होता है।

**गोजर** *पु०* विषैला कीड़ा, कनखजूरा।

**गोजा** *पु०* हरा और मुलायम पौधा।

**गोजी** *स्त्री०* चरवाहों की लाठी।

**गोझनौटा** *स्त्री०* (देश) आँचल, पल्लू।

**गोट** *पु०* (गोष्ठ) वह पट्टी या फीता, जिसे कपड़े के किनारे लगाते हैं, मगजी; किसी प्रकार का किनारा।

**गोटा** *पु०* अन्न या माला का दाना, मकई के भुट्टे में से निकला हुआ दाना।

**गोटाइल** *अक०* फसल की बाल का पुष्ट होना।

**गोटा पकड़ी** *स्त्री०* बहुतों की भीड़ में से कोई-कोई व्यक्ति। *क्रि०वि०* यत्र-तत्र, थोड़ा, अल्प।

**गोटिआइल** *अक०* एकत्रित होना।

**गोटी** *स्त्री०* चेचक की फुंसियाँ; खेल में प्रयुक्त ईंट के छोटे-छोटे टुकड़े, गोली; अफीम की टिकिया; नील की टिकिया।

**गोटीघर** *पु०* नील की फैक्ट्री में टिकिया सुखाने का घर।

**गोठ** *स्त्री०* [सं० गोष्ठ:]जिस स्थान पर रात में गाय बाँधी जाती है।

**गोठउल** *पु०* वह घर, जिसमें गोंयठा रखा जाता है, उपलों का घर।

**गोठउलिया** *स्त्री०* मधुमक्खियों की एक जाति, जो घर की किसी शान्त जगह पर अपना छत्ता बनाती हैं।

**गोठा** *स्त्री०* वह स्थान, जहाँ गौवों को रात में बाँधते हैं; बथान, गोवास, गोष्ठ।

**गोड़** *पु०* पैर, पाँव, टाँग।

**गोड़तारी** *स्त्री०* पैताना, बिस्तर का वह भाग जिधर पाँव होता है।

**गोड़थारी** *स्त्री०* दे० 'गोड़तारी'।

**गोड़ना** *पु०* चूहों की एक जाति।

**गोड़रा** *पु०* झींगा मछली की बड़ी जाति। इसके कई पैर होते हैं।

**गोड़ल** *सक०* फल पकाने हेतु भूसे में ढँककर रखना।

**गोड़हरा** *पु०* पैर में पहनने का छल्ला।

**गोड़ाँव** *पु०* मवेशियों के अगले दोनों पैरों को बाँधने की रस्सी; पैर का गहना।

**गोड़ा** *पु०* लकड़ी का वह टुकड़ा, जिस पर बखारी खड़ी की जाती है; पलंग, चौकी आदि में लगे लकड़ी के चार टुकड़े।

**गोड़ाइत** *पु०* जमींदारी प्रथा का निम्नवर्गीय कर्मचारी; खेतों की फसल की रक्षा के लिए घूमते रहने वाला व्यक्ति, जो पहले गोड़ाइत था, गोंड़ायाही।

**गोड़ाटाही** *स्त्री०* कहीं बार-बार आने-जाने का कार्य।

**गोड़ारी** *स्त्री०* लोगों के चलने से बना पैर का निशान, पदचिह्न।

**गोड़ाव** दे० 'गोड़हरा'।

**गोड़िआ-गोड़िया** *स्त्री०* मचिये में लगे लकड़ी के बहुत छोटे चार टुकड़े।

**गोड़ियानी** *स्त्री०* फूस के घर के छप्पर की ढलान जहाँ समाप्त होती है।

**गोड़ी** *स्त्री०* बकरे के पैर का मांस; लाभ का आयोजन; गोटी।

**गोत** *पु०* [सं०] कुल या वंश, जो उस व्यक्ति के मूल पुरुष किसी ऋषि के नाम से सम्बन्धित रहता है, वंश, खानदान।

**गोतनी** *स्त्री०* पति के भाई की पत्नी।

**गोतल** *सक०* गोतना।

**गोता** *पु०* [अ०] डुबकी। **-खोर** *वि०* डुबकी लगाने वाला। **-मार** *पु०* सीप, मोती निकालने वाला (व्यक्ति)। **-खाइल** *मुहा०* डुबना, धोखा खाना। **-देहल** *मुहा०* डुबोना। **-मारल** *मुहा०* डुबकी लगाना, नागा करना।

**गोतिया** *वि०* [सं० गोत्रीय:] सगोत्रीय, भाई-बन्धु।

**गोतिन** *स्त्री०* पति के भाई की पत्नी।

**गोत्र** *पु०* [सं०] कुल, वंश जैसे शाण्डिल्य गोत्र, गौतम गोत्र आदि। **-कर्ता** *वि०* गोत्र प्रवर्तन करने वाला। **-गमन** *पु०* सगोत्र के साथ विवाह। **-ज** *वि०* एक ही गोत्र का।

**गोदंती हरताल** *पु०* सफेत हरताल।

**गोदी** *स्त्री०* गोद, *लोक०* 'गोदी में लइका, सहर में ढिंढोरा'।

**गोद, गोदी** *स्त्री०* अंक, कोरा।

**गोदना** *पु०* अंगों पर सुई गड़ा कर बनाई गयी चित्रकारी।

**गोदल** *सक०* गोदना, चुभाना।

**गोदा** *पु०* पीपल, पाकड़ या बरगद का पका फल, पकुआ।

**गोदान** *पु०* गौ को विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया।

**गोदाम** *पु०* वह स्थान, जहाँ खरीद-बिक्री या उपयोग की वस्तुएँ रखी जाती हैं, अनाज रखने का बड़ा घर।

**गोध** *स्त्री०* गोह।

**गोधिका** *स्त्री०* घड़ियाल की मादा, छिपकली।

**गोधूम** *पु०* गेहूँ। **-चूरन** *पु०* आटा। **-सार** *पु०* गेहूँ का सत्त।

**गोधन** *पु०* दीपावली के बाद की द्वितीया का त्योहार, भैयादूज।

**गोन** दे० 'गोंद'।

**गोनउरा** *पु०* घूर या घूरा। *उदा०* 'बाप गोनउरा पूत चउपार।' -लोकगीत।

**गोनर** *पु०* एक प्रकार के जलतृण से बनी चटाई।

**गोनल** *सक०* गोपन करना।

**गोनिया** *पु०* बोरा ढोने वाला, *स्त्री०* सीध नापने का एक औजार।

**गोनी** *स्त्री०* वह बोरा, जिस पर सौदा लाद कर बैल या घोड़े की पीठ पर ढोया जाता है; पटुआ, सन, पाट।

**गोप** *पु०* अहीरों की उपाधि; गौ की रक्षा करने वाला; गाँव का मुखिया।

**गोपाल** *पु०* [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम, गोपालक।

**गोपी** *स्त्री०* वैसा आम, जो समय के पूर्व ही पक जाता है; ब्रज की स्त्रियाँ।

**गोपीचन** *पु०* भोजपुरी लोकगाथा 'गोपीचन' का नायक।

**गोफा** *पु०* नया निकला हुआ मुँह बँधा पत्ता; लाठी के हूरे में लगी हुई लोहे की टोपी।

**गोबनाई** *पु०* मिथिला के अहीरों के देवता।

**गोबर** *पु०* गाय, बैल या भैंस की बिष्ठा। *वि०* गोबराइन, स्वादहीन। *लोक०* 'गोबर मइला पानी में सड़े, तब खेती में दाना पड़े।' —गनेस *वि०* मूर्ख, बुद्धू। **-पत्थी** *स्त्री०* गोबर पाथने वाली स्त्री। **-हारा** *पु०* गोबर उठाने वाला नौकर। **-चोत** *मुहा०* बेडौल, मूर्ख। **-पाथल** *मुहा०* गोबर के कंडे, उपले बनाना।

**गोबरउरा** *पु०* गोबर का कीड़ा।

**गोबरछत्ता** *पु०* गोबर पर उगने वाला छत्ते की आकृति का पौधा।

**गोबरसांसी** *वि०* गोबर पर उगी घास।

**गोबराह** *वि०* जिसमें गोबर लगा हो।

**गोबराही** *वि०* जिसमें गोबर रखा जाता हो।

**गोबिन्द** *पु०* भगवान्, एक लोकदेवता, श्रीकृष्ण।

**गोभल** *सक०* किसी मुलायम वस्तु या फल में नुकीले हथियार को हलाना या चुभाना।

**गोमती** *स्त्री०* उत्तर प्रदेश की एक नदी।

**गोयँड़ा** *पु०* गाँव का किनारा।

**गोयर** *पु०* मवेशियों द्वारा पैरों से रौंदी पुआल।

**गोर** *वि०* गोरा। *स्त्री०* गोराई-स्वच्छ रंग का भाव।

**गोरख** *पु०* एक सिद्ध योगी गुरु गोरखनाथ।

**गोरखधंधा** *पु०* वह कार्य, जिसमें विशेष झमेला या उलझन हो।

**गोरखफंदा** *पु०* पेंचदार गाँठ।

**गोरखा** *पु०* नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश, गोरखा प्रदेश का निवासी।

**गोरखाली** *पु०* नेपाल की एक जाति।

**गोरखुल** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसमें काँटा होता है; पैर में होनेवाला एक प्रकार का घाव जो काँटा गड़ने से हो जाता है।

**गोरल** *सक०* कच्चे फलों को पकने के लिए पुआल आदि में रखना।

**गोरस** *पु०* [सं०] दूध, दही या मट्ठा।

**गोरसी** *स्त्री०* अँगीठी।

**गोरा** *पु०* यूरोप, अमेरिका आदि देशों का निवासी, फिरंगी।

**गोरिया** *स्त्री०* सुन्दर गौरवर्णी स्त्री।

**गोरी** *स्त्री०* गौर वर्ण वाली स्त्री।

**गोरुआ** *वि०* पाल डाल कर पकाया गया (फल)।

**गोरू** *स्त्री०* चौपाया जानवर, गाय।

**गोरेया** *पु०* एक ग्राम देवता, जिनकी पूजा खास वर्ग के लोग करते हैं।

**गोलंदाज** *पु०* गोला चलाने वाला तोपची।

**गोलंदाजी** *स्त्री०* गोलन्दाज का काम।

**गोलंबर** *पु०* गोलाकार चबूतरा। गुम्बद।

**गोल** *पु०* जमात, गिरोह; फुटबाल के खेल का एक शब्द; वृत्त। *वि०* जो वर्तुलाकार हो, गोले या गेंद के आकार का।

**गोलक** *पु०* रुपया-पैसा रखने की छोटी सन्दूक, गुल्लक।

**गोलकी** *स्त्री०* काली मिर्च; गोल करने वाला या वाली।

**गोलखत्ता** *पु०* वह बही-खाता, जिसमें वसूल नहीं होने वाली राशि का उल्लेख हो।

**गोलजामा** *पु०* कुल, सब मिला कर बनी संख्या।

**गोलटूल** *वि०* आकृति में गोल।

**गोलमरिच** *स्त्री०* काली मिर्च।

**गोलमाल** *पु०* अव्यवस्था, गड़बड़ी।

**गोलरी** *स्त्री०* गेहूँ आदि के डण्ठलों से या दाने पीटने पर बचा वैसा बाल, जिसमें अन्न का दाना रहता है।

**गोलवा** *वि०* लाल रंग का पशु।

**गोलहनी** *स्त्री०* पाँच फाल वाला हल, पँचफारा।

**गोला** *पु०* वह स्थान, जहाँ बिक्री के लिए वस्तुओं का ढेर लगा रहता है; गोल पदार्थ, जो किसी धातु या कड़े पदार्थ का बना होता है, तोप में प्रयुक्त लोहे का गोला; गुल्म रोग; जंगली कबूतर; गरी का गोला।

**गोलावट** *पु०* ऐसा विवाह, जिसमें एक परिवार के लड़के का विवाह दूसरे परिवार की कन्या से और दूसरे परिवार के लड़के का विवाह पहले परिवार की कन्या से होता है।

**गोलिआइल** *अक०* गोलाकार बन जाना; एकत्र हो जाना।

**गोलिआवल** *सक०* गोलाकार बनाना।

**गोली** *स्त्री०* मिट्टी या धातु का छोटा गोल पिण्ड; लाल रंग की गाय।

**गोलौर** *पु०* गुड़ बनाने का घर, कोल्हुआर।

**गोसँइया** *पु०* पति, स्वामी, प्रभु।

**गोसाईं** *पु०* सूर्य, चन्द्रमा, साधु, ब्राह्मण, अथीत जाति के व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।

**गोस, गोस्त** *पु०* [फा०] मांस।

**गोसा** *पु०* [अ० गुस्सा] क्रोध; एक धनुषाकार आभूषण; *वि०* गोसाइल।

**गोसेंआ** *पु०* स्वामी, मालिक।

**गोह** *स्त्री०* [सं० गोध] छिपकली की जाति का एक जंगली जन्तु जो दीवार से मजबूती से चिपक जाता है।

**गोहन** *पु०* साथ, संग।

**गोहर** *पु०* बिसखोपड़ा।

**गोहरा** *पु०* उपला, कण्डा।

**गोहरावल** *अक०* पुकारना।

**गोहरौर** *पु०* उपलों का ढेर।

**गोहान** *पु०* वह जमीन, जिसमें गाँव का गन्दा पानी बहता है।

**गोहार** *स्त्री०* मदद हेतु पुकारने की क्रिया, दुहाई; हल्लागुल्ला, शोर, पुकार।

**गोहिया** *स्त्री०* खेत-खलिहान की रखवाली के लिए पुआल के बोझों से बनाई गई झोपड़ी।

**गोही** *स्त्री०* छिपाव, गुप्त बात।

**गोहुअन** *पु०* विषधर साँप।

**गोहूँ** *पु०* गेहूँ *लोक०* 'गोहूँ गिरे अभागा के, धान गिरे सुभागा के।'

**गौँ** *स्त्री०* काम निकलने का मौका, चाल, मतलब, अवसर। **-का** *मुहा०* काम का, मतलब का। **-के यार** *मुहा०* मतलबी दोस्त। **-गाँठल** *मुहा०* काम निकालना। **-पड़ल** *मुहा०* काम पड़ना। **-से** *मुहा०* चुपके से।

**गौआँ** *पु०* एक गाँव का रहने वाला।

**गौ** *स्त्री०* [सं०] गाय। **-चरी** *स्त्री०* गाय चराने का कर। **-मुख** *पु०* गोमुख। **-साला** *स्त्री०* गोशाला। **-सिंघी** *पु०* वह बैल जिसके दोनों सींग बीच में आकर सटे हों।

**गोखा** *पु०* गोल सुराखों वाली ओट।

**गौच** *पु०* गोलक।

**गौथ** *पु०* फल-राशि।

**गौठि** *पु०* सूखा हुआ गोबर।

**गौना** *पु०* विवाह के बाद की रस्म, जिसमें वर वधू को घर ले जाता है। द्विरागमन।

**गौर** *पु०* [अ०] सोच-विचार, चिन्तन।

**गौरांगी** *स्त्री०* [सं०] गोरी।

**गौरा** *स्त्री०* [सं०] गोरी स्त्री; हल्दी; पार्वती।

**गौरिया** *स्त्री०* एक प्रकार का केला, जो मझोले और मोटे आकार का होता है; एक महीन धान।

**गौरी** *स्त्री०* [सं०] पार्वती; आठ वर्ष की अविवाहित कन्या।

**ग्रंथ** *पु०* [सं०] पुस्तक, किताब।

**ग्रंथि** *स्त्री०* [सं०] गाँठ, गिरह।

**ग्रह** *पु०* [सं०] सूर्य की परिक्रमा करने वाला तारा।

**ग्राम** *पु०* [सं०] गाँव। **-पंचायत** *स्त्री०* गाँव के विवाद को सुलझाने, स्वास्थ्य, शिक्षा का प्रबन्ध करने वाला मण्डल। **-पाठशाला** *स्त्री०* गाँव की पाठशाला। **-वासी** *वि०* गाँव का निवासी, देहाती। **-सेवक** *पु०* ग्रामवासियों की सेवा करने वाला।

**ग्रेजुएट** *पु०* [अं०] स्नातक, बी०ए० पास।

**ग्लास** *पु०* [अं०] गिलास।

**ग्वाला** *पु०* अहीर, गोप।

❑

# घ

**घ** देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का चौथा व्यंजन, जिसका उच्चारण कण्ठ से होता है।

**घँकोरल** *सक०* पानी आदि तरल पदार्थ को बार-बार हिलाकर गन्दा कर देना।

**घँखाड़** *वि०* चुप्पा; तथ्य को दबा लेने वाला।

**घँगोरल** *सक०* दे० 'घंघोरल'।

**घंघरा** *पु०* स्त्रियों का एक प्रकार का घेरेदार कटि-वस्त्र, बड़ा लहँगा। *स्त्री०* घंघरी।

**घंघापाल** *पु०* वैसा व्यक्ति, जिसका पूरा अंग लम्बे वस्त्रों से आच्छादित हो।

**घंघोटल** *अक०* रोब से डाँटना।

**घंघोरल** *सक०* पानी को गन्दा करना।

**घँचोरल** *अक०* बार-बार लगाना और निकालना।

**घंट** *पु०* [सं० घट] मृत्यु के बाद दूध क्रिया के दिन पीपल की डाली में लटकाया गया घड़ा।

**घंटफोरवा** *पु०* जो पीपल के पेड़ में टँगे घण्ट को फोड़ता है, महाब्राह्मण, महापात्र।

**घंटा** *पु०* [सं०] दिन-रात का चौबीसवाँ भाग, घड़ियाल; ठेंगा। **-घर** *पु०* ऊँची मीनार जहाँ से घण्टा बजाने की आवाज सुनाई पड़े। **-नाद** *पु०* घंटे की ध्वनि। **-वादक** *पु०* घण्टा बजाने वाला। **-हिलावल** *मुहा०* ऐसा काम करना जिससे कुछ लाभ न हो।

**घंटी** *स्त्री०* पूजा में व्यवहृत छोटे आकार का घण्टा। पाठशालाओं में समय-समय पर बजने वाली घण्टी। **-बाजल** *मुहा०* समाप्त होना, मृत्यु को प्राप्त होना।

**घँसल** *सक०* रगड़ना, घिसना।

**घँसुआ** *वि०* वह व्यंजन, जिसे तेल या घी घिस कर तैयार किया जाता है।

**घँसुई** *वि०* घी या तेल लगाई गई रोटी।

**घइका** *वि०* धूर्त, घाघ।

**घइचट** *वि०* बार-बार तकाजा के बावजूद किसी का बाकी नहीं देने वाला।

**घइला** *पु०* मिट्टी का जलपात्र, घड़ा। *स्त्री०* घइली।

**घउद** *पु०* केले के फलों का समूह। *पर्या०* घउर, घवद।

**घघरा** *स्त्री०* सरयू नदी; घाघरा, लहँगा।

**घघरी** *स्त्री०* छोटा लहँगा।

**घचकइल** *पु०* वह काम, जिससे घच-घच की आवाज होती है।

**घचघच-घचाघच** *क्रि०वि०* गीली या तरल वस्तु में किसी के डूबने की आवाज।

**घच-पच** *पु०* थोड़ी सी जगह में अनेक वस्तुओं का जमा हो जाना, अस्त-व्यस्तता; गड़बड़ी।

**घचर-घचर** दे० घच-पच।

**घचौना** *पु०* आँखों से नहीं सूझने की स्थिति, रतौंधी।

**घट** *पु०* [सं०] कलश, कुम्भ।

**घटउरी** *स्त्री०* बदली।

**घट-घट-घटर-घटर** *क्रि०वि०* शीघ्रता-पूर्वक पीना।

**घटकल** *सक०* पीना, गले के नीचे उतारना।

**घटती** *स्त्री०* वजन में कमी, कसर, न्यूनता।

**घटना** *स्त्री०* [सं०] जो घटित हो, अचानक होने वाली बात।

**घटनावली** *स्त्री०* [सं०] घटनाओं का क्रम।

**घटनास** *वि०* बार-बार कही बात को भी अनसुनी कर देने वाला (व्यक्ति)।

**घट-बढ़** *स्त्री०* [हिं० घटना+बढ़ना] *यौ०* कमी-बेसी।

**घटल** *अक०* कम होना (तौल में), घटना। *वि०* ओछी (बात)।

**घटवार** *पु०* नदी के घाट का कर वसूल करने वाला व्यक्ति।

**घटवारिया** *पु०* घाटिया।

**घटवाह** *पु०* घाट का ठीकेदार।

**घटहा** *पु०* घाट का ठेकेदार, आर-पार कराने वाली बड़ी नाव।

**घटाँव** *पु०* बड़ी संख्या में से छोटी को घटाने की क्रिया।

**घटा** *स्त्री०* उमड़ता हुआ बादल।

**घटाई** *स्त्री०* मानहानि।

**घटाटोप** *पु०* [सं०] कोई ढँक लेने वाली चीज, घनघटा, आडम्बर।

**घटावल** *सक०* कम करना, बाकी निकालना।

**घटिक** *पु०* [सं०] घड़े, घड़ियाल बजाने वाला।

**घटिका** *स्त्री०* [सं०] घड़ी, छोटा घड़ा।

**घटिताई** *स्त्री०* कमी।

**घटिया** *वि०* कम कीमती, सस्ता, खराब वस्तु।

**घटिहा** *वि०* नीच, मक्कार, लम्पट।

**घटी** *स्त्री०* कमी, घाटा।

**घटी-बढ़ी** *यौ०* गलती, अपराध, कसूर।

**घटुही** *वि०* जो कम तौल वाला हो।

**घट्ठा** *पु०* शरीर पर वह उभड़ा हुआ चिह्न, जो बार-बार रगड़ से बन जाता है। **-पड़ल** *मुहा०* अभ्यास होना।

**घठाउर** *वि०* आदत से लाचार (व्यक्ति)।

**घड़ँहर** *पु०* घरेलू कार्य में प्रयुक्त बर्तन।

**घड़-घड़** *पु०* ऊपर से नीचे वेगपूर्वक पानी के गिरने की आवाज।

**घड़घड़ाहट** *स्त्री०* घड़-घड़ शब्द।

**घड़रल** *सक०* रगड़ना।

**घड़ा** *पु०* [सं० घट] मिट्टी का कलसा। **-घड़ो पानी पड़ल** *मुहा०* शर्म से गड़ जाना।

**घड़िया** *स्त्री०* मिट्टी की कलसी।

**घड़ियाल** *पु०* घण्टा।

**घड़ियाली** *पु०* घड़ियाल बजाने वाला।

**घड़ी** *स्त्री०* समयसूचक यंत्र, 24 मिनट का समय, समय की पौराणिक गणना। *कहा०* 'घड़ी में घर छुटे, नव घड़ी भदरा'। **-घड़ी** *क्रि०वि०* पुनः पुनः, बार-बार। **-दिआ** *पु०* घटी दीप। **-भर** *क्रि०वि०* मुहूर्त, क्षण। **-साज** *पु०* घड़ीसाज।

**घन** *पु०* लोहे का भारी हथौड़ा, घन। *वि०* घना (पौधा, वस्त्र आदि)। *वि०* घना, गझिन, कसा या ठसा, ज्यादा। *लोक०* 'घन मारे घनबहिया, हँकड़े लोहार'।

**घनगिरह** *वि०* वह बाँस, जिसमें गाँठें घनी और अधिक हों।

**घनघोर** *वि०* बहुत अधिक परिमाण में (वर्षा), मूसलाधार।

**घनचक्कर** *पु०* उलझन, झमेला; मूर्ख, बेवकूफ; आवारागर्द।

**घनठट** *वि०* मकान के छप्पर या ठाट में दिया गया बाँस।

**घना** *वि०* ठस, गाढ़।

**घनेरन** *वि०* बहुत, अनेक।

**घनेरा** *वि०* घना।

**घपचल** *सक०* किसी से कोई सामान लेकर नहीं वापस करना।

**घपचहर** *पु०* झंझट, उलझन की स्थिति।

**घपचियाइल** *अक०* घबराना, सिटपिटाना।

**घपची** *स्त्री०* दोनों हाथों से कसकर पकड़ लेना।

**घपला** *पु०* चकमा, धोखा, गबन, गोलमाल, गड़बड़।

**घपुआ** *वि०* मूर्ख।

**घपसल** *अक०* भीतर घुस जाना।

**घपाच** *वि०* वह व्यक्ति, जो किसी से कोई सामान लेकर नहीं लौटाता हो।

**घफलत** *पु०* गड़बड़, गोल-माल।

**घबराइल** *अक०* बेचैन होना, भौंचक होना, घबड़ाना।

**घमंड** *पु०* अभिमान, अहंकार।

**घमगारा** *पु०* धूप वाली जगह।

**घम-घम, घमाघम** *पु०* किसी वस्तु के जोर से गिरने या मारने से उत्पन्न शब्द।

**घम छहियाँ** *स्त्री०* वैसी जगह, जहाँ पर धूप और छाँव दोनों हो।

**घमजरु** *वि०* धूप में जला हुआ।

**घमलउर** *पु०* कोलाहल, हल्ला, भीड़-भाड़।

**घमसान** *वि०* कठिन, घनघोर।

**घमाइल** *अक०* धूप से आक्रान्त होना, धूप में चलने से परेशानी होना।

**घमाघम** *क्रि०वि०* जोर-जोर से मुक्का मारना।

**घमौरी** *स्त्री०* गर्मी के कारण शरीर में निकलने वाली फुंसियाँ।

**घर** *पु०* मकान, स्थायी निवास-स्थान। *लोक०* 'घर फूटे, गँवार लूटे।'

**घरइतिन** *स्त्री०* गृहिणी, घरवाली, पत्नी।

**घरकच** *वि०* घरेलू, घराऊ, घरऊ।

**घरगइया** *स्त्री०* घर पर पैदा हुई और पाली-पोसी गई गाय।

**घरघराइल** *अक०* स्पष्ट आवाज नहीं होना।

**घरघुमनी** *स्त्री०* घर-घर घूमने वाली स्त्री।

**घरघुसन** *वि०* वह व्यक्ति जो घर में ही स्त्रियों के पास बैठा रहता है।

**घरजनवाँ** *वि०* प्रत्येक घर से एक व्यक्ति को भोज में भाग लेने के लिए बुलावा।

**घरडाँड़** *पु०* विवश होकर दी गई राशि।

**घरनई** *पु०* घड़ों को जोड़कर बनाई गई नाव।

**घरनी** *स्त्री०* गृहणी, पत्नी।

**घरबद** *वि०* घरेलू उपयोग के लिए।

**घरबारी** *पु०* ऐसा साधु, जो अपनी पत्नी और बाल-बच्चों के साथ गृहस्थ-सा रहने लगा हो; गृहस्थ, कुटुम्बी, बाल-बच्चों वाला।

**घरभोज** *पु०* नए मकान में प्रवेश के समय दिया गया भोज।

**घरमुँहा** *वि०* बाहर से घर को वापस आने वाला; घर में प्रवेश का मार्ग।

**घरमेंचा** *पु०* गर्दन पर मारा गया थप्पड़।

**घरवइया** *पु०* घर का मालिक, घरवाला।

**घरहँड़** *पु०* घरेलू काम में आने वाला मिट्टी का बर्तन, विशेषत: घड़ा।

**घराइल** *अक०* दीये का बुझ जाना।

**घराना** *पु०* कुल, खानदान, संगीत के लिए प्रसिद्ध कुल।

**घरामी** *पु०* घर छाने वाला व्यक्ति।

**घरारी** *स्त्री०* वह जमीन, जिस पर घर हो या रहा हो, आवासयोग्य भूमि।

**घरिया** *स्त्री०* सोने को गलाने के लिए सोनारों द्वारा बनाई गई मिट्टी की कटोरी।

**घरियार** *पु०* एक हिंसक जल-जन्तु, घड़ियाल।

**घरी** *स्त्री०* घटी।

**घरेलू** *वि०* घर का, पालतू।

**घलघलाइल** *अक०* मुँह बन्द रहने पर अस्पष्ट शब्दों में बोलना।

**घलथरी** *स्त्री०* आँगन का वह हिस्सा, जहाँ घड़ा रहता है और पानी गिराया जाता है; घिरौंची।

**घलुआ** *स्त्री०* बिना कीमत दिये निजी उपयोग के लिए लिया हुआ भाग।

**घवद** *पु०* गुच्छा, समूह, घौद।

**घवाहिल** *वि०* घाव लगा हुआ, घायल, जख्मी।
**घसकटवा** *पु०* घसियारा।
**घसकल** *अक०* खिसकना, बैठे हुए स्थान से कुछ हट जाना।
**घसल** *सक०* घिसना।
**घसर-घसर** *क्रि०वि०* स्वादहीन खाद्य को खाने की क्रिया।
**घसर-फसर** *यौ०* फालतू काम।
**घसल** *सक०* घिसना।
**घसवाह** *पु०* घास काटने वाला, घसियारा।
**घसुई** *स्त्री०* तेल, घी में घिसी पूड़ी, पराठा।
**घसेट** *पु०* घर्षण, रगड़ा।
**घसेटल** *सक०* घसीटना।
**घसेटुआ** *वि०* ऐसी लिखावट, जिसमें अक्षर एक-दूसरे से सटकर अस्पष्ट हो जाए।
**घहरल-घहरावल** *अक०* जोर-जोर से शब्द करना, गरजना; लम्बी-चौड़ी बातें करना।
**घाँकड़ा** *वि०* धूर्त, घाघ।
**घाँचल** *अक०* बार-बार लगाना और निकालना।
**घांटी** *स्त्री०* मवेशियों के गले में लटकने वाली घण्टी।
**घांटो** *पु०* गीतविशेष; पक्षीविशेष।
**घाएल** *वि०* जख्मी, घायल।
**घाघ** *वि०* अनुभवी, धूर्त; *पु०* पूर्वकाल का प्रसिद्ध भविष्यद्रष्टा, कृषक, कवि।
**घाघस** *पु०* घास-पात, खरपतवार।
**घाट** *पु०* किसी जलाशय में प्रवेश, स्नान आदि के लिए बनी जगह। **-बाढ़** *पु०* हानि, कमी या बेसी। **-वाल** *पु०* घाटिया। **-घाट के पानी पियल** *मुहा०* भटकना, कई घर बदलना। **-मारल** *मुहा०* उतराई न देना।
**घाटिया** *स्त्री०* घाट पर बैठने वाला ब्राह्मण, जो स्नानार्थियों का दान लेता हो।
**घाटी** *स्त्री०* दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन, मैदान।
**घात** *पु०* प्रहार, चोट; मार, वध, हत्या। *स्त्री०* दाँव, अवसर; ताक; चाल, छल।
**घातक** *वि०* [सं०] घात करने वाला।
**घातकी** *वि०* दे० 'घातक'।
**घान** *पु०* उतना अनाज, जितना एक बार पीसने हेतु डाला जाए।
**घाना** *पु०* मछली पकड़ने का एक औजार।
**घानी** *स्त्री०* एक बार में डाला जाने वाला तेलहन।
**घाम** *पु०* धूप, सूर्य का ताप।
**घामड़** *वि०* मूर्ख।
**घामल** *अक०* बार-बार कहने पर किसी बात को न सुनना।
**घामस** *पु०* धूप से उत्पन्न गर्मी।
**घार** *पु०* गर्दन।
**घारी** *स्त्री०* मवेशियों को बाँधने का घर।
**घाल** *पु०* तौल या गिनती के ऊपर दी जाने वाली चीज, घलुआ।
**घालक** *वि०* मारने वाला।
**घालल** *सक०* देना, डालना आदि को व्यक्त करने वाली सहायक क्रिया। *उदा०* दे 'घाल'।
**घाव** *पु०* चोट, आघात। **-पर नमक छिड़कल** *मुहा०* दु:ख में कष्ट देना। **-भरल** *मुहा०* घाव सूख जाना।
**घावरिया** *पु०* जर्राह, घाव का इलाजकर्ता।
**घास** *स्त्री०* खेत में फसल के अलावा स्वयं उग आने वाले दूसरे पौधे; पृथ्वी पर उगने वाले छोटे-छोटे उद्‌भिज, जिन्हें चौपाये चरते हैं, तृण।
**घास कटाव** *पु०* एक प्रकार का खेल, जिसमें घास की बाजी रख कर खुरपी फेंक कर घास को काटा जाता है।

**घाह-घूह** *पु०* आना-जाना, उपक्रम।
**घाही** *स्त्री०* घात, दाव-पेंच में की गई प्रतीक्षा की स्थिति। *वि०* घायल।
**घिउँड़ा** *पु०* एक प्रकार की लता, जिसके फल की सब्जी बनती है।
**घिउ** *पु०* घी *लोक०* 'घिउ के लड्डू टेढो भला।'
**घिआँड़ा** *पु०* घी रखने का मिट्टी का पात्र।
**घिआ** *पु०* घिया।
**घिघिआइल** *अक०* गिड़गिड़ाना।
**घिग्घी** *स्त्री०* भय के चलते साफ आवाज न निकलना, रोते-रोते हिचकी बँधना।
**घिचपिच** *क्रि०वि०* जो स्पष्ट नहीं हो, अस्पष्ट, घिचपिच। *स्त्री०* जगह की तंगी, सँकरापन।
**घिन** *स्त्री०* अरुचि, नफरत, घृणा।
**घिनही** *स्त्री०* एक प्रकार का घाव, जिससे बहुत जलन होती है।
**घिनाइल** *अक०* घृणा अनुभव करना।
**घिनावन** *पु०* घृणित।
**घिया** *पु०* कद्दू।
**घियार** *स्त्री०* वह गाय या भैंस, जिसके दूध में अधिक घी हो।
**घियौड़ा** *पु०* आटे से बना व्यंजन।
**घिरनी** *स्त्री०* वह चक्की, जिसके सहारे गहरे कुँए से पानी निकाला जाता है; कटहल के पत्ते पर या बाँस की कमची से बना बच्चों का खिलौना जो चक्कर काटता है।
**घिराई** *स्त्री०* घेरने की क्रिया; पशुओं को चराने का काम या उसकी मजदूरी।
**घिरि** *स्त्री०* एक ही स्थान पर चक्कर काटने की स्थिति।
**घिसल** *सक०* [सं० घर्षणम्] घिसना।
**घिसिआवल** *सक०* घसीटना।
**घिसिऔड़ा** *पु०* घसीटने का भाव। **-लागल** *मुहा०* निरर्थक दौड़-धूप करना।
**घीकुँवार** *पु०* [सं० घृतकुमारी] घेंकुआर।
**घीच-घाच** *स्त्री०* खींच लेने का भाव।
**घीचल** *अक०* खींचना, निकालना।
**घीचा-घीची** *स्त्री०* खींचातानी।
**घीयाकस** *पु०* लौकी के लच्छे।
**घीव** *पु०* घी, घृत। *वि०* घिवही-घी का बना (भोज्य पदार्थ)।
**घीवढारी** *स्त्री०* यज्ञोपवीत एवं विवाह के अवसर की एक विधि, जिसमें पितृ-पूजन होता है, मातृ-पूजन।
**घीवहड़िया** *पु०* घी का व्यापारी।
**घुँघची** *स्त्री०* गुंजा, एक बेल, लाल और सफेद बीज।
**घुँघनी** *स्त्री०* उबाला या भिगोकर तला हुआ चना, मटर आदि।
**घुँघराला** *वि०* छल्लेदार (केश)।
**घुँघरू** *पु०* मँजीर, दानों का बना हुआ पाँवों में पहने का गहना। **-बाँधल** *मुहा०* नाचने को तैयार होना।
**घुंठा** *वि०* जिसे घुन खा गया हो, घुना हुआ।
**घुंडी** *स्त्री०* मिरजई या कुर्ते में लगाया गया कपड़े का गोल बटन।
**घुग्घू** *पु०* उल्लू।
**घुघुआ** *पु०* चित लेटकर पैर मोड़ लेने की स्थिति, ऐसा बच्चों को उसपर बैठा कर खेलने के समय किया जाता है।
**घुघुआइल** *अक०* मुँह पर हल्की सूजन आना।
**घुघुन** *स्त्री०* ठुड्डी।
**घुघुनी** *स्त्री०* भिगो कर तला हुआ भोज्य पदार्थ।
**घुघुर** *पु०* धातु निर्मित खोखली गुरिया, जिसमें आवाज के लिए कंकड़ी डाली

रहती है; मवेशियों की गर्दन का एक पहनावा, मँजीरा, घुँघरू।

**घुघुरावल** *सक०* चावल आदि को साफ करने के लिए ढेंकी में डालकर धीरे-धीरे कूटना।

**घुचुर-फुचुर** *क्रि०वि०* थोड़ा-थोड़ा करके।

**घुटकल** *सक०* घूँट-घूँट करके पीना, निगल जाना।

**घुटना** *पु०* जाँघ और टाँग के बीच का जोड़।

**घुटनी** *स्त्री०* घुटना।

**घुटन्ना** *पु०* घुटने तक का पाजामा।

**घुटावल** *सक०* रगड़वाना, सिर मुड़ाना।

**घुटी** *स्त्री०* घुँट, घुट्टी।

**घुटुर-घुटुर** *क्रि०वि०* भोजन में तरल पदार्थ को आसानी से पी जाने की स्थिति।

**घुठसोहर** *वि०* घुट्ठी तक लटकी हुई (धोती)।

**घुट्ठी** *स्त्री०* खिल्ली और ठेहुना के बीच का भाग।

**घुड़कल** *अक०* रोष प्रकट करने के लिए जोर-जोर से बोलना, डाँटना।

**घुन** *पु०* अनाज, लकड़ी आदि में लगने वाला कीड़ा।

**घुनघुना** *पु०* लकड़ी, टीन का बना खिलौना।

**घुनल** *अक०* लकड़ी, अनाज में घुन लगना।

**घुन्ना** *वि०* चुप्पा।

**घुनसी** *स्त्री०* चेचक की बीमारी, जिसमें फोड़ा बाहर नहीं निकल कर चमड़े के भीतर ही रहता है।

**घुमंतर** *वि०* घूमते रहने वाला। *पु०* घूमते रहने का भाव।

**घुमउआ** *वि०* जो टेढ़ा हो गया हो।

**घुमक्कड़** *वि०* सदा घूमने वाला, भ्रमण करने वाला।

**घुमटा** *पु०* सिर में चक्कर, सिर घूमना।

**घुमरिआवल** *अक०* चारों तरफ चक्कर कटवाना।

**घुमरी** *स्त्री०* सिर में चक्कर आने की बीमारी; भौरी, भँवर (पानी का); चौपायों का एक रोग।

**घुमरी परौआ** *पु०* बच्चों का एक खेल।

**घुमाई** *पु०* घूमने की क्रिया।

**घुमान** *पु०* किसी जगह पहुँचने का टेढ़ा रास्ता, फेर।

**घुमाव** दे० 'घुमान'।

**घुमावल** *सक०* किसी लचीली वस्तु को टेढ़ी करना; वापस करना, टहलाना, घुमाना।

**घुर** *पु०* कूड़े का ढेर।

**घुरकल** दे० 'घुड़कल'।

**घुरघुरा** *पु०* एक प्रकार का घाव, कीड़ा विशेष।

**घुरची** *स्त्री०* ऐंठ, कपड़े या रस्सी की ऐंठन।

**घुर-फेर** *पु०* किसी काम को पूरा नहीं करके वहाँ केवल आते-जाते रहने का भाव।

**घुरुमल** *अक०* चक्कर आना, घूमना।

**घुटकल** *अक०* असफल होना, घुलटना।

**घुलावल** *सक०* किसी घुलनशील पदार्थ को पानी में डालकर उसे तरल बनाना, घुलाना।

**घुसकुरिया** *स्त्री०* बैठे-बैठे पैरों के बल चलने की क्रिया।

**घुसमूरल** *अक०* हाथ-पैर समेट कर बैठना या लेटना।

**घुसरा** *पु०* मछली मारने के औजार को मेंड़ के पास पानी में छिपा देने की स्थिति।

**घुसल** *अक०* घुसना।

**घुसवटल** *सक०* घूँसा मारना।
**घुसिआइल** *अक०* भीड़ में घुस जाना।
**घुहुरावल** *सक०* किसी अन्न को बहुत साधारण ढंग से कूटना।
**घूँघट** *पु०* साड़ी का वह भाग, जिससे औरतें अपना मुँह ढँक लेती हों।
**घूँघर** *पु०* बालों का छल्ला।
**घूँघरी** *पु०* नूपुर।
**घूँट** *पु०* तरल पदार्थ की थोड़ी मात्रा।
**घूँचा** *पु०* दूध दूहने का मिट्टी का बर्तन।
**घूँटल** *सक०* घूँट को गले के नीचे उतारना।
**घूँठ** *पु०* घुट्ठी का संक्षिप्त रूप।
**घूँड़ी** *स्त्री०* कपड़े का हाथ से बनाया गोल बटन।
**घूआ** *पु०* भुट्टे के ऊपर का केश जैसा गुच्छा, मोंचा।
**घूघ** *स्त्री०* स्त्रियों द्वारा आँचल से मुख पर डाला गया पर्दा, घूँघट।
**घूटल** *अक०* श्वास का अवरुद्ध होना।
**घून** *पु०* अनाज में लगने वाला छोटा कीड़ा।
**घून्ना** *वि०* जो अपने मनोवेगों को दबा कर रखता है।
**घूमल** *अक०* भ्रमण करना।
**घूर** *पु०* कूड़े-कचरे का ढेर; अलाव; कौड़ा।
**घूरल** *अक०* वापस होना; किसी की ओर गौर से ताकना। *उदा०* 'देखऽ बाकिर, घूरऽ मत'।
**घूरा** *पु०* कउड़ा।
**घूलल** *अक०* फल का पककर मुलायम और पिलपिला हो जाना।
**घूस** *पु०* वह द्रव्य, जो किसी अधिकारी को अनुकूल करने-कराने के लिए दिया जाता है, उत्कोच। *वि०* घुसहा, घूसखोर।
**घूसल** *अक०* प्रवेश करना, घूसना।
**घूसा-घूस्सा** *पु०* बँधी हुई मुट्ठी के अँगूठे की ओर से मारने की स्थिति।
**घेंकुआर** *पु०* एक प्रकार का बहुत मोटे पत्तों वाला पौधा, जो औषधि के काम में आता है; घृतकुमारी।
**घेंकुचल** *अक०* सिकुड़ना; वस्त्र में शिकन पड़ना।
**घेंकुरल** *अक०* किंकुरना, सिमटना।
**घेंघ** *पु०* दे० 'घेंघा'।
**घेंघा** *पु०* घेंघा, आयोडीन की कमी से गोलाकार ग्रंथि सम्बन्धी रोग; गलगण्ड।
**घेंच** *पु०* गर्दन।
**घेंचुराइल** *पु०* सिकुड़ना।
**घेंट** *स्त्री०* गर्दन, टेटुआ।
**घेंटारी** *वि०* छोटी गर्दन वाला, छोटी गर्दन वाला बदमाश व्यक्ति।
**घेंपल** *सक०* खाना (व्यंग्य)।
**घेंव-घेंव** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।
**घेंवड़ा** *पु०* एक प्रकार की सब्जी।
**घेंवर** *पु०* एक प्रकार की मिठाई।
**घेघ** *पु०* गले के मोटा होने की बीमारी, घेंघा। *वि०* घेघाह, घेरना।
**घेघा** *पु०* गलगण्ड।
**घेर** *पु०* कुर्ता आदि कपड़े के बीच की गोलाई।
**घेरल** *सक०* रोकना, घेरना।
**घेरवटल** *सक०* चारों तरफ से घेरे रहना।
**घेरवट्टा** *पु०* घेरे रहने का भाव।
**घेरा** *पु०* किसी वस्तु द्वारा चारों तरफ से घेरे जाने का भाव; हाता, मण्डल।
**घेराइल** *सक०* चारों तरफ से घिर जाना।
**घेराई** *स्त्री०* दे० 'घिराई'।
**घेराव** *पु०* लोगों द्वारा किसी व्यक्ति को चारों ओर से घेरे रहने का काम।
**घेरावा** *पु०* चारदीवारी से घिरी जगह।
**घोंइँस** *पु०* घूँस, चूहे की जाति का बड़ा जीव।

**घोंकल** *सक०* पानी एवं अन्य तरल पदार्थ को हाथ से चलाकर गँदला करना।

**घोंघड़ी** *स्त्री०* एक कीड़ा।

**घोंघा** *पु०* शंख की आकृति का एक जलीयजन्तु। *उदा०* 'घोंघा काना दोसर डाबर, थारू काना दोसर देस।' लोक०। *वि० मूर्ख।*

**घोंघी** *स्त्री०* आकार में छोटा घोंघा; वर्षा से बचने के लिए कम्बल के ऊपरी छोर को बाँधकर बनाई गई ओढ़नी।

**घोंचहा** *वि०* आगे की ओर निकलकर घूमें हुए सींग वाला (बैल)।

**घोंचा** *पु०* घुटने के विपरीत भाग का गड्ढ़ा, जहाँ पैर मोड़ा जाता है; दूध दूहने का मिट्टी का बर्तन।

**घोंचाह** *वि०* टेंढ़ा।

**घोंट** *पु०* एक बार में गले से नीचे उतरनेवाली तरल पदार्थ की मात्रा; घूँट।

**घोंटल** *सक०* निगलना; भाँग को पीसकर पीनेयोग्य बनाना; किसी बात को बार-बार कहते रहना।

**घोंपल** *सक०* चुभाना, घुसेड़ना।

**घोंपा** *पु०* बाजरे का फूल।

**घोंपी** *स्त्री०* भीतर की ओर घुसा हुआ भाग। *यौ०* घोंपा-घोंपी (सम्भोग का व्यंग्यार्थक)।

**घोखल** *सक०* किसी पाठ को याद करने के लिए उसे बार-बार दुहराना, रटना।

**घोघ** *पु०* गले के नीचे लटकी हुई थैली।

**घोघरल** *अक०* सूजन होना।

**घोघराह** *वि०* जो देखने में सूजा हुआ लगता हो।

**घोघसा** *पु०* गेहूँ आदि अन्नों के दानों के ऊपर का आवरण या भूसा; दानासहित भूसा।

**घोघिआइल** *अक०* क्रोध की मुद्रा में बोलना।

**घोघी** *स्त्री०* कम्बल को इस प्रकार चूनकर बाँधने की स्थिति जिससे वर्षा से रक्षा हो सके।

**घोठा** *पु०* वह स्थान, जहाँ मवेशियों के रहने की व्यवस्था रहती है।

**घोड़कंधा** *वि०* घोड़े के कन्धे के समान ऊँचे कन्धे वाला (बैल)।

**घोड़करइत-घोरकरहत** *पु०* एक प्रकार का काले रंग का विषैला साँप।

**घोड़गाजर** *पु०* गाजर की एक बड़ी जाति, जो मवेशियों के खाने के काम में आती है।

**घोड़जीभा** *वि०* घोड़े के समान सफेद जीभवाला (बैल)।

**घोड़दउड़** *स्त्री०* विवाह के अवसर पर या बाजी जीतने के लिए घोड़ों की दौड़।

**घोड़परास** *पु०* हिरन की लम्बी टाँग वाली एक जाति, जिसे सींग नहीं होती है; नीलगाय।

**घोड़भाँज** *पु०* मकान में लगाने के लिए लोहे की छड़, जो मोड़ कर घोड़े की आकृति की बनाई रहती है।

**घोड़वा-घोड़िया** *स्त्री०* वह रस्मी गीत जो विवाह के अवसर पर वर के घोड़े पर चढ़ने के समय गाया जाता था।

**घोड़सार** *स्त्री०* वह स्थान, जहाँ घोड़ा बाँधा जाता है; अस्तबल।

**घोड़ा** *पु०* सवारी में काम आने वाला या टमटम खींचने वाला एक जानवर; बन्दूक का वह हिस्सा, जिसे खींचने से उसमें भरे हुए टोंटे से गोली दगती है; छाते में लगी लोहे की कमानी, जिसके सहारे उसे ताना या समेटा जाता है। *स्त्री०* घोड़ी। *लोक०* 'घोड़ा के लात, अदमी के बात'।

**घोड़ा-गाड़ी** *स्त्री०* वह गाड़ी, जिसे घोड़ा खींचता है।

**घोड़िया** *स्त्री०* छप्पर की बोझ को रोकने के लिए खम्भा, जिसमें काँधा बना रहता है।

**घोदुआ** *पु०* सियार।

**घोनसार-घोनसारी** *स्त्री०* वह जगह, जहाँ भड़भूजा अन्नों को भूँजने का व्यवसाय करता है।

**घोपल** *सक०* किसी नुकीली वस्तु को चुभाना।

**घोर** *वि०* भीषण, भयंकर, अधम।

**घोरमट्ठा** *पु०* गड़बड़ी; मिश्रण, मिलावट।

**घोरल** *सक०* किसी वस्तु को पानी या अन्य पदार्थ में मिलाना, घोलना।

**घोरुआ** *वि०* पानी डालकर पतला बनाया हुआ (सत्तू)।

**घोली** *स्त्री०* बाजार में ठीकेदार द्वारा दूकानदारों से मुफ्त में ली गई सागसब्जी आदि, घलुआ।

**घोसना** *स्त्री०* घोषणा।

**घोसल** *सक०* किसी बात को बार-बार कहना, चुपड़ना।

**घोसी** *पु०* मुसलमानों की एक जाति, जो दूध का कारोबार करती है; मवेशियों का व्यापार करने वाली मुसलमानों की जाति।

**घोहा** *वि०* झौरा।

**घौंका** *पु०* एक प्रकार का साग।

**घौद** *पु०* फलों का गुच्छा; वह ताड़, जिससे पूरे वर्ष ताड़ी निकले।

**घौर** *पु०* केले के फल का पूरा गुच्छा।

**घौरी** *स्त्री०* घौद उदा० 'काहु गही केरा के घौरी।'

❑

# च

**च** देवनागरी के चवर्ग का प्रथम व्यंजन, जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

**चँइट** *वि०* कृपण, कंजूस।

**चँउड़** *पु०* मरे हुए व्यक्ति के सिर की वह हड्डी जिसमें मांस नहीं हो, खोपड़ी की हड्डी।

**चँउस** *पु०* बारीक पीसा हुआ उड़द।

**चंक** *वि०* समूचा।

**चंकुर** *पु०* [सं०] रथ, सवारी, वृक्ष।

**चंक्रमन** *पु०* [सं०] घूमना, टहलना।

**चंग** *वि०* [सं०] स्वस्थ, सुन्दर, चतुर।

**चंग** *स्त्री०* [सं० च: (चाँद) + गम्] गुड्डी।

**चंगा** *वि०* स्वस्थ, नीरोग।

**चंगुल** *पु०* [हिं० चौ (चार) + अंगुल] पकड़, काबू। **-में फँसल** *मुहा०* पकड़ में आना।

**चँगेर** *पु०* चँगेली का बड़ा रूप, जिसमें अधिक अनाज और भूसा रखा जाता है।

**चँगेली** *स्त्री०* बाँस या अरहर की बनी एक प्रकार की छोटी टोकरी।

**चँगोर** *पु०* बोइया।

**चँचरा** *पु०* बाँस की बाती से तैयार किया हुआ टाट।

**चंचल** *वि०* [सं०] चलायमान, अस्थिर; बेचैन, उद्विग्न; नटखट (बच्चा)।

**चंट** *वि०* [सं० चण्ड:] चालाक, धूर्त। *स्त्री०* चंटई।

**चंडाल** *पु०* डोम, श्वपच। *वि०* निर्दयी, कठोर।

**चँड़िआवल** *सक०* किसी को काम करने के लिए प्रेरित करना।

**चंडी** *स्त्री०* देवी का वह रूप, जिससे उसने महिषासुर का वध किया था; कर्कशा स्त्री।

**चंडुल** *वि०* जिसके सिर के बाल झड़ गए हों, गंजा।

**चंडू** *पु०* अफीम का किवाम, जिसे नशे के लिए लेते हैं। **-खाना** *पु०* चंडू पीने का स्थान। **-बाज** *पु०* चंडू पीने वाला। **-खाना के गप** *मुहा०* झूठी बात।

**चंद** *पु०* [सं० चन्द्र:] चन्द्रमा, कपूर।

**चंद** *वि०* [फा०] कुछ, थोड़े से, दो-चार। **-रोज** *पु०* थोड़े दिन। **-रोजा** *वि०* कुछ ही दिन टिकने वाला। **-साला** *वि०* कुछ वर्षों का।

**चंदन** *पु०* [सं०] चन्दन काष्ठ।

**चंदना** *स्त्री०* चन्द्रमा।

**चँदनिया** *पु०* चंदन के रंग जैसा बैल।

**चंदा** *पु०* किसी काम के लिए कई व्यक्तियों से ली गई राशि; उगाही; चन्द्रमा।

**चंपई** *वि०* एक प्रकार का पीला रंग, जो चंपा के फूल के रंग का होता है।

**चँपल** *वि०* किसी भारी या वजनी चीज से दबा हुआ।

**चंपा** *पु०* एक प्रकार का पीले रंग का फूल।

**चंपाकली** *स्त्री०* गले में पहना जाने वाला आभूषण।

**चंपारण** *पु०* [सं० चम्पकारण्य] बिहार के पश्चिमोत्तर छोर का एक जिला, जिसके वनों में चम्पा पाई जाती थी, वर्तमान चम्पारण।

**चंपिया** *पु०* चम्पा फूल के रंग वाला बैल।

**चँराती** *स्त्री०* वह फसल, जिसे पशु चर गया हो।

**चँवर** *पु०* [सं० चामर] नीचे का खेत, जहाँ पानी जमा हो जाता है; सो रही गाय की पूँछ से बना एक पंखा, जो माननीयों को डुलाया जाता है।

**चंसुर** *पु०* एक प्रकार का साग।
**चइत** *पु०* [सं० चैत्र] चैत्र का महीना, बसन्त ऋतु के एक महीने का नाम। *लोक०* 'चइत में सूते भोगी, कुआर सूते रोगी।'
**चइता** *पु०* एक प्रकार का ऋतु गीत, जो चैत के महीने में गाया जाता है, चइतावर, घाँटो। *उदा०* 'घाट छोड़ू बाट छोड़ू भइया सौदागर हो राम हम धनी सिरवा खोलि के नहाइब हो।'
**चइती** *स्त्री०* एक प्रकार का ऋतु गीत, जो चैत के महीने में गाया जाता है। *उदा०* 'कोइली तोरो मीठी बोलिया, सूतल बलमू के जगावे हो रामा।' -लोक०। *वि०* चैत के महीने में तैयार होने वाली (फसल)।
**चइतार** *पु०* चैत के महीने की विशेष स्थिति।
**चइतावर** *पु०* दे० 'चइता'।
**चइला** *पु०* सूखे काठ के चिरे हुए छोटे-छोटे टुकड़े, जो जलावन के काम आता है। *स्त्री०* चइली।
**चइलाइल** *अक०* छिमी वाली सब्जी (सेम आदि) के फल का कड़ा होना।
**चइली** *स्त्री०* पतली फर्री, जलावन।
**चई** *स्त्री०* औषधि के काम आने वाला एक वृक्ष।
**चउ** *वि०* चार को व्यक्त करने वाला संख्यावाचक शब्द, जो किसी शब्द के पूर्व जुड़ जाता है।
**चउअन-चउअन** *वि०* पचास और चार, 54 की संख्या।
**चउअन्नी** *स्त्री०* रुपये के चौथाई भाग का सिक्का, चवन्नी।
**चउआ** *वि०* [हिं० चौवा] ताश की चौथी पत्ती।
**चउआलीस** *वि०* चालीस और चार, 44 की संख्या।
**चउक** *पु०* चार राहों का संगम।
**चउकठ** *पु०* लकड़ी का वह ढाँचा, जिसमें किवाड़ के पल्ले लगते हैं।
**चउकड़ी** *स्त्री०* चार का समूह; छलाँग, कुदान।
**चउकन्ना** *वि०* सतर्क।
**चउकल** *सक०* अनाज के ढेर को गोलाकार बनाना।
**चउकस** *वि०* सतर्क, सावधान।
**चउका** *पु०* भोजन बनाने की जगह, रसोईघर; यज्ञादि शुभ कार्यों में यज्ञकर्ता के बैठने के स्थान पर बनाई गई पीले चावल की अल्पना। **-पूरल** *सक०* चौकोर चित्र बनाना, जिस पर बैठकर मांगलिक कार्य होता है।
**चउकी** *स्त्री०* चौकी।
**चउकीदार** *पु०* पहरेदार, रखवाला। *स्त्री०* चउकीदारी, चौकीदार का काम करने का भाव।
**चउकेठल** *अक०* इर्द-गिर्द घूमना।
**चउखट** *स्त्री०* चौखट।
**चउखुट्टा** *वि०* चारों माथ से बराबर खेत।
**चउगिरदा** *क्रि०वि०* चारों तरफ।
**चउठा** *वि०* [हिं०] चौथा।
**चउठापन** *पु०* जीवन की चौथी अवस्था।
**चउठारी** *स्त्री०* यज्ञ का चौथा दिन, शुभ विवाह का चौथा दिन।
**चउठिया** *वि०* खेत जोतने के बाद उसमें चार बार दिया गया हेंगा।
**चउठी** *स्त्री०* कृष्ण और शुक्ल पक्ष की चौथी तिथि; चौथ, चतुर्थी।
**चउड़ी** *स्त्री०* बिच्छी के खेल में जमीन पर बनाया गया चौथा खाना।

**चउतरफा** *क्रि०वि०* चारों तरफ।
**चउतरा** *पु०* ऊँची बनाई हुई चौरस जगह, जिस पर बैठा जाता है—चबूतरा।
**चउतार** *पु०* चारों तरफ पाढ़ वाली साड़ी।
**चउताल** *पु०* बारह (12) मात्राओं का एक ताल जो मुख्यत: पखावाज पर बजाया जाता है। (गीत और वाद्य)।
**चउतीस** *वि०* [हिं० चौंतीस] तीस और चार।
**चउदंत** *वि०* चार दाँत वाला हृष्ट-पुष्ट बैल।
**चउदह** *वि०* दस और चार; 14 की संख्या।
**चउधान** *पु०* ऐसा धान, जिसमें अनेक किस्म के धान मिले हों, गबड़ा।
**चउधुरी** *पु०* मुस्लिम शासकों द्वारा दी गई उपाधि; किसी जाति का सरदार।
**चउपट** *वि०* नष्ट-भ्रष्ट, बेकार।
**चउपनिया** *वि०* कागज के ताव को मोड़ देने पर उससे चार पन्ने बनने की स्थिति।
**चउपहल** *वि०* जिसके चार पहल हों, वर्गात्मक।
**चउपाई** *स्त्री०* सोलह मात्राओं का एक छन्द। *उदा०* 'मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी॥'
**चउपार** *पु०* दे० 'चंपारण'।
**चउपारन** *पु०* [सं० चम्पकारण्यम्] बिहार का एक पश्चिमोत्तर जिला, चम्पारण।
**चउपाल** *पु०* वह सार्वजनिक स्थान, जहाँ लोग एकत्रित होते और राय-विमर्श करते हैं।
**चउपेतल** *सक०* चारों तरफ से मोड़ना।
**चउपेतवावल** *पु०* चउपेतने का काम दूसरे से कराना।
**चउफेरा** *क्रि०वि०* चारों तरफ।
**चउबगला-चउबगली** *पु०* कुर्ते में बगल की ओर का भाग। *वि०* चारो ओर का।
**चउबट्टी** *पु०* ऐसी जगह, जहाँ पर चार रास्ते मिलते हों।
**चउबन्हा** *पु०* जिसमें चार बन्धन हों।
**चउबरधी** *वि०* चार बैलों द्वारा खींचा जाने वाला (हेंगा)।
**चउबाई** *स्त्री०* चारों ओर से बहने वाली हवा; चौबाई।
**चउबारा** *क्रि०वि०* चौथी बार।
**चउबीस** *वि०* चार और बीस।
**चउबे** *पु०* [सं० चतुर्वेदी] ब्राह्मणों की एक उपाधि। *स्त्री०* चउबाइन।
**चउरंगी** *स्त्री०* गठिया की वह बीमारी, जो पैरों के प्रत्येक गाँठ में हो।
**चउरंच** *पु०* प्रपंच। *वि०* प्रपंची।
**चउर** *वि०* कड़ी मिट्टी वाला (खेत), अटियार।
**चउरठ** *पु०* [सं० चावल + चूर्ण] पीसा हुआ चावल, चावल का चूर्ण।
**चउरल** *सक०* चारों तरफ से बाँधना।
**चउरवावल** *पु०* किसी दूसरे व्यक्ति से मवेशी को बँधवाना।
**चउरस** *वि०* बराबर, समतल (जमीन)।
**चउरा** *पु०* चबूतरा।
**चउरानबे** *वि०* नब्बे और चार। 94 की संख्या।
**चउरासी** *वि०* अस्सी और चार। 84 की संख्या।
**चउराहा** *पु०* चार रास्तों का संगम-स्थल।
**चउरी** *स्त्री०* खेती की ऐसी जमीन, जो अधिक गहरी नहीं हो।
**चउल** *पु०* मजाक, हँसी-दिल्लगी।
**चउसठ** *वि०* साठ और चार। 64 की संख्या।
**चउहान** *पु०* [हिं० चौहान] राजपूतों की एक उपाधि।

**चउमास** *पु०* [सं० चातुर्मास्यम्] वर्षाकाल के आषाढ़ से आश्विन तक के चार महीने की अवधि। **-चउमास छोड़ल** *मुहा०* वर्षा में खेत को जोत कर छोड़ देना।

**चउमासा** *पु०* वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला वह गीत, जिसमें इस ऋतु के वर्णन के साथ प्रेम और विरह का भी वर्णन रहता है।

**चउमुहानी** *स्त्री०* वह जगह, जहाँ पर चार रास्ते आकर मिलते हैं।

**चक** *पु०* चकवा, जमीन का बड़ा खण्ड, छोटा गाँव, पुरवा। **-चाल** *स्त्री०* चक्कर। **-डोर** चकई की डोरी। **-बंदी** *स्त्री०* जमीन का बड़े-बड़े टुकड़ों में बँटवारा।

**चकइठ** *वि०* मोटा और नाटा व्यक्ति।

**चकई** *स्त्री०* मादा चकवा, मादा सुरखाब।

**चकचकाइल** *अक०* चमकाना, चौंधियाना।

**चकचोन्हर** *वि०* जिसकी आँख चकाचौंध हो जाती हों; मूर्ख व्यक्ति।

**चकड़चाल** *पु०* षड्यन्त्र, साजिश।

**चकती** *स्त्री०* पेवन, पैबन्द।

**चकनबाय** *पु०* अंग के फड़कने के साथ शरीर में उठने वाले दर्द।

**चकनाचूर** *वि०* जो टूटकर चूर-चूर हो गया हो।

**चकमक** *वि०* चकित।

**चकमा** *पु०* धोखा।

**चकराइन** *अक०* सिर घूमना।

**चकरी** *स्त्री०* चौकी; गुड़ का बड़ा पिण्ड।

**चकला** *पु०* रोटी बेलने का पाटा; बड़ा भूखण्ड; वेश्याओं का बाजार।

**चकली** *स्त्री०* गड़ारी।

**चकल्लस** *पु०* झंझट, कठिनाई; आनन्द।

**चकवँड़** *पु०* एक बरसाती पौधा, जिसकी पत्तियाँ दवा के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

**चकवा** *स्त्री०* एक पंछी, जो जाड़े में जलाशयों के किनारे पाए जाते हैं, जिसके सन्दर्भ में कहा जाता है कि रात में उसका बिछड़न अपनी मादा से हो जाता है और नदी के दोनों तीर से दोनों ही आवाज लगाते हैं।

**चकवार** *पु०* बोझों का वृत्ताकार ढेर।

**चकवाह** *पु०* दे० 'चकवा'।

**चका** *पु०* फार का हिस्सा, जो बेंट के अन्दर घुसा रहता है।

**चकाचक** *वि०* चमकदार, खूब स्वच्छ, तर-बतर।

**चकाचौंध** *स्त्री०* तीव्र प्रकाश से आँख का झपकना, हैरानी।

**चकाबू** *पु०* चक्रव्यूह।

**चकार** *पु०* [सं०] सहानुभूतिसूचक शब्द 'च' अक्षर।

**चकित** *वि०* दंग, घबराया हुआ,।

**चकिया** *पु०* किसी गाँव के नाम के अन्त में जुड़ा हुआ शब्द जैसे तिनारी चकिया।

**चकोटल** *सक०* चिकोटी काटना, बकोटना।

**चकोड़ा** *वि०* शरारती।

**चकोतरा** *पु०* एक तरह का बड़ा नीबू।

**चकोता** *पु०* एक चर्म रोग।

**चकोर** *पु०* [सं०] एक पक्षी, जो चन्द्रमा का प्रेमी माना जाता है।

**चकोरी** *स्त्री०* [सं०] मादा चकोर।

**चकोह** *पु०* पानी का भँवर।

**चक्क** *पु०* बड़ा खेत।

**चक्कर** *पु०* चाक, चक्र, घेरा। **-दार** *वि०* घुमाव, पेंच। **-काटल** *मुहा०* भटकना। **-मारल** *मुहा०* चक्कर लगाना।

**चक्कस** *पु०* अड्डा।

**चक्का** *पु०* पहिया; करा।

**चक्की** *स्त्री०* किसी वस्तु को पीसने या दलने वाला पत्थर का जाँता।
**चख** *स्त्री०* [फा०] बैर, तकरार।
**चख-चुख** *स्त्री०* नोकझोंक, झगड़ा।
**चचरा** *पु०* बाँस की फट्टी का बना मचान।
**चचा** *पु०* बाप का भाई।
**चचिया** *वि०* चचेरा।
**चची** *स्त्री०* चाचा की स्त्री।
**चचेरा** *वि०* चाचा से उत्पन्न।
**चचोड़ल** *सक०* दाँतों से दबा कर चूसना।
**चट** *स्त्री०* टूटने की आवाज, चाटने का भाव।
**चट** *पु०* दाग; पटसन, टाट। **-कल** *स्त्री०* पटसन की चीजों को बनाने वाली फैक्टरी।
**चटक** *वि०* गाढ़ा, चटकीला।
**चटकदार** *वि०* विशेष रंग, रंगीन, अच्छा लगने वाला; खुलता, शोख, भड़कीला।
**चटकन** *पु०* थप्पड़, झापड़, चमेटा; लप्पड़ मारने के लिए प्रयुक्त हथेली।
**चटक-मटक** *यौ०* अच्छे स्वाद का नमकीन, स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ।
**चटकनी** *स्त्री०* किवाड़ बन्द करने की कुण्डी।
**चटकल** *अक०* बिना अलग हुए टूटने की स्थिति में हो जाना।
**चटकार** *वि०* चटपटा, तीक्ष्ण, गाढ़े रंग वाला; खट्टा नमकीन एवं मिर्च-मसाले के स्वाद।
**चटकाहट** *स्त्री०* चटकने का भाव।
**चटकी** *वि०* भिखमंगे द्वारा प्रयुक्त एक प्रकार का काठ का बाजा; धूर्ततापूर्ण कार्य।
**चटकीला** *वि०* चटकदार।
**चटकुनी** *स्त्री०* चटाई का टुकड़ा, छोटी चटाई, जो बैठकर पूजा-पाठ करने के काम आती है, आसनी।
**चटकोरा** *पु०* बालकों का एक खिलौना।
**चटकोहा** *पु०* पटकी।
**चटखारा** *पु०* खाते समय जीभ के तालु से लगने से उत्पन्न आवाज। **-भरल** *मुहा०* स्वाद लेकर खाना।
**चटचटाइल** *अक०* 'चटचट' की आवाज से टूटना, चिपकना।
**चटना** *पु०* चटोर, स्वाद-लोलुप।
**चटनी** *पु०* अनेक प्रकार के मिर्च-मसाले से बना खट्टा भोज्य पदार्थ; चाटने की चीज, अवलेह।
**चटपट** *स्त्री०* शीघ्र, जल्दी।
**चटपटाइल** *अक०* किसी स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ को खाने के लिए मुँह में एक विशेष प्रकार की हलचल होना।
**चटल** *अक०* कुआँ के पानी का समाप्त होना।
**चटाई** *स्त्री०* घास पुआल का बना बिछावन।
**चटाक** *पु०* चोट देने पर उससे निकली आवाज।
**चटा-चट** *क्रि०वि०* अति शीघ्रतापूर्ण।
**चटावन** *पु०* दूहने के पूर्व मवेशियों को दिया गया दाना; घूस; बच्चे को पहले पहल अन्न चटाना, अन्नप्राशन।
**चटिया** *पु०* चेला, विद्यार्थी।
**चटी** *स्त्री०* चट्टी।
**चटु** *पु०* [सं०] चापलूसी। **-कार** *वि०* खुशामदी।
**चटुल** *वि०* [सं०] चंचल, सुन्दर।
**चटोर** *पु०* खाने का लोभी, जीभचटोर, लोलुप, लोभी।
**चटोरा** *वि०* स्वाद लोलुप, लोभी।
**चट्ट** *वि०* चाट-पोंछकर, खाया हुआ।
**चट्टा** *पु०* कमी, अभाव; चेला, मैदान।
**चट्टी** *स्त्री०* पटसन से तैयार की गई वस्तु, जो मवेशियों के ओढ़ने के काम आती है;

गाँव के नाम से जुड़ा हुआ शब्द, स्थान-बोधक। *उदा०* भगवान चट्टी, दूबे चट्टी।
**चट्टू** *वि०* चटोरा।
**चठइल** *पु०* खेखसा।
**चढंती** *स्त्री०* बढ़ोत्तरी, प्रगति; धनरोपा का एक प्रकार का गीत, जो मध्याह्न के पूर्व गाया जाता है। *उदा०* 'गोरी का एड़िअन सोहेला महावर, नयना रे सोहेला कजरा'।
**चढ़नदार** *पु०* मुस्तैद।
**चढ़ना** *पु०* पके पत्तों पर पड़ी चित्तियाँ।
**चढ़बाँक** *वि०* चढ़ने वाला, पति पर रोब गाँठने वाली स्त्री।
**चढ़ल** *अक०* नीचे से ऊपर जाना।
**चढ़ाँव** *पु०* चढ़ने का भाव, चढ़ाई। *अक०* चढ़ल, *सक०* चढ़ावल।
**चढ़ाव-उतार** *पु०* ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने का भाव।
**चढ़ावल** *सक०* देवता को कोई पदार्थ पूजा के समय अर्पित करना; किसी को झगड़े के लिए बढ़ावा देना, उसकाना।
**चढ़ावा** *पु०* पूजा में देवताओं पर चढ़ाई जाने वाली सामग्री।
**चढ़ैत** *पु०* चढ़ने वाला।
**चतरंग** *पु०* चतुरंग।
**चतरभंग** *पु०* बैलों का एक ऐब।
**चतरभंगा** *वि०* चतरभंग दोष वाला।
**चतरा** *पु०* झुलसा।
**चतुर्** *वि०* [सं०] चार। *पु०* चार की संख्या। **-आनन** *पु०* ब्रह्मा। **-आश्रम** *पु०* ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास। **-दस** *पु०* चौदह की संख्या। **-दसी** *स्त्री०* चौदहवीं तिथि। **-धाम** *पु०* चारो धाम। **-वेद** *पु०* ऋक्, यजु, साम, अथर्व-चार वेद।
**चदर** *पु०* ओढ़ने का वस्त्र।
**चदरा** *स्त्री०* लोहे के पत्तर का बना हुआ लम्बा चौड़ा और पतला टुकड़ा।
**चदरिया** *स्त्री०* दे० 'चद्दर'।
**चद्दर** *स्त्री०* कपड़े का लम्बा-चौड़ा टुकड़ा, जो बिछाने या ओढ़ने के काम आता है, चादर।
**चनइली** *स्त्री०* वह भैंस, जिसके सिर पर सफेद बाल हो।
**चनऊ** *पु०* कुर्मी वर्ग की एक जाति।
**चनक** *पु०* चना।
**चनकबाय** *पु०* अंग के फड़कने के साथ शरीर में होने वाला दर्द।
**चनकल** *अक०* चिटकना, दरकना।
**चनन** *पु०* चन्दन।
**चनरमा** *पु०* चाँद, चन्द्रमा।
**चनरहार** *पु०* स्त्रियों के गले का एक आभूषण, चन्द्रहार।
**चनवा** *पु०* चँदोवा।
**चनवाह** *पु०* सिरदर्द, जो सूर्य के उदय के साथ शुरू होता है, अधकपारी।
**चुनसुर** *पु०* एक प्रकार का साग, जिसका दाना औषधि के रूप में व्यवहृत होता है।
**चना** *पु०* [सं० चणक] बूँट। *लोक०* 'चना चितरा चौगुना स्वाती गोहूँ होय।'
**चनाव** *पु०* गहरे पानी में होने वाला मोटा धान।
**चनौरी** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई।
**चन्न** *पु०* शीशे के बर्तन के टूटने की आवाज।
**चपकन** *स्त्री०* एक लम्बा अँगरखा, बड़ी मिरजई।
**चपकल** *अक०* किसी लस्सेदार वस्तु का दूसरी वस्तु में सट जाना। *पु०* चपकावल।
**चपचप** *पु०* पानी या किसी तरल पदार्थ से भीगने की स्थिति।

**चपचपाइल** *अक०* भीगने से गीला होना।
**चपट** *पु०* काम करने में मुस्तैदी का भाव।
**चपटा** *वि०* चिपटा।
**चपड़गट्टू** *वि०* चपरगट्टु।
**चपड़चपड़** *स्त्री०* चभड़-चभड़।
**चपड़ा** *पु०* लाह, जिसका उपयोग किसी वस्तु को सील करने में होता है; लाल रंग का एक कीड़ा।
**चपत** *पु०* तमाचा, थप्पड़।
**चपरगट्टू** *वि०* दे० 'चपड़गट्टू'।
**चपरास** *पु०* आदेशपालक के पहचान की मुहर, जिसे वह अपने पहनावे में लगाये रहते हैं।
**चपरासी** *पु०* किसी सरकारी अधिकारी का आदेश-पालक, प्यादा, अरदली।
**चपल** *वि०* [सं०] चंचल, तेज़।
**चपला** *वि० स्त्री०* [सं०] चपल; लक्ष्मी; बिजली।
**चपलाई** *स्त्री०* चपलता।
**चपवावल** *सक०* दबवाना।
**चपाक** [अ०] अचानक।
**चपाठ** *वि०* अत्यन्त मूर्ख।
**चपाती** *स्त्री०* फुलका, पतली रोटी।
**चपेटल** *सक०* अधिकार में कर लेना, दबोचना।
**चपोट** *पु०* फरी।
**चपेटा** *पु०* धक्का।
**चप्पल** *पु०* फीता लगी ऐसी पादुका, जिसमें केवल तल्ला हो।
**चप्पा** *पु०* चार अंगुल या चार बित्ता स्थान, थोड़ा सा स्थान।
**चप्पी** *स्त्री०* धीरे-धीरे पाँव दबाना।
**चप्पू** *पु०* डाँड़।
**चबावल** *सक०* [सं० चर्वणम्] चबाना।
**चबूतरा** *पु०* बैठने हेतु निर्मित ऊँचा स्थान।
**चबेना** *पु०* चबाकर खाने की चीज।
**चबैन** *पु०* भूँजा।
**चभकरल** *सक०* मवेशियों द्वारा नाद में नाक डुबाकर खाना।
**चभक्का** *पु०* एक बार में मुँह से दूध या तरल पदार्थ को खींच लेने का काम।
**चभर-चभर** *पु०* जीभ के सहारे खाने-पीने के क्रम में उत्पन्न आवाज।
**चभाड़** *पु०* पानी वाला गड्ढा।
**चभावल** *सक०* चखने के लिए किसी को रसदार फल देना।
**चभुकी** *स्त्री०* कोड़ा।
**चभोरल** *सक०* कपड़े को पानी में डुबाना।
**चमइन** *स्त्री०* चमार की स्त्री।
**चमकउअल** *स्त्री०* रूठने का भाव, चमकाने की क्रिया; मटकाने की क्रिया।
**चमकल** *अक०* आकाश में बिजली का कौंधना, किसी वस्तु से आभा निकलना; रूठना; एकाएक दर्द उठना।
**चमका-चमकी** *स्त्री०* एक-दूसरे से रुष्ट होने की स्थिति।
**चमकावल** *अक०* मुखाकृति में चमक लाना; अस्वीकृति को व्यक्त करने के लिए मुँह बनाना, चिढ़ाना, खिझाना, मटकाना।
**चमका** *पु०* जौ-गेहूँ के फूल मर जाने का रोग।
**चमकी** *स्त्री०* सुनहले तारों से बने अत्यन्त छोटे एवं रंगीन टुकड़े, सितारे; प्लास्टिक की थैली।
**चमकुन** *पु०* जूँ के अण्डे से तुरन्त निकला हुआ बच्चा।
**चमच** *पु०* एक प्रकार की छोटी हल्की कलछी।
**चमचम** *स्त्री०* चमकदार वस्तु; एक प्रकार की मिठाई।

**चमचमाइल** *अक०* चमकना।
**चमचोरा** *पु०* लम्पट, व्यभिचारी।
**चमड़ा** *पु०* [सं० चर्म] प्राणियों के शरीर का ऊपरी आवरण, चाम, त्वचा, खाल।
**चमनपरास** *पु०* च्यवनप्राश।
**चमरउआ** *वि०* चमारों द्वारा हाथ से बनाया गया जूता, चमरौधा।
**चमरख** *वि०* गंदा (वस्त्र)। *पु०* मूँज।
**चमर गोटी** *स्त्री०* अधिक कष्ट देने वाला चेचक का रोग।
**चमरचीह** *वि०* मैल से भरा हुआ।
**चमर टोली** *स्त्री०* वह टोली, जिसमें चमारों के अधिक घर हों।
**चमर दिनाय** *पु०* दाद, जिसमें बहुत खुजली होती है।
**चमर देवी** *स्त्री०* एक देवी, जो चमारों द्वारा पूजी जाती हैं।
**चमाचम** *पु०* चमकने की स्थिति।
**चमार** *पु०* [सं० चर्म्मकार:] जाति का एक भेद, जो प्राय: चमड़े का काम करता है।
**चमारी** *स्त्री०* चमारों का कार्य।
**चमेली** *स्त्री०* [सं०] एक प्रकार का सफेद फूल।
**चमोटा** *पु०* चमड़े का टुकड़ा, जिस पर छुरा तेज किया जाता है।
**चमोटी** *स्त्री०* चमोटा, चाबुक।
**चमोरल** *सक०* बुरी तरह से मोड़ना।
**चमौआ** *पु०* चमरौधा जूता।
**चमौटा** *पु०* पट्टा, बेल्ट।
**चम्मच** *पु०* चमचा।
**चरई** *स्त्री०* हौज।
**चरक** *पु०* एक प्रकार का चर्म रोग, जिसमें शरीर पर श्वेत दाग हो जाता है।
**चरकल** *अक०* टूटना, दरकना, फूटना।
**चरका** *पु०* खरोंच, हल्का जख्म; चकमा, धोखा।
**चरकी** *स्त्री०* एक विषैली मछली।
**चरकीखीर** *स्त्री०* वैसी खीर, जिसमें केवल दूध पड़ता है, चीनी नहीं।
**चरखा** *पु०* सूत कातने की एक मशीन।
**चरखी** *स्त्री०* रस्सी ऐंठने की घिरनी; रूई ओटने का यंत्र।
**चरखाना** *पु०* ऐसा कपड़ा, जिसपर वर्गाकार या आयताकार खाने बने हों।
**चरँगा** *पु०* एक प्रकार की काली मछली।
**चरँगुनी** *स्त्री०* चरँगा मछली का बच्चा।
**चरगोड़ा** *पु०* चौपाया।
**चरचर** *पु०* फिजूल बात; किसी वस्तु के टूटने की आवाज।
**चरचरही** *स्त्री०* झगड़ालू औरत।
**चरचराइल** *अक०* चर-चर शब्द करना; जल्दी-जल्दी और तेजी से बोलना।
**चरचा** *स्त्री०* जिक्र, वर्णन, बातचीत।
**चरनामरित** *पु०* ठाकुरजी को स्नान कराने में प्रयुक्त जल, चरणामृत।
**चरनिया** *वि०* चार आने के मूल्य का; एक चौथाई।
**चरनी** *स्त्री०* पशुओं के चारा खाने का लम्बा नाद।
**चरन्नी** *स्त्री०* चार आने का सिक्का, चवन्नी।
**चरपट** *पु०* उच्चका, तमाचा।
**चरपर** *वि०* चरपरा।
**चरपरा** *वि०* तीखे स्वाद वाला।
**चरपराइल** *अक०* चर्राना, चरपराहट होना।
**चरपराहट** *स्त्री०* तीखापन; घाव की जलन।
**चरफर** *वि०* वाचाल; बोलने एवं काम करने में तेज व्यक्ति।
**चरबन** *पु०* वह भोज्य पदार्थ, जो अधिक चबाकर खाया जाता है। जैसे पूड़ी, दही-चिउड़ा।

**चरबरखा** *वि०* जो चार वर्ष पुराना हो।
**चरबरधी** *वि०* चार बैलों द्वारा खींचा जाने वाला हेंगा।
**चरबी** *स्त्री०* मेद, वसा।
**चरमंजिला** *वि०* चार छत वाला मकान।
**चरमर** *पु०* चलने में जूते से होने वाली ध्वनि।
**चरमरा** *वि०* 'चरमर' शब्द करने वाला।
**चरयारी** *स्त्री०* मुगल काल का एक प्रकार का चाँदी का सिक्का; मुगल बादशाह आलम के सिक्के।
**चरल** *सक०* पशुओं का घूम-घूम कर घास, चारा चरना।
**चरवाह** *पु०* मवेशियों को चराने वाला।
**चरवाही** *स्त्री०* चराने का काम, चरवाहे को दी जाने वाली मजदूरी।
**चरस** *पु०* गाँजे के पेड़ से निकला गोंद, जिसे चिलम पर रखकर पीते हैं।
**चरसा** *पु०* मृत मवेशियों का चर्म; चमड़े का बड़ा थैला; चरख, मोट।
**चरसेरी** *स्त्री०* चार सेर वजन का बटखरा।
**चरही** *स्त्री०* लम्बी रस्सी, जिसमें चरने हेतु पशुओं को बाँधा जाता है।
**चराँत** *पु०* मवेशियों के चरने के लिए छोड़ी गई जमीन।
**चराइल** *अक०* पैर की ऐंड़ी के चमड़े का फटना।
**चराई** *स्त्री०* पशुओं के चरने का काम; चरवाहे को दी जाने वाली मजदूरी।
**चराउर** *पु०* पशु-पक्षियों का आहार की खोज में घूमना।
**चराग** *पु०* [फा०] चिराग, दीया।
**चरागाह** *पु०* [फा०] चरने-चराने की जगह।
**चराचर** *वि०* [सं०] सम्पूर्ण जगत्।
**चराव** *पु०* चरनी।
**चरावल** *सक०* चरवाना; चराना।
**चरित्तर** *पु०* [सं०] चरित्र, चाल-चलन; प्रपंच, धूर्तता।
**चरी** *स्त्री०* मवेशियों के चरने की घास, चारागाह।
**चरुआ** *पु०* चरुई, हाँडी।
**चरोतर सौ** *वि०* एक सौ चार की संख्या, केवल गिनती के लिए।
**चलंता** *वि०* चालक, चलने वाला।
**चलंदरी** *स्त्री०* पौसरा।
**चलउँसी** *स्त्री०* चालने पर चलनी में रह जाने वाला अंश और खर-पात।
**चलता** *स्त्री०* चल या गतिशील होने का भाव। **-खाता** *पु०* बैंक का वह खाता जो लेन-देन हेतु वैध हो। **-पुरजा** *वि०* चालाक, धूर्त। **-कइल** *मुहा०* हटाना, निपटाना।
**चलती** *स्त्री०* प्रभाव, रोब-दाब, जोर, असर।
**चलते** *क्रि०वि०* के कारण से, वजह से।
**चलन** *पु०* प्रथा, तौर-तरीका।
**चलनसार** *वि०* जिससे काम चल सके।
**चलनी** *स्त्री०* छिद्रोंवाला बर्तन, जिसमें चाला जाता है, छलनी। *लोक०* 'चलनी दूसे सूप के जेकरा सहसर छेद।'
**चलल** *अक०* चलना।
**चलवइया** *पु०* चलने वाला।
**चलवावल** *सक०* चालने का काम दूसरे से कराना।
**चलविधर** *वि०* होनहार, चंचल।
**चलाई** *स्त्री०* चलने की क्रिया।
**चलावन** *पु०* मवेशियों को एक बार में दी हुई कुट्टी।
**चलावल** *अक०* चलाने की क्रिया सम्पादित करना, प्रेरित करना।

**चलावा** *पु०* रीति-रिवाज, परम्परा, रहन-सहन; भूत भगाने की एक पद्धति।
**चलिसहा** *पु०* मुहर्रम का चालीसवाँ दिन।
**चलौना** *पु०* चलाने के लिए बना लकड़ी का उपकरण।
**चसक** *स्त्री०* टीस, हल्की पीड़ा
**चसका** *पु०* [सं० चषणम्] आदत, बुरी लत; शौक।
**चसमा** *पु०* चश्मा।
**चह** *पु०* मुँह के भीतर का दाँत, जिससे चबाया जाता है। नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिए चबूतरा, पाट।
**चहक** *स्त्री०* चहकने का भाव।
**चहकल** *अक०* चहचहाना।
**चहचहा** *पु०* चहचहाने का भाव।
**चहचहाइल** *अक०* चहकना।
**चहल** *स्त्री०* आनन्दोत्सव।
**चहला** *पु०* कीचड़।
**चहटेल** *अक०* चहेटना।
**चहुँपल** *अक०* पहुँचना।
**चहेता** *वि०* प्यारा, प्रेमपात्र।
**चाँइयाँ** *वि०* धूर्त, ठग।
**चाँई** *वि०* (देश०) ठग, उचक्का, छली, चालाक।
**चाँड़ल** *सक०* गरम लोहे को पीटकर बढ़ाना या लम्बा करना।
**चाँद** *पु०* चन्द्रमा।
**चाँप** *स्त्री०* दबाव। दब या चँप जाने का भाव।
**चाँपल** *सक०* चाँपना, बलपूर्वक दबा देना।
**चाँपी** *स्त्री०* निर्जन भूखण्ड।
**चाँय-चाँय** *स्त्री०* (अनु०) हल्ला-गुल्ला, बकबक।
**चाउर** *पु०* चावल।
**चाक** *पु०* पहिया, चरखी।
**चाकचक** *वि०* सुरक्षित, सुदृढ़।
**चाकर** *पु०* [फा०] नौकर। *वि०* चौड़ा।
**चाकरानी** *स्त्री०* नौकरानी।
**चाकरी** *स्त्री०* [फा०] नौकरी, सेवा।
**चाका** *पु०* चक्र, गाड़ी का पहिया।
**चाकी** *पु०* चक्की; चक्की के रूप में जमाया हुआ गुड़।
**चाकू** *पु०* [तु०] छोटी छुरी, फल-तरकारी काटने का औजार।
**चाखल** *सक०* स्वाद लेना, चखना।
**चाचर** *स्त्री०* चाँचर, हुड़दंग।
**चाचा** *पु०* पिता का भाई, काका, पितृव्य। *लोक०* 'चाचा चोर भतीजा पाजी।'
**चाची** *स्त्री०* चची, चाचा की पत्नी।
**चाट** *स्त्री०* चसका, लपका, लत।
**चाटल** *सक०* स्वाद लेना, पोंछकर खाना।
**चाटू** *पु०* [सं०] प्रियवचन, मीठी बात। **-कार** *पु०* चापलूसी करने वाला। **-कारी** *स्त्री०* [हिं०] चापलूसी।
**चातक** *पु०* [सं०] पपीहा, सारंग।
**चातर** *पु०* जमीन के समानान्तर सींगवाला बैल; महाजाल।
**चातुर** *वि०* [सं०] चतुर, चापलूस, चार से सम्बद्ध।
**चातुराई** *वि०* चातुरी।
**चातुरमास** *वि०* [सं० चातुर्मास्य:] चार महीने में होने वाला वैदिक यज्ञ; चौमासा।
**चादर** *स्त्री०* दुपट्टा। **-उतारल** *मुहा०* बेइज्जत करना। **-देख के पाँव पसाल** *मुहा०* बिसात देखकर खर्च करना।
**चादरा** *पु०* मरदानी चादर।
**चान** *पु०* चन्द्रमा।
**चानन** *पु०* चन्दन।
**चाननी** *स्त्री०* चाँदनी।
**चानस** *पु०* [अं० चान्स] मौका।
**चापुर** *पु०* जानवरों का भोज्य; उपाय, रास्ता; तदवीर; खाने की आवाज।

**चाभल** *सक०* खाना, चूसना।
**चाभी** *स्त्री०* चाबी।
**चाभुक** *पु०* कोड़ा।
**चाम** *पु०* चमड़ा। *लोक०* 'चाम के चाटी कुकुर रखवार।' **-चोर** *पु०* परस्त्रीगामी।
**चामर** *पु०* [सं०] चँवर।
**चाय** *स्त्री०* पेय, एक पौधा, जिसकी सूखी पत्तियों से पेय बनता है।
**चार** *पु०* तीन और एक, कई। *लोक०* 'चार कवर भीतर तब देवता पीतर।'
**चारा** *पु०* पशुओं का भोजन।
**चालल** *सक०* छानना।
**चालाक** *वि०* [फा०] धूर्त, चालबाज, चतुर, दक्ष।
**चालाकी** *स्त्री०* [फा०] धूर्तता।
**चालीसा** *पु०* चालीस पदों का संग्रह; चालीस वस्तुओं का समूह; चिल्ला। जैसे हनुमान चालीसा।
**चावल** *पु०* तण्डुल, भात।
**चास** *पु०* चासने का भाव; कृषियोग्य भूमि, जोत।
**चासल** *सक०* खेत को जोतना।
**चाहे** *अव्य०* जी चाहे, या तो।
**चिंआ** *पु०* इमली का बीज।
**चिंउटी** *स्त्री०* चींटी, चिकोटी।
**चिउरी** *सक०* अधपका, भूना हुआ खाद्यान्न।
**चिक** *पु०* बधिक।
**चिकनी** *स्त्री०* जो छूने से खुरदुरा न हो; जो साफ और बराबर हो।
**चिकारी** *स्त्री०* वह सांकेतिक भाषा, जिसमें प्रत्येक शब्द के पहले 'ची' जोड़ा जाता हो, हँसी-मजाक।
**चिकोटी** *स्त्री०* दे० 'चिंउटी'।
**चिखना** *पु०* ताड़ी या शराब पीने के पहले जो चटपटा भोज्य पदार्थ खाया जाता है।
**चिखावल** *सक०* स्वाद की जानकारी के लिए किसी चीज को खिलाना।
**चिघाड़** *पु०* हाथी के गरजने की आवाज; पीड़ाजनित क्रन्दन।
**चिचिआइल** *अक०* चिल्लाना, शोरगुल करना।
**चिचिहरी** *स्त्री०* रेखा।
**चिचोर** *पु०* एक प्रकार की घास।
**चिट** *स्त्री०* कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा।
**चिटकन** *अक०* सूखकर फटना, तड़कना; चिढ़ना।
**चिटकल** *अक०* दरार हो जाना।
**चिटकावल** *सक०* चिढ़ाना, खिझाना।
**चिट्ट** *स्त्री०* दे० 'चिट'।
**चिट्टा** *वि०* गोरा, सफेद (गोरा-चिट्टा)।
**चिट्टा** *पु०* खाता, आय-व्यय का विवरण, सूची।
**चिट्ठी** *स्त्री०* पत्र, खत, पुर्जा, आज्ञापत्र। **-पत्री** *स्त्री०* पत्र, पत्र-व्यवहार।
**चिठियाँव** *पु०* पत्राचार।
**चिड़िमार** *पु०* बहेलिया।
**चिढ़चिढ़** *वि०* तुनुक मिजाज, झुंझला उठे।
**चिढ़ल** *अक०* चिढ़ना।
**चिड़िया** *स्त्री०* चिरई, पक्षी, पखेरू, पंछी। ताश के चार में एक रंग।
**चिढ़ल** *अक०* खीझना, कुढ़ना। *सक०* चिढ़ावल, कुढ़ावल।
**चित** *पु०* मन; पीठ के बल पड़ा हुआ।
**चितउतार** *वि०* ऐसा व्यक्ति, जिसके प्रति दिल में घृणा का भाव हो।
**चितकावर** *वि०* पशुओं का काला और सफेदमिश्रित रंग; चित्तीदार।
**चितरकूट** *पु०* एक तीर्थस्थान, जहाँ राम और सीता ने वनवास-काल में निवास किया था, चित्रकूट पर्वत।

**चितरा** *स्त्री०* चौदहवाँ नक्षत्र, जिसमें अगहनी धान में फूल लगता है; चित्रा।

**चितवन** *स्त्री०* दृष्टि, अवलोकन, ताकने का भाव या ढंग; तिरछी दृष्टि, कटाक्ष।

**चितान** *पु०* पीठ नीचे और मुँह ऊपर कर लेटने की क्रिया, उतान।

**चित्ती** *स्त्री०* [सं० चित्तम्] कपड़े में लगा दाग; एक प्रकार की कौड़ी, जिसका प्रयोग जुए में होता है।

**चित्र** *पु०* [सं०] प्रतिमूर्ति, तस्वीर, फोटो। **-कला** *स्त्री०* चित्र विद्या। **-घंटा** *स्त्री०* चौक (काशी) में स्थित देवी।

**चिथड़ा** *पु०* फटा-पुराना कपड़ा।

**चिथाड़ल** *सक०* फाड़ना, लथेड़ना।

**चिन** *पु०* हिमालय का एक सदाबहार पेड़।

**चिनक** *स्त्री०* जलन के साथ होने वाली पीड़ा।

**चिनग** *स्त्री०* दे० 'चिनक'।

**चिनगारी** *स्त्री०* अग्निकण। **-छोड़ल** *मुहा०* झगड़ा लगाना।

**चिनगी** *स्त्री०* चिनगारी, जलती हुई आग का छोटा टुकड़ा या कण।

**चिनिगिया** *पु०* नट का वह चुस्त-चालाक लड़का, जो खेल दिखाता है।

**चिनिया** *वि०* चीनी के रंग का, सफेद, चीनी जैसे स्वाद का। **-केला** *पु०* छोटा किन्तु अधिक मीठा केला। **-बादाम** *पु०* मूँगफली।

**चिन्ह** *पु०* पहचान, निशान।

**चिन्हल** *सक०* पहचानना, जानना।

**चिन्हा-परचे** *पु० यौ०* जान-पहचान।

**चिन्हार** *वि०* परिचित।

**चिन्हासी** *स्त्री०* निशानी; पहचान की वस्तु।

**चिन्हुका** *वि०* परिचित।

**चिपकल** *अक०* सटना, लिपटना, परस्पर आसक्त होना।

**चिपकावल** *सक०* जोड़ना, साटना, लिपटाना।

**चिपचिप** *स्त्री०* लसदार वस्तु को छूने से होने वाला अनुभव।

**चिपचिपा** *वि०* लसदार।

**चिपचिपाहट** *स्त्री०* चिपचिपा होने का भाव।

**चिपट** *वि०* [सं०] चिपटी नाक वाला।

**चिपटा** *वि०* जिसकी सतह बराबर फैली एवं चिपटी हो।

**चिपरी** *स्त्री०* गोल चपटा उपला।

**चिपल** *सक०* दबा देना, चाँपना।

**चिप्पी** *स्त्री०* छोटा टुकड़ा, जो कपड़े या कागज पर साटा जाता है।

**चिबउनी** *स्त्री०* कपड़ा चबाने वाला पशु; प्रचलित एक गाली। उदा० 'बेटवा चिबउनी, भतरा चिबउनी।'

**चिबावल** *सक०* भोज्य पदार्थ को दाँत से चबाकर खाना।

**चिभलवाल** *सक०* भोज्य पदार्थ को रस लेते हुए खाना।

**चिमटा** *पु०* लोहे का एक उपकरण, जिससे आग या गर्म वस्तु पकड़ी जाती है। साधुओं द्वारा प्रयुक्त एक हथियार।

**चिमटी** *स्त्री०* छोटा चिमटा।

**चिमनी** *स्त्री०* धुआँ बाहर निकालने वाली नली, भट्ठा।

**चियारल** *सक०* बेकार हँसना, फैलाना, खोलना।

**चिरंजीवी** *स्त्री०* लम्बे समय तक जीने के लिए दी जाने वाली शुभकामना, अधिक दिनों तक जीने वाला।

**चिरइता** *पु०* एक प्रकार का तीता पौधा, जिसका उपयोग औषधि के रूप में होता है, चिरैता।

**चिरई** *स्त्री०* पक्षी, चिड़िया। *लोक०* 'चिरई में कउवा, मनई में नउआ।'
**चिरई-चुरुंग** *पु०* पक्षी आदि।
**चिरउरी** *स्त्री०* प्रार्थना, दीनतापूर्वक प्रार्थना।
**चिरकल** *अक०* तनाव पड़ने पर कपड़े का फट जाना; थोड़ा सा पाखाना करना।
**चिरकी** *स्त्री०* शिखा, चोटी, चुटिया।
**चिरकुट** *पु०* फटा-पुराना कपड़ा या कागज; चिथड़ा।
**चिरचिरी** *स्त्री०* एक छोटा-सा पौधा, जो दवा के काम में आता है; प्राचीन काल में दिन गिनने के लिए दीवाल पर खिचीं रेखाएँ।
**चिराइन** *स्त्री०* मांस या चमड़े के जलने की गन्ध, चिरायँध।
**चिराई** *स्त्री०* चीरने का काम या भाव, मजदूरी।
**चिराक** *पु०* दीपक, दीया।
**चिराग** *पु०* [फा०] दीपक, लैम्प; बेटा। **-गुल कइल** *मुहा०* दिया बुझाना। **-तले अंधेरा** *मुहा०* रखवाले के समक्ष चोरी।
**चिरान** *पु०* मशीन से लकड़ी चीरने का स्थान।
**चिरार** *पु०* श्मशान।
**चिरुआ** *पु०* चुल्लू।
**चिलउच** *पु०* बाँस की कमचियों की बनी हुई टाटी, जो मछली घेरने के काम में आती है।
**चिलम** *स्त्री०* मिट्टी का बना टोटीदार पात्र, जो तम्बाकू पीने के काम आता है।
**चिलर** *पु०* जूँ की तरह एक बहुत छोटा कीड़ा, चिल्लर।
**चिलबन** *पु०* दरवाजे पर टाँगा गया पर्दा, जिससे भीतर का सामान बाहर वाले को नजर नहीं आए।
**चिलबाँस** *पु०* चिड़िया फँसाने का फन्दा, जो बाँस के एक सिरे पर बाँधा रहता है।
**चिलाइल** *अक०* ऊँचे स्वर में बोलना, चिल्लाना। *सक०* सहायता के लिए पुकारना।
**चिल्लाहट** *स्त्री०* आर्त स्वर; जोर की पुकार; शोर, हल्ला।
**चिल्ली** *स्त्री०* कीड़ा।
**चिल्ह** *पु०* अँतड़ी में पैदा होने वाला एक लम्बा कीड़ा; कृमि।
**चिल्ह-पिल्ह** *पु०* चिल्लाहट, हल्ला-गुल्ला।
**चिल्हिक** *स्त्री०* सहसा उठने वाली पीड़ा।
**चिहाइल** *अक०* चौंकना। *वि०* चकित।
**चिहुँकल** *अक०* चौंकना। उदा० 'आधी-आधी रतिया के बोले कोइलरिया, चिहुँक उठे गोरिया सेजरिया पे ठाढ़।' -लोकगीत।
**चिहुँटल** *सक०* तरल पदार्थ को मुँह से खींचना।
**चीं** *स्त्री०* छोटी चिड़ियों की बारीक आवाज। **-चपड़** *स्त्री०* कार्य का विरोध। **-चीं०** *स्त्री०* चीं चीं की आवाज।
**चींटा** *पु०* चिउँटा।
**चींटीं** *स्त्री०* चिउँटी, पिपीलिका।
**चीक** *स्त्री०* चीख; कीचड़; कसाई।
**चीकट** *वि०* गन्दा, तेल का मैल।
**चीख** *स्त्री०* जोर से चिल्लाने का शब्द।
**चीखल** *अक०* चखना, स्वाद लेना।
**चीज** *स्त्री०* वस्तु।
**चीढ़** *पु०* एक प्रकार का पौधा।
**चीत** *पु०* चित्त; चित्रा नक्षत्र।
**चीतल** *पु०* हिरन का एक भेद, जिसकी खाल पर सफेद चित्ती होती है।
**चीता** *पु०* बाघ।
**चीथड़ा** *पु०* दे० 'चिथड़ा'।

**चीन** *पु०* भारतवर्ष के पूर्वोत्तर का एक प्राचीन देश।
**चीना** *पु०* एक प्रकार का अनाज, जो धान नहीं उपजने वाले स्थान पर अधिक होता है और उसका भूँजा जिसे मार्हा कहते हैं।
**चीभल** *सक०* चूसना।
**चीमर** *वि०* जो न जल्दी टूटे न फटे।
**चीरल** *सक०* चीरना।
**चीरा** *पु०* जीभिया।
**चुआट** *पु०* घर का वह भाग, जहाँ पानी चूता हो।
**चुक** *वि०* अतिशय खट्टा।
**चुकता** *वि०* जो चुका दिया गया हो।
**चुकल** *अक०* बीतना, समाप्त होना।
**चुकिया** *स्त्री०* कुल्हिया।
**चुकौता** *पु०* कर्ज का साफ, बेबाक बोना।
**चुक्कड़** *पु०* कुल्हड़, पुरवा।
**चुक्कामुक्का** *क्रि०वि०* हाथ-पैर सिकोड़-कर बैठने का ढंग।
**चुगद** *पु०* [फा०] मूर्ख व्यक्ति।
**चुगल** *पु०* चुगुल।
**चुगुला** *पु०* चुगुलखोर।
**चुगली** *स्त्री०* निन्दा, बुराई।
**चुचुहिया** *स्त्री०* एक प्रकार का पक्षी।
**चुच्चड़** *पु०* बहुत बड़ा स्तन।
**चुटकी** *स्त्री०* उँगलियों की आवाज।
**चुटकुला** *पु०* छोटी मनोरंजक उक्ति, लतीफा।
**चुटिया** *स्त्री०* चोटी, शिखा।
**चुटीला** *वि०* जो चोट खाया हो, घायल, जख्मी।
**चुटुकी** *स्त्री०* दे० 'चुटकी'।
**चुटैल** *वि०* चोट करनेवाला, जख्मी।
**चुड़िहारा** *पु०* चूड़ी बनाने, बेचने, पहनाने वाला व्यक्ति।
**चुड़िहारिन** *स्त्री०* चूड़ी बेचने, पहनाने वाली स्त्री।
**चुड़ैल** *स्त्री०* भूतनी, डायन, काली कुरूप क्रूर नारी।
**चुत्थल** *वि०* मसखरा।
**चुदक्कड़** *पु०* अत्यधिक सम्भोग करने वाला।
**चुदवाई** *स्त्री०* सम्भोग की क्रिया, स्त्री-प्रसंग।
**चुदवावल** *सक०* मैथुन करवाना, पुरुष से सम्भोग कराना।
**चुदवास** *स्त्री०* स्त्री-सम्भोग की लालसा।
**चुदवासी** *स्त्री०* वह कामिनी, जो सम्भोग हेतु आतुर हो।
**चुदवैया** *पु०* मैथुन करने वाला।
**चुदौवल** *स्त्री०* स्त्री-प्रसंग की क्रिया।
**चुनचुना** *वि०* चुनचुनाहट पैदा करने वाला।
**चुनचुनाइल** *अक०* जलन के साथ खुजली होना।
**चुनरी** *स्त्री०* वह रंगीन साड़ी, जिसमें कपड़े को एक सिलसिले से बाँधकर रँगा जाता है और जिसके बीच में बुँदकियाँ होती हैं; विवाह की साड़ी। *लोक०* 'चुनरी फाट गइल चमकल मेट गइल।'
**चुनल** *अक०* बिनना, अनेक वस्तुओं में से चुनना।
**चुनाई** *स्त्री०* चुनने की क्रिया, दीवार की जोड़ाई।
**चुनाव** *पु०* चुनने की क्रिया (वोट के द्वारा)।
**चुनावट** *स्त्री०* चुनट।
**चुनौटी** *स्त्री०* चूना रखने की डिबिया।
**चुन्नी** *स्त्री०* हीरे का टुकड़ा, बहुत छोटा नग; अन्न का चूरा।
**चुप्पा** *वि०* चुप रहने वाला।
**चुभकल** *अक०* बार-बार गोता खाना।

**चुभकी** *स्त्री०* डुबकी।
**चुभल** *अक०* नुकीली वस्तु का घुसना, खटकन।
**चुभीला** *वि०* चुभने वाला।
**चुम्मा** *पु०* चुम्बन।
**चुरइल** *स्त्री०* चुरैल, भूतनी।
**चुरकी** *स्त्री०* शिखा, चोटी।
**चुरुआ** *पं०* चुल्लू।
**चुलबुलाइल** *अक०* चुलबुलाना।
**चुहलगर** *वि०* मनोरम।
**चुल्हअगोर** *वि०* वह, जो खाना बनाते समय वहीं बैठा रहे।
**चुल्हानी** *स्त्री०* जिस कमरे में चूल्हा हो, चुहानी।
**चुस्त** *वि०* फुर्तीला; तत्पर, मुस्तैद; कसा हुआ, तंग, संकुचित।
**चुहाड़** *पु०* दूसरे की चीज लेकर भाग जाने वाला।
**चुहानी** *स्त्री०* रसोईघर।
**चूँच** *स्त्री०* बड़ा स्तन।
**चूँची** *स्त्री०* छोटा स्तन।
**चूअल** *सक०* तरल पदार्थ की बूँदों का गिरना; बूँद-बूँद गिरना।
**चूक** *स्त्री०* भूल, गलती।
**चूकल** *अक०* भूल करना; अवसर खो देना।
**चूड़ा** *पु०* चिउड़ा।
**चूड़ी** *स्त्री०* काँच, लाख का वृत्ताकार आभूषण।
**चूत** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग, योनि, भग।
**चूतड़** *पु०* [सं० चूतं] नितम्ब।
**चूतिया** *वि०* मूर्ख, बुद्धू। **-खाता** *पु०* चूतिया। **-पंथी** *स्त्री०* बेसमझी।
**चून** *पु०* अन्न का दाना; दबाव में कपड़े पर पड़ी सिकुड़न; चूर्ण, बुकनी। *उदा०* 'चोंच कई जिन चूनहि दै है।'
**चूनर** *स्त्री०* चुनरी।
**चूना** *पु०* तीक्ष्णक्षार, जो पान खाने और सफेदी के उपयोग में आता है। *लोक०* 'चूना चाम कूटले से ठीक होला।' **-लगावल** *मुहा०* नीचा दिखाना, हानि पहुँचाना।
**चूनी** *स्त्री०* लकड़ी काटने के बाद उससे निकले छोटे-छोटे टुकड़े, बुरादा।
**चूपरी** *स्त्री०* घी लगी हुई रोटी, *उदा०* 'देखि बिरानी चूपरी मत ललचावै जीव।'
**चूमल** *सक०* चुम्मा लेना, चूमना।
**चूमा** *पु०* चूमने की क्रिया या भाव।
**चूर** *पु०* लकड़ी को गढ़ कर पतला बनाया भाग, जो किसी दूसरी लकड़ी में ठोका जाता है; चूरा, धूल, चूर्ण।
**चूरन** *पु०* पाचक, चूर्ण।
**चूरमा** *पु०* घी एवं चीनीमिश्रित रोटी।
**चूरी** *स्त्री०* स्त्रियों के हाथ में पहनने के लिए काँच या सोने का आभूषण, चूड़ी।
**चूल्हा** *पु०* मिट्टी या लोहे का वह पात्र, जिस पर नीचे आग जलाकर भोजन पकाया जाता है।
**चूसल** *सक०* चूसना।
**चूसल** *सक०* रसपान करना; सार निचोड़ लेना; खोखला कर देना।
**चूहड़** *पु०* भंगी, डोम।
**चूहड़ा** *पु०* दे० 'चूहड़'।
**चूहा** *पु०* मूस, मूषक; पराई वस्तुओं को झटक लेने वाला व्यक्ति।
**चैं** *स्त्री०* चिड़ियों की बोली।
**चेंखुर** *पु०* पैर की अँगुली; गिलहरी।
**चेखुरल** *सक०* खेत से घास-पात को उखाड़कर निकालना।
**चेंगड़** *वि०* धूर्त।
**चेंगुर** *स्त्री०* पैर की अँगुलियों का समूह।

**चेंगुरा** *पु०* किसी अंग में तनाव के साथ दर्द।
**चेंच** *पु०* छोटे-छोटे पत्ते वाला एक पौधा, जो प्राय: धान के खेत में होता है।
**चेंचक** *पु०* बड़े दाने वाला शीतला रोग, चेचक।
**चेंचे** *पु०* चिड़ियों के बच्चों के बोलने का शब्द, अनु०।
**चेंचे-पोटे** *पु०* बाल-बच्चों के साथ।
**चेंथारल** *अक०* फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े में चीर देना।
**चेंबर** *पु०* [अं०] कमरा।
**चेंव-चेंव** *पु०* चिड़ियों की बोली के लिए प्रयुक्त शब्द, अनु०।
**चेक** *पु०* [अं०] बैंक के नाम रुपया देने का लिखित आदेश; चारखाना। **-बुक** *स्त्री०* चेक बही। **-काटल** *मुहा०* चेक लिख कर देना।
**चेका** *पु०* मिट्टी का बड़ा ढेला।
**चेखुरल** *सक०* खेत में घास-पात निकालना।
**चेचक** *स्त्री०* शीतला, ज्वर के साथ देह में दाने निकलते हैं।
**चेट** *पु०* [सं०] दास, सेवक, पति।
**चेटक** *पु०* इन्द्रजाल, तमाशा, बाजीगरी।
**चेटिका** *स्त्री०* [सं०] दासी।
**चेत** *पु०* चेतना, समझदारी।
**चेतल** *अक०* सावधान होना।
**चेतल** *वि०* समझदार, चैतन्य।
**चेतावल** *सक०* सावधान करना।
**चेथाड़** *पु०* बातचीत में तर्क-वितर्क।
**चेथाड़ल** *सक०* किसी को निरुत्तर करने के लिए कटु शब्दों का प्रयोग करना।
**चेन** *स्त्री०* [अं०] सिकड़ी, जंजीर।
**चेप** *पु०* गाढ़ा, लसदार रस।
**चेपा** *पु०* कुदाल या हल से उखाड़ा हुआ मिट्टी का ढेला।
**चेफना** *पु०* सूखा हुआ नेटा जो गाल या नाक में चिमटा हो।
**चेयर** *स्त्री०* [अं०] कुर्सी; आसन। **-मैन** [अं०] अध्यक्ष।
**चेर** *पु०* नौकर, सेवक।
**चेरी** *स्त्री०* दासी, सेविका।
**चेरो** *पु०* हिन्दुओं की एक जनजाति।
**चेलवाही** *स्त्री०* चेलों का समूह; चेलों के यहाँ आने-जाने का कार्य।
**चेलहाई** *स्त्री०* दे० चेलवाही।
**चेला** *पु०* हुनर सीखने वाला विद्यार्थी, शिष्य।
**चेहरा** *पु०* मुखड़ा; मुखाकृति का ढाँचा, जिसका उपयोग रासलीला या स्वाँग आदि में होता है।
**चैत** *पु०* चैत्र मास।
**चैन** *पु०* सुख शान्ति, आराम। **-के बंसी बजावल** *मुहा०* आनन्द से दिन बिताना। **-पड़ल** *मुहा०* आराम मिलना। **-से कटल** *मुहा०* आराम से जिन्दगी बीतना।
**चैला** *पु०* फट्ठा, जलावन।
**चैली** *स्त्री०* छोटा चैला।
**चोंइटा** दे० 'चोंइया'।
**चोंइया** *स्त्री०* मछली के शरीर का बाहरी आवरण।
**चोंकरल** *अक०* चिल्लाना, बहुत जोरों से बोलना।
**चोंगा** *पु०* बाँस के लम्बे पोर के भीतर का खोखला भाग, कागज, टीन आदि की खोखली नली।
**चोंच** *स्त्री०* ठोर, टोंट; पक्षियों के मुँह का निकला हुआ भाग, जिससे पक्षी दाना चुगता है; अण्डी के पेड़ के मोटे डण्ठल का बना; बच्चों के खेल का एक सामान, जिससे चों-चों की आवाज निकलती है।

**चोंचा** *स्त्री०* एक छोटी चिड़िया, जो ताड़ या खजूर के पत्तों का घोसला बनाकर रहती है।
**चोंथा** *पु०* आटा और गुड़मिश्रित रोटी।
**चोचिआइल** *अक०* चों-चों शब्द करना, अनु०।
**चोथल** *सक०* किसी पक्षी का पंख नोचना। *वि०* चोथू-निरर्थक कार्य से परेशान करने वाला व्यक्ति।
**चोथर** *वि०* मूर्ख, बेवफा; जिसे कम दिखाई पड़ता है।
**चोआ** *पु०* कई सुगन्धित वस्तुओं का रस, राब का रस; जल-संग्रह का निचला स्थान।
**चोकटल** *अक०* सूखकर पतला होना (फल, तरकारी); धँस जाना (गाल)।
**चोकटी** *स्त्री०* सुखाई हुई हरी सब्जी, जिसका मौसम नहीं रहने पर उपयोग होता है, सूखी; सूखी हुई मछली।
**चोकर** *पु०* आटा चालने के बाद चलनी में बचा उसका मोटा अंश; गेहूँ के आटे में मिली हुई मोटी भूसी।
**चोका** *स्त्री०* गाय के स्तन से सीधे मुँह में दूध की धारा।
**चोख** *वि०* तेज, पैना (हथियार); तत्पर (आदमी)।
**चोखा** *पु०* भरता।
**चोखाइल** *अक०* घाव के सूखने की स्थिति में आना।
**चोगद** *वि०* मूर्ख, बेवकूफ।
**चोटाह** *वि०* [सं० चुट्] चोट खाया हुआ।
**चोटी** *स्त्री०* पर्वत का शिखर, टीला; सिर के सामने का बाल, स्त्रियों की गूँथी हुई वेणी, चुण्डी। **-पूरल** *सक०* वेणी-विन्यास करना।
**चोट्टा** *वि०* सफाई से हथिया लेने वाला व्यक्ति, साधारण चोर।
**चोत** *पु०* एक बार में गिरे गोबर का ढेर।
**चोता** *पु०* एक बार में मुँह से निकला हुआ थूक, कफ।
**चोथल** *सक०* नोचना।
**चोदक्कड़** *वि०* बार-बार सम्भोग करने वाला।
**चोदनीका** *पु०* एक प्रकार की गाली।
**चोदल** *स्त्री०* मैथुन करना, सम्भोग की क्रिया।
**चोदवास** *स्त्री०* दे० 'चोदास'।
**चोदवैया** *वि०* सम्भोग करने वाला।
**चोदाई** *स्त्री०* सम्भोग-क्रिया।
**चोदास** *स्त्री०* सम्भोग की प्रबल कामना।
**चोदू** *पु०* सम्भोग करने वाला।
**चोप** *पु०* शामियाना खड़ा करने का बाँस।
**चोर** *पु०* चुराने वाला व्यक्ति। *लोक०* 'चोर के दिल सरसों बरोबर होला।'
**चोरी** *स्त्री०* [हिं० चोर] अपहरण, चौर्य। **-कइल** *सक०* चुराना। **-के माल** *पु०* चुराया हुआ सामान। **-चोरी** *क्रि०वि०* गुप्त रूप से।
**चोहपल** *अक०* पहुँचना।
**चौंतरा** *पु०* चबूतरा।
**चौंतीस** *वि०* [सं० चतुस्त्रिंशत्] तीस और चार।
**चौंधिआइल** *अक०* चौंधियाना।
**चौंर** *पु०* [सं० चामरं] चँवर।
**चौंसठ** *वि०* [सं० चतु:षष्ठि] चौसठ।
**चौआ** *पु०* चार अंगुल की माप; चार बूटी वाला ताश का पत्ता।
**चौआइल** *अक०* चकित होना।
**चौक** *पु०* [सं० चतुष्कं] चौखूँटा सहन, मुख्य बाजार।
**चौकड़ी** *स्त्री०* चार चीजों का समूह।
**चौकन्ना** *वि०* सतर्क।
**चौकस** *वि०* दे० 'चौकन्ना'।

**चौका** *पु०* [सं० चतुष्कं] चौकोर सिल।
**चौकी** *स्त्री०* [सं० चतुष्की] चौकोर आसन, छोटा तख्त; पड़ाव, ठिकान। **-देहल** *मुहा०* बैठाना। **-दार** *पु०* प्रहरी। **-दारी** *स्त्री०* रक्षा की जिम्मेदारी।
**चौखट** *स्त्री०* द्वार।
**चौड़ा** *वि०* लम्बाई के दोनों छोर के बीच विस्तृत भाग।
**चौथारी** *स्त्री०* विवाह के चार दिनों बाद भेजा जाने वाला उपहार।
**चौथी** *वि०* [सं० चतुर्थी] चतुर्थी।
**चौदह** *वि०* [सं० चतुर्दशम्] चौदह।
**चौपट** *वि०* ध्वस्त, नाश।
**चौपाया** *पु०* चार पैर वाला जानवर।
**चौरठ** *पु०* सूखे चावल का आटा।
**चौरा** *स्त्री०* चबूतरा, देवी-देवता के पूजा-हेतु बना स्थान।
**चौराई** *स्त्री०* एक प्रकार का साग; चौलाई।
**चौरेठा** *पु०* चावल का आटा।
**चौवन** *वि०* पचास और चार।
**चौवा** *वि०* चौआ।
**चौवालिस** *वि०* चालीस और चार।
**चौस** *पु०* चार बार जोता हुआ खेत।
**चौसझ** *पु०* चार व्यक्तियों के साझे का काम।
**चौहट** *पु०* वह स्थान, जिसके चारों ओर दुकानें हों; एक प्रकार का लोकगीत।
**चौहट्टा** *पु०* चौराहा, चार रास्तों का संगम।
**चौहत्तर** *वि०* सत्तर और चार।
**चौहद्दी** *स्त्री०* किसी स्थान या खेत के चारों ओर की सीमा; छोटे बच्चों के दस्त की एक दवा।
**चौहरा** *वि०* जिसमें चार तहें हों।
**चौहान** *पु०* क्षत्रियों की एक शाखा।

❑

# छ

**छ** देवनागरी लिपि के चवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

**छँइटा** *पु०* बाँस या अरहर की बड़ी टोकरी। *स्त्री०* छँइटी।

**छँउकल** *सक०* छौंकना।

**छँउड़ी** *स्त्री०* लड़की, छोकड़ी।

**छँखड़ा** *स्त्री०* [सं० शकट] बैलगाड़ी, गाड़ी के साथ यौगिक रूप में प्रयुक्त शब्द जैसे-गाड़ी छखड़ा।

**छंग** *पु०* गोद, अंक।

**छंगा** *वि०* जिसके पंजे में छ: अँगुलियाँ हों।

**छँगुनिया** *स्त्री०* कानी अँगुली।

**छँगुलिया** *स्त्री०* दे० छँगुनिया।

**छँछौरी** *स्त्री०* छाँछ में पकाया गया पकवान।

**छँटल** *अक०* छाँटा जाना, चुना जाना, कटना, साफ किया हुआ। **-गोइँया** *पु०* धूर्त, चालाक व्यक्ति। **-फिरल** *मुहा०* दूर-दूर रहना।

**छँटनी** *स्त्री०* कर्मचारियों के हटाने का काम।

**छँटवावल** *सक०* छाँटने का काम करवाना।

**छँटाई** *स्त्री०* छाँटने का काम।

**छँटुआ** *वि०* जाति से बहिष्कृत।

**छंठी** *वि०* जाति से बहिष्कृत।

**छंठी** *वि०* छोटे आकार की घोड़ी, जिसके पैरों को छानकर चरने के लिए छोड़ दिया जाता है।

**छँडुआ** *वि०* छोड़ा हुआ।

**छंद** *पु०* इच्छा, अभिप्राय।

**छंदक** *वि०* छली।

**छँवकल** *अक०* तेल, घी में छौंकना।

**छ** *वि०* पाँच और एक: *पु०* 6 की संख्या। **-कड़िया** *स्त्री०* पालकी जिसमें 6 कँहार लगे हो। **-मासी** *स्त्री०* मृत्यु के 6 महीने बाद होने वाला श्राद्ध। **-माही** *वि०* छ: महीने पर होने वाली परीक्षा।

**छई** *स्त्री०* रक्तस्राव की बीमारी; राजयक्ष्मा रोग।

**छउकल** *अक०* आक्रमण करने के लिए आगे की ओर कूदना।

**छक ( छह )** *वि०* गुणा के अर्थ में प्रयुक्त शब्द। *उदा०* आठ छक अड़तालिस।

**छकड़ा** *पु०* सग्गड़, बैलगाड़ी।

**छकल** *अक०* मुँहतोड़ जवाब पाना, धोखा खाना।

**छकाछक** *वि०* तृप्त, परिपूर्ण; नशे में चूर।

**छकावल** *सक०* छकाना, मात करना, परेशान करना।

**छकीला** *वि०* छका हुआ, मस्त।

**छकुनी** *स्त्री०* बाँस की कइन (शाखा) की पतली जड़।

**छक्का** *पु०* ताश का छठा पत्ता, जिसमें छह बूटे बने रहते हैं।

**छखँड़ा** *वि०* टूटा हुआ (चावल, धान, गेहूँ)।

**छखड़ल** *सक०* खण्ड-खण्ड काटना, टुकड़े-टुकड़े काटना।

**छछनल** *अक०* किसी वस्तु को पाने के लिए व्याकुल होना।

**छछन-बिछन** *वि०* फैले और विस्तृत डाल वाला पेड़।

**छछकाल** *पु०* पानी की बहुलता की स्थिति। *उदा०* 'सूखली गड़हिया में इनर अइले। पनिया भइल छछकाल हो रामा।' -लोकगीत।

**छछर** *वि०* छह दाँत वाला (बछड़ा)।

**छछलोल** *वि०* कुरूप।

**छछात** *वि०* साक्षात्, प्रत्यक्ष, सामने।
**छजनी** *स्त्री०* छाने का काम।
**छज्जा** *पु०* बारजा।
**छटंकी** *स्त्री०* एक छटाँक तेल की नाप।
**छटाँक** *पु०* सेर का सोलहवाँ भाग, एक छटाँक का बटखरा।
**छटकल** *अक०* दबाने या पकड़ने पर किसी वस्तु का तेजी से दूर जाना, हाथ या पैर का जोड़ से हट जाना।
**छटकावल** *सक०* पेड़ की डालियों को काटकर अलग करना; मारपीट में पैर या हाथ की हड्डी को जोड़ से अलग कर देना।
**छटछट** *पु०* दबाव पड़ने पर किसी वस्तु के टुकड़े-टुकड़े होकर तेजी से निकलने की स्थिति, तेज, फुर्तीला।
**छटर-पटर** *पु०* छटपटाहट।
**छटपटू** *वि०* साधारण-सी बात पर व्यग्र हो उठने वाला व्यक्ति।
**छटपटाइल** *अक०* बेचैन होकर हाथ-पैर पटकना।
**छटा** *स्त्री०* [सं०] छवि, शोभा; झलक।
**छटिहारी** *स्त्री०* वह घर, जहाँ मवेशियों को खाने के लिए कूट्टी काटी जाती है, लेदीकट्टा।
**छटेहर** *वि०* अपेक्षाकृत बड़ा लड़का या लड़की।
**छठ** *स्त्री०* [सं० षष्ठी] कार्तिक एवं चैत शुक्ल पक्ष षष्ठी को होने वाला सूर्य का व्रत, पक्ष की छठी तिथि, षष्ठीदेवी पूजा।
**छठिहार** *पु०* [सं० षष्ठीकारः] बच्चों के जन्म के छठें दिन का संस्कार, कृष्णाष्टमी का छठा दिन।
**छठी** *वि०* स्त्री० 'छठा' का स्त्रीलिंग छठी। **-बरही** *स्त्री०* जन्मोत्सव। **-माई** *स्त्री०* छठ की देवी। **-के दूध निकलल** *मुहा०* कड़ी मेहनत में पड़ना।
**छड़** *स्त्री०* [सं० शरः] धातुओं का पतला डण्डा।
**छड़ा** *पु०* चाँदी के तारों का बना चूड़ी जैसा गहना, जो पाँव में पहना जाता है।
**छड़िया** *पु०* दरबान, 'द्वार खड़े प्रभु के छड़िया' .....सुदामाचरित्र।
**छड़ियाल** *पु०* एक प्रकार का भाला।
**छड़ी** *स्त्री०* पतली और छोटी लाठी, जिससे सहारा लेकर चलते हैं।
**छड़ीदार** *पु०* द्वारपाल, दरबान।
**छत** *स्त्री०* [सं० छत्र] घर की दीवार से ऊपर का बना फर्श, पाटन।
**छतनार** *पु०* वह वृक्ष, जिसकी शाखाएँ दूर तक फैली हों।
**छतर** *पु०* [सं० छत्रम्] साँप का फण; हरिहर क्षेत्र का पर्याय।
**छतरछाँह** *स्त्री०* किसी प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा संरक्षण देने की स्थिति।
**छतरी** *पु०* [सं० छत्रं] छतरी के आकार का एक छाजन। *स्त्री०* (छत) गुम्बद के आकार का छोटा-सा छतदार घर, जहाँ सिपाही खड़ा रहकर चौकसी रखता है।
**छतइला** *वि०* छतदार (मकान)।
**छतवन-छतिवन** *पु०* एक लम्बी आकृति और पतले पत्ते वाला पेड़; सप्तपर्णी नामक पेड़।
**छतिया** *पु०* छाती।
**छतीस** *वि०* तीस और छह की संख्या, 36 की संख्या, विमुख उदासीन। *उदा०* 'जग से रहु छतीस ह्वै, राम-चरण छ तीन'
-तुलसी।
**छतीसा** *वि०* छतीसों कलाओं का जानकार, धूर्त, चतुर।
**छतीसी** *स्त्री०* छलछन्द में कुशल, छिनाल, नखरे वाली।

**छत्ता** *पु०* [सं० छत्रम्] मधुमक्खियों का घर, चकता, छतरी।
**छत्तीस** *वि०* दे० 'छतीस'।
**छत्र** *पु०* [सं०] छतरी।
**छत्री** *वि०* [सं०] छत्रयुक्त, जो छाता लगाए हो।
**छदाम** *पु०* पैसे का चौथाई भाग।
**छन** *पु०* [सं० क्षणम्] पल का चौथाई भाग, समय की सबसे छोटी इकाई।
**छनकल** *अक०* आशंकित होकर अलग हो जाना।
**छनगल** *अक०* किसी अप्रिय स्थिति की आशंका से चौंकन्ना।
**छन्न** *पु०* तप्त बर्तन में किसी तरल पदार्थ के गिरने से उत्पन्न शब्द (अनु०)।
**छन्ना** *पु०* वह बर्तन या कपड़ा, जिससे पानी या रस छाना जाता है, छनना।
**छनाइल** *अक०* गन्ना आदि किसी वस्तु के खाने से जीभ में हल्की खरोंच होना, पेट की खराबी से मुँह में फुन्सियों का निकलना।
**छनिया** *स्त्री०* आभूषण।
**छनी** *स्त्री०* मड़वा।
**छनुआ** *वि०* छना हुआ, भोज्य पदार्थ।
**छनौटा** *सं० पु०* वहुत से छिद्रों वाला एक उपकरण, जिसका उपयोग छानने में होता है; एक प्रकार का झरना।
**छप** *स्त्री०* [अनु०] पानी में किसी वस्तु के जोर से गिरने पर उत्पन्न शब्द। *क्रि०वि०* छप-छप-छपर-छपर।
**छपकल** *अक०* मनोविनोद के लिए पानी में चलना और हाथ-पैर मारना।
**छपटा** *पु०* धान के पौधे को काटने वाला कीड़ा।
**छपटल** *सक०* एक बार में काट देना।
**छपरी** *स्त्री०* झोंपड़ी।
**छपाई** *स्त्री०* छापने का काम।
**छपाका** *पु०* पानी पर किसी चीज के गिरने की आवाज।
**छप्पन** *वि०* पचास और छह। *पु०* 56 की संख्या।
**छप्पनछूरी** *स्त्री०* कटाक्ष करने वाली सुन्दर नर्तकी।
**छप्पर** *पु०* छान्ह, झोपड़ी।
**छब** *स्त्री०* [सं० छवि:] शोभा, बनावट, कान्ति, प्रभा।
**छबकल** *अक०* शिकार की टोह में छिपे रहना; अंगों को मोड़कर दबकी लगाना।
**छबनी** *स्त्री०* एक प्रकार की छोटी टोकड़ी।
**छबीला** *वि०* सुन्दर छवि वाला।
**छब्बीस** *वि०* बीस और छह की संख्या, *पु०* 26 की संख्या।
**छब्बे** *पु०* एक काल्पनिक उपाधि। *उदा०* 'चउबे गइले छब्बे होखे दूबे बनके अइले' -लोकगीत।
**छम** *स्त्री०* [अनु०] घुँघरू बजने का शब्द, पानी बरसने का शब्द।
**छमछम** *स्त्री०* [अनु०] आभूषणों से लगातार निकलने वाला शब्द।
**छमसिया** *वि०* छह महीने की आयु वाला (बच्चा)।
**छमाही** *वि०* छह महीने पर होने वाला (परीक्षा, काम)।
**छय** *पु०* [सं० क्षय] नाश; यक्ष्मा नामक रोग।
**छर** *स्त्री०* दे० 'छड़'।
**छरकल** *अक०* बिखरना, छिटकना, छलकना।
**छरका** *पु०* बाँस की पतली करची; सटकनी।
**छरकी** *स्त्री०* चहारदीवारी; बाँस की टहनी जिससे किसी को मारते हैं।

**छरकीला** *वि०* लम्बा, सुडौल, छहरीला।
**छर-छर** *पु०* पशुओं द्वारा तेजी से मूत्र-त्याग की ध्वनि।
**छरछराइल** *अक०* घाव पर नमक या खार लगने पर दर्द होना।
**छरछराहट** *स्त्री०* घाव पर खार लगने के चलते पीड़ा।
**छरदवाली** *स्त्री०* चहारदीवारी।
**छरन** *पु०* छप्पर में सबसे पहले लगाया जाने वाला सरकण्डा।
**छरपट** *पु०* छटपटी, व्यग्रता। **-छूटल** *मुहा०* परेशान होना।
**छरभार** *पु०* बोझ, झंझट।
**छरहर** *वि०* पतला और लम्बा (शरीर), कम पानी वाली बढ़िया जुताईयोग्य (खेत)।
**छरा** *पु०* पैरों में पहना जाने वाला चाँदी का आभूषण।
**छर्रा** *पु०* कारतूस या साइकिल में प्रयुक्त होने वाली शीशे या लोहे की छोटी-छोटी गोलियाँ।
**छरिआइल** *अक०* इच्छा की पूर्ति के लिए छोटे बच्चों का जोर-जोर से रोना।
**छल** *पु०* [सं०] छिपावट, गोपन, ठगना। **-कपट** *पु०* धोखेबाजी। **-छंद** *पु०* छलकपट। **-छाया** *स्त्री०* कपटजाल।
**छलक** *स्त्री०* छलकने का भाव।
**छलकल** *अक०* छलकना।
**छलकावल** *सक०* छलकल का प्रेरणार्थक रूप।
**छलचिनिया** *वि०* छैला, बना-ठना आदमी, शौकीन।
**छलछलाइल** *अक०* मछली का जल में झपाटे के साथ चलना; किसी युवती का नाज से चलना।
**छलना** *स्त्री०* [सं०] छल, धोखा
**छलनी** *स्त्री०* छानने का आला।
**छलाँग** *स्त्री०* चौकड़ी।
**छलाई** *स्त्री०* धूर्तता।
**छलावा** *पु०* धोखा, जादू।
**छलिया** *वि०* छली।
**छली** *वि०* छल करने वाला।
**छल्ला** *पु०* अँगूठी।
**छल्ली** *स्त्री०* अनाज के बोरों को तह लगाकर रखने की स्थिति।
**छव** *वि०* पाँच और एक की संख्या, 6 की संख्या। *लोक०* 'छव महीना के कुत्ता बारह बरिस के पुत्ता।'
**छवधर** *वि०* छव दाँत वाला (बैल); बहानेबाज।
**छवड़** *पु०* नौजवान, छोकड़ा।
**छवड़ी** *स्त्री०* लड़की।
**छवपनिया** *वि०* कागज का मोड़ा हुआ इस प्रकार का ताव, जिसमें छह पन्ने हो जाएँ।
**छवपोंछिया** *वि०* तिनघरवा विवाह करने वाले के लिए प्रयुक्त व्यंग्यात्मक शब्द।
**छवर** *वि०* डगर, रास्ता।
**छवाई** *स्त्री०* घर छाने का काम; छाने की मजदूरी।
**छहत्तर** *वि०* किसी बात को तुरन्त ताड़ने वाला।
**छहक्का** *वि०* चमकदार (अन्न का दाना)।
**छहनरल** *सक०* छल-प्रपंच से ठग लेना।
**छहबरसा** *वि०* छः वर्षों का।
**छहलल** *अक०* फिसलना।
**छाँ** *स्त्री०* छाया।
**छाँगल** *सक०* काटना।
**छाँगुर** *वि०* 6 उँगली वाला।
**छाँछ** *पु०* दही का मट्ठा।

**छाँटल** *सक०* ढेर में से एक या अधिक का चुनना; कपड़े की हल्की धुलाई करना; चावल आदि को साफ करने के लिए उस पर हल्की चोट देना; जाति से बहिष्कृत करना।

**छाँटि** *स्त्री०* वमन, कै।

**छाँवे-छिपे** *वि०* लुक-छिपकर, यदा-कदा।

**छाँह** *स्त्री०* [सं० छाया] साया।

**छाँही** *स्त्री०* चेहरे पर हल्के दाग, मुँहासा, आइने का धब्बा।

**छाई** *स्त्री०* राख, खाद।

**छाउर** *पु०* राख।

**छाक** *स्त्री०* छकने का भाव, तृप्ति, नशा। *उदा०* 'तड़िया छेवेला भइया पसिया रे पसिया, लबनी लगावेला अकास। एक छाक तड़िया पीआवऽ भइया पसिया, लागल बा मधुरी पिआस॥' -लोकगीत।

**छाकल** *अक०* छकना।

**छागर** *पु०* देवी को बलि दिया जाने वाला बकरी का बच्चा; पैर का एक प्रकार का गहना।

**छागल** *स्त्री०* पाजेब।

**छाङुर** *वि०* छह अँगुली वाला व्यक्ति।

**छाछ** *स्त्री०* मट्ठा।

**छाज** *पु०* सूप, छाजन।

**छाजन** *स्त्री०* आच्छादन, कपड़ा। *उदा०* 'छाजन भोजन प्रीति सौ दीजे साधु बुलाय' -कबीर

**छाजल** *अक०* शोभा देना, सुशोभित होना।

**छाजा** *पु०* फूस के घर का छप्पर, पालकी का ऊपरी आवरण, छज्जा। *लोक०* 'छाजा बाजा केस तीन बंगाला देस।'

**छाड़न** *पु०* नदी की धारा के हट जाने से निकली हुई जमीन, दियारा; परित्यक्त वस्त्र।

**छाड़ी** *स्त्री०* त्यागा हुआ पुराना वस्त्र।

**छाता** *पु०* गर्मी और बरसात के बचाव हेतु एक उपकरण।

**छाती** *स्त्री०* वक्ष:स्थल, सीना; स्तन; हिम्मत। **-छलनी भइल** *मुहा०* क्लेश, आघात। **-जलल** *मुहा०* सन्तप्त होना। **-जुड़ाइल** *मुहा०* जी की जलन मिटना। **-देहल** *मुहा०* बच्चे के मुँह में स्तन देना। **-धड़कल** *मुहा०* भय, आशंका से पीड़ित होना। **-निकाल के चलल** *मुहा०* अकड़ कर चलना। **-पर कोदो दलल** *मुहा०* जलाने, कुढ़ाने की बात करना। **-पर बाल भइल** *मुहा०* भरोसा लायक होना। **-पर साँप लोटल** *मुहा०* ईर्ष्या करना। **-से लगावल** *मुहा०* गले लगाना।

**छात्र** *पु०* शिष्य, विद्यार्थी।

**छान** *पु०* मवेशियों के पैर बाँधने की रस्सी।

**छानल** *सक०* मवेशी के पैरों को रस्सी से बाँधकर चरने के लिए छोड़ देना; कृपा प्राप्त करने के लिए हाथ से दोनों पैरों को पकड़ना; खौलते तेल या घी से छनौटे से निकालना; नदी आदि की धारा से किसी वस्तु को निकालना।

**छानबे** *वि०* नब्बे और छह की संख्या।

**छाना** *पु०* भोज में अनुपस्थित ब्राह्मणों के लिए दिया गया भोज्य-पदार्थ।

**छानि** *स्त्री०* छप्पर।

**छानी** *स्त्री०* दे० 'छानि'।

**छाप** *स्त्री०* छापने से उगा हुआ चिह्न; व्यापारिक वस्तुओं पर उत्पादक द्वारा पहचानने के लिए छापा गया चिह्न; अनपढ़ व्यक्तियों से हस्ताक्षर की जगह अँगूठे में काजल लगाकर लिया गया चिह्न, निशान।

**छापल** *सक०* [सं० चपनं] मुहर आदि में स्याही लगा कर चिह्न उगाना; छापना।
**छापा** *पु०* छापना। -**खाना** *पु०* मुद्रणालय।
**छापी** *स्त्री०* भरी टोकरी घास का ढेर, जो एक जगह रखी गयी हो।
**छाम** *पु०* प्रपंच, आभास।
**छाम छूम** *पु०* चमक-दमक, बन-ठन।
**छाया** *स्त्री०* छाँह, परिछाही। *उदा०* 'राम जी के माया कहीं धूप कहीं छाया।' लोकोक्ति।
**छारा** *स्त्री०* बाँस की लम्बी छड़, जिससे नाव खेया जाता है।
**छाल** *स्त्री०* वृक्ष का ऊपरी आवरण; वल्कल।
**छालटी** *स्त्री०* सन का बना एक प्रकार का चमकीला वस्त्र।
**छाली** *स्त्री०* पकाये जा रहे गन्ने का रस।
**छाल्ही** *स्त्री०* दूध या दही का ऊपरी पर्त जिसमें घी रहता है, साढ़ी।
**छावँ** *स्त्री०* छाया।
**छाव** *पु०* कृत्रिम भाव-भंगिमा, नाज।
**छावनी** *स्त्री०* फौज के रहने का स्थान, डेरा, पड़ाव।
**छावर** *स्त्री०* झुण्ड में तैरने वाली मछलियों के छौने।
**छावरा** *पु०* छौना, शावक।
**छावल** *सक०* फूस के घर की छत को खर से छाना।
**छावा** *पु०* बेटा, हाथी का पट्ठा।
**छासठ** *वि०* साठ और छ: छियासठ।
**छिंकल** *अक०* छींकना *लोक०* 'छिंकते नाक कटल।'
**छिँकावल** *सक०* छींकने हेतु प्रेरित करना।
**छिँहुआ** *पु०* छींटदार बीज बोने का तरीका।
**छिउँका** *पु०* भूरे रंग का चींटा।
**छिउँकी** *स्त्री०* भूरे रंग की चींउटी।
**छिउर** *स्त्री०* चिह्न, पद चिह्न; हथकरघे में बुने गये कपड़े में वह भाग, जहाँ बुनाई ठीक से नहीं हो पायी हो।
**छिउला-छिउली** *पु०* पलास।
**छिछरिया** *स्त्री०* बच्चों द्वारा शौच के बाद ढेले से गुदाद्वार को साफ करना।
**छिछला** *वि०* उथला।
**छिछिआइल** *अक०* व्यर्थ घूमते रहना।
**छिछोर** *वि०* तुच्छ, क्षुद्र, अस्थिर चित्त का व्यक्ति।
**छिछोरपन** *पु०* छिछोरे का काम।
**छिछोरा** *वि०* क्षुद्र, ओछा।
**छिटका** *वि०* किसी को गिराने के लिए उसके पैर में अपना पैर अड़ाने की स्थिति।
**छिटकिनी** *स्त्री०* किवाड़ बन्द करने के लिए बनाया गया उपकरण, सिटकिनी।
**छिटकी** *स्त्री०* छींटा।
**छिटुआ** *वि०* छींटकर बोई हुई।
**छिड़कल** *सक०* द्रव के छींटे फेंकना, भुरकना।
**छिड़कावल** *सक०* छिड़कने का काम कराना।
**छिड़काई** *स्त्री०* छिड़काव।
**छिड़काव** *पु०* छींटों से तर करना।
**छिड़ल** *अक०* छेड़ा जाना, आरम्भ होना।
**छितनार** *वि०* चौड़े मुँह का बर्तन।
**छितनी** *स्त्री०* छोटी टोकरी।
**छितर-बितर** *क्रि०वि०* जहाँ-तहाँ, छिन्न-भिन्न।
**छितराइल** *वि०* बिखरा हुआ, इधर-उधर फैला हुआ।
**छितराह** *वि०* फैला हुआ, विस्तृत। अतिव्यस्तता।
**छिनगल** *अक०* अलग-अलग रहना।
**छिनगावल** *सक०* दो वस्तुओं को अलग करना।

**छिनल** दे० छीनल।
**छिनरा झोंक** *पु०* जल्दी-जल्दी सम्भोग कर भागने की स्थिति।
**छिनार** *वि०* निर्लज्ज पुरुष या स्त्री।
**छिनुही** *पु०* दही, जिसकी साढ़ी उतार ली गई हो।
**छिपल** *अक०* प्रकट नहीं होना, गुप्त स्थान पर रहना; बचने का प्रयास करना।
**छिप-छाप** *वि०* अल्प मात्रा में, जहाँ-तहाँ (पानी)। *उदा०* 'धोबिया के नाद में छिप-छाप पानी, बभना करे अस्नान हो राम।' -लोकगीत।
**छिपार** *पु०* चोरी के माल को छिपाने वाला व्यक्ति; हलकी चीजों को छिपाकर ले लेने वाला व्यक्ति।
**छिपावल** *सक०* किसी वस्तु को गुप्त स्थान पर रखना; प्रगट या जानकारी न होने देना।
**छिपुली** *स्त्री०* दे० 'छीपी'।
**छिमरा** *पु०* डाभी घास।
**छिया** *स्त्री०* गुह, विष्ठा, गन्दा पदार्थ।
**छियानबे** *वि०* छानबे।
**छियालिस** *वि०* [सं० षट्चत्वारिंशत्] चालीस और छह। *पु०* 46 की संख्या।
**छियासठ** *वि०* [सं० षट्षष्ठि] छाछठ। *पु०* 66 की संख्या।
**छियासी** *वि०* अस्सी और छह। *पु०* 86 की संख्या।
**छिरकल** *सक०* छिड़कना।
**छिलकल** *सक०* दे० छिरकल।
**छिलका** *पु०* [सं० शल्कं] फल, मूल, अंडे का बाहरी परत।
**छिलकोइया** *पु०* छिलका।
**छिलमिलाइल** *अक०* चोट से मर्माहत होना।
**छिलल** *अक०* रगड़ से शरीर के चमड़े का फट जाना।
**छिलिया** *स्त्री०* छीलने का काम, छिलाई।
**छिहतर** *वि०* सत्तर और छह। *पु०* 76 की संख्या।
**छिहुलल** *सक०* फिसलना।
**छिहुलावल** *सक०* फिसलाना।
**छींकल** *अक०* नाक में खुजलाहट होने का वेगपूर्वक जलकणमिश्रित वायु का बाहर निकलना।
**छींका** *पु०* सिकहर, सींका। **-टूटल** *मुहा०* अनायास ही कोई लाभ हो जाना।
**छींछ** *स्त्री०* बात करने से कतराने की स्थिति।
**छीछालेदर** *पु०* दुर्दशा, दुर्गति।
**छीजल** *अक०* दुबला-पतला होना, शक्तिहीन होना। *उदा०* 'देखा-देखी साधे जोग छीजे काया बाढ़े रोग'—लोकगीत।
**छीट** *स्त्री०* बेल-बूटे वाला वस्त्र।
**छीटकन** *पु०* गाड़ी के बैल को हाँकने में प्रयुक्त चाबुक।
**छीटल** *सक०* बिखेरना, छितराना।
**छीटा** *पु०* छींटकर बोया जाने वाला बीज।
**छीड़** *स्त्री०* कीड़े द्वारा वस्त्र या कागज को काटने से बना छेद।
**छीनल** *सक०* बलपूर्वक किसी से कोई वस्तु ले लेना।
**छीप** *पु०* बाँस की लम्बी करची, जिसमें मछली मारने की वंशी की डोरी लगी रहती है।
**छीपल** *सक०* मछली मारते समय वंशी को ऊपर की ओर फेंकना।
**छीपा** *पु०* थाली।
**छीपी** *स्त्री०* तस्तरी, छोटी थाली।
**छीमी** *स्त्री०* सेम, मटर, अरहर आदि का फल जिसमें दाना रहता है; केले के घौद का फल; गाय का स्तन।

**छीलन** *पु०* नुक्ता-चीनी, कतर-ब्यौंत (बात), लकड़ी से बढ़ई द्वारा छिला गया भाग।
**छुअल** *सक०* छूना।
**छुआइल** *अक०* स्पर्श से अशुद्ध होना (शरीर का)।
**छुआछूत** *यौ०* छूतछात का विचार।
**छुछुनर** *पु०* चूहे की जाति का एक जन्तु, जिससे बड़ी दुर्गन्ध आती है। छुछुन्दर। *मुहा०* 'छुछुनर क माथे चमेली के तेल।' -लोक
**छुछेरा** *वि०* नीच स्वभाव का छिछोरा।
**छुट** [अ०] छोड़कर, सिवाय। *वि०* छोटा का लघु रूप केवल समास में प्रयुक्त। **-पन** *पु०* छोटापन, बचपन। **-भैया** *पु०* छोटे दरजे का।
**छुटकारा** *पु०* मुक्ति।
**छुटकावल** *सक०* त्यागना, छोड़ना।
**छुटल** *अक०* पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना; पास की किसी वस्तु को भूल से छोड़ देना।
**छुट्टल-छुट्टा** *वि०* जो बँधा हुआ नहीं हो (मवेशी)।
**छुट्टा-खतना** *वि० यौ०* जिम्मेदारी से मुक्त व्यक्ति।
**छुट्टी** *स्त्री०* फुर्सत, अवकाश; छुटकारा।
**छुड़ा** *पु०* नाई द्वारा प्रयुक्त दाढ़ी बनाने का औजार।
**छुतका** *पु०* वह अशौच, जो सन्तान होने या मरने पर परिवार वालों को होता है, सूतक।
**छुतहर** *पु०* वह घड़ा, जो मवेशियों के नाद में पानी डालने के काम आता है। *मुहा०* 'अकरब मरे ना छुतहर फूटे।'
**छुत्ती** *स्त्री०* बच्चों के खेल का एक ऐसा शब्द, जिसे बोल देने पर विपक्ष का कोई खिलाड़ी उसे नहीं छूता है।
**छुधा** *स्त्री०* भोजन करने की इच्छा, भूख।
**छुधित** *वि०* भूखा।
**छुनमुन** *पु०* पैजनियों की आवाज।
**छुप** *पु०* [सं०] स्पर्श, क्षुप, युद्ध।
**छुपल** *अक०* छिपना।
**छुपावल** *सक०* छिपाना।
**छुरछुरी** *स्त्री०* एक प्रकार की आतिशबाजी की वस्तु, जिससे निकली चिनगारियाँ ऊँचाई तक जाती हैं।
**छुरी** *स्त्री०* [सं०] छोटा छुरा, चाकू। **-धार** *स्त्री०* हाथी दाँत का बना एक औजार। **-चलावल** *मुहा०* बहुत सताना। **-तेज कइल** *मुहा०* अपकार।
**छुलकल** *अक०* पेशाब करते समय निकलने वाली ध्वनि।
**छुलकावल** *सक०* थोड़ा-थोड़ा कर पानी गिरना।
**छुलछुल** *पु०* थोड़ा-थोड़ा पेशाब करने की आवाज।
**छुलावल** *सक०* स्पर्श कराना।
**छुवाछुत** *स्त्री०* छुआछूत।
**छुहारा** *पु०* खजूर का एक भेद, पिण्ड खजूर, सूखा फल।
**छूँछ** *वि०* खाली, रिक्त; बिना दाल या तरकारी का भोजन। *उदा०* 'ऐ छूँछा तोहे के पूछा, छूंछ छोह हतेया बरोबर।'
**छूँछा** *वि०* निखालिस, विशुद्ध। *उदा०* छूँछा गेहुँअन।
**छूँछी** *स्त्री०* नाक का एक आभूषण; छड़ या नली का मुँह बन्द करने के लिए उसमें लगाया गया ढक्कन; भाथी की नली।
**छू** *अनु०* मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।
**छूअल** *सक०* स्पर्श करना, छूना।
**छूना** *पु०* टोकरी या गाड़ी के किनारे लकड़ी लगाकर किसी सामान या वस्तु को

अधिक मात्रा में रखने की स्थिति; छुआ अन्न उपर्युक्त विधि से रखा हुआ, *यौ०*।
**छूट** *स्त्री०* रुपया, जो देनदार से नहीं लिया जाए, छुटकारा, मूल्य लेने में की जाने वाली रियायत; प्रशासनिक एवं सामाजिक दायित्व से मुक्ति।
**छूड़ी** *स्त्री०* ऐसा हथियार, जिससे फल, कागज आदि हल्की चीजें काटी जाती हैं, चाकू।
**छूत** *पु०* स्पर्श-दोष, अस्पृश्य का संसर्ग।
**छूदर** *पु०* नीच प्रवृत्ति का आदमी।
**छूदरी** *स्त्री०* नीच प्रवृत्ति की स्त्री।
**छूरा** *पु०* बड़ा चाकू, छुरा।
**छेंकल** *सक०* जगह घेरना; रास्ता रोकना।
**छेंकन** *पु०* नया मकान बनाते समय ईंट से जगह घेरने का कार्य।
**छेंका** *पु०* वर-रक्षा, फलदान, छेंकने की क्रिया।
**छेंटहर** *पु०* अधिक उम्र का बच्चा।
**छेआसठ** *वि०* साठ और छ *पु०* 66 की संख्या।
**छेउकी** *स्त्री०* पतली और लम्बी छड़ी, जिसका उपयोग पीटने या जानवरों को खदेड़ने में होता है।
**छेट** *वि०* कुछ बड़ा लड़का।
**छेटा** *पु०* फासला, दूरी; प्रपंचपूर्ण व्यवहार।
**छेड़ी-भेड़ी** *स्त्री०* बकरी और भेड़ का बच्चा। *वि०* नगव्य।
**छेदल** *सक०* किसी नुकीले औजार से लकड़ी आदि में छेद करना।
**छेदा** *पु०* छिद्र, छेद, बिल।
**छेदाइल** *वि०* जिसमें छेद हो गया हो।
**छेदानी** *स्त्री०* काठ में बनाया गया छिद्र।
**छेना** *पु०* लोहा काटने का बड़ा औजार; खटाई डालकर पानी निचोड़ा हुआ दूध, पनीर।
**छेपक** *वि०* बाधा, किसी ग्रन्थ में प्रक्षिप्त अंश।
**छेम** *पु०* कुशल-मंगल।
**छेमा** *स्त्री०* माफ, क्षमा, कृपा।
**छेर** *स्त्री०* बकरी।
**छेरल** *अक०* किसी मवेशी का पतला दस्त करना।
**छेरी** *स्त्री०* बकरी। *उदा०* 'छेरी कौन दुहावे।'
**छेरुआ** *पु०* बकरी और घोड़े के बच्चे के अण्डकोष को निकाल देने का काम।
**छेव** *पु०* लकड़ी काटने के लिए हथियार से किया गया प्रहार, कुल्हाड़ी की चोट।
**छेवकटवा** *पु०* मोटी लकड़ी काटने वाला औजार।
**छेवकल** *सक०* सब्जी के भूनने के पहले गर्म तेल या घी में उसे डालकर चलाना; गर्म तेल या घी में मसाले को खौलाकर दाल में डुबाना।
**छेवका** *स्त्री०* ईख की हल्की सिंचाई।
**छेवल** *सक०* कुदाल से छिछली कोड़ाई करना।
**छेवड़ल** *सक०* दही के ऊपर जमी हुई पर्त को घी के लिए काटकर निकाल देना।
**छेवा** *पु०* छेवने का काम।
**छेवाटल** *सक०* मेड़ की बगल के घास-पात को कुदाल से काटना।
**छेहड़** *स्त्री०* छाँह; पतला, विरल।
**छेहर** *वि०* ओछा।
**छेहुनी** *स्त्री०* खेत में सोहनी करते समय पंक्ति के अन्त में रहने वाली मजदूरिन।
**छैल** *पु०* सुन्दर, नौजवान, बना-ठना आदमी। *स्त्री०* प्रसाधनों से युक्त सुन्दर युवती, प्रेमिका।
**छैला** *पु०* खूबसूरत नौजवान, प्रेमी, संजीला। *उदा०* 'सखियां देख बरज छैला के ढिठइया कइले बा।' -लोक०।

**छोआ** *पु०* चीनी मिलों से निकला गन्ने का पकाया हुआ मैल के रूप में फालतू रस, शीरा।
**छोकड़ा** *पु०* बालक, लड़का।
**छोकड़ी** *स्त्री०* लड़की।
**छोट** *वि०* ऊँचाई या विस्तार में कम।
**छोटका** *वि०* अपेक्षाकृत छोटा।
**छोटकी माता** *स्त्री०* छोटी चेचक।
**छोटपइका** *पु०* निचले स्तर की जातियों के समूह के लिए शिष्ट शब्द।
**छोटबड़ाह** *वि० यौ०* एक से दूसरा छोटा या बड़ा।
**छोटहन** *वि०* अपेक्षाकृत छोटा।
**छोटिहा** *वि०* नीच बुद्धि वाला, दुर्बुद्धि।
**छोटिहई** *स्त्री०* नीचता।
**छोड़ल** *अक०* सटी हुई वस्तु का अलग होना। *सक०* बन्धन से मुक्त करना, यथावत् रहने देना।
**छोड़-बढ़** *यौ०* किसी काम को करने में अनियमितता।
**छोड़ावल** *सक०* मक्का आदि के बालों से दाना को अलग करना; दो लड़ते व्यक्तियों को हटा देना; मंत्र या दवा के द्वारा रोग से मुक्त करना।
**छोदरा** *पु०* अपजस, अपयश।
**छोपनी** *स्त्री०* मवेशियों की आँखों का ढक्कन।
**छोपल** *सक०* गीली वस्तु का दूसरी वस्तु पर गाढ़ा लेप करना; गीली मिट्टी को किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार फेंकना कि उसमें सट जाए।
**छोर** *पु०* किनारा, अन्त, ओर।
**छोरी** *स्त्री०* बड़ी रस्सी के अन्त में जोड़ी जाने वाली रस्सी, पनछोर।
**छोलन** *पु०* किसी वस्तु को छीलने या काटने पर उससे अलग होने वाला भाग।
**छोलनी** *स्त्री०* एक प्रकार की करछुल, जिससे कराही में सब्जी आदि को चलाया जाता है; खुरचनी; कलछी।
**छोलल** *सक०* पौधे के ऊपरी हिस्से को काटना।
**छोला** *पु०* चना, मटर का रसदार व्यंजन, ऊँख काटने और छीलने वाला।
**छोवन** *पु०* वह धागा, जिससे कुम्हार चाक पर चढ़े बर्तन को काट कर अलग करता है।
**छोह** *पु०* ममता, प्रेम; कृपा।
**छोहगर** *वि०* ममता रखने वाला।
**छोहड़ी** *स्त्री०* छोकड़ी, छबीली, लड़की।
**छोहरा** *पु०* लड़का।
**छोहरिया** *स्त्री०* लड़की।
**छोहरी** *स्त्री०* लड़की।
**छोहाइल** *अक०* छोह करना।
**छोहारा** *पु०* दे० 'छुहारा'।
**छौंक** *स्त्री०* छौंकने की क्रिया, बघार।
**छौंकल** *सक०* तड़का देना, बघारना।
**छौंड़** *पु०* नौजवान, लड़का।
**छौंड़ा** *पु०* लड़का।
**छौंड़ी** *स्त्री०* लड़की।
**छौना** *पु०* पशु का छोटा प्यारा बच्चा।
**छौरा** *पु०* बड़ी जाति की मछली के अण्डे से निकले छोटे-छोटे बच्चे (छौने); ज्वार; छोकरा।

# ज

**ज** देवनागरी वर्णमाला के चवर्ग का तीसरा व्यंजन, उच्चारण स्थान तालु; अल्प प्राण।

**जँइत** *पु०* एक पौधा, जिसका उपयोग किसी जगह को घेरने के लिए होता है।

**जंकसन** *पु०* [अं०] दो सड़कों के मिलने का स्थान, वह रेलवे स्टेशन, जहाँ दो या अधिक दिशाओं से आकर रेल लाइनें मिलें।

**जंग** *पु०* मोरचा (लोहे का)। *स्त्री०* लड़ाई, युद्ध।

**जंगम** *वि०* [सं०] चलने वाला, चल, स्थावर का उलटा। **-कुटी** *स्त्री०* छतरी। **-विस** *पु०* सर्पादि का जहर।

**जँगरइत** *वि०* जाँगरवाला, परिश्रमी।

**जंगल** *पु०* वन, घासों से ढँकी जगह। *लोक०* 'जंगल में मोर नाचल, के देखल?'

**जंगलट** *पु०* पोखरे में गाड़ा गया जाठ।

**जंगला** *पु०* (पुर्त० जेंगिला) खिड़की।

**जंगली** *वि०* [सं० जंगलं] वन में रहने वाला; असभ्य।

**जंगी** *वि०* [फा०] फौजी, सेना सम्बन्धी, युद्ध सम्बन्धी। **जवान** *पु०* बड़े डील डौल का जवान। **-जहाज** *पु०* युद्ध पोत। **-लाट** *पु०* प्रधान सेनापति (ब्रिटिश शासन)।

**जंघा** *स्त्री०* जाँघ।

**जंघाइल** *अक०* किसी पौधे की ऊँचाई का जाँघ के बराबर होना।

**जंघाड़** *स्त्री०* जंघे में होने वाला फोड़ा।

**जंघिआवल** *सक०* जाँघ का चढ़ाना।

**जंघिया** *स्त्री०* घुटने के ऊपर का पायजामा।

**जँचल** *अक०* उचित ठहरना। पसन्द आना; अच्छा लगना।

**जंजल** *वि०* जर्जर।

**जंजाल** *पु०* [सं० जगत्+जालं] झमेला, झंझट; कार्यभार; बन्धन, फँसाव।

**जंजालिया** *वि०* जंजाली।

**जंजाली** *वि०* बखेड़िया, फसादी।

**जंजीर** *स्त्री०* [फा०] शृंखला, साँकल, बेड़ी।

**जंजीरा** *पु०* जंजीर की शकल में बटा हुआ डोरा, लहरिया।

**जंजीरी** *वि०* [फा०] जंजीर में बँधा हुआ, बन्दी।

**जंत** *पु०* प्राणी, जीवधारी, जन्तु।

**जंतर** *पु०* [अ० तअवीज] चौकोर या गोल ताबीज, जिसमें टोने-टोटके की सामग्रियाँ रहती हैं।

**जंतरी** *स्त्री०* पत्रा, पंचाङ्ग; जन्तर-मन्तर करने वाला।

**जँत** जाँता का समासगत लघु रूप। **-कुट्टा** *वि०* जाँते में कूटा हुआ। **-सर** *पु०* वह गीत जो चक्की पीसते वक्त स्त्रियाँ गाती हैं।

**जँतसार** *स्त्री०* वह स्थान, जहाँ पीसने की चक्की रहती है; चक्की चलाते समय गाया जाने वाला गीत।

**जँताइल** *अक०* दबकर पिस जाना, कुचल जाना।

**जंतु** *पु०* दे० 'जंत'।

**जंत्र** *पु०* दे० जंतर।

**जंत्री** *स्त्री०* [सं० यंत्रिक] दे० 'जंतरी'।

**जंबूदीप** *पु०* सात द्वीपों में से एक, जिसमें भारतवर्ष स्थित है।

**जंभा** *स्त्री०* [सं०] जम्हाई।

**जंभाई** *स्त्री०* दे० 'जंभा'।

**जँभीरी** *पु०* जंबीरी नीबू।
**ज** *पु०* [सं०] जन्म; पिता; मृत्युञ्जय। *उदा०* अंडज, जलज।
**जइआ** *पु०* आँख का सूजन वाला रोग।
**जइधी** *स्त्री०* देवरानी या जेठानी की पुत्री।
**जइसन** *अव्य०* जैसा। *लोक०* 'जइसन करनी वइसन भरनी।'
**जई** *स्त्री०* एक प्रकार का अन्न (जौ); नवरात्र में उगाया गया जौ का पौधा; अंकुर।
**जईफ** *वि०* [अ० जईफ] बुड्ढा, वृद्ध; दुर्बल।
**जईफी** *स्त्री०* बुढ़ापा।
**जउँगी** *पु०* काले रंग की छोटी हर्रे।
**जउआँ** *पु०* एकसाथ पैदा होने वाले दो बच्चे, जुड़वा।
**जऊ** *अव्य०* यद्यपि।
**जक** *पु०* [अं० जैक] हठ, जिद्द; कार आदि को ऊपर उठाने का औजार।
**जकड़** *स्त्री०* [सं० युक्त+करणं] जकड़ने, कसकर बाँधने की क्रिया।
**जकड़बन्द** *पु०* घर में या कड़े बन्धन में रहने की स्थिति।
**जकड़ल** *अक०* किसी वस्तु का दूसरे में कसकर बैठ जाना; जुकाम के कारण नाक बन्द हो जाना; तनाव के कारण अंगों का जकड़ना।
**जकड़ी** *वि०* बिगड़ा हुआ।
**जक-थक** *क्रि०वि०* यथावत्।
**जकल** *अक०* मेला या बाजार में बहुत लोगों का जमा होना; जमकर मार-पीट करना; उत्कर्ष पर होना।
**जकीरा** *पु०* [अ०] खजाना, ढेर।
**जखम** *पु०* [फा० जख्म] व्रण, फोड़ा; कटने या टूटने का घाव, कड़ी चोट।
**जखमी** *वि०* जख्मी; चोटिल।
**जखाड़** *पु०* डटे रहने की स्थिति।
**जखड़िया** *वि०* डटा रहने वाला।
**जग** *पु०* [सं० जगत्] संसार; यज्ञ; धार्मिक अनुष्ठान; संस्कार; पानी रखने का एक पात्र। *लोक०* 'जग में जगदीसपुर सहर ससराँव, चट्टी में दाउदनगर, भोजपुर में डुमराँव।'
**जगकरता** *पु०* यज्ञ करने वाला।
**जगजगाइल** *अक०* चमकना, जगमगावल।
**जग-जूप** *पु० यौ०* संस्कार आदि अवसर पर बड़ी धूम-धाम से मनाया गया उत्सव।
**जगत** *पु०* [सं० जगति] कुएँ के चारों ओर का चबूतरा; संसार।
**जगता** *वि०* जागरूक, सतर्क; सिद्ध पुरुष या देवता।
**जगतर** *पु०* संसार।
**जगदीश** *पु०* भगवान्, परमेश्वर।
**जगमगाइल** *अक०* चमकना। *सक०* जगजगावल। *वि०* चमकीला चमकदार, झलकने वाला।
**जगरनथिआ** *पु०* एक प्रकार का महीन धान। *उदा०* 'बेरि बेरि बरिजिले समधी कवन समधी। जनि बोइह जगरनथिया धान (गाली गीत)।'
**जगरनाथ** *पु०* [सं० जगन्नाथ] पुरी के मन्दिर के देवता जगन्नाथ। *उदा०* 'जगन्नाथ-स्वामी नयनपथगामी भवतु मे'।
**जगरम** *पु०* जागरण।
**जगह** *स्त्री०* [फा० जायगाह] रिक्त स्थान, स्थल; पद, ओहदा; समाई, गुंजायश।
**जगे** *स्त्री०* स्थान।
**जच्चा** *स्त्री०* प्रसूता स्त्री।
**जज** *पु०* [अं० जज] न्यायाधीश।

**जजमनिका** *पु०* पुरोहित आदि का कार्य-क्षेत्र।

**जजमान** *पु०* यज्ञ करने वाला, किसी पुरोहित के निश्चित क्षेत्र का व्यक्ति। *स्त्री०* जजमानिन।

**जजात** *स्त्री०* [फा० जायदाद] सम्पत्ति, जगह-जमीन; फसल।

**जजुरबेदी** *पु०* [सं० यजुर्वेदीय] ब्राह्मणों की एक उपजाति, जो यजुर्वेद के आदर्श पर चलती है।

**जट-जटिन** *पु०* [हिं० जाट-जाटिन] एक प्रकार का लोकनाट्य, उसमें व्यवहृत होने वाला गीत।

**जटल** *सक०* ठगना।

**जटहवा** *पु०* एक प्रकार की तोरी, जिसमें छीमियाँ अधिक होती हैं; जटाधारी।

**जटही** *स्त्री०* कँटिया।

**जटा** *स्त्री०* सिर के मैल से सटे हुए बालों का समूह; बैल की आँख के पास मांस की लटकी हुई बड़ी ग्रन्थि, जिसे शिव का प्रतीक मानते हैं।

**जटामंसी** *स्त्री०* भगवान् शिव का प्रिय एक प्रकार का लाल फूल।

**जट्ट** *वि०* असभ्य, जाहिल।

**जठर** *पु०* [सं०] पेट, कुक्षि, कोख।

**जठरागी** *स्त्री०* [सं०] जठराग्नि।

**जठरानल** *पु०* [सं०] जठराग्नि दे० 'जठरागी'।

**जठेरा** *वि०* जेठा, बड़ा।

**जड़इआ** *स्त्री०* जाड़े के साथ आनेवाला बुखार; मलेरिया।

**जड़कट्टा** *पु०* जड़ से कटिया की प्रक्रिया। *वि०* जड़ से कटा हुआ।

**जड़काला** *पु०* जाड़े का मौसम।

**जड़खर** *स्त्री०* पौधे की जड़।

**जड़बँधना** *पु०* मोजर।

**जड़खर** *स्त्री०* किसी आभूषण में नग को बैठाना।

**जड़ाई** *स्त्री०* जड़ने का भाव।

**जड़वन** *पु०* किंचित् जाड़ा लगने की स्थिति।

**जड़वल** *अक०* जाड़ा लगना।

**जड़हन** *पु०* अगहनी।

**जड़ाउर** *पु०* जाड़े में पहनने-ओढ़ने का वस्त्र जो वर के लिए भेजा जाता है।

**जड़ाव** *पु०* साधुओं द्वारा जटा का बनाया हुआ सिर का मुकुट-सा पहनावा।

**जड़ावर** *पु०* जाड़े में पहनने-ओढ़ने के गरम कपड़े।

**जड़ी** *स्त्री०* वह वनस्पति, जिसकी जड़ औषधि के काम में लाई जाती है; बूटी, वनौषधि।

**जड़ैया** *स्त्री०* जाड़ा देकर आने वाला बुखार, जूड़ी।

**जढ़** *वि०* जड़।

**जत** *वि०* जितना।

**जतन** *पु०* प्रयास, उपाय।

**जतनी** *वि०* चतुर, चालाक।

**जतर-ततर** *क्रि०वि०* जहाँ-तहाँ।

**जतहत** *क्रि०वि०* जितना बड़ा।

**जतावल** *सक०* बताना, आगाह करना।

**जती** *पु०* [सं० यतिन] जितेन्द्रिय, संन्यासी।

**जतेक** *क्रि०वि०* जितना।

**जथगर** *वि०* धनी, सम्पन्न।

**जथा** *क्रि०वि०* [सं० यथा] जैसा। *पु०* धन-सम्पदा, जमीन-जायदाद; हैसियत, औकात।

**जथारथ** *वि०* [सं० यथार्थ] उचित, वास्तविक, जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा।

**जदुबंसी** *पु०* [सं० यदुवंशी] यादव, यदु के वंशज।

**जद्दी** *वि०* बहुत दिनों से आता हुआ। *पु०* संपत्ति के बँटवारे में पिता का अंश।
**जन** *पु०* मजदूर, सेवक।
**जनइया** *पु०* जनक के लिए लोकगीतों में प्रयुक्त शब्द।
**जनक** *पु०* पुराण-प्रसिद्ध मिथिला के राजा, जो सीता के पिता थे।
**जनकपुर** *पु०* पौराणिक युग में मिथिला की राजधानी।
**जनखा** *वि०* [फा० जनख] स्त्रियों-सा हाव-भाव वाला (व्यक्ति); नपुंसक, हिजड़ा।
**जनगर** *वि०* अधिक जनों या मजदूरों का समूह।
**जनता** *स्त्री०* जनसमूह।
**जनम** *पु०* [सं० जन्म] पैदा होने की स्थिति, उत्पत्ति, पैदाइश; भूंई *स्त्री०* जन्मभूमि। *लोक०* 'जनमते बबुआ गोर न होइहें तऽ का अबटला से होइहें।'
**जनमजुग** *क्रि०वि०* जीवनभर, आजीवन।
**जनमतुआ** *पु०* बहुत छोटा बच्चा, शिशु।
**जनमपत्री** *स्त्री०* टीपन, जन्मकुण्डली।
**जनमल** *सक०* [सं० जननं] जन्म लेना।
**जनमावल** *सक०* पैदा करना।
**जनवासा** *पु०* [सं० जनवास] कन्यापक्ष के निवास-स्थान के पास बारात के ठहरने की जगह।
**जना-जने** *पु०* आदमी, इस शब्द का प्रयोग संख्यावाचक शब्दों के साथ होता है। *उदा०* 'दू जना, चार जने, पाँच जने।'
**जनाना** *स्त्री०* स्त्री; पत्नी।
**जनानी** *स्त्री०* स्त्रियों के पहनने की साड़ी। *वि०* स्त्री सम्बन्धी। **-किता** *पु०* जनानखाना।
**जनाब** *पु०* [अ०] महोदय, महाशय, श्रीमत्। **-आली** *पु०* मान्यवर। **-मन** *पु०* प्रिय महाशय।
**जनावर** *पु०* वन्यपशु, जानवर।
**जनि** *क्रि०वि०* मत, नहीं।
**जनिया** *स्त्री०* [फा० जान] प्यारी, प्रियतमा, प्रेयसी।
**जनी** *स्त्री०* [सं० जनः] स्त्री मजदूर, मजदूरिन।
**जनूका** *वि०* परिचित।
**जनेऊ** *पु०* [सं० यज्ञोपवीत] हिन्दुओं का एक संस्कार, जनेव।
**जनेत** *स्त्री०* [सं० जनः] वरयात्रा।
**जनेरा** *पु०* मक्का, मकई; मोटा अन्न।
**जनेरिआ** *स्त्री०* मक्के की छोटी किस्म, जो शीघ्र तैयार होती है।
**जप** *पु०* [सं०] मंत्र, स्तोत्र, ईश्वर के नाम को बार-बार दुहराना। **-तप** *पु०* पूजा-पाठ, व्रत-उपवास। **-माला** *स्त्री०* जप करने की माला। **-होम** *पु०* मंत्रादि का पाठ।
**जपत** *वि०* जप्ती, जप्त।
**जपना** *पु०* जपने का भाव।
**जपनी** *स्त्री०* माला।
**जपल** *सक०* भगवान् के नाम या किसी मन्त्र को धीरे-धीरे और बार-बार कहने की क्रिया।
**जपवावल** *सक०* किसी को जपने के लिए प्रेरित करना।
**जब** *क्रि०वि०* [सं० यावत्] जिस समय, *लोक०* 'जब पेट में पड़ल खुद्दी, तऽ सूझे लागल बुद्धि।' **-कभी** *अव्य०* चाहे जब। **-कि** *अव्य०* जब। **-जब** *अव्य०* जिस-जिस समय। **-तब** *अव्य०* कभी-कभी। **-होला तब** *मुहा०* प्राय:।
**जबड़ा** *पु०* मुँह का वह भाग, जहाँ दाँत जड़े रहते हैं, कल्ला।
**जबदल** *अक०* जुकाम के कारण नाक के छिद्र का रुद्ध होना।

**जबदाह** *वि०* आकार या वजन में आवश्यकता से अधिक भारी।

**जबर** *वि०* [फा०] मजबूत, अपेक्षाकृत बलवान।

**जबरदस्त** *वि०* बलवान, मजबूत, शक्तिशाली। *स्त्री०* जबरदस्ती।

**जबरन** *क्रि०वि०* बलात्, बलपूर्वक।

**जबरा** *वि०* जबरदस्त।

**जबल** *पु०* [अ०] पहाड़।

**जबह** *पु०* कत्ल, हत्या।

**जबान** *स्त्री०* [फा०] जीभ; वचन, भाषा। *वि०* जबानी।

**जबाना** *पु०* [फा० जमाना] समय, काल, युग; मुद्दत, बहुत अधिक दिन।

**जबानी** *वि०* [फा०] मौखिक, अलिखित; ऊपरी, दिखाऊ।

**जबाब** *पु०* किसी प्रश्न के समाधान में कही बात, उत्तर।

**जबाबदेह** *वि०* जिम्मेदार, उत्तरदायी। *स्त्री०* जवाबदेही।

**जबूड़** *पु०* जबरदस्ती।

**जबुड़िआ** *क्रि०वि०* उचित से अधिक; कानून के दबाव में आकर दस्तावेज के निबंधित करने की विवशता।

**जबून** *वि०* [फा०] बुरा, खराब।

**जबे** *पु०* [अ०] गला रेतकर हत्या, जबह।

**जमइती** *स्त्री०* घोड़े की एक चाल, जिसमें घोड़ा अपने पैर उठाते रहने पर भी उसी स्थान पर रहता है; गोष्ठी का व्यंग्यार्थक।

**जमकल** *अक०* खर्च नहीं होने के कारण पानी का दूषित होना; पूरे जोर से काम होना।

**जमखानी** *स्त्री०* गेहूँ का एक भेद, सफेद गेहूँ।

**जमघंट** *पु०* दीपावली का दूसरा दिन।

**जमघट** *पु०* लोगों की भीड़, जमाव, नरसमूह।

**जमतगर** *वि०* जमात में रहने वाला।

**जमदार** *पु०* पुलिस का एक अधिकारी जो हलवदार से ऊपर होता है। जमादार।

**जमदिअरी** *स्त्री०* दीपावली से एक दिन पूर्व, जब यम के लिए दीया जलाया जाता है।

**जमदुतिया** *स्त्री०* कार्तिक के शुक्ल पक्ष की द्वितीया; भैयादूज।

**जमदूत** *पु०* [सं० यमदूत:] मृतक की जीवात्मा को यमराज के पास ले जानेवाला दूत।

**जमराज** *पु०* मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा को दण्ड देने वाला; यमराज।

**जमल** *अक०* एक जगह बहुत से लोगों का इकट्ठा होना; जमकर झगड़ा होना; किसी तरल पदार्थ का जमकर ठोस होना।

**जमलोक** *पु०* [सं० यमलोक] यमपुरी, नरक।

**जमवट** *स्त्री०* जामुन का बना गोलाकार ढाँचा, जिस पर कुएँ की दीवाल जोड़ी जाती है; कुएँ का घेरा।

**जमा** *वि०* एकत्रित, इकट्ठा, संकलित।

**जमाई** *पु०* दामाद, जामाता।

**जमाखरच** *पु०* आय-व्यय का हिसाब।

**जमात** *स्त्री०* आदमी का समूह; एक गिरोह का आदमी।

**जमानत** *स्त्री०* [अ०] वह जिम्मेदारी, जो मौखिक रूप में या कागज लिखकर अपने ऊपर ली जाती है, जामिनी।

**जमाना** *पु०* काल, अवधि, समय। **-साज** *वि०* ठकुरसुहाती करने वाला। **-उलटल** *मुहा०* 'नया समय का आना।'

**जमालगोटा** *पु०* तीव्र विरेचक फल का बीज।

**जमावंदी** *स्त्री०* [फा०] जमीदारों के पास की असामियों की मालगुजारी की बही; किसी रैयत द्वारा जोती गई सारी जमीनों का विवरण।

**जमाव** *पु०* जमने का भाव; भीड़।

**जमावट** *स्त्री०* जमने का भाव।

**जमावल** *सक०* डटकर झगड़ा करना; कस कर मार-पीट करना; तरल पदार्थ को ठोस में बदल देना। *उदा०* दही जमावल।

**जमींदार** *पु०* भूस्वामी, जो रैयतों की दी गई भूमि की मालगुजारी लेता है।

**जमींदारी** *स्त्री०* जमींदार का अधिकार-क्षेत्र।

**जमीन** *स्त्री०* भूमि, धरती; खेत।

**जमीरी** *स्त्री०* खट्टा नींबू, जिसके छिलके मोटे तथा खुरदरे होते हैं।

**जमुआ** *पु०* एक प्रकार का प्रेत, जो बच्चों का स्पर्श कर उन्हें रोगी बना देता है; नवजात शिशु का टिटनेस रोग।

**जमुना** *स्त्री०* [सं० यमुना] भारत की एक प्रसिद्ध नदी।

**जमुरा** *पु०* सुनारों का एक औजार; जादूगर का सहायक जमूरा।

**जमैला** *पु०* बादल की घटा।

**जमोग** *वि०* [सं०] ऐसा पानी, जो खर्च नहीं होकर जमा रहता है।

**जमोट** *पु०* काठ के छह पहियों के जोड़ से बना गोल घेरा।

**जमौढ़ा** *पु०* लोगों के जमा होने का भाव या कार्य।

**जम्हाई** *स्त्री०* निद्रा एवं आलस्य से मुँह खोलने की क्रिया।

**जय** *स्त्री०* [सं०] हराना, पछाड़ना, जीत। *वि०* जीतने वाला। **-कार** *पु०* जय ध्वनि। **-गोपाल** *पु०* एक तरह का अभिवादन। **-घोष** *पु०* जयध्वनि। **-पराजय** *स्त्री०* जीत-हार। **-भेदी** *स्त्री०* जीत का डंका। **-माल** *स्त्री०* [हिं०] जयमाला।

**जया** *स्त्री०* [सं०] दुर्गा। *वि०* जय दिलाने वाली।

**जयी** *वि०* [सं०] जीतने वाला।

**जर** *पु०* [सं० ज्वर:] बुखार; [फा० जर] रुपैया, सोना, धन, माल।

**जरई** *स्त्री०* धान का बोया हुआ पौधा, अंकुरित धान।

**जरउनी** *स्त्री०* जलावन।

**जरकुन** *पु०* किसी पौधे का नीचे वाला हिस्सा, जो अपेक्षाकृत मोटा होता है।

**जरखउरा** *पु०* फसल की वह कटनी, जो जड़ से की जाती है।

**जरचउठ** *पु०* ठीका या खरीददारी में निश्चित की गई राशि का चौथा हिस्सा।

**जरतवाई** *स्त्री०* किसी व्यक्ति से वितृष्णा।

**जरती** *स्त्री०* पिसाई के चलते वजन में आई कमी।

**जरदा** *पु०* पान में खाने की सुगन्धित सुरती।

**जरदोजी** *स्त्री०* सलमा-सितारे के काम वाला कपड़ा।

**जरनल** *पु०* [अं०] समाचार-पत्र, पत्रिका, आय-व्यय पंजी।

**जरनलिज़म** *पु०* [अं०] पत्रकारिता, पत्रकार-व्यवसाय।

**जरनलिस्ट** *पु०* [अं०] पत्रकार।

**जरनाठी** *स्त्री०* जलती हुई लकड़ी; लकड़ी का जला हुआ टुकड़ा।

**जरनिआह** *वि०* ईर्ष्यालु, द्वेषी।

**जरपेसगी** *स्त्री०* ऐसा दस्तावेज, जिसमें महाजन सूद में जमीन की फसल का उपयोग करता है, जमीन बन्धक, रेहन।

**जरबन्हू** *वि०* पौधे की वह स्थिति, जब उसकी जड़ धरती में घुसकर मजबूत हो जाती है।
**जरबार** *पु०* परेशानी, हैरानी।
**जरल** *अक०* प्रज्ज्वलित होना।
**जरवना** *पु०* जलावन।
**जरा** *वि०* [अ०] थोड़ा। **-जरा** *अव्य०* थोड़ा-थोड़ा। **-मना** *अव्य०* थोड़ा-बहुत। **-जरा सा** *अव्य०* थोड़ा सा।
**जराइन** *वि०* जलने से उत्पन्न गन्ध; ज्वर के बाद शरीर से उत्पन्न पसीने की गन्ध।
**जराठी** *स्त्री०* किसी चीज की अधजली राख।
**जरावल** *सक०* जलाना।
**जरिआ** *पु०* [अ०] सम्बन्ध, द्वारा; हेतु कारण, लगाव।
**जरिआइल** *अक०* जड़ रोपना।
**जरिऔधा** *पु०* जड़ वाला हिस्सा, जो प्रायः मोटा होता है।
**जरी** *स्त्री०* पौधे का निचला हिस्सा; सोने के तार से बना हुआ काम।
**जरीब** *स्त्री०* [फा०] भूमि नापने की जंजीर।
**जरूर** *क्रि०वि०* अवश्य, निश्चय ही।
**जरूरत** *स्त्री०* आवश्यकता।
**जरूरियात** *स्त्री०* [अ०] आवश्यक क्रियाएँ।
**जरूरी** *वि०* [अ०] आवश्यक।
**जरोह** *पु०* वंश, परम्परा।
**जल** *पु०* पानी, नीर।
**जलई** *स्त्री०* एक प्रकार की कल्पित चिड़िया, जिसका गर्भवती स्त्रियों के ऊपर से उड़ना अशुभ माना जाता है।
**जलकर** *पु०* किसी जलाशय के पैदावार के उपयोग के लिए ली गई मालगुजारी।
**जलकल** *स्त्री०* पानी का नल, पाइप।
**जलखई** *स्त्री०* मुख्य भोजन के पूर्व हल्का भोजन, जलपान।
**जलखर** *पु०* गाँव की जमीन का जल भाग।
**जलचर** *पु०* जलजन्तु।
**जलचरी** *स्त्री०* मछली।
**जलछेंका** *पु०* प्रातःकाल का जलपान।
**जलजल** *वि०* चूहों के उत्पात या अन्य कारणों से विवरयुक्त भूमि।
**जलजात** *पु०* कमल, पद्म।
**जलपान** *पु०* नाश्ता, कलेवा।
**जलफल** *पु०* सिंघाड़ा।
**जलबोझी** *स्त्री०* शिव पर चढ़ाने के लिए गंगा से पात्र में जल भरने का काम। *पर्या०* जलभरी।
**जलबेयारी** *स्त्री०* नदी के किनारे की या वर्षा के पूर्व या पश्चात् की ठण्ढी हवा।
**जलभरी** दे० 'जलबोझी'।
**जलम** *पु०* जन्म, उत्पत्ति।
**जलम अठमी** *स्त्री०* [सं० जन्माष्टमी] कृष्णाष्टमी।
**जलमधरती** *यौ०* [सं०] जन्मभूमि।
**जलमउती** *वि०* हाल का पैदा (बच्चा) हाल के उत्पन्न बच्चे से सम्बन्धित।
**जलमतुआ** दे० 'जलमउती'।
**जलमल** *अक०* जन्म लेना, पैदा होना।
**जलमावल** *सक०* पैदा करना, जन्म देना।
**जलवा** *पु०* शोभा, प्रभा।
**जलसा** *पु०* [अ०] उत्सव।
**जलसेम** *पु०* मछली।
**जलांजलि** *स्त्री०* [सं०] तर्पण।
**जलाद** *पु०* प्राण-दण्ड पाए व्यक्ति का वध करने वाला।
**जलामय** *वि०* जलमग्न, पानी में डूबा हुआ।
**जलाल** *पु०* [अ०] तेज, रोब, ताकत।
**जलाली** *वि०* [अ०] जिसमें जलाल हो।

**जलावन** *पु०* ईंधन, जलाने के काम आने वाली चीजें।
**जलासय** *पु०* [सं०] तालाब, झील।
**जलाहल** *वि०* जलमय।
**जलिका** *स्त्री०* [सं०] जोंक।
**जलिया** *वि०* जाल-फरेब करने वाला, धोखेबाज।
**जलुआ** *पु०* विवाह के अवसर पर स्त्रियों द्वारा रात्रि में खेले गए लोकनाट्य में प्रयुक्त बच्चों के कपड़े की बनी मानवाकृति।
**जलूस** *पु०* जुलूस।
**जलेबा** *पु०* बड़ी जलेबी।
**जलेबी** *स्त्री०* कुण्डली के आकार की मिठाई; एक आतिशबाजी।
**जलेसर** *पु०* [सं०] समुद्र; वरुण।
**जलोदर** *पु०* पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी भरने से उत्पन्न रोग।
**जलो-पलो** *पु०* चारों तरफ जलामय की स्थिति।
**जल्द** *क्रि०वि०* शीघ्र, चटपट।
**जल्दबाजी** *स्त्री०* शीघ्रतापूर्वक करने की व्यग्रता।
**जल्दी** *स्त्री०* शीघ्रता।
**जल्प** *पु०* [सं०] बकवास, तर्क।
**जल्पक** *वि०* [सं०] बातूनी।
**जल्लाद** *पु०* [सं०] बधिक, फाँसी चढ़ाने वाला।
**जव** *पु०* [सं० यव:] एक प्रकार का अन्न जौ, जो चैत में पकता है।
**जवकेरवा** *पु०* जौ और केराव का मिश्रण।
**जवकेराई** *स्त्री०* जौ और छोटे केराव का मिश्रण।
**जवखरल** *अक०* सम्भोग के लिए प्रबल इच्छुक होना (स्त्रियों के सम्बन्ध में)।
**जवखेसरा** *पु०* जौ और खेसारी का मिश्रण।
**जवगोजई** *स्त्री०* जौ और गेहूँ का मिश्रण।
**जवबुँटा** *पु०* जौ और चने का मिश्रण।
**जवन** *सर्व०* जो।
**जवर** *वि०* एकत्रित, एक साथ।
**जवरा** *पु०* नाई, लोहार आदि की वार्षिक मजदूरी में दिया जाने वाला अन्न।
**जवाँ** जवान का समासगत रूप। **-मरद** *पु०* बहादुर। **-मरदी** *स्त्री०* मर्दानगी।
**जवा** *पु०* लहसुन का दाना।
**जवाइन** *स्त्री०* एक प्रकार का मसाला, अजवाइन।
**जवाई** *स्त्री०* गमन, जाने का कार्य या भाव।
**जवान** *वि०* [फा०] युवा, तरुण।
**जवानी** *स्त्री०* युवावस्था।
**जवार** *पु०* आस-पास का गाँव। **-पथार** *पु०* अगल-बगल का इलाका।
**जवाल** *पु०* [अ०] झंझट, आफत, परेशानी।
**जवाहिर** *पु०* [अ०] रत्न, मणि।
**जवाहिरात** *पु०* [अ०] कई प्रकार के रत्नमणि।
**जवैया** *पु०* जाने वाला।
**जस** *पु०* [सं० यश:] कीर्ति। *वि०* जैसा *लोक०* 'जस मनई तस पनही।'
**जसोदा** *स्त्री०* यशोदा।
**जस्त** *पु०* दे० जस्ता।
**जस्ता** *पु०* खाकी रंग की एक धातु, जिसे ताँबे के साथ मिलाने पर पीतल बनता है।
**जहँ** *अव्य०* जहाँ।
**जहँड़ल** *अक०* अस्त-व्यस्त हालत में रहना।
**जहदल** दे० जहँड़ल।
**जहद्दम** *पु०* झंझट का काम; जहन्नुम, नरक।

**जहमत** *स्त्री०* [अ०] कष्ट, आपत्ति, बखेड़ा, झंझट।

**जहर** *पु०* [अ० जह्र] विष, गरल। *वि०* घातक, मार डालने वाला, बहुत अधिक हानि पहुँचाने वाला।

**जहरदार** *वि०* विषाक्त।

**जहरबाद** *पु०* [फा०] एक प्रकार का भयंकर फोड़ा।

**जहल-पहल** *क्रि०वि०* अस्त-व्यस्त।

**जहाँ** *अव्य०* जिस जगह। *लोक०* 'जहाँ के पीए पानी तहाँ के बोले बानी।' **-कहीं** *क्रि०वि०* जहाँ-तहाँ। **तहाँ** *अव्य०* इधर-उधर। **-के तहाँ** *मुहा०* अपनी जगह पर।

**जहाज** *पु०* [अ०] समुद्रों में चलने वाली बड़ी नाव, जलपोत।

**जहाजी** *वि०* जहाज से सम्बन्ध रखने वाला।

**जहान** *पु०* जगत।

**जहिया** *क्रि०वि०* जिस समय, जब।

**जहुआइल** *अक०* किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना।

**जहुआवल** *सक०* ज्यादा परेशान करना।

**जाँगर** *पु०* पौरुष, श्रमशक्ति। **-चोर** *वि०* मेहनत न करने वाला। **-थाकल** *मुहा०* शिथिल होना।

**जांगल** *वि०* [सं०] जंगली।

**जांगलू** *वि०* उजड्ड, असभ्य, अशिष्ट।

**जांघ** *स्त्री०* घुटने और कमर के बीच का अंग, उरू।

**जाँघिया** *पु०* लंगोट, पाजामा, काछा।

**जांघिल** *पु०* (देश) लम्बी टाँग वाला जलपक्षी।

**जांच** *स्त्री०* परख, परीक्षा, छान-बीन। **-पड़ताल** *स्त्री०* छान-बीन।

**जाँचक** *पु०* [सं० याचक:] माँगनेवाला, भिखमंगा।

**जाँचल** *सक०* परखना; माँगना।

**जाँझ** *पु०* तूफानी वर्षा।

**जाँत** *पु०* आटा पीसने की चक्की।

**जाँतल** *वि०* बलपूर्वक दबाया हुआ।

**जाँता** *पु०* दे० जाँत।

**जाँय-बेजाँय** *वि०* उचित-अनुचित।

**जाई** *स्त्री०* बेटी, पुत्री, कन्या।

**जाउत** *पु०* देवरानी या जेठानी का पुत्र।

**जाउतिन** *स्त्री०* भतीजी।

**जाउर** *पु०* खीर।

**जाक** *पु०* पाट के बोझों का समूह, जिसे पानी में सड़ने के लिए डाला जाता है।

**जाकड़** *पु०* एक बही, जिसमें ग्राहकों की पसन्दगी के लिए दिया गया सौदा लिखा जाता है; पसन्द न होने पर लौटा लेने की शर्त पर लिया गया माल।

**जाकड़ी** *स्त्री०* बहुत दिनों से नहीं बिकने वाला (माल)।

**जाकिट** *स्त्री०* एक तरह की कुर्ती; जैकेट।

**जाग** *स्त्री०* जागरण।

**जागता** *वि०* वह देवता, जिसकी महिमा चमत्कार वाली हो; जाग्रत्।

**जागर** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान।

**जागरन** *पु०* जगने का भाव या कर्म, किसी पर्व के उपलक्ष्य में सारी रात जागना।

**जागल** *अक०* [सं० जागरणं] निद्रा-त्याग कर उठना; सावधान या सतर्क रहना।

**जागीर** *स्त्री०* [फा०] राज्य की ओर से सेवा के लिए दी गई जमीन।

**जाजिम** *स्त्री०* [तु० जाजम] बिछावन की चादर।

**जाट** *पु०* कोल्हू के बीच की मोटी लकड़ी।

**जाटू** *स्त्री०* जाटों की बोली, बांगड़ू।

**जाठ** *पु०* तालाब के बीच में गड़ा हुआ खम्भा।

**जाठर** *वि०* [सं०] जठर (पेट) सम्बन्धी।

**जाड़ा** *पु०* शीतकाल।
**जात** *स्त्री०* वर्ण-व्यवस्था का एक भाग, वर्ग।
**जात-पाँत** *स्त्री०* बिरादरी। *लोक०* 'जात-पाँत ना पूछे कोई, हरि के भजे से हरि के होई।'
**जात-मउआर** *स्त्री०* एक ही जाति के आदमी।
**जातरा** *स्त्री०* यात्रा।
**जातरी** *पु०* यात्री, मुसाफिर।
**जात्था** *पु०* सम्पत्ति, धन। [सं० यौ०] जत्था-पूँजी। (सहचर शब्द)।
**जादा** *वि०* ज्यादा, अधिक।
**जादू** *पु०* [फा०] टोना, जंतर-मंतर; मोहनी। **-गर** *पु०* जादू करने वाला। **-गरी** *स्त्री०* जादू का काम।
**जादो** *पु०* जादू, करामात, करिश्मा, मंत्र-तंत्र, जादू-टोना, सहचर शब्द।
**जान** *स्त्री०* प्राण। *लोक०* 'जान मारे कनिया, अनजान मारे ठग।' **-दार** *वि०* सजीव।
**जानकार** *वि०* जानने वाला।
**जानकी** *स्त्री०* जनक की पुत्री।
**जानल** *सक०* जानकारी प्राप्त करना, पहचानना।
**जानवर** *पु०* पशु, जन्तु।
**जाना** *पु०* नौकर, मजदूर; पति।
**जानी** *स्त्री०* प्रियतमा।
**जानो** *अव्य०* मानो, जैसे।
**जाप** *पु०* मंत्रादि जपने का कार्य।
**जापान** *पु०* पूर्व एशिया का एक देश। *वि०* जापानी।
**जाफ** *पु०* बेहोशी; घुमरी।
**जाफरान** *पु०* [अ०] केसर।
**जाफरानी** *वि०* केसरिया।
**जाफरी** *स्त्री०* बाँस की कमची की बनी टाटी।
**जाब** *पु०* मवेशियों के मुँह पर लगाने की बाँस या रस्सी की कमची की बनी जाली।
**जाबल** *सक०* जाब लगाना।
**जाबिड़** *वि०* सूत से बनी हुई पैसे रखने की थैली।
**जाम** *स्त्री०* रुकावट; शराब का प्याला।
**जामल** *अक०* [सं० जन्मनम्] बीज से अंकुर का निकलना।
**जामा** *पु०* कमीज।
**जामा-जोड़ा** *पु०* एक अति विशेष प्रकार का वस्त्र, जिसे विवाह के समय वर पहनता है।
**जामिन** *पु०* न्यायालय में अपराधी की हाजिरी का दायित्व लेना; किसी के काम का दायित्व हेना।
**जामुन** *पु०* एक प्रकार का फल; जम्बू।
**जामुनी** *वि०* जामुन के रंग का; स्याह।
**जाँय** *वि०* मुनासिब, उचित।
**जाय** [अ०] बेकार, *स्त्री०* जगह।
**जायक** *पु०* [सं०] पीला चन्दन।
**जायका** *पु०* [अ०] स्वाद, मजा।
**जायज** *वि०* [अ०] उचित, माननेयोग्य।
**जायदाद** *स्त्री०* [फा०] सम्पत्ति, जगह-जमीन।
**जायफर** *पु०* एक प्रकार का फल, जो औषधि के काम में आता है।
**जायस** *पु०* मलिक मुहम्मद जायसी का वास-स्थान। *उदा०* 'जायस नगर धरम अस्थानू, जहाँ आय कवि कीन्ह बखानू'।
**जाया** *वि०* उत्पन्न किया हुआ।
**ज़ाया** *वि०* [अ०] नष्ट, बर्बाद।
**जार** *पु०* [सं०] परस्त्री से प्रेम करने वाला; उपपति।

**जारी** *क्रि०वि०* प्रचलित, चलता हुआ कार्य।
**जरल** *सक०* जलाना।
**जाल** *पु०* मछलियों और चिड़ियों को फँसाने की जाली; फन्दा।
**जाला** *पु०* पौधों की जड़ों के रेशों का समूह; मकड़ी का बनाया हुआ जाला; आँख का एक रोग।
**जालाद** *वि०* जो बहुत क्रूर हो, जल्लाद।
**जालिम** *वि०* अत्याचारी, क्रूर।
**जाली** *वि०* नकली, अवैध; छिद्रदार।
**जासूस** *पु०* किसी गुप्त भेद का पता लगाने वाला व्यक्ति; मुखबिर।
**जासूसी** *स्त्री०* मुखबिरी।
**जाह** *पु०* उलझन।
**जाहिर** *वि०* प्रत्यक्ष, प्रकट।
**जिंदगी** *स्त्री०* [फा०] जीवन, जीवित रहना, आयु। **-भर** *अव्य०* आजीवन। **-बसर कइल** *मुहा०* जीवन यापन करना।
**जिंदा** *वि०* [फा०] जीता हुआ, जीवित। **-दिल** *वि०* उत्साही। **-दिली** *स्त्री०* जिन्दादिल होना। **-बाद** *जीता रहे।*
**जिंस** *स्त्री०* [अ०] वस्तु।
**जिअतार** *वि०* तुरन्त की पकड़ी गई जीवित मछली।
**जिआन** *पु०* [अ० जियान] बर्बाद, नष्ट।
**जिआवल** *सक०* जीवित रखना, जिलाना।
**जिउका** *स्त्री०* रोजी, जीविका।
**जिउकिया** *पु०* मनोयोगपूर्वक काम कर जीविका चलाने वाला व्यक्ति।
**जिउतिया** *स्त्री०* आश्विन कृष्ण की अष्टमी को होने वाला स्त्रियों का व्रत विशेष, जीवित्पुत्रिका व्रत।
**जिउदान** *पु०* जीवदान, प्राणदान।
**जिकिर** *पु०* चर्चा, प्रसंग।
**जितवावल** *सक०* जिताना, जीतने में सहायक होना।
**जितावल** *सक०* किसी के जीतने में सहायता पहुँचाना।
**जिद** *स्त्री०* [अ०] हठ, दुराग्रह। *वि०* जिद्दी, हट्ठी।
**जिन** *पु०* [अ०] भूत, प्रेतात्मा।
**जिनगी** *स्त्री०* [फा० जिंदगी] जीवन, आयु।
**जिनसी** *वि०* अनाज से सम्बन्धित।
**जिनिस** *वि०* मीठा, सुस्वादु।
**जिन्ना** *वि०* प्राणवान, जिन्दा, सशक्त।
**जिन्हार** *पु०* एक प्रकार की घास।
**जिभलाह** *वि०* सुस्वादु भोजन का लोभी, चटोर।
**जिभिआ** *स्त्री०* लोहे या प्लास्टिक का बना एक उपकरण, जिससे जीभ साफ की जाती है।
**जिमवार** *वि०* जबाबदेह, उत्तरदायी, जिम्मेवार।
**जिम्मा** *पु०* [अ०] किसी कार्य के निर्वाह का दायित्व। **-दार** *वि०* उत्तरदायी। **-वारी** *स्त्री०* उत्तरदायित्व।
**जिय** *पु०* जी, जीव।
**जियन** *पु०* जीवन।
**जियरा** *पु०* मन, दिल।
**जियादा** *वि०* [अ०] अधिक, फालतू।
**जियान** *पु०* [फा०] हानि।
**जिरजिराइल** *अक०* क्षुब्ध होना।
**जिरतिया** *पु०* जिरात का काम देखने वाला।
**जिरवान** *पु०* नमक और भुना हुआ जीरा, मिश्रित पतला दही।
**जिरह** *स्त्री०* [अ०] पूछताछ, बहस, दलील।
**जिरहुल** *वि०* जीरामिश्रित सत्तू।
**जिरात** *स्त्री०* जमींदारों की निजी जमीन, जिस पर वे खेती करते हैं।

**जिरिया** *पु०* एक बढ़िया धान।

**जिला** *पु०* [अ०] जनपद, डिस्ट्रिक्ट। **-कचहरी** *स्त्री०* जिला अदालत। **-जज** *पु०* जिले का प्रधान न्यायाधीश। **-जेल** *स्त्री०* जिले के जेलखाना। **-बोर्ड** *पु०* जिले की सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का प्रबन्ध करने वाली परिषद्।

**जिलादार** *पु०* कर की वसूली हेतु क्षेत्र-विशेष के लिए नियुक्त अधिकारी।

**जिलेबी** *स्त्री०* गोलाकार मिठाई; एक प्रकार का जंगली वृक्ष, जिसका फल जिलेबी-सा होता है।

**जिल्द** *स्त्री०* [अ०] किसी ग्रन्थ या पुस्तक के रक्षार्थ उसमें लगी दफ्ती।

**जिस्ता** *पु०* कागज के पच्चीस फरदों की इकाई।

**जी** *अव्य०* सम्मान व्यक्त करने के लिए नाम या उपाधि के अन्त में जोड़ा जाने वाला शब्द।

**जीअल** *अक०* जीना, जीवित रहना।

**जीआ** *वि०* जोखने में किंचित् अधिक।

**जीआदान** *पु०* अपनी ओर से किसी की जान छोड़ देना।

**जीजा** *पु०* भगिनी पति।

**जीजी** *स्त्री०* भगिनी।

**जीत** *स्त्री०* [सं० जितम्] जय, विजय, लाभ। **-हार** *स्त्री०* जय-पराजय।

**जीतल** *अक०* विजय प्राप्त करना, विपक्षी को परास्त करना।

**जीन** *पु०* घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, चारजामा।

**जीना** *पु०* [फा०] सीढ़ी।

**जीभ** *स्त्री०* [सं० जिह्वा] जिह्वा, रसना, जबान।

**जीभी** *स्त्री०* दँतवन का चीरा, जिससे जीभ साफ की जाती है; ताँबे, स्टील के पत्तर की बनी चीज, जिससे जीभ साफ करते हैं।

**जीमल** *सक०* भोजन करना।

**जीय** *पु०* जीव।

**जीयट** *पु०* जीवट।

**जीयल** *अक०* जीना।

**जीर** *पु०* [सं०] दे० 'जीरा'।

**जीरा** *पु०* एक सुगन्धित बीज, जो मसाले के काम में आता है।

**जीव** *पु०* [सं०] जान, प्राण, जीवन, प्राणी **-घाती** *वि०* हिंसक। **-जन्तु** *पु०* प्राणी। **-जगत्** *पु०* प्राणि समष्टि। **-द** *वि०* जीवनदाता। **-दान** *पु०* प्राणदान। **-धन** *पु०* पशु-धन। **-धारी** *पु०* प्राणी। **-बलि** *स्त्री०* पशुबलि। **-मंदिर** *पु०* शरीर। **-लोक** *पु०* संसार। **-विज्ञान** *पु०* जीव-जन्तु का विज्ञान। **-साधन** *पु०* धान्य, अनाज।

**जीवक** *पु०* [सं०] प्राणधारक।

**जीवट** *पु०* साहस, हिम्मत।

**जीवन** *पु०* जिन्दगी।

**जीवनी** *स्त्री०* जीवन-चरित।

**जीविका** *स्त्री०* [सं०] रोजी, वृत्ति।

**जीह** *स्त्री०* जीभ '…जोन उपारऊँ तब दस जीहा'।

**जीहजूरी** *वि०* खुशामदी, बात-बात में जी हजूर कहने वाला।

**जुअती** *स्त्री०* युवती।

**जुआँ** *पु०* जूँ।

**जुआ** *पु०* द्यूत, बाजी लगाकर खेला जाने वाला खेल।

**जुआइल** *अक०* पुष्ट होना।

**जुआठ** *पु०* गाड़ी या हल खींचने में बैलों के कन्धे पर रखा जाने वाला लकड़ी का जुआ।

**जुआड़ी** *पु०* जुआ खेलने वाला।
**जुआधा** *वि०* पूर्णता को प्राप्त (सर्प)।
**जुआन** *वि०* जवान, हट्ठा-कट्ठा।
**जुआवल** *सक०* गाड़ी या हल में बैल को उसे खींचने के लिए जोतना।
**जुग** *पु०* पुराणों में वर्णित सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग; बारह वर्ष की अवधि; पीढ़ी।
**जुगुत** *वि०* योग्य, अनुकूल।
**जुगुतावल** *सक०* सामग्रियों की व्यवस्था कर एकत्रित करना।
**जुगुती** *स्त्री०* [सं० युक्तिः] उपाय, तरीका।
**जुटान** *पु०* इकट्ठा होने की स्थिति, एकत्रीकरण।
**जुटावल** *सक०* दो पृथक् वस्तुओं को एक दूसरे से मिलाना, इकट्ठा करना, एकत्रित करना।
**जुट्टा** *पु०* फूलों का बाँधा गया गुच्छा।
**जुट्टी** *स्त्री०* गड्डी।
**जुठ कटार** *पु०* कल्ले के भीतर के चमड़े पर दाँत की रगड़ से बना जख्म।
**जुठारल** *सक०* जुठारना।
**जुठिआवल** *सक०* जूठा करना।
**जुठिहात** *पु०* जूठा करने वाला।
**जुड़ल** *अक०* जोड़ा जाना।
**जुड़पिती** *स्त्री०* पित्ती, खुजली के साथ ददोरा।
**जुड़वाँ** *वि०* जुड़े हुए; एक साथ पैदा हुए दो बच्चे।
**जुड़ाइल** *अक०* जुड़ाना या सुख अनुभव करना।
**जुतल** *अक०* जोता जाना, जुटना।
**जुतवसल** *सक०* जूते से माला।
**जुतवावल** *सक०* जोतने का काम करवाना।
**जुताई** *स्त्री०* जोतने की क्रिया।
**जुतिआवल** *सक०* जूते से मारना।
**जुतिऔवल** *स्त्री०* जूते से मारपीट।
**जुदा** *वि०* अलग, पृथक्। **-ई** *स्त्री०* वियोग।
**जुध** *पु०* [सं० युद्ध] लड़ाई, झगड़ा।
**जुनून** *पु०* [सं०] पागलपन।
**जुन्हरी** *स्त्री०* ज्वार।
**जुन्हाई** *स्त्री०* चाँदनी।
**जुबराज** *पु०* युवराज।
**जुबली** *स्त्री०* [अं०] उत्सव; जयन्ती।
**जुबान** *स्त्री०* जबान।
**जुबानी** *वि०* मौखिक।
**जुमहूर** *पु०* [अ०] जनता, लोक।
**जुमा** *पु०* [अ०] शुक्रवार।
**जुरंत** *क्रि०वि०* तुरन्त, शीघ्र।
**जुरपित्ती** *स्त्री०* शरीर में निकला चकत्ता, जिसमें बड़ी खुजलाहट रहती है; जुलपुत्ती।
**जुरबाना** *पु०* [फा० जुर्माना] आर्थिक दण्ड।
**जुरैठी** *स्त्री०* जुड़े हुए थन वाली (भैंस)।
**जुलाब** *पु०* [फा०] दस्त लाने वाली दवा।
**जुलाहा** *पु०* कपड़ा बुनने वाला।
**जुलुफ** *स्त्री०* [फा०] बिखरे बाल; काकुल।
**जुलुम** *पु०* [अ०] उत्पात, अत्याचार, जुल्म।
**जुलुमी** *वि०* अत्याचारी।
**जुलुस** *पु०* बहुत से लोगों का एक साथ पंक्ति-बद्ध होकर चलना।
**जूँज** *पु०* पुरुषेन्द्रिय, लिंग।
**जूँजी** *पु०* बच्चे का लिंग।
**जूआ** *पु०* गाड़ी का वह भाग, जो बैलों के कन्धे पर रहता है; जाँते का हत्था या मूठ।
**जूझल** *अक०* [सं० युद्धकरणम्] जूझना।
**जूटल** *अक०* दो अलग-अलग वस्तुओं का एकसाथ सट जाना; इकट्ठा होना।

**जूठ** *वि०* छूटा भोजन; उच्छिष्ट।
**जूठा** *वि०* खाकर छोड़ा हुआ।
**जूड़** *वि०* ठण्ढा, शीतल।
**जूता** *पु०* चमड़े, किरमिच का बना हुआ उपानह। **-खोर** *वि०* लतखोर, बेहया। **-खाइल** मुहा० पीटा जाना। **-चाटल** मुहा० चापलूसी करना।
**जून** *पु०* सुअवसर, समय।
**जूना** *पु०* तिनके बटकर बनाई गई रस्सी।
**जूमल** *अक०* तेजी और उत्साहपूर्वक किसी जगह पर पहुँचना।
**जूर** *पु०* जोड़, ढेर।
**जूरल** *अक०* उपलब्ध होना, प्राप्त होना।
**जूरा** *पु०* जूड़ा।
**जूलाई** *स्त्री०* जुलाई।
**जूस** *पु०* [सं०] जूस।
**जूहर** *पु०* जौहर।
**जूही** *स्त्री०* एक प्रकार का फूल।
**जेंव** *क्रि०वि०* जैसे ही।
**जेंवन** *पु०* भोजन की सामग्री। उदा० 'सोने की थारी में जेंवना परोसलो' लोकगीत।
**जेंवनार** *स्त्री०* भोज।
**जेंवर** *पु०* गहना; रस्सी।
**जेंवल** *सक०* खाना, भोजन करना।
**जेंवावल** *सक०* भोजन कराना।
**जे** *सर्व०* जो (बहुवचन)।
**जेइ** *सर्व०* जो।
**जेकर** *सर्व०* जिसका। लोको० 'जेकर आँख ना, ओकर साखं ना'।
**जेठंस** *पु०* बड़े भाई का हिस्सा (बपौती में)।
**जेठंसी** *स्त्री०* दे० 'जेठंस'।
**जेठ** *पु०* पति का बड़ा भाई; वैशाख के बाद का महीना, वि० उम्र में अधिक; जेठा।
**जेठसर** *स्त्री०* पत्नी की बड़ी बहन।
**जेठाई** *स्त्री०* उम्र में अधिक होने की स्थिति।
**जेठानी** *स्त्री०* पति के बड़े भाई की पत्नी।
**जेतना** *वि०* जितना।
**जेतही** *क्रि०वि०* जिसी स्थान पर, जहाँ।
**जेने** *क्रि०वि०* जिधर, जिस ओर।
**जेब** *पु०* [फा०] पॉकिट।
**जेमें** *सर्व०* जिसमें।
**जेवना** *सर्व०* जौन, जिससे। *पु०* भोज्य पदार्थ, लो० गी०।
**जेहन** *पु०* [अ०] बुद्धि, मन।
**जेहन** *क्रि०वि०* जिधर, जिस ओर।
**जेल** *पु०* [अ०] बन्दीशाला, कारागार, कैदखाना।
**जेसरिया** *पु०* बहुत अधिक पानी में बोया जाने वाला धान।
**जै** *स्त्री०* जीत, जय। उदा० 'बोलो सियावर रामचन्द्र की जै, हर-हर महादेव'।
**जैन** *पु०* महावीर वर्द्धमान द्वारा चलाया गया धर्म।
**जैनी** *वि०* जैनधर्म के अनुयायी।
**जैमाला** *स्त्री०* फूलों का हार, जिसका उपयोग विवाह के अवसर पर होता है।
**जोंक** *स्त्री०* पानी का एक लचीला कीड़ा, जो रक्त चूसता है; जलौका।
**जोंकी** *स्त्री०* मनुष्यों एवं मवेशियों की अँतड़ी में पाया जाने वाला लम्बा कीड़ा।
**जोंगा** *पु०* एक मोटा धान।
**जोंड़ा** *पु०* धातु की बनी वस्तुओं में जोड़।
**जो** *अव्य०* यदि। लोक० 'जो भल रहती रूपा, तऽ का पंच लगाइत लूका'।
**जोइन** *स्त्री०* मादा मवेशियों की योनि।
**जोइना** *पु०* पुआल की रस्सी।
**जोइस** *पु०* [सं० ज्योतिषी] हाथ देखकर या स्वत: किसी का शुभाशुभ लक्षण बतलाने वाला व्यक्ति।

**जोई** *स्त्री०* पत्नी, जोरू।
**जोई-जोइआ** *स्त्री०* पत्नी के लिए गीतों में प्रयुक्त शब्द। लोक० 'हमर जोइआ हे समधी, लरिका नादान।'
**जोख** *स्त्री०* तौल, वजन।
**जोखल** *सक०* तौलना, वजन जाँचना; विचार करना।
**जोखिम** *स्त्री०* खतरा एवं भय की आशंका।
**जोग** *पु०* नकली योगी।
**जोगन** *स्त्री०* योगिन।
**जोगनी** *स्त्री०* एक आभूषण।
**जोगल** *सक०* सँजोकर रखना।
**जोगाड़** *पु०* प्रबन्ध, इन्तजाम।
**जोगवाल** *सक०* हिफाजत से रखना।
**जोगावल** *सक०* यत्नपूर्वक बचाए रखना; लम्बी अवधि तक सुरक्षित रखना। **-धन** *पु०* संचित निधि।
**जोगाह** *वि०* जादू-टोना से सम्बन्धित।
**जोगिया** *वि०* जोगी का, भगवा।
**जोगी** *पु०* यौगिक क्रियाओं का अभ्यासी; चमत्कारी साधु।
**जोगीड़ा** *पु०* गीत, जो होली में गाया जाता है।
**जोजन** *पु०* चार कोस की दूरी।
**जोड़** *पु०* अंकों को जोड़ने का कार्य; हड्डियों का जोड़; लकड़ियों का जोड़; मेल-मिलाप। **-जोड़** *पु०* गाँठ-गाँठ, हर अंग। **-तोड़** *पु०* दाव-पेंच। **-दार** *वि०* जोड़वाला।
**जोड़ल** *सक०* [सं० योगे बन्धने च] दो या अधिक अंकों को जोड़ना।
**जोड़वावल** *सक०* जोड़ल का प्रेरणार्थक रूप।
**जोड़ा** *पु०* नर और मादा, पति-पत्नी; जूते।
**जोड़ाजामा** *पु०* वर का वस्त्र।
**जोड़िआइल** *अक०* एक वस्तु पर दूसरे को रखना।
**जोड़ी** *स्त्री०* पति-पत्नी या नर-मादा मवेशी।
**जोड़ीदार** *पु०* उम्र, गुण या नात्ता में समान।
**जोड़ू** *स्त्री०* पत्नी।
**जोत** *स्त्री०* जोतने का कार्य; चास। लोक० 'जोते खेत घासना टूटे, तेकर भाग सांझिए फूटे'।
**जोतल** *सक०* खेत में हल चलाना।
**जोतसी** *वि०* ज्योतिष् का ज्ञाता।
**जोता** *पु०* बैल के गले की रस्सी, जिसके सहारे उसे हल में जोता जाता है।
**जोताई** *स्त्री०* जोतने का काम या भाव।
**जोती** *स्त्री०* प्रकाश, चमक, ज्योति।
**जोधा** *वि०* लड़ने वाला।
**जोनी** *स्त्री०* योनि।
**जोन्हरी** *स्त्री०* मोटा अन्न, ज्वार, जनेरा; मकई।
**जोन्ही** *स्त्री०* तारा।
**जोबन** *पु०* उरोज, यौवन।
**जोबना** *पु०* स्त्री का वक्षस्थल। *उदा०* 'चोली में जोबना हिलत बा'। **-जोम** *पु०* उत्साह।
**जोबर-जाबर** *पु०* जोड़-तोड़, क्षणिक व्यवस्था।
**जोर** *पु०* [फा०] रस्सी, पगहा, रस्सी की गाँठ; ताकत, बल।
**जोरती** *स्त्री०* जोड़ने का काम या भाव।
**जोरदार** *वि०* [फा०] शक्तिशाली, बलिष्ठ।
**जोरन** *पु०* वह दही, जिसे दूध को फिर दही जमाने के लिए उसमें डालते हैं, जामन।
**जोरनी** *स्त्री०* दो पहाड़ों को जोड़ने वाला पहाड़, जो प्राय: पतला होता है; एक पहाड़ से दूसरे पर जाने की पतली राह।

**जोरबस्ती** *स्त्री०* बलपूर्वक किया गया कार्य।
**जोरल** *सक०* जोड़ल।
**जोरी-जोरी** *स्त्री० यौ०* पूरी शक्ति लगाकर काम करने का ढंग।
**जोरू** *स्त्री०* पत्नी, भार्या।
**जोलहउ** *वि०* जोलहे द्वारा बनाया गया वस्त्र।
**जोलहा** *पु०* जुलाहा। लोक० 'जोलहा के बेगरिहा पैठान।
**जोलहिन** *स्त्री०* जुलाहे की स्त्री।
**जोस** *पु०* [फा०] उबाल, गरमी, उत्साह। **-व खरोस** *पु०* धूम। **-जुनून** *पु०* सनक, जोर। **-में आइल** *मुहा०* उत्तेजित होना।
**जोसीला** *वि०* जोश से भरा।
**जोहल** *सक०* रास्ता देखना; खोजना।
**जोहा** *पु०* रोगोपचार; ऊख के कोल्हू की पैंदी में रस गिरने के लिए काटी हुई नाली।
**जौ** *पु०* एक प्रकार का अन्न; यव।
**जौतुक** *पु०* इन्द्रजाल का खेल या प्रदर्शन।
**जौन** *सर्व०* जो।
**जौबन** *पु०* यौवन उदा० 'धन-जन-जौबन पर मति गरजऽ'।
**जौहड़नी** *सक०* खेत में जहाँ-तहाँ उगी घासों को निकालना।
**जौहरी** *पु०* [फा०] रत्न को परखने या बेचने वाला।
**ज्ञ** 'ज्' और 'ञ' के संयोग से बना संयुक्त अक्षर। *वि०* [सं०] संज्ञा आदि के अन्त में लगकर जानने वाला ज्ञाता। *पु०* ज्ञानी, पण्डित, जीवात्मा।
**ज्ञात** *वि०* [सं०] जाना हुआ, विदित।
**ज्ञातव्य** *वि०* [सं०] जानने योग्य।
**ज्ञाता** *वि०* [सं०] जानने वाला।
**ज्ञान** *पु०* [सं०] बोध, जानना, प्रतीति। **-दाता** *पु०* गुरु। **-दात्री** *स्त्री०* सरस्वती।
**ज्ञानी** *वि०* [सं०] ज्ञानवान। *पु०* दैवज्ञ; ऋषि।
**ज्ञापक** *वि०* [सं०] सूचक।
**ज्यादा** *वि०* अधिक, महत्।
**ज्योतिषी** *वि० पु०* दैवज्ञ।
**ज्योनार** *स्त्री०* भोज, रसोई।
**ज्वर** *पु०* [सं०] बुखार, ताप।
**ज्वाला** *स्त्री०* [सं०] आग की लपट, ताप, दाह।

❑

# झ

**झ** देवनागरी वर्णमाला के चवर्ग का चौथा व्यंजन, उच्चारण स्थान तालु है।
**झँअआइल** *अक०* एकाएक बेहोश हो जाना।
**झँइन** *स्त्री०* झाड़ियों का समूह।
**झँउसल** *सक०* प्राणियों के रोंये को आग से जला देना।
**झँउसिआवल** *सक०* झाँसा देना।
**झँकल** *अक०* कुढ़ना, दुखड़ा रोना।
**झंकार** *स्त्री०* [सं०] झनझनाहट। उदा० 'पायल की झंकार रस्ते-रस्ते'।
**झंकारल** *सक०* झन-झन आवाज करना।
**झंकारी** *वि०* [सं०] गुंजन करने वाला।
**झँखन** *पु०* चिन्ता, पछतावा।
**झँखल** *अक०* पछताना, पश्चात्ताप करना, माथे पर हाथ रख कर चिन्ता करना।
**झंखाड़** *पु०* पुराना बड़ा पेड़; झाड़ियों का समूह।
**झंगा** *पु०* भोजन बनाने का बड़ा बर्तन।
**झंगुला** *पु०* ढीला कुरता।
**झंगुलिया** *स्त्री०* दे 'झंगुला'।
**झंझ** *पु०* झाँझ।
**झंझट** *पु०* बखेड़ा, उलझन, कठिनाई, परेशानी।
**झंझटी** *पु०* झगड़ालू, बखेड़िया।
**झंझन** *पु०* [सं०] झनकार।
**झंझनाइल** *सक०* झंकारना।
**झंझर** *पु०* झज्झर।
**झँझरा** *वि०* झीना।
**झँझरी** *स्त्री०* खिड़की, जाली। **-दार** *वि०* जालीदार।
**झंझा** *स्त्री०* [सं०] तेज हवा, अन्धड़, आँधी-पानी।
**झंझानिल** *पु०* [सं०] झंझावत।
**झंझार** *पु०* आग की लपट।
**झँझिया** *स्त्री०* खेत की मेड़ के निकट हल द्वारा जोती गई गहरी पंक्ति।
**झंझी** *स्त्री०* फूटी कौड़ी।
**झंझोड़ल** *सक०* पकड़कर झटके देना, झकझोरना।
**झँट उखाड़न** *वि०* फालतू, निकम्मा।
**झँडा** *पु०* पताका, ध्वज, निशान। *स्त्री०* झण्डी, छोटा पताका।
**झंडील** *वि०* विशालकाय, बहुत लम्बा; वृद्ध।
**झंडू** *वि०* बेकार, अनुपयुक्त।
**झँडूला** *वि०* बिना मुण्डन का बच्चा।
**झंप** *पु०* [सं०] छलाँग, कुदान।
**झँपकल** *अक०* झपकना।
**झँपना** *पु०* ढक्कन।
**झँपाइल** *वि०* ढँका हुआ।
**झंपाट** *वि०* अत्यधिक वृद्ध (बैल)।
**झँपोला-झाँपी** *स्त्री०* बाँस का बना ढक्कनदार पिटारा।
**झँरगा** दे० 'झारंग'।
**झँवाइल** *अक०* अधिक ताप से पिघल जाना (ईंट); सन्तप्त होना।
**झँसगाह** *वि०* वह खेत, जिसमें झारंग होता है।
**झउआ** *पु०* एक प्रकार का हल्का जलावन-योग्य पेड़, जो दियारा क्षेत्र में होता है।
**झउर** *पु०* झगड़ा, झंझट। *स्त्री०* झउरी-बेमतलब की चर्चा।
**झउरिआवल** *सक०* उलझाये रहना, झगड़ा लगाना।
**झकझक** *वि०* चमकता हुआ, स्वच्छ।

**झकझूमर** *पु०* स्त्रियों का एक प्रकार का खेल।

**झकझोरल** *सक०* झटका देना।

**झकाझक** *वि०* अत्यन्त उज्ज्वल।

**झकझकावल** *अक०* खूब साफ या चमकीले वस्त्र को पहनकर सुशोभित होना।

**झकड़ल** *अक०* हवा का जोर-जोर से चलना।

**झकास** *पु०* हवा के झोंके के साथ आने वाला वर्षा का पानी।

**झकोरल** *अक०* हवा का झोंका मारकर बहना।

**झक्कड़** *पु०* हवा का तेज झोंका, धूलभरी आँधी।

**झक्की** *वि०* जिद्दी, झोंक या आवेश में आकर के काम करने वाला, सनकी, बहुत बकबक करने वाला।

**झख** *पु०* पछतावा। **-मारल** मुहा० पछतावा करना।

**झखरल** *अक०* पेड़ से फलों का गिर कर समाप्त हो जाना।

**झखल** *अक०* पछताना।

**झखाड़** *वि०* सघन (वृक्ष)।

**झगड़ा** *पु०* [हिं०] कलह, विवाद।

**झगड़ालू** *वि०* विवादी, कलहप्रिय।

**झगरउँआ** *वि०* जिससे झगड़ा हो।

**झगरल** *अक०* वाद-विवाद करना, अप्रिय बातों का कहना-सुनना।

**झगरा** *पु०* वाक्‌युद्ध, झगड़ा।

**झग्गार** *पु०* कुँए में गिरे बर्तन को निकालने वाली कँटिया।

**झझकल** *अक०* उत्तेजित होकर बोल उठना, झुँझलाना।

**झट** *क्रि०वि०* [सं० झटिति] शीघ्र, तुरन्त।

**झट दे** *क्रि०वि०* तुरन्त।

**झटकल** *अक०* तेजी से चलना। सम्पति को ठग लेना।

**झटका** *पु०* आघात, धारदार हथियार से एकबारगी गला काट कर मारा गया या बलि चढ़ाया गया पशु।

**झटकारल** *सक०* सूप से अनाज को धूल एवं खर-पतवार से अलग करना।

**झटसिन** *अव्य०* तुरन्त, बगैर व्यवधान के शीघ्र।

**झटहरल** *सक०* झटहा से तोड़ना।

**झटहा** *पु०* लकड़ी का छोटा डण्डा, जिसे फेंककर फल तोड़ा जाता है, झटेहरा।

**झटाँस** *पु०* पानी की बूँदोंयुक्त हवा का झोंका।

**झड़** *स्त्री०* दे० 'झड़ी'।

**झड़झड़ावल** *सक०* झँझोड़ना।

**झड़प** *स्त्री०* कलह, क्रोध।

**झड़बेरी** *स्त्री०* भूबदरी (वृक्ष)।

**झड़ल** *अक०* [सं० क्षरणम्] झड़ना।

**झड़ी** *स्त्री०* दस्त की बीमारी; लगातार वर्षा।

**झड़ुआवल** *सक०* झाड़ू से मारना।

**झड़ेला** *पु०* सुन्दर सजीला नौजवान झरेला। उदा० 'देखनी झड़ेला सभ के गरदन में सिकड़ी'

**झड़ेलिया** *स्त्री०* प्रेमी को लुभाने वाली ग्राम्यबाला।

**झड़ोखा** *पु०* वातायन, झरोखा।

**झनक** *पु०* [अनु०] पशुओं के पैर की नस में तनाव पैदा करने वाला रोग; पायल की आवाज।

**झनकल** *सक०* क्रोध में बोलना, गुस्से में हाथ-पैर पटकना।

**झनकार** *स्त्री०* घुँघरू, बर्तन या आभूषण से निकली झनझन की ध्वनि।

**झन-झन** *पु०* पायल से निकली ध्वनि।
**झनझन-पटपट** *यौ०* आनाकानी, हिच-किचाहट।
**झनहन** *वि०* कड़ुआ, तीखा।
**झनाझन** *क्रि०वि०* झनझन ध्वनि से युक्त। *स्त्री०* झंकार, झनझन का शब्द।
**झन्ना** *वि०* खूब सूखा हुआ अनाज, जिससे झनझन की ध्वनि निकलती है।
**झपक** *पु०* नींद के कारण आँख का थोड़ी देर के लिए लग जाना।
**झप-झप** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक। लोको० 'तेल करे चप-चप, बउआ बढ़े झप- झप।'
**झपकी** *स्त्री०* थोड़ी देर के लिए सोना, निद्रा, ऊँघी।
**झपट** *पु०* झपटने का भाव।
**झपटल** *सक०* आक्रमण के लिए वेग से चलकर वार करना।
**झपटा** *पु०* स्पर्श से लगी हल्की चोट।
**झपटान** *स्त्री०* झपट।
**झपटावल** *सक०* झपटने की क्रिया कराना।
**झपट्टा** *पु०* झपटने की क्रिया। **-मार** *वि०* झपटनेवाला।
**झपताल** *पु०* शास्त्रीय संगीत का एक प्रकार का ताल जिसमें 10 मात्रायें होती हैं।।
**झपर-झपर** *क्रि० वि०* सुन्दर चमकीला परन्तु ढीला-ढाला वस्त्र पहन कर चलने की स्थिति।
**झपसल** *अक०* हवा के झोंकों के साथ वृष्टि होते रहना।
**झपसी** *स्त्री०* बीच-बीच में रुक-रुक कर होने वाली वर्षा।
**झपास** *पु०* बहला-फुसलाकर दूसरे की वस्तु को हथिया लेने वाला। *स्त्री०* झपासिन।
**झपेटा** दे० 'झपट'।
**झपेटल** *सक०* दबोचना।
**झपेटा** *पु०* धक्का।
**झपोल** *पु०* झँपोला।
**झप्पड़** *पु०* थप्पड़।
**झबरल** *अक०* फसल की बाली और फलदार वृक्षों में अत्यधिक दानों का लगना।
**झबरा** *पु०* लम्बे और घने बालों वाला कुत्ता।
**झबरी** *स्त्री०* सघन केश वाली कुत्ती।
**झबही** *स्त्री०* मेटा, घूँचा।
**झबारल-झमारल** *सक०* पानी में बार-बार पटक-पटक कर धोना।
**झबिआ** *स्त्री०* छोटा झब्बा।
**झब्बा** *पु०* गुच्छा, चाभियों का समूह।
**झब्बू** *स्त्री०* रंगीन तागे से बना स्त्रियों का एक आभरण।
**झमकल** *अक०* क्षुब्ध होकर किसी वस्तु को लेने से इन्कार या फेंक देना।
**झमकावल** *सक०* गहने-कपड़े को प्रदर्शित करते हुए चलना।
**झमझम** *पु०* [अनु०] गहनों के बजने से निकली ध्वनि, छमछम।
**झमड़ा** *स्त्री०* पसरने वाली लत्ती।
**झमर-झमर** *क्रि०वि०* वेग से होने वाली वर्षा। उदा० 'एक मुट्ठी सरसों, झमर-झमर बरसों' लोक०।
**झमर बाजा** *पु०* झाल लगा डफ।
**झमाझम** *क्रि०वि०* झमझम शब्द के साथ।
**झमाट** *पु०* झुरमुट।
**झमेल** *पु०* भीड़भाड़; झंझट, बखेड़ा।
**झमेला** *पु०* झंझट।
**झरंगा** *पु०* धान की फसल को हानि पहुँचाने वाली एक घास।

**झर** *पु०* मवेशियों के गर्भाशय की एक खोल, जिसमें बच्चा रहता है और पैदा होने के कुछ देर बाद वह स्वयं निकल जाता है; झरना, सोता।
**झरकटाह** *वि०* अप्रिय, बला।
**झरकटी** *स्त्री०* छोटी झाड़ी।
**झरक** *स्त्री०* झलक।
**झरझर** *स्त्री०* बरखा की झरी।
**झरकल** *अक०* धूप तथा पछुआ हवा से पौधों के मुरझा जाने की क्रिया।
**झरना** *पु०* पहाड़ से गिरने वाली पानी की धारा; अनाज चालने का उपकरण।
**झरनाठ** *पु०* खूब पका हुआ, सूखा काठ। भोजपुरी क्षेत्रों में वर (दुलहा) को चार वर्गों में विभक्त किया जाता है—(1) वर 25 वर्ष की आयु तक, (2) वरनाठ 30 वर्ष की आयु तक, (3) झरनाठ 35 वर्ष की आयु तक, (4) खोरनाठ 50 वर्ष की आयु तक।
**झरनी** *स्त्री० वि०* जिससे कुछ झड़े।
**झरप** *स्त्री०* झोंका, वेग।
**झरपत्ती** *स्त्री०* वह धान, जो पकने पर शीघ्र झरने लगता है।
**झरबरुआ** *पु०* वह जड़ी, जिसे सर्पदंश से बचने के लिए कलाई में बाँधते हैं।
**झरल** *अक०* वृक्ष से पुराने पत्तों का गिरना; सर से बालों का गिरना; बर्तन के छिद्र से अन्न का गिरना।
**झरवावल** *सक०* वृक्ष से अनावश्यक टहनियों को निकलवाना, अन्न के दानों को निकलवाना; मन्त्र से विष या रोग व्याधि दूर करवाना।
**झरेला** *पु०* प्रेमी। *उदा०* 'देखनीं झरेला लोग के, गरवे में सींकरी।'
**झरेलिया** *स्त्री०* प्रेमिका।
**झरोखा** *पु०* गवाक्ष।
**झलक** *पु०* चमक, झाँकी। उदा० 'ऐ अलख, खोल पलक, देख दुनिया की झलक।
**झलकल** *अक०* चमकना।
**झलका** *पु०* फफोला, छाला।
**झलकावल** *सक०* चमकाना।
**झलझल** *वि०* पारदर्शी, साफ।
**झलफलावल** *सक०* अधिक पानी में पसार-पसार कर धोना।
**झलर-पतर** *पु० यौ०* किसी पेड़ के लटके हुए सूखे पत्ते इत्यादि का बेकार अंश।
**झलरिया** *पु०* एक पौधा अपेक्षाकृत बड़ा होता है; ज्वार।
**झलप्फा** *वि०* काफी बूढ़ा (पशु)।
**झलबदरी** *स्त्री०* ऐसी बदली, जिसमें जहाँ-तहाँ बादल नजर आ रहा हो और उसके बरसने की आशंका हो।
**झलाबा** *वि०* अधिक लम्बा एवं ढीला कुरता।
**झलौंसी** *पु०* सरपत, झलास।
**झहरल** *अक०* हवा के चलने से झरझर ध्वनि का होना, क्रुद्ध होकर बोलना।
**झाँई** *स्त्री०* आँखों के सामने अँधेरा छा जाने की स्थिति; छाया, परछाईं। **-मारल** *अक०* बेहोश हो जाना।
**झाँकल** *अक०* खिड़की या दरवाजे की ओर से देखना; सिर उठाकर या पैर उचका कर देखना।
**झाँका** *पु०* जालीदार खाँचा, झरोखा।
**झाँकी** *स्त्री०* सजाई हुई मूर्तियों का दर्शन।
**झाँख** *पु०* अरहर आदि का डण्ठल।
**झाँखर** *वि०* झंखाड़, झाड़ियों का समूह।
**झांखी** *स्त्री०* पेड़ की शाखाएँ या टहनी।
**झाँझ** *स्त्री०* काँसे की दो तश्तरी जैसे टुकड़ों का बना मँजीरा, झाल।

**झाँझर** *वि०* छिद्रों वाला।
**झाँझरी** *स्त्री०* झाँझ।
**झाँझाँ** *पु०* सेव छानने का पौना।
**झाँझिया** *पु०* झाँझ बजाने वाला।
**झाँट** *स्त्री०* जननेन्द्रिय पर के बाल; तुच्छ वस्तु। **-उखड़ल** *मुहा०* बेकार का काम करना।
**झांझ** *पु०* एक प्रकार का पैर का आभूषण, जिसमें आवाज के लिए कंकड़ डाला गया होता है।
**झांटल** *अक०* पशुओं द्वारा सींग मारना।
**झांटी** *स्त्री०* धान के बालों की मूठ।
**झाँप** *पु०* पर्दा, ढक्कन।
**झांपी** *स्त्री०* बाँस की कमचियों की बनी ढक्कनदार पेटी; टोकरी, पिटारी, झपकी।
**झांव-झांव** *पु०* [अनु०] कुत्ते की बोली।
**झाँवर** *वि०* जो गर्मी से कुछ काला हो गया हो, साँवला, मलिन, मुरझाया।
**झाँवा** *पु०* अधिक गर्मी से पिघला ईंट का टुकड़ा, जो देह रगड़ने के काम आता है।
**झाँसल** *अक०* तीक्ष्ण गन्ध देना; झाँसा देना, बहकाना।
**झाँसा** *पु०* धोखा। **-पट्टी** *स्त्री०* धोखेबाजी।
**झाँसू** *वि०* झाँसा देने वाला।
**झा** *पु०* मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि। *अव्य०* खेल में छिपे हुए लड़कों द्वारा प्रकट होने पर बोलने वाला शब्द 'झा'।
**झाईं** *स्त्री०* झाई।
**झाउली** *स्त्री०* भुलावा, छलावा। *सक०* झउलिआवल, बातों से फुसलाना।
**झाक** *पु०* गन्ध; डाँट-डपट।
**झाकल** *अक०* थोड़ी-थोड़ी गन्ध देना; डालियों से फलों का तोड़ना।
**झाग** *पु०* गाज, फेन।
**झाझ** *पु०* झाँझ; जहाज।
**झाड़** *पु०* पौधा। **-खंड** *पु०* झारखण्ड (प्रान्त)। **-झंखाड़** *पु०* टूटी-फूटी वस्तुएँ। **-पोंछ** *स्त्री०* सफाई। **-फूँक** *स्त्री०* जंतर-मंतर। **-बुहार** *स्त्री०* सफाई।
**झाड़ा** *पु०* शौच, पैखाना।
**झाड़ी** *स्त्री०* पानी पीने का पात्र, छोटे-छोटे पौधों का समूह। *उदा०* 'सोने का झाड़ी गंगाजल पानी', *लोक०*।
**झाड़ू** *पु०* बुहरनी, बढ़नी।
**झापड़** *पु०* तमाचा, थप्पड़।
**झापस** *पु०* हवा के झोंके के साथ लगातार अधिक समय तक वर्षा होने की स्थिति।
**झाबल** *सक०* अपनी बात के प्रभाव से किसी का मुँह बन्द कर देना।
**झाम** *पु०* फावड़ा, कुदाल।
**झामर** *पु०* एक गहना।
**झामी** *वि०* धोखेबाज।
**झायँ-झायँ** *स्त्री०* 'खन-खन की आवाज'।
**झारंग** *पु०* खेत में झड़े हुए धान से उगा पौधा।
**झार** *स्त्री०* झाल; बच्चा देने के बाद मवेशी के पेट से निकला पदार्थ।
**झारन** *पु०* झाड़ में मिला अनाज, लमेरा।
**झारल** *सक०* झाड़ना, झाड़ू देना, झाड़कर अनाज निकालना।
**झारा** *स्त्री०* पानी रखने का बर्तन; समूह।
**झारे झार** *क्रि०वि०* प्रत्येक में।
**झाल** *पु०* एक प्रकार का वाद्य-यंत्र, जो मजीरे से थोड़ा बड़ा होता है, झाँझ।
**झालर** *स्त्री०* लटकने वाला किनारा; एक अगहनी धान; तलहथी में पहना जाने वाला आभूषण।
**झाला** *पु०* मकड़े की जाली; तम्बाकू का तना, सूखे पत्ते और डण्ठल; कान का आभूषण।

**झाली** *स्त्री०* एक प्रकार का ग्रष्मकालीन धान।
**झाँव-झाँव** *स्त्री०* तकरार।
**झिंगुनी** *स्त्री०* लता में फल देने वाली एक प्रकार की सब्जी।
**झिंझिला** *स्त्री०* बहुत से छिद्र वाले घड़े में दीप जलाकर दस दिनों तक खेला जाने वाला बालिकाओं का खेल।
**झिंझिरी** *स्त्री०* नदी में नाव नचाने का खेल।
**झिंसी** *स्त्री०* फुहारे की तरह होने वाली वर्षा।
**झिकटा** *पु०* ईंट-पत्थर का छोटा टुकड़ा।
**झिटकिली** *स्त्री०* खिड़की को बन्द करने के लिए लगाया गया उपकरण, सिटकिनी; चटकनी।
**झिट्टी** *स्त्री०* पाँव में पाँव से हल्की चोट करना, जिसमें दौड़ता हुआ व्यक्ति एक बारगी गिर जाए; चाबुक, कोड़ा।
**झिनझिनी** *स्त्री०* एक ही दशा में रहने या किसी कारण-विशेष से किसी अंग में रक्त-संचार रुकने से उत्पन्न सनसनी।
**झिनवा** *पु०* एक प्रकार का बारीक धान।
**झिमकी** *स्त्री०* छोटी-छोटी बूँदों वाली चुनरी; ओढ़नी।
**झिरकुट** *वि०* जीर्ण-शीर्ण, चिरकुट।
**झिरुआ** *पु०* धान के खेत में होने वाली एक प्रकार की घास।
**झिलमिल** *स्त्री०* हिलता और घटता-बढ़ता प्रतीत होने वाला प्रकाश; प्रकम्पमान प्रकाश।
**झिलमिला** *वि०* झीना, जिससे झिल-मिलाती रोशनी निकले।
**झिलमिलाइल** *अक०* रोशनी का हिलना।
**झिलमिलाहट** *स्त्री०* झिलमिलाने की क्रिया।
**झिलिआइल** *अक०* आटे या चावल में एक प्रकार की फफूँदी का लगना।
**झिलिम** *पु०* एक प्रकार का धनुषाकार बाजा।
**झिल्ली** *स्त्री०* शरीर के भीतर की खाल, जो अत्यन्त पतली होती है; एक कीड़ा, झींगुर।
**झिसहिरी-झिसकी** *स्त्री०* अत्यन्त छोटी-छोटी बूँदों की वर्षा।
**झिसौरी** *स्त्री०* घिसी-फूटी।
**झिहिर** *वि०* धीरे-धीरे (हवा)। पतली (बूँद)।
**झिहिरावल** *सक०* धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा गिराना। *उदा०* 'लावा झिहिरावे अइलन दुल्हा रघुरइया हे। मुठिये मुठिये लावा देलन सीताजी के भइया हे।' विवाहगीत।
**झींक** *पु०* चक्की में पीसने के लिए एक बार में डाला जाने वाला अनाज।
**झींका झोरी** *स्त्री०* खींचा-तानी।
**झींगा** *पु०* काँटायुक्त मछली।
**झींसी** *स्त्री०* फुहारा के समान वर्षा।
**झुँगना** *पु०* जुगनू।
**झुँसना** *पु०* एक खिलौना।
**झुँझलाइल** *अक०* खीझना, चिढ़ना।
**झुंड** *पु०* समूह।
**झुकल** *अक०* टेढ़ा होना; झुकना।
**झुकावल** *सक०* लटकाना।
**झुटपुटा** *पु०* सबेरे या शाम की मद्धिम रोशनी।
**झुटुंग** *वि०* झोंटा वाला, जटाधारी।
**झुनझुना** *पु०* बच्चों का खिलौना, जो भन्न-भन्न की आवाज करता है।
**झुलनी** *स्त्री०* नाक का एक गहना।
**झुलावल** *सक०* झुलाना।

**झुलुहा** *पु०* झूला, वह स्थान, जिस पर बैठकर झूला जाता हो।
**झूठ** *वि०* असत्य, मिथ्या। **-मूठ** *अ०* यों ही, अकारण। **-सच** *पु०* झूठ सच की खिचड़ी।
**झूठों** *अव्य०* झूठ-मूठ।
**झूम** *स्त्री०* ऊँघ; झूमने की क्रिया।
**झूमका** *पु०* कान का गहना।
**झूमर** *पु०* नाच के साथ गाया जाने वाला गीत।
**झूमल** *अक०* झोंके खाना।
**झूरल** *अक०* सूखना।
**झूल** *स्त्री०* ढीला-ढाला भद्दा पहनावा।
**झूला** *पु०* आस्तीनरहित कुर्ता, जिसे बूढ़ी स्त्रियाँ पहनती हों।
**झेंपू** *वि०* झेपू।
**झेलल** *सक०* सहना।
**झोंक** *स्त्री०* वेग, झोंका।
**झोंकवा** *पु०* भाड़े पर झोंकने का काम करने वाला।
**झोंकवावल** *सक०* झोंकने का काम कराना।
**झोंका** *पु०* तेज हवा का धक्का।
**झोंकारल** *सक०* झुलस देना।
**झोंझ** *पु०* पक्षियों का घोसला; समूह।
**झोंटा** *पु०* सिर के सूखे-बिखरे बाल।
**झोंप** *पु०* समूह, झुण्ड, समुदाय।
**झोर** *पु०* शोरबा।
**झोरी** *स्त्री०* झोला।
**झोल** *पु०* रसा, कढ़ी, मकड़ी का जाला।
**झोला** *पु०* थैला, खोली।
**झौर** *पु०* झगड़ा।
**झौरे** *अ०* पास, निकट।
**झौवा** *पु०* खँचिया।

❑

# ट

**ट** देवनागरी वर्णमाला के टवर्ग का पहला व्यंजन, जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
**टँउनी** *स्त्री०* एक प्रकार का अन्न, कउनी, कँगुनी, टाँगुन।
**टंक** *पु०* [सं०] पत्थर गढ़ने की छेनी; चार माशे की तौल; एक राग। **-टीक** *पु०* शिव। **-शाला** *स्त्री०* टंककशाला।
**टंकक** *पु०* [सं०] चाँदी का सिक्का।
**टंकन** *पु०* [सं०] सोहागा, टाँकी देने का कार्य।
**टँकल** *अक०* [सं० टंकणं] टाँका जाना, सिलना।
**टँकवावल** *सक०* टँकवाना।
**टँकाई** *स्त्री०* लिख लेने का काम; बटन को कपड़े पर लगाने का काम।
**टंकी** *स्त्री०* तेल या पानी को जमा करने का हौज।
**टँकोरी** *स्त्री०* सोना-चाँदी तौलने की तरजुई।
**टंग** *पु०* कुदाल, फरसा; जंघा।
**टंगड़ी** *स्त्री०* टाँग, पैर।
**टँगनी** *स्त्री०* अलगनी।
**टंगरी** *स्त्री०* दे० 'टंगड़ी'।
**टंगवाह** *पु०* लकड़हारा।
**टँगाइल** *वि०* लटका हुआ।
**टँगारी** *स्त्री०* कुल्हाड़ी।
**टँगिया** *स्त्री०* छोटी कुल्हाड़ी।
**टंगिवाह** *पु०* टांगी, फावड़ा चलाकर रोजी रोटी कमाने वाला।
**टंच** *वि०* [सं० चण्ड:] कृपण, कंजूस; कठोर ह्दय, ह्ष्ट-पुष्ट, निष्ठुर, दुरुस्त, ठीक; भरपूर। *उदा०* 'लंच अब टंच भइल काम ना सँपरी'।
**टंट-घंट** *पु०* कार्यारम्भ के लिए उपकरण जुटाना; झूठा प्रपंच, बखेड़ा, तामझाम।
**टंटा** *पु०* लड़ाई-झगड़ा, फसाद, कलह।
**टँठाइल** *वि०* सबल।
**टंडइल** *पु०* मजदूरों का जमादार; नापी में जरीब खींचने वाला।
**टंडइली** *अक०* बेमतलब का रौबपूर्वक घूमना।
**टँड़िया** *स्त्री०* बाँह में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
**ट** *पु०* [सं०] टंकार जैसा शब्द।
**टइ** *स्त्री०* काम; ताक।
**टइरी** *स्त्री०* एक वृक्ष का बीज, जिसे आग में रखने पर फट जाता है और जोर की आवाज होती है।
**टक** *स्त्री०* देर तक लगी हुई दृष्टि।
**टकउरी** *स्त्री०* तौलने का छोटा दराजू।
**टकटकी** *स्त्री०* लगातार देखने रहने की स्थिति।
**टकटेना** *पु०* बेमतलब का झगड़ा; ठकठेन। *उदा०* 'झउरी बीने दउरी, पतोहिया बीने बेना। कतही से आवे झउरी लगावे टकटेना।'
**टकटोरल** *सक०* टटोलना, खोजना।
**टकराइल** *अक०* धक्का लगना; किसी से भिड़न्त होना या टकराना।
**टकसल** *अक०* खिसकना, चल देना।
**टकसार** *पु०* वह स्थान, जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं।
**टकसाल** *पु०* [सं० टंकशाला] दे० टकसार।
**टकसाव** *अक०* टकसाना *कहा०* 'टकसावऽन हिलावऽ बइठले खिआव'।
**टकहा** *पु०* पुराने सिक्कों का एक प्रकार, जिसका मूल्य दो पैसे के बराबर था।

**टका** *पु०* [सं० टङ्कः] चाँदी का सिक्का, रुपया, अधन्नी। *कहा०* 'टका के चटाई नौटका बिदाई'। **-भर** *मुहा०* जरा सा। **-सा जवाब देहल** *मुहा०* साफ इन्कार करना। **-सा मुँह लेके रह गइल** *मुहा०* लजा जाना।

**टकाही** *वि०* एक-एक टके पर अपना सतीत्व बेचने वाली।

**टकुआ** *पु०* सूत कातने और लपेटने के काम आने वाला सुआ, तकला।

**टकैत** *वि०* टकेवाला।

**टकोर** *स्त्री०* टंकोर।

**टकोरा** *पु०* डंके की चोट।

**टकौरी** *स्त्री०* छोटा तराजू।

**टक्कर** *पु०* भिड़न्त, ठोकर।

**टखना** *पु०* एड़ी के ऊपर हड्डी की गाँठ।

**टगल** *अक०* खिसकना, हटना।

**टघरल** *अक०* पिघलना।

**टच-टच** *अ०* धाँय-धाँय करते हुए जलना।

**टचनी** *स्त्री०* बर्तनों पर नक्काशी करने वाला औजार।

**टटइनी** *स्त्री०* एक प्रकार का दर्द।

**टटऊ** *वि०* खर-पतवार का घर।

**टटका** *वि०* ताजा (खाना)।

**टटमेर** *स्त्री०* भीड़।

**टटाइल** *पु०* सूखकर कड़ा हो जाना; दर्द का होना।

**टट्टी** *स्त्री०* बाँस एवं कण्डे की बनी टाटी, पल्ला; पाखाना।

**टट्टू** *पु०* [अनु०] छोटा घोड़ा।

**टड़ल** *अक०* हट जाना, भाग जाना।

**टन** *स्त्री०* [अनु०] धातु-खण्ड पर आघात करने से उत्पन्न ध्वनि, झनकार। *पु०* [अं०] लगभग 28 मन का अंग्रेजी परिमाण।

**टनक** *स्त्री०* पशुओं के पैर की एक बीमारी, झनका; टाँड़ा; तेज आवाज।

**टनकल** *अक०* गर्मी के कारण सरदर्द; टनटन बजना।

**टनकबाई** *स्त्री०* एक पशुरोग, जिसके चलते वे लँगड़े हो जाते हैं।

**टनकी** *स्त्री०* जलाशयों के ऊपर-ऊपर उड़कर एवं मछली पकड़ कर खाने वाली चिड़िया।

**टनटन** *स्त्री०* [अनु०] घण्टा बजने का शब्द।

**टनटनाइल** *अक०* घण्टा बजना, टनटन शब्द निकलना; पुरुष जननेन्द्रिय का खड़ा होना।

**टनमना** *वि०* स्वस्थ, निरोग, चंगा।

**टनमनाइल** *अक०* स्वस्थ होना।

**टना** *पु०* भग; भग का एक भाग।

**टनका** *वि०* तेज (धूप)।

**टनाटन** *स्त्री०* निरन्तर घण्टा बजने का शब्द।

**टप** *पु०* पानी रखने का नाद, बड़ा पात्र, टब। **-से** *क्रि०वि०* झट से।

**टपक** *स्त्री०* बूँदों के गिरने का शब्द, टपकने की क्रिया; रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा।

**टपकन** *स्त्री०* टीस, रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा।

**टपकल** *अक०* वृक्ष से पके फलों का गिरना, चू जाना।

**टपटप** *पु०* बूँदों के गिरने का शब्द; बार-बार एवं लगातार घोड़े के पैर रखने की क्रिया।

**टपदे** *क्रि०वि०* तुरन्त, झटपट।

**टपरा** *पु०* छोटी वस्तु; भूखण्ड; गरीब, भिखमंगा; घास-फूस से छाया छोटा घर।

**टपल** *अक०* कूदना, फाँदना।

**टपहरल** *सक०* बिना खाए पीए रहना; व्यर्थ किसी के आसरे पर बैठना।
**टपाटप** *क्रि०वि०* शीघ्रता से, झटपट; एक-एक करके। *पु०* बराबर टप-टप के साथ गिरने का भाव।
**टप्पन** *पु०* एक प्रकार का लोकगीत; भूमिखण्ड।
**टप्पा** *पु०* उछलती हुई वस्तु का बीच-बीच में पृथ्वी छूना; फलांग; भद्दी सिलाई; क्षेत्र। *उदा०* 'अइसन भोजपुर टप्पा हमार'। **-मारल** *मुहा०* भद्दी सिलाई।
**टप्पू-टपरा** *पु०* भू-खण्ड।
**टब** *पु०* [अं०] कण्डाल।
**टभकल** *अक०* घाव में ठहर-ठहर कर दर्द होना।
**टमटम** *स्त्री०* [अं० टैंडम] दो पहियों की घोड़ा गाड़ी, ताँगा।
**टमाटर** *पु०* [अं० टोमैटो] टमाटर।
**टयरिया आम** *पु०* आम का एक प्रकार।
**टरंक** *पु०* [अं० ट्रंक] लोहे का बक्सा।
**टरकावल** *सक०* टरकाना।
**टरटराइल** *अक०* अण्ड-बण्ड बकना।
**टरल** *अक०* हट जाना, बहाना बनाकर चल देना। *उदा०* 'खाके पर जाये के, मार के टर जायेके'।
**टरेन** *स्त्री०* [अं० ट्रेन] रेलगाड़ी।
**टर्र** *पु०* [अनु०] मेंढक के बोलने की आवाज।
**टल** *पु०* [सं०] घबड़ाहट, विह्वलता।
**टलमल** *वि०* हिलता हुआ।
**टलल** *अक०* [सं० टलनं] विचलित होना; खिसकना।
**टलहा** *वि०* खोटा सिक्का।
**टलिआवल** *सक०* ढेर लगाना।
**टलाटली** *स्त्री०* बहानेबाजी।
**टस** *स्त्री०* भारी वस्तु के हटने की आवाज। **-से मस ना भइल** *मुहा०* थोड़ा भी नहीं हिलना।
**टसक** *स्त्री०* रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा।
**टसमस** *पु०* जगह से हटने की स्थिति या भाव।
**टसकल** *अक०* खिसकना; दर्द होना।
**टसकावल** *सक०* खिसकाना।
**टसर** *पु०* [सं० त्रसर:] कड़ा और मोटा रेशम।
**टहक** *स्त्री०* कसक, टीस।
**टहकार** *वि०* चमकदार, गाढ़े रंग का चमकीला, चमाचम।
**टहटह** *वि०* चमाचम, चकाचक।
**टहल** *स्त्री०* सेवा, चाकरी।
**टहलल** *सक०* धीरे-धीरे चलना, स्वास्थ्य के लिए घूमना।
**टहलनी** *स्त्री०* नौकरानी, दासी।
**टहलावल** *सक०* सैर कराना, हवा खिलाना।
**टहलुआ** *पु०* सेवक।
**टहलुई** *स्त्री०* दे० 'टहलनी'।
**टहलू** *पु०* चाकर, खिदमत करने वाला।
**टहोका** *पु०* हाथ या पैर से दिया जाने वाला धक्का।
**टाँक** *पु०* [सं०] एक प्रकार की शराब।
**टाक** *पु०* ताड़ी रखने का बड़ा पात्र; पत्थर गढ़ने का औजार; चार मासे की तौल।
**टाँकल** *अक०* लिख लेना; सिल देना, टाँक देना।
**टाँका** *पु०* धातु जोड़ने का मसाला; सिलाई, सियन, कटे स्थान पर की गई सिलाई।
**टाँकी** *स्त्री०* एक प्रकार की यौन व्याधि, उपदंश।
**टाँग** *स्त्री०* पैर। **-अड़ावल** *मुहा०* हस्तक्षेप करना। **-उठावल** *मुहा०* जल्दी से चलना, प्रसंग करना। **-पर टाँग**

चढ़ावल *मुहा०* पत्नी के साथ निश्चिन्त हो कर मौज करना। **-पसार के सूतल** *मुहा०* बेखटके सोना।

**टाँगन** *पु०* छोटे कद का घोड़ा।

**टांगल** *सक०* टाँगना।

**टांगा** *पु०* ताँगा, टमटम, घोड़ागाड़ी; कुल्हाड़ी।

**टांगी** *स्त्री०* कुल्हाड़ी।

**टाँगुन** *स्त्री०* छोटे दाने वाला अनाज।

**टांघन** *पु०* कम ऊँचाई का घोड़ा, जिसकी पूँछ लम्बी और घनी होती है।

**टांट** *वि०* कड़ा, कठोर, टाँठ।

**टाँठ** *वि०* कड़ा, बलवान।

**टाँठा** *वि०* दे० 'टाँठ'।

**टाँड़** *स्त्री०* ऊँची भूमि, जहाँ किसी पक्षी या जन्तु की अधिकता हो; पाटन जिस पर सामान रखते हैं, परछत्ती; ढाँचा।

**टाँड़ल** *अक०* किसी जगह पर बैठ कर या कोई सामान रखकर उसे फँसाकर रखना।

**टाँड़ी** *स्त्री०* हल में लगा एक उपकरण, जिसमें हलवाहा बीज डालकर खेत में बोआई करता है; गेहूँ और ईख की जड़ में लगने वाला एक हरा कीड़ा, टरसुई।

**टाँय-टाँय** *स्त्री०* निरर्थक बात; कौवे की बोली। **-फिस** *मुहा०* व्यर्थ प्रयास।

**टाँरल** दे० 'टाँड़ल'।

**टाँस** *स्त्री०* नसों की सिकुड़न।

**टाँसल** *सक०* घी को खाने से पहले आग पर गर्म कर तरल रूप में बदल देना; किसी धातु के बर्तन में छिद्र को मसाला लगाकर मरम्मत करना।

**टाइटिल** *स्त्री०* [अं०] उपाधि, शीर्षक।

**टाइप** *पु०* [अं०] मुद्रण हेतु ढला अक्षर।

**टाइपिस्ट** *पु०* [अं०] टाइप करने वाला।

**टाइम** *पु०* [अं०] काल, समय।

**टाई** *स्त्री०* [अं०] गले से लटकाई पट्टी।

**टाउन** *पु०* [अं०] कस्बा।

**टाकू** *पु०* टकला, टकुआ।

**टाट** *पु०* खर पतवार की दीवाल; सन या जूट का बना मोटा कपड़ा।

**टाटी** *स्त्री०* घास-फूस की दीवार।

**टान** *स्त्री०* कमी; तनाव, खिंचाव।

**टानल** *सक०* खींचना, उठाना; फुसलाकर या धोखा देकर पैसे झटक लेना।

**टानाटानी** *स्त्री०* खींचातानी।

**टाप** *पु०* घोड़े के पैर के भाग से चलते समय निकली आवाज।

**टापड़** *पु०* ऊसर मैदान।

**टापल** *अक०* टपना, ताकते रह जाना।

**टापल** *सक०* लाँघना, कूद जाना।

**टापा** *पु०* मैदान; उछाल।

**टापू** *पु०* द्वीप।

**टाबर** *पु०* लड़का।

**टामन** *पु०* टोना।

**टायर** *पु०* रबर का पहिया।

**टारल** *सक०* हटाना, किसी वस्तु को उसकी जगह से हटाना; टालमटोल करना।

**टाल** *पु०* [सं० अट्टाल:] ढेर; अटाला; गाँज; लकड़ी, भूसे आदि की दुकान।

**टालल** *सक०* नियत समय में आगे हटाना; किसी कार्य को पूरा करने की झूठी आशा देना।

**टालमटोल** *पु०* बहाना बनाकर काम नहीं करने का भाव।

**टाली** *स्त्री०* रेलवे लाइन पर चलने वाली ठेलागाड़ी; पशुओं के गले में बाँधने की घंटी।

**टाल्ही** *स्त्री०* ऊँची जमीन।

**टाही** *स्त्री०* घात लगाकर बैठने का भाव; नजर रखने की स्थिति।

**टिकट** *पु०* [अं०] भाड़े का प्रमाणपत्र; चुनाव में पार्टी द्वारा अधिकृत प्रत्याशी।
**टिक-टिक** *स्त्री०* घड़ी की ध्वनि।
**टिकटी** *स्त्री०* शव को ले जाने, ढोने की रन्थी।
**टिकड़ा** *पु०* छोटी रोटी; टिक्कड़।
**टिकड़ी** *स्त्री०* छोटा टिकड़ा।
**टिकना** *पु०* जाल में ऊपर बँधी रस्सी।
**टिकरी** *स्त्री०* एक छोटी-मोटी लिट्टी या बाटी; एक प्रकार की मिठाई।
**टिकल** *अक०* कहीं रह जाना, डेरा देना; मादा मवेशियों का गर्भधारण करना; संघर्ष में घात-प्रतिघात सहकर संघर्ष करते रहना; ललाट में पुरुषों को चन्दन और स्त्रियों को सिन्दूर लगाना।
**टिकस** *पु०* [अं०] कर; महसूल; टिकट।
**टिकाऊ** *वि०* ठहरने वाला; तुरन्त नहीं फटने वाला वस्त्र या वस्तु।
**टिकान** *पु०* ठहरने का स्थान, पड़ाव।
**टिकासन** *पु०* निरर्थक बैठने का स्थान; पैर से शिखा तक की ऊँचाई।
**टिकिया** *स्त्री०* [सं० वाटिका] बट्टी; दवा की गोली।
**टिकुराई** *स्त्री०* लोहे का बना वह उपकरण, जिससे छेद किया जाता है।
**टिकुरी** *स्त्री०* तकली।
**टिकुल** *पु०* एक प्रकार का जंगली पेड़।
**टिकुला** *पु०* बड़ी चमकदार बिन्दी।
**टिकुली** *स्त्री०* छोटी बिन्दी। *कहा०* 'टिकुली सेनुर जरल तऽ पेटो बजर परल।'
**टिकुलीदार** *पु०* सिन्दूर-टिकुली बेचने वाली जाति।
**टिकुलीहारिन** *स्त्री०* दे० 'टिकुलीदार'।
**टिकोढ़ा** *पु०* आम का कच्चा छोटा फल, टिकोरा। *उदा०* 'ऐ बसंत! तूँ संत बन, सनक जनि देख टिकोढ़ा के'।
**टिक्कड़** *पु०* छोटी परन्तु मोटी रोटी, बाटी, लिट्टी।
**टिटकारल** *सक०* आगे की ओर बढ़ने हेतु मवेशियों को प्रेरित करने के लिए मुँह से आवाज निकालना।
**टिटकारी** *स्त्री०* व्यंग्यात्मक कथन।
**टिटहिरी** *स्त्री०* एक चिड़िया, जो पैरों को ऊपर की ओर करके सोती है; दुबले-पतले का बोधक शब्द। *उदा०* 'टिटहिरी के टेकले बादर थम्ही?'
**टिड्डा** *पु०* [सं० टिट्टिभः] एक परदार कीड़ा।
**टिड्डी** *स्त्री०* परदार लाल कीड़ा, जो फसल को हानि पहुँचाता है।
**टिढ़बेंगा** *वि०* बेडौल।
**टिन** *पु०* दे० 'टीन'।
**टिन्नाइल** *अक०* क्रुद्ध होना; शिश्न का उत्तेजित होना।
**टिप** *स्त्री०* उपहार; अंकन।
**टिपका** *पु०* बूँद।
**टिपकारी** *स्त्री०* ईंटों के जोड़ को बन्द करना।
**टिपटिपाइल** *अक०* धीरे-धीरे बूँदें पड़ना।
**टिपल** *अक०* हथियाना, अनधिकृत रूप से किसी वस्तु को ले लेना या चुरा लेना।
**टिपवावल** *सक०* दबवावल; लिखवाना।
**टिपुर** *पु०* ढोंग; घमण्ड।
**टिप्पन** *पु०* जन्मकुण्डली।
**टिप्पस** *स्त्री०* उपाय, ढंग।
**टिप्पी** *स्त्री०* अँगूठे आदि का बना निशान।
**टिभुका** *पु०* आँसू।
**टिभोली** *स्त्री०* मजाक।
**टिमकी** *स्त्री०* छोटा ढोल।
**टिमाक** *पु०* शृंगार, बनावट, ठसक, दिखावा।
**टिमुक** *पु०* टीला, जो कम ऊँचा हो।

**टिरकावल** *सक०* धोखा देना, हटा देना; टरका देना।
**टिसहपन** *पु०* द्वेष, बैर। *वि०* टिसाह।
**टिसुना** *स्त्री०* तृष्णा; लालच।
**टिहिरिका** *पु०* देखा-देखी काम करने की प्रवृत्ति।
**टिहुकल** *अक०* रुष्ट होना।
**टिहुकावल** *सक०* व्यंग्यवाण से रुष्ट करना।
**टिहुकी** *स्त्री०* क्रोधित करने के लिए किया गया इशारा या बोला गया वचन।
**टींगा** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग।
**टींट** *स्त्री०* भगांकुर।
**टी** *स्त्री०* [अं०] चाय। **-गार्डन** *पु०* चाय बगान। **-पाटी** *स्त्री०* चाय की दावत।
**टीआ** *पु०* बारात ठहराने के लिए निश्चित किया गया स्थान।
**टीक** *पु०* शिखा, चोटी, चुरकी; गले या सिर का गहना।
**टीकड़** *पु०* काले पशु के माथे पर सफेद दाग।
**टीकन** *पु०* थूनी, चाँड़।
**टीकल** दे० 'टिकल'।
**टीका** *स्त्री०* चन्दन तिलक; स्त्रियों के माथे का एक आभूषण; व्याख्या ग्रन्थों का अर्थ देने की क्रिया।
**टीका-बांसा** *पु०* एक प्रकार का देशी खेल।
**टीट** *स्त्री०* दे० 'टींट'।
**टीडी-टीड़ी** *स्त्री०* फसल नष्ट करने वाला एक प्रकार का फतिंगा।
**टीन** *पु०* [अं० टिन] एक प्रकार की धातु; राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर।
**टीप** *स्त्री०* अँगूठे का निशान; तेल डालने के लिए प्रयुक्त उपकरण, कुप्पी।
**टीपन** *स्त्री०* जन्मपत्री।
**टीपल** *सक०* निशाना लगाना।
**टीपोर** *पु०* दिखावा, आडम्बर।
**टीभुक** *पु०* बैल का कूबड़।
**टीम** *स्त्री०* [अं०] खिलाड़ियों का दल।
**टीम-टाम** *स्त्री०* आडम्बर, शृंगार, सजावट, तड़क-भड़क। *कहा०* 'टीम-टाम एतना जलपातर नदारथ'।
**टील्हा** *पु०* ऊँची भूमि, टीला; बन्द पड़ा खण्डहर।
**टीव** *पु०* अनुमान।
**टीस** *स्त्री०* पीड़ा, दर्द, ठहर-ठहर कर होने वाला दर्द।
**टीसल** *अक०* दर्द होना।
**टीसन** *पु०* [अं० स्टेशन] ट्रेन या बस के ठहरने का स्थान।
**टुंइया** *स्त्री०* टोंटी लगी लुटिया।
**टुंग** *पु०* पहाड़ की ऊँची गोल चोटी।
**टुंगल** *सक०* छोटे पौधों को ऊपर से थोड़ा काटकर खाना।
**टुंच** *वि०* कमीना।
**टुंटा** *वि०* लूला।
**टुअरघर** *पु०* अनाथालय।
**टुक** *वि०* थोड़ा।
**टुकड़** *पु०* छोटा खण्ड।
**टुकड़ा** *पु०* दे० 'टुकड़'।
**टुकड़ी** *स्त्री०* छोटा टुकड़ा।
**टुकदम** *अव्य०* कभी-कभी, धीरे-धीरे।
**टुका** *पु०* टुकड़ा, खण्ड।
**टुकुर-टुकुर** *पु०* चुपचाप ताकते रहने की क्रिया।
**टुघुड़ावल** *सक०* भूँजा जैसी खाने की चीजों को धीरे-धीरे खाना।
**टुटपुँजिया** *वि०* [हिं० टूटी + पूँजी] थोड़ी पूँजी वाला (व्यक्ति)।
**टुटहन** *पु०* बहुत टूटने वाला।

**टुटहा** *वि०* टूटा हुआ।
**टुनकाह** *वि०* हल्की चोट पर भी फूट जाने वाला; जल्दी रंज हो जाने वाला।
**टुनकी** *स्त्री०* माथे पर बाल झड़ने का रोग; एक परदार कीड़ा, जो धान की फसल को हानि पहुँचाता है।
**टुनटुनी** *स्त्री०* घण्टी।
**टुनुक** *वि०* हलकी चोट पर फूटने वाला या टूटने वाला (शीशा)।
**टुनुकल** *सक०* दो व्यक्तियों की बातचीत के बीच में कुछ बोल पड़ना।
**टुम** *स्त्री०* गहना, आभूषण; कम से कम शब्दों में किसी बात को कहने की स्थिति।
**टूँगल** दे० 'टुंगल'।
**टूँड़ा** *पु०* जौ, गेहूँ, धान आदि अनाजों में निकला हुआ पतला नुकीला भाग; टूँड़।
**टूँड़ी** *स्त्री०* बाल का टुकड़ा; किसी पदार्थ की नोक जो दूर तक निकली हो; छोटा टूँड़; नाभि।
**टूअर** *वि०* पितृहीन बच्चा।
**टूका-टुकड़ा** *पु०* टूटने का भाव, छोटा हिस्सा।
**टूटल** *वि०* खण्डित, टुकड़ा-टुकड़ा, टूटा हुआ। *कहा०* 'टूटलो तेली तऽ नव अधेली'।
**टूटा** *वि०* खण्डित। **-फूटा** *वि०* जीर्ण-शीर्ण।
**टूटी** *स्त्री०* घाटा, नुकसान।
**टूम** *स्त्री०* गहना। **-टाम** *स्त्री०* साज-शृंगार।
**टूरनामेंट** *पु०* [अं०] खेल की प्रतियोगिता।
**टूस** *पु०* एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।
**टूसल** *सक०* काटना, डंक मारना।
**टूसा** *पु०* अंकुर, नई कोंपल।
**टुसिआइल** *अक०* किसलय निकलना।
**टूस्स** *पु०* खटमल आदि छोटे-छोटे कीड़ों द्वारा काटने की क्रिया।
**टें** *स्त्री०* तोते की बोली। **-टें** *स्त्री०* बकवाद। **-बोलल** *मुहा०* चटपट मर जाना।
**टेंगना** *स्त्री०* एक मछली।
**टेंगरा** *स्त्री०* दे० 'टेंगना'।
**टेंगाड़ी** *स्त्री०* कुल्हाड़ी।
**टेंट** *स्त्री०* कमर पर लपेटी हुई धोती की ऐंठन; मुर्री। *कहा०* 'टेंट में छदाम ना पतुरिए नचाइब'।
**टेंटिहई** *स्त्री०* झगड़ा करने की प्रवृत्ति।
**टेंटिहा** *वि०* बिना मतलब किसी से भी झगड़ा करते रहने वाला। *कहा०* 'टेंटिहा से सभे डराला'।
**टेंटी** *स्त्री०* बेईमानी।
**टेंढ़** *पु०* वक्रता, टेढ़ापन, ऐंठन। *कहा०* 'टेढ़ जानि संका सब काहू'।
**टेंप-टेंप** *स्त्री०* [अनु०] सुग्गे की बोली।
**टेउरल** *अक०* भूख से अति ग्रसित होना; नशा या विष से गिरकर मर जाना।
**टेक** *स्त्री०* प्रतिज्ञा, प्रण; गीत का प्रथम पद जो बार-बार दुहराया जाता है।
**टेकठी** *स्त्री०* एक साथ बँधे या जोड़े गए काठ के तीन टुकड़े।
**टेकल** *सक०* सहारा देकर रोके रहना, गिरने नहीं देना, रोकना।
**टेकावल** *सक०* सहारा देकर किसी बोझा को उठा देना।
**टेकुआ** *पु०* सीने का औजार; तकला।
**टेकुरी** *स्त्री०* तकली।
**टेढ़** *वि०* बेडौल, टेढ़ा। **-सोझ** *वि०* भला-बुरा।
**टेढ़रा** *वि०* टेढ़ा-मेढ़ा।
**टेढ़ा** *वि०* वक्र, झुका हुआ। **-ई** *स्त्री०* टेढ़ापन। **-मेढ़ा** *वि०* वक्रता लिए हुए।

**टेढ़ी** *वि०* टेढ़ी।
**टेढ़े** *अव्य०* तिरछे।
**टेना** *पु०* टुकड़ा, जिसका प्रयोग किसी भारी वस्तु को ऊपर रोके रहने के लिए होता है।
**टेनवाह** *वि०* टेना लगाने वाला।
**टेपा** *पु०* मिट्टी का सख्त टुकड़ा, ढेला।
**टेबुकी** *स्त्री०* ऊँची जमीन, छोटा टीला।
**टेम** *स्त्री०* दीये की लौ।
**टेम्ही** *स्त्री०* दीपक की बाती का अग्रभाग।
**टेरल** *सक०* बाँसुरी बजाना; बुलाना।
**टेल्हा** *पु०* बालक।
**टेल्ही** *स्त्री०* लड़की।
**टेहा-टेही** *क्रि०वि०* एक-एक कर।
**टेहुरी** *स्त्री०* किसी को चिढ़ाने या क्षुब्ध करने के लिए कुछ बोला गया व्यंग्य।
**टैट** *पु०* [अं० टाइट] टाइट कसा हुआ, जोर देकर बाँधा हुआ।
**टोंटी** *स्त्री०* [सं० तुण्डं] नली।
**टोअल** *अक०* स्पर्श करना।
**टोइआवल** *अक०* हाथ से टटोलना।
**टोई** *वि०* थोड़ी।
**टोकरी** *स्त्री०* बाँस की बनी छँइटी।
**टोकल** *अक०* पूछना; दो व्यक्तियों के वार्तालाप के मध्य बोल उठना; जाते समय टोकना।
**टोटका** *पु०* [सं० भोटकः] तान्त्रिक प्रयोग, तन्त्र-मन्त्र, टोना, टटका।
**टोटा** *पु०* बन्दूक का कारतूस; घाटा।
**टोड़ा** *पु०* दीवार में गाड़ा जाने वाला टुकड़ा, जो आगे बढ़ी हुई छाजन को रोक हेतु लगाया जाता है।
**टोड़ी** *स्त्री०* एक रागिनी।
**टोन** *पु०* टोना का समासगत रूप। **-हा** *पु०* टोना, जादू करने वाला। **-हाई** *स्त्री०* टोना। **-हिन** *स्त्री०* जादूगरनी।
**टोना** *पु०* [सं० तन्त्रं] टोटका, जादू।
**टोप** *पु०* टाँका; बड़ी टोपी।
**टोपरा** *पु०* बड़ा खेत।
**टोपा** *पु०* बाँस की कमचियों का बना बड़ा और कम गहरा टोकरा।
**टोपी** *स्त्री०* सिर पर का पहनावा, राजमुकुट, ताज।
**टोरा** *पु०* हल का निचला हिस्सा।
**टोल** *स्त्री०* दल। [अं०] यात्रियों पर लगने वाला एक कर।
**टोला** *पु०* मुहल्ला; बड़ी बस्ती का एक भाग।
**टोली** *स्त्री०* छोटा मुहल्ला।
**टोवल** *सक०* छूना।
**टोह** *स्त्री०* अन्वेषण, खोज, ढूँढ़, देखभाल।
**टोहल** *सक०* टटोलना, खोजना।
**टोहाटाई** *स्त्री०* छानबीन।
**टोहिया** *वि०* टोह लगाने वाला।
**टोही** *वि०* दे० 'टोहिया'।
**टौनहाल** *पु०* [अं०] टाउनहाल।
**ट्यूबवेल** *पु०* [अं०] नलकूप।
**ट्रंक** *पु०* [अं०] बड़ा सन्दूक।
**ट्रंप** *पु०* [अं०] ताश के खेल में नियत किया हुआ रंग, जिससे बड़े पत्ते काटते हैं।
**ट्रक** *स्त्री०* [अं०] भारी माल ढोनेवाली गाड़ी।
**ट्रांसफर** *पु०* [अं०] बदली, तबादला।
**ट्राम** *स्त्री०* [अं०] महानगरों में विद्युत् चालित गाड़ी।
**ट्रेंड** *वि०* [अं०] प्रशिक्षित।
**ट्रेजरी** *स्त्री०* [अं०] खजाना।
**ट्रेडमार्क** *पु०* [अं०] विशेष व्यापारिक चिह्न।
**ट्रेन** *स्त्री०* [अं०] रेलगाड़ी।

❑

# ठ

**ठ** देवनागरी वर्णमाला के टवर्ग का दूसरा व्यंजन, जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
**ठंइया** *पु०* नियत जगह।
**ठंगुनी** *स्त्री०* टेकनी।
**ठंठ** *वि०* जिसकी डालियाँ, पत्तियाँ सूख, कट कर गिर गई हों, ठूँठा।
**ठंठा** *वि०* वैसी गाय-भैंस, जिसने बहुत दिनों से दूध देना बन्द कर दिया हो, ठाँठ।
**ठंठनाइल** *सक०* 'ठं-ठं' की ध्वनि निकालना।
**ठंठार** *वि०* रिक्त, छूँछा।
**ठंठी** *स्त्री०* गाय-भैंस, जो बच्चा और दूध न दें।
**ठंड** *स्त्री०* सरदी, जाड़ा।
**ठंडक** *स्त्री०* दे० 'ठंड'।
**ठंडा** *वि०* सर्द, शीतल; बुझा हुआ।
**ठंढ** *स्त्री०* सर्दी, जाड़ा।
**ठंढई** *स्त्री०* सौंफ, बादाम, बर्फ आदि मिलाकर बनाया गया शर्बत।
**ठंढक** *स्त्री०* शीत, जाड़ा।
**ठंढा** *वि०* सर्द, शीतल।
**ठंढी** *वि०* दे० 'ठंडा'।
**ठ** *पु०* [सं०] शिव; भारी शब्द; चन्द्रमण्डल।
**ठक** *स्त्री०* [अनु०] एक काठ से दूसरे काठ के टकराने से निकला शब्द, ठोंकने का शब्द। **-ठक** *स्त्री०* झगड़ा।
**ठकचल** *अक०* ठसाठस भरा रहना।
**ठकच्चा** *स्त्री०* लोगों की भीड़।
**ठकठकावल** *सक०* किसी वस्तु पर ठोकर मारकर ठक-ठक शब्द पैदा करना।
**ठकठेन** *पु०* झगड़ा।
**ठक ठेनी** *स्त्री०* जिद्द, झगड़ा करने की स्थिति।
**ठक्कर** *स्त्री०* काठ का वह लम्बा टुकड़ा, जो मुँहजोर मवेशियों के गले में लटकाते हैं।
**ठकुआ** *पु०* स्तब्धता। **-मारल** *मुहा०* किंकर्तव्यविमूढ़ होना; हतप्रभ होना।
**ठकुआइल** *अक०* स्तम्भित होना।
**ठकुरई** *स्त्री०* दे० 'ठकुराई'।
**ठकुरसुहाती** *स्त्री०* चाटुकारिता।
**ठकुराइत** *स्त्री०* ठकुरायत।
**ठकुराइन** *स्त्री०* ठाकुर की स्त्री, मालकिन।
**ठकुराई** *स्त्री०* प्रभुत्व का अधिकार।
**ठकुरानी** *स्त्री०* जमींदार, ठाकुर की स्त्री।
**ठकुराय** *पु०* क्षत्रियों का भेद।
**ठकोरी** *स्त्री०* सहारा लेने की एक लकड़ी।
**ठक्करा** *स्त्री०* ठक्कर।
**ठक्कुर** *पु०* [सं०] देवता, देव-प्रतिमा।
**ठग** *पु०* [सं० स्थग:] छल-कपट से लूटने वाला व्यक्ति, धूर्त, *उदा०* 'ठग जाने ठगही के भाखा'। **-ई** *स्त्री०* धोखेबाजी। **-पना** *पु०* ठगहाई। **-विद्या** *स्त्री०* धोखा देने का हुनर। **-हाई** *स्त्री०* ठगपना।
**ठगनी** *स्त्री०* कुटनी, ठगने वाली।
**ठगल** *सक०* ठगना।
**ठगवावल** *सक०* दूसरों से धोखा दिलवाना।
**ठगाठगी** *स्त्री०* छल-कपट।
**ठगिन** *स्त्री०* ठगाबाज स्त्री, लुटेरिन *उदा०* 'माया ठगिन महा हम जानी' -कबीर।
**ठगिया** *पु०* ठग।
**ठगी** *स्त्री०* ठग का पेशा, ठगपना।
**ठगल** *सक०* किसी की सम्पत्ति को प्रपंच पूर्वक ले लेना, ठगना।
**ठगेड़ा** *वि०* चतुर ठग।

**ठट** *पु०* समूह, झुण्ड; बनाव, रचना, सजावट।
**ठटल** *अक०* डटना।
**ठट्ठा** *पु०* मसखरी, ठहाका।
**ठटियल** *वि०* ठाट-बाट से रहने वाला (व्यक्ति)।
**ठठरा** *स्त्री०* शरीर का ढाँचा; छप्पर का ढाँचा।
**ठठाइल** *अक०* जोर से हँसना।
**ठठेरल** *सक०* जमीन पर घसीट ले जाना।
**ठठेरा** *पु०* ताँबा, पीतल आदि के बर्तन को बनाने वाला, मरम्मत करने वाला, कसेरा। *कहा०* 'ठठेरा ठठेरा बदलौवल'।
**ठठेरी** *स्त्री०* ठठेरे का काम, ठठेरे की स्त्री।
**ठठोल** *वि०* मसखरा।
**ठठोली** *स्त्री०* हँसी, मजाक।
**ठड़ा** *वि०* खड़ा, सीधा स्थित।
**ठढ़ेसरी** *स्त्री०* एक व्रत, जिसमें व्रती को निश्चित समय तक खड़ा रहना पड़ता है।
**ठनल** *अक०* किसी काम का उत्साहपूर्वक आरम्भ होना; ठनना।
**ठनकल** *अक०* जोर से शब्द करना।
**ठनका** *पु०* बिजली के चमकने के बाद होने वाला वज्रपात।
**ठनक्का** *क्रि०वि०* स्पष्ट शब्दों में।
**ठनकावल** *सक०* बोलने के लिए विवश करना।
**ठनकी** *स्त्री०* एक प्रकार की छोटी और सुन्दर चिड़िया, जो मछली की टोह में आकाश में मड़राती रहती है; सख्त जमीन; परत के बैठने से बनी हो।
**ठनगन** *पु०* हठ, नेग के लिए आग्रह।
**ठनठन** *पु०* यौ० रुपये के बजने के शब्द। **-गोपाल** *पु०* निःसार वस्तु।
**ठनाठन** *क्रि०वि०* बार-बार ठन-ठन की ध्वनि।
**ठप** *पु०* बन्द।
**ठपका** *पु०* टक्कर, ठोकर।
**ठप्पा** *पु०* [सं० स्थापनं] साँचे से उखड़ी हुई छाप।
**ठमक** *स्त्री०* एकाएक रुक जाने का भाव, नजाकत भरी चाल।
**ठमकल** *सक०* सहसा रुक जाना।
**ठरकी** दे० 'ठनकी'।
**ठर्रा** *पु०* निम्न कोटि की देशी शराब।
**ठरेसरी** *स्त्री०* दे० 'ठढ़ेसरी'।
**ठवर** *स्त्री०* ठहरने की जगह, उपयुक्त स्थान।
**ठस** *वि०* आलसी, कंजूस।
**ठसक** *स्त्री०* नखरा, बनावटीपन। **-दार** *वि०* ठसक वाला।
**ठसका** *पु०* सूखी खाँसी; ठोकर; फन्दा।
**ठसाठस** *क्रि०वि०* खचाखच भरा हुआ (बस, रेल का डिब्बा), भरपूर।
**ठस्सा** *पु०* ठसक, अभिमानभरी चाल।
**ठहर** *पु०* स्थान, जगह; चौका; लीपी हुई जगह। *उदा०* 'ठहर पर भोजन करीं, डाइनिंग टेबल भूल जाईं'।
**ठहरल** *अक०* [सं० स्थिर] रुकना, स्थिर होना, डेरा डालना।
**ठहराई** *स्त्री०* ठहराने की मजदूरी।
**ठहराऊ** *वि०* टिकाऊ।
**ठहराव** *पु०* रुकावट, बाधा, गति का अभाव।
**ठहरावल** *सक०* किसी को चलने या काम करने से रोकना।
**ठहाक** *स्त्री०* लाठी से मारने की आवाज।
**ठहाका** *पु०* अट्टहास।
**ठहाठह** *स्त्री०* बार-बार ठह-ठह की आवाज।
**ठहियाँ** *स्त्री०* स्थान, जगह।

**ठहिआवल** *सक०* किसी बात को जानते हुए भी अनजान बनकर पूछना, किसी सुनी बात को अनसुनी बनाकर पूछना।
**ठाँ** *स्त्री०* ठाँव।
**ठाँइ** *स्त्री०* ठौर, जगह; पास, निकट।
**ठाँय-ठाँय** *स्त्री०* बन्दूक से गोली निकलते समय की ध्वनि।
**ठाँव** *पु०* [सं० स्थानं] स्थान, ठौर; ठाँव-कुठाँव। *उदा०* 'ठाँव गुने काजर कठाँव गुने कारिख'।
**ठाँव-ठेकान** *पु०* पता-ठिकाना।
**ठाँवा** *पु०* उसी जगह, यह प्राय: हल जोतते समय बैलों को संकेत देने के लिए हलवाहे द्वारा प्रयुक्त होता है।
**ठाँवा-ठाँई** *क्रि०वि०* कहीं-कहीं। *उदा०* 'जुड़ाइल ठाँवा ठाई।' लोक०।
**ठाँवे-ठाँवे** *क्रि०वि०* जगह-जगह।
**ठाकुर** *पु०* [सं० ठक्कुर:] भगवान् विष्णु, मालिक, जाति-विशेष, ब्राह्मण, हजाम, क्षत्रिय। **-दुआरा** *पु०* देव-स्थान, जगन्नाथपुरी। **-द्वारी** *स्त्री०* विष्णु-मन्दिर, देवालय।
**ठाकुरी** *स्त्री०* दे० 'ठकुराई'।
**ठाट** *पु०* लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना परदा; ऐशोआराम की जिन्दगी। *कहा०* 'ठाट बाठ एतना, जलपातरे नदारत।' **-बाट** *पु०* आडम्बर।
**ठाट-पटाका** *क्रि०वि०* तुरन्त, अविलम्ब।
**ठाढ़** *वि०* खड़ा। *उदा०* 'ठाढ़ नाच मोरा, तऽ निहुर के नाचब तोरा।'
**ठाढ़ेसरी** *पु०* दिन-रात खड़े रहने वाले साधु।
**ठान** *स्त्री०* ठानने का भाव।
**ठानल** *सक०* संकल्प करना।
**ठाना** *सक०* ठानना।
**ठाम** *पु०* ठाँव; शरीर की मुद्रा।
**ठाय** *पु०* ठाऊँ।
**ठार** *पु०* सर्दी, जाड़ा।
**ठाल** *स्त्री०* ठाला, फुरसत।
**ठाला** *पु०* बेकारी, काम-धन्धे की मन्दी।
**ठाली** *वि०* बेकार, निठल्ला।
**ठायँ** *पु०* ठाँव।
**ठासल** *सक०* ठूँसना; इच्छा के विरुद्ध उस स्थान पर काम लादना।
**ठाह** *स्त्री०* गाने-बजाने की गति।
**ठाहर** *पु०* जगह; ठिकाना।
**ठिंगना** *वि०* नाटा।
**ठिकड़ा** *पु०* दे० 'ठीकरा'।
**ठिकरा** *पु०* दे० 'ठिकड़ा'।
**ठिकरी** *स्त्री०* ताश का रंग; कंकड़ी; एक प्रकार की मिठाई। *उदा०* 'ठिकरियो से घइला फूटेला'।
**ठिकरौर** *वि०* जिसमें ठीकरे अधिक हों (जमीन)।
**ठिकाना** *पु०* जगह, वास-स्थान; अवलम्ब। **-लगल** *मुहा०* जीविका प्राप्त होना। **-के बात** *मुहा०* काम की बात।
**ठिकिआवल** *सक०* किसी कार्य को करने के लिए किसी को नियोजित करना।
**ठिगना** *वि०* छोटा, ऊँचाई में कम।
**ठिठकल** *अक०* ठक रह जाना, सहसा रुक जाना, स्तब्ध होना।
**ठिठुरल** *अक०* सर्दी से सिकुड़ना।
**ठिठोली** *स्त्री०* परिहास, मजाक।
**ठिनकल** *अक०* (बच्चों का) बनावटी तौर से रोना।
**ठिया** *पु०* पशुओं के ठहरने का स्थान।
**ठिसुआइल** *वि०* क्रोधित।
**ठीक** *वि०* उचित; यथार्थ।
**ठीकदार** *पु०* किसी काम को ठीका पर कराने वाला व्यक्ति, ठीका लेने वाला।

**ठीकमठीक** *अ०* बिलकुल ठीक।
**ठीकरा** *पु०* मिट्टी के बर्तन का छोटा टूटा-फूटा अंश।
**ठीकल** *अक०* अनुमान लगाना।
**ठीका** *पु०* किसी निश्चित राशि और समय के बदले में किसी काम को पूरा करने का जिम्मा, ठेका।
**ठींचा** *स्त्री०* खुले मुँह की एक प्रकार की टोकरी।
**ठी-ठी** *स्त्री०* बेहूदा हँसी।
**ठीढ़आ** *पु०* एक हरे रंग का साग।
**ठीन** *पु०* जगह। *उदा०* ओह ठीन।
**ठीहा** *पु०* [सं० स्थितः] जगह, स्थान; लकड़ी का कुन्दा, जिस पर चारा काटा जाता है।
**ठुकुचल** *सक०* धीरे-धीरे चोट मारना।
**ठुमरी** *स्त्री०* एक प्रकार की रागिनी। शास्त्रीय संगीत की एक पद्धति जो अत्यन्त मधुर होती है।
**ठुमुक** *वि०* छोटा और ठोस (वस्तु)।
**ठुनकल** *अक०* किसी वस्तु के लिए रह-रह कर रोना।
**ठुसकावल** *सक०* किसी बात को रोककर धीरे-धीरे कहना।
**ठुसल** *अक०* कस कर भरा जाना।
**ठूँठ** *पु०* [सं० स्थाणुः] डाल-पत्ता विहीन वृक्ष, ऐसा वृक्ष, जो जीर्ण-शीर्ण और सूखा हो।
**ठूँसा** *पु०* घूँसा।
**ठूरी** *स्त्री०* मक्के का भूँजा, जो लावा न हुआ हो।
**ठूसल** *अक०* खूब कस कर किसी वस्तु को भर देना।
**ठेंगा** *पु०* अँगूठा; डण्डा। **-दिखावल** *मुहा०* साफ इनकार करना।
**ठेंघा** *पु०* चाँड, थूनी।
**ठेंपी** *स्त्री०* काग, डाट।
**ठेक** *पु०* टेक, चाँड़।
**ठेकनगर** *वि०* जिसका ठिकाना हो।
**ठेकल** *सक०* सहारा लेना; छू जाना।
**ठेका** *पु०* ढोल बजाने की ताल; सहारे की वस्तु।
**ठेकान** *पु०* विश्वास, निश्चय, भरोसा।
**ठेकाना** *पु०* वह स्थान, जहाँ तक पहुँचने की कामना हो; पता।
**ठेकी** *स्त्री०* कान का कड़ा मैल, खूँट।
**ठेकुआ** *पु०* आटे और गुड़ के योग से बना भोज्य पदार्थ, जो काठ के साँचे में दबाकर बनाया जाता है (छठ पर्व का विशेष पकवान)।
**ठेगा** *पु०* छोटी लाठी, डण्डा।
**ठेगुरी** *स्त्री०* घास झाड़ने के लिए प्रयुक्त सोटा या लाठी का टुकड़ा।
**ठेठ** *वि०* देशज शब्द; स्थानीय; निपट शुद्ध।
**ठेठा** *वि०* ठाँठ।
**ठेठावल** *अक०* पीटना, मारना।
**ठेनसाही** *स्त्री०* गर्वपूर्ण शब्दों में कही गई असंगत बात।
**ठेपा** *पु०* टीप।
**ठेपी** *स्त्री०* ठेंपी
**ठेमस** *पु०* गर्व, मिथ्या, अभिमान।
**ठेलमठेल** *पु०* धक्कम-धक्का।
**ठेलल** *सक०* ढकेलना, आगे की ओर खिसकाना।
**ठेला** *पु०* रगड़ के कारण हाथ या पैर में मांस-ग्रन्थि; ठेलागाड़ी।
**ठेला-ठेली** *स्त्री०* इधर-उधर ठेलने का काम या भाव, बहुत भीड़।
**ठेलाह** *वि०* खेत में भरपूर (पानी), रोपनी के समय खेत में जमा पर्याप्त जल।

**ठेस** *स्त्री०* चलते समय पैर की अँगुलियों में किसी चीज से लगी चोट। **-लागी तऽ अकिल बढ़ी** *मुहा०* असफलता से सीख। *उदा०* 'ठेस लागल पहाड़ पर, फोडों घर के मिलवट'।

**ठेसल** *सक०* ठूँस-ठूँस कर खाना, ठेसना।

**ठेसाह** *वि०* पैर या पैर की अँगुली, जो बार-बार ठोकर लगने से घायल हो जाती है।

**ठेहगर** *वि०* शरीर से मजबूत।

**ठेहल** *अक०* लाठी के सहारे चलना।

**ठेहा** *पु०* धरती में गड़ा लकड़ी का टुकड़ा, जिसपर कुट्टी काटी जाती है।

**ठेहिया** *स्त्री०* अपनी समस्या के हल के लिए सिर झुकाने की स्थिति।

**ठेही** *स्त्री०* छोटा टीला, ऊँची भूमि।

**ठेहुना** *पु०* घुटना और टाँग के बीच का जोड़।

**ठेहुनिआ** *स्त्री०* ठेहुन के बल पर रहने की स्थिति। *कहा०* 'ठेहुनिया गइनी तऽ हरगंगा'।

**ठेहुन** *पु०* घुटना।

**ठैन** *स्त्री०* जगह।

**ठैयाँ** *स्त्री०* दे० 'ठैन'।

**ठैल-पैल** *स्त्री०* धक्कमधक्का।

**ठोँक** *स्त्री०* ठोंकने का भाव।

**ठोँकल** *सक०* प्रहार करना, पीटना।

**ठोँगा** *पु०* कागज, पत्ते की थैली।

**ठोंठिआइल** *अक०* फुफकारना।

**ठो** *अव्य०* संख्या में लगने वाला परसर्ग। *उदा०* पाँच ठो, चौदह ठो।

**ठोकच** *पु०* मुँह के दोनों तरफ गाल के बीच का भाग।

**ठोकरा** *पु०* अँगूठे और तर्जनी के द्वारा मारी गयी चोट।

**ठोकरिआवल** *सक०* ठोकर से मारना।

**ठोकल** *अक०* किसी नुकीली वस्तु पर आघात कर गाड़ना या हलाना; गोंइठे को पाथना।

**ठोकवा** *पु०* ठेकुवा।

**ठोट** *वि०* मूर्ख।

**ठोठ** *वि०* निराला, ठूँठा।

**ठोठा** *पु०* दाढ़ी।

**ठोकाइल** *अक०* पिटाई होना।

**ठोढ़-ठोर** *पु०* चोंच।

**ठोप** *स्त्री०* बूँद; गहना।

**ठोर** *पु०* चोंच।

**ठोररतनी** *वि०* होंठ को रँगने वाली (स्त्री)।

**ठोला** *पु०* बोलने में निर्भीक बच्चा।

**ठोस** *वि०* जो खोखला नहीं हो, दृढ़, मजबूत।

**ठोहल** *सक०* खोजना, ढूँढ़ना।

**ठौर** *पु०* जगह, स्थान, उपयुक्त स्थान, अवसर। **-कुठौर** *मुहा०* अच्छी-बुरी जगह। **-ठिकाना** *मुहा०* रहने का स्थान।

❑

# ड

**ड** देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।

**डँउआइल** *अक०* जहाँ-तहाँ घूमना।

**डंक** *पु०* [सं० दंश:] बिच्छू, मधुमक्खी का जहरीला काँटा, जिसे वे शरीर में चुभोते हैं, डंक, दंश। **-दार** *वि०* डंकवाला।

**डँकरल** *अक०* उल्टी करना।

**डँकरा** *पु०* विष। *वि०* अत्यन्त तींता।

**डंकड़ा** *पु०* उल्टी करने का भाव।

**डंका** *पु०* नगाड़ा, धौंसा। **-बजल** *मुहा०* चलती होना। **-बजावल** *मुहा०* घोषित करना। **-के चोट पर कहल** *मुहा०* निडर होकर सबसे कहना।

**डंकिनी** *स्त्री०* डाकिनी।

**डंकी** *वि०* डंकवाला।

**डँकीला** *पु०* डंक मारने वाला।

**डंगठा** *पु०* दाना निकाल लेने के बाद का डण्ठल।

**डंगर** *पु०* चौपाया। *वि०* मूर्ख।

**डँगरी** *स्त्री०* बड़ी कंकड़ी।

**डंगहन** *पु०* एक प्रकार का मक्का, जिसका दाना सफेद और बड़ा होता है।

**डंटा** *स्त्री०* छोटी लाठी, डण्डा।

**डंटी** *स्त्री०* किसी फल के सिरे के निकट का पतला भाग। डण्ठल, डाँड़ी, बेंट।

**डँठगर** *वि०* डण्ठलसहित, बड़ा डण्ठल वाला।

**डंड** *पु०* [सं० दण्ड:] एक व्यायाम, जिसमें जमीन पर हाथों और पैरों के पंजों के बल पर आदमी लेटता और उठता है; सजा, जुर्माना।

**डँड़कस** *पु०* चाँदी का आभूषण (नारी हेतु)।

**डंडताल** *पु०* लोहे की छड़ का बना एक वाद्ययंत्र।

**डंडवत** *स्त्री०* [सं० दण्डवत्] साधुओं को प्रणाम करने के लिए प्रयुक्त शब्द, साष्टांग प्रणाम।

**डंडा** *पु०* लाठी, सोंटा।

**डंडाल** *पु०* डंका, नगाड़ा।

**डँड़िया** *स्त्री०* ऐसी साड़ी, जिस पर गोटे टँके हों।

**डँड़ियावल** *सक०* दूर-दूर बखिया चलाना।

**डंडी** *स्त्री०* लकड़ी का वह टुकड़ा, जिसमें तराजू का पलड़ा लटकाया जाता है। **-मार** *वि०* जो कम सौदा तौले।

**डँड़ीर** *स्त्री०* रेखा (सीधी), लकीर।

**डँड़ेर** *पु०* मेड़, डाँड़।

**डंमा** दे० 'डम्हा'।

**डँवरू** *पु०* बाघ का बच्चा।

**डँस** *पु०* काटने वाली एक प्रकार की बड़ी मक्खी।

**डँसल** *सक०* सर्प आदि विषैले जन्तुओं का काटना।

**डँसावल** *सक०* बिछावन बिछाना।

**डँहकल** *अक०* सन्तप्त होना।

**डँहकावल** *सक०* सन्तप्त करना।

**डइनपन** *पु०* डायन की कार्यविधि, दुष्ट विधा।

**डइआइल** *अक०* व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना।

**डउँगी** *स्त्री०* पेड़ की छोटी डाल।

**डउल** *पु०* ढंग, ढाँचा, डील-डौल।

**डएन** *पु०* पंख, पाँख।

**डक** *पु०* कोट आदि में दिया जाने वाला एक प्रकार का मोटा वस्त्र या रूई।

**डकइत** *पु०* लुटेरा।
**डकइती** *स्त्री०* लूट, डाकाजनी।
**डकहाँ** *स्त्री०* मवेशियों को होने वाली एक प्रकार की बीमारी।
**डकरल** *अक०* मवेशियों का बोलना; ऊँची आवाज से बोलना।
**डकहा** *पु०* पशुओं की एक बीमारी।
**डग** *पु०* चलने में दो पैरों के बीच का अन्तर, कदम। **-भरल** *मुहा०* कदम बढ़ाना। **-मारल** *मुहा०* लम्बे-लम्बे डग भरना।
**डगड़** *स्त्री०* कच्ची सड़क, देहाती सड़क, डगर।
**डगमग** *पु०* हिलने या काँपने का भाव या क्रिया।
**डगमगाइल** *अक०* काँपना; डगमगाना।
**डगर** दे० 'डगड़'।
**डगरना** *पु०* मकान बनाने वाले मजदूरों के बैठने के लिए बाँस पर रखी गई चाली; खिसकाव।
**डगरल** *अक०* लुढ़कना।
**डगरा** *स्त्री०* बाँस की कमचियों का बना गोलाकार बर्तन, जो फटकने के काम आता है; मार्ग, रास्ता।
**डगरिन** *स्त्री०* धगरिन, दाई, प्रसाविका। *उदा०* 'मोरा पिछुअरवा डगरिन बहिना, तुहु मोर हित बाड़ू, मोरा रानी दरद बेयाकुल, तोहि के बोलाहट।' लोकगीत
**डगरी** *स्त्री०* छोटा डगरा; सिटकी का बना मछली मारने का एक औजार।
**डटल** *अक०* अड़ जाना, स्थिर रहना, डटना।
**डड़** *पु०* भय, आशंका।
**डढ़ियल** *वि०* दाढ़ी वाला।
**डपटल** *सक०* झिड़कना, डाँटना।
**डपोरसंख** *पु०* [सं०] बकवादी, जो बोलता है अधिक किन्तु करता कुछ नहीं।
**डफ** *पु०* [अ० दफ] एक प्रकार का वाद्य-यंत्र, जिसका उपयोग प्रायः चैता गाने में होता है।
**डफड़ा** *पु०* डफ के समान एक बाजा।
**डफरा** दे० 'डफड़ा'।
**डफली** *स्त्री०* छोटा डफ, खँजरी।
**डफार** *स्त्री०* चिग्घाड़।
**डफारल** *अक०* चिग्घाड़ मारना।
**डफालची** *पु०* दे० 'डफाली'।
**डफाली** *स्त्री०* डफ बजाने वाला पेशेवर मुसलमान।
**डब** *पु०* पानी में किसी भारी वस्तु के डूबने की आवाज।
**डबकल** *अक०* टीसना, आँसू आना।
**डबडबाइल** *अक०* आँखों में आँसू भर जाना।
**डबड़ा-डबरा** *पु०* छिछला गड़हा।
**डबल** *वि०* [अं०] आकार में या परिमाण में बहुत बड़ा; दोहरा, दूना।
**डबल रोटी** *स्त्री०* पावरोटी।
**डबला** *पु०* चौड़े मुँह का छोटा बर्तन।
**डबहा** *पु०* वह स्थान, जहाँ पानी अधिक लगता है।
**डबिया** *स्त्री०* छोटा डिब्बा।
**डबी** *स्त्री०* डिब्बी।
**डबोअल** *सक०* डुबाना।
**डब्बा** *पु०* [सं० डिबः] छोटा पात्र; रेलगाड़ी का कोठरीनुमा हिस्सा।
**डब्बी** *स्त्री०* काठ या लोहे की बनी कोठरी।
**डब्बू** *पु०* बड़ा कलछुल।
**डबोह** *पु०* जहाँ आदमी के डूबने लायक पानी हो, गर्त।

**डभका** *पु०* आधा भूना हुआ चना, मटर।
**डभकौरी** *स्त्री०* उड़द की पीठी की बड़ी।
**डभडभ** *पु०* पानी में किसी जलचर के डुबकी लगाने की आवाज।
**डभकल** *अक०* खाद्य-पदार्थ का पानी में उबलना।
**डभकावल** *सक०* भोजन की सामग्री को पानी में उबालना।
**डभोर** *स्त्री०* पंछी।
**डम्हा** *वि०* अधपका आम का फल।
**डम** *पु०* [सं०] डोम।
**डमर** *पु०* [सं०] दंगा, भगदड़।
**डमरु** *पु०* [सं०] चमड़े से मढ़ा छोटा बाजा।
**डर** *पु०* भय।
**डरपोक** *वि०* कायर, भीरु, डरने वाला।
**डरल** *अक०* डरना।
**डरुक** *वि०* भीरू।
**डराहुक** *वि०* डरपोक।
**डरिया** *स्त्री०* डाल।
**डरी** *स्त्री०* डली।
**डरैला** *वि०* डरावना।
**डल** *पु०* खंड, टुकड़ा।
**डलवावल** *सक०* डालने देना।
**डला** *पु०* ढेला।
**डलिया** *स्त्री०* चंगेली, चंगेरी, छोटी टोकरी, दउरी, फूलडाली।
**डसावल** *अक०* बिछौना बिछाना, चारपाई पर बिस्तर को बिछा देना।
**डहकल** *अक०* तरसना।
**डहडहा** *वि०* ताजा।
**डहर** *स्त्री०* रास्ता, सड़क।
**डहल** *अक०* ईर्ष्या करना, जलना।
**डहमंगर** *स्त्री०* द्वेषी।
**डहकल** *अक०* ईर्ष्या करना, द्वेष करना।
**डहवावल** *सक०* डराना, भयभीत करना।
**डाँकल** *अक०* दुर्गन्ध देना; जोर से बोलना; फाँदना।
**डाँगर** *पु०* मरा हुआ मवेशी।
**डाँट** *स्त्री०* फटकार, झिड़क, शासन। **-डपट** *स्त्री०* आक्रोश, शासन।
**डाँटल** *सक०* फटकारना, झिड़कना।
**डाँठ** *पु०* शाखा।
**डाँड़** *स्त्री०* कमर, *कहा०* 'डाँड़ टूटे रंडी के भँड़ुआ दोसाला ओढ़े।'
**डाँड़ा** *पु०* एक धागा, जो कमर में बाँधा जाता है; नाँव खेने का डाँड़ पतवार, हद, सीमा; मेड़।
**डाँडी** *स्त्री०* शाखा, डाली; तराजू की डाँड़ी; कतार।
**डांरल** *अक०* दण्ड देना।
**डाइन** *स्त्री०* [सं० डाकिनी] दूसरे को हानि पहुँचाने वाले मंत्र की जानकारी रखने वाली स्त्री, भूतनी, चुड़ैल, डरावनी स्त्री। *कहा०* 'डाइन के दमाद पियार'।
**डाक** *स्त्री०* चिट्ठी के लाने-लेजाने की सरकारी व्यवस्था; नीलाम की बोली। **-खाना** *पु०* पोस्टऑफिस। **-गाड़ी** *स्त्री०* डाक ढोने वाली गाड़ी। **-घर** *पु०* पोस्टआफिस। **-बँगला** *पु०* अफसरों के टिकने का सरकारी आवास। **-बम** *पु०* बिना विश्राम किये गंगाजल लेकर शिव पर चढ़ाने वाला व्यक्ति। **-बाबू** *पु०* डाकखाने का प्रभारी। **-महसूल** *पु०* डाक द्वारा भेजी, मँगाई वस्तु पर लगने वाला व्यय। **-मुंशी** *पु०* पोस्ट मास्टर। **-शुल्क** *पु०* पोस्टेज।
**डाकल** *सक०* लाँघना।
**डाका** *पु०* लूट, डकैती।
**डाकिया** *पु०* डाक ढोनेवाला, पत्रवाहक।

**डाकू** *पु०* लुटेरा, डाका डालनेवाला।
**डाक्टर** *पु०* चिकित्सक; किसी विषय में विश्वविद्यालय से सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने वाला व्यक्ति; आचार्य; पारंगत विद्वान्।
**डाकतर** *पु०* दे० 'डाक्टर'।
**डाख** *पु०* पलाश, ढाक।
**डागल** *पु०* ऊबड़-खाबड़ भूमि।
**डागा** *पु०* एक प्रकार का बड़ा ढोल। नगाड़ा बजाने का डण्डा, चोब।
**डाट** *स्त्री०* फटकार, डपट।
**डाटल** *अक०* डराने के लिए क्रोधपूर्वक जोर से बोलना।
**डाड़** *पु०* कमर।
**डाड़े-मेड़े** *पु०* आस-पास; बराबरी।
**डाढ़ी** *स्त्री०* डाली; ठोढ़ी, चिबुक, ठुड्ढी।
**डापुट** *वि०* मजबूत, पुष्ट; पौढ़।
**डाफल** *अक०* बढ़-चढ़कर बोलना।
**डाबर** *पु०* डबड़ा; गड्ढा, ऊँच-नीच जमीन।
**डाभ** *पु०* कच्चे नारियल का पानी।
**डाभी** *स्त्री०* कुश जाति की एक प्रकार की घास।
**डामर** *पु०* [सं०] होहल्ला, दंगा, हलचल; शिव सम्बन्धी तंत्र विशेष।
**डामल** *पु०* आजीवन कारावास।
**डायन** *स्त्री०* डाइन।
**डायरी** *स्त्री०* [अं०] रोजानामचा, दैनन्दिनी।
**डार** *स्त्री०* डाल।
**डारी** *स्त्री०* शाखा, टहनी।
**डाल** *स्त्री०* शाखा।
**डालल** *अक०* रखना, डालना।
**डाला** *पु०* विवाह में प्रयुक्त होने वाला बाँस का छितनार टोकरा।
**डाली** *स्त्री०* अधिकारी को दिया गया उपहार; डलिया; डाली, डाल।
**डासन** *पु०* बिछावन, बिछौना।
**डासल** *पु०* बिछावन, बिस्तर।
**डाह** *स्त्री०* जलन, द्वेष, ईर्ष्या।
**डाहल** *सक०* किसी धातु को शुद्ध करने के लिए तप्त करना, किसी को आन्तरिक दुःख पहुँचाना।
**डाही** *वि०* ईर्ष्यालु, द्वेषी।
**डिगरी** *स्त्री०* [अं०] जीत (मुकदमा), न्यायालय का फैसला; ताप की माप; विश्वविद्यालय की पदवी।
**डिगल** *अक०* विचलना, स्थान या प्रतिज्ञा से हटना।
**डिगिस** *पु०* काठ का एक प्रकार का सन्दूक।
**डिठार** *वि०* प्रत्यक्ष, सामने, सर्वविदित।
**डिठिआवल** *सक०* नजर पर चढ़ाना।
**डिपाट** *पु०* [अं०] विभाग, कार्यक्षेत्र।
**डिब्बा** *पु०* छोटा बर्तन, सम्पुट; रेलगाड़ी का डिब्बा।
**डिबिआ** *स्त्री०* छोटा डिब्बा, छोटा दीया।
**डिभिआइल** *अक०* अंकुर निकलना।
**डिभी** *स्त्री०* तुरन्त का उगा पौधा (अनाज)।
**डिलल** *अक०* फैलना (बाढ़ के पानी का)।
**डिल्ला** *पु०* टीला।
**डिल्ली** *स्त्री०* दिल्ली।
**डिहांस** *पु०* गाँव के आस-पास की उपजाऊ भूमि।
**डींग** *स्त्री०* गर्वभरी बात, शेखी, बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात।
**डीठ** *स्त्री०* नजर, कुदृष्टि।
**डीठार** *वि०* दे० 'डिठार'।
**डीबा** दे० 'डिब्बा'।
**डीर** *पु०* सीमारेखा।

**डील** *पु०* कद, उठान। **-डौल** *पु०* शरीर का विस्तार।

**डीलल** *अक०* ठेलने से जरूरत से अधिक पानी का आना।

**डीह** *पु०* उजड़ा गाँव; मिट्टी के इकट्ठा होने से बना टीला, ऊँची जमीन। *कहा०* 'डीह न तऽ डाबर'।

**डीहवार** *पु०* डीह पर निवास करने वाला देवता; क्रूर जीव का निवास स्थान (कुत्सा)।

**डीह-डाबर** *यौ०* पुराने भवन की ऊँची जमीन। खण्डहर आदि का स्थान।

**डीहबाबा** *पु०* ग्रामदेवता।

**डुकिया** *स्त्री०* छोटा डोका।

**डुकियावल** *सक०* घूँसे जमाना।

**डुगडुगावल** *सक०* डुग्गी को बजाना।

**डुगडुगी** *स्त्री०* [अनु०] आकार में छोटा नगाड़ा; डुग्गी।

**डुग्गी** *स्त्री०* चमड़े से मढ़ा छोटा बाजा।

**डुपटल** *सक०* तह लगाना।

**डुपट्टा** *पु०* दुपट्टा।

**डुबकी** *स्त्री०* पानी में डूबना; बहुत दिनों से किसी स्थान से गायब रहना। *कहा०* 'डुबकी मारि के पानी पिए खुदा के न पता चलो'।

**डुबावल** *सक०* व्यक्तियों को पानी में डुबाना; काम को चौपट करना।

**डुबान-डुबाँव** *वि०* डूबनेयोग्य पानी की गहराई।

**डुमरी** *स्त्री०* गूलर का फूल, दुर्लभ वस्तु।

**डुमरेजिन** *स्त्री०* डुमराँव नगर की देवी।

**डूँगर** *पु०* ऊँची जमीन।

**डूँगरी** *स्त्री०* छोटी पहाड़ी।

**डूँगा** *पु०* चम्मच।

**डूँडा** *पु०* एक सींगवाला बैल।

**डूगी** *स्त्री०* छोटा नगाड़ा, एक प्रकार का ढोल।

**डूबल** *अक०* पानी में गोता लगाना; मग्न होना; अस्त होना; बहुत दिनों तक नजर नहीं आना; बाढ़ के पानी में डूब जाना।

**डूबा** *पु०* पानी में डूबकर मरे व्यक्ति का प्रेत, जो प्राय: जलाशय या उसके किनारे के पेड़ पर रहता है।

**डूभा** *पु०* कटोरा; बच्चों के खाने-पीने का पात्र।

**डूमर** *पु०* एक प्रकार का मटमैले रंग का जलपक्षी।

**डूम्हल** *अक०* अपच के कारण पेट का कुछ फूलना।

**डेंगी** *स्त्री०* काठ की बनी छोटी नाव।

**डेउढ़िहा** *वि०* एक के बाद या पीछे दूसरे के रहने की स्थिति।

**डेउढ़ी** *स्त्री०* चौखट, फाटक, चौखट के नीचे का भाग।

**डेकची** *स्त्री०* तरकारी पकाने का बर्तन; पतीली।

**डेग** *पु०* दोनों पैरों के बीच की दूरी; कदम; डग।

**डेगार** *क्रि०वि०* डेग बढ़ाते हुए, तेजी से।

**डेगारे** *क्रि०वि०* तेजी से चलना।

**डेगा-डेगी** *क्रि०वि०* क्रमश: डेग बढ़ाते हुए।

**डेड़ँवा** *पु०* एक प्रकार की छोटी किन्तु पतली मछली।

**डेढ़** *वि०* एक और उसके आधे का योग; आकार में छोटा-बड़ा। *कहा०* 'डेढ़ अक्षर पढ़ लिया संतन को दुख दिया।'

**डेढ़वाई, डेढ़वार** *पु०* एक से दूसरा आकार में छोटा-बड़ा।

**डेढ़ा** *पु०* ऐसा पहाड़ा, जिसमें संख्याएँ डेढ़ से गुणित हों जैसे दो डेढ़ा तीन, तीन डेढ़ा साढ़े चार।

**डेढ़िया** *स्त्री०* स्त्रियों का अधोवस्त्र; एक लेकर डेढ़ लौटाने की रीति।
**डेफा** *पु०* रोपे हुए ऊख से निकली नई शाखा, अँखुआ।
**डेफुआ** दे० 'डेफा'।
**डेरवहिया** *पु०* डेरा में रहने वाला व्यक्ति।
**डेरा** *पु०* टिकाव, पड़ाव।
**डेराइल** *अक०* भयभीत होना, डर जाना।
**डेराभुत** *वि०* शीघ्र भयभीत होने वाला, भीरू।
**डेली** *स्त्री०* मछली या शिकार में पकड़े गए पक्षियों को रखने का बाँस का बर्तन, खाँची।
**डेव** *पु०* मकान बनाने वाले मजदूरों के बैठने के लिए बाँस के खम्भे पर दी गई बाँस की चाली।
**डेवढ़** *वि०* आकार में एक से दूसरा छोटा या बड़ा असमान; डेढ़गुना।
**डेवढ़ा** *वि०* डेढ़गुना।
**डेवढ़ी** *स्त्री०* सम्पन्न व्यक्ति का कोठा और उससे संलग्न जमीन आदि; ड्योढ़ी।
**डेवल** *अक०* कूदना (मछली)।
**डेवा** *पु०* पानी के बहाव को रोककर एक तरफ कपड़ा बाँधा जाता है, जिसमें मछलियाँ कूदकर पड़ जाती हैं।
**डेस्क** *पु०* [अं०] मेज।
**डेहरी** *स्त्री०* अन्न रखने के लिए मिट्टी की बनी बखारी; देहली।
**डेहुँगी** *स्त्री०* टहनी, डाली।
**डैन** *पु०* पक्षियों के पंख, डैना।
**डोंगा** *पु०* बड़ी नाव।
**डोंगी** दे० 'डेंगी'।
**डोंड़** *पु०* विषहीन सर्प, जो पानी में रहता है।
**डोई** *स्त्री०* काठ की कलछी, लकड़ी का चम्मच।
**डोकनी** *स्त्री०* काठ की कटोरी।
**डोकल** *सक०* सूप से फटककर अनाज से धूल निकालना।
**डोका** *पु०* कटोरानुमा बड़ा बर्तन।
**डोड़हा** *पु०* दे० 'डोंड़'।
**डोड़ा** *पु०* धागा।
**डोभ** *पु०* पानी में डूबी हुई फसल।
**डोभल** *सक०* बीज को खेत में गाड़ते हुए रोपना।
**डोभिआवल** *सक०* बीज को खुरपी के सहारे खेत में डालना।
**डोम** *पु०* हिन्दुओं की एक श्रेणी की जाति, जो बाँस की दौरी, सूप आदि बनाती है। *उदा०* 'डोम हारे अघोरी से'।
**डोमकच** *पु०* वह लोकनृत्य, जिसे गाँव की स्त्रियाँ पुरुषों के बारात में चले जाने के बाद रतजगा के लिए खेलती हैं। *उदा०* 'अनारकलिया डोमनी के डोम कहाँ गइले, डोम गइले भोज में ओतही लोभइले।'
**डोमकौवा** *पु०* बड़ा और बहुत काला कौवा।
**डोमघाउच** *पु०* डोम की तरह हल्ला करने का कार्य।
**डोमड़ा** दे० 'डोम'।
**डोमा डिगरी** *स्त्री०* झगड़ा, गाली-गलौज।
**डोर** *पु०* रस्सी, धागा, तागा।
**डोरल** *सक०* बकरी, बछड़े को चरने के लिए लम्बी रस्सी में बाँधना।
**डोरा** *पु०* तागा, धागा; आँखों की महीन लाल नसें; स्नेह-सूत्र, प्रेम का बन्धन।
**डोरिया** *पु०* धारीदार कपड़ा।
**डोरियावल** *सक०* पशुओं को रस्सी बाँधकर ले जाना।
**डोरिहार** *पु०* पटवा।
**डोरी** *स्त्री०* पतली रस्सी।
**डोरीआ** दे० 'डोरिया'।

**डोरे** *अव्य०* साथ-साथ।
**डोल** *पु०* [सं० दोल] लोहे का गोल बर्तन, हिण्डोला, झूला; हलचल।
**डोलची** *स्त्री०* छोटा डोल।
**डोल-डाल** *पु०* शौच की स्थिति; चलना-फिरना।
**डोल माल** *पु०* इधर-उधर।
**डोलल** *अक०* हिलना, इधर-उधर घूमना।
**डोला** *पु०* विदाई के समय जिस सवारी से दुल्हन चलती है, पालकी, खड़खड़िया। *कहा०* 'डोला न कँहार बीबी है तैयार।' **-फनावल** *मुहा०* विवाह कर ले जाना।
**डोलावल** *सक०* हिलाना।
**डोली** *स्त्री०* पालकी।
**डौल** *पु०* ढाँचा, ढब; गहने। **-डाल** *पु०* पाखाना। **-दार** *वि०* सुडौल, सुन्दर।
**ड्यूटी** *स्त्री०* [अं०] कर्त्तव्य; कर्म; चुंगी।
**ड्योढ़ा** *वि०* दे० 'डेढ़ा'।
**ड्योढ़ी** *स्त्री०* दहलीज; पौरी। **-वान** *पु०* द्वारपाल।
**ड्राइंग** *स्त्री०* [अं०] चित्र बनाने की कला। **- रूम** *पु०* बैठक।
**ड्राइवर** *पु०* [अं०] गाड़ी चलाने वाला।
**ड्रामा** *पु०* [अं०] नाटक।
**ड्रिल** *स्त्री०* [अं०] कवायद।
**ड्रेस** *पु०* [अं०] पोशाक, वेष-भूषा।

❑

# ढ

**ढ** देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का चौथा अक्षर, जिसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

**ढँउचा** *पु०* साढ़े तीन से गुणित पहाड़ा।

**ढँकन** *पु०* ढक्कन।

**ढँकल** *सक०* ढँकना।

**ढंक** *पु०* पलाश, ढाक।

**ढंग** *पु०* तरीका, प्रणाली, शैली, युक्ति, उपाय, उचित रास्ता।

**ढंगी** *वि०* दूर्त, चालाक।

**ढँढरच** *स्त्री०* ढोंग, पाखण्ड।

**ढँढार** *वि०* बेडौल।

**ढँढोर** *पु०* आग की लपट।

**ढँढोरची** *पु०* मुनादी करने वाला, डुग्गी पीटने वाला।

**ढँढोरल** *सक०* सक० ढूँढना।

**ढँढोरा** *पु०* डुग्गी। **-पीटल** *मुहा०* घोषित करना।

**ढँपना** *पु०* ढक्कन।

**ढँपल** *सक०* ढकना।

**ढक** *पु०* ढीलापन, पहिए को कसते समय ढीलापन रहने की स्थिति। *वि०* वह आदमी जो कार्य को व्यवस्थित ढंग से नहीं करता हो।

**ढकनपोय** *पु०* बड़ा पत्ता वाला पोय का साग।

**ढकना** *पु०* तोपना, ढक्कन, ढाँकने की वस्तु। *कहा०* 'ढकना कोंहार के घी जजमान के स्वाहा स्वाहा।'

**ढकर-ढकर** *क्रि०वि०* [अनु०] ढीला-ढाला रहने की स्थिति में उत्पन्न आवाज।

**ढकर-पँइच** *पु०* [यौ०] जोड़-तोड़।

**ढकचल** *अक०* कै करना; बगैर लिये देना; हिलना; डकारना।

**ढकचावल** *सक०* किवाड़ पर धक्का देना।

**ढकना** *पु०* ढक्कन।

**ढकनी** *स्त्री०* ढकना का छोटा रूप।

**ढकिया** *स्त्री०* एक तरह का सींक से बना बर्तन।

**ढकेलल** *सक०* धक्का देकर आगे बढ़ना।

**ढकोसला** *पु०* [हिं० ढंग + सं० कौशलं] आडम्बर, पाखण्ड।

**ढगड़िआवल** *सक०* ढेर करना।

**ढट्ठा** *पु०* मुड़िया

**ढठर** *पु०* घेरावा, बाँस बाँध कर बनाया गया घेरा।

**ढठल** *अक०* डटे रहना।

**ढठ्ठा** *पु०* मकई का डण्ठल।

**ढढ़ाइल** *अक०* पौधे का बहुत बढ़ जाना।

**ढड़ा** *वि०* अनावश्यक विस्तार वाला।

**ढनमन** *पु०* बच्चों के चलने और गिरने का कार्य।

**ढनमनाइल** *अक०* लुढ़कना।

**ढप** *पु०* डफ।

**ढपल** *अक०* छिपा होना।

**ढपला** *पु०* डफला।

**ढपली** *स्त्री०* डफली।

**ढब** *पु०* आदत, ढंग; बनावट।

**ढबढबाइल** *अक०* दस्तक देना; ढोलक बजाना।

**ढब-ढब** *पु०* [अनु०] ढोलक पर चोट देने से निकली आवाज।

**ढबरा** *वि०* मटमैला।

**ढबरी** *स्त्री०* ढिबरी।

**ढबाइल** *अक०* छिपकर बैठना।

**ढबुआ** *पु०* पैसा।

**ढम-ढम** *पु०* ढोल की ध्वनि।

**ढमलिआइल** *अक०* चलने के क्रम में गिर जाना।

**ढरकल** *अक०* नीचे की ओर गिरना।
**ढरकाँऊ** *वि०* ढालू।
**ढरका** *पु०* बाँस की नली, जिससे चौपायों को तेल या दवा पिलाई जाती है, काँड़ी; आँख से पानी गिरने का रोग।
**ढरकावल** *सक०* किसी तरलपदार्थ को ऊपर से नीचे की ओर गिराना।
**ढरकी** *स्त्री०* जुलाहे द्वारा कपड़ा बुनने का औजार, भरनी।
**ढरकीला** *वि०* लुढ़कने वाला।
**ढरकौँहाँ** *वि०* ढरक जाने वाला, अनुकूल।
**ढरन** *वि०* दया-भाव; झुका होना।
**ढरल** *अक०* आँखों से आँसू का गिरना।
**ढरुआ** *वि०* ढाला हुआ (साँचे में)।
**ढर्रा** *पु०* ढंग, काम करने की शैली, आदत; ऐंची आँख वाला बैल।
**ढलई** *स्त्री०* एक तरह की मछली।
**ढलईया** *पु०* ढलाई।
**ढलल** *अक०* झुकाव होना।
**ढलोल** *वि०* ढीला।
**ढलवाँ** *दे०* 'ढरकाऊँ'।
**ढहल** *अक०* [सं० ध्वसनं] ध्वस्त होना, गिर जाना। **-घर** *पु०* खँडहर।
**ढहलेल** *वि०* मूर्ख, विवेकहीन।
**ढहकल** *अक०* जोर-जोर से बोलना; मेघ की गर्जना।
**ढहिआइल** *अक०* गर्जन की तरह आवाज करना।
**ढाँकल** *अक०* [सं० ढक्क = छिपाव] तोपना, ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर ओट करना, ढाँपल।
**ढाड़ा** *पु०* ढीला गोबर।
**ढाँप** *पु०* धोखा, प्रपंच।
**ढाँसल** *अक०* जोर-जोर से खाँसना।
**ढाँसी** *स्त्री०* एक प्रकार की कफ की बीमारी।
**ढाई** *वि०* अढ़ाई, दो और आधा।
**ढाक** *पु०* बड़े आकार का ढोल, बड़े पत्ता वाला एक वृक्ष, पलास का पेड़। *कहा०* 'ढाक के तीन पात'।
**ढाका** *स्त्री०* बाँस की बनी बड़ी टोकरी।
**ढाठ** *पु०* घेरावा, बाँस की फट्टी का चचरा; बाड़ा पशुओं का कैदखाना।
**ढाठा** *पु०* मक्के की फसल का डण्ठल।
**ढाठी** *स्त्री०* चचरा को खड़ाकर अवरोध पैदा करने का काम।
**ढाढस दिहल** *सक०* सान्त्वना देना, धैर्य दिलाना।
**ढाढ़ू** *पु०* हिमवात, बर्फीली हवा।
**ढाब** *पु०* नदी के बगल की भूमि, जो वर्षा में भर जाती है, नीची जमीन।
**ढाबा** *पु०* रोटी-दाल आदि बिकने का स्थान, होटल; सिर से सिर पर टक्कर मारने का काम।
**ढाबुस** *पु०* बड़ा मेढ़क।
**ढाभ** *पु०* पुतरा।
**ढारल** *अक०* तरल पदार्थ को किसी एक बर्तन से दूसरे बर्तन में डालना।
**ढांरस** *पु०* तसल्ली, दिलासा, ढाँढ़स।
**ढारा** *स्त्री०* चट्टी का बिछावन।
**ढाल** *स्त्री०* [सं० धार:] तेज हथियार के आघात को रोकने का उपकरण; नीची होती जमीन।
**ढालल** *सक०* किसी तरल पदार्थ को बर्तन में ढालना।
**ढाला** *पु०* सुतरी का बना बड़ा उपकरण, जिसमें अनाज रखकर लाया जाता है; रेल की गुमटी।
**ढालो** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**ढाह** *पु०* नदी का ऊँचा किनारा।
**ढाहल** *अक०* दीवार, मकान आदि को गिरवाना।

**ढाहम ढाह** *पु०* [अनु०] मारपीट में लाठी चलने की आवाज।
**ढाही** *स्त्री०* पशुओं के सींग से किया गया आघात।
**ढिंढ़** *पु०* गर्भ, बड़ा पेट।
**ढिढ़ार** *वि०* जिसका पेट आगे की ओर निकला हो।
**ढिढ़ोरा** *पु०* ढोल की आवाज से किसी बात की घोषणा।
**ढिठाई** *स्त्री०* निर्भयता, निडरता।
**ढिबरी** *स्त्री०* चिराग, दीया, दीपक।
**ढिमका** *पु०* टीला, ऊँची जगह।
**ढिमलाइल** *अक०* जमीन पर लुढ़कना।
**ढिरकाह** *पु०* जिसका पेट निकला हो।
**ढिलाई** *स्त्री०* किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने का काम।
**ढिसरल** *अक०* फिसलना।
**ढींगर** *पु०* लम्बा चौड़ा व्यक्ति, जार।
**ढींढ़** *पु०* गर्भ, बड़ा पेट।
**ढी** *स्त्री०* नदी, नालों का ऊँचा किनारा।
**ढीच** *स्त्री०* कूबड़।
**ढीठ** *वि०* [सं० धृष्ट:] निडर; धृष्ट, बेअदब।
**ढीढ़** *स्त्री०* गर्भवती स्त्री का बाहर निकला पेट, गर्भ।
**ढीया** *स्त्री०* मिट्टी का एक बर्तन।
**ढील** *पु०* जूँ, बाल में रहने वाला छोटा कीड़ा।
**ढीलल** *सक०* छूट देना, किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना, स्वतन्त्र करना।
**ढीला** *पु०* उपयुक्त आकार से बड़ा, पतला; धीमा, शान्त।
**ढीह** *पु०* टीला, ढूह।
**ढुंढ** *पु०* ठग, उचक्का।
**ढूँढवावल** *सक०* खोज कराना, पता लगाना।
**ढुकल** *अक०* घुसना, प्रवेश करना।
**ढुकावल** *अक०* घुसेड़ना, घुसाना।
**ढुका लागल** *अक०* छिपकर किसी को देखना।
**ढुटेवा** *पु०* वह छोटा लड़का, जो किसी के काम में सहायता पहुँचाता है।
**ढुढ़ल** *अक०* खोजना।
**ढुनमुन** *पु०* छोटे बच्चों की गतिविधि देखने में शोभन, सुन्दर बालक।
**ढुरहुर** *वि०* चिकना।
**ढुरुकल** *अक०* लुढ़कना, गिरना; किसी व्यक्ति पर प्रसन्न होना।
**ढुरुका** *अक०* किसी बर्तन में रखे द्रव्य पदार्थ को पीने के लिए मुँह में लगाना।
**ढुलकल** *अक०* फिसल कर गिरना।
**ढुलढुल** *वि०* लुटकनेवाला।
**ढुलमुल** *वि०* शिथिल *उदा०* 'ढुलमुल बैट कुदारी के हँसके बोलल नारी से हँसके मांगल दामा ई तीनो काम निकामा।'
**ढुलवाई** *स्त्री०* ढोने का काम।
**ढुलाई** *स्त्री०* ढोने की क्रिया।
**ढुंका** *पु०* कुछ देखने-सुनने या किसी को पकड़ने हेतु चुपचाप आड़ में छिपने का काम।
**ढूँढ़** *स्त्री०* खोज, तलाश।
**ढूलल** *अक०* जमीन से नीचे की ओर खिसकना।
**ढूह** *पु०* मिट्टी का टीला, भूमि का ऊँचा भाग।
**ढूहा** *पु०* टीला।
**ढेँक** *स्त्री०* एक प्रकार का पक्षी।
**ढेंकली** *स्त्री०* सिंचाई हेतु पानी निकालने का उपकरण, धान कूटने का यंत्र।
**ढेँका** *पु०* बड़ी ढेँकी।
**ढेंकी** *स्त्री०* धान कूटने का काठ का बना एक उपकरण, जिसे पैरों से चलाया जाता है, सिंचाई का साधन।

**ढेकरल** *अक०* भरपेट खाने के बाद ध्वनि के साथ मुँह से हवा का निकलना, डकारना।
**ढेकार** *पु०* पेट की वायु का मुँह से शब्द के साथ बाहर निकलने की क्रिया, डकार।
**ढेकुल** *पु०* कुएँ से पानी निकालने का काठ का उपकरण।
**ढकुला** *पु०* छोटा लाठा।
**ढेढ़र** *पु०* आँख में बड़ी-सी फुल्ली।
**ढेढ़िआइल** *अक०* फलदार फसल में छीमी लगाना।
**ढेढ़ी** *स्त्री०* छीमी, फली।
**ढेढुकी** *स्त्री०* बाहर की ओर निकला हुआ छोटा पेट।
**ढेड़ी** *स्त्री०* थोक, समूह; एक जगह इक्कट्ठा की हुई वस्तु।
**ढेपा** *पु०* ढेला।
**ढेब** *पु०* ढेर, राशि।
**ढेबुआ** *पु०* पैसा, ताँबे का मुस्लिम युग का सिक्का। *उदा०* 'ढेबुआ देके दुख बेसाहऽ'।
**ढेर** *पु०* राशि, अटाला, अम्बार, अधिक। *उदा०* 'ढेर जोगी मठ के उजाड़'।
**ढेरिआवल** *सक०* इकट्ठा करना, ढेर लगाना।
**ढेरी** *स्त्री०* ढेर, राशि।
**ढेलवाही** *स्त्री०* लगातार ढेला फेंकने का कार्य।
**ढेलवास** *पु०* ढेला फेंकने की रस्सी या चमड़े का उपकरण, गोफना।
**ढेला** दे० 'ढेपा'।
**ढेसरावल** *सक०* ढिठाईपूर्वक कहना।
**ढेसराइल** *अक०* छीमी वाले अन्न का अधपका होना।
**ढेह** *पु०* ढेर, ढेरी।
**ढेहिआवल** *सक०* ढेर लगाना।
**ढेही** *अक०* पानी का जोर से गिरना और उससे आवाज होना।
**ढैया** *स्त्री०* ढाई सेर वजन का एक तौल; ढाई गुणित पहाड़ा।
**ढोंग** *पु०* आडम्बर।
**ढोंगा** *पु०* सामान रखने का कागज का बना थैला।
**ढोंगी** *वि०* पाखण्डी, ढकोसलेबाज।
**ढोअल** *अक०* ढोना।
**ढोकरल** *अक०* पीए हुए पानी को उगल देना।
**ढोका** *पु०* मिट्टी या पत्थर का टुकड़ा।
**ढोड़ी** *स्त्री०* नाभि।
**ढोढ़ा** *पु०* वह व्यक्ति, जिसकी नाभि ऊँची हो; पतला गोबर करना (बैलों का)।
**ढोढ़िला** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसका उपयोग मौर बनाने में होता है।
**ढोढ़ी** दे० 'ढोड़ी' *कहा०* 'ढोढ़ी में दम ना बजार में धक्का'।
**ढोर** *पु०* पालतू मवेशी, पशु; चौपाया।
**ढोल** *पु०* बड़ा ढोलक।
**ढोलक** *पु०* छोटा ढोलक। *कहा०* 'ढोलक न झाल चल फगुआ गावे'।
**ढोलकवाह** *वि०* ढोल बजाने वाला।
**ढोलकिया** *वि०* ढोल बजाने में निपुण व्यक्ति।
**ढोलना** *पु०* एक मांगलिक आभूषण-विशेष।
**ढोलनी** *स्त्री०* बच्चों का झूला, छोटा पलना।
**ढोला** *पु०* नल-दमयन्ती गाथा का नायक जिसे राजा ढोलन भी कहते हैं; क्रीड़ा; एक प्रकार का गीत।
**ढोलकिया** *पु०* ढोल बजाने वाला।
**ढोली** *स्त्री०* दो सौ पान की पत्तियों की गड्डी।
**ढोबा** *पु०* ढोए जाने की क्रिया। *मुहा०* 'ढोबे के टोकरी गावे के गीत'।
**ढोवाई** *स्त्री०* ढुलाई।
**ढौँचा** *पु०* पहाड़ा (साढ़े चार गुने का)।
**ढौँसल** *अक०* धूमधाम मचाना।
**ढौंग** *स्त्री०* धुन, ढंग; लगन।

# त

**त** हिन्दी के व्यंजन वर्णों के तवर्ग का पहला वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
**तंक** *पु०* [सं०] भय, कष्टमय जीवन, छेनी।
**तंकन** *पु०* [सं०] कष्टमय जीवन।
**तंग** *पु०* [फा०] जीन कसने की पेटी, घोड़े के पीठ पर कसी जाने वाली काठी। *वि०* चुस्त, संकीर्ण, कसा हुआ। **-दस्त** *वि०* जिसके पास पैसे की कमी हो। **-दस्ती** *स्त्री०* अर्थकष्ट। **-हाल** *वि०* परेशान। **-कइल** *मुहा०* हैरान करना। **-भइल** *मुहा०* परेशान करना।
**तंगी** *स्त्री०* परेशानी; चुस्ती; गरीबी।
**तंज** *पु०* कटाक्ष।
**तंजेब** *स्त्री०* तनजेब।
**तंडुल** *पु०* [सं०] धान्य, चावल।
**तंत** *पु०* ताँत; तार वाला बाजा। **-मंत** *पु०* तंत्र-मंत्र।
**तंतर** *पु०* टोना, टोटका।
**तंतरी** *पु०* तारवाला बाजा।
**तँतवा** *पु०* कपड़ा बुनने वाली एक जाति।
**तंतु** *पु०* [सं०] सूत, तागा।
**तंदरा** *स्त्री०* तन्द्रा।
**तंदुरुस्त** *वि०* [फा०] स्वस्थ।
**तंदुरुस्ती** *स्त्री०* आरोग्य।
**तंदुल** *पु०* तण्डुल।
**तंदूर** *पु०* रोटी पकाने का चूल्हा।
**तंबाकू** *पु०* सुर्ती, जर्दा।
**तंबिया** *पु०* ताँबे का छोटा तसला।
**तंबू** *पु०* खेमा, शामियाना।
**तंबूरा** *पु०* सितार जैसा बाजा, तानपूरा।
**तंबूल** *पु०* पान।
**तंबोल** *पु०* दे० 'तंबूल'।
**तंबोलिन** *स्त्री०* पान बेचने वाली।
**तंबोली** *पु०* पान बेचने वाला।
**तँवाइल** *अक०* पड़ा रह जाना।
**त** *अ०* तो।
**तइसन** *क्रि०वि०* वैसा।
**तइसा** *वि०* वैसा।
**तइसे** *क्रि०वि०* उसी प्रकार से, तैसे।
**तइयो** *क्रि०वि०* तथापि, तो भी।
**तइयार** *पु०* तत्पर रहना, जाने के लिए वस्त्रादि पहन लेना।
**तई** *स्त्री०* थाली के आकार की छिछली कड़ाही।
**तई-ताफरी** *स्त्री०* भूखा, दुखिया।
**तउजी** *पु०* गाँव का नम्बर, जो कलक्टरी में दर्ज रहता है, तौजी।
**तउल** *पु०* तौल, नाप।
**तउलल** *सक०* तौलना।
**तउलिया** *पु०* मोटे सूत का गमछा, देह पोंछना।
**तउला** *पु०* मिट्टी की हाँड़ी, जिसमें दही रखा जाता है।
**तउलहर** *वि०* जवान बैल।
**तउलल** *अक०* जोखना, नापना।
**तक** *अव्य०* आखिरी समय तक।
**तकदीर** *स्त्री०* [अ०] किस्मत, भाग्य। उदा० 'तकदीर लिखल तदबीर का करी?' **-के खेल** *मुहा०* भाग्य के करिश्मे। **-जागल** *मुहा०* भाग्योदय। **-फूटल** *मुहा०* किस्मत खराब होना।
**तकमा** *पु०* तमगा।
**तकरार** *स्त्री०* [अ०] बार-बार कहना, झगड़ा।
**तकरीर** *स्त्री०* [अ०] बातचीत, भाषण।

**तकला** *पु०* चरखा में लगी लोहे की सलाई, जिस पर सूत लपेटा जाता है, टेकुआ।
**तकली** *स्त्री०* छोटा तकला।
**तकलीफ** *स्त्री०* [अ०] क्लेश, दुःख।
**तकाई** *स्त्री०* ताकने की क्रिया।
**तकाजा** *पु०* [अ०] तगादा, पावना।
**तकावल** *अक०* ताकने के लिए कहना।
**तकिया** *पु०* [फा०] गोल चौकोर थैला, जिसमें रूई या हवा भरी होती है और जो सोते समय सर के नीचे रखा जाता है।
**तकुआ** *पु०* टेकुआ।
**तकुली** *स्त्री०* सूत कातने का एक उपकरण।
**तक्कड़** *पु०* [सं० तक्रम्]मट्ठा।
**तक्की** *स्त्री०* टकटकी।
**तखत** *पु०* सिंहासन, लकड़ी की पटरी।
**तखता** *पु०* लकड़ी का चौरस लम्बा पटरा, बड़ी चौकी।
**तगड़-बगड़** *पु० यौ०* उल्टा-सीधा काम, बेकार का काम।
**तगड़ा** *वि०* मोटा-ताजा, पुष्ट, बलवान।
**तगड़ी** *स्त्री०* कमर का एक आभूषण।
**तगवा** *वि०* पतला एवं लम्बे आकार का धागा।
**तगही** *स्त्री०* पशुओं को बाँधने की रस्सी।
**तगाड़** *पु०* [सं० तड़ागः] हौज, घेरा।
**तगादा कइल** *अक०* किसी वस्तु को लेने के लिए बार-बार याद दिलाना।
**तगार** *पु०* दे 'तगाड़'।
**तगावी** *स्त्री०* अग्रिम दी जाने वाली धनराशि।
**तगाही** *स्त्री०* छोटा तगार।
**तचा** *पु०* चमड़ा, त्वचा।
**तची** *स्त्री०* चमड़ी।
**तज** *पु०* एक प्रकार का सुगन्धित पौधा।
**तजपात** *पु०* मसाला के रूप में व्यवहृत एक प्रकार का पत्ता।
**तजबीज** *पु०* [अ०] विवेक, अनुमान, समझ, निर्णय।
**तजुरत** *पु०* [फा०] विशेष व्यवस्था, इन्तजाम।
**तजुरबा** *पु०* [अ०] जानकारी, अनुभव।
**तजेआ** *पु०* मुहर्रम में कमची और कागज की बनी मकबरे की आकृति।
**तट** *पु०* [सं० तटः] किनारा, कूल।
**तटका** *वि०* ताजा।
**तटनी** *स्त्री०* तटिनी।
**तटी** *स्त्री०* तीर, नदी।
**तड़** *अव्य०* तुरत।
**तड़क** *पु०* छौंकने का कार्य।
**तड़कल** *अक०* बिजली का जोर से गरजना; आवेश में आना, झुँझला उठना; दुहते समय गाय या भैंस का कूद जाना।
**तड़कुल** *पु०* ताड़ का पेड़।
**तड़के** *पु०* भोर में, खूब सबेरे।
**तड़क्का** *क्रि०वि०* तुरत, शीघ्र।
**तड़तड़** *पु०* लगातार तड़तड़ शब्द की आवाज। तेज आवाज (लाठी आदि की)।
**तड़तड़ाइल** *अक०* तड़-तड़ आवाज करना।
**तड़पल** *अक०* फाँदना; तड़पना, कष्ट के कारण छटपटाना।
**तड़फड़** *क्रि०वि०* दुःख के कारण बेचैन होना।
**तड़ाक** *क्रि०वि०* जल्दी, शीघ्र, तुरन्त।
**तड़ातड़** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से, अचानक।
**तड़ातड़ी** *क्रि०वि०* लगातार, शीघ्रता से।
**तड़िआवल** *सक०* थप्पड़ मारना; बार-बार ताकीद करना।
**तड़ी** *स्त्री०* थप्पड़, चपत।
**तड़ेचल** *सक०* ताकीद करना।
**तड़ेरल** *अक०* क्रोधभरी आँखों से देखना।

**ततकाल** *क्रि०वि०* तुरन्त।
**ततना** *क्रि०वि०* उतना।
**ततबीर** *स्त्री०* [अ० तदबीर] युक्ति।
**ततर** *क्रि०वि०* जहाँ-तहाँ।
**ततवल** *सक०* गर्म करना।
**ततहत** *क्रि०वि०* उतना बड़ा।
**ततावल** *सक०* गर्म करना।
**ततेक** *वि०* उतना, कितना।
**तथा** *अव्य०* इसी तरह; और।
**तथी** *अव्य०* वही, उसे ही।
**तदात** *वि०* [फा०] अधिक संख्या, तादात।
**तन** *पु०* शरीर। *कहा०* 'तन के कपड़ा न पेट के रोटी'।
**तनका** *वि०* थोड़ा।
**तनको** *क्रि०वि०* थोड़ा भी, स्वल्प, थोड़ा।
**तनखाह** *स्त्री०* [फा०] वेतन, तलब।
**तनतन** *क्रि०वि०* कड़े दर्द के साथ।
**तनतनावल-तनतनाइल** *अक०* क्रुद्ध होना।
**तनतनी** *स्त्री०* क्रोध।
**तनदेही** *स्त्री०* [फा०] मुस्तैद।
**तनल** *अक०* सीधा खड़ा होना; डट जाना।
**तनवावल** *सक०* खड़ा करना।
**तनहा** *वि०* [फा०] अकेला।
**तनहाई** *स्त्री०* अकेला।
**तना** *पु०* [फा०] धड़।
**तनाक** *अव्य०* जरा-सा।
**तनाजा** पु० [अ०] बैर, झगड़ा; वह जमीन जिस पर विवाद हो।
**तनि** *वि०* थोड़ा।
**तनिका** [सं० तनुक] दे० 'तनका'।
**तनी** *स्त्री०* ताँति, डोरी, सूत; तनिक।
**तनी सा** *क्रि०वि०* थोड़ा सा।
**तनुक** *वि०* [सं०] पतला, छोटा।
**तनूर** *पु०* तन्दूर।
**तनेना** *वि०* तिरछा, खींचा हुआ।
**तप** *पु०* तपस्या, साधना; नियम। *मुहा०* 'तप चूक राज आ राज, चूक नरक'।
**तपखी** *स्त्री०* कार्तिक में होने वाली उड़द।
**तपत** *वि०* गर्म, तप्त।
**तपता** *स्त्री०* तापने की सामग्री।
**तपन** *स्त्री०* ताप, जलन।
**तपरी** *स्त्री०* उस बार।
**तपल-तपिस** *अक०* बुखार से शरीर का गर्म होना; गर्मी।
**तपसी** *वि०* तपस्या करने वाला, तपस्वी।
**तपा** *पु०* ग्रीष्म ऋतु; लूक।
**तपाक** *पु०* तेजी, फुर्ती।
**तपावल** *सक०* गर्म करना।
**तपिस** *स्त्री०* गर्मी, तपन।
**तपी** *पु०* [सं०] तपस्वी। *वि०* तप करने वाला।
**तफड़ी** *स्त्री०* मजाक, दिल्लगी।
**तफतीस** *स्त्री०* [अ०] छान-बीन, जाँच-पड़ताल।
**तफरका** *पु०* [अ०] भेदभाव, फूट।
**तफरी** *स्त्री०* हँसी, मजाक।
**तफसील** *स्त्री०* [अ०] ब्यौरा, हिसाब।
**तफाउत** *पु०* [अ०] झगड़ा, झंझट।
**तब** *अव्य०* [सं० तदा] उस समय, उसके बाद, इस कारण। *मुहा०* 'तब रहनी ढेलिया अब ढेलाचन्द'।
**तबक** *पु०* [अ०] एक प्रकार का गले का आभूषण; सोने-चाँदी का बरक।
**तबका** *पु०* आदमियों का गिरोह; स्तर।
**तबकी** *क्रि०वि०* उस बार, उस समय।
**तबड़ाक** *पु०* थप्पड़, चपत।
**तबद** *पु०* पीड़ा, व्यथा, तकलीफ।
**तबदार** *पु०* [अ०] नौकर।
**तबलची** *पु०* तबला बजाने वाला, तबलिया।
**तबला** *पु०* एक प्रकार का बाजा।

**तबाह** *पु०* [फा०] परेशान, हैरान।
**तबीयत** *पु०* [अ०] मन, दिल।
**तबीज** *पु०* [फा०] ताबीज, जन्तर।
**तबेला** *पु०* पानी रखने का एक प्रकार का पात्र; अस्तबल।
**तबो** *क्रि०वि०* तो भी।
**तभी** *अव्य०* उसी समय, इसीलिए।
**तमंचा** *पु०* [फा०] पिस्तौल।
**तम** *पु०* [सं०] अन्धकार।
**तमक** *पु०* आवेश, रोष।
**तमकल** *अक०* आवेश में आना, क्रुद्ध होना।
**तमकी** दे० 'तबकी'।
**तमघइल** *पु०* ताँबे का घड़ा।
**तमतमाइल** *अक०* चेहरे का क्रोध से लाल होना।
**तमनी** *स्त्री०* कोड़नी।
**तमसगीर** *पु०* [फा०] तमाशबीन।
**तमहा** *पु०* ताँबे का घड़ा।
**तमाई** *स्त्री०* खेत जोतने के पहले उसमें से घास आदि निकालने की क्रिया।
**तमाकू** *पु०* [अ०] हुक्का में पीया जाने वाला तम्बाकू।
**तमाचा** *पु०* थप्पड़, झापड़।
**तमादी** *स्त्री०* [अ०] निश्चित समय का बीत जाना।
**तमाम** *वि०* [अ०] सारा, कुल, खतम।
**तमासा** *पु०* [फा०] मन बहलाने वाला कार्य या दृश्य।
**तमिआ** *पु०* उबलते हुए ईख के रस को चलाने का काठ का पात्र।
**तमिया** *स्त्री०* तमाचा।
**तमीज** *पु०* [अ०] विवेक, समझदारी।
**तमू** *पु०* [फा०] शिविर, खेमा, तम्बू।
**तमेचा** *पु०* थप्पड़।
**तमोली** *स्त्री०* पान बेचने वाली एक जाति, बरई।
**तय** *वि०* [अ०] पूरा किया हुआ, निर्णीत।
**तयना** *अक०* तपना, गरम होना।
**तयफा** *स्त्री०* [अ० तवायफ] वेश्या, रण्डी।
**तर** *वि०* [फा०] गीला, भींगा हुआ। *अव्य०* नीचे। *मुहा०* 'तर तेल ना ऊपर नून।'
**तरइयाँ** *पु०* तारों के बीच छिटके बादल।
**तरइया-पाटन** *पु०* पटवन का पानी खेत में बराबर लगाने की स्थिति।
**तरई** *स्त्री०* छोटी चटाई; नक्षत्र, सितारा।
**तर-ऊपर** *क्रि०वि०* एक के ऊपर दूसरा, नीचे-ऊपर।
**तरक** *स्त्री०* फसल बोने या रोपने का सही समय।
**तरकल** *अक०* खेत का सूख जाना, फट जाना।
**तरका** *पु०* मृत व्यक्ति की छोड़ी हुई सम्पत्ति, जो वारिस को मिलती है।
**तरकारी** *स्त्री०* [फा०] शाक-सब्जी।
**तरकी** *स्त्री०* कान का एक प्रकार का आभूषण।
**तरकीब** *स्त्री०* उपाय, विधि।
**तरकुल** *पु०* ताड़ का पेड़।
**तरक्की** *स्त्री०* [अ०] उन्नति, बढ़ती, पदोन्नति।
**तरख** *वि०* कड़ा वस्तु। उद्दण्ड आदमी।
**तरखा** *पु०* पानी का तेज बहाव।
**तरखाइल** *अक०* सूखकर कड़ा होना, सख्त होना।
**तरखान** *पु०* बढ़ई।
**तरखुजर** *पु०* जानवरों का रोग-विशेष।
**तरघुसका** *पु०* घूस, उत्कोच।
**तरछन** *पु०* द्रव पदार्थों के नीचे बैठी हुई मैल।

**तरछा** *पु०* फोंफले आभूषण में नीचे लगा कील।

**तरछाइल** *अक०* तेल आदि के तलछट का नीचे बैठकर उसका साफ हो जाना।

**तरछी** *स्त्री०* कुआँ खोदते समय उससे मिट्टी निकालने का बर्तन।

**तरज** *पु०* [अ०] गीत की लय, धुन, प्रकार, रीति, शैली।

**तरजनी** *स्त्री०* अँगूठे के पास की उँगली।

**तरजल** *अक०* डाँटना, बिगड़ना, क्रोधित होना।

**तरजुई** *स्त्री०* तुला, तराजू।

**तरजुमा** *पु०* [अ०] अनुवाद।

**तरझार** *पु०* पुआल या डण्ठल को दुबारा दाने के पूर्व उसको झारकर उससे दाना निकाल लेने का काम।

**तरनाइल** *अक०* क्रोधित होना।

**तरपट** स्त्री० अन्तर, बीच, भिन्नता।

**तरपन** *पु०* पितरों को पानी देने का कार्य, तिलांजलि।

**तरफ** *स्त्री०* [अ०] दिशा, ओर।

**तरफराइल** *अक०* घबड़ाना। परेशान करना।

**तरबूजा** *पु०* एक प्रकार का फल। *मुहा०* 'तरबूजा के देखके तरबूजा रंग बदले।'

**तरबेलनी** *वि०* प्रपंची स्त्री।

**तरल** *अक०* भवसागर पार उतरना, मुक्ति पाना; तेल या घी में उबालना।

**तरवन** *पु०* कान का गहना, ताटंक, तरयौना।

**तरवा** *पु०* पैर का निचला हिस्सा, तलवा।

**तरवार** *स्त्री०* तलवार।

**तरसल** *अक०* तरसना; लालायित रहना।

**तरसावल** *सक०* दिखलाकर ललचाते रहना।

**तरसों** *अव्य०* वर्त्तमान से पहले या बाद का चौथा दिन।

**तरसोआ** *पु०* कुँए के अन्दर बगल के पतले छेद, जिनसे पानी निकलता है।

**तरहत्थी** *स्त्री०* तलहत्थी, हाथ का पंजा।

**तरहरा** *पु०* [फा०] घर में बनाया गड्ढा, जिसमें कोई सामान छिपाकर रखते हैं; खत्ती।

**तरहा** *स्त्री०* घोड़े की पीठ पर रखने की पतली गद्दी।

**तराइल** *अक०* क्रुद्ध होकर बोलना।

**तराई** *स्त्री०* पहाड़ के पास की भूमि, तलहटी; चटाई।

**तराऊपरी** *स्त्री०* एक के बाद दूसरे के गिरने की स्थिति।

**तराकट** *पु०* [फा०] कमी, अभाव।

**तरान** *पु०* कई दिनों की वृष्टि के बाद उसके बन्द होने की स्थिति।

**तराबोर** *वि०* एकदम भींगा हुआ।

**तरास** *पु०* तीव्र प्यास, बार-बार प्यास लगने की स्थिति।

**तरासल** *सक०* त्रस्त करना।

**तराहि-तराहि** *अव्य०* [सं०] रक्षा करो, मदद करो।

**तरिआसोच** *पु०* गहराई में जाकर किसी बात की जाँच करना।

**तरिछन** *पु०* दही के नीचे की तरी।

**तरिवन** *पु०* कर्णफूल।

**तरिवर** *पु०* बड़ा वृक्ष।

**तरी** *स्त्री०* तौल होने के बाद नीचे का बचा अन्न।

**तरीका** *पु०* रीति, ढंग, उपाय।

**तरुआ** *पु०* तला हुआ व्यंजन; घर छाने में प्रयुक्त वह खपड़ा, जो नीचे रहता है।

**तरुआर** *पु०* एक हथियार, तलवार। *मुहा०* 'तरुआर के घाव भर जाय पर बात के ना'।

**तरुन** *वि०* युवा, चढ़ती जवानी वाला।
**तरुनाई** *स्त्री०* [सं० तरुण] युवावस्था।
**तरुनी** *स्त्री०* [सं०] युवती।
**तरे** *अव्य०* नीचे, तले।
**तरे** *पु०* प्रकार, ढंग, तरह।
**तरेआ** *पु०* मधुमक्खी की एक जाति, जो ऊँची जगह पर अपना छत्ता बनाती है।
**तरेगन** *पु०* तारा।
**तरेगनी** *स्त्री०* स्वच्छ रात्रि में उगने वाली तारिकाएँ।
**तरेरल** *सक०* क्रोध से देखना।
**तरोई** *स्त्री०* एक सब्जी।
**तरौटा** *पु०* सीक के बने बर्तन का निचला भाग या खण्ड।
**तलक** *पु०* *क्रि०वि०* तक, पर्यन्त।
**तलख** *वि०* कड़वा, तेज।
**तलतलाइल** *अक०* पैर के नीचे की वस्तु का हिलना-काँपना।
**तलफत** *अक०* तड़पना, कष्ट पाना।
**तलब** *पु०* चाह, वेतन।
**तलबाना** *पु०* [फा०] बुलाने का खर्च, जो साक्षी को बुलाने के लिए न्यायालय में जमा किया जाता है।
**तलमलाइल** *अक०* चलते समय पैरों का स्थिर नहीं पड़ना, डगमगाना।
**तलवा** *पु०* पैर के नीचे के भाग। **-चाटल** *मुहा०* अधिक खुशामद करना। **-सहलावल** *मुहा०* खुशामद करना।
**तलवार** *स्त्री०* खड्ग।
**तलसवावल** *सक०* खोजवाना।
**तला** *पु०* जूते के नीचे का चमड़ा, तलवा। तलाई स्त्री० छोटा ताल।
**तलाक** *पु०* [अ०] विवाह-विच्छेद।
**तलाची** *स्त्री०* चटाई।
**तलातल** *पु०* [सं०] सात अधोलोकों में एक।
**तलाफी** *स्त्री०* हानि का बदला।
**तलाब** *पु०* पोखरा, जलाशय, तालाब।
**तलास** *स्त्री०* खोज, तलाश।
**तलासी** *स्त्री०* खोज, चोरी गई वस्तु की खोज।
**तली** *स्त्री०* पेंदी; हथेली; गहने को कसने हेतु पीछे से लगाया जाने वाला पेंच।
**तले** *अव्य०* नीचे; तब तक। **-ऊपर** *अव्य०* एक के ऊपर दूसरा।
**तलेटी** *स्त्री०* पेंदी।
**तलैया** *स्त्री०* छोटा ताल।
**तल्ला** *पु०* मकान की छत; जूते का निचला भाग।
**तल्ली** *स्त्री०* नाक की लौंग या कर्णफूल को नीचे से फँसाए रखने वाला पेंच।
**तव** *सर्व०* [सं०] तुम्हारा।
**तवठल** *अक०* उष्णता से प्रभावित होना।
**तवन** *सर्व०* वह।
**तवल** *अक०* तप्त होना।
**तवा** *पु०* लोहे का बना वह गोला पात्र, जिस पर रोटी सेंकी जाती है।
**तवाइ** *स्त्री०* गर्मी, उष्णता।
**तवाँइल** *अक०* धरे का धरे रह जाना।
**तस** *वि०* तैसा।
**तसफिह** *पु०* [फा०] फैसला, तय, निपटारा।
**तसबीर** *स्त्री०* [अ०] चित्र।
**तसमई** *स्त्री०* दूध की खीर।
**तसर** *पु०* निम्न कोटि का रेशम, टसर।
**तसला** *पु०* [फा०] गहरा बर्तन, जिसमें रसोई बनती है। *मुहा०* 'तसला तोर कि मोर'।
**तसील** *पु०* [फा०] वसूली; राजस्व-कर्मचारी का क्षेत्र-विशेष, जहाँ वह तहसील करती है।

**तसीलदार** *पु०* कर या मालगुजारी को वसूल करने के लिए नियुक्त अधिकारी, तहसीलदार।

**तसीलल** *सक०* चन्दा; कर या मालगुजारी को वसूल करना।

**तहँवा** *क्रि०वि०* वहाँ, उसी जगह पर।

**तह** *पु०* [फा०] परत।

**तहकीकात** *स्त्री०* [अ०] जाँच-पड़ताल।

**तहखाना** *पु०* [फा०] जमीन के भीतर बना घर।

**तहजीब** *स्त्री०* [अ०] शिष्टता।

**तहतुक** *पु०* वाद-विवाद।

**तहद** *पु०* [फा०] अधीनता।

**तहमत** *पु०* लुंगी।

**तहवन** *पु०* [फा०] स्त्रियों का भीतरी वस्त्र।

**तहरी** *स्त्री०* चावल में मटर का कच्चा दाना डालकर तैयार की गई खिचड़ी।

**तहनी** *सर्व०* तुम लोग।

**तहरीर** *स्त्री०* [अ०] लेख, लिखावट; लेखन-शैली; लिखने का शुल्क।

**तहलका** *पु०* [अ०] खलबली, हलचल।

**तहसनहस** *यौ०* नष्ट-भ्रष्ट, बर्बाद।

**तहाँ** दे० 'तहँवा'।

**तहारल** *पु०* खेतों को लगातार जोतने की प्रक्रिया।

**तहिआ** *क्रि०वि०* उसी दिन, उसी समय।

**तहिआवल** *सक०* तह लगाना।

**तहीं** *अव्य०* वहीं उसी जगह पर।

**तहेंतह** *पु०* तह पर तह, परत पर परत।

**ताँगा** *पु०* घोड़े से खींची जाने वाली एक प्रकार की गाड़ी।

**ताँत** *पु०* [सं० तन्तु:] चमड़े की रस्सी।

**ताई** *स्त्री०* जेठी चाची।

**ताईद** *पु०* कचहरियों में मुकदमें की पैरवी करने वाला व्यक्ति।

**ताक** *स्त्री०* टक्कर, टकटकी; सुअवसर।

**ताकत** *पु०* बल, शक्ति।

**ताकल** *सक०* किसी ओर देखना; इन्तजार करना।

**ताकीद** *स्त्री०* [अ०] किसी काम को करने के लिए दिया गया आदेश।

**ताख** *पु०* [अ० ताक] कोई चीज रखने के लिए मकान में बनी जगह; आला।

**तागद** *पु०* [अ० *स्त्री०* ताकत] बल, शक्ति, पौरुष।

**तागपात** *पु०* विवाह में प्रयुक्त रंगीन तागा। *कहा०* 'तागपात ढोलना, हमसे ना बोलना'।

**तागल** *सक०* मोटी सिलाई करना।

**तागा** *पु०* धागा, डोरा।

**ताजबीबी** *स्त्री०* मुमताज महल, शाहजहाँ की बीबी।

**ताजखानी** *स्त्री०* तासखानी।

**ताजा** *वि०* [फा०] तुरन्त का तैयार किया हुआ भोज्य पदार्थ; तुरन्त का तोड़ा फल।

**ताजी** *वि०* [फा०] अरब का। *पु०* अरबी, घोड़ा, शिकारी कुत्ता।

**ताड़** *पु०* एक लम्बा पेड़; प्रहार। *मुहा०* 'ताड़ चढ़ले एके बात'।

**ताड़ल** *सक०* भाँपना, समझना।

**ताड़ी** *स्त्री०* ताड़ के पेड़ से निकला नशीला रस।

**तातल** *पु०* गर्म, तप्त। *मुहा०* 'तातल खाये भर नींद सोवे, ताकर दुखवा बन-बन रोवे'।

**ताथा** *पु०* बखेड़ा।

**ताथेई** *स्त्री०* नृत्य की ताल।

**तान** *स्त्री०* संगीत में द्रुत गति से किया गया स्वर का विस्तार; खिंचाव। *पु०* [सं०] विस्तार, सूत्र, ज्ञान का विषय। **-तरंग** *स्त्री०* तान की लहर। **-पूरा** *पु०* सितार के आकार का बाजा।

**तानल** *सक०* फैलाना, खींच कर फैला देना।
**ताना** *पु०* कपड़े की बुनाई में वह सूत, जो लम्बाई के बल में रहता है। **-बाना** *पु०* ताना और भरना। **-मारल** *मुहा०* चुटीली बात कहना।
**तानाशाह** *पु०* स्वेच्छाचारी शासक।
**तानी** *स्त्री०* कपड़े की लम्बाई के भाव से ताना गया सूत।
**ताप** *पु०* [सं०] गरमी, उष्णता; ज्वर। **-मान** *पु०* थर्मामीटर द्वारा मापी गई शरीर या वायुमण्डल के ताप की मात्रा। **-यंत्र** *पु०* थर्मामीटर। **-हर** *वि०* तापनाशक।
**तापल** *अक०* आग का सेवन करना।
**ताबड़** *पु०* थप्पड़।
**ताबर-तोर** *क्रि०वि०* लगातार, जल्दी-जल्दी।
**ताबूत** *पु०* [अ०] मुर्दा ले जाने वाला सन्दूक।
**तामई** *वि०* ताम्रवर्णता।
**तामल** *अक०* खेत को कुदाल आदि से कोड़ना।
**तामदान** *पु०* एक प्रकार की पालकी।
**तामा** *पु०* एक धातु, तम्बा, ताँबा।
**तामील** *स्त्री०* आज्ञा का पालन।
**तार** *पु०* धातुओं का खींचकर बनाया गया सूत। **-कमानी** *स्त्री०* नगीना काटने का धनुष सदृश औजार। **-कस** *पु०* तार खींचने वाला। **-घर** *पु०* तार भेजने का कार्यालय। **-गाट** *पु०* व्यवस्था। **-तार कइल** *मुहा०* धज्जियाँ उड़ाना। **-तार भइल** *मुहा०* चिथड़े-चिथड़े होना।
**तारन** *पु०* छप्पर में खर या खर के नीचे दिया गया कण्डा; छत, छज्जे की ढाल।
**तारपीन** *पु०* चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल।
**तारल** *अक०* मुक्ति देना, पार लगाना।
**तारा ऊपरी** *क्रि०वि०* एक के ऊपर एक, लगातार।
**तारीख** *स्त्री०* [अ०] महीने का दिन; किसी कार्य या मुकदमे के लिए निर्धारित तिथि।
**तारीफ** *वि०* प्रशंसा, बड़ाई।
**तारू** *पु०* तालु, सर्वाधिक मुलायम कपाल का भाग।
**ताल** *पु०* नाच-गान में गीत और बाजा की ध्वनि; तालाब। *कहा०* 'ताल में भोपाल ताल और सब तलैया, रानी में लक्ष्मी बाई और सब गदहिया'।
**ताला** *पु०* वह यंत्र, जो खास कुंजी से बन्द और खुलता है।
**तालाब** *पु०* पोखरा।
**तालिका** *स्त्री०* [सं०] सूची; कुन्जी।
**ताली** *स्त्री०* बन्द करने और खोलने का विशेष औजार। **-पीटल** *मुहा०* उपहास करना।
**तालीम** *स्त्री०* शिक्षा।
**तालु** *पु०* [सं०] ऊपर के दाँतों और कौने के बीच का गड्ढा।
**ताले** *क्रि०वि०* तब-तक।
**ताव** *पु०* ताप, आँच। **-आइल** *मुहा०* गरम होना। **-पर** *मुहा०* मौके पर।
**तास** *पु०* एक प्रकार का पत्ते का खेल।
**तासा** *पु०* एक प्रकार का बाजा।
**तासीर** *पु०* प्रभाव, असर।
**तिअना** *स्त्री०* तरकारी, सब्जी, *मुहा०* 'तिअना जर गइल त रह गइल मरिचाई, सब कोई मर गइल त रह गइल भउजाई।'
**तिआ** *स्त्री०* तिया।
**तिआह** *वि०* जिसका तीसरा विवाह हो।
**तिउर** *पु०* समारोहों पर जमीन में खोदा गया चूल्हा।

**तिउरा** *स्त्री०* एक प्रकार की घास।
**तिकछ** वि० तीखा, कटु, तीक्ष्ण।
**तिकड़म** *पु०* प्रपंच।
**तिकवल** *अक०* देखना, आँखें फाड़कर देखना।
**तिकावल** *अक०* गौर से देखना।
**तिकोनी** *वि०* तीन कोनों वाली।
**तिखरा** *पु०* खेत की तीसरी जुताई।
**तिखुर** *पु०* एक प्रकार की घास से निकला हुआ चावल।
**तिग्गी** *स्त्री०* घास की पत्ती; ताश की पत्ती (तीन बूँटियों वाली)।
**तिजड़ा** *पु०* हर तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
**तिजरी** *स्त्री०* तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
**तिजहर** *पु०* दिन का तीसरा पहर।
**तिजहरिया** *स्त्री०* अपराह्न।
**तिजाब** *पु०* एक प्रकार का तीखा द्रव्य, जो चमड़े को जला देता है।
**तिजारत** *पु०* व्यापार, रोजगार।
**तिजोरी** *स्त्री०* मजबूत और वजनदार लोहे का बक्सा, जिसमें रुपए-गहने रखे जाते हैं।
**तिड़ी** *स्त्री०* तिक्की।
**तिड़ी-बिड़ी** *वि०* अस्त-व्यस्त।
**तितउ** *वि०* जो शीघ्र क्षुब्ध होकर तीखी बात बोलने लगती है।
**तितावल** *अक०* थोड़ा तीखापन का अनुभव होना।
**तितिम्मा** *पु०* बखेड़ा, पाखण्ड, ढोंग।
**तितिरिआ** *वि०* तीतर का नाच (नाच)।
**तितिर-बितिर** *वि०* बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त, छिन्न-भिन्न।
**तितिर** *स्त्री०* एक पक्षी का नाम।
**तितुली** *स्त्री०* तितली।
**तिथि** *स्त्री०* हिन्दू पंचांग के अन्तर्गत दिन, तारीख।
**तिदरी** *स्त्री०* तीन द्वारों वाला (दालान)।
**तिन** *सर्व०* वह।
**तिनकल** *अक०* क्रुद्ध, नाराज होना, झल्लाना।
**तिनका** *पु०* सूखी घास का टुकड़ा।
**तिनकोनिया** *वि०* तीन कोनों का।
**तिनखुँटा** *वि०* तीन खूँटेवाला।
**तिनगिनी** *स्त्री०* खाँड़ की बनी मिठाई।
**तिनचउरी** *स्त्री०* पानी में फुलाया चावल और गुड़ का मिश्रण।
**तिनचुटिया** *पु०* काक पक्षी, कौवा; केश-सज्जा।
**तिनजाँत** *पु०* वह बड़ा कुआँ, जिसमें तीन लाठे चलाए जा सकें।
**तिनडेंगिया** *पु०* सीधी रेखा में स्थित तीन तारों का समूह।
**तिनपई** *स्त्री०* तीन पाव का बटखरा या नपना।
**तिनपतिया** *पु० वि०* तीन पत्तों का खेल; तीन पत्तों वाली घास।
**तिनपेंड़िया** *पु०* तीन रास्तों का संगम-स्थल।
**तिनपौआ** *पु०* तीन पाव, तीन पाव की तौल।
**तिनफेरवा** *पु०* विवाह की वह प्रथा, जिसके अनुसार तीन आदमी आपस में साला और बहनोई होते हैं।
**तिनबरखा** *वि०* तीन वर्ष का पुराना (चावल)।
**तिनमंजिला** वि० तीन खण्ड वाला मकान।
**तिनसज्जा** *वि०* तीन व्यक्तियों की साक्षी।
**तिनसेरा** *पु०* तीन सेर की तौल।
**तिरकंटक** *वि०* तीन काँटा वाला; बाधा।

**तिरकानी** *स्त्री०* ऐसी बर्छी, जिसमें तीन नोक हो।

**तिरखा** *पु०* प्यास, इच्छा। -**लागल** *मुहा०* बात का बुरा लगना।

**तिरछा** *वि०* जो सीधा न हो।

**तिरछोल** *वि०* दुष्ट, बदमाश।

**तिरता** *पु०* लाभ; प्राप्ति।

**तिरतिआ** *पु०* कृष्ण या शुक्ल पक्ष की तीसरी तिथि।

**तिरथा-तिरथी** *स्त्री०* मेला।

**तिरना** *पु०* एक प्रकार का लाल फूल, जो सोमेश्वर घाटी में पाया जाता है।

**तिरपट** *वि०* बेमेल।

**तिरपटाह** *पु०* ढरकना (खेत)।

**तिरपन** *वि०* पचास और तीन की संख्या।

**तिरपाल** *पु०* रोगन चढ़ाया हुआ टाट।

**तिरपित** *वि०* सन्तुष्ट। *उदा०* 'अन्हरी बिलाई माड़े तिरपित'।

**तिरफल** *पु०* आँवला, हर्रे और बहेड़ा के योग से बनी औषधि, त्रिफला।

**तिरबेनी** *स्त्री०* तीन नदियों का संगम-स्थल, त्रिवेणी; गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम।

**तिरभाग** *वि०* जो तिरछा हो।

**तिरमिरी** *स्त्री०* घेरा, चकाचौंध।

**तिरमुहानी** *स्त्री०* तीन रास्तों के मिलन का स्थान।

**तिरवावल** *सक०* किसी की वस्तु को प्रपंच से झटक लेना।

**तिरसठ** *वि०* साठ और तीन की संख्या, 63।

**तिरसूल** *पु०* तीन फलों वाला भाला, शिव का अस्त्र, त्रिशूल।

**तिरहुत** *पु०* मिथिला प्रदेश।

**तिरहुतिया** *वि०* तिरहुत का वासी।

**तिराती** *स्त्री०* बच्चे की मृत्यु पर श्राद्ध के रूप में तीसरे दिन किया गया कर्म।

**तिरानबे** *वि०* नब्बे और तीन की संख्या। 93।

**तिरासी** *वि०* अस्सी और तीन की संख्या। 83।

**तिरिआ** *स्त्री०* स्त्री, महिला। *मुहा०* 'तिरिआ तेग तुरंग वो रइयत के ठट्ट, यह सब नाहीं आपना परे पराई हत्थ'।

**चरितर** *पु०* ठगने की चतुराई।

**तिरिछ** *पु०* किसी अन्न को छाँटने या साफ करने के बाद उससे निकला हुआ बेकार हिस्सा।

**तिरी** *स्त्री०* जिससे सूत निकाल कर बुना जाता है, ढरकी।

**तिलंगा** *पु०* अंग्रेजी पलटन का हिन्दुस्तानी सिपाही।

**तिलंगी** *स्त्री०* पतंग।

**तिल** *पु०* एक प्रकार का तेलहन; शरीर पर का काले रंग का धब्बा।

**तिल-तिल** *पु०* थोड़ा-थोड़ा।

**तिलइतिआ** *पु०* सफेद रंग का शकरकन्द।

**तिलउर** *पु०* बैल की गर्दन के पीछे का मांस।

**तिलउरी** *स्त्री०* तिल से बनाई गई पकौड़ी।

**तिलक** *पु०* चन्दन, राज्याभिषेक का एक रस्म। *मुहा०* 'तिलक, कंठी, मधुरी बानी दगाबाज के तीन निसानी'।

**तिलकदेउआ** *पु०* कन्या पक्ष की ओर से तिलक चढ़ाने वाला व्यक्ति।

**तिलकल** *वि०* काले बालों के बीच एक एक उजला बाल; कच्ची फसल के बीच कुछ पकी फसल।

**तिलकहरू** *पु०* तिलक चढ़ाने वाले लोग।

**तिलका** *पु०* दाँत खोदने की घास, तिनका; हार का एक भेद।

**तिलकुट** *पु०* कुटे तिल से तैयार की गई एक प्रकार की मिठाई।

**तिलचउरी** *यौ०* अरवा चावल, तिल और गुड़ का मिश्रण।

**तिलठी** *स्त्री०* तिल का सूखा डण्ठल।

**तिलदानी** *स्त्री०* पैसा रखने के लिए कपड़े का बना एक छोटा थैला, जिसमें रस्सी या डोली लगी रहती है।

**तिलमिलाइल** *अक०* छटपटाना, तिल-मिलाना।

**तिलरी** *स्त्री०* तीन लड़ीवाला हार।

**तिलवा** *पु०* तिल की बनी मिठाई, तिलकुट।

**तिलवा-सकरात** *पु०* मकर संक्रान्ति का प्रथम भाग।

**तिलहन** *पु०* तेलवानी फसल।

**तिलांठी** *स्त्री०* तिल का डण्ठल।

**तिलाक** *स्त्री०* [फा०] कसम; सम्बन्ध-विच्छेद।

**तिलेरी** *स्त्री०* तीनलड़ों की हार।

**तिलोतर सौ** *वि०* सौ और तीन की संख्या।

**तिलोर** *पु०* किसी एक ही खेत में फसलों का आगे-पीछे पकने की स्थिति।

**तिलोरी** *स्त्री०* तिलौरी।

**तिलौंछल** *सक०* तेल लगाकर चिकना करना।

**तिलौंछा** *वि०* चिकना, तेल के से स्वाद वाला।

**तिलौरी** *स्त्री०* तिलोरी।

**तिल्ली** *स्त्री०* एक प्रसिद्ध तेलहन, जिससे तेल निकाला जाता है।

**तिवारी** *पु०* ब्राह्मणों की एक उपाधि, तिवारी।

**तिसअउरी** *स्त्री०* तीसी का बना एक व्यंजन।

**तिसजउरी** *स्त्री०* तीसी के साथ बकाया चावल।

**तिसराइत** *पु०* तीसरा व्यक्ति।

**तिसरिया** *स्त्री०* जमीन की उपज में से 1/3 मालिक और 2/3 किसान में बाँटने की प्रथा।

**तिसिरौटा** *पु०* तीसी का डण्ठल।

**तिसी** *पु०* तीन हिस्से में से एक हिस्सा, तिहाई।

**तिहतर** *वि०* सत्तर और तीन की संख्या।

**तिहाई** *वि०* तीसरा हिस्सा।

**तिहार** *पु०* पर्व, त्योहार।

**तींअन, तीअना** *पु०* शाक आदि भोज्य-पदार्थ, तरकारी।

**तींत** *वि०* तीखा, कड़ुवा।

**तींत-मीठ** *यौ०* भला-बुरा; कड़वा-मीठा।

**तीआई** *स्त्री०* पहाड़े में तिगुना को व्यक्त करने का शब्द।

**तीकुरिया** *स्त्री०* टूँड़वाली फसल।

**तीख** *वि०* निकला हुआ; अपेक्षाकृत ऊँचा या बड़ा; तेज, तीखा।

**तीखर** *पु०* तीखुर।

**तीखा** *वि०* तीक्ष्ण। **-पन** *पु०* तीक्ष्णता।

**तीखुर** *पु०* एक कन्द, जिसका सत मिठाई, खीर बनाने के काम आता है।

**तीछन** *वि०* तीक्ष्ण।

**तीछा** *वि०* दे० 'तीछन'।

**तीज** *पु०* [सं० तृतीया] स्त्रियों का एक व्रत, जो सावन में होता है, हरितालिका व्रत।

**तीतर** *पु०* एक प्रकार का पक्षी, जिसे लड़ाने के लिए पाला जाता है।

**तीतल** *वि०* भींगा हुआ।

**तीत्ती** *स्त्री०* कबूतर को पुकारने का शब्द।

**तीन** *वि०* दो और एक, 3 की संख्या। *मुहा०* 'तीन परानी पदुमारानी'। **-पाँच** *स्त्री०* इधर-उधर की बात, तकरार। **-लड़ी** *स्त्री०* तिलड़ी। **-तेरह कइल**

*मुहा०* अस्त-व्यस्त करना। **-तेरह भइल** *मुहा०* छितार जाना। **-में न तेरह में** *मुहा०* सर्वथा उपेक्षित।

**तीनघरवा** *पु०* ऐसा विवाह, जिसमें एक परिवार की लड़की दूसरे में, दूसरे की लड़की तीसरे परिवार में एक साथ दी जाती है।

**तीनमुहानी** *पु०* तीन रास्तों का संगम-स्थल।

**तीना** *पु०* एक प्रकार की घास; एक प्रकार का चावल, जो अति पवित्र माना जाता है।

**तामन** *पु०* साग।

**तीर** *पु०* नदी का तट, किनारा।

**तीरवाह** *पु०* नदी के निकट रहने वाला व्यक्ति।

**तीरा** *पु०* एक प्रकार का बरसाती फूल।

**तीराइल** *अक०* हाथ लगना; मुफ्त में मिलना।

**तीराकोनी** *वि०* तिरछा, कोनिया, जो सीधा न हो।

**तीरीथ** *पु०* पुण्य स्थल, पवित्र स्थान।

**तीरीन** *पु०* घास; खर, तृण।

**तीलभर** *क्रि०वि०* अति थोड़ा।

**तीली-तीली** *वि०* बार-बार, हर बार, बेरि-बेरि।

**तीले-तीले** *क्रि०वि०* बार-बार।

**तीस** *वि०* बीस और दस की संख्या, 30। *मुहा०* 'तीस दिन चोर के एक दिन साधु के'।

**तीसर** *पु०* गैर, पराया।

**तीसी** *स्त्री०* एक प्रकार का तेलहन, अलसी।

**तीहा** *पु०* धीरज।

**तंग** *वि०* ऊँचा।

**तुँत** *पु०* एक प्रकार का फल, तूत, शहतूत।

**तुअ** *सर्व०* तुम्हारा।

**तुअनी** *स्त्री०* जिस गाय का गर्भ प्राय: गिर जाए।

**तुक** *स्त्री०* मेल; औचित्य।

**तुक्की** *स्त्री०* सीधी, गाय।

**तुछ** *वि०* अति साधारण, तुच्छ।

**तुजार** *वि०* बहुत बढ़ा या उपजा हुआ पौधा।

**तुतरा** *वि०* तुतला।

**तुतराइल** *अक०* तुतलाना।

**तुतली** *वि०* तोतली।

**तुतही** *स्त्री०* एक प्रकार का बारहसींगा।

**तुतुहिया** *पु०* एक प्रकार का विष, तूतिया।

**तुतुहिआइल** *अक०* फसल का किसी कारण से नहीं बढ़ना।

**तुनुक** *पु०* शीघ्र रूठना या टूटना **-मिजाजी** *वि०* चिड़चिड़ा।

**तुनुकल** *अक०* अतिशीघ्र रुष्ट हो जाना।

**तुनुकाह** *वि०* कमजोर; शीघ्र क्रोधी।

**तुफान** *वि०* आँधी, आफत।

**तुमड़ी** *स्त्री०* छोटा, तुम्बा, खोखली लौकी से बना पात्र।

**तुरंग** *पु०* [सं०] घोड़ा, मन।

**तुरंगम** *पु०* दे० 'तुरंग'।

**तुरंगी** *स्त्री०* घोड़ी।

**तुरंत** *क्रि०वि०* तुरत, शीघ्र। *कहा०* 'तुरंत दान, महा कल्यान'।

**तुरंता** *पु०* सतुआ; गाँजा।

**तुरई** *स्त्री०* तरोई।

**तुरपई** *स्त्री०* दूर-दूर की सिलाई।

**तुरपल** *सक०* दूर-दूर पर कच्ची सिलाई करना।

**तुर-फार** *पु०* तोड़-फोड़।

**तुरवावल** *सक०* किसी चीज को तोड़ने का काम दूसरे से कराना।

**तुरसी** *स्त्री०* खट्टापन, खटाई।

**तुरहा** *पु०* एक जाति जो सब्जी बेचती है।

**तुरही** *पु०* लम्बी तथा बड़ी आकृति का सिंगा।

**तुरुप** *पु०* ताश के खेल में पत्तों को काटने वाली पत्ती।

**तुर्रा** *पु०* पगड़ी के ऊपर पहिना जाने वाला एक अलंकार।

**तुलँगड़ा** *पु०* कुलँगड़ा।

**तुलसी** *स्त्री०* एक प्रकार का पवित्र पौधा, जिसका उपयोग विष्णु की पूजा में किया। *कहा०* 'तुलसी के पत्ताकवन छोट कवन बड़'।

**तूँ** *सर्व०* तुम। *कहा०* 'तूँ डाढ़ि हम पात-पात'।

**तूती** *स्त्री०* एक छोटी चिड़िया, जिसका रंग और आवाज मीठी होती है।

**तूती बोलल** *अक०* किसी का प्रचुर प्रभाव या यश होना।

**तून** *पु०* एक प्रकार का पेड़, जो अक्सर सड़कों के किनारे लगाया जाता है।

**तूनल** *सक०* रूई धुनने के पहले रूई को हात से तोड़ना।

**तूमा** *पु०* तूँबा।

**तूर** *स्त्री०* अरहर।

**तूरल** *अक०* तोड़ना।

**तूल** *पु०* संयोग।

**तूलल** *अक०* किसी काम के लिए उपयुक्त अवसर का घटित होना।

**तेंतर** *वि०* तीन लड़कों के बाद चौथी लड़की या तीन के बाद चौथा लड़का।

**तेंतालीस** *वि०* [सं० त्रिचत्वारिंशत] चालीस और तीन।

**तेंतीस** *वि०* [सं० त्रयस्त्रिंशत्] तीस और तीन।

**तेआह** *वि०* जिस व्यक्ति का तीसरा विवाह हुआ हो।

**तेआगल** *सक०* छोड़ देना, त्याग।

**तेइस** *वि०* [सं० त्रयोविंशति:] बीस और तीन की संख्या।

**तेकठी** *स्त्री०* तीन काठों के योग से बना सामान।

**तेकर** *सर्व०* तिसका।

**तेकुरी** *वि०* तीसरा हिस्सा।

**तेखर** *स्त्री०* तीन वर्षों तक लगातार दूध देने वाली भैंस।

**तेखारल** *अक०* किसी बात को तीन बार पूछकर स्पष्ट कर लेना।

**तेगड़ल** *सक०* किसी पशु के (गधे) तीन पैरों को रस्सी में छानना।

**तेगा** *पु०* तलवार।

**तेगुनल** *सक०* बिना बँटे तीन सूत या लच्छे को ऐंठकर देना।

**तेगुना** *वि०* तीन गुणा।

**तेघरा** *वि०* तेज धार वाला।

**तेजंसी** *वि०* तेजस्वी, प्रतापी।

**तेज** *वि०* [सं० तेजस्] चमक, प्रताप, *कहा०* 'तेज घोड़ा के कोड़ा कइसन?'

**तेजपात** *पु०* मसाले के रूप में काम आने वाला पत्ता।

**तेजल** *अक०* त्याग देना।

**तेजसी** *वि०* तेजस्वी।

**तेजा** *पु०* एक तरह का काला रंग।

**तेजाब** *पु०* [फा०] एसिड, अम्ल।

**तेजाबी** *वि०* तेजाब सम्बन्धी। **-सोना** *पु०* तेजाब से साफ किया गया सोना।

**तेजी** *स्त्री०* महँगी, (सस्ती का विपरीत)।

**तेतना** *क्रि०वि०* उतना, उस परिमाण में।

**तेतर** *वि०* तीन पुत्र या पुत्रियों के पश्चात् चौथी सन्तान। *कहा०* 'तेतर बेटी राज करावै, तेतर बेटा भीख मँगावे।'

**तेतालीस** *वि०* चालीस और तीन की संख्या।
**तेतीस** *वि०* तीस और तीन की संख्या।
**तेतुल** *पु०* पीपल, पाकड़ और बरगद का संयुक्त पेड़, तेतुर।
**तेनही** *क्रि०वि०* उधर ही।
**तेने** *अव्य०* उस ओर।
**तेपट** *वि०* सटी हुई परतों के अलग हो जाने की स्थिति।
**तेफल** *पु०* कतरा।
**तेबर** *वि०* तीन गुणा।
**तेबरल** *सक०* किसी को तीन बार मोड़ना।
**तेबारा** *वि०* तीसरी बार।
**तेमारा** *पु०* कद्दू।
**तेम्हर** *क्रि०वि०* उस दिशा में, उस तरफ।
**तेरस** *स्त्री०* त्रयोदशी की तिथि।
**तेरह** *वि०* [सं० त्रयोदश] दस और तीन की संख्या।
**तेरही** *स्त्री०* मृत्यु-तिथि के तेरह दिनों के बाद किया गया कार्य; तेरहवीं, श्राद्धभोज।
**तेरी-मेरी** *स्त्री०* गाली-गलौज।
**तेरूस** *पु०* पिछला तीसरा साल।
**तेरेता** *पु०* चतुर्युग में एक युग त्रेता।
**तेरोदसी** *स्त्री०* कृष्ण या शुक्ल पक्ष की तेरहवीं तिथि, त्रयोदशी।
**तेल** *पु०* पौधों के बीज से निकला द्रव।
**तेलऊँस** *वि०* तेल लगने से मैला।
**तेलकट** *वि०* तेल लगने से गन्दा (वस्त्र)।
**तेलचट** *पु०* एक प्रकार का कीड़ा।
**तेलचढ़ाव** *पु०* विवाह के एक या दो दिनों पूर्व वर या कन्या के लिए एक रस्म।
**तेलपक** *पु०* तेल में तला हुआ भोज्य-पदार्थ।
**तेल बाँसा** *पु०* तेल रखने का बाँस का बर्तन।
**तेलवान** *पु०* बारातियों के स्नान के लिए तेल-साबुन-धोती भेजने की रस्म।
**तेलहन** *पु०* वैसा पौधा, जिसके बीज से तेल निकलता हो।
**तेलहा, तेलही** *वि०* तेल से बना पदार्थ।
**तेलाइन** *वि०* तेल-सा स्वाद का।
**तेला-बेला** *यौ०* गड़बड़, प्रपंच।
**तेलावन** दे० 'तेलवान'।
**तेलावल** *अक०* गाड़ी या इंजन के गतिशील पार्ट्स में तेल डालना।
**तेलाह** *वि०* जिसमें तेल लगा हो (बर्तन)।
**तेलिया** *वि०* जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो।
**तेली** *पु०* हिन्दुओं में एक जाति, जो तेल का व्यवसाय करती है।
**तेली के बैल** *पु०* रात-दिन पिसने वाला व्यक्ति। *कहा०* 'तेली के बैल के घर ही में पचास कोस'।
**तेवर** *पु०* तिरछी नजर, भौंह। **-चढ़ल** क्रोध में भौहों का तन जाना।
**तेसुर** *वि०* पूर्ववर्ती तीसरा साल।
**तेसे** *सर्व०* उससे।
**तेहरा** *वि०* तीन परत।
**तेहरावल** *अक०* एक ही बात को बार-बार कहना, तीन बार कहना। *वि०* भोजन करते समय तीसरी बार दिया गया भोजन आदि।
**तेहाला** *पु०* तीसरा व्यक्ति।
**तेहाव** *पु०* खेत का तीसरा हिस्सा।
**तैनात** *पु०* मुस्तैद।
**तैनाती** *स्त्री०* मुस्तैदी, जिम्मेदारी।
**तैयल** *पु०* दमहा (बैल)।
**तैस** *वि०* खिस, क्रोध।
**तोंद** *स्त्री०* पेट का आगे की ओर बढ़ा भाग। **-पचकल** *मुहा०* मोटाई दूर होना।

**तोंदल** *वि०* तोंद वाला।
**तोंदीला** *वि०* दे० 'तोंदल'।
**तोइ** *पु०* तोय, जल।
**तोई** *स्त्री०* स्त्रियों की नीचे पहनने वाली गंजी।
**तोख** *पु०* सन्तोष; टुकड़ा।
**तोड़** *पु०* तोड़ने की क्रिया; बच्चा मरने पर भी दूध देने वाली (गाय)।
**तोड़क** *पु०* तोड़ने वाला।
**तोड़ल** *सक०* [सं० त्रोटनं] आघात; तोड़ना।
**तोड़वावल** *सक०* तोड़ने का कार्य कराना।
**तोड़ा** *पु०* धरोहर, पूँजी; एक हजार चाँदी के सिक्के वाला थैला; एक आभूषण।
**तोड़ाई** *स्त्री०* तोड़ने की क्रिया।
**तोतई** *वि०* धानी।
**तोतर** *वि०* तोतला।
**तोतराइल** *अक०* तुतलाना।
**तोतला** *वि०* जो तुतलाकर बोलता हो।
**तोतलावल** *सक०* तुतलाना।
**तोता** *पु०* सुग्गा, एक हरे रंग का पक्षी।
**तोनइल** *पु०* वह मनुष्य जिसका पेट आगे निकला हुआ हो, तुन्दिल।
**तोनी** *स्त्री०* चुटकी।
**तोपल** *अक०* किसी वस्तु आदि को ढँक देना।
**तोपाइल** *सक०* ढँकना।
**तोब** *पु०* तोप।
**तोबा** *स्त्री०* [अ०] घृणा।
**तोबे** *पु०* तिलाक।
**तोम** *पु०* समूह, ढेर।
**तोर** *सर्व०* तेरा, तेरी।
**तोरई** *स्त्री०* एक प्रकार की सब्जी, तरोई।
**तोरन** *पु०* मेहराब, बन्दनवार।
**तोरा** *सर्व०* तेरा। *कहा०* 'तोरा घर के खरची, मोरा घर चबेना'।
**तोरावन** *वि०* तेज, तीव्र।
**तोरी** *स्त्री०* सरसों की एक उपजाति, तुरई।
**तोल** *पु०* [सं०] अस्सी रत्तियों के बराबर का एक तौल।
**तोलउ** *स्त्री०* वह मादा मवेशी, जो गर्भवती होकर भी बच्चा नहीं दे।
**तोला** *पु०* तौल का बाँट, बारह माशे की एक तौल।
**तोलिया** *पु०* *स्त्री०* तौलिया।
**तोसक** *स्त्री०* [तु०] छोटा गद्दा, रूई भरा बिछावन।
**तोहफा** *वि०* [अ०] सौगात, भेंट।
**तोहमत** *स्त्री०* [अ०] लांछन।
**तोहर** *सर्व०* तुम्हारा, *कहा०* 'तोहर मुँह में घी सक्कर'।
**तोहरा** *सर्व०* तुम, तुम्हारा, तुम्हें।
**तोहार** *सर्व०* तुम्हारा।
**तोहि** *सर्व०* तुझे।
**तौक** *पु०* [अ०] हँसुली।
**तौकी** *स्त्री०* गले का गहना।
**तौन** *सर्व०* वह, जो।
**तौबा** *स्त्री०* तोबा।
**तौर** *पु०* ढंग।
**तौल** *स्त्री०* तौलने की क्रिया।
**तौलल** *सक०* जोखना।
**तौलवाई** *स्त्री०* तौलाई।
**तौला** *पु०* मटका।
**तौलिया** *पु०* [अं० टॉवेल] अंगोछा।
**तौहीन** *स्त्री०* [अ०] अपमान, अवमानना।
**तौहीनी** *स्त्री०* दे० 'तौहीन'।
**त्याग** *पु०* [सं०] उत्सर्ग; किसी से नाता तोड़ देने की क्रिया; भोगों में लिप्त न रहने का भाव; पद या स्थान से सम्बन्ध न रखना। **-पत्र** *पु०* इस्तीफा।
**त्यागल** *सक०* त्याग करना।

**त्यागी** *वि०* विरक्त।
**त्योहार** *पु०* उत्सव,पर्व।
**त्यौहार** *पु०* दे० 'त्योहार'।
**त्रि** *वि०* [सं०] (समासान्त में) रक्षा करने वाला; तीन।
**त्रि** *वि०* [सं०] तीन।
**त्रयोदश** *वि०* [सं०] तेरह; तेरहवाँ।
**त्रयोदशी** *स्त्री०* [सं०] तेरस, तेरहवीं।
**त्राण** *पु०* [सं०] रक्षा, बचाव; आश्रय।
**त्रास** *पु०* [सं०] डर, खौफ।
**त्राहि** *अव्य०* [सं०] रक्षा करो, बचाओ।
**त्रि** *वि०* [सं०] तीन जैसे त्रिकाल, त्रिलोक। **-काल** *पु०* तीनों काल-भूत, वर्तमान और भविष्य; तीनों समय-प्रातः, मध्याह्न और सायं। **-गुण** *पु०* सत्त्व, रज, तम। **-देव** *पु०* ब्रह्मा, विष्णु और महेश। **-दोष** -बात, पित्त, कफ; सन्निपात। **-पाठी** *वि०* तीनों वेदों का ज्ञाता। *पु०* तिवारी, त्रिवेदी। **-फला** *स्त्री०* आँवला, हड़, बहेड़ा। **-बेनी** *स्त्री०* त्रिवेणी। **-भुज** *पु०* तीन भुजाओं से घिरा क्षेत्र। **-भुवन** *पु०* स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल। **-मुहानी** *स्त्री०* तिमुहानी। **-लोक** *पु०* स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।
**त्रिया** *स्त्री०* नारी। **-चरित्र** *पु०* तिरिया-चरित्तर।
**त्रेता** *पु०* [सं०] चार युगों में दूसरा युग।
**त्रैमासिक** *वि०* [सं०] तीन महीनों का; हर तीन महीने में होने वाला।
**त्वचा** *स्त्री०* [सं०] चर्म, चमड़ा।
**त्वरा** *स्त्री०* [सं०] शीघ्रता, जल्दी।
**त्वरित** *वि०* [सं०] तेज। *अव्य०* तेजी से।
**त्वरिता** *स्त्री०* [सं०] तंत्र में एक देवी।

❑

# थ

**थ** हिन्दी वर्णमाला के तवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
**थंडिल** *पु०* यज्ञवेदी।
**थंब** *पु०* स्तम्भ, खम्भा।
**थंबी** *स्त्री०* चाँड़, थूनी।
**थंभ** *पु०* [सं० स्तम्भ] दे० 'थंब'।
**थंभन** *पु०* रुकावट; एक तांत्रिक प्रयोग, स्तम्भन करने वाली औषधि।
**थंभल** *अक०* ठहरना, सँभलना, रुकना।
**थंभा** *पु०* दे० 'थंभ'।
**थंभुआ** *पु०* केले का थम्भ या धड़।
**थइला** *पु०* कपड़े का एक बड़ा पैकेट, रुपये-पैसे रखने का झोला।
**थइली** *स्त्री०* थैली, जेब।
**थई-थई** *वि०* परिपूर्ण, पूर्ण सन्तुष्ट।
**थउआ** *वि०* जो बैठा रहता हो; शिथिल; अधिक वृद्ध, जो चल-फिर न सके।
**थउसल** *अक०* दुर्बलता के कारण चलने में असमर्थ हो जाना।
**थक** *पु०* [सं० स्थग] पसीने से सराबोर होने की स्थिति।
**थकइनी** *स्त्री०* थकावट, सुस्ती।
**थकबकाइल** *अक०* स्तम्भित होना।
**थकरल** *सक०* थोकरी से बाल को साफ करना।
**थकरी** *स्त्री०* स्त्रियों के बाल साफ करने की खस की कूँची।
**थकल** *वि०* थका हुआ।
**थकान** *स्त्री०* थकने का भाव।
**थकावट** *स्त्री०* दे० 'थकान'।
**थकिया** *पु०* गहनों को गलाकर बनाया गया चाँदी का थक्का।
**थक्का** *पु०* किसी तरल पदार्थ का जमा हुआ टुकड़ा, लोंदा।
**थथमल** *अक०* स्तम्भित होना, हक्का-बक्का होकर खड़ा रहना।
**थथमा** *पु०* स्तब्ध होने की स्थिति।
**थथली** *स्त्री०* पॉकेट, थैली।
**थन** *पु०* [सं० स्तनः] ऐन, मवेशियों की दूध की थैली, स्तन।
**थनइली** *स्त्री०* स्तन की सूजन।
**थनगे-थनगे** *क्रि०वि०* अलग-अलग।
**थनदार** *पु०* किसी थाने का दरोगा, थानेदार।
**थनी** *स्त्री०* गलस्तन।
**थनेला** *पु०* स्त्रियों के स्तन पर होने वाला फोड़ा; गुबरैले की जाति का एक कीड़ा।
**थनेली** *स्त्री०* दे० 'थनेला'।
**थनैत** *पु०* गाँव का मुखिया, जमींदार का कारिन्दा।
**थप** *पु०* किसी वस्तु पर हल्की चोट से उत्पन्न ध्वनि।
**थपकल** *सक०* थपकी देना, हथेली से ठोंकना।
**थपका** *पु०* किसी गीली वस्तु को पीटने के लिये बनाई गई मूँगड़ी।
**थपकी** *स्त्री०* पीठ में थपथपाने का भाव।
**थपकुन** *वि०* नाटा और मोटा।
**थपड़िआवल** *सक०* थप्पड़ से मारना।
**थपड़ी** *स्त्री०* ताली। एक हाथ की तलहथी से दूसरे हाथ की तलहथी पर चोट मारने से उत्पन्न ध्वनि।
**थपथप** *पु०* किसी वस्तु पर हल्की चोट मारने से उत्पन्न ध्वनि।
**थपथपावल** *सक०* किसी वस्तु या शरीर पर हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना; थपकी देना।
**थपथपी** *स्त्री०* दे० 'थपकी'।

**थपुआ** *वि०* थोपकर बनाया हुआ; चौरस।
**थपेड़ल** *सक०* चपत जमाना।
**थपेड़ा** *पु०* चपत।
**थपोड़ी** *स्त्री०* दे० 'थपड़ी'।
**थपोरी** *स्त्री०* दे० 'थपड़ी'।
**थप्पड़** *पु०* तमाचा।
**थम** *पु०* केले के पेड़ का तना।
**थमल** *अक०* [सं० स्तम्भनं] रुक जाना; भैंस आदि मवेशियों का गर्भाधान।
**थर** *स्त्री०* मवेशियों को बाँधने का स्थान; तह।
**थर थर** *स्त्री०* कम्पन, काँपते हुए।
**थरथराइल** *अक०* भय से काँपना, भयभीत होना।
**थरथराहट** *स्त्री०* कँपकँपी।
**थरथरी** *स्त्री०* भय या जाड़े के चलते कँपकँपी।
**थरसल** *वि०* थहराया हुआ।
**थरहर** *स्त्री०* थरथरी।
**थरिया** *स्त्री०* थाली। *कहा०* 'थरिया भुलाला त गगरी में खोजाला'। **-बजावल** *पु०* पुत्र के जन्म के अवसर पर थाली बजाने की विधि।
**थरी** *स्त्री०* थली, जगह; बाघ की माँद।
**थरुआन** *पु०* थारुओं की निवास-भूमि, थरुहट।
**थरुआरी** *स्त्री०* थारुओं का गीत, थारुओं की बोली।
**थरुइन** *स्त्री०* थारु की स्त्री।
**थरुहट** दे० 'थरुआन'।
**थर्ड** *वि०* [अं०] तीसरा। **-क्लास** *पु०* तीसरी श्रेणी, तीसरा दर्जा। **-डिवीजन** *पु०* तीसरी श्रेणी।
**थर्मस** *पु०* [अं०] एक बोतल, जिसमें गरम चीज देर तक गरम और ठण्डी चीज देर तक ठण्डी रहती है।
**थर्मामीटर** *पु०* [अं०] तापमापक, तापमान यंत्र।
**थर्राइल** *अक०* दहलना, काँप उठना।
**थल** *पु०* स्थल, ठौर, जगह।
**थलकल** *अक०* हिलना, काँपना।
**थलथल** *वि०* मांसल शरीर एवं दूधभरे स्तन के हिलने की स्थिति।
**थलर-थलर** *स्त्री०* भारी स्तन के हिलने की स्थिति।
**थलिआवल** *सक०* पौधे को मिट्टीसहित कोड़कर निकालना।
**थली** *स्त्री०* पेंदी, निचला हिस्सा।
**थवई** *पु०* राजगीर, राजमिस्त्री।
**थवना** *पु०* चूल्हे से सटा बर्तन रखने के लिए बना चबूतरा।
**थसकल** *वि०* हार कर बैठा हुआ।
**थहराइल** *अक०* हतबुद्धि होना, थककर बैठ जाना।
**थांगी** *पु०* आश्रय-स्थान, ठहरने की जगह, सहारा; चोरों का मुखिया।
**थाँभ** *पु०* खम्भा।
**थाँभल** *सक०* थामना।
**थाई** *वि०* स्थायी।
**थाऊर** *पु०* पैखाने का चोत।
**थाक** *पु०* समूह, ढेर, राशि; ब्योरावार।
**थाकर** *पु०* धान का एक प्रकार।
**थाकल** *पु०* वृद्धावस्था। *उदा०* 'थाकल देह केस सब पाकल'।
**थाकि** *स्त्री०* थकावट, क्लान्ति।
**थाट** *पु०* रोगों का आधार, जनकराग।
**थात** *वि०* बैठा हुआ, स्थित।
**थाति** *स्त्री०* स्थिरता।
**थाती** *स्त्री०* [सं० स्थातृ] धरोहर, पूँजी।
**थान** *पु०* [सं० स्थानं] जगह, स्थान; संख्या; बाजू; स्तन।

**थाना** *पु०* सरकार द्वारा बनाया गया पुलिस-केन्द्र। **-दार** *पु०* दारोगा। **-दारी** *स्त्री०* थानेदार का पद।
**थाप** *स्त्री०* [सं० स्थापनं] प्रतिष्ठा, धाक, विश्वास।
**थापड़** *पु०* चमेटा, तमाचा।
**थापन** *पु०* स्थापन।
**थापर** *स्त्री०* थप्पड़।
**थापल** *सक०* स्थापित करना; गोबर, भूसा तापकर चिपरी बनाना।
**थापल** *अक०* मिट्टी को थोपना।
**थापा** *पु०* हाथ की पाँचों अँगुलियों का चिह्न, हाथ का छापा; साँचा; नेपालियों की एक जाति।
**थापी** *स्त्री०* मकान की छत को पीटने का मूँगड़ा; कुम्हार का कच्चा घड़ा पीटने का मूँगड़ा।
**थाम्हल** *अक०* [सं० स्तम्भनं] हाथ से रोकना सहारा देना।
**थार** *स्त्री०* थाली।
**थारा** *पु०* बड़ी थाली, परात।
**थारी** *स्त्री०* थाली।
**थारु** *पु०* जाति विशेष *कहा०* 'थारु के ना दोसर देस, घोंघा के ना दोसर डाबर'।
**थाला** *पु०* किसी पौधे को रोपने के लिए जमीन को खोदकर बनाया गया छोटा गड्ढा, घेरा; फोड़े का सूजन।
**थालिका** *स्त्री०* थाला, आलवाल।
**थाली** *स्त्री०* दे० 'थारी'।
**थावर** *वि०* अचल, स्थावर।
**थावरा** *पु०* दे० 'थाला'।
**थाह** *स्त्री०* पानी की गहराई का अन्दाज, पता। **-लगावल** *मुहा०* गहराई का अन्दाज मिलना।
**थाहल** *अक०* पानी की गहराई को मापना, थाह लेना; किसी उद्देश्य का पता लगाना।
**थिएटर** *पु०* [अं०] रंगशाला।
**थिगली** *स्त्री०* पैबन्द, चकती।
**थिर** *वि०* स्थिर।
**थिरक** *स्त्री०* पैरों का हिलना।
**थिराइल** *अक०* स्थिर होना।
**थुकथुकावल** *सक०* किसी वस्तु पर कई बार थूकना।
**थुकथुकी** *वि०* बार-बार थूँकने की प्रवृत्ति।
**थुकिआवल** *सक०* ठुकराना (कुत्सा)।
**थुकुरल** *सक०* मुँह की चीज को बाहर फेंकना। उगलना।
**थुड़ी** *अ०* धिक्कारसूचक शब्द छि:। *स्त्री०* बेइज्जती।
**थुथकारल** *सक०* 'थू-थू' करना।
**थुथुन** *पु०* मवेशियों का आगे की ओर निकला लम्बा मुँह, थूथन।
**थुथुर** *वि०* अपनी बात को बार-बार बेशर्मी से कहते रहने वाला।
**थुनकी** *स्त्री०* अन्न रखने की मिट्टी की बनी छोटी डेहरी।
**थुन्ही** *स्त्री०* खूँटी, खँसिया; टेक; थूनी।
**थू** *पु०* थूकने से निकली ध्वनि। *अव्य०* तिरस्कार, अपमान।
**थूआ** *पु०* सन या पटुए के डण्ठल से निकाले हुए रेशों की एक राशि। पटार।
**थूक** *पु०* मुँह का पानी और कफ। *कहा०* 'थूक से सत्तू ना सनाला'।
**थूकल** *सक०* थूकना।
**थूथुरी** *स्त्री०* लम्बा तथा मोटा आगे निकला हुआ जानवर विशेष का मुँह जैसे सूअर का। थूथन।
**थूनी** *स्त्री०* [सं स्थूणा] खम्भा।
**थूम** *पु०* खूँटी।
**थूम्ह** *वि०* ऊँचा, कड़ा।
**थूरल** *सक०* कड़ी पिटाई करना। बार-बार चोट मारना।

**थूवा** *वि०* निन्दावाचक शब्द।
**थूहा** *पु०* सब्जी के बिचड़े का छोटा भाग।
**थूहिआवल** *सक०* रस्सी को गोला बनाना।
**थेग** *पु०* सहारे के लिए खड़ा किया गया खम्भा।
**थेथर** *वि०* हेहर, बेहया। *कहा०* 'थेथर के ठस जवाब'।
**थैथै** *स्त्री०* अनुकरणात्मक शब्द।
**थैला** *पु०* बड़ा बटुआ, झोला।
**थैली** *स्त्री०* झोली।
**थोक** *पु०* [सं० स्तबक:] ढेर, समूह, फुटकर का विपरीत शब्द।
**थोका** *वि०* गुच्छा।
**थोड़ा** *वि०* [सं० स्तोक:] कम, अल्प। *कहा०* 'थोड़ा लिखीं बहुत समझीं'।
**थोथा** *पु०* सारहीन, खोखला, तत्त्वरहित।
**थोथी** *स्त्री०* धोखा, चकमा। *कहा०* 'थोथी के आगा पोथी का करी ?'
**थोपल** *अक०* मढ़ना, थोपना।
**थोपी** *स्त्री०* थापड़।
**थोबड़** *पु०* जबड़ा, *वि०* मन्दबुद्धि।
**थोबड़ा** *पु०* किसी पशु का लम्बा लटकता मुँह, थोबड़ा।
**थोर** *वि०* थोड़ा। उदा० 'कछु बात बड़ी न कहूँ मुख थोरे' रामचंद्रिका एवं 'थोरे धन में खल बउराय'।
**थोरिक** *वि०* थोड़ा सा।
**थोरिका** *वि०* थोड़ा, अधिक नहीं।
**थौंद** *स्त्री०* तोंद।
**थौआ** *वि०* आलसी, सुस्त; क्रियाहीन।

❑

# द

**द** हिन्दी वर्णमाला के तवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है।

**दँइत** *पु०* राक्षस।

**दंग** *वि०* चकित, विस्मित, हक्का-बक्का।

**दंगई** *वि०* लड़ाका, फसादी, दंगा करने वाला।

**दंगल** *पु०* [फा०] कुश्ती, अखाड़ा। **-मारल** *मुहा०* कुश्ती जीतना। **-लड़ल** *मुहा०* कुश्ती लड़ना।

**दंगली** *वि०* दंगल लड़ने वाला।

**दंगा** *पु०* बलवा, झगड़ा-फसाद। **-ई** *पु०* बलवाई। **-बाज** *वि०* दंगा करने वाला।

**दंड** *पु०* [सं०] डण्डा, लट्ठा, डाँड़। **-पाल** *पु०* द्वारपाल, दण्डनायक। **-प्रणाम** *पु०* साष्टांग प्रणाम।

**दंडक** *पु०* [सं०] डण्डा; दण्ड देने वाला।

**दंडवत्** *पु०* [सं०] डण्डे के समान पृथ्वी पर पड़कर किया जाने वाला प्रणाम।

**दंडी** *पु०* [सं०] दण्डधारी संन्यासी।

**दंत** *पु०* दाँत। **-कथा** *स्त्री०* जनश्रुति। **-चिआर** *वि०* सदा हँसने वाला। **-चिकित्सक** *पु०* डेंटिस्ट, दाँतों का डॉक्टर। **-धावन** *पु०* दातौन। **-मूल** *पु०* दाँत की जड़। **-हीन** *वि०* बिना दाँत का।

**दँताड़** *वि०* बड़े दाँत वाला हाथी।

**दँतुला** *पु०* [सं० दन्तुल:] जिसका दाँत बाहर की ओर हो।

**दँतुली** *स्त्री०* छोटा दाँत, पतला दाँत।

**दँवक** *स्त्री०* गर्मी, ताप।

**दँवठा** *पु०* साँवा का झारंग।

**दँवनी** *स्त्री०* अन्न का दाना निकालने के लिए उसे बिछाकर बैलों को घुमाना या ट्रैक्टर चलाकर उसे रौंदना।

**दवँरी** *स्त्री०* बैलों द्वारा सूखे अनाज के पौधे को रौंदकर अन्न निकालने की प्रक्रिया।

**दइब** *पु०* विधाता, ब्रह्मा।

**दइया** *स्त्री०* दादी, पिता की माँ।

**दई** *पु०* दैव, भाग्य। **-जार** *वि०* अभागा, शैतान। **-दई** *अव्य०* हा दैव! हा दैव; **-मारा** *वि०* दैव का मारा हुआ।

**दउगल** दे० 'दउरल'।

**दउनी** दे० 'दउरी'।

**दउर बरहा** *पु०* बार-बार दौड़ने का काम।

**दउरल** *अक०* बार-बार जाना, दौड़ना।

**दउरहट** *पु०* दौड़ने का भाव।

**दउरा** *पु०* बाँस की कमची का बना बड़ा टोकरा।

**दउरावल** *सक०* किसी को बार-बार एक ही काम के लिए बुलाना एवं भेजना।

**दउरी** *स्त्री०* बाँस की कमची की बनी हुई टोकरी।

**दउलत** *पु०* दौलत।

**दकियानूस** *पु०* एक रोमन सम्राट्, जो 349 ई० में गद्दी पर बैठा था।

**दकियानूसी** *वि०* पुराना, पुराणपंथी।

**दक्ष** *वि०* [सं०] कुशल, निपुण।

**दक्षिण** *पु०* [सं०] दक्खिन।

**दक्षिणा** *स्त्री०* शुभ कार्यों में दिया जाने वाला द्रव्य।

**दखल** *पु०* कब्जा, अधिकार। **-देहल** *मुहा०* अनधिकृत कब्जा जमाना।

**दखिन** *पु०* पूर्वाभिमुख खड़ा होने पर दाहिनी ओर की दिशा; दक्षिण दिशा।

**दखिनवारी** *वि०* दक्षिण दिशा का। दाक्षिणात्य।

**दखिनहा** *वि०* दक्षिण का निवासी; दक्षिणी हवा।

**दखिनही** *स्त्री०* दक्षिण से बहने वाली हवा।
**दखिनाहुत** *क्रि०वि०* दक्षिण की ओर स्थित।
**दगइल** *वि०* दागदार; चिह्नसहित।
**दगदग** *वि०* अत्यधिक पीला। पीलापन का अधिकतासूचक शब्द।
**दगरीन** *स्त्री०* स्त्री, जो प्रसूति के समय-सेवा-सुश्रूषा करती है।
**दगधल** *अक०* तप्त होना। अत्यन्त गर्म होना।
**दगनी** *स्त्री०* बाछा दागने के लिए लोहे का एक औजार।
**दगरीन** *स्त्री०* दाई, प्रसाविका।
**दगल** *अक०* बन्दूक से गोली का छूटना या आवाज होना।
**दगली** *स्त्री०* बैलगाड़ी के दोनों बगल की रस्सी, जो बाँस में तनी हुई रहती है।
**दगवावल** *सक०* किसी दूसरे से बन्दूक चलवाना; किसी गर्म धातु या लकड़ी दूसरे को शरीर पर सटा कर जलाना।
**दगहा** *पु०* दाग या चिह्न से युक्त।
**दगा** *पु०* धोखा, छल, कपट।
**दछिना** *पु०* ब्राह्मणों को दिया जाने वाला मानदेय, दक्षिणा।
**दड़िमी** *स्त्री०* आम के टिकोरे की खटाई।
**दतरी** *स्त्री०* समवयस्क।
**दतुअन** *स्त्री०* वृक्ष की टहनी, जिससे दाँत को साफ किया जाता है।
**ददरी** *स्त्री०* बलिया जिला स्थित एक स्थान, जहाँ मेला लगता है। *उदा०* 'चमक उठलरे बलिया नगरी ददरी मेला आइल'।
**ददहर** *पु०* दादा का घर।
**ददरवाह** *वि०* सहायक, हितैषी, दु:ख दूर करने वाला।
**ददिया** *स्त्री०* दादी वास्ते आदरसूचक शब्द। **-ससुर** *पु०* ससुर का पिता। **-सास** *स्त्री०* ससुर की माता, सास की सास।
**ददियौरा** *पु०* दादी का मायका।
**ददोड़ा** *पु०* चकत्ता, जो कीड़ों के काटने की जगह को खुजलाने से पड़ जाता है।
**ददोरा** *पु०* दे० 'ददोड़ा'।
**दधि** *पु०* [सं०] दही, घर, वस्त्र। **-चार** *पु०* मथनी। **-मंथन** *पु०* दही मथना। **-सार** *पु०* दही से निकला मक्खन।
**दनउरी** *स्त्री०* दाने द्वारा बनाया गया भोजन सामग्री।
**दनदनाइल** *अक०* जल्दी तथा नि:शंक चलना।
**दनसे** *क्रि०वि०* अत्यन्त शीघ्रता से।
**दनाइल** *सक०* सर्दी में अपने को आग से गर्म रखना।
**दन्न-दन्न** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक, तुरन्त।
**दनादन** *अ०* लगातार, 'दन-दन' की आवाज।
**दपट** *स्त्री०* घुड़की, डाँटने- डपटने की क्रिया।
**दपटल** *सक०* घुड़कना, डाँटना।
**दपु** *पु०* दर्प, अहंकार।
**दप्प** *पु०* दे० 'दपु'।
**दफती** *स्त्री०* [अ० दफ्तीम] कुट, मोटा कागज, जिससे जिल्द बाँधी जाती है।
**दफदार** *पु०* गाँव में पहरा देने वाला व्यक्ति।
**दफनावल** *अक०* दफनाना।
**दबंग** वि० रोबीला, जो किसी से दबता न हो।
**दब** *अक०* गाड़ी का आगे की ओर भारी होना।
**दबकल** *अक०* छिपकर रहना।

**दबकावल** *सक०* छिपाना।
**दबल** *अक०* दबना।
**दबवावल** *सक०* दबाने का काम दूसरों से कराना।
**दबारल** *अक०* डाँटना, भला-बुरा कहना।
**दबाव** *पु०* दबाने का काम।
**दबावट** *स्त्री०* दबाव।
**दबावल** *सक०* [सं० दमनं] दबाना, दबाव डालना, गाड़ना, छिपाना।
**दबिया** *स्त्री०* पनिहारी।
**दबिला** *पु०* लकड़ी काटने का हथियार।
**दब्बू** *पु०* दबने वाला।
**दबेल** *वि०* दब्बू, डरने वाला।
**दबोचल** *सक०* धर दबाना।
**दबोरल** *सक०* एकबारगी और अचानक दबा देना, दबोचना।
**दम** *पु०* दण्ड, दमन, शक्ति, वजन।
**दमकल** *पु०* आग बुझाने का यन्त्र।
**दमकी** *स्त्री०* पानी नहीं लगने वाली जमीन।
**दमकी साधल** *स्त्री०* जीवित प्राणियों द्वारा साँस रोककर अपने को मरा हुआ साबित करने का स्वाँग करना।
**दमगर** *वि०* भारी, वजनी; मूल्यवान।
**दमरी** *स्त्री०* पैसे का आठवाँ भाग। *कहा०* 'दमरी के घोड़ी छः पसेरी दाना'।
**दमसल** *अक०* कटहल के फल का पकने का उपक्रम होना; कड़े शब्दों में बोलना।
**दमहरिया** *पु०* खँचोली, टोकरी (बाँस या अरहरके डण्ठल की)।
**दमा** *पु०* श्वाँस रोग।
**दमाक** *पु०* ऊँची भूमि।
**दमाड़** *पु०* पहाड़ पर की ऊँची भूमि।
**दमाद** *पु०* पुत्री का पति, जामाता। *कहा०* 'दमाद डाइनियों के मीठहऽ'।
**दमादम** *अ०* 'दम-दम' शब्द के साथ लगाना।
**दमामा** *पु०* डंका, नगाड़ा।
**दमार** *पु०* दौनी में बैलों को बाँधने की रस्सी।
**दमाह** *वि०* दमा का रोगी।
**दमी** *स्त्री०* साँस। **-साधल** *मुहा०* साँस रोकना।
**दय** *पु०* [सं०] दया।
**दयनीय** *वि०* दया करने के योग्य।
**दया** *स्त्री०* करुणा, ममता, *कहा०* 'दया बिन संत कसाई'।
**दयाद** *पु०* कुल, गोत्र के घनिष्ठ सम्बन्धी।
**दयावंत** *वि०* दयालु, कृपालु।
**दयाल** *वि०* कृपालु, दयावान।
**दर** *पु०* [फा०] द्वार, फाटक, दहलीज। **-असल** *क्रि०वि०* असल में, वास्तव में। **-कार** *वि०* जरूरी। **-किनार** *वि०* अलग। **-दर** *क्रि०वि०* दरवाजे-दरवाजे। **-बान** *पु०* चौकीदार। **-बारी** *वि०* दरबार सम्बन्धी।
**दरकच** *पु०* हल्की चोट।
**दरकचल** *सक०* जोर से दबाना, रगड़ना।
**दरकल** *अक०* फटना, दरकना।
**दरखास** *पु०* निवेदन, प्रार्थनापत्र।
**दरखासा-दरखासी** *यौ०* बार-बार पेटिशन देने की स्थिति।
**दरखोल** *पु०* गोशाला का बाहरी हिस्सा।
**दरगाह** *पु०* मकबरा, दरबार।
**दरजन** *वि०* [अं० डज़न] बारह की इकाई।
**दरजा** *पु०* वर्ग, कक्षा, दर्जा।
**दरजी** *पु०* दर्जी। *कहा०* 'दरजी के बेटा जब ले जीए तब ले सीए'।
**दरद** *पु०* ममता, पीड़ा। *उदा०* 'उनका बनला बिगड़ला के इनका कवनो दरद नइखे'।

**दरपन** *पु०* [सं० दर्पण:] बड़ा आइना।
**दरब** *पु०* धन, द्रव्य। *कहा०* 'दरबे से सरबे, चहबे से करबे।'
**दरबा** *पु०* पक्षियों हेतु बना घर।
**दरबार** *पु०* राजसभा, राजाओं की कचहरी।
**दरमसल** *सक०* पैर से दबाना, रौंदना; कटु बातों से पीड़ा पहुँचाना; सम्भोग के समय पुरुष द्वारा लगाया गया बल।
**दरमाहा** *पु०* मासिक वेतन।
**दरमी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान, जिसका पौधा काला होता है।
**दरमेसल** *सक०* रगड़ना।
**दरल** *सक०* रगड़ना, मलना, दलना।
**दरवाजा** *पु०* द्वार, मकान में आने-जाने का रास्ता।
**दरवान** *पु०* द्वारपाल।
**दरवावल** *सक०* चक्की में किसी अन्न को डालकर मोटा-मोटा टुकड़ा करना।
**दरस** *पु०* एक अगहनी मोटा धान।
**दरसन** *पु०* [सं० दर्श:] अपने से बड़ों का साक्षात्कार; देव-प्रतिमा को श्रद्धापूर्वक देखने का कार्य।
**दरसनिया** *वि०* तीर्थयात्रियों का पड़ाव, जहाँ से इष्टदेव का मन्दिर दिखाई पड़ता है।
**दरहम** *पु०* सन्देह, अनिश्चित।
**दरही** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**दराँत** *पु०* हँसुआ।
**दराई** *स्त्री०* दलने की क्रिया।
**दराज** *पु०* टेबुल में बनी पेटी, ड्रावर।
**दराज** *वि०* [फा०] दीर्घ, लम्बा।
**दरार** *पु०* किसी कड़ी चीज के फट जाने से बनी फाँक।
**दरारा** *पु०* दरेरा, धक्का।
**दरिआ** *वि०* मोटा पीसा हुआ अन्न।
**दरिआव** *पु०* नदी।
**दरिए** *क्रि०वि०* निकट ही।
**दरिदर** *वि०* [सं० दरिद्र:] गरीब, दरिद्र। *कहा०* 'दरिदर से परोसवाई ना किरपिन से भखवाई ना'।
**दरियादास** *पु०* निर्गुण पंथ के प्रवर्तक सन्त।
**दरियादासी** *स्त्री०* दरियादास के चलाए पंथ या अनुयायी साधु।
**दरी** *स्त्री०* मोटे सूतों का बिछावन।
**दरीचा** *पु०* [फा०] खिड़की, मोखा, छोटा दरवाजा।
**दरीची** *स्त्री०* छोटा दरीचा।
**दरीबा** *पु०* पान का बाजार।
**दरेंती** *स्त्री०* अनाज दलने की चक्की।
**दरेरल** *अक०* रगड़ना, धक्का देना।
**दरेस** *पु०* एक प्रकार का कपड़ा, ड्रेस।
**दरेसी** *स्त्री०* जमीन को छीलकर मरम्मती का काम; ड्रेसिंग।
**दरोग** *पु०* [अ०] असत्य, मिथ्या। -**हलफी** *स्त्री०* झूठा हलफ।
**दरोगा** *पु०* थानेदार, कोतवाल।
**दर्ज** *वि०* [अ०] अंकित, लिखा हुआ।
**दर्जन** *वि०* बारह का समाहार।
**दर्जा** *पु०* [अ०] कक्षा, पद।
**दर्द** *पु०* [फा०] पीड़ा।
**दर्र** *क्रि०वि०* किसी वस्तु को दाँत से फाड़ने से निकली आवाज।
**दर्र-दर्र** *क्रि०वि०* किसी भोज्य पदार्थ को दाँत से फाड़ या तोड़कर टुकड़ा करने से निकली आवाज।
**दल** *पु०* [सं० दलम्] झुण्ड, समूह, जमात; फूलों की पंखुड़ी।
**दलकल** *अक०* हिलना, काँपना।
**दलका** *पु०* आतंक, भय।

**दलकी** *स्त्री०* दलदल भूमि, भय।
**दलगंजन** *पु०* एक मोटा धान।
**दलदल** *स्त्री०* गीली भूमि के हिलने की स्थिति।
**दलदलाइल** *अक०* गीली भूमि पर पैर रखने से हिलना; सर्दी से काँपना।
**दलपिठ्ठी** *स्त्री०* दाल में डालकर पकाई गई आटे की पिट्ठी।
**दलमा** *पु०* एक प्रकार का आम।
**दलहन** *पु०* दाल के काम आने वाला अन्न यथा अरहर, चना, मूँग, मसूर, उड़द आदि।
**दलही** *स्त्री०* दाल वाला बर्तन, दालभरी पूड़ी।
**दलान** *पु०* बैठने का बड़ा घर, दालान।
**दलाल** *पु०* खरीदने और बेचने वाले के बीच सौदा तय करने वाला बिचवई। *कहा०* 'दलाल के दिवाला का'।
**दलाली** *स्त्री०* दलाल का काम।
**दलिची** *स्त्री०* खिड़की।
**दवकल** *अक०* वातावरण की गर्मी से उत्पन्न होना।
**दवड़** *पु०* दौड़ने का भाव या कार्य।
**दवरि** *स्त्री०* स्थान, जगह।
**दवँरी** *स्त्री०* रौंदकर अन्न निकालने की प्रक्रिया।
**दवलत** *पु०* सम्पत्ति, धन।
**दवा** *स्त्री०* [फा०] औषध, इलाज, *कहा०* 'दवा से परहेज बड़'। **-खाना** *पु०* औषधालय। **-दारू** *स्त्री०* उपचार।
**दवाई** *स्त्री०* दे० 'दवा'।
**दवात** *पु०* स्याही रखने का पात्र, इंकपाट, मसिपात्र।
**दस** *वि०* [सं० दशम] पाँच की दूनी संख्या। *कहा०* 'दस गुंडा ना एक मोछमुंडा'।
**दसई** *स्त्री०* आश्विन नवरात्र के प्रथम नव दिन।
**दस-कोस** *वि०* दस कोस की दूरी।
**दसगातर** *पु०* मृत्यु के दसवें दिन का कर्म।
**दसमूल** *पु०* दस औषधियों की जड़ का समूह।
**दसरथ** *पु०* अयोध्या के राजा, रामचन्द्र के पिता।
**दसवाँ** *पु०* मृत्यु के दसवें दिन का कर्म-काण्ड।
**दसहरा** *स्त्री०* ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, गंगा दशहरा।
**दसा** *स्त्री०* हालत, अवस्था।
**दसोदुआरा** *पु०* विजयदशमी का दिन।
**दस्त** *स्त्री०* अधिक शौच होने की स्थिति।
**दस्तक** *स्त्री०* [फा०] ताली, खटखटाहट, आज्ञापत्र।
**दस्ता** *पु०* [फा०] जत्था, गड्डी, गुच्छा, रूमाल।
**दस्ताना** *पु०* [फा०] गिलाफ, रूमाल।
**दस्तावर** *वि०* [फा०] रेचक, जिसके खाने से दस्त आवे।
**दस्तावेज** *स्त्री०* [फा०] वह पत्र, जो दो-चार के बीच होने वाले व्यवहार के सम्बन्ध में लिखा गया हो, तहरीर, सनद।
**दस्तूर** *पु०* [फा०] रीति, तौर, तरीका।
**दह** *पु०* बड़ा पोखरा या झील।
**दहकल** *अक०* दहकना।
**दहकावल** *अक०* इकाई, दहाई को गिनने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**दहतर** *पु०* जो खेत पानी के कारण दह जाता हो।
**दहर** *वि०* नीचा, खाल।
**दहरौरा** *पु०* दही-बड़ा।
**दहला** *पु०* ताश की एक पत्ती।
**दहलावल** *अक०* डराना, भय पैदा करना।

**दहवापट** *स्त्री०* जलमग्न।
**दहवावल** *सक०* प्रवाहित करना।
**दहसानी** *स्त्री०* वर्षा की अधिकता से जो फसल दह गई हो।
**दहाइल** *अक०* पानी के साथ बह जाना।
**दहाई** *वि०* दसगुना, दस की इकाई।
**दहाठ** *पु०* दहकर आई हुई।
**दहाड़** *पु०* शेर की आवाज।
**दहारि** *स्त्री०* बाढ़, जल-प्लावन।
**दहिआ** *पु०* दही या गीले पदार्थ पर सड़ने के क्रम में उत्पन्न फफूँदी।
**दहिआही** *स्त्री०* दही का बर्तन।
**दहिने** *क्रि०वि०* [सं० दक्षिण:] दाहिनी ओर।
**दहियासार** *पु०* कार्तिक में उपजने वाला एक प्रकार का धान।
**दही** *पु०* [सं० दधि] जमाया हुआ दूध। *कहा०* 'दही परोसत खोंच गड़ल'।
**दहेज** *स्त्री०* कन्या-पक्ष से वर-पक्ष को शादी हेतु पर दी गई रकम।
**दहेंड़ी** *स्त्री०* दही रखने का मिट्टी का पात्र।
**दर्हम-बर्हम** *यौ०* सन्देह, शंका।
**दाँत** *पु०* [सं० दंत:] शरीर का एक अंग, जो अन्न को काटने तथा चबाने के काम आता है। *कहा०* 'दाँत चिअरले मँड़वा ठाड़'।
**दाँती** *स्त्री०* मशीन या किसी औजार के दाँत; किसी नदी या पोखर का किनारा।
**दाँय** *स्त्री०* फसल की दौनी।
**दाँया** *पु०* दाहिना।
**दाँव** *सक०* एक बार का घूमना।
**दाँव-दाँव** *यौ०* डाँट-डपट।
**दाँवरी** *स्त्री०* रस्सी।
**दाँवल** *सक०* फसल के डण्ठलों को रौंद कर दाना निकालना।
**दाई** *स्त्री०* बच्चे की देखभाल करने वाली; दादी को सम्बोधित करने का शब्द।
**दाउदी** *स्त्री०* दौदिया, एक प्रकार का सफेद गेहूँ।
**दाऊ** *पु०* [सं० देव:] अग्रज, ज्येष्ठ भाई।
**दाका** *पु०* भय, आशंका।
**दाख** *स्त्री०* [सं० द्राक्षा] अंगूर, मुनक्का।
**दाखिल** *वि०* घुसाया हुआ, उपस्थित किया हुआ, प्रवेश कराना।
**दाखिला** *पु०* मालगुजारी देने के प्रभाव में लिखा हुआ पत्रक।
**दाग** *स्त्री०* घाव या जलन का चिह्न, कलंक। *कहा०* 'दाग लगवले लँगोटिया यार'।
**दागल** *सक०* गर्म लोहे से अंग पर चिह्न या जख्म; बन्दूक से गोली छोड़ना।
**दागी** *वि०* दंडित, कलंकित; दागवाला।
**दाघ** *पु०* [सं०] दाह, ताप।
**दाज** *पु०* समता की भावना।
**दाड़ी** *स्त्री०* मकड़ी।
**दाता** *पु०* [सं० दातृ] उदारतापूर्वक देने वाला, दान देने वाला, दानशील। *कहा०* 'दाता दान दे, कंजूस देख मरे'।
**दातुअन** दे० 'दतुअन'।
**दादनी** *स्त्री०* खेती के किसी काम के लिए दी गई अग्रिम राशि।
**दादरा** *पु०* छ: मात्राओं का एक ताल।
**दादा** *पु०* [सं० ताल:] पिता का पिता, पितामह। *कहा०* 'दादा मरीहें तऽ भोज होई'।
**दान** *पु०* श्रद्धापूर्वक किसी को दी गई राशि या वस्तु। *कहा०* 'दान के बाछी के दांत ना देखल जाला'।
**दाना** *पु०* भिगोए या भुने अनाज का नाश्ता। *कहा०* 'दाना खाय अपन लोग कहे दरिदरी'।

**दानादार** *वि०* जिसमें दाना या रवा हो।
**दाना-दूनी** *यौ०* सबेरे का भोजन।
**दानी** *वि०* दान देने वाला, दाता। *कहा०* 'दानी कहीं सोम होई आ सोम कहीं दीन होई'।
**दानो** *पु०* दैत्य, दानव।
**दाब** *पु०* काटने का एक हथियार।
**दाबल** *सक०* ऊपर से भार या बोझा डालना, जमीन में गाड़ना।
**दाबी** *स्त्री०* जबरदस्ती।
**दाम** *पु०* [फा०] मूल्य, कीमत।
**दामर, दामेर** *पु०* मुकदमा चलाने के लिए आवेदनपत्र देने का काम।
**दामिल** *पु०* आजीवन कैद की सजा।
**दामी** *वि०* कीमती, दामवाला।
**दाय** *पु०* [सं०] पैतृक धन।
**दाया** दे० 'दया'।
**दार** *वि०* [फा०] रखने वाला।
**दारमदार** *पु०* [फा०] भरोसा, निर्भरता।
**दारा** *स्त्री०* मोटा पीसा हुआ अन्न; भार्या।
**दारिद** *पु ०* [सं० दारिद्र्यं] दरिद्रता।
**दारू** *स्त्री०* शराब, देशी शराब।
**दारून** *वि०* भयंकर, कठोर, विद्वेषी।
**दारोगा** *पु०* [फा०] थानेदार।
**दाल** *स्त्री०* अरहर, चना, मटर आदि का दला हुआ हिस्सा। *कहा०* 'दाल भात में मूसरचन्द'।
**दाल चीनी** *स्त्री०* जायफल के पेड़ की छाल, जो मसाले के रूप में व्यवहृत होती है।
**दाँव** *पु०* बार, मर्तबा।
**दाव** *पु०* बाजी।
**दावत** *स्त्री०* [अ०] भोज का निमन्त्रण।
**दास** *पु०* [सं०] नौकर, भृत्य, किंकर।
**दासता** *स्त्री०* [सं० दासत्वं] परतन्त्रता, गुलामी।
**दासन** *पु०* डासन।
**दासी** *स्त्री०* सेविका।
**दास्तान** *पु०* कथा, वृत्तान्त, किस्सा।
**दाह** *पु०* [सं०] भस्मीकरण, शोक; ममता।
**दाहा** *पु०* फसल का बह जाना; दाब, डाब।
**दाही** *पु०* जलाने वाला।
**दिअना** *पु०* दीआ। *उदा०* 'जगदम्बा घरे दिअना बारि अइली हों'।
**दिअरी** *स्त्री०* दिअली, छोटा दीया। दीपिका।
**दिउला** *पु०* पपड़ी, चोइयाँ।
**दिकिआवल** *अक०* तंग करना, परेशान करना।
**दिखनौट** *स्त्री०* बारी और चिकने शरीर वाली भैंस।
**दिखवटी** *स्त्री०* बनावटी।
**दिगमिग** *वि०* चकाचौंध।
**दिगर** *सर्व०* दूसरा।
**दिगवच** *स्त्री०* जलीय पक्षी।
**दिठवन** *स्त्री०* दृष्टि, मनोयोगपूर्वक देखने का काम।
**दिठौना** *पु०* बालक के माथे पर काजल का टीका।
**दिदिया** *स्त्री०* बहन, दीदी।
**दिन** *पु०* सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। **-काटल** *मुहा०* जैसे तैसे दिन बिताना। *कहा०* 'दिन में रोवे रोजी खोवे'।
**दिनानाथ** *पु०* भगवान्, गरीबों के देवता।
**दिनाय** *पु०* दादरोग, चर्मरोग।
**दिनौर** *पु०* कटनी की मजदूरी।
**दियना** *पु०* दीपक, मिट्टी का छोटा दीया।
**दियरखा** *पु०* दीवाल में छोड़ा गया खाँचा, जिसमें दीया रखा जाता है।
**दिया** *पु०* [सं० दीप:] दीपक।

**दियारा** *पु०* कछार, नदी के पास की भूमि।

**दियासलाई** *स्त्री०* [सं० दीपशलाका] लकड़ी की छोटी सींक, जिसके छोर पर मसाला लगा रहता है, जो रगड़ने से जल उठती है।

**दिरकसूल** *पु०* दिशाशूल।

**दिरिग-देहाय** *वि०* तितर-बितर, इधर-उधर।

**दिल** *पु०* [फा०] एक अवयव, जिससे शरीर में रक्त-सञ्चार होता है; हृदय, मन, जी; हिम्मत; हौसला; इच्छा। *कहा०* 'दिल मोरा चंचल जियरा उदास, मोर मन बसेला, कन्हैया जी के पास'। **-कस** *वि०* मन को खींचने वाला। **-खुस** *वि०* मन को प्रसन्न करने वाला। **-गीरी** *स्त्री०* उदासी। **-चस्प** *वि०* रुचिकर। **-जला** *वि०* दु:खी। **-दार** *वि०* रसिक, उदार। **-फेंक** *वि०* रूपलोभी।

**दिली** *वि०* नजदीकी, हार्दिक, घनिष्ठ।

**दिल्लगी** *स्त्री०* मजाक।

**दीठल** *सक०* देखना। *उदा०* 'सो खुसरो मैं आँखों दीठा'।

**दीठि** *स्त्री०* दृष्टि, नजर।

**दीढ़** *वि०* मजबूत, धैर्य।

**दीद** *वि०* [फा०] देखा हुआ।

**दीदा** *पु०* [फा०] आँख, दृष्टि।

**दीदार** *पु०* [फा०] मुँह, चेहरा, नजारा।

**दीदी** *स्त्री०* बड़ी बहन।

**दीन** *वि०* [सं०] दरिद्र, दुर्दशाग्रस्त। **-दयाल** *वि०* दीनदयालु। **-बंधु** *वि०* दीनों की सहायता करने वाला।

**दीन** *पु०* [अ०] धर्म, पंथ, मजहब। **-दार** *वि०* धर्मनिष्ठ। **-दुनिया** *स्त्री०* इहलोक-परलोक।

**दीपक** *पु०* [सं०] दीया।

**दीया** *स्त्री०* दीपक। *कहा०* 'दीया के बाती जे उसकावे ला ओकरो हाथ चीकन हो जाला'।

**दीवट** *स्त्री०* दीपक रखने का बना आधार।

**दीवान** *पु०* [फा०] मंत्री।

**दीवार** *स्त्री०* [फा०] भीत। *कहा०* 'दीवार के भी कान होला'।

**दु** *वि०* दो, एक और एक की संख्या। *कहा०* 'दु के धाई एके पाई'।

**दुअरा** *पु०* द्वार, दरवाजा। *कहा०* 'दुअरा लागल बरियात तऽ कोहड़ा रोपाए लागल'।

**दुध** *पु०* दूध।

**दुधकटू** *पु०* वह बच्चा, जिसे माँ का दूध नही मिला है।

**दुधगर** *स्त्री०* अधिक दूध देने वाली गाय या भैंस।

**दुधबनिया** *पु०* वह व्यक्ति, जो होटल में जाकर दूध बेचता है।

**दुधभरू** *वि०* जिसमें दूध पर्याप्त हो; धान, मक्का आदि फसलों में दाना बनने के लिए दूध का भर जाना।

**दुधमुहा** *वि०* दूध पीने वाला बच्चा।

**दुधार** *वि०* अधिक दूध देने वाली। *कहा०* 'दुधार गाय के लातो भला'।

**दुधी** *वि०* सफेद रंग का।

**दुधुआ** *पु०* बच्चों द्वारा माता के स्तन के लिए उपयुक्त शब्द।

**दुनाली** *स्त्री०* दो नाल वाली (बन्दूक)।

**दुनिया** *पु०* संसार। *कहा०* 'दुनिया हऽ धोखा के टट्टी'।

**दुपलिया** *वि०* दो पल्ला वाला (टोपी)।

**दुपहरिया** *स्त्री०* दोपहर।

**दुपाट्टा** *वि०* दो पाट की चद्दर।

**दुपैरा** *वि०* जिस कुएँ पर दो पुर चलें।

**दुबगली** *वि०* दोनों तरफ।
**दुबरधी** *स्त्री०* दो बैलों से खिंचा जाने वाला हेंगा।
**दुबरसी** *स्त्री०* दो बरस में ब्याने वाली गाय।
**दुबरा** *वि०* दुर्बल।
**दुबराई** *स्त्री०* दुर्बलता।
**दुबराइन** *अक०* दुबला दिखना।
**दुबराइल** *अक०* दुबला होना।
**दुबला** *वि०* कृश।
**दुबाइन** *स्त्री०* दुबे की पत्नी।
**दुबिधा** *पु०* सन्देह, अनिश्चितता, आगा पीछा।
**दुमुहाँ** *वि०* दो मुँह वाली।
**दुम्मा** *पु०* चौड़ी दुम वाली भेड़।
**दुरंगा** *वि०* दो रंगो वाला।
**दुरंगी** *स्त्री०* दो रंगवाली, दोहरी नीति वाली।
**दुर** *अव्य०* अधिक दूरी; तिरस्कारसूचक अव्यय।
**दुरकी** *स्त्री०* कपास में लगने वाला कीड़ा।
**दुरगंध** *पु०* बुरी गन्ध, गन्दी महक।
**दुरगत** *वि०* दुर्दशाग्रस्त।
**दुरगा** *स्त्री०* वह देवी, जो शेर पर सवार हो, दुर्ग की अधिष्ठात्री देवी का नाम।
**दुरगीजन** *स्त्री०* दुर्गति, बुरी स्थिति।
**दुरदुरावल** *अक०* दुरदुराना, भगाना, तिरस्कृत करना।
**दुरदेसिया** *पु०* दूरदेश में बसने वाला।
**दुरपति** *स्त्री०* पाण्डवों की पत्नी, द्रौपदी।
**दुरबल** *वि०* कमजोर।
**दुरबास** *पु०* एक ऋषि, जिनके सम्बन्ध में किंवदन्ती है कि वे केवल दूर्वा खाकर ही रहते थे।
**दुरमुस** *पु०* पीटकर भूमि को समतल बनाने का एक उपकरण।
**दुलकल** *अक०* कूदते हुए दौड़ना।
**दुलकी** *स्त्री०* घोड़ों की एक विशेष चाल।
**दुलती** *स्त्री०* दोनों लातों से।
**दुलम** *पु०* जहाँ आदमी कठिनाई से पहुँच सके।
**दुलरा** *वि०* दो लड़ों का।
**दुलरइतिन** *स्त्री०* दुलारी, प्यारी।
**दुलरुआ** *वि०* प्रिय, प्यारा।
**दुलहा** *पु०* वर। *कहा०* 'दुलहा के पत्तल न बजनिया के धार'।
**दुलहिन** *स्त्री०* नव विवाहिता वधू।
**दुस्ट** *वि०* नीच प्रकृति का।
**दुसाई** *स्त्री०* दुफसली।
**दुसाध** *पु०* हरिजनों की एक उपजाति।
**दुसुती** *स्त्री०* एक प्रकार की मोटी चादर, जिसमें दो तागों का ताना और बाना रहता है।
**दुसेरा** *पु०* दो सेर वजन का बटखरा।
**दुहत्था** *वि०* दोनों हाथों से किया हुआ।
**दुहत्थी** *स्त्री०* हाथ से चलाई जाने वाली भाथी।
**दू** *वि०* दो। **-गुन** *वि०* दुगना। **-मुँहा** *वि०* दुमुहाँ।
**दूआ** *पु०* दुक्का; आशीष।
**दूई** *वि०* दो।
**दूकान** *स्त्री०* दुकान।
**दूकी** *स्त्री०* ताश की एक पत्ती।
**दूज** *पु०* द्वितीया (तिथि)।
**दूजा** *वि०* दूसरा।
**दूटूकी** *स्त्री०* खुलासा, स्पष्ट।
**दूध** *पु०* स्वास्थ्यवर्द्धक पेय। *कहा०* 'दूध के दूध, पानी के पानी'। **-पिलाई** *स्त्री०* बच्चों को दूध पिलाने के उपयोग में आने वाली रबर की वस्तु।
**दूधा** *वि०* वह दाँत, जो जन्म से तब तक रहता है जब तक वह टूट नहीं जाए।
**दूना** *वि०* दोगुना।

**दूनी** *वि०* दो के पहाड़े में दोगुना का बोधक शब्द।
**दूनू** *वि०* दोनों, पति-पत्नी।
**दूबर** *वि०* निर्बल, कमजोर, दुबला, पतला।
**दूबे** *पु०* ब्राह्मणों की एक उपाधि।
**दूभर** *वि०* दुर्भर, कठिन, कठोर।
**दूर** *वि०* [फा०] जो दूर हो, फासले पर। *कहा०* 'दूर के ढोल सुहावन'। **-बीन** *स्त्री०* यंत्र, जिससे दूर की वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं।
**दूरजन** *वि०* बैरी, दुष्ट व्यक्ति।
**दूरी** *स्त्री०* फासला।
**दूसर** *वि०* द्वितीय। *कहा०* 'दूसर के दौलत ज्यादा लागे'।
**दूसल** *अक०* दोष देना।
**दूहउनी** *स्त्री०* दूहने की मजदूरी।
**देआदिन** *स्त्री०* पति के भाई की पत्नी।
**देआनत** *पु०* विचार, समझदारी।
**देआल** *वि०* कृपालु, दयालु।
**देई** *स्त्री०* देवी के लिए गीतों में प्रयुक्त शब्द।
**देउकुर** *पु०* देवस्थान। *कहा०* 'देउकुर गइले दूना लाभ'।
**देउता** *पु०* देवता। *कहा०* 'देउता दरबार गइले सीध'।
**देखनउक** *वि०* देखनेयोग्य।
**देखभाल** *स्त्री०* सुरक्षा, निगरानी।
**देखल** *अक०* देखना। *मुहा०* 'देखल दूध बिलाई छोड़ी'।
**देखाऊ** *वि०* बनावटी, दिखावटी, झूठ।
**देखार** *वि०* वह व्यक्ति, जिसकी चाल स्पष्ट हो गई हो; कन्या के विवाह के लिए देखने आने वाले लोग।
**देखावल** *अक०* दिखलाना।
**देखा देखी** *स्त्री०* दर्शन, देख-देख कर अनुकरण।
**देग** *पु०* [फा०] बड़ी थाली।
**देगचा** *पु०* [फा०] थाली।
**देगची** *स्त्री०* [फा०] छोटी थाली।
**देन** *स्त्री०* कर्ज, ऋण; कृपा।
**देनदार** *पु०* देने के लिए पाबन्द।
**देनी-लेनी** *स्त्री०* आदान-प्रदान।
**देबी** *स्त्री०* भवानी, देवी।
**देर** *स्त्री०* [फा०] विलम्ब, अतिकाल।
**देरी** *स्त्री०* विलम्ब।
**देवकरी** *स्त्री०* देवस्थान। *कहा०* 'देवकीर गेले दूना दुख'।
**देवकी** *स्त्री०* कृष्ण की माता।
**देवठान** *पु०* वर्ष में पहली बार ईख काटने पर किया जाने वाला उत्सव; देवोत्थान।
**देवता** *पु०* देव, पूज्य।
**देवथान** *पु०* देवता का स्थान, मन्दिर।
**देवदार** *पु०* जंगलों में पाया जाने वाला एक वृक्ष।
**देव दीअरी** *स्त्री०* दीपावली।
**देवर** *पु०* पति का छोटा भाई।
**देवराई** *स्त्री०* दीवाली के अगले दिन मनाने वाला ग्वालों का एक व्रत।
**देवल** *पु०* देव-मन्दिर।
**देवसार** *पु०* एक प्रकार का धान।
**देवान** *पु०* वजीर, मंत्री।
**देवानी** *स्त्री०* वह मुकदमा, जिसमें हक की लड़ाई हो।
**देवारी** *स्त्री०* दीपावली।
**देवाल** *पु०* दीवार, भीत।
**देवाला** *पु०* दिवाला, व्यवसाय में पूरा घाटा।
**देवा-लेई** *स्त्री०* लेन-देन।
**देवी** *स्त्री०* [सं०] दुर्गा, आद्याशक्ति। **-पुराण** *पु०* दुर्गा-माहात्म्य सम्बन्धी ग्रन्थ। **-भागवत** भगवती दुर्गा के माहात्म्य का ग्रन्थ।

**देवैया** *पु०* देने वाला।
**देवोत्थान** *पु०* [सं०] छह माह की योग-निद्रा के बाद विष्णु का शय्या से उठना।
**देश** *पु०* [सं०] स्थान, मुल्क।
**देशांतर** *पु०* [सं०] दूसरा देश, विदेश।
**देशाटन** *पु०* [सं०] पर्यटन।
**देस** *पु०* देश। **-निकाला** *पु०* देश निकाला। **-वाल** *वि०* देश का, स्वदेशी।
**देसिका** *पु०* देशी।
**देह** *पु०* शरीर, काय। *कहा०* 'देह डोरा, पेट बोरा'।
**देहगर** *पु०* पुष्ट शरीर वाला।
**देहली** *स्त्री०* देहरी।
**देहांत** *पु०* निधन, मृत्यु।
**देहात** *पु०* ग्रामीण क्षेत्र।
**देहाती** *वि०* ग्रामीण।
**देहा-देही** *यौ०* प्रति व्यक्ति।
**देहि-धाजा** *पु०* शारीरिक गठन, देह की बनावट।
**देही** *वि०* [सं० देहिन्] प्राणी।
**दैव** *पु०* [सं०] भाग्य, नियति, अदृष्ट। **-गति** *स्त्री०* भाग्य चक्र। **-जोग** *पु०* घटना। **-बस** *क्रि०वि०* अकस्मात्।
**दैवी** *वि०* [सं०] आकस्मिकी।
**दैहिक** *वि०* [सं०] शारीरिक।
**दोंगा** *पु०* द्विरागमन, कन्या का वर के घर दुबारा जाना।
**दोआबा** *पु०* दो नदियों के बीच की भूमि।
**दोआर पूजा** *पु०* बारात दरवाजे लगने पर द्वार पर की गई पूजा।
**दोआह** *वि०* दूसरा ब्याह करने वाला व्यक्ति।
**दोआही** *स्त्री०* मछली मारने का एक उपक्रम।
**दोएम** *वि०* मध्य श्रेणी का, दूसरे नम्बर का।
**दोकरा** *पु०* पैसे का चौथा भाग।
**दोकरी** *स्त्री०* एक प्रकार का साधारण कपड़ा।
**दोकल** *वि०* ऐसा बछड़ा, जिसके दो दूध के दाँत टूटे हों।
**दोकान** *स्त्री०* वह घर, जहाँ सौदे की खरीद-बिक्री होती है।
**दोकानदार** *पु०* सौदा बेचने वाला।
**दोखरल** *सक०* प्रत्युत्तर में शब्दों को दोहराना।
**दोगनारी** *स्त्री०* दीवार या दो वस्तुओं के बीच की जगह।
**दोगमगाह** *वि०* अनिश्चित, सन्देहात्मक।
**दोगला** *पु०* भिन्न जातीय माता-पिता से उत्पन्न व्यक्ति, वर्णसंकर।
**दोगली-कुन्नी** *स्त्री०* कुन्नी भैंस।
**दोगहा** *पु०* दो दरवाजा वाला मकान, दो दीवालों के बीच की जगह, दुआर-घर।
**दोगा** *पु०* दो वस्तुओं के बीच का रिक्त स्थान।
**दोगाड़ी** *स्त्री०* समान स्तर की अन्य जाति से विवाह।
**दोगामा** *पु०* घोड़ा की एक चाल।
**दोगामी** दे० 'दोगाड़ी'।
**दोगाह** *पु०* गौओं के रहने का मकान, गोशाला।
**दोच** *स्त्री०* भूल, विस्मृति।
**दोदरा** *पु०* खुजलाने से निकला चिकना बदन का चकत्ता; छड़ी की मार से उग आयी दाग।
**दोदल** *अक०* किसी सत्य को स्वीकार करना।
**दोन** *पु०* दो नदियों का संगम-स्थान।
**दोना** *पु०* पेड़ के पत्ते की बनी कटोरी।
**दोनी-बेदी** *यौ०* श्राद्ध की वेदी।
**दोपटी** *वि०* जिसके दोनों पाट अलग हो गए हों।

**दोफसली** *स्त्री०* जिस खेत में दो फसलें उगाई जाती हों।

**दोबर** *वि०* दो तहों वाला।

**दोबरा** *वि०* दोहरा।

**दोबल** *सक०* मवेशी को चराते समय हाँकना।

**दोबारा** *वि०* दूसरी बार।

**दोबारल** *सक०* वस्त्र को मोड़कर दो पर्त करना।

**दोबिधा** *पु०* दुविधा।

**दोम** *पु०* पूँछ, दुम।

**दोमट** *वि०* हल्की और कड़ी मिट्टी के योग से बना खेत।

**दो मंजिला** *वि०* दो छत वाला मकान।

**दोरकार** *पु०* जरूरत, आवश्यकता, सरोकार।

**दोरस** *पु०* ऐसी ऋतु, जब सर्दी और गर्मी दोनों समान हों।

**दोलग** *पु०* एक प्रकार का धान।

**दोलड़ा** *पु०* अन्न का टुकड़ा।

**दोलाई** *स्त्री०* रूईभरी रजाई।

**दोले** *पु०* ऐकार के लिए प्रयुक्त शब्द।

**दोषी** *वि०* अपराधी, कसूरदार।

**दोस** *पु०* अपराध, गलती।

**दोसर** *वि०* दूसरा। *कहा०* 'दोसर के पाईं त जरो लगला में खाईं'।

**दोसराइत** *स्त्री०* जहाँ दूसरा व्यक्ति भी हो।

**दोसरे** *वि०* दूसरी बार ब्यायी भैंस या गाय।

**दोसाला** *पु०* बेलदार किनारा वाला ऊनी चादरों का जोड़ा।

**दोस्ती** *स्त्री०* मित्रता। *कहा०* 'दोस्ती में कुस्ती'।

**दोहँड़ी** *स्त्री०* दो नीची जमीनों के बीच का ऊँचा भूमि-खण्ड।

**दोहथा** *पु०* दोनों हाथ, परस्पर।

**दोहथी** *स्त्री०* दो लोइयों के साथ बेलकर बनायी गई रोटी।

**दोहनी** *स्त्री०* दूध दूहने का पात्र।

**दोहरउती** *स्त्री०* किसी काम को दुबारा करने की स्थिति।

**दोहरा** *वि०* दुबारा, दो परतों का।

**दोहरावल** *सक०* किसी काम को दो बार करना।

**दोहा** *पु०* यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसके चार लक्षण होते हैं। इसके विषम चरणों में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों में 11-11 मात्राएं होती हैं। उदा० ''बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर॥''

**दोहाई** *स्त्री०* रक्षार्थ पुकार।

**दोहान** *पु०* बड़े डील-डौल का नया बैल।

**दोहापाई** *स्त्री०* दौड़-धूप।

**दोहार** *पु०* हल से दोबारा जोताई।

**दोहारल** *सक०* खेत को दोबारा जोतना।

**दोही** *स्त्री०* बैर रखने वाला दुश्मन।

**दौड़** *स्त्री०* दौड़ने का कार्य।

**दौड़ल** *अक०* वेग से चलना।

**दौड़ादौड़ी** *स्त्री०* जल्दबाजी, दौड़-धूप।

**दौड़ान** *स्त्री०* दौड़।

**दौर** *पु०* [अ०] फेरा, चक्कर। **-दौरा** *पु०* बोलबाला, चलती।

**दौरल** *अक०* दौड़ना।

**दौरा** *पु०* एक प्रकार का टोकरा।

**दौरी** *स्त्री०* डलिया। मड़ाई की क्रिया (बैलों द्वारा)।

**दौलत** *स्त्री०* [अ०] धन, सम्पत्ति। **-खाना** *पु०* घर। **-मंद** *वि०* मालदार। **-मंदी** *स्त्री०* धनाढ्यता।

# ध

**ध** हिन्दी वर्णमाला के तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
**धंका** *पु०* धक्का, चोट।
**धँगड़िन** *स्त्री०* धाँगड़ जाति की स्त्री; सेविका।
**धँगाइल** *अक०* रौंदा जाना।
**धंध** *पु०* बखेड़ा, झमेला।
**धंधक** पु० झंझट, जंजाल।
**धंधरक** *पु०* जंजाल। **-धोरी** *पु०* संसारभर के जंजाल में लगा रहने वाला।
**धंधला** *पु०* ढोंग, छल-कपट।
**धंधलाइल** *अक०* ढोंग करना।
**धंधा** *पु०* [सं० धनदा] व्यवसाय, काम।
**धंधार** *स्त्री०* ज्वाला।
**धंधारी** *स्त्री०* गोरखधन्धा।
**धँधोर** *स्त्री०* ज्वाला।
**धँसल** *अक०* धँसने की क्रिया, नीचे खिसकना।
**धँसावल** *सक०* गाड़ना, पैठाना, खिसकाना।
**धइल** *अक०* पकड़ना, रखना।
**धइली** *स्त्री०* जिस हेंगा में चार बैल बहते हैं उसमें बायें बहने वाला बैल।
**धउजन** *पु०* मानसिक उद्वेग, अनावश्यक परेशानी।
**धउताल** *वि०* मूर्ख, बुद्धिहीन।
**धउरल** *अक०* बार-बार जाना, दौड़ना।
**धउरहर** *पु०* धरहरा।
**धक** *स्त्री०* धक्का, ठोकर; दिल की धड़कन। **-पक** *स्त्री०* धकधकी।
**धकधकाइल** *अक०* भय के चलते कलेजे का तेजी से धड़कना।
**धकधकाहट** *स्त्री०* धड़कन।
**धकधकी** *स्त्री०* धड़कना, धुकधुकी।
**धकपकाइल** *अक०* आतंकित होना।
**धकपेल** *स्त्री०* धक्कम-धक्का।
**धकरछोल** *पु०* खूब मोटा व्यक्ति।
**धका** *पु०* आघात। **-धूम** *स्त्री०* रेलपेल, चढ़ाउपरी। **-पेल** *स्त्री०* धकपेल।
**धकाधक** *क्रि०वि०* खूब तेजी से, लगातार।
**धकिआवल** *सक०* धकेलना, ठेलना।
**धकेलल** *सक०* आगे की ओर ठेलना, धकेलना।
**धक्का** *पु०* ठोकर, आघात, हानि।
**धक्काड़** *वि०* प्रभावशाली, धाक वाला।
**धखछुट्ट** *वि०* निर्लज्ज।
**धखाइल** *अक०* धाक मानना।
**धगड़** *पु०* उपपति। **-बाज** *वि०* कुलटा।
**धगड़ी** *स्त्री०* व्यभिचारिणी स्त्री।
**धगरिन** *स्त्री०* नाल काटने वाली स्त्री।
**धगरी** *स्त्री०* पति की मुँहलगनी।
**धगाँठ** *पु०* पशुओं द्वारा धँगाया फसल।
**धगेठ** दे० 'धगाँठ'।
**धगेंचल** *सक०* खूब रौंदना, धाँगना।
**धजा** *पु०* पताका, ध्वज।
**धजी** *स्त्री०* बहाना, धज्जी, टुकड़ा।
**धजीला** *वि०* सजीला।
**धडंग** *वि०* नंगा।
**धड़** *पु०* [सं० धर:] शरीर का बिचला मोटा भाग, कमर के ऊपर का भाग। *स्त्री०* वेग से भूमि पर गिरने का शब्द।
**धड़क** *स्त्री०* खटका, हृदय का स्पन्दन।
**धड़कन** *स्त्री०* कलेजे की धकधक।
**धड़कल** *अक०* दिल का धक-धक करना।
**धक्का** *पु०* जोर की आवाज।
**धड़धड़** *स्त्री०* लगातार आवाज होने की स्थिति; शीघ्रतापूर्वक।
**धड़ा** *पु०* बाट, वजन, पसँगा। **-बंदी** *स्त्री०* दलबन्दी।

**धड़ाक** *पु०* किसी वस्तु के ऊपर से नीचे गिरने का शब्द।
**धड़ाका** *पु०* पटाखे की आवाज।
**धड़ाधर** *क्रि०वि०* जल्दी-जल्दी, लगातार।
**धड़ाम** *पु०* किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
**धत** *स्त्री०* बुरी लत।
**धतकारल** *सक०* दुतकारना, धिक्कारना।
**धतपत** *अव्य०* लगभग।
**धता** *वि०* गया हुआ, हटा हुआ। **-बतावल** *मुहा०* टाल देना।
**धतीगँड़** *पु०* बेडौल आदमी, दोगला।
**धतूरा** *पु०* एक नशीला पौधा।
**धधक** *स्त्री०* लपट, लौ।
**धधकल** *अक०* लपट के साथ जलना।
**धधकावल** *अक०* ज्वलित करना, दहकाना।
**धधपाकी** *स्त्री०* सुजाक की बीमारी।
**धधाइल** *अक०* शक्ति के मद में अनर्थ कर बैठना। *कहा०* 'धधाइल बाड़न तुरते बुतइहन'।
**धधार** *पु०* आग की लपट।
**धनकर** *पु०* धान वाला खेत।
**धनकुटी** *स्त्री०* धान कूटने का उपकरण।
**धनखर** *पु०* धनहर (खेत), वह खेत, जिसमें धान की फसल होती है।
**धनखेती** *स्त्री०* धान का खेत।
**धनतेरस** *पु०* कार्तिक के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी।
**धनपापर** *पु०* एक प्रकार की घास, जो औषधि के काम में आती है।
**धनबाल** *पु०* मकई के पौधे से निकला बाल, जो धान के बाल की तरह होता है।
**धनवान** *वि०* सम्पत्तिवान, धनी।
**धनहेरा** *पु०* मकई के पौधे से निकला धान के समान बाल, जिसमें फूल रहता है।
**धन्हकल** दे० 'धनकर'।
**धनाढ़** *वि०* अति धनिक, बड़ा धनी।
**धनाही** *स्त्री०* धान की अच्छी उपज होने की स्थिति।
**धनि** *स्त्री०* वधू, युवती, *वि०* धन्य।
**धनिक** *वि०* धनवान, सम्पत्तिशाली।
**धनिकहवा** *पु०* धनी। (संकेतात्मक)।
**धनियाँ** *पु०* मसाला; लोकगीतों में पत्नी के लिए प्रयुक्त शब्द (धन्या); एक महीन धान।
**धनी** *स्त्री०* प्रियतमा, युवती, स्त्री धनाढ्य।
**धनु** *पु०* [सं०] धनुष, धनुर्धर।
**धनुआ** *पु०* रूई धुनने का साधन।
**धनुई** *स्त्री०* धनुही।
**धनुक** *पु०* धनुष, इन्द्रधनुष।
**धनुख** *पु०* धनुष।
**धनुखा** *पु०* राजा जनक द्वारा सीता के स्वयंवर में रखा गया धनुष।
**धनुस** *पु०* एक हथियार, कमान।
**धनुहा** दे० 'धनुखा'।
**धनुही** *स्त्री०* छोटा धनुष, धनुकी।
**धनेस** *स्त्री०* एक प्रकार की बड़ी चोंच वाली चिड़िया। *पु०* कुबेर।
**धन्ना** *पु०* धरना।
**धन्नासेठ** *पु०* धनी व्यक्ति।
**धन्य** *वि०* [सं०] कृतार्थ। **-वाद** *पु०* साधुवाद।
**धन्या** *वि०* *स्त्री०* प्रशंसनीया।
**धप** *स्त्री०* 'धप' की आवाज।
**धपधप** *वि०* सफेद।
**धप्पड़** *स्त्री०* चमेटा, थप्पड़।
**धप्पा** *पु०* बड़ी कौड़ी, जिसका उपयोग खेल में होता है; थप्पड़।
**धब्बका** *पु०* गिरने से निकली 'धब्ब' की आवाज।

**धब्बा** *पु०* दाग, कलंक।
**धम** *पु०* [सं०] गिरने, चलने से होने वाला शब्द। **-गजर** *पु०* उत्पात। **-धम** *स्त्री०* धम की आवाज।
**धमक** *स्त्री०* चलने, चोट पहुँचाने से उत्पन्न कम्प।
**धमकल** *अक०* पहुँच जाना।
**धमकावल** *अक०* भय दिखाना, डराना।
**धमकी** *स्त्री०* भय दिखाने का कार्य।
**धमक्का** *पु०* ऊपर से किसी वस्तु के गिरने की आवाज।
**धमधकी** *स्त्री०* दबदबा, रोबदार, प्रभाव, तेजी।
**धमधमावल** *अक०* 'धम-धम' शब्द करना; मुक्के से जोरदार मारना।
**धमधूसूर** *वि०* कद में नाटा और मोटा।
**धमाक** *पु०* धम्म से गिरने का शब्द।
**धमाकुल** *पु०* एक प्रकार की तम्बाकू, जो बड़े पत्तों वाली होती है।
**धमाधम** *क्रि०वि०* लगातार 'धम धम' का शब्द।
**धमिन पोंछ** *पु०* लम्बी और मोटी पूँछ वाला सर्प।
**धम्म** *स्त्री०* किसी भारी वस्तु के गिरने की आवाज।
**धर** *पु०* पर्वत; धारण करने वाला। **-पकड़** *स्त्री०* गिरफ्तारी।
**धरउटी** *स्त्री०* बन्धक।
**धरक** *स्त्री०* धड़क।
**धरका** *स्त्री०* धड़का।
**धरकार** *पु०* नीच जाति, बँसोर।
**धरता** *पु०* कर्जदार।
**धरती** *स्त्री०* पृथ्वी, जमीन, खेत।
**धरतीझार** *पु०* धरती छूनेवाला।
**धरन** *स्त्री०* छप्पर को गिरने से बचाने के लिए घर में लगाया गया काठ का सामान, शहतीर।
**धरना** *पु०* किसी के यहाँ किसी काम के लिए लगातार बैठे रहने की स्थिति।
**धरनि** *स्त्री०* धरणी।
**धरनी** *स्त्री०* शहतीर।
**दरनेत** *पु०* धरना देने वाला।
**धरम** *पु०* कर्त्तव्य, पुण्यकार्य, परोपकार, श्रद्धा-भक्ति। *कहा०* 'धरम रहे त ऊसर में जरे'।
**धरमसास्तर** *पु०* धर्मग्रन्थ, धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता।
**धरमसाला** *स्त्री०* वह घर, जो बाहर के आदमियों के नि:शुल्क ठहरने के लिए बनवाया गया हो, धर्मशाला।
**धरमातमा** *वि०* धर्म करने वाला, धर्मी।
**धरमावतार** *पु०* राजाओं एवं बड़े लोगों के लिए प्रयुक्त एक विशेषण, जिनसे न्याय की आशा रहती है।
**धरनी** *वि०* धर्मात्मा, धर्म को मानने वाला, धर्मी।
**धरवइया** *पु०* पकड़ने वाला, रखने वाला।
**धरवावल** *सक०* किसी वस्तु को रखवा देना; किसी काम के लिए तारीख निश्चित करना।
**धरहरिया** *पु०* दो के बीच में चल रहे संघर्ष में रोकनेवाला व्यक्ति।
**धराइल** *सक०* रखा जाना; चोरी या व्यभिचार करते समय पकड़ा जाना।
**धराऊँ** *वि०* जो विशेष अवसरों पर ही व्यवहार में लाया जाता है।
**धरा धरी** *पु०* मारपीट के लिए एक-दूसरे को पकड़ने की स्थिति।
**धरीछन** *पु०* प्रयत्न, प्रयास।
**धरोहर** *पु०* थाती, अमानत।

**धर्म** *पु०* [सं०] वेद विहित कर्म जैसे यज्ञ; लोक-व्यवहार सम्बन्धी नियम, स्वभाव। **-क्षेत्र,** *पु०* भारतवर्ष। **-पत्नी** *स्त्री०* व्याही हुई स्त्री। **-पीठ** *पु०* काशी। **-युग** *पु०* सत्ययुग। **-राज** *पु०* युधिष्ठिर।

**धवई** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।

**धवर** *वि०* उज्ज्वल, सफेद।

**धवरहर** *पु०* ऊँचा मकान।

**धवरा** *वि०* उजला, सफेद।

**धवलगिरी** *पु०* एक पर्वत।

**धसल** *अक०* बोझ से नीचे दबना।

**धसवावल** *सक०* प्रविष्ट करने देना; धसाने के लिए प्रेरित करना।

**धसोरल** *सक०* जोर से घुसेड़ना।

**धहकल** *अक०* खूब जलना, प्रज्वलित होना।

**धाँगड़** *पु०* एक अनार्य जाति।

**धाँगल** *सक०* कुचलना, रौंदना।

**धाँधल** *स्त्री०* ऊधम, शैतानी।

**धाँधली** *वि०* ऊधमी, धूर्त।

**धाँय धाँय** *वि०* जल्दी-जल्दी बन्दूक से गोली निकलने की आवाज।

**धाकड़** *पु०* शरीर का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति।

**धाख** *पु०* रोबदाब, दबदबा, भय।

**धागड़** *पु०* उराँव, उराँव युवक।

**धागल** *अक०* पैदल चलकर दूरी को तय करना।

**धागा** *पु०* सूत, डोरा, तागा।

**धात** *स्त्री०* द्रव्य, जिससे कोई बर्तन या हथियार बनता है, धातु।

**धाध** *पु०* वीर्य।

**धान** *पु०* एक अन्न, जिससे चावल तैयार होता है। *कहा०* 'धान-पान नित असनान'।

**धानी** *वि०* धान के पौधे के रंग का; तोतई रंग।

**धानुख** *पु०* एक जातिविशेष।

**धाप** *पु०* खाली जमीन।

**धाम** *पु०* देवस्थल, तीर्थ।

**धामिन** *पु०* एक तेज दौड़ने वाला विषैला सर्प।

**धाय** *स्त्री०* धात्री, उपमाता।

**धार** *स्त्री०* नदी की धारा, हथियार का पैना, किनारा।

**धार-उपधार** *यौ०* कृतज्ञता, एहसान।

**धारल** *सक०* किसी के प्रति देनदार या कर्जदार होना।

**धारा** *स्त्री०* नदी या जल का प्रवाह-मार्ग; दफा।

**धारी** *स्त्री०* रेखा।

**धाव-धूप** *यौ०* दौड़-धूप।

**धाव** *पु०* दूत, हरकारा।

**धावल** *अक०* दौड़ना।

**धावा** *पु०* आक्रमण, चढ़ाई।

**धासल** *सक०* घुसेड़ना, हलाना, गाड़ना।

**धाह** *पु०* गर्मी, आतप।

**धाही** *स्त्री०* प्रात:काल की लाली।

**धि** *पु०* [सं०] आधार, भाण्डार।

**धिआ** *स्त्री०* पुत्री।

**धिआन** *पु०* ध्यान।

**धिक** *अव्य०* घृणा का शब्द।

**धिग धिगा** *वि०* नंग-धड़ंग।

**धिधरिम** *पु०* धीरज, धैर्य।

**धिपावल** *सक०* गर्म करना।

**धिरकार** *पु०* हत्यारा।

**धिरकाल** *सक०* भर्त्सना करना, निन्दा करना।

**धिरज** *पु०* धैर्य।

**धिरावल** *सक०* धमकाना।

**धिरिक** *पु०* भर्त्सना के लिए प्रयुक्त शब्द, धिक्कार।

**धीकल** *अक०* गर्म होना। *कहा०* 'धीकल पानी तऽ आग बुतावे में अल्हड़'।

**धीपल** *अक०* गर्म होना।
**धीमर** *वि०* धीरा, किसी काम को धीरे-धीरे करने वाला।
**धीमा** *वि०* मन्द, कम।
**धीमाठ** *वि०* अति धीमा।
**धीया** *स्त्री०* बेटी, पुत्री।
**धीरज** *पु०* धीरज, धैर्य।
**धीरा** *वि०* धीरे-धीरे चलने या करने वाला, मन्दगामी।
**धीरे-धीरे** *क्रि०वि०* मन्द-मन्द, शनैः-शनैः। *कहा०* 'धीरे-धीरे काहे चलल जवरे बानी'।
**धुअँतु** *वि०* धूएँ के समान गन्ध या स्वाद वाला।
**धुआँइल** *अक०* धुआँ देना।
**धुआँकस** *पु०* घर के धूएँ के निकलने के लिये बनाई गई चिमनी।
**धुआँस** *पु०* प्रेतबाधा दूर करने के लिए आग में डालकर तैयार लाल मिर्च का धुआँ।
**धुकधुकाइल** *अक०* कलेजे में धड़कन पैदा होना।
**धुकधुकी** *स्त्री०* हृदय के धड़कने की स्थिति।
**धुकुर-धुकुर** *क्रि०वि०* मन्द गति से; अनियमित प्रकार से।
**धुक्कड़** *पु०* धूलभरी जोरों की हवा।
**धुटेवा** *पु०* छोटा बच्चा।
**धुड़ंगी** *वि०* नंगा।
**धुतकारल** *सक०* दुतकारना।
**धुत्त** *वि०* निश्चेष्ट।
**धुधुका** *पु०* सिंगा।
**धुधुकार** *स्त्री०* 'धू-धू' की आवाज।
**धुधकी** *स्त्री०* धुधुकार।
**धुन** *पु०* प्रवृत्ति, मौज; गति की लय।
**धुनकी** *स्त्री०* फटका, रूई धुनने का औजार।
**धुनल** *सक०* बेतरह पीटना, रूई की गन्दगी को फटकार कर दूर करना।
**धुनाई** *स्त्री०* पिटाई, मरम्मत।
**धुनिया** *पु०* रूई धुनने का काम करने वाला।
**धुनी** *वि०* जिसे किसी बात की धुन हो।
**धुपधुप** *वि०* दगदगा, साफ।
**धुपावल** *वि०* धूप दिखाना।
**धुरंधर** *पु०* अप्रतिम, सुयोग्य।
**धुरकावल** *सक०* किसी पर आक्रमण करने के लिए उत्तेजित होना।
**धुरकिल्ली** *स्त्री०* पहिये को गिरने से रोकने के लिए धूरे में लगाई गई कीली।
**धुरकी** *स्त्री०* धूर का बीसवाँ भाग (खेत)।
**धुरखुँड़ा** *पु०* द्वार के निकट की भीत।
**धुरना** *वि०* छली, प्रपंची।
**धुरपद** *पु०* शास्त्रेय संगीत की एक प्राचीन भारतीय पद्धति।
**धुरफनई** *स्त्री०* धूर्तता।
**धुरिआवल** *सक०* धूल डालना या झोकना।
**धूरिहा** *पु०* पहलवान, शरीर में धूल लगाने वाला व्यक्ति।
**धुरून** दे० 'धुरना'।
**धुरूपतारा** *पु०* ध्रुवतारा।
**धुसरा** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान।
**धूँआँ** *पु०* धुआँ।
**धूँई** *स्त्री०* सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। साधुओं की तापने की आग, धूनी।
**धूआ** *पु०* मानवाकृति।
**धूकना** *वि०* अति मोटा।
**धूकल** *सक०* केला, बेल आदि को पकाने के लिए मुँह से फूँककर धुआँ को पहुँचाना।
**धूत** *वि०* छली, पाखण्डी।
**धूताई** *स्त्री०* धूर्तता, चालाकी।

**धूति** *स्त्री०* एक प्रकार की चौड़ी मछली, जिसमें काँटा अधिक होता है।
**धूतुक** *पु०* तुरही, नरसिंगा।
**धू धू** *पु०* आग के जोर से जलने का शब्द।
**धून** *स्त्री०* गाने का तर्ज।
**धूनल** *सक०* रूई को धुनकी के सहारे तोड़कर मुलायम करना।
**धूनिआ** *पु०* रूई धुनने वाली मुसलमानों की एक जाति।
**धूनी** *स्त्री०* लकड़ी के टुकड़े की आग, जिसका उपयोग प्रायः साधु करते हैं। **-रमावल** *मुहा०* किसी जगह पर कुछ दिन के लिए चाहे-अनचाहे विश्राम करना।
**धूप** *पु०* एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी, जिसका उपयोग हवन में होता है; प्रकाश।
**धूपछाँह** *पु०* एक प्रकार का वस्त्र, जो बारी-बारी से दो रंगों का नजर आता है।
**धूपदानी** *स्त्री०* धूप रखने का पात्र।
**धूपल** *अक०* दौड़ना।
**धूम** *पु०* [सं० धूमः] कोलाहल, ऊधम, हर्षोत्सव।
**धूमगज्जर** *पु०* हल्ला, कोलाहल।
**धूमधाम** *यौ०* ठाट-बाट, समारोह, भारी तैयारी।
**धूमहाँव** *पु०* धूम-धाम।
**धूमिल** *वि०* मलीन, मैला।
**धूर** *स्त्री०* कट्ठा का बीसवाँ भाग (खेत)।
**धूरखेल** *पु०* होली के दिन मिट्टी से खेला जाने वाला खेल।
**धूरमुस** *पु०* मिट्टी को पीटकर कड़ा बनाने का औजार।
**धूरसँझ** *पु०* गोधूलि।
**धूरहा** *पु०* वैसा बैल, जो अपने मालिक के पास अकेला हो तथा किसी अन्य बैल के साथ हल में बहता हो।
**धूरा** *पु०* धूल; गाड़ी की धूरी, जिसमें पहिया लगा रहता है।
**धूरिआइल** *अक०* तत्पर होना।
**धूरिआझार** *क्रि०वि०* सफाई के साथ, भलीभाँति।
**धूल** *स्त्री०* [सं० धूलिः] धूर, धूल, रेणु।
**धूस** *पु०* मिट्टी और बालू मिली जमीन, ऊँची जमीन।
**धूसर** *वि०* धूमिल, मटमैला।
**धूसल** *सक०* ठेलना।
**धूसिया** *पु०* वह खिलाड़ी, जो बारी-बारी से दोनों दल की ओर से खेलता है।
**धूस्सा** *पु०* ऊनी ओढ़ना।
**धेआन** *पु०* एकाग्र चित से चिन्तन, ख्याल।
**धेआनत** *स्त्री०* मृत्यु, देहान्त।
**धेन** *स्त्री०* हाल की ब्यायी गाय, धेनु।
**धेनुका** *स्त्री०* धेनु, भेंट, पशु।
**धेवता** *पु०* दौहित्र।
**धोअन** *पु०* किसी वस्तु को धोने से निकला मैलयुक्त पानी।
**धोअल** *सक०* पानी से साफ करना, किसी के उपकार को भुला देना।
**धोआँच** *पु०* पानी में फुलाकर धोई हुई दाल।
**धोआ** *वि०* धोया हुआ नया (वस्त्र)।
**धोआई** *स्त्री०* धोने की मजबूरी, धोने का काम।
**धोआवल** *सक०* पानी से साफ करना, धुलवाना।
**धोई** *स्त्री०* पानी में फुलाकर छिलका निकालकर मूँग, उड़द की दाल।
**धोकरकसवा** *पु०* बच्चों को डराने के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है।
**धोकरा** *पु०* थैला।
**धोख** *पु०* भूत, प्रेत; ओट, आड़।

**धोखरल** *अक०* जल-प्रवाह से मिट्टी का बह जाना।

**धोखरा** *पु०* वर्षा की धारा से बह कर गई हुई मिट्टी।

**धोखा** *पु०* छल, वंचना, विश्वासघात।

**धोखाबाज** *वि०* दगाबाज, छली।

**धोछ** *वि०* कृपण, निकृष्ट।

**धोती** *स्त्री०* [सं० धौत] पुरुषों के पहनने का वस्त्र। *कहा०* 'धोती के भीतर सभ लंगा'।

**धोंध** *पु०* तोंद।

**धोंधड़** *पु०* वृक्ष के अन्दर की सुराख।

**धोपचट** *पु०* धोखा।

**धोपल** *सक०* काटना, जान मारना।

**धोब-घट्टा** *पु०* जहाँ धोबी कपड़ा धोता है।

**धोब-घर** *पु०* धोबी का घर।

**धोबिन** *स्त्री०* धोबी की स्त्री।

**धोबी** *पु०* वस्त्र साफ करने वाला, रजक। *कहा०* 'धोबी धोवे पियासे मूए'।

**धोरिआइल** *अक०* रास्ते पर आना, ठीक से काम करने लगना।

**धोस** *पु०* कटोकरी में रस्सी बाँधकर पानी उबहने का कार्य।

**धौंस** *पु०* [सं० ध्वंसः] धमकी, घुड़की, धाक, रोब।

**धौंसल** *सक०* डाँटना-डपटना।

**धौंसिया** *पु०* धौंसा बजाने वाला (व्यक्ति)।

**धौताल** *पु०* शरारती।

**धौर** *वि०* धवल।

**धौरहर** *पु०* धरहरा।

**धौरा** *पु०* सफेद रोएँ और नीली खाल वाला बैल; पक्षी।

**धौरी** *स्त्री०* सफेद रंग की गाय।

**धौला** *वि०* धवल। *पु०* सफेद बैल। **-गिरि** *पु०* धवलगिरि।

**ध्यान** *पु०* [सं०] सोच-विचार, चिन्तन; चित्त की एकाग्रता। **-आइल** *मुहा०* याद आना।

**ध्यानी** *वि०* [सं०] ध्यानशील।

**ध्येय** *वि०* [सं०] लक्ष्य, उद्देश्य।

**ध्वज** *पु०* [सं०] पताका, निशान।

**ध्वनि** *स्त्री०* [सं०] शब्द, आवाज।

❑

# न

**न** देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण। उच्चारण-स्थान दन्त तथा नासिका।

**नंग** *पु०* [सं०] जार, उपपति, [हि०] नग्नता। **-धड़ंग** *वि०* एकदम नंगा।

**नंगा** *वि०* [सं० नग्न:] बिना वस्त्र का; पाजी, निर्लज्ज। *कहा०* 'नंगा नाचे हजार देखे'। **-झोरी** *स्त्री०* भली भाँति तलाशी। **-बुंगा** *वि०* नंग-धड़ंग। **-बुच्चा** *वि०* अकिञ्चन। **-भूखा** *वि०* अन्न-वस्त्र से वंचित। **-लुच्चा** *वि०* नंगा और लुच्चा।

**नँगियाइल** *सक०* नंगा करना।

**नंद** *पु०* [सं०] हर्ष, परमेश्वर। **-किशोर** *पु०* कृष्ण। **-कुँवर** *पु०* कृष्ण। **-रानी** *स्त्री०* यशोदा। **-लाल** *पु०* कृष्ण।

**नन्दन** *वि०* [सं०] आनन्द देने वाला।

**नंबर** *पु०* संख्या, अंक।

**नंबरदार** *पु०* वह व्यक्ति, जिसके नाम पर कोई खेत या जमीन्दारी हो।

**नंबरवार** *क्रि० वि०* क्रमशः।

**नंबरी** *स्त्री०* जिसका नम्बर लगा हो; एक सौ रुपये का नोट, 3.36 इंच का (गज)।

**नइआ** *पु०* हजाम, एक जाति।

**नइकी** *स्त्री० वि०* नवागत वधू।

**नइख** *अक०* नहीं है।

**नइखी** *स्त्री०* नहीं है।

**नइखे** *अक०* नहीं है।

**नइचा** *वि०* पतला और मुलायम।

**नइनी** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।

**नइया** *पु०* नाय, नाव। *उदा०* 'नइया ले आव जाई पार हो मोहन' लोकगीत।

**नइवेद** *पु०* देवताओं को चढ़ाया जाने वाला भोग।

**नइहर** *पु०* पितृगृह, पीहर। *कहा०* 'नइहर के राम दुलारी, ससुरा में मारल जाली'।

**नई** *स्त्री०* नवीन। *कहा०* 'नई जवानी माँझा ढील'।

**नउआ** *पु०* हजाम। *कहा०* 'नउआ देखले काँखे बार'।

**नउज, नउजी** *अव्य०* काम न होने पर अपनी बेफिक्री या निश्चिन्तता प्रकट करना।

**नउनि** *स्त्री०* हजाम की स्त्री, नाउन।

**नउबत** *पु०* शुभ अवसर पर बजने वाला मंगल वाद्य शहनाई; अवसर।

**नउमी** *स्त्री०* कृष्ण या शुक्ल पक्ष की नौमी तिथि।

**नएकवा** *पु०* नायक, प्रियतम।

**नएन** *पु०* आँख, दृष्टि।

**नकड़** *पु०* नाक का एक रोग, जो पशुओं को होता है।

**नकछिंकना** *पु०* एक घास, जिसे मलकर सूँघने से छींक आती है।

**नकछिकनी** *स्त्री०* कठरेंगनी घास।

**नकटा** *पु०* एक प्रकार का गीत। *वि०* जिसकी नाक कट गई हो।

**नकटी** *स्त्री०* नाक की भीतर की सूखी मैल।

**नकबेसर** *पु०* नाक का गहना। *उदा०* 'नकबेसर कागा ले भागा, सैंया अभागा ना जागा।'

**नकरल** *सक०* मंजूर न करना, अस्वीकार करना।

**नकल** *स्त्री०* अनुकरण।

**नकली** *वि०* नकल किया गया, बनावटी, खोटा, जाली।

**नकलोल** *पु०* नकेल।
**नकवाहन** *पु०* अत्यन्त दुर्गन्ध, घृणित।
**नकवाहिन** *वि०* जो दुर्गन्ध सही न जा सके।
**नकसा** *पु०* जमीन की नापी का प्रमाणित रेखांकन; आकृति, शक्ल। -बिगाड़ल *मुहा०* मार कर चेहरा खराब कर देना।
**नकामिल** *वि०* निकम्मा, बेकार।
**नकार** *पु०* इनकार, मंजूर न करना।
**नकारल** दे० 'नकरल'।
**नकासी** *स्त्री०* किसी चीज या कपड़े पर बेल-बूटे बनाना।
**नकिआइल** *अक०* नाकोंदम होना, ऊबना।
**नकिआवल** *सक०* नाक से बोलना; नाकोंदम कर देना।
**नकुट** *पु०* [सं०] नाक।
**नकुड़ा** *पु०* नाक, नथना।
**नकेल** *स्त्री०* नाक में बाँधी जाने वाली रस्सी।
**नकोटल** *सक०* नख से खरोंचना।
**नक्का** *पु०* सूई का छेद; कौड़ी।
**नक्कारखाना** *पु०* [फा०] नगाड़ा रखने की जगह।
**नक्कारची** *पु०* [फा०] नगाड़ा बजाने वाला।
**नक्काल** *पु०* [अ०] भाँड़, नकलची।
**नक्कू** *वि०* बड़ी नाक वाला।
**नक्शा** *पु०* [अ०] तस्वीर, मानचित्र।
**नक्षत्र** *पु०* [सं०] तारा।
**नख** *पु०* नाखून।
**नखड़ा** *पु०* नाज, प्रपंच।
**नखरातीला** *पु०* बहानाबाजी।
**नखरूस** *वि०* दूसरे का सदा दोष देखने वाला।
**नखी** *पु०* नखवाला जन्तु।
**नखुस** *वि०* नाराज, नाखुश।
**नग** *पु०* रत्न, चमकदार पत्थर, जो किसी आभूषण में जड़ा जाता है।
**नगड़िया** *स्त्री०* डुग्गी, छोटा नगाड़ा।
**नगद** *पु०* रुपया, पैसा।
**नगदा-नगदी** *क्रि०वि०* तत्काल कीमत देकर।
**नगदी** *वि०* जिससे रुपये-पैसे की आमदनी हो। *उदा०* 'आजुकाल्ह गन्ना जइसन नकदी फसिल के खेती बहुत होता।'
**नगर** *पु०* शहर, बड़ी बस्ती।
**नगरनारिन** *स्त्री०* मायाविनी, प्रपंची।
**नगर मोथा** *पु०* बड़ी जाति का मोथा, एक प्रकार की औषधि।
**नगरहा** *पु०* नगरवासी।
**नगरी** *स्त्री०* बड़ा गाँव, छोटा शहर।
**नगाउरी** *पु०* नागौर के बैलों की जाति-विशेष।
**नगाड़ा** *पु०* बड़ा ढोल, डंका।
**नगाधिराज** *पु०* [सं०] हिमालय।
**नगारा** *पु०* दे० 'नगाड़ा'।
**नगिचाइल** *अक०* समीप होना, निकट आना। *उदा०* 'डुमरी कतेक दूरी? अब नगिचाइल बा।'
**नगिचावल** *अक०* नजदीक पहुँचना।
**नगीचा** *क्रि०वि०* निकट, समीप।
**नगीना** *पु०* रत्न, नग।
**नगौरी** *स्त्री०* एक प्रकार का (बैल)।
**नचनिया** *पु०* नाचने वाला।
**नचनी** *स्त्री०* नचानेवाली
**नचवावल** *सक०* नाच कराना। नचवाना।
**नचवैया** *पु०* नाचने वाला।
**नचावल** *सक०* नाचने में प्रवृत्त करना।
**नचोर** *पु०* नख से खरोचा हुआ घाव, जख्म।

**नचोरल** *सक०* नख से काटना; ऊपर से तोड़ना।
**नछत्तर, निछत्तर** *पु०* नक्षत्र, चन्द्रमार्ग में स्थित।
**नजदिकाइल** *अक०* समीप आना।
**नजदीक** *क्रि०वि०* निकट, समीप।
**नजर** *स्त्री०* दृष्टि, निगाह; कृपा। **-अंदाजी** *स्त्री०* जाँच, परख। **-बाज** *वि०* नेकबद परखने वाला। **-आइल** *मुहा०* दिखाई देना। **-पर चढ़ल** *मुहा०* कोपभाजन होना। **-लगावल** *मुहा०* टोना करना।
**नजरबंद** *पु०* जाल या जादू का खेल; कड़ी निगरानी।
**नजराना** *पु०* उपहार, भेंट।
**नजरावल** *अक०* नजर लगाना, बुरी दृष्टि से देखना। *उदा०* 'पटना से बैदा बोलाद हो नजरा गइली गुइयाँ'।
**नजायज** *वि०* अनुचित, अन्यायपूर्ण।
**नजारा** *पु०* दृश्य, नजर।
**नट** *पु०* खेल दिखलाने वाला व्यक्ति, खानाबदोश।
**नटई** *स्त्री०* नटबाजी; गला।
**नटखट** *वि०* चंचल, ऊधमी।
**नटखटी** *स्त्री०* शरारत।
**नटिका** *स्त्री०* नाड़ी; नाटिका।
**नटिन** *स्त्री०* नट की पत्नी।
**नटी** *स्त्री०* [सं०] अभिनेत्री; नट जाति की स्त्री।
**नटुरा** *वि०* छोटे कद का।
**नटुली** *स्त्री०* नाटी (गाय)।
**नठ** *वि०* नष्ट, नाश हो गया हो। *उदा०* 'नठ देवता के भरठ पूजा।'
**नड़ा** *पु०* नरा, नाड़ा, लाट।
**नत** *वि०* [सं०] झुका हुआ। **-मस्तक** *वि०* जिस का सिर झुका हुआ हो।
**नतइत** *पु०* सम्बन्धी, नतैत।
**नतकुर** *पु०* नाती एवं उसके वंशज।
**नतिन दमाद** *पु०* नतिनी का पति।
**नतिनी** *स्त्री०* पुत्री की पुत्री।
**नतीजा** *पु०* परिणाम, फल।
**न तु** *अव्य०* नहीं तो, अन्यथा।
**नतैत** *पु०* नातेदार।
**नत्थी** *स्त्री०* कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों को एक कोने पर गूँथना।
**नथ** *स्त्री०* नथिया।
**नथाइल** *सक०* पशु का नाथा जाना।
**नथिया** दे० 'नथ'।
**नथुना** *पु०* नाक का अग्र भाग।
**नथुनी** *स्त्री०* छोटी नथ।
**नदकोला** *पु०* बड़ा पेट, नाद।
**नदहा** *पु०* मवेशियों के खिलाने का बड़ा बर्तन, नाद।
**नदारद** *वि०* लुप्त, गायब।
**नदिया** *पु०* दही जमाने वाला मिट्टी का पात्र।
**नदी** *स्त्री०* किसी पहाड़ या झील से निकली पानी की धारा।
**नधना** *पु०* कोल्हू की मथानी को उसके सीधे खड़े खम्भे से बाँधने वाला रस्सा।
**नधाइल** *सक०* गाड़ी या हल में जोता जाना; लगातार काम में लगे रहना।
**नधान** *पु०* डोल को बाँधने की रस्सी का एक टुकड़ा।
**नन** *अव्य०* मत।
**ननकटनी** *स्त्री०* बलकट, फसल के केवल बाल की कटाई।
**ननकारल** *अक०* इनकार करना।
**ननगिलाट** *पु०* कोरा कपड़ाविशेष।
**ननद** *स्त्री०* पति की बहन।
**ननदोई** *स्त्री०* ननद का पति।

**ननदोसी** *स्त्री०* दे० 'ननदोई'।
**ननन बन** *पु०* नन्दनवन।
**ननहर** *पु०* दे० 'ननिआउर'।
**ननिअउरा** *पु०* दे० 'ननिआउर'।
**ननिआउर** *पु०* नाना का घर या गाँव।
**ननिया ससुर** *पु०* पति या पत्नी का नाना।
**ननिया सास** *स्त्री०* ननिया ससुर की पत्नी, पति या पत्नी की नानी।
**ननिहाल** *पु०* नाना का घर।
**नन्द लाल** *पु०* नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण।
**नन्हकटनी** *स्त्री०* बलकट।
**नन्हका** *पु०* छोटा बच्चा।
**नन्हकार** *पु०* करमुक्त भूमि; जमींदारी में छोटे भाई का हिस्सा। *कहा०* 'नन्हकू के नन्हार'—छोटे भाई का छोटा हिस्सा।
**नन्हकिरवा** *पु०* छोटा बच्चा।
**नन्हघसी** *स्त्री०* रब्बी के खेत में उगने वाली छोटी-छोटी घास।
**नन्हिया** *स्त्री०* एक मोटा धान।
**नन्हीं** *वि०* छोटा, अल्पायु।
**नपना** *पु०* बर्तन, जिससे कोई महीन या तरल पदार्थ नापा जाए। *कहा०* 'नपना बिना उपास'।
**नपवावल** *सक०* दूसरे से नपवाना।
**नपाई** *स्त्री०* नापने का काम।
**नपुंसक** *पु०* [सं०] हिंजड़ा।
**नपुआ** *पु०* मापदण्ड।
**नपुत्री** *वि०* सन्तानरहित।
**नफरत** *स्त्री०* [अ०] घृणा।
**नफा** *पु०* लाभ। *कहा०* 'नफा के धावे मूर गमावे'।
**नफासत** *स्त्री०* सुन्दरता।
**नबज** *स्त्री०* नाड़ी, नब्ज।
**नवाब** *पु०* सूबेदार; मुसलमानों की एक पदवी; ठाट-बाट से रहने वाला।
**नबारा** *पु०* बैल।
**नबूझ** *वि०* न समझने वाला।
**नब्बे** *वि०* सौ में दस कम।
**नम** *वि०* [फा०] तर, आर्द्र।
**नमक** *पु०* [फा०] लवण। **-हराम** *वि०* कृतघ्न। **-हलाल** *वि०* कृतज्ञ।
**नमकीन** *वि०* [फा०] सलोना।
**नमन** *पु०* [सं०] प्रणाम।
**नमाज** *पु०* मुसलमानों की ईश्वरोपासना के पद, नमाज।
**नमी** *स्त्री०* ओदी, आर्द्रता।
**नमूदी** *स्त्री०* नामवरी, यश।
**नमूना** *पु०* आदर्श।
**नमो नारायण** *पु०* संन्यासी और सन्तों में प्रणाम अर्थ में प्रयुक्त शब्द।
**नम्मी** *स्त्री०* पक्ष की नवीं तिथि, नवमी।
**नयका** *वि०* नया, नवीन, नूतन, ताजा, पुराना का विपरीत।
**नयकाहा** *वि०* नए विचार के लोग।
**नया** *वि०* नवीन, हाल का, कम उम्र का। *कहा०* 'नया जोतिसी वैद पुरान'।
**नरंगी** *स्त्री०* मीठा नींबू, नारंगी।
**नर** *पु०* *कहा०* 'नर में नउआ, पंछी में कौआ'।
**नरइली** *स्त्री०* हल में पालों को बाँधने की रस्सी, हरनद्धी।
**नरई** *स्त्री०* पशुओं का चारा, लेंड़ई।
**नरक** *पु०* मरने के बाद पापियों की सजा का स्थान। *कहा०* 'नरको में ठेलमठेला'।
**नरकट** *पु०* सरकण्डे की जाति का एक फोंफला तृण या पौधा जो कलम, चटाई बनाने के काम आता है।
**नरगजल** *अक०* जोर से चिल्लाना।
**नरगोरी** *स्त्री०* लाल डण्ठल वाली ईख।
**नरघट** *पु०* झगड़ा, हठ।

**नरतक** *पु०* नर्तक।
**नरदोह** *पु०* नाला।
**नरम** *वि०* कोमल, मुलायम।
**नरमा** *पु०* कपास की जाति।
**नरमाई** *स्त्री०* नर्मी।
**नरमाइल** *अक०* नरम होना, मुलायम होना।
**नरमी** *स्त्री०* दे० 'नरमाई'।
**नरसिंघ** *पु०* एक बाजा; नृसिंह।
**नरसों** *क्रि०वि०* बीते हुए परसों के पहले या आने वाले के पीछे।
**नराच** *पु०* बाण।
**नराज** *वि०* नाखुश, क्रोधित।
**नरिअर** *पु०* एक वृक्ष विशेष, उसके फल का बना हुक्का।
**नरिआ** *पु०* घर छावने में प्रयुक्त मिट्टी का खपड़ा (अर्ध गोलाकार)।
**नरिआइल** *अक०* जोर से चिल्लाना। *कहा०* 'घीवदेत घोर नरिआय'।
**नरी** *स्त्री०* लरी, छुच्छी।
**नरुका** *स्त्री०* बाजरे की बाल के नीचे की नली।
**नरेटी** *स्त्री०* कण्ठ की नली।
**नरैली** *स्त्री०* नारा।
**नल** *पु०* लोहा या धातु की पोपली छड़।
**नलकटी** *स्त्री०* साइकिल का फ्रेम या अन्य नल को काटकर बनाई गई देशी बन्दूक।
**नली** *स्त्री०* पतला नल; बन्दूक की नाल।
**नव** *वि०* आठ और एक का योग, नव की संख्या। *कहा०* 'नव के लकड़ी नब्बे खरच'।
**नवगछुली** *स्त्री०* नया बाग।
**नवगोल** *पु०* सड़क से घिरा वृत्ताकार भूखण्ड।
**नवचा** *वि०* पतला और लचीला।
**नवटंकी** *स्त्री०* एक प्रकार का खुला मंच खेला जाने वाला लोकनाट्य।
**नवठा** *पु०* नव दाँतवाला बछड़ा।
**नवतन** *वि०* नूतन, नया।
**नवतार** *वि०* नया (पशु)।
**नवधर** *पु०* नया हल।
**नवधरिआ** *वि०* नया धनिक।
**नवबीट** *स्त्री०* नई वाटिका, नवगछली।
**नवर** *पु०* नया हल।
**नवरंगी** *पु०* नए-नए ढंग से काम करने वाला, सोचने वाला।
**नवरतन** *पु०* नवरत्नों का समूह; विवाह के बाद प्रथम-प्रथम ससुराल वालों के द्वारा दामाद को नव दिन रखने की प्रथा।
**नवल** *अक०* नीचे की ओर झुकना।
**नवलख** *वि०* नव लाख का, जिसका मूल्य नव लाख हो।
**नवला** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**नवली** *स्त्री०* शीघ्र की जमी नई घास।
**नवही** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली; लवही।
**नवा** *वि०* नया।
**नवाई** *वि०* नवगुणा। इसका प्रयोग एक के पहाड़े में होता है।
**नवाढू** *वि०* नई उम्र और कच्ची बुद्धि वाला।
**नवावल** *सक०* झुकाना, नीचे की ओर खींचना।
**नवासा** *पु०* नाना से उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति।
**नवासी** *वि०* एक कम नब्बे।
**नवोत्तर सौ** *वि०* एक सौ और नव।
**नस** *स्त्री०* नाड़ी, स्नायु,; सूँघने की वस्तु।
**नसकट** *वि०* जो नस काटे; आकार में छोटा। *उदा०* 'नसकट खटिया, बतकट जोय'।

**नसदानी** *स्त्री०* नस रखने की डिबिया।
**नसपात** *पु०* एक प्रसिद्ध फल, नाशपाती।
**नसल** *पु०* वर्णसंकर; जो अपने माता-पिता से उत्पन्न न हो।
**नसाइल** *सक०* नष्ट किया जाना।
**नसादर** *पु०* तीक्ष्ण क्षारीय द्रव्य, जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।
**नसीब** *पु०* भाग्य, तकदीर।
**नसीहत** *स्त्री०* शिक्षा, उपदेश।
**नस्त** *पु०* नाक; सुँघनी।
**नस्तर** *पु०* तेज चाकू, जिससे फोड़ा चीरा जाता हो।
**नहछू** *पु०* विवाह में वर के नाखून काटने की रस्म।
**नहना** *वि०* दुर्बल।
**नहर** *स्त्री०* सिंचाई के लिए किसी झील या नदी से निकाला गया जलमार्ग।
**नहरनी** *स्त्री०* नाखून काटने का हथियार। *कहा०* 'नहरनी केतनो तेज होई तऽ का गाछ काटी ?'
**नहरी** *स्त्री०* पदला, नाहर, पइन।
**नहला** *पु०* ताश की नौवीं पत्ती; राजगीर का औजार।
**नहवान** *पु०* विवाह के समय वर और कन्या के स्नान की विधि।
**नहवावल** *सक०* स्नान करना, नहवाना।
**नहसुर** *पु०* बढ़े हुए नख से मांस में उत्पन्न घाव।
**नहाइल** *अक०* स्नान करना, नहाना।
**नहान** *पु०* स्नान-पर्व, गंगा-स्नान; पुण्य-तिथि।
**नहोस** *पु०* नासमझ।
**नाँवमुदी** *स्त्री०* नामवरी, प्रसिद्धि।
**ना** नहीं। *कहा०* 'ना अति बरखा ना अति धूप, ना अति वकता ना अति चूप'।
**नाइक** *पु०* नायक।
**नाइट्रोजन** *पु०* [अं०] एक गैस।
**नाइन** *स्त्री०* नाई की स्त्री, नाई जाति की स्त्री।
**नाइब** *वि०* नायब।
**नाइस** *पु०* [अंग] अच्छा, सुन्दर।
**नाईं** *क्रि०वि०* भाँति, तरह।
**नाई** *पु०* हजाम।
**नाउरी** *स्त्री०* हजामिन।
**नाऊ** *पु०* हजाम।
**नाएक** *पु०* नायक, हीरो।
**नाक** *स्त्री०* साँस लेने वाली नली, शरीर का आवश्यक अंग; स्वर्ग। *कहा०* 'नाक न कान बीच में दोकान'।
**नाकड़ा** *पु०* नाक का एक रोग; दीर्घ नासिका।
**नाकनक्स** *पु०* चेहरे की बनावट।
**नाकर-नुकर** *अव्य० यौ०* नहीं करने के अर्थ में, इनकार करना।
**नाकामिल** *वि०* बेकाम का, अयोग्य।
**नाकी** *स्त्री०* नाक से बोलना।
**नाखा** *पु०* वह स्थान, जहाँ कहीं से भी आसानी से पहुँचा जाए, चौक।
**नाखुस** दे० 'नखुस'।
**नाखूनी** *स्त्री०* नख जैसी पतली धारी।
**नाग** *पु०* सर्प।
**नागपंचमी** *स्त्री०* श्रावण शुक्ल की पंचमी तिथि, जिस दिन नाग पूजा जाता है।
**नाग पाँचो** *पु०* दे० 'नागपंचमी'।
**नागरी** *स्त्री०* नगर में रहने वाली।
**नागा** *पु०* अकाजी साधुओं की जमात।
**नागिन** *स्त्री०* नाग की मादा, सर्पगन्धा।
**नाच** *पु०* [सं० नृत्यं] ताल और लय पर आश्रित अंगविक्षेप, नृत्य। *मुहा०* 'नाचे त घूँघट का'। **-कूद** *स्त्री०* नाच-तमाशा। **-घर** *पु०* नर्तनशाला। **-रंग** *पु०* आमोद-प्रमोद।

**नाचल** *सक०* नाचना, नाचा हुआ।
**नाज** *पु०* [फा०] हाव-भाव। **-नखरा** *पु०* मोहक चेष्टा। **-नीं** *स्त्री०* रूपवती।
**नाजाइज** *वि०* अनुचित, अयोग्य।
**नाजिर** *पु०* सरकारी दफ्तर में रुपयों का भुगतान करने वाला किरानी।
**नाजीरात** *स्त्री०* सरकारी दफ्तर का एक विभाग, जो नाजिर से सम्बन्धित हो।
**नाजुक** *वि०* [फा०] कोमल, मुलायम। **-खयाल** *वि०* अच्छे विचारों वाला। **-बदन** *वि०* कोमल शरीरवाला। **-मिजाज** *वि०* चिड़चिड़ा, घमण्डी।
**नाजो** *स्त्री०* कन्या; विवाह-समय के लग्न-गीतों में आदरसूचक शब्द।
**नाट** *पु०* बौना, नाटा। *कहा०* 'नाट-खोट कोते गरदनिया, ई तीनू से हारे दुनिया'।
**नाटक** *पु०* अभिनय, लीला, खेल।
**नाटा** *पु०* तीन बैलों से चलने वाली गाड़ी का अगला बैल।
**नाठा** *पु०* बिना बच्चा मवेशी।
**नात** *पु०* नातेदार; हित।
**नाता** *पु०* सम्बन्ध, रिश्ता। *कहा०* 'नाता न गोता नेवता ताबड़तोड़'।
**नातागद** *वि०* कमजोर।
**नाता-तूर** *पु०* सम्बन्ध-विच्छेद।
**नातिन** *स्त्री०* बेटी की लड़की।
**नाती** *पु०* बेटी का लड़का। *कहा०* 'नाती के गाँती ना बिलाई के जामा'।
**नाते** *क्रि०वि०* लगाव से, सम्बन्ध से।
**नाथ** *पु०* मालिक; नाम के अन्त में उपाधि स्वरूप जुड़ा शब्द; मवेशियों को बाँधने के लिए नाक की रस्सी।
**नाथल** *सक०* मवेशियों की नाक में रस्सी डालकर बाँधने की क्रिया।
**नाद** *पु०* मवेशियों को चारा खिलाने का पात्र।
**नादान** *पु०* बच्चा, अबोध।
**नाधल** *सक०* किसी मवेशी को हल में जोतना।
**नाधा** *पु०* पालो और हरिस को बाँधने वाली रस्सी, हरनधी।
**नाना** *पु०* माता का पिता।
**नानी** *स्त्री०* माता की माता। *कहा०* 'नानी मरी नाता टूटी'।
**नान्ह** *पु०* छोटा।
**नान्हीचुक** *वि०* अत्यन्त छोटा।
**नान्हे** *पु०* छोटेपन।
**नाप** *स्त्री०* परिमाण, *कहा०* 'नाप बिनु उपास'।
**नापल** *सक०* किसी वस्तु या जमीन की लम्बाई-चौड़ाई या आकार की नाप करना।
**नापसन** *वि०* अप्रिय, नापसन्द।
**नापित** *पु०* [सं०] नाई।
**नाफा** *पु०* लाभ, फायदा।
**नाब** *पु०* धार।
**नाबर** *वि०* निर्बल।
**नाबालिग** *पु०* कम उम्र का।
**नामंजूर** *पु०* अस्वीकृत, अमान्य।
**नाम** *पु०* पुकारने का शब्द। *कहा०* 'नाम बड़ा करनी कुत्ता'।
**नामक** *वि०* [सं०] नाम का, नाम वाला।
**नामा** *वि०* [सं०] नाम वाला, नामक।
**नामाभिधान** *पु०* [सं०] कोश।
**नामावली** *स्त्री०* नामों की सूची।
**नामी** *वि०* नाम वाला। *कहा०* 'नामी बनिया के मोछ बिकाय'। **-गिरामी** *वि०* मशहूर।
**नामो** *पु०* एक प्रकार का खट्टाफल, नींबू।
**नाय** *पु०* नाऊ, नाई; नेता; उपाय।
**नायक** *पु०* [सं०] राह दिखाने वाला।
**नायका** *स्त्री०* नायिका।

**नायन** *स्त्री०* नाइन।
**नायब** *वि०* [अ०] सहायक।
**नायिका** *स्त्री०* नायक की पत्नी।
**नारंग** *पु०* [सं०] नारंगी का पेड़ या फल।
**नारंगी** *स्त्री०* मीठा नींबू, सन्तरा।
**नार** *वि०* [सं०] नर सम्बन्धी।
**नार** *स्त्री०* गर्दन; स्त्री।
**नारकी** *वि०* [सं०] नरकभोगी।
**नारकीय** *वि०* [सं०] नरक-सम्बन्धी।
**नार** *पु०* चका, धार, हँसिया की धार वाला हिस्सा।
**नारद** *पु०* एक ऋषि का नाम।
**नारा** *पु०* जोर का शब्द, धागा।
**नारायन** *पु०* भगवान्, नारायण, विष्णु।
**नारी** *स्त्री०* स्त्री, महिला।
**नाल** *पु०* घोड़े के पैर में ठोंका जाने वाला लोहे का उपकरण।
**नालकी** *स्त्री०* एक प्रकार की पालकी।
**नलबन** *पु०* नाल ठोकने वाला।
**नाला** *पु०* पानी के बहाव का रास्ता। नाली।
**नालायक** *वि०* अयोग्य।
**नालिस** *स्त्री०* शिकायत; अभियोग।
**नाव** *पु०* नाम, डोंगी। *कहा०* 'नाव नयन सुख जनमे के आन्हर'।
**नाव-निसान** *पु०* पहचान, पता।
**नावल** *सक०* झुकाना, घुसाना।
**नास** *पु०* नष्ट, बर्बाद।
**नासक** *वि०* [सं०] नष्ट करने वाला।
**नासकारी** *वि०* दे० 'नासक'।
**नासपाती** *स्त्री०* एक फल।
**नासमझ** *वि०* बुद्धिहीन।
**नासल** *सक०* नासना।
**नासा** *स्त्री०* नाक।
**नासी** *वि०* नश्वर, नाशक।
**नासीर** *वि०* आगे जाने वाला।
**नासूर** *पु०* [अ०] पुराना घाव।
**नास्ता** *पु०* जलपान।
**नास्तिक** *पु०* [सं०] ईश्वर में जिसका विश्वास न हो, वेद-निन्दक।
**नाह** *पु०* नाथ, पति।
**नाहक** *पु०* व्यर्थ, बेकार।
**नाहनूह** *स्त्री०* इनकार।
**नाहर** *पु०* शेर, सिंह।
**नाहासिल** *वि०* अनुचित, अप्राप्त।
**नाहित** *पु०* जो हित न हो; दुश्मन।
**नाही** *अव्य०* नहीं।
**निअन** *वि०* ऐसा, सदृश।
**निअर** *क्रि०वि०* समीप, नगीचा। *वि०* समान।
**निअरा** *क्रि०वि०* नजदीक। *उदा०* 'प्रीतम बसे पहाड़ पर निअरा का दूर'।
**निआर** *पु०* बिदाई की तिथि, बिदाई के लिए तिथि निश्चित करने का सन्देश। *लोक०* 'आइ गइले अवचक निआर'।
**निकंटक** *वि०* निष्कण्टक।
**निकंदन** *पु०* [सं०] संहार।
**निकट** *अव्य०* [सं०] पास, नजदीक।
**निकटता** *स्त्री०* समीपता।
**निकड़ल** *अक०* निकलना।
**निकम्मा** *वि०* बेकाम, बेकार।
**निकरमी** *वि०* कर्महीन, भाग्यहीन।
**निकलल** *अक०* भीतर से बाहर आना या जाना; उढ़रना; सूर्य या चन्द्रमा का उदित होना।
**निकलवावल** *सक०* निकालने का काम दूसरे से करवाना।
**निकलुआ** *वि०* निकाला हुआ।
**निकसल** *अक०* निकलना।
**निकसार** *पु०* द्वार के सामने की खाली खुली जमीन।

**निकसारी** *स्त्री०* छोटी गोटी वाला चेचक।
**निकाई** *पु०* निकाय। *स्त्री०* भलाई, सुन्दरता।
**निकाज** वि० निकम्मा।
**निकाम** *वि०* बेकाम।
**निकार** *पु०* बहिष्कार।
**निकाल** *पु०* निकलने की क्रिया।
**निकालल** *सक०* भीतर से बाहर लाना; नौकरी से हटाना।
**निकास** *पु०* द्वार।
**निकासल** *सक०* निकालना।
**निकासी** *स्त्री०* निकालने का भाव या क्रिया।
**निकाह** *पु०* [अ०] मुसलमानों की विवाह-पद्धति।
**निकाही** *स्त्री०* निकाह के बाद लाई हुई।
**निकिआवल** *सक०* मिली हुई बेकार चीजों को निकाल देना।
**निकुटी** *वि०* किसी चीज को कम मात्रा में देने वाली।
**निकोटल** *सक०* नख से काटना।
**निखंड** *पु०* प्रथम दिन, जब व्रती निराहार रहकर दूसरे दिन सूर्य को अर्घ्य देता है।
**निखट्टू** *वि०* निकम्मा, आलसी।
**निखत्तर** *पु०* विनष्ट।
**निखरचा** *स्त्री०* मजदूरी में भोजन नहीं देकर केवल पैसा देने की प्रथा।
**निखरल** *अक०* निर्मल होना, स्वच्छ होना; रंग का खुलना।
**निखरा** *पु०* पक्का भोजन यथा पूड़ी-साग।
**निखरावल** *सक०* दूसरे स्वच्छ कराना।
**निखस्सर** *पु०* दोषमुक्त, रोगमुक्त।
**निखहर** *पु०* ऐसी खाट या चौकी, जिस पर बिछावन नहीं हो।
**निखार** *पु०* स्वच्छता, निर्मलता।
**निखारल** *अक०* स्वच्छ करना।
**निखालिस** *वि०* बिना मिलावट के विशुद्ध।
**निखिन्न** *वि०* अत्यन्त भद्दा, अश्लील।
**निखुटुक** *क्रि०वि०* निर्भयतापूर्वक।
**निखोरल** *सक०* नख से काटना।
**निखोराह** *पु०* *वि०* कम खाने वाला।
**निगचा** दे० 'नगीचा'।
**निगम** *पु०* *वि०* लापरवाह। *पु०* वेद, वेद का कोई अंश।
**निगरइन** *स्त्री०* छिछले जलस्रोत की शाखा।
**निगरा** *पु०* गन्ने का कोल्हू से पेरा गया ताजा रस।
**निगरानी** *स्त्री०* देख-रेख।
**निगार** *पु०* कसर; धान के खेत में पानी को निकालने की क्रिया।
**निगाली** *स्त्री०* हुक्के की नली।
**निगाह** *पु०* कृपादृष्टि, मेहरबानी।
**निगुरा** *वि०* अदीक्षित, जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो।
**निगोड़बाँड़** *पु०* *वि०* पैर-पूँछविहीन; परिवारहीन।
**निगोड़ा** *वि०* अभागा, एकदम अकेला।
**निघंटु** *पु०* [सं०] पर्यायवाची वैदिक शब्दों के संग्रह वाला ग्रन्थ।
**निघटल** *अक०* घटना; कम होना, मिटना।
**निघरघट** *वि०* बिना घर-घाट का; बेशर्म, बेलज्ज।
**निचंत** *पु०* *वि०* निश्चिन्त।
**निचका** *वि०* *पु०* नीचेवाला।
**निचलका** *पु०* *वि०* नीचे वाला।
**निचला** *पु०* *वि०* दे० 'निचका'।
**निचाई** *पु०* अपेक्षाकृत कम ऊँचा होने का भाव।
**निचिन्ता** *वि०* वह स्थान या समय, जब किसी प्रकार की बाधा न थी।
**निचिन्न** *पु०* *वि०* चिन्तारहित।

**निचू** *वि०* जो चूता न हो।
**निचोर** दे० 'नचोर', निचोड़ा हुआ।
**निचोरल** *सक०* दे० 'नचोरल'।
**निछक्का** *पु० वि०* विशुद्ध; निखालिस।
**निछड़ल** *सक०* अनाज के मिले जातीय द्रव्य को सूप से अलग करना।
**निछत्तर** *पु०* नक्षत्र।
**निछद्दम** *पु०* एकान्त स्थान।
**निछनियाँ** *अ०* निछान।
**निछल** *वि०* निश्छल।
**निछाउर** *पु०* ईनाम, नेग; बलि, उत्सर्ग।
**निछावरि** *स्त्री०* निछावर।
**निछोह** *वि०* बिना दया के।
**निछोही** *वि०* ममता न रखने वाला, निर्मम।
**निज** *वि०* अपना, स्वकीय; निजी, खास अपना।
**निजगुत** *वि०* निश्चित।
**निझल** *अक०* आग की लपटों का शान्त हो जाना।
**निठल्ला** *पु० वि०* बेकार, उद्यमरहित।
**निठाह** *पु० वि०* ठोस, मजबूत।
**निडर** *पु० वि०* निर्भय, निशंक।
**निढाल** *वि०* थककर चूर, शिथिल, पस्त।
**नितन्त** *अ०* नितान्त।
**नितंब** *पु०* [सं०] कमर का अधोभाग, चूतड़।
**नित** *अव्य०* रोज, प्रतिदिन।
**निदरदी** *वि० पु०* कठोर, बिना दया के। निर्दयी।
**निदान** *पु०* समाधान, निर्णय; कारण।
**निधड़क** *पु० वि०* बेखटक, बिना किसी संकोच के।
**निधन** *पु०* [सं०] नाश, मरण, अन्त।
**निधनी** *वि०* दरिद्र।
**निधरक** *वि०* दे० 'निधड़क'।
**निधान** *पु०* [सं०] स्थापन, आधार, आश्रय।
**निधि** *स्त्री०* [सं०] खजाना।
**निधुवन** *पु०* [सं०] प्यारा; जुदा।
**निनरी** *स्त्री०* नींद।
**निनाई** *स्त्री०* अति गर्मी से जीभ का रोग।
**निनाद** *पु०* झरने की आवाज; पहियों की आवाज।
**निनानबे** *वि०* सौ में एक कम, 99 की संख्या।
**निनिआ** *स्त्री०* नींद।
**निनिकुल** *सक०* किसी काम से निवृत्त होना।
**निन्दल** सक० शिकायत करना।
**निपंग** *वि०* अपंग, जिसके पैर या हाथ काम न करते हों।
**निपट** *अव्य०* बिल्कुल, अत्यन्त।
**निपटल** निवृत्त होना।
**निपटारा** *पु०* फैसला, निर्णय।
**निपटावल** *सक०* विवाद तय करना।
**निपुत्तर** *पु० वि०* बिना पुत्र के।
**निपुन** *वि०* निपुण।
**निपुनाई** *स्त्री०* निपुणाई।
**निपूत** *वि०* पुत्रहीन।
**निपूतर** *पु० वि०* पुत्रहीन।
**निपूती** *स्त्री० वि०* पुत्रहीना वह स्त्री, जिसे पुत्र न हो।
**निपोरल** *सक०* बेशरमी दिखलाना, बेहया-सा हँसना।
**निफरल** *अक०* पार पाना, फुर्सत पाना; अवकाश मिलना।
**निफिकिर** *वि०* चिन्ताहीन, निश्चिन्त।
**निफूट** *पु० वि०* पौधे से दानों के पूर्ण रूप से निकल जाने की स्थिति।
**निफूटल** *अक०* दानों का निकलना।
**निबटल** *पु०* झगड़े के फैसले से पार पाना; शौचादि से निवृत्त होना।

**निबल** *वि०* निर्बल। उदा० 'हाथ छुड़ाये जात हो निबल जानि के मोहि' सूर०।
**निबलाई** *स्त्री०* निर्बलता।
**निबहल** *अक०* समय का भलीभाँति बीत जाना, गुजरना; पार लगना।
**निबादर** *पु० वि०* जब बादल बिल्कुल न रहें, बिना बादल का।
**निबाह** *पु०* [सं० निर्वाहः] निबहने का भाव।
**निबाहल** *सक०* भलीभाँति बिताना, गुजारना।
**निभरम** *वि०* भ्रमरहित।
**निभरमा** *वि०* जिसका विश्वास उठ गया हो।
**निभरोस** *वि०* असहाय।
**निभल** *अक०* निबाहना।
**निमक** *पु०* नमक, नून।
**निमकी** *स्त्री०* नींबू का अचार।
**निमकीन** *वि०* नमकयुक्त।
**निमन** *पु० वि०* सुन्दर, पवित्र; रुचि के अनुकूल।
**निमनाह** *पु० वि०* औरों की अपेक्षा अच्छा।
**निमहल** *भू०कृ०* पार लगना।
**निमू** *पु०* पशु, जो बोल नहीं सकता है।
**निमून** *पु० वि०* वह वस्तु, जिसमें मुँह न हो; जो भली भाँति बन्द हो।
**निमोछिया** *पु० वि०* बिना मूँछ का आदमी, अधबेसर।
**निमौरी** *स्त्री०* नीम का फल।
**नियत** *स्त्री०* इरादा, चाह।
**नियम** *पु०* कायदा; किसी संस्था या सरकार का विधान।
**नियर** *अव्य०* निकट।
**नियराई** *स्त्री०* निकटता।
**नियराइल** *अक०* पास आना।
**नियरे** *अव्य०* निकट।
**निरइठ** *पु० वि०* जो जूठा न हो।
**निरकेवल** *पु० वि०* दोषरहित; एकान्त; स्वच्छ।
**निरख** *पु० वि०* बिलकुल बचा हुआ; पवित्र।
**निरखल** *पु०* गौर से देखना।
**निरगुन** *पु०* आध्यात्मिक गीत; निर्गुण।
**निरगुनिया** *पु०* निरगुन जानने वाला, निर्गुणमत का अनुयायी।
**निरघ** *वि०* [सं०] निर्दोष।
**निरघोख** *पु० वि०* निडर, वीरता के साथ।
**निरच्छर** *पु० वि०* जिसे अक्षर का बोध न हो, अनपढ़।
**निरजल** *पु० वि०* बिना जल का।
**निरदई** *पु० वि०* निर्दय।
**निरदोस** *पु० वि०* दोषरहित, बेकसूर।
**निरधन** *पु० वि०* बिना धन का, कंगाल, दरिद्र।
**निरबंश** *पु० वि०* सन्तानहीन। *उदा०* 'निरबंश नीमन बहुवंश ना नीमन'।
**निरबल** *पु० वि०* कमजोर, शक्तिहीन। *उदा०* 'निरबल के बल राम'। *लोक०*
**निरभय** *पु वि०* बिना डर के, ढीठ।
**निरभर** *पु० वि०* दूसरे पर भरोसा रखना, अवलम्बित, आधारित।
**निरभेद** *पु० वि०* निश्चिन्त, लापरवाह। *उदा०* 'जेकर धिया बा बखेरिया से कइसे सूते निरभेद'
**निरमल** *पु० वि०* स्वच्छ, साफ, निर्मल।
**निमावल** *पु०* निर्माण करना, बनाना।
**निरमल** *वि०* निर्मल।
**निरमूलल** *सक०* जड़ से उखाड़ना।
**निरमोल** *वि०* अनमोल।
**निरमोही** *पु० वि०* जिसे ममता न हो, निर्मोही। *उदा०* 'निरमोही दगा दे के गइले लूट गइले रुपया हमार'।

**निरलजू** *पु० वि०* बेहाया, बेशर्म।
**निलपहई** *वि०* नील से सम्बन्धित, नीलही।
**निरा** *वि०* निपट, बिल्कुल।
**निराई** *स्त्री०* सोहनी, खेत में खर-पतवार निकालने की क्रिया।
**निरादर** *पु०* अपमान।
**निराला** *पु० वि०* विचित्र, अनोखा; विलक्षण।
**निराव** *पु०* ऐसा समय, जब हवा बिल्कुल न बह रही हो।
**निरास** *पु० वि०* निराश।
**निरासा** *पु० वि०* आशाहीनता।
**निरासी** *वि० स्त्री०* हताश, निराशा का स्त्री० (गाली)।
**निराहार** *वि०* [सं०] उपवास, जिसे करने में कुछ खाया-पीया न जाए।
**निरीह** *वि०* [सं०] उदासीन, विरक्त, चेष्टारहित।
**निरेखल** *सक०* ध्यान से देखना।
**निरेछन** *पु०* निरीक्षण; विवाह के पूर्व कन्या-निरीक्षण की विधि।
**निरोग** *वि०* स्वस्थ।
**निरोध** *पु०* [सं०] रोग, जनसंख्या सीमित रखने का उपक्रम।
**निरोधक** *वि०* [सं०] रोकने वाला।
**निरोपन** *पु० सक०* निश्चय, नियत, ठीक करने का भाव।
**निर्बाह** *पु०* गुजारा, छुटकारा या बचाव का भाव।
**निलज** *वि०* निर्लज्ज।
**निलजई** *स्त्री०* निर्लज्जता।
**निलबरी** *स्त्री० वि०* नील की गाठी, नीलबटी।
**निलहा** *पु० वि०* नील का कारखाना चलाने वाला यूरोपीय।
**निलही** *स्त्री० वि०* नील से सम्बन्धित।
**निसंक** *वि०* नि:शंक।
**निसंग** *वि०* निस्संग।
**निसँठ** *वि०* दरिद्र।
**निसंतान** *पु० वि०* सन्तानहीन। *वि०* निसन्तानी, निरवंशी। *उदा०* 'नानी के धन, पानी के धन, निसन्तानी के धन काम ना आवे।' (*कहा०*)
**निसइल** *पु० वि०* नशाबाज।
**निसठ** *पु० वि०* सूखा हुआ; कंजूस; रसहीन, निस्वाद।
**निसबद** *पु० वि०* शब्दहीन, रात्रि में जब कोई बोलता न हो।
**निसवारथ** *पु० वि०* जिसमें स्वार्थ न हो।
**निसहर** *पु० वि०* निराश; रात।
**निसतार** *पु०* उद्धार, समस्या से पार पा जाना।
**निसा** *स्त्री०* निस्तब्ध, रात्रि।
**निसाचर** *पु०* राक्षस, दैत्य।
**निसान** *पु०* चिह्न, दाग, अँगूठे की छाप; लक्ष्य।
**निसाना** *पु०* लक्ष्य।
**निसानी** *स्त्री०* चिह्न, पहचान।
**निसाफ** *पु०* इन्साफ, न्याय।
**निसाबाज** *पु० वि०* पिअक्कड़, नशा का अभ्यस्त।
**निसुआ** *पु० वि०* बेसुध।
**निसुआइल** *पु० वि०* मौन, निश्चिन्त।
**निसोच** *पु० वि०* जिसे चिन्ता न हो।
**निसुहा** *पु०* ठीहा; वह कुन्दा जिस पर लेदी काटी जाती है।
**निहसल** *पु० वि०* उदास।
**निहसावल** *पु० सक०* उदास करने का भाव।
**निहारल** *सक०* गौर से देखना।

**निहाल** *वि०* सन्तुष्ट, प्रसन्न।
**निहुरल** *अक०* झुककर रहना या चलना।
**निहुरिया** *स्त्री०* निहुरकर चलने का भाव।
**निहोरा** *पु०* प्रार्थना, आग्रहपूर्वक निवेदन; एहसान।
**नीक** *पु० वि०* भला, अच्छा; नीकसुख।
**नीके-नीके** *अव्य०* ठीक-ठीक, भली-भाँति।
**नीच** *पु० वि०* छोटा, तुच्छ, बुरा।
**नीचा** *पु० अव्य०* अपेक्षाकृत छोटा, ऊपर का अभाव। *कहा०* 'नीचा पंच ऊपर परमेसर'।
**नीचे** *क्रि०* वि० भीतर, गहरा में, नीचे होकर।
**नीनरी** *स्त्री०* नींद।
**नीब** *स्त्री०* कलम की नोक।
**नीम** *पु०* एक प्रकार का पेड़, जो तीखा फल देता है।
**नीमन** *पु० वि०* दे० 'निमन'।
**नीर** *पु०* पानी, आँसू। *उदा०* 'नयना ढरे नीर' *लोकगीत*।
**नीरस** *पु० वि०* स्वादहीन, रसहीन।
**नीरोग** *पु० वि०* स्वस्थ, चंगा, तन्दुरुस्त।
**नील** *पु०* एक पौधा और उससे बना रंग।
**नीलकंठ** *पु०* जिसका गला नीला हो, शंकर, पक्षीविशेष।
**नील गाय** *स्त्री०* एक वन्य पशु।
**नीसन** *पु० वि०* जो पोला न हो, ठोस।
**नुकाइल** *अक०* छिपना।
**नुकुस** *पु०* दोष, ऐब।
**नुनगर** *पु० वि०* जिसमें नमक ज्यादा हो।
**नुनछर** *पु०* मिट्टी की दीवाल से झरकर निकलने वाला क्षारीय पदार्थ, नोना।
**नुनफर** *पु०* वह स्थान, जहाँ नमक और खारी बनता हो।
**नुनही** *स्त्री०* नमक से सम्बन्धित।
**नुनिआ** *पु०* नमक बनाने वाली एक जाति।
**नुनिआड़** *पु०* खारी या सोरा बनाए जाने वाला स्थान।
**नू** *अव्य०* नहीं, मत।
**नून** *पु० वि०* लवण। *कहा०* 'नून परल दाल में सवाद गेल भात में'।
**नूनजाहुर** *पु० वि०* अधिक नमक मिला हुआ। अधिक नमकीन
**नूनहा** *पु०* नमक रखने का बर्तन।
**ने** *अव्य०* नहीं, मत।
**नेआय** *पु०* न्याय।
**नेआयी** *पु० वि०* इंसाफवर, न्यायी।
**नेउन** *पु०* दही मथकर निकाला हुआ; नवनीत।
**नेउर** *पु०* नेवला।
**नेक** *वि०* अच्छा, भला।
**नेकी** *स्त्री०* अच्छाई, कृपा, भलाई। *कहा०* 'नेकी के फल बदी'।
**नेग** *पु०* समारोहों पर दिया गया उपहार।
**नेता** *पु०* [सं०] नायक, अगुआ।
**नेनुआ** *पु०* तोरई, घिया, एक तरकारी।
**नेरुआरी** *स्त्री०* धान का डण्ठल।
**नेव** *पु०* नींव, बुनियाद।
**नेवछल** *सक०* किसी व्यक्ति की मंगल-कामना से उसके चारों तरफ घूमकर आशीष देना। *उदा०* 'सरे जवाइन अम्मा नेवछल'।
**नेवछावर** *पु०* किसी के मंगल के लिए किया गया समर्पण।
**नेवज** *पु०* व्रत के अवसर पर देवता के लिए समर्पित पदार्थ।
**नेवतन** *पु०* निमन्त्रण।
**नेवतल** *सक०* निमन्त्रित करना।
**नेवतहरी** *पु०* निमन्त्रित व्यक्ति।
**नेवता** *पु०* निमन्त्रण, निमन्त्रित व्यक्तियों द्वारा दिया गया उपहार।
**नेवद** *वि०* झुका हुआ।
**नेवर** *स्त्री०* किसी के लिए।

**नेवाज** *पु०* दे० 'नमाज'।
**नेवार** *पु०* मोटे सूत की पट्टी, जिसका उपयोग पलंग बनाने में होता है।
**नेवारल** *सक०* समेटना, रोकना।
**नेवारी** *स्त्री०* धान निकाला हुआ, डण्ठल, पुष्पविशेष।
**नेह** *पु०* प्रेम, स्नेह।
**नेहाय** *पु०* लोह पिण्ड, जिस पर सोनार या लोहार किसी धातु को रखकर पीटता है। नेहाई।
**नेहायत** *अव्य०* बहुत, अत्यन्त।
**नेहाली** *स्त्री०* रजाई, दोलाई।
**नेही** *पु०* स्नेह रखने वाला।
**नैन** *पु०* आँख।
**नैनसुख** *पु०* सफेद और चिकना वस्त्र।
**नैनू** *पु०* ताजा घी; मक्खन।
**नोकता** *पु०* मवेशियों की आँखों का ढक्कन।
**नोकर** *पु०* सेवक, खिदमतगार। *कहा०* 'नोकर के चाकर, मड़ई के ओसारा'।
**नोकरिहा** *पु० वि०* नौकरी से जीवन चलाने वाला।
**नोकसान** *पु०* हानि, घाटा।
**नोक्स** *पु०* दोष, ऐब।
**नोख** *पु०* नुकीला भाग।
**नोखता** *पु०* बिन्दी।
**नोखदार** *पु० वि०* जिसमें नोक हो, नुकीला।
**नोनखर** *स्त्री० वि०* नमकीन, क्षारीय भूमि।
**नोचनी** *स्त्री०* खुजली।
**नोचर** *वि०* नया।
**नोचल** *सक०* नोचना।
**नोनचा** *पु०* खटाई।
**नोट** *पु०* प्रमाणित हुण्डी, रुपये का नोट; संक्षिप्त लेख।
**बन्दी** *स्त्री०* विशेष नोटों के प्रचलन की समाप्ति।
**नोटिस** *स्त्री०* सरकार द्वारा भेजी गई सूचना।
**नोन** *पु०* नमन। **-हरामी** *वि०* नमकहरामी।
**नोना** *पु० वि०* प्रिय, दुलारा।
**नोनी** *स्त्री०* एक प्रकार की घास।
**नोह** *पु०* नख, नह।
**नोहर** *पु०* दुर्लभ, लम्बी प्रतीक्षा के बाद प्राप्य।
**नौ** *वि०* नव, नया।
**नौ** *वि०* आठ और एक। *पु०* नौ की संख्या। *कहा०* 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस'। **-मासा** *पु०* गर्भाधान से नवाँ मास। **-रतन** *पु०* नवरत्न। **-रातर** *पु०* नवरात्र। **-लक्खा** *वि०* नौलखा। **-सत** *पु०* सोलहो शृंगार। **-सर** *पु०* चालबाजी।
**नौकर** *पु०* [फा०] सेवक, भृत्य। **-साही** *स्त्री०* कर्मचारियों अधिकारियों द्वारा संचालित शासन तंत्र।
**नौकरानी** *स्त्री०* दासी।
**नौका** *स्त्री०* [सं०] नाव।
**नौची** *स्त्री०* नवयुवती।
**नौजवान** *पु०* [फा०] नवयुवक।
**नौटंकी** *स्त्री०* नाचविशेष।
**नौठा** *पु०* नया हल।
**नौमी** *स्त्री०* नवमी पूजा।
**नौरंगी** *स्त्री०* नारंगी।
**नौसादर** *पु०* एक प्रकार का क्षार।
**नौसिखुआ** *पु० वि०* नव शिक्षित।
**नौसे** *पु०* दुलहा, वर।
**न्याय** *पु०* [सं०] इंसाफ, फैसला।
**न्यायाधीश** *पु०* [सं०] न्यायकर्ता, जज।
**न्यायालय** *पु०* अदालत।
**न्यारे** *अव्य०* अलग, दूर।
**न्यूज** *पु०* [अं०] समाचार।
**न्योछावर** *स्त्री०* निछावर।
**न्योता** *पु०* निमन्त्रण।

❑

# प

**प** देवनागरी वर्णमाला के पवर्ग का प्रथम वर्ण। इसका उच्चारण होंठ से होता है। उच्चारण में दोनों होठ मिलते हैं, जिसके कारण यह स्पर्श वर्ण कहलाता है।

**पँइचा** *स्त्री०* ज्यों का त्यों लौटा देने की शर्त पर लिया गया धन या पदार्थ।

**पँउड़ल** *अक०* तैरना; तथ्य का पता लगाने के लिए प्रयत्नशील रहना।

**पँउड़ी** *स्त्री०* वह रास्ता, जिस पर कोल्हू का बैल चक्कर काटता रहता है।

**पँएड़ा** *स्त्री०* रास्ता, राह।

**पंक** *पु०* [सं०] कीचड़, दलदल। -**ज** *पु०* कमल। -**वास** *पु०* केंकड़ा।

**पँकरा** *स्त्री०* पानी की धारा के साथ बहकर आई हुई मिट्टी, दलदल-भूमि।

**पँकाड़** *स्त्री०* कीचड़।

**पंख** *पु०* डैना, पर। -**जामल** *मुहा०* भागना, खिसकना। -**लागल** *मुहा०* उड़ान भरना।

**पँखड़ी** *स्त्री०* पुष्पदल, फूल की पत्ती।

**पँखमोर** *वि०* लाचार, असमर्थ।

**पंखा** *पु०* बाँह और कन्धे का जोड़; हवा करने का साधन। -**कुली** *पु०* पंखा खींचने वाला नौकर। -**पोस** *पु०* पंखे का खोल। -**कइल** *मुहा०* हवा का झोंका बहाना।

**पंखाज** *पु०* पखावज।

**पँखिया** *स्त्री०* पँखुड़ी, भूसी।

**पंखी** *पु०* पक्षी। *स्त्री०* छोटा पंखा।

**पंखुड़ा** *पु०* दे० 'पंखुरा'।

**पँखुरा** *पु०* कन्धे के पास का जोड़, बाँह।

**पँखेरू** *पु०* पखेरू, चिड़िया।

**पंग** *वि०* लँगड़ा, बेकाम।

**पंगत** *स्त्री०* [सं० पंक्तिः] पंक्ति, भोज।

**पंगा** *वि०* दे० 'पंग'।

**पँगरा** *पु०* भेड़ का बच्चा।

**पंगा** *स्त्री०* झगड़ा।

**पंगु** *वि०* [सं०] गतिहीन, जो पाँव के बेकाम होने से न चल सके। *पु०* लँगड़ा आदमी। -**पीठ** *पु०* लँगड़े को बैठाकर ले जाने वाली गाड़ी।

**पँगौरा** *स्त्री०* ईख के पके रस को रखने का मिट्टी का बर्तन।

**पँगौली** *स्त्री०* पोई, दो गाँठों के बीच का हिस्सा।

**पँघत** *स्त्री०* पंक्ति में भोजन करने वाले।

**पंच** *पु०* झगड़ा निपटाने के लिए आमंत्रित व्यक्ति, पंचायत का सदस्य। *उदा०* 'पंच मुखे परमेसर'।

**पँच** *वि०* [सं०] पाँच का संक्षिप्त रूप।

**पंचइती** *स्त्री०* पंचों द्वारा किसी फैसले पर पहुँचने का काम।

**पँचइया** *स्त्री०* नागपंचमी।

**पंचक** *वि०* [सं०] पचखा।

**पँचकटैल** *स्त्री०* कई प्रकार की मिट्टी से युक्त चिकनी मिट्टी।

**पँचकल्यान** *पु०* लाल या काले रंग का ऐसा घोड़ा, जिसके चारों पैर सफेद हों, मांगलिक घोड़ा।

**पँचकिरनी** *स्त्री०* जन-कल्याण के लिए की गयी कोई कीर्ति।

**पँछकुटिया** *स्त्री०* तकुली का पूरा साँचा।

**पँचकोसी** *स्त्री०* पाँच कोस की लम्बाई-चौड़ाई में स्थित क्षेत्र।

**पँचगछिया** *स्त्री०* पाँच पेड़ों का समूह, वह स्थान, जहाँ पाँच पेड़ हों।

**पँचगुना** *वि०* पाँच गुणा।
**पंच गोटिया** *पु०* पाँच गोटी का खेल।
**पँचपउनिआ** *स्त्री०* धोबी, हजाम, लोहार, माली और चमार, जो गृहस्थों की सेवा कर उनसे पारिश्रमिक पाते हैं।
**पँचपीरिया** *स्त्री०* देवताओं की पाँच पिण्डिकाओं का समूह, पाँच पीरों का समूह।
**पँचफोरन** *पु०* जीरा, मेथी, सौंफ, मिर्चा और हींग को मिलाकर छौंकने का साधन।
**पँचबेनिया** *स्त्री०* किवाड़ों की जोड़ी।
**पंचम** *वि०* [सं०] पाँचवाँ, वह घर, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई नव और पाँच हाथ की हो।
**पंचमी** *स्त्री०* कृष्ण-शुक्ल पक्ष की पाँचवीं तिथि।
**पँचमूल** *पु०* पाँच जड़ों के मेल से बनी औषधि या काढ़ा।
**पँचमेल** *वि०* पाँच प्रकार की मिठाइयाँ हों, किन्हीं पाँच चीजों का समूह।
**पँचरतन** *पु०* पाँच प्रकार के रत्नों का समूह, जिसका उपयोग अनुष्ठान में होता है।
**पँचलरी** *स्त्री०* पाँच लड़ियों की हार।
**पँचहत्था** *वि०* जो लम्बाई में पाँच हाथ का हो।
**पंचांग** *वि०* [सं०] पत्रा।
**पंचाइठ** *पु०* धान की रोपनी आरम्भ करते समय कृषक द्वारा प्रथम पाँच पौधे को रोपने की विधि।
**पंचाइत** *स्त्री०* पंचों की सभा या बैठक, पंचाइत, पंचायती।
**पंचाक्षर** *वि०* पाँच अक्षरों वाला। *पु०* 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र।
**पंचानबे** *वि०* नब्बे और पाँच की संख्या।
**पँचे** *पु०* पाँचगुना को व्यक्त करने की पहाड़े की विधि।
**पंचौर** *पु०* हेंगा में बाँई ओर बँधने वाला बैल।
**पंछा** *पु०* छाला, फफोला, घाव से निकला पानी।
**पंछी** *पु०* [सं०] चिड़िया, पक्षी। *उदा०* 'पंछी में कउवा, आदमी में नउआ'।
**पंज** *वि०* [फा०] पाँच।
**पंजर** *पु०* [सं०] हड्डियों का ढाँचा, कंकाल, ठठरी।
**पँजरा-पँजरी** *क्रि०वि०* बगल में, पास, निकट।
**पँझरासट्टा** *पु०* पांजर या बगल में लगने वाला एक प्रकार का घाव।
**पँजरी** *स्त्री०* कंकाल।
**पंजा** *स्त्री०* हाथ या पाँव की पाँच अँगुलियों का समूह; पाँच बिन्दियों वाला तास का पत्ता।
**पंजाब** *वि०* पाँच नदियों का प्रदेश, पंजाब।
**पंजाबी** *वि०* पंजाब-निवासी; पंजाब की भाषा।
**पंजाजाल** *पु०* मछली पकड़ने का बड़े फानवाला जाल।
**पँजिआवल** *सक०* पकड़ना, दोनों हाथों के बीच दबाना।
**पंजीरी** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई, जो आँटे को घी में भूनकर उसमें धनियाँ, सोंठ, जीरा आदि मिलाकर बनाई जाती है; इन्दुपर्णी पौधा।
**पंडा** *पु०* [सं० पण्डितः] किसी तीर्थस्थान या मन्दिर का पुजारी, घाटिया; ब्राह्मण। *स्त्री०* ज्ञान, बुद्धि, विवेक, शास्त्र-ज्ञान।
**पंडार** *पु०* वह ऊँख, जो खाने में मीठी नहीं लगती है।

**पंडित** *पु०* [सं०] संस्कृत का ज्ञाता, विद्वान्। *उदा०* 'पंडित नाया वैद पुरान'।
**पंडिताइन** *स्त्री०* पण्डित की स्त्री, ब्राह्मणी।
**पंडिताई** *स्त्री०* पाण्डित्य, विद्वत्ता।
**पंडिताऊ** *वि०* पण्डित जैसा।
**पंडुक** *पु०* [सं० पाण्डु] कबूतर की जाति का एक पक्षी।
**पंडोह** *पु०* नाबदान।
**पँतजोर** *स्त्री०* पंक्तिबद्ध होने की स्थिति।
**पँतरी** *स्त्री०* पाँत, बाँती। (पँतवार) *स्त्री०* पंक्तिबद्ध पाँत बनाकर बैठने की स्थिति।
**पँतियारी** *स्त्री०* सड़क आदि के किनारे के पेड़ों की पंक्ति।
**पंथ** *पु०* [सं० पथिन्] मार्ग; व्यवहार का कम, रीति, चाल, व्यवस्था, सम्प्रदाय, धर्म, मत; रोगी को लंघन या उपवास के बाद देने का हलका भोजन।
**पँदारा** *पु०* पनारा, नाबदान।
**पँवरिआ** *पु०* एक वर्ग, जो पुत्र-जन्म के अवसर पर गाथाएँ गाकर ईनाम लेता है।
**पँवार** *पु०* राजपूतों की एक जाति, परमार।
**पँवारा** *पु०* वीरगाथा, वीररस के लम्बे कथा-गीत।
**पँवारी** *स्त्री०* कुदाल का वह भाग, जिसमें डण्डा लगा रहता है।
**पँवारे** *क्रि०वि०* बहाना से।
**पँसधा** *पु०* तराजू के पलड़ों के तौल या वजन का अन्तर।
**पँसरहट्टा** *पु०* पंसारियों की दुकान वाला बाजार।
**पंसारी** *पु०* [सं० पण्यशालिन्] किराना सामग्री या औषधि बेचने वाला बनिया।
**पंसेरी** *स्त्री०* [सं० पंच+सेर:] पाँच सेर का बटखरा।
**प** *वि०* ऊपर, पर। *उदा०* ताखा प सामान बा।
**पइआ** *पु०* अन्न का ऐसा दाना, जो खोखला या सत्वहीन हो; एक कीड़ा।
**पइचल** *सक०* मिले हुए अन्न को सूप में चलाकर अलग-अलग करना।
**पइजन** *स्त्री०* बच्चों के पैर का एक घुँघरूदार आभूषण।
**पइटल** *अक०* अभ्यस्त होना, किसी से सम्पर्क हो जाने पर ढीठ हो जाना।
**पइन** *स्त्री०* पानी बहाने की नाली।
**पइया** *स्त्री०* दे० 'पइआ'।
**पइरी** *स्त्री०* पैर का एक भारी गहना।
**पइला** *पु०* पैला, हल का मुँह; काठ का नपना।
**पइसल** *अक०* घुसना, प्रवेश करना।
**पइसा** *पु०* आने का चौथा हिस्सा, रुपये का सौवाँ हिस्सा। *उदा०* 'पइसा न कौड़ी सलाम करे छौंड़ी'।
**पइसार** *पु०* प्रवेशद्वार, भीतर का मार्ग।
**पइसावल** *सक०* घुसाना, प्रवेश कराना।
**पउँड़ल** *सक०* तैरना, पार करना।
**पउवा** *पु०* खटिया का पाया।
**पकउड़ी** *स्त्री०* बेसन में सब्जी मिलाकर छानी गई बरी।
**पकठा** *वि०* अड़िया, सूखा।
**पकठाइल** *वि०* खूब पककर सख्त हो जाना (मकई का दाना)।
**पकड़ल** *सक०* हाथ से धरना, पकड़ना।
**पकड़ाइल** *सक०* पकड़ा जाना, कोई बुरा काम या अपराध करते समय पकड़ लिया जाना।
**पकड़ावल** *सक०* किसी के हाथ में कोई चीज धरा देना।
**पकड़ोसल** *वि०* बोलने में चतुर, ढीठ।
**पकल** *अक०* [सं० पक्व] अनाज, फल का परिपक्व होना; कच्चा न रहना; सीझना; (बालों का) सफेद होना; गर्मी में कड़ा होना। *उदा०* 'पकले आम सुहावन, पकले मरद घिनावन'।

**पकवान** *पु०* [सं० पक्वान्नं] घी या तेल में पकाकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।
**पकवावल** *सक०* पकाने का काम दूसरे से कराना।
**पकाड़** *पु०* बारी, अवसर।
**पकाव** *पु०* पकने का भाव, मवाद।
**पकावन** *पु०* पकवान।
**पकावल** *सक०* किसी भोज्य पदार्थ को आग पर चढ़ाकर उसे सिझाना; दवा देकर फोड़े को चीरनेयोग्य बना देना।
**पकिया** *वि०* पक्का, वह जो आसानी से नहीं टूटे।
**पकुआइल** *अक०* गर्मी में सूखकर पका लगना।
**पकुसाइल** *अक०* अधिक पक्का हुआ।
**पकुहा** *पु०* पीपल और पाकड़ का पका फल।
**पकोआ** दे० 'पकुहा'।
**पकौड़ा** *पु०* बड़ी पकौड़ी।
**पकौड़ी** *स्त्री०* [सं० पक्ववटी] छोटी-पकौड़ी।
**पक्का** *वि०* [सं० पकल] ईंट का बनाया हुआ मकान; भोजन का एक प्रकार, जिससे साग व पूड़ी सम्मिलित हो।
**पक्की** *स्त्री०* तेल या घृत में तला गया भोज्य पदार्थ; मजबूत सड़क।
**पक्ष** *पु०* [सं०] भाग, पार्श्व, बगल।
**पक्षाघात** *पु०* लकवा।
**पक्षी** *पु०* चिड़िया।
**पक्खन** *पु०* जाला।
**पख** *स्त्री०* [सं० पथ्न] महीने का विभाजन कृष्ण और शुक्ल पक्ष।
**पखंड** *पु०* ढोंग, छल, कपट, पाखण्ड।
**पखंडी** *पु०* पाखण्डी।
**पखना** *पु०* अंग-प्रत्यंग, शाखा-प्रशाखा।
**पखरल** *सक०* पखारना, धोना।
**पखरवावल** *सक०* धोवाना।
**पखवारा** *पु०* पन्द्रह दिनों की अवधि।
**पखाउज** *पु०* [सं० पक्षवाद्यं] पखावज, मृदंग।
**पखान** *पु०* पाषाण, पत्थर।
**पखारल** *सक०* धोना, पानी, धोकर हटाना।
**पखिया** *पु०* झगड़ालू, बखेड़िया।
**पखी** *पु०* पक्षी।
**पखुड़ी** *स्त्री०* पँखुड़ी।
**पखुरा** *पु०* कन्धे और बाँह के जोड़ के पास का भाग।
**पखेरू** *पु०* पक्षी, चिड़िया।
**पखेव** *पु०* उड़द, सोंठ, गुड़ आदि का घोल, जिसे ब्यायी गाय भैंस को खिलाया जाता है।
**पखौआ** *पु०* पंख।
**पखौरा** *पु०* दे० 'पखुरा'।
**पग** *पु०* [सं० पदकं] पैर, डग; फाल।
**पगडण्डी** *स्त्री०* छोटा और सँकरा मार्ग।
**पगड़ी** *स्त्री०* [सं० पटक:] पाग, मुरेठा; नजराने के रूप में ली जाने वाली रकम। **-अटकल** *मुहा०* झगड़ा लगना। **-उछलल** *मुहा०* बेइज्जत होना। **-उछालल** *मुहा०* बेइज्जत करना। **-उतरल** *मुहा०* अपमान होना। **-बाँधल** *मुहा०* अधिकार देना। **-राखल** *मुहा०* इज्जत बचाना।
**पगरी** *स्त्री०* दे० 'पगड़ी'।
**पगला** *वि०* पागल, नासमझ।
**पगलाइल** *अक०* पागल होना।
**पगली** *स्त्री०* वह स्त्री जिसका दिमाग खराब हो। **-घंटी** *स्त्री०* जो खतरे की स्थिति में बजाई गई हो, जो जल्दी-जल्दी और कुछ देर तक बजती हो।

**पगलेट** *वि०* पागल-सा आचरण करने वाला।
**पगस्त** *वि०* दूर।
**पगहा** *पु०* [सं० प्रग्रह:] मवेशियों को बाँधने की रस्सी।
**पगार** *पु०* पैर में लगी हुई मिट्टी; वेतन।
**पगिया** *स्त्री०* पगड़ी।
**पगुरावल** अक० पागुर करना, जुगाली करना।
**पगुरी** *स्त्री०* पशुओं द्वारा खाई हुए घास को फिर से चबाना।
**पघरिआ** *स्त्री०* हँसुआ का एक प्रकार, जो अपेक्षाकृत मोटा और बड़ा होता है।
**पघिलल** *अक०* किसी पदार्थ का गर्मी से गलकर पानी हो जाना; द्रवित होना।
**पघिलावल** *सक०* पिघलाना।
**पचंगी** *स्त्री०* ठूँठ ऊँख से निकली कोंपल।
**पचउनी** *स्त्री०* मवेशियों की वह अतँड़ी, जिसमें पाचन-क्रिया होती है।
**पचकल** *अक०* किसी उभरी हुई सतह का दब जाना। *उदा०* 'पचकल मुँह जब दँतवा टूटल।'
**पचखा** *पु०* खलिहान की फसल को उलटने में व्यवहृत पाँच काँटों वाली लग्गी, पाँचा; पाँच नक्षत्र, जिसमें शुभ-कार्य नहीं होता।
**पचखी** *स्त्री०* पेड़-पौधों की कोमल शाखा।
**पचड़ा** *पु०* बखेड़ा, झंझट; गीत।
**पचड़ी** *स्त्री०* हल में लगाया जाने वाला दूसरा पच्चड़।
**पचपच** *पु०* गीला होने की स्थिति; शिव, महादेव; 'पच-पच' शब्द होने की क्रिया।
**पचपचा** *वि०* अधूरा पका हुआ (भोजन); जिसका पानी सूखा न हो।
**पचपचाइल** *अक०* किसी वस्तु का बहुत गीला होना।
**पचपन** *वि०* पचास और पाँच। *पु०* पचपन की संख्या 55।
**पचरस** *पु०* वह भूमि, जिसमें नमी बनी रहे।
**पचरा** *पु०* ग्राम देवता को रिझाने के लिए गाया जाने वाला लम्बा गीत।
**पचरी** *स्त्री०* लकड़ी को कसने के लिए उसमें ठोकी गई पतली टुकड़ी।
**पचल** *अक०* [सं० पचनं] हजम होना; दी हुई राशि का वापस नहीं होना।
**पचलकड़िया** *पु०* जलने की अन्तिम दशा में शव-परिक्रमा करके उस पर लकड़ी फेंकने की क्रिया।
**पचलरी** *स्त्री०* एक हार।
**पचहत्तर** *वि०* सत्तर और पाँच। *पु०* सत्तर से पाँच अधिक की संख्या, 75।
**पचहरा** *वि०* पाँच परतों वाला, पाँच गुना।
**पचार** *स्त्री०* जुए में बाँधने की लकड़ी या बाँस।
**पचावल** *सक०* हजम करना; दूसरे की देय राशि को नहीं देना; गलाना, खपाना।
**पचास** *वि०* [सं० पंचाशत्] चालीस और दस की संख्या। *पु०* पचास की संख्या 50।
**पचासा** *पु०* एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह; जीवन के प्रथम पचास वर्ष।
**पचासी** *वि०* [सं० पंचाशीति:] अस्सी और पाँच। *पु०* पचासी की संख्या।
**पचाही** *स्त्री०* शव को ढोने के लिए नए बाँस की बनी डोली, टिकठी।
**पचीस** *वि०* [सं० पञ्चविंशति:] बीस और पाँच। *पु०* पचीस की संख्या, 25।

**पचीसी** *स्त्री०* पचीस वस्तुओं का समूह; किसी के जीवन के प्रथम पचीस वर्ष।

**पचोतर सौ** *वि०* [सं० पञ्चोतर] एक सौ पाँच। एक सौ पाँच की संख्या, 105।

**पच्चर** *स्त्री०* लकड़ी को कसने के लिए उसमें ठोंकी गई लकड़ी। **-ठोंकल** *मुहा०* बहुत हैरान करना। **-मारल** *मुहा०* बने हुए काम में बाधा डालना।

**पच्ची** *स्त्री०* एक रंग के पत्थर पर दूसरे रंग के पत्थर का जड़ाव। **-कार** *पु०* पच्ची करने वाला। **-कारी** *स्त्री०* पच्ची करने का काम।

**पच्छ** *पु०* पक्ष।

**पच्छाघात** *पु०* पक्षाघात।

**पच्छि** *पु०* पक्षी।

**पच्छिम** *स्त्री०* पश्चिम।

**पछ** *पु०* महीने के दो विभाजन कृष्ण और शुक्ल पक्ष; एक तरफ, एक ओर।

**पछइयाँ** *स्त्री०* पछुआ, पश्चिम का (बैल)।

**पछगुड़िया** *वि०* पीछे की ओर से

**पछता** *वि०* विलम्ब या समय बिताकर किया गया।

**पछताइल** *सक०* पछताना।

**पछतावल** *अक०* गलत या अनुचित कार्य करने पर दु:खी होना।

**पछतावा** *पु०* [सं० पश्चात्तापः] शोक, पश्चात्ताप।

**पछनिआ** *पु०* टिका देने वाला।

**पछपात** *पु०* पक्षपात।

**पछरल** *अक०* परास्त होना, पिछड़ना।

**पछरा** *पु०* कुश्ती, मल्लयुद्ध।

**पछराइल** *सक०* पछाड़ा जाना, कुश्ती में हार जाना।

**पछरिया** *स्त्री०* कटनी के लिए साधन।

**पछवा** *क्रि०वि०* बाद में, सामने नहीं।

**पछाँह** *स्त्री०* पश्चिम की ओर का प्रदेश।

**पछाड़** *स्त्री०* घोड़े के पिछले पैर की रस्सी; मूर्च्छित होकर गिरना; शोक आदि के कारण अचेत होकर गिरना। **-खाइल** *मुहा०* खड़े-खड़े गिर पड़ना।

**पछाड़ल** *सक०* लड़ाई या कुश्ती में परास्त करना; धोते समय कपड़े को पटकना।

**पछाड़ी** *स्त्री०* पीछे की ओर, पिछाड़ी।

**पछाँया** *पु०* पछुआ के अनुकूल (बादल)।

**पछितावल** *अक०* पछताना।

**पछितानि** *स्त्री०* पछतावा।

**पछिम** *पु०* पच्छिम, पश्चिम।

**पछिमारी** *वि०* पश्चिम की ओर स्थित।

**पछिमाहुत** *वि०* पश्चिम की ओर।

**पछियाइल** *सक०* पीछे चलना।

**पछिलका** *पु०* पीछे वाला।

**पछिला** *वि०* पीछे वाला।

**पछिलि** *वि०* पीछे वाली।

**पछीत (घर)** *पु०* खिड़की के पास का घर।

**पछुआइल** *अक०* पीछे रहना, पिछड़ जाना।

**पछुआर** *स्त्री०* घर के पीछे की भूमि, घर का पिछला भाग।

**पछुआवल** *सक०* गाड़ी को पीछे की ओर ढकेलना, पीछे-पीछे चलना।

**पछूती** *स्त्री०* घर के पीछे का भाग।

**पछेआ** *स्त्री०* पश्चिम से पूरब की ओर बहने वाली हवा। *उदा०* 'पछेआ चले खेती फले'।

**पछेआरी** *वि०* पश्चिम में स्थित।

**पछेला** *पु०* कंगन के पीछे पहने जाने वाला गहना।

**पछोरल** *सक०* सूप से फटकना।

**पछौरा** *पु०* ढेकी का पावदान।

**पजह** *अक०* किसी फसल के पौधे की अत्यधिक बढ़ जाने की स्थिति।

**पजाड़** *पु०* क्रमशः, अकसर।
**पजारी** *स्त्री०* ईख, जो मीठी नहीं होती।
**पजावा** *पु०* ईंट का भट्ठा।
**पजेड़ा** *वि०* बड़ा पाजी, दुष्ट।
**पझाइल** *अक०* औटे हुए दूध का स्थिर होना।
**पझारी** *स्त्री०* कही गई बातें या गाए गए गीत का परिमाण।
**पटंबर** *पु०* रेशमी वस्त्र।
**पट** *पु०* मुँह नीचे और पीठ ऊपर के सोने की स्थिति; वस्त्र, कपड़ा।
**पटइन** *स्त्री०* पटवा जाति की स्त्री।
**पटइल** *अक०* मटर आदि के पौधे में छीमी लगना।
**पटउँआ** *पु०* एक प्रकार का सूद भरना, जिसमें निश्चित समय के बाद उसके रुपये का भुगतान किया जाता है।
**पटकन** *पु०* पटकने का भाव या कार्य; लाठी, डण्डा।
**पटकनिया** *स्त्री०* पटकने की क्रिया या भाव।
**पटकल** *अक०* किसी को मल्ल-युद्ध में पछाड़ना; किसी वस्तु को ऊँचाई से नीचे की ओर फेंकना।
**पटका** *पु०* पटेला, हेंगा।
**पटका-पटकी** *पु०* एक-दूसरे को पटकने का प्रयास या कार्य, कुश्ती।
**पटडेहर** *पु०* ओसारे के ढलान के निकट के खम्भे पर रहने वाला लकड़ी का शहतीर।
**पटड़ा** *पु०* तख्ता।
**पटतर** *पु०* दृष्टान्त, कहावत, बदले में।
**पटना** *पु०* [सं० पट्टनं] बिहार की वर्तमान राजधानी। बिहार प्रान्त का एक प्रधान नगर, इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था। उदा० 'पटना के बाबू कनखिया ऩ मारऽ'।
**पटपट** *स्त्री०* किसी वस्तु के फूटने का शब्द।
**पटपटाइल** *अक०* भूख से पीड़ित होना; गर्मी से तपड़ना।
**पटपर** *पु०* धान का बारीक भुस्सा; नदी के आस-पास की वह भूमि, जो वर्षाकाल में प्रायः डूबी रहती है, ऐसा स्थान, जहाँ वनस्पति न उपजे, उजाड़ स्थान।
**पटपरा** *पु०* पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि।
**पटबीजना** *पु०* जुगनू।
**पटरा** *पु०* लकड़ी का लम्बा चौरस पल्ला, पाटा, धोबी का पाट।
**पटरी** *स्त्री०* तख्ता।
**पटरानी** *स्त्री०* राजा की मुख्य रानी, जिसको राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार हो।
**पटरी** *स्त्री०* बच्चों के लिखने का उपकरण; पटिया; रेल; सड़क का एक किनारा।
**पटरोल** *पु०* रेशमी वस्त्र।
**पटल** *अक०* मेल बैठाना, मतैक्य होना, मामला तय होना; सौदे की कीमत निश्चित हो जाना।
**पटवतन** *पु०* पाटन, कोठा।
**पटवनिहार** *पु०* सिंचाई करने वाला व्यक्ति।
**पटवल** *सक०* पानी से खेत सींचना।
**पटवारी** *पु०* कर्मचारी, जो खेत की बन्दोबस्ती और मालगुजारी का हिसाब-किताब रखता है।
**पटवावल** *सक०* सिंचाई करना; ईंट बिछा कर छत तैयार करना।
**पटवास** *पु०* चुपचाप लेटे रहने का कार्य; वस्त्र, गृह, शिविर, तम्बू, साड़ी लहँगा।
**पटसन** *पु०* एक पौधा, जिसके रेशों से रस्सी, बोरे, टाट आदि बनाए जाते हैं; पटुआ, जूट।

**पटसार** *पु०* पहाड़ के नीचे की समतल भूमि।
**पटसुनरी** *स्त्री०* अति सुन्दरी।
**पटहा** *पु०* वह आधार, जिस पर धोबी कपड़ा पटककर साफ करता है।
**पटहेरा** *पु०* रंगीन सूत का काम करने वाली एक जाति।
**पटहेरिन** *स्त्री०* पटहेरा की स्त्री।
**पटाइल** *अक०* शान्त रहना।
**पटाक** *पु०* किसी वस्तु के ऊपर से नीचे गिरने की आवाज।
**पटाका** *पु०* पटाके की आवाज; 'पट' की आवाज, *स्त्री०* [सं०] ध्वज, झण्डा।
**पटाखा** *पु०* एक तरह की आतिशबाजी।
**पटान** *पु०* कर्ज का भुगतान।
**पटापट** *वि०* लगातार।
**पटापटी** *स्त्री०* एक प्रकार का रंगीन वस्त्र।
**पटावन** *पु०* सिंचाई।
**पटावल** *सक०* सिंचाई करना।
**पटिआ** *स्त्री०* स्त्रियों के सिर के सँवारे बाल; खेत का टुकड़ा; चौकोर (पत्थर)।
**पटिआवल** *सक०* फुसलाना, अपने मेल में लाना।
**पटिदार** *पु०* हिस्सेदार, सम्पत्ति में हिस्सों का अधिकारी।
**पटिया** *स्त्री०* पाटी, तख्ती।
**पटुआ** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसके छाल की रस्सी बनती है, पटसन।
**पटुआइल** *अक०* मौन धारण कर बर्दाश्त करना।
**पटुका** *पु०* कमर में बाँधने का वस्त्र-खण्ड, धारीदार वस्त्र।
**पटेआ** *पु०* चोइँटा-रहित मछली।
**पटेर** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसके पत्ते की चटाई बनती है।
**पटेल** *पु०* गाँव का मुखिया, कुर्मी जाति।
**पटेला** *पु०* हेंगा, पटेली।
**पटोर** *पु०* एक प्रकार का कपड़ा।
**पटोरा** *पु०* गोटा-पाटा-जड़ी रेशमी साड़ी।
**पटौरी** *स्त्री०* डाँड़ (पतवार) खेने वाली जगह।
**पट्ट** *पु०* मन्दिर या महल का दरवाजा; मुँह नीचे और पीठ ऊपर कर लेटने की स्थिति; पहिया; घाव पर बाँधने की पट्टी; दुपट्टा; राजसिंहासन; पीढ़ा, पाटा; पगड़ी।
**पट्टर** *पु०* आँख का ढक्कन या पर्दा।
**पट्टा** *पु०* [सं० पट्टः] किसी सम्पत्ति के उपभोग का अधिकार-पत्र।
**पट्ठा** *पु०* पहलवान, हृष्ट-पुष्ट, जवान; एक प्रकार का चौड़ा गोटा; बेल बनाया हुआ गोटा; जाँघ के जोड़ का स्थान, मोटी नस।
**पठंगा** *पु०* ठिगना।
**पठई** *स्त्री०* कुश्ती।
**पठरू** *पु०* बकरी का बच्चा।
**पठवल** *सक०* भेजना, जाने की क्रिया में प्रवृत्त करना।
**पठवावल** *सक०* भेजवाना।
**पठान** *पु०* मुसलमानों की उपजाति।
**पठावल** *सक०* भेजना।
**पठानी** *स्त्री०* पठान की स्त्री।
**पठार** *पु०* [सं० प्रस्तारः] दूर तक विस्तृत चौरस ऊँची भूमि।
**पठावनी** *स्त्री०* [सं० प्रस्थापनम्] किसी कार्य हेतु कहीं भेजना।
**पठौना** *सक०* पठाना; भेजना।
**पड़ंग** *पु०* आकार में बड़ा पाड़ा।
**पड़पड़** *पु०* जोरों से वायु के निकलने की ध्वनि; मलत्याग के समय निकलने वाला शब्द।

**पड़पोता** *पु०* परपोता।

**पड़रू** *पु०* भैंस का बच्चा, पड़वा।

**पड़वा** *पु०* भैंस का नर बच्चा।

**पड़ाका** *पु०* आतिशबाजी का एक भेद, जो फटने पर पड़ाक की आवाज करता है।

**पड़ापड़** *स्त्री०* 'पड़-पड़' की आवाज।

**पड़ाव** *पु०* वह स्थान, जहाँ यात्री ठहरते हों, चट्टी, ठिकाना।

**पड़िया** *स्त्री०* भैंस का मादा बच्चा।

**पड़ियाइल** *अक०* भैंस का भैंसे से सम्भोग होना। *सक०* सम्भोग करना।

**पड़िवा** *स्त्री०* परिवा।

**पड़े** *अव्य०* होकर।

**पड़ोरल** *सक०* पानी से लीपना।

**पड़ोस** *पु०* [सं० प्रतिवास:] घर के आसपास की जगह।

**पड़ोसी** *पु०* पड़ोस में रहने वाला। *उदा०* 'पड़ोसी भातो सिहाई, उपासो सिहाई'।

**पड़ोह** *पु०* मोरी या नाली।

**पढ़ंत** *स्त्री०* सतत पढ़ने का काम, जादू।

**पढ़ंता** *वि०* पढ़ने वाला।

**पढ़त** *स्त्री०* [सं० पठनं] पढ़ाने की क्रिया, पाठ।

**पढ़ल** *सक०* बाँचना, बार-बार कहना, रटना, धीरे-धीरे बोलना। *उदा०* 'पढ़ल पंडित ना, परले पंडित'।

**पढ़वावल** *सक०* पढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

**पढ़ाई** *स्त्री०* पढ़ने का कार्य, विद्याभ्यास, पठन, अध्ययन, पाठन, पढ़ाने का काम; पढ़ाने के बदले में दिया जाने वाला धन। *उदा०* 'पढ़ाई ना लिखाई लाट साहब कहाई'।

**पढ़ावल** *सक०* अध्यापन करना, शिक्षा देना।

**पढ़ुआ** *पु०* पढ़ने वाला; पढ़ा-लिखा व्यक्ति।

**पढ़ैया** *पु०* पढ़ने वाला।

**पत** *स्त्री०* लज्जा, प्रतिष्ठा।

**पतई** *स्त्री०* पेड़ का पत्ता।

**पतंग** *स्त्री०* गुड्डी। **-बाज** *पु०* पतंग उड़ाने, लड़ाने वाला।

**पतंग** *पु०* एक पर्वत का नाम, पारा; एक प्रकार का चन्दन; बाण; अग्नि; घोड़ा; पिशाच; भगवान् कृष्ण का एक नाम।

**पतंगा** *पु०* पक्षी, चिड़िया, सूर्य, फतिंगा, टिड्डी।

**पतंगी** *पु०* पक्षी। *वि०* रंग-बिरंगी।

**पत** *पु०* पति, प्रभु। *स्त्री०* लाज, इज्जत। **-पानी** *पु०* प्रतिष्ठा।

**पत** 'पत्ता' का सामासिक रूप। **-झड़** *स्त्री०* पतझड़।

**पतई** *स्त्री०* पत्ती, पल्लव।

**पतकहा** *पु०* छपटा।

**पतझर** *स्त्री०* वह ऋतु, जिसमें वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं, माघ और फागुन का महीना; अवनति-काल।

**पतर** *पु०* लोहे का पतला बन्न, पतली चादर।

**पतरउला** *पु०* महुआ और बरगद के पत्तों को बाँस की सींक से गाँथ कर तैयार किया गया भोजन का पात्र, पत्तल।

**पतरका** *वि०* पतला शरीर वाला।

**पतरकी** *स्त्री०* पतली शरीर वाली।

**पतरखा** *पु०* झण्डा।

**पतरा** *पु०* पंचांग।

**पतराइल** *अक०* पतला होना।

**पतरावल** *सक०* पतला करना; फैलाना।

**पतराह** *वि०* पतले-जैसा, पतला।

**पतरी** *स्त्री०* चिट्ठी; पत्तल; दुबली-पतली स्त्री। *उदा०* 'पतरी मउगी पतासी, हँड़िया उजाड़े बासी'।

**पतरेंगा** *स्त्री०* हरे रंग की एक सुन्दर चिड़िया।
**पतलचट्ट** *पु०* अधिक भोजन करने वाला व्यक्ति।
**पतला** *वि०* जो मोटा न हो।
**पतलार** *पु०* एक घास।
**पतलुकवा** *वि०* पत्तों के बीच छिपा हुआ।
**पतलून** *पु०* [अं० पैंटलून] एक प्रकार का पायजामा।
**पतलो** *पु०* सरपत या उसकी पत्ती।
**पतवार** *पु०* नाव खेने का डण्डा।
**पतहर** *पु०* सरकण्डे या ईख का पत्ता।
**पतहरल** *अक०* पतहर के समान फसल का बढ़ना।
**पता** *पु०* [सं० प्रत्यय] ठिकाना, चिट्ठी पर लिखा हुआ पाने वाले का नाम और वास-स्थान।
**पताई** *स्त्री०* पत्तों का ढेर।
**पताका** *स्त्री०* [सं०] झण्डा, ध्वज।
**पताकी** *वि०* पताका वाला।
**पताभ** *पु०* लकड़ी की दो पट्टियों या बीटों को जोड़ने में किनारे की लकड़ी को कुछ छीलकर पतली बनाने की स्थिति।
**पलाभ** *पु०* सोमेश्वर पहाड़ी पर पाया जाने वाला एक प्रकार का पेड़।
**पतार** *पु०* जंगल।
**पताल** *पु०* पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में एक, पाताल।
**पति** *स्त्री०* साख, इज्जत। *पु०* [सं०] ब्याही औरत का शौहर, भर्ता। **-कामा** *स्त्री०* पति चाहने वाली स्त्री। **-देवा** *स्त्री०* पतिव्रता स्त्री। **-धर्म** *पु०* पति के प्रति स्त्री का कर्तव्य। **-भगति** *स्त्री०* पति की तन-मन से सेवा। **-वर्ता** *स्त्री०* पतिव्रता। **-सेवा** *स्त्री०* पतिभक्ति।
**पतिआ** *स्त्री०* पाप-कर्म के बाद प्रायश्चित्त के लिए किसी पण्डित से लिखाया व्यवस्था-पत्र।
**पतिआइल** *सक०* विश्वास करना, ठीक मानना।
**पतिआर** *पु०* विश्वास, प्रतीति।
**पतित** *वि०* नीच, कुकर्मी, अधम। **-पावन** *वि०* पतितों को पवित्र करने वाला।
**पतिनी** *स्त्री०* पत्नी।
**पतिबरता** *स्त्री०* पति-भक्ति में लीन।
**पतिया** *स्त्री०* पत्री, चिट्ठी। *उदा०* 'पतिया हो तो हर कोई बाँचे भाग न बाँचे कोय'—शैलेन्द्र।
**पतियाइल** *सक०* विश्वास करना।
**पतिला** *पु०* मिट्टी की छोटी हाँड़ी।
**पतिवंती** *वि०* स्त्री० सधवा।
**पतिवती** *वि०* दे० 'पतिवंती'।
**पतिसार** *पु०* बादशाह।
**पतील** *वि०* बारीक, महीन।
**पतीली** *स्त्री०* डेगची, बटलोई।
**पतुकी** *स्त्री०* छोटी हाँड़ी। *उदा०* 'पतुकी में एतना बऽ हँडिया में केतना'।
**पतुरिआ** *स्त्री०* वेश्या।
**पतुहा** *पु०* अनाज का ऐसा फल, जिसमें दाना न हो।
**पतुही** *स्त्री०* अपुष्ट दानों वाली मटर की फली।
**पतोह** *स्त्री०* बेटे की पत्नी। *उदा०* 'पतोह सरम के, बेटी करम के'।
**पत्तर** *पु०* लोहे का पतला चदरा।
**पत्तल** *पु०* भोजन करने में प्रयुक्त पत्ता। *उदा०* 'पत्तल में कुछ ना, लछमीनरायन'।
**पत्ता** *पु०* पौधे से निकली पत्तियाँ।
**पत्ती** *स्त्री०* छोटा पत्ता।
**पत्थ** *पु०* पथ्य।

**पत्थर** *पु०* पृथ्वी का कड़ा स्तर, टुकड़ा। **-पानी** *पु०* आँधी-पानी। **-बाज** *वि०* पत्थर चलाकर मारने वाला। **-पड़ल** *मुहा०* मिट जाना।

**पत्नी** *स्त्री०* भार्या, जोरू।

**पत्यारा** *पु०* पतियारा।

**पत्र** *पु०* [सं०] पत्ता, चिट्ठी, कागज। **-कार** *पु०* सम्पादक, रिपोर्टर, लेखक। **-कारी** *स्त्री०* पत्रकार का पेशा।

**पत्रा** *पु०* पंचांग।

**पत्राचार** *पु०* लिखा-पढ़ी।

**पत्रिका** *स्त्री०* चिट्ठी, साप्ताहिक पत्र।

**पत्री** *स्त्री०* चिट्ठी।

**पथ** *पु०* रोगी को दिया जाने वाला भोजन; रास्ता।

**पथर** *पु०* [सं० प्रस्तर:] पत्थर। *उदा०* 'पथर पसीजेला, काठ ना।'

**पथरल** *सक०* किसी हथियार को पत्थर पर रगड़कर तेज करना।

**पथराइल** *अक०* अत्यन्त कड़ा हो जाना।

**पथरी** *स्त्री०* मूत्राशय में मैल के जमने से बनी एक पत्थर-सी गोली; एक प्रकार की मछली।

**पथरौर** *पु०* गोंइठा या उपली पाथने की जगह।

**पथल** *पु०* पत्थर; ओला।

**पथलुटी** *स्त्री०* पत्थर की कटोरी।

**पथार** *पु०* धूप में सुखाने के लिए पसारा हुआ अन्न; ढेर, कतार।

**पथारी** *स्त्री०* फसल काटने के बाद सूखने के लिए खेत में छोड़े गए डण्ठल।

**पथिया** *स्त्री०* कुआँ खोदने का एक औजार, ओड़ैसा।

**पथेरा** *पु०* ईट पाथने वाला।

**पद** *पु०* दर्जा, ओहदा; भजन, गीत, कविता की पंक्ति, छन्द; चरण, उचित बात।

**पदक** *पु०* तमगा।

**पदना** *पु०* अधिक पादने वाला, एक गाली।

**पदरथ** *वि०* दुर्लभ, बहुमूल्य वस्तु।

**पदवना** *पु०* एक प्रकार का कीड़ा, जो दबाने पर पादने जैसी आवाज निकालता है।

**पदवी** *स्त्री०* [सं०] उपाधि, ओहदा, पद।

**पदावल** *सक०* किसी को बहुत परेशान करना।

**पदुआ** *वि०* पादते रहने वाला; एक गाली।

**पदुम काठ** *पु०* एक प्रकार की वनौषधि।

**पदोड़ा** *वि०* जो बहुत पादे; कायर।

**पदौना** *वि०* पदाने वाला।

**पधारल** *अक०* किसी का शुभागमन।

**पधोरल** *सक०* खाना (व्यंग्यार्थक)।

**पन** *पु०* अवस्था, जीवन-काल के चार विभाजनों में प्रत्येक।

**पनकल** *अक०* कटे पेड़-पौधे से नया पत्ता निकलना।

**पनका** *पु०* कटे पौधे की जड़ से निकली कोंपल; ठूँठ पौधे से निकलने वाला नया पत्ता।

**पनकुकरी** *स्त्री०* आकाश में बादल के छोटे-छोटे टुकड़े, जो एक-दूसरे से सटे रहते हैं।

**पनकोरा नरियर** *पु०* नारियल का जलयुक्त फल।

**पनखउका** *पु०* अधिक पान खाने वाला।

**पनखरा** *पु०* वर्षाऋतु में पानी में उगने वाली घास।

**पनखा** दे० 'पनका'।

**पनगेडा** *पु०* गन्ने की पहली सिंचाई।

**पनघट** *पु०* वह स्थान, जहाँ से लोग पानी भरते हैं।

**पनचक्की** *स्त्री०* पानी से चलने वाली चक्की।

**पनचट** *पु०* कै-दस्त की बीमारी, जिसमें बहुत प्यास लगती है।
**पनछंदा** *पु०* सिंचाई करने वाला पुरुष।
**पनछाही** *स्त्री०* एक प्रकार की कोमल ईख।
**पनछुआ** *पु०* पैखाने के बाद पानी से गन्दा साफ करने का कार्य।
**पनछुछुर** *वि०* पानी जैसा स्वाद वाला।
**पनछोर** *पु०* उबहन में जुड़ी हुई छोटी रस्सी, जिसमें फन्दा लगा रहता है।
**पनजंजल** *वि०* पानी का घड़ा।
**पनजीरी** *स्त्री०* धनिये को भून-कूट और चीनी डालकर तैयार भोग।
**पनटकिया** *वि०* पाँच रुपये का नोट।
**पनटिटोर** *वि०* ऐसा घोल, जो बहुत पतला हो गया हो (पानी के कारण)।
**पनडठिया** *पु०* चोटी पत्ती वाली तम्बाकू।
**पनडब्बा** *पु०* पान रखने का डिब्बा।
**पनडाली** *स्त्री०* पान रखने की डाली।
**पनडुब्बा** *पु०* पानी में डूब जाने वाला खेत; पानी में डूबकर मरा हुआ प्रेत।
**पनडुब्बी** *स्त्री०* पानी में डुबकी लगाने वाली चिड़िया; एक प्रकार का पानी वाला जहाज, जो समुन्दर के पानी में डूबकर चलता है।
**पनथुथुर** *पु०* जलोदर रोग।
**पनदँवरी** *स्त्री०* बैलों के घूमने के लिए बनाया गया गड्ढा।
**पनदउरी** *स्त्री०* खेत की सिंचाई में व्यवहृत टोकड़ी।
**पनदहन** *पु०* पानी लगे खेत में हल और हेंगा चलाने की क्रिया।
**पनदाह** *पु०* पानी लगे खेत की फसल में हल चलाने की क्रिया।
**पनपल** *अक०* किसी पौधे में टहनी निकलना; फिर से हरा-भरा होना।
**पनपा** *पु०* किसी कटे या सूखे पेड़-पौधे से निकली टहनी।
**पनपियाई** *स्त्री०* खेत में काम करने वाले मजदूरों का जलपान।
**पनपियाव** *पु०* प्रात:कालीन कलेवा।
**पनबट्टा** *पु०* पानदान।
**पनबदरा** *पु०* बादल, जो धूप रहते बरसता है।
**पनबोरा** *पु०* प्रात:काल का इन्द्रधनुष (ऐसा विश्वास है कि इसके निकलने से वर्षा नहीं होती है)।
**पनभरा** *पु०* वह मजदूर, जो पानी भरने का काम करता है।
**पनभार** *पु०* अनाज का पौधा, जो पानी की अधिकता से खराब हो गया हो।
**पनमार** *पु०* वह जमीन, जिसका पानी सुखा दिया गया हो।
**पनरहिया** *वि०* पन्द्रह दिन की अवधि।
**पनरोह** *पु०* पानी निकाले की नाली। *उदा०* 'पनरोह के कीड़ा, बाहर निकलला पर जाला'।
**पनलगउली** *स्त्री०* वर के प्रणाम करने पर दिया जाने वाला द्रव्य या वस्तु।
**पनसचा** *पु०* वह स्थान, जहाँ कुआँ खोदने पर भूमि में नमी आती है।
**पनसाला** *पु०* वह स्थान, जहाँ लोगों को धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है।
**पनसाह** *पु०* चेचक का एक भेद; बावग (छींट कर बोया जाने वाला धान)।
**पनसाही** *स्त्री०* फाल्गुन-चैत में तैयार होने वाला ऊँख का एक प्रकार।
**पनसुहिया** *स्त्री०* डेंगी का एक प्रकार; चेचक का एक भेद।
**पनसेरा** *पु०* पाँच सेर की तौल।
**पनसोखा** *पु०* इन्द्रधनुष।

**पनसोह** *वि०* पानी-सा स्वाद वाला।
**पनहा** *पु०* कपड़े की चौड़ाई।
**पनहगर** *वि०* कपड़े की अधिक चौड़ाई का होना।
**पनहा** *पु०* किसी वस्तु की चौड़ाई; चोरी का माल लौटाने के लिए दी गई राशि।
**पनही** *स्त्री०* जूता।
**पनहेरी** *पु०* पान बेचने वाला, तमोली।
**पनारा** *पु०* पन्दारा, नाबदान।
**पनाह** *पु०* रक्षा, शरण, आश्रय।
**पनिआ** *वि०* पानी में रहने वाला पक्षी; अधिक पानी में उपजने वाला धान।
**पनिआइल** *अक०* मुँह में पानी भर आना; हिम्मत बढ़ाना।
**पनिगर** *वि०* जिसमें अधिक पानी मिला हो (भोज्य पदार्थ)।
**पनिघट** *पु०* वह स्थान, जहाँ से लोग पानी ले जाते हों।
**पनिया साँप** *पु०* साँप, जो विषहीन हो।
**पनिवट** *पु०* सिंचाई का कर।
**पनिहर** *पु०* पानी बरसने से उत्पन्न स्थिति या मौसम; पानी जाने का रास्ता।
**पनिहाव** *पु०* कुँए से अधिक पानी निकलने या होने की स्थिति।
**पनिहारिन** *स्त्री०* पानी भरने वाली स्त्री।
**पनुआँ** *पु०* पानी मिला ऊँख का रस।
**पनेढ़ी** *पु०* पान बेचने वाला।
**पन्ना** *पु०* पृष्ठ; एक रत्नविशेष।
**पन्नी** *स्त्री०* कागज के समान रँगा, अबरख आदि के पत्तर।
**पपनी** *स्त्री०* आँख की पलक।
**पपरा** *पु०* रोटी की पतली सतह; लकड़ी का सूखा छिलका, पपड़ी।
**पपरी** *स्त्री०* हेंगाये हुए खेत में पानी पड़ने से उस पर बनी पतली पर्त; पपड़ी।
**पपिस्टी** *वि०* पापी।
**पपिहरा** *पु०* एक पक्षी, पपीहा।
**पपीता** *पु०* एक फल; फलदार वृक्ष।
**पबनी** *स्त्री०* त्यौहार, पर्व।
**पमड़ी** *स्त्री०* गाँजा का एक प्रकार।
**पम्ह** *पु०* मूँछ निकलने के समय के पतले-पतले बाल।
**पम्हावल** *अक०* जोते-हेंगाये खेत में नमी आने के लिए छोड़ देना।
**पम्ही** *स्त्री०* धान की महीन भूसी।
**पय** *पु०* ऐब, अवगुण।
**पयमाल** *पु०* परेशान, हैरान, दुर्दशाग्रस्त।
**पयान** *पु०* यात्रा, प्रस्थान।
**पयाम** *पु०* [फा०] पैगाम, सन्देश।
**पयार** *पु०* पयाल।
**परंच** *अव्य०* और भी, लेकिन, तो भी।
**परंतु** *अव्य०* किन्तु, मगर।
**परंपरा** *स्त्री०* प्रथा, वंश।
**पर** *पु०* पाँखा-पंख; दूसरा।
**परई** *स्त्री०* काठ, जिसका उपयोग रसोई में होता है; मिट्टी का पात्र।
**परकरमा** *पु०* परिक्रमा।
**परकल** *वि०* आदी। *उदा०* 'परकल पांडे घी खिंचड़ी'।
**परकार** *अव्य०* विविध प्रकार का भोज्य-पदार्थ।
**परकिरती** *स्त्री०* प्रकृति; स्वभाव।
**परकोटा** *पु०* गढ़ की रक्षा हेतु उठाई गई दीवार।
**परख** *स्त्री०* परीक्षा।
**परखचा** *पु०* टुकड़ा, खण्ड।
**परखल** *सक०* परीक्षण करना।
**परखवैया** *पु०* परखने वाला।
**परग** *पु०* डग, कदम।
**परगट** *वि०* प्रत्यक्ष स्पष्ट। *उदा०* 'परगट माया मोह जब देखी तब लागे छोह'।

**परगना** *पु०* [फा०] कर-वसूली की दृष्टि से निश्चिन्त अनेक गाँवों का समूह।

**परगनाधीश** *पु०* परगने की देख-रेख करने वाला प्रधान अधिकारी।

**परगना-हाकिम** *पु०* [अ०] परगनाधीश।

**परगसल** *अक०* प्रकाशित होना।

**परगाढ़** *वि०* प्रगाढ़।

**परगार** *पु०* [फा०] वृत्त की परिधि बनाने वाला एक आला।

**परगास** *पु०* प्रकाश।

**परघट** *वि०* दे० 'परगट'।

**परचंड** *वि०* प्रचण्ड।

**परचत** *स्त्री०* जान-पहचान।

**परचल** *अक०* हिल-मिल जाना, पहचाना जाना।

**परचवाल** *वि०* परिचित व्यक्ति।

**परचा** *पु०* [फा०] कागज का टुकड़ा; अंश; कागज का वह टुकड़ा, जिस पर जमीन आदि का ब्यौरा रहता है।

**परचार** *पु०* प्रचार।

**परचित** *वि०* जिससे पहले की जान-पहचान हो।

**परचून** *स्त्री०* खुदरा सामग्री। *पु०* खाद्य, सामग्री।

**परचे** *पु०* परिचय।

**परछत्ती** *स्त्री०* कमरे में निर्मित सामान रखने का पाटन, हलका छप्पर, हलकी छाजन।

**परछन** *पु०* [सं० परि+अर्चनम्] वर की आरती उतारने की विधि, एक लोकाचार, जिसमें औरतें वर को दही, अक्षत का टीका लगाती हैं तथा मूसल, बट्टा उस पर घुमाती हैं।

**परछल** *सक०* परछन करना।

**परछा** *पु०* अँधोटी बाँधने का कपड़ा; कड़ाही।

**परछाँई** *स्त्री०* [सं० प्रतिच्छाया] प्रतिच्छाया, छायाकृति।

**परछालल** *सक०* प्रक्षालन करना, धोना।

**परछौनी** *पु०* परछन पर दिया गया उपहार।

**परजा** *पु०* रैयत, आसामी; प्रजा।

**परजात** *पु०* दूसरी जाति का आदमी।

**परत** *पु०* तह, स्तर, छिलका।

**परतच्छ** *वि०* सामने, सम्मुख; स्पष्ट।

**परतर** *पु०* उपमा, समता।

**परतवाई** *पु०* गन्दा काम करने वाला।

**परतवाच** *पु०* निकृष्ट काम, गन्दा काम।

**परता** *पु०* किसी वस्तु की नफा के साथ लागत मूल्य की प्राप्ति।

**परताप** *पु०* तेज, पौरुष, बल, प्रभाव, पराक्रम।

**परतारल** *सक०* किसी वस्तु को बराबर फैलाना; अनाज पसारना।

**परतिआइल** *अक०* परती पड़ा रहना, आबाद नहीं होना।

**परतिआवल** *सक०* अनुभव से जानना।

**परतिग्या** *पु०* प्रण, प्रतिज्ञा।

**परतिसठा** *पु०* मान, मर्यादा, गौरव।

**परती** *स्त्री०* वह भूमि, जो जोती-बोई न गई हो।

**परतीत** *पु०* विश्वास, भरोसा।

**परथन** *पु०* रोटी बनाते समय गीले आटे पर डाला जाने वाला सूखा आटा।

**परथा** *पु०* चलन, रीति-रिवाज।

**परदछिना** *स्त्री०* परिक्रमा की विधि, प्रदक्षिणा।

**परदा** *पु०* आवरण, चिक; घर के भीतर रहने की स्थिति।

**परदा** *पु०* [फा०] टाट, आड़, ओट। **-दार** *वि०* परदा करने वाला, छिपाने वाला। **-नसीन** *वि०* जो परदे में रहे। **-खोलल** *मुहा०* रहस्य की बात प्रकट करना। **-डालल** *मुहा०* छिपाना।

**परदादा** *पु०* दादा का पिता, प्रपितामह।
**परदेस** *पु०* अन्य देश, विदेश। *उदा०* 'परदेस कलेस नरेसन को'।
**परदोस** *पु०* प्रदोष।
**परधान** *वि०* प्रमुख; सरदार; परिधान।
**परन** *पु०* प्रतिज्ञा, प्रण।
**परना** *पु०* छठ में प्रातः व्रती का प्रथम भोजन, पारणा।
**परनाती** *पु०* नाती या नातिन का पुत्र।
**परनाना** *पु०* नाना का पिता।
**परनाम** *पु०* नमस्कार, प्रणाम।
**परनारी** *स्त्री०* दूसरे की नारी। *उदा०* 'परनारी पैनी छुरी तीन तरह से खाय दरब लेई जीवन हरे मुए नरक में जाय'।
**परनाला** *पु०* मोरी, नादान, वह बड़ी नाली, जिससे गन्दा जल बहता है।
**परनाली** *स्त्री०* छोटा परनाला।
**परपराइल** *अक०* मिर्च के कटने या घाव पर लगने से जलन का महसूस होना।
**परपाजा** *पु०* दे० 'परदादा'।
**परपाटी** *स्त्री०* रीति, प्रथा, परिपाटी।
**परपोता** *पु०* [सं० प्रपौत्रः] पोते का पुत्र।
**परबंध** *पु०* प्रबन्ध।
**परब** *पु०* व्रत, पर्व।
**परबत** *पु०* पहाड़, पर्वत। *उदा०* 'परबत के राई करे, राई परबत होई'।
**परबल** *वि०* मजबूत, प्रबल।
**परबस** *वि०* दूसरे के वश में पड़ने की स्थिति, पराधीन।
**परबी** *स्त्री०* पर्व-त्यौहार के अवसर पर दिया जाने वाला इनाम।
**परबुधी** *वि०* दूसरे के सिखाने पर काम करने वाला।
**परबेस** *अक०* शुरुआत, प्रवेश।
**परबोध** *पु०* प्रबोध।
**परबोधल** *सक०* प्रबुद्ध करना, जगाना; समझाना।
**परभा** *स्त्री०* प्रभा।
**परभात** *पु०* प्रभात।
**परभाती** *स्त्री०* प्रभाती।
**परभाव** *पु०* असर, शक्ति; महिमा।
**परभू** *पु०* ईश्वर; स्वामी, मालिक; प्रभु।
**परभूता** *पु०* काबू, शक्ति; प्रभुता।
**परम** *वि०* [सं०] उत्कृष्ट, अत्यन्त। **-गति** *स्त्री०* मुक्ति। **-तत्त्व** *पु०* ब्रह्म। **-पद** *पु०* मुक्ति। **-हंस** *पु०* संन्यासी, परमेश्वर।
**परमनेंट** *पु०* [अं०] स्थायी।
**परमल** *पु०* भूजा, विशेष प्रकार से भूना हुआ अधपका अन्न।
**परमहंस** *वि०* वह संन्यासी, जो सभी प्रकार के भेद-भाव को त्याग चुका है।
**परमातमा** *पु०* ईश्वर, परमात्मा।
**परमान** *पु०* सबूत; सीमा, प्रमाण।
**परमारथ** *पु०* दूसरों की भलाई के लिए किया गया कार्य, परमार्थ।
**परमीन** *पु०* जो सगोत्री या नातेदार नहीं हो ऐसे आदमी।
**परमेसर** *पु०* ईश्वर, परमेश्वर।
**परमेह** *पु०* एक रोग, जिसमें बार-बार पेशाब लगता है, प्रमेह।
**परल** *अक०* लेटे रहना; बीमार होना।
**परलय** *पु०* प्रलय।
**परलाया** *वि०* बिना कोई काम किये लेटे रहने वाला।
**परलोक** *पु०* दूसरा लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ।
**परवरिस** *पु०* जीवन-निर्वाह, गुजारा, पालन-पोषण।
**परवल** *पु०* एक प्रकार की सब्जी, परवर।
**परवा** *पु०* बड़ा ढकना, कोसा।
**परवाना** *पु०* आदेश-पत्र, आज्ञा-पत्र; नोटिस।

**परवाह** *पु०* चिन्ता, फिक्र।
**परसंग** *पु०* निकटता, समागम; अर्थ की संगति।
**परसंसा** *स्त्री०* बड़ाई, प्रशंसा।
**परसों** *वि०* पहले या बाद का तीसरा दिन।
**परस** *वि०* स्पर्श।
**परसउआँ** *वि०* परसों।
**परसउती** *स्त्री०* ऐसी स्त्री, जिसे हाल में बच्चा पैदा हुआ हो।
**परसताव** *पु०* विचारार्थ या कार्यार्थ कही गई कोई बात; किसी सभा द्वारा पारित कोई विचार।
**परसन** *पु०* खुश, प्रसन्न; छूने के भाव।
**परसल** *अक०* फैलाना, छितराना, लता का चारों तरफ बढ़ जाना।
**परसपर** *क्रि०वि०* आपस में एक-दूसरे के प्रति प्रसंग।
**परसाद** *पु०* देवताओं पर चढ़ाया हुआ पदार्थ।
**परसादी** *पु०* देवताओं को चढ़ाया गया नैवेद्य।
**परसाल** *वि०* विगत वर्ष।
**परसिध** *वि०* मशहूर, विख्यात।
**परसुराम** *पु०* जमदग्नि ऋषि के पुत्र, परशुराम।
**परसूत** *पु०* प्रसव के बाद जच्चा को होने वाला एक रोग, जिसमें हाथ-पैर में जलन होती है।
**परसों** *अव्य०* पिछले दिन से एक दिन पहले, अगले दिन से एक दिन आगे।
**परहथ** *अव्य०* दूसरे के हाथ का काम; जो काम दूसरे से कराना है। *उदा०* 'परहथ बनिज साझ के खेती बे बर देखे ब्याहे बेटी। घरो के जे बिगाड़े थाती ई चारो मिल पीटे छाती'।
**परहा** *पु०* नदी के पार का निवासी।
**परहेज** *पु०* स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तुओं से या दुर्गुणों से बचने का कार्य।
**पराँत ( परती )** *पु०* बेकार पड़ी भूमि; बिना जोता हुआ खेत।
**पराइ** *वि०* दूसरे की स्त्री।
**पराइल** *अक०* भागना। *उदा०* 'मरले गुण नात पराइले गुण'।
**पराकरम** *पु०* शक्ति, पराक्रम।
**पराछित** *पु०* प्रायश्चित्त।
**पराछूत** *पु०* पाप का मूर्त रूप; पापी।
**पराजा** *पु०* परपितामह, प्रपितामह।
**पराठा** *पु०* तवा पर कम घी में सेंककर तैयार की गई परतदार पूड़ी।
**परात** *पु०* बड़ी थाली; सबेरा, प्रात:काल।
**पराता** *पु०* वह भूमि, जिसका रैयत उसे छोड़ कर भाग गया हो।
**पराती** *स्त्री०* प्रात:काल में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत।
**पराधीन** *वि०* गुलामी। *उदा०* 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं'।
**परान** *पु०* शरीर में जीवन प्रदान करने वाली वायु, जीवनी शक्ति।
**परान-पन** *वि०* जीवन-पर्यन्त प्रतिज्ञा।
**परानी** *स्त्री०* जीवधारी, प्राणी।
**परापित** *स्त्री०* लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि।
**पराय** *वि०* दूसरा, अन्य, पराया। *उदा०* 'पराय के आस, रोज उपवास'।
**परालबध** *पु०* भाग्य, प्रारब्ध।
**परास** *पु०* पलाश।
**परास** *वि०* पराजित; आतंकित।
**परासिन** *पु०* सोमेश्वर पहाड़ पर पाया जाने वाला एक वृक्ष।
**परास्त** दे० 'परास'।
**पराहि** *स्त्री०* भगदड़, भागने की क्रिया।

**परिआइल** *सक०* साँड़ या भैंसे से गाय-भैंस का पालखाना।
**परिआर** *वि०* गत वर्ष के पूर्व का वर्ष।
**परिआवल** *अक०* भैंसा या साँड़ द्वारा गाय या भैंस का समागम कराना।
**परिकल** *अक०* आदी होना। *उदा०* 'परिकल बिलाई खंभा नोचे'।
**परिच्छा** *पु०* परीक्षा, जाँच।
**परिछन** *पु०* दे० 'परछन'।
**परिछावन** *पु०* परिछने का कार्य या भाव; परिछावन के समय बाजा वाला वर या कन्या की सवारी ढोने वाले को दी गई राशि।
**परिया** *पु०* फार।
**परियाठा** *पु०* ठीहा।
**परियार** *पु०* आने वाले या बीते साल का दूसरा वर्ष।
**परिवा** *स्त्री०* पक्ष की प्रथम तिथि।
**परिवार** *स्त्री०* कुल, वंश; माता-पिता; पुत्र-पुत्रवधू, कुटुम्ब, बाल-बच्चा का समूह।
**परिसरम** *पु०* श्रम, परिश्रम।
**परिहथ** *पु०* हल के पीछे लगे डण्डे की मूँठ, जिसे जोतने में हलवाह पकड़े रहता है।
**परी** *स्त्री०* पाँखवाली सुन्दर स्त्री, अप्सरा।
**परीखल** *सक०* परखना, जाँचना।
**परीछा** *स्त्री०* परीक्षा।
**परीनाम** *पु०* [सं०] परिणाम।
**परीधान** *पु०* [सं०] परिधान।
**परीवार** *पु०* [सं०] परिवार।
**परुआ** *वि०* काम करने के समय लेटने या बैठ जाने वाला (बैल)। *कहा०* 'परुआ बैलका हेव के आशा'।
**परुई** *स्त्री०* भूँजसार से सामने की जगह जहाँ अन्न गिरता है; नाँद (अनाज भूनने हेतु)।
**परे** *अ०* उस ओर; और आगे; बहुत दूर; ऊपर।
**परेआ** *वि०* पराया, अन्य, दूसरा।
**परेआग** *पु०* प्रयाग।
**परेई** *स्त्री०* पण्डुकी, कबूतरी।
**परेखल** *सक०* पहचानना, किसी व्यक्ति को भली-भाँति समझना।
**परेठ** *पु०* ठीहा।
**परेड** *पु०* [अं० पैरेड] कवायद, ड्रिल।
**परेत** *पु०* भूत, प्रेत; घृणास्पद कार्य करने वाला व्यक्ति।
**परेता** *पु०* सूत लपेटने का आला।
**परेम** *पु०* स्नेह, प्यार, अनुराग।
**परेवा** *पु०* कबूतर, पक्षी।
**परेह** *पु०* मसालेदार रस, बेसन की पतली कढ़ी।
**परों** *पु०* कल के बाद का दूसरा दिन।
**परोजन** *पु०* काम; मतलब; प्रयोजन।
**परोना** *सक०* पिरोना।
**परोपकार** *स्त्री०* [सं०] दूसरे की भलाई।
**परोपकारी** *वि०* [सं०] दूसरे की भलाई करने वाला।
**परोपदेस** *पु०* [सं०] दूसरे को उपदेश देना।
**परोर** *पु०* लता वाली एक सब्जी परवल।
**परोरा** *पु०* दे० 'परोर'।
**परोस** *पु०* घर के निकट का घर या बस्ती।
**परोसा** *पु०* किसी के खाने के लिए थाली में सजाया गया भोज्य-पदार्थ।
**परोसिआ** *पु०* पड़ोस में रहने वाला। *उदा०* 'परोसिया के बेटा खाईं नाव ना धरे के'।
**परौठा** *पु०* दे० 'पराठा'।
**पलंग** *पु०* बड़ी खाट।
**पलंगड़ी** *स्त्री०* चारपाई; पलंग।
**पलंगिया** *स्त्री०* खाट।
**पलंजन** *पु०* भारी-भरकम गठन या आकार में होने की स्थिति; चापाकल का वह हिस्सा, जिससे पानी खींचा जाता है।

**पलंजर** *पु०* ताना (बुनाई का)।
**पल** *पु०* भारतीय ज्योतिष् में समय का एक मापदण्ड।
**पलई** *स्त्री०* बैलों के कन्धे के ऊपर के पालो का चौड़ा अंश।
**पलक** *पु०* आँख के ऊपर का ढक्कन; क्षण, निमिष।
**पलङ** *पु०* बड़े आकार की खाट या पलंग।
**पलटन** *पु०* [अं० प्लैटून] सेना का एक छोटा दल; लोगों का समूह। *उदा०* 'पलटन में पलटनमारवा रहेला'।
**पलटनिहा** *पु०* सेना का सिपाही, सैनिक।
**पलटल** *अक०* उलटल, बदलना; लौटना।
**पलटा** *पु०* बदला, प्रतिकार; हेंगौनी।
**पलटावल** *सक०* लौटना, फेरना, वापस करना, उलटना।
**पलटूदास** *पु०* भोजपुरी के एक सन्त कवि।
**पलड़ा** *पु०* तराजू का पल्ला, पलड़ा।
**पलथा** *पु०* गिरने या उलटने का भाव या कार्य। **-खायल** *मुहा०* उलट जाना या दुर्घटनाग्रस्त हो जाना।
**पलथी** *स्त्री०* एक पैर पर दूसरे को चढ़ाकर बैठने का ढंग; एक आसन।
**पलना** *पु०* बच्चों को झुलाने के लिए हिंडोला या झूला।
**पलरल** *अक०* गीली वस्तु का फैल जाना, विस्तृत होना, फैल जाना।
**पलरा** *पु०* तराजू का पल्ला।
**पलवा** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**पलवार** *पु०* एक हल्की नाव।
**पलस्तर** *पु०* [अं० पलास्टर] दीवाल को चूने, मिट्टी के गारे, सुर्खी-छूना या सीमेन्ट बालू से पोतने का काम; शरीर के टूटे अंग पर खली की पट्टी लगाने का काम।
**पलहा** *पु०* काम करने की बारी; कोंपल।
**पलहारी** *स्त्री०* खेत में काट कर छोड़ी हुई फसल।
**पल्हड़** *पु०* किसी फसल के अत्यधिक बढ़ने की स्थिति।
**पलांकी** *स्त्री०* एक प्रकार का साग।
**पलानी** *स्त्री०* दुपलिया छप्पर।
**पलिवार** दे० 'परिवार'।
**पलिहर** *पु०* रबी की फसल के लिए तैयार किया जाने वाला खेत; चौमास।
**पलीत** *वि०* दुष्ट, धूर्त, गन्दा। *पु०* भूत-प्रेत।
**पलीता** *पु०* तोप या बन्दूक को चालित करने का मसाला; आग लगाने की बत्ती।
**पलीती** *स्त्री०* छोटा पतीला।
**पलीद** *वि०* [फा०] अपवित्र, दुष्ट। *पु०* भूत-प्रेत।
**पलुआ** *वि०* वह आम का फल, जिसे गर्मी पहुँचाकर पकाया गया हो; पालतू।
**पले** *क्रि०वि०* पास में; पल्ले में।
**पलेट** *स्त्री०* [अं०] पट्टी; कमीज, कुरते में भीतर की ओर लगाई जाने वाली पट्टी।
**पलेटन** *पु०* [अं] मुद्रण यंत्र का वह भाग, जिसके दबाव से अक्षर छपते हैं।
**पलोटल** *सक०* पैर दबाना, *अक०* लोट-पोट करना, छटपटाना। *उदा०* 'बैठि पलोटत राधिका पायन'।
**पल्लव** *पु०* [सं०] नया कोमल पत्ता; विस्तार।
**पल्ला** *पु०* तराजू का पलड़ा; किवाड़, रजाई का आधा हिस्सा; कपड़े की छोर, दामन; दुपलिया टोपी का आधा हिस्सा; अन्न बाँधकर ले जाने का टाट या गोनी। **-दार** *पु०* गल्ला ढने या तौलने वाला। **-दारी** *स्त्री०* पल्लेदार का काम। **-पकड़ल** *मुहा०* सहारा लेना। **-पसारल** *मुहा०* किसी से कुछ माँगना।

**पल्लि** *स्त्री०* [सं०] छोटा गाँव, पुरा, टोला; कुटी।
**पल्लो** *पु०* नया निकला पत्ता, किसलय, पल्लव।
**पवँरिया** *पु०* पवँरिआ।
**पवटल** *अक०* कीड़े आदि का एक साथ पूरी तरह से फैल जाना, धीरे-धीरे बढ़ना।
**पवटा** *पु०* मड़ाई करने के लिए फैलाया गया सूखे अनाज का बोझ।
**पवदर** *पु०* मोट या पुरवट के बैलों के चलने के लिए बना ढालू रास्ता।
**पवदान** *पु०* पैर रखने का फलक।
**पवन** *पु०* [सं०] हवा; वायु के अधिष्ठाता देव। **-कुमार** *पु०* हनुमान। **-चक्की** *स्त्री०* हवा की शक्ति से चलने वाली चक्की। **-सूत** *पु०* हनुमान।
**पवनार** *पु०* पानी बहने का नाला।
**पवनिहार** *पु०* प्राप्तकर्ता।
**पवनी** *स्त्री०* मजदूरी के रूप में केवल अनाज ही लेने वाले मजदूर।
**पवरुख** *पु०* शक्ति, पुरुषत्व।
**पवलगी** *स्त्री०* ब्राह्मणों को प्रणाम करने का काम।
**पवहारी** *पु०* केवल दूध पीकर रहने वाला।
**पवाई** *स्त्री०* पैर का एक जूता या खड़ाऊँ।
**पवावल** *सक०* भोजन कराना; खिलाने के लिए साधुओं द्वारा प्रयुक्त शब्द।
**पवित्तर** *वि०* शुद्ध, निर्मल, निर्दोष।
**पस** *पु०* वह कम उम्र की भैंस, जो अभी ब्यायी नहीं हो, पशु। *कहा०* 'जइसन पस तइसन घास'।
**पस गैबत** *क्रि०वि०* पीठ पीछे; अनुपस्थिति में।
**पसई** *स्त्री०* काटकर खेत में ही पंक्ति फैलाकर छोड़ी हुई फसल।
**पसङ्ग** *पु०* तराजू के पलड़ों को समभार करने के लिए पलड़े की ओर बाँधा गया बोझ।
**पसङी** *स्त्री०* प्रसूता के सौरी गृह में जलने वाली आग, मवेशियों का शारीरिक गठन।
**पसडौर** *पु०* ओसारे के खम्भे पर रखा हुआ शहतीर।
**पसन** *पु०* [फा० पसंद] अच्छी लगने की स्थिति, अभिरुचि।
**पसनी** *स्त्री०* खुरपी।
**पसपति** *पु०* पशुपति।
**पसपानी** *पु०* आलसी, काम में पीछे रहने वाला; वह स्थान, जहाँ की आबोहवा के कारण स्त्रियों में कामुकता अधिक हो।
**पसम** *पु०* [फा० पश्म] नरम ऊन; बाल।
**पसर** *पु०* आधी अँजुरी का नाप।
**पसरा** *पु०* मछली मारने का एक प्रकार का जाल।
**पसरावल** *सक०* [सं० प्रसारणं] पसारने का काम दूसरों से करवाना।
**पसवटल** *सक०* कुदाल के पास से कोड़े हुए खेत के ढेले को फोड़ना।
**पसवावल** *सक०* पसाने का कार्य दूसरे से करवाना।
**पसार** *पु०* किसी वस्तु को धूप में सूखने के लिए रखना।
**पसारल** *सक०* फैलाना।
**पसारा** *पु०* फैलाव, विस्तार।
**पसारी** *पु०* पंसारी।
**पसाव** *पु०* पसावन।
**पसावन** *पु०* पसाने पर प्राप्त पदार्थ।
**पसावल** *अक०* भात से माड़ निकालना; पानी या रस को निथारना। *कहा०* 'कइली धइली हीरा, मांड़ पसवली जीरा'।
**पसाहल** *अक०* धान के बिचड़े को खेत में छितरा देना।

**पसिझल** *अक०* द्रवित होना।
**पसीना** *पु०* स्वेद, श्रमजल।
**पसु** *पु०* पशु।
**पसेना** *पु०* [सं० प्रस्वेदनं] पसीना।
**पसेरी** *स्त्री०* पाँच सेर वजन का बटखरा। *कहा०* 'पक्का पसेरी पाँन सेर'।
**पसेवा** *पु०* परिश्रम।
**पस्त** *वि०* [फा०] हारा हुआ, थका हुआ।
**पह** *पु०* सुबह का समय। **-फाटल** *मुहा०* सुबह की लाली का फैलना।
**पहचनवावल** *सक०* पहचान का कार्य दूसरे से करवाना।
**पहचान** *पु०* चिह्न, निशान।
**पहचानल** *अक०* गुण-दोष से परिचित होना।
**पहटा** *पु०* कुदाल से कोड़ी हुई मिट्टी फेंकना; चपेट।
**पहड़ा** *पु०* गिनती की संख्याओं को गुणित कर तैयार की गई सारिणी, पहाड़ा। **-पढ़ावल** *मुहा०* किसी कार्य में किसी को परेशान कर देना।
**पहड़िया** *पु०* पहाड़ पर रहने वाला, मूल नेपालियों के लिए प्रचलित शब्द।
**पहत** *पु०* फैला हुआ हाथ; करतल।
**पहथ** *पु०* एक हाथ की अंजलि।
**पहपट** *पु०* एक प्रकार का अश्लील गीत, जो होली की उमंग में गाया जाता है।
**पहम** *वि०* [फा० पैहम] महीन; बारीक पूर्ण बनाना।
**पहर** *पु०* तीन घण्टे का समय; प्रहर, याम; बेला।
**पहरा** *पु०* निगरानी, चौकसी, रक्षा; पदाधिकारियों के यहाँ ड्यूटी, तैनात सिपाही।
**पहरुआ** *वि०* पहरा देने वाला।
**पहल** *पु०* कोर, ठोस चीज का समतल किनारा जमी हुई रूई।
**पहलल** *अक०* खेत को कुदाल से समतल बनाना; लकड़ी को छीलकर समतल बनाना।
**पहलवान** *पु०* [फा०] कुश्ती लड़ने वाला; कद-काठी का सुडौल व्यक्ति।
**पहलवानी** *स्त्री०* [फा०] कुश्ती लड़ने का काम।
**पहला** *वि०* आदि में पड़ने वाला, प्रथम, आद्य।
**पहलू** *पु०* [फा०] बगल, पाँजर; बालू।
**पहले** *अ०* आदि में; शुरू में। **-पहल** *अव्य०* सर्वप्रथम।
**पहँसुल** *पु०* हँसुआ।
**पहाड़** *पु०* [सं० पाषाण:] पर्वत; भारी वस्तु, बढ़ा ढेर।
**पहाड़ी** *स्त्री०* छोटा पहाड़; पहाड़ का निवासी।
**पहाव** *पु०* प्रवृत्ति; झुकाव।
**पहिती** *स्त्री०* पकी दाल।
**पहिनावा** *पु०* वेशभूषा।
**पहिया** *पु०* [सं० परिधि:] धुरी पर घूमने वाला चक्का।
**पहिरल** *सक०* वस्त्र या आभूषण धारण करना।
**पहिरवावल** *सक०* पहनाने का काम दूसरे से कराना।
**पहिरावल** *सक०* किसी वस्त्र या आभूषण को पहनाना; एक वस्तु में दूसरे वस्तु को अँटा देना।
**पहिला** *वि०* प्रथम, सर्वप्रथम। *उदा०* 'पहिला मार धरहरिया खाय'।
**पहिले** *अव्य०* सबसे प्रथम; पुराने समय में। *उदा०* 'पहिले भीतर तब देवता पितर'।
**पहिलौठी** *स्त्री०* प्रथम बार बच्चा देने वाली (गाय, भैंस)।
**पहिलौंठा** *वि०* प्रथम बार का पैदा।

**पही** *स्त्री०* तीन वर्षों से कोड़ी-जोती जाने वाली परती भूमि।
**पहुँच** *पु०* कनछी; गति, पकड़।
**पहुँचत** *पु०* पहुँचने की स्थिति।
**पहुँचल** *अक०* एक जगह से चल कर दूसरी जगह पर मौजूद होना।
**पहुँचा** *पु०* कलाई, हाथ की कोहनी के नीचे का भाग।
**पहुँचावल** *सक०* किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना।
**पहुँची** *स्त्री०* कलाई में पहनने का गहना।
**पहुनई** *स्त्री०* पाहुन बनने का भाव; पाहुन की निवास-भूमि।
**पहुना** दे० 'पाहुन' का सम्बोधन। *उदा०* 'पहिला दिन पहुना दोसरा दिन ठेहुना तीसरा दिन केहुना'।
**पहुनाई** दे० 'पहुनई'।
**पहुला** *पु०* शिकारी; जानवरों का पंजा।
**पाँ** *पु०* पैर।
**पाँइ** *पु०* पाँव।
**पाँइता** *पु०* पायताना।
**पाँउ** *पु०* पैर।
**पाँक** *पु०* कीचड़, पंक।
**पाँकी** *स्त्री०* नदी की नई मिट्टी; कीचड़।
**पाँख** *पु०* पंख, पर; कन्धा।
**पाँखुर** *पु०* पंखा।
**पांगल** *सक०* पाँगना, छोटी-छोटी डालियों का काटना।
**पाँच** *वि०* [सं० पञ्चम] चार और एक। *उदा०* 'पाँचो अँगुरी बराबर ना होखे'।
**पाँचर** *पु०* पाँचड़।
**पाँचा** *पु०* पाँच काँटों वाली लग्गी।
**पाँजर** *पु०* बगल; शरीर का पार्श्व भाग।
**पाँजा** *पु०* दोनों हाथों से घेरा हुआ स्थान; पाँजा में अँटने योग्य अन्न का बोझा।
**पाँडो** *पु०* ब्राह्मणों, भूमिहारों और कायस्थों की उपाधि। *उदा०* 'पाँड़े घर बिलइयो भगतिन'।
**पांड़ो** *पु०* पाण्डव।
**पाँत** *पु०* कतार।
**पाँतर** *पु०* निर्जन भूमि-खण्ड।
**पाँती** *स्त्री०* कतार में खड़े या बैठे लोग; एक रेखा पर लिखे अक्षरों का समूह।
**पाँव** *पु०* पैर, पग। -**चप्पी** *स्त्री०* पैर दबाने की क्रिया।
**पाई** *स्त्री०* एक आने का बारहवाँ हिस्सा; इस मूल्य का ताँबे का सिक्का; एक छोटी खड़ी लकीर, जो पूर्ण विराम या चौथाई और आकार का द्योतक है; छोटी लकीर।
**पाऊँ** *पु०* पाँव, पैर।
**पाउंड** *पु०* [अं०] अंग्रेजी सिक्का।
**पाउ** *पु०* पाँव, चतुर्थांश।
**पाउडर** *पु०* [अं०] चूरा, बुकनी।
**पाउटी** *स्त्री०* बैलगाड़ी के चलने की लीक; घुँघरू।
**पाक** *पु०* घाव के पकने का भाव; श्राद्ध के लिए तैयार किया भात, रसोई बनाने का कार्य।
**पाकट** *पु०* दे० 'पाकिट'।
**पाकठ** *वि०* पका हुआ।
**पाकड़** *पु०* एक प्रकार का वृक्ष।
**पाकल** *अक०* परिपक्व होना; घाव से मवाद आने से मुलायम होना; फल का पककर पीला होना। *वि०* पका हुआ। *उदा०* 'पाकल आम कसाई अनकर धिआ आपन ना होई'।
**पाका** *पु०* फोड़ा।
**पाकिट** *पु०* [अं०] जेब।
**पाखंड** दे० 'पखंड'।

**पाख** *पु०* पहाड़ के बगल का रास्ता; घर के बगल की भीत।

**पाखर** *पु०* बैल की एक जाति; बैलों का झुण्ड।

**पाखा** *पु०* पाख का ओर; बगल में; बँड़ेर सम्भालने वाली भीत।

**पाग** *पु०* [सं० पाकः] चीनी चासनी, जिसका उपयोग मिठाई में होता है। *स्त्री०* पगड़ी।

**पागल** *वि०* विक्षिप्त। *सक०* पाग में डुबाना।

**पागलखाना** *पु०* वह अस्पताल, जहाँ पागलों की चिकित्सा होती है।

**पागुर** *पु०* जुगाली।

**पाडल** *सक०* पेड़ की छोटी-छोटी टहनियों को काटना।

**पाचक** *पु०* पाचन-शक्ति को बढ़ाने वाली औषधि।

**पाचड़** *पु०* हल में लगाया जाने वाला पच्चर।

**पाचन** *पु०* [सं०] पकाने या पचाने की क्रिया।

**पाचर** *पु०* पच्चर।

**पाछ** *पु०* अफीम निकालने के लिए पोस्ते की छीमी पर लगाया गया चीरा; पीछा।

**पाछा** *पु०* पीछा। *उदा०* 'पाछा अन्हार आगा सूझे नाहीं पापी पेट ई बूझे नाहीं'।

**पाछु** *अव्य०* कारण से।

**पाछे** *अव्य०* बाद में।

**पाजी** *पु०* बदमाश, दुष्ट।

**पाझा** *पु०* मवेशियों को धूप और वर्षा से बचाने के लिए बना अस्थायी छप्पर।

**पाटंबर** *पु०* रेशमी कपड़ा।

**पाट** *पु०* रेशम, राजगद्दी; हल का वह अंग, जहाँ फार जड़ा जाता है; जल विस्तार, नदी की चौड़ाई।

**पाटक** *पु०* पाठक।

**पाटन** *पु०* घर की छत को ईंट या पत्थर बिछाकर छाने का काम, पटाव।

**पाटल** *अक०* पानी का खेत में फैल जाना।

**पाटा** *पु०* जमीन जोतने के लिए दिया गया अधिकार-पत्र; पीढ़ा।

**पाटा-पाटी** *यौ०* मतभेद के साथ दो दलों में विभक्त होने की स्थिति।

**पाटी** *स्त्री०* पलंग की पट्टी; बच्चों के पढ़ने की काठ की तख्ती; नेवार की पट्टी, जिससे पलंग बुना जाता है।

**पाठ** दे० 'पाट'।

**पाठक** *वि०* दे० 'पाटक'।

**पाठा** *पु०* पहलवान; नर हाथी।

**पाठशाला** *पु०* विद्यालय।

**पाठी** *स्त्री०* बकरी का मादा बच्चा।

**पाड़** *पु०* मचान; किनारा; कोर।

**पाड़ा** *पु०* भैंस का नर बच्चा; टोला, मुहल्ला।

**पाड़ी** *स्त्री०* भैंस का मादा बच्चा।

**पाढ़** *पु०* धोती, साड़ी आदि का किनारा; पान की लतर लगाए जाने वाला टीला; पीढ़ा।

**पाढ़ा** *पु०* बरैठा।

**पात** *पु०* पत्ता; श्राद्ध में पिण्डदान के समय प्रस्तुत सामान।

**पातक** *पु०* घोर पाप।

**पातन** *पु०* धान आदि की कटी हुई फसल।

**पातगोभी** *स्त्री०* वह गोभी, जिसमें केवल पत्ता हो।

**पातर** *पु०* दूर-दूर पर की जाने वाली बुआई; पतला, संकीर्ण।

**पातल** *सक०* किसी बात को एकाग्र होकर सुनने का प्रयास करना।

**पाता** दे० 'पता'।

**पाती** *स्त्री०* चिट्ठी, पत्री। *उदा०* 'पाती खेती पूत मवेशी औ घोड़े का तंग, अपने हाथ सँवारिए लाख लोग हो संग'।

**पात्र** *पु०* [सं०] बर्तन।
**पाथ** *पु०* रास्ता, मार्ग।
**पाथर** *पु०* ओला, पत्थर।
**पाथल** *पु०* गीले पदार्थ को ठोंक कर कोई दूसरी चीज बनाना; गोइठा बनाना, ठोंकना।
**पाद** *पु०* अपान वायु।
**पादल** *अक०* अधोवायु छोड़ना।
**पान** *पु०* पीने की क्रिया, ताम्बूल; ताश के पत्ते का एक रंग। **-पत्ता** *पु०* लगा हुआ पान; साधारण उपहार, तुच्छ भेंट। **-फूल** *पु०* तुच्छ भेंट।
**पानन** *पु०* एक प्रकार का पेड़।
**पानमती** *स्त्री०* कुलदेवता के रूप में पूजित एक देवी।
**पानी** *पु०* जल, आब; स्फूर्ति, चमक। **-दार** *वि०* जिसमें पानी, आब हो; कान्तिमान, स्वाभिमानी। **-फल** *पु०* सिंघाड़ा। **-बेल** *स्त्री०* एक प्रकार की लता। **-उतरल** *मु०* बेइज्जत होना। **-उतारल** *मुहा०* बेइज्जत करना। **-के मोल** *मुहा०* बहुत सस्ता। **-गइल** *मुहा०* बेइज्जत होना। **-पानी भइल** *मुहा०* झेंपना। *उदा०* 'पानी में मछरी नव नव कुटिया बखरा'।
**पानी पांडे** *पु०* यात्रियों को पानी पिलाने वाला आदमी।
**पाप** *पु०* धर्मविरुद्ध काम; अधर्म। *उदा०* 'पाप के बाप लालच'।
**पापड़** *पु०* उड़द या मूँग की दाल के बेसन से बनी रोटी, जिसे सेंक कर या तलकर खाते हैं।
**पापी** *वि०* पाप करने वाला; निर्दय।
**पाय** *पु०* पैर।
**पायजामा** *पु०* पैर से कमर तक ढँकने का पाँवों में पहनने का सिला कपड़ा।
**पायजेब** *पु०* पैर का आभूषण।
**पायताना** *पु०* जिधर पैर रहता है उस ओर।
**पायताबा** *पु०* पाँव का मोजा।
**पायबंद** *वि०* बँधा हुआ, किसी शर्त के पालन के लिए विवश।
**पायल** *पु०* पैर का एक आभूषण, नूपुर।
**पाया** *पु०* खम्भा।
**पार** *पु०* नदी आदि के दूसरी ओर का किनारा; ओर, अन्त। *उदा०* 'पार उतरना चाहिए तऽ केवट से मिल रहिए'।
**पारखी** *पु०* पहचानने वाला।
**पारन** *पु०* व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन, पारण।
**पारबती** *स्त्री०* हिमालय की कन्या पार्वती।
**पारल** *सक०* गिराना, फेंकना, रखना।
**पारस** *पु०* एक प्रकार का पत्थर, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है।
**पारा** *पु०* चाँदी के समान सफेद सान्द्र द्रव।
**पारा-पारी** *यौ०* एक के बाद दूसरा।
**पारायन** *पु०* निर्बाध गति से पाठ; धर्म-ग्रन्थ का बिना अर्थ कहे पाठ।
**पारी** *स्त्री०* बारी, क्रम, अवसर।
**पार्क** *पु०* [अं०] सार्वजनिक उपवन।
**पार्टी** *स्त्री०* [अं०] दल, मण्डली।
**पार्थिव** *वि०* [सं०] पृथ्वी का।
**पार्थी** *पु०* मिट्टी का शिवलिंग।
**पार्लमेंट** *स्त्री०* [अं०] संसद्।
**पार्सल** *पु०* [अं०] डाक या रेल द्वारा प्रेषित पैकेट।
**पाल** *पु०* नाव के मस्तूल में बाँधने का कपड़ा; सन की चट्टी का बना एक सामान, जिसमें रखकर गाड़ी पर अनाज लाते हैं।
**पालक** *पु०* एक साग।
**पालकी** *स्त्री०* डोली।
**पालकी गाड़ी** *स्त्री०* छत वाली गाड़ी, जिसे घोड़े खींचते हैं।

**पालड़ा** *पु०* पलड़ा।
**पालतू** *वि०* पाला हुआ; जो पाला जा सके।
**पालथी** *स्त्री०* बैठने का एक आसन।
**पालन** *पु०* भरण-पोषण, निर्वाह; दिए गए वचन की रक्षा।
**पालल** *सक०* भरण-पोषण करना; पालना।
**पाला** *पु०* ठण्डक के कारण पृथ्वी पर बर्फ-सी जमी भाप, हिम, तुषार, बर्फ, सर्दी।
**पालिस** *स्त्री०* [अं०] मसाला, चिकनाई, जो रगड़ने पर आती है।
**पालिसी** *स्त्री०* [अं०] नीति; बीमा सम्बन्धी प्रतिज्ञापत्र।
**पाली** *स्त्री०* बारी।
**पालू** *वि०* पालतू।
**पाले** *अ०* वश में, चंगुल में।
**पालो** *पु०* हल का वह सामान, जो बैल के कन्धे पर रखकर खेत जोता जाता है; जुआ।
**पावँ** *पु०* पाँव।
**पावँड़ा** *पु०* पाँवड़ा।
**पाव** *वि०* चौथाई; सेर का चौथाई हिस्सा; पैर। *उदा०* 'पाव भर के बाबा जी सवा सेर के संख'।
**पावक** *पु०* [सं०] आग।
**पावगाड़ी** *स्त्री०* साइकिल।
**पावजेब** *पु०* पैर का एक आभूषण, नूपुर।
**पावट** *पु०* पैरों का घुँघरू।
**पावटी** दे० 'पाउटी'।
**पावदान** *पु०* पैर रखने का तख्ता।
**पावना** *पु०* वह राशि, जो किसी से मिलने वाली है।
**पावपूजा** *पु०* वर, गुरु, पुरोहित के पैर को पूजने के समय दिया गया द्रव्य।
**पावल** *सक०* प्राप्त करना; वापस मिलना।
**पावे-पावे** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे पैर रखकर चलना।
**पासंथ** *पु०* पसंगा।
**पास** *पु०* कुदाल का वह हिस्सा, जिसमें बेंट लगा रहता है।
**पासवान** *पु०* जाति की एक उपाधि।
**पासा** *पु०* हाथीदाँत हड्डी के बने चौपड़, एक प्रकार का प्राचीन खेल। *उदा०* 'पासा पड़े तऽ दाँव, हाकिम कोसे न्याय'।
**पासी** *पु०* ताड़ी उतारने तथा उसका व्यवसाय करने वाली एक जाति।
**पाह** *पु०* मजदूरों द्वारा काम करते समय खेत का वह भाग, जहाँ काम होता है।
**पाही** *स्त्री०* दूर स्थित दूसरे गाँव की खेती।
**पाहुन** *पु०* मेहमान, अतिथि; बहनोई के लिए प्रयुक्त शब्द, *उदा०* 'प्रिये पाहुन सिन्दुर दान करीं'।
**पाहुर** *पु०* भेंट, सौगात; बायन।
**पिंगल** *वि०* [सं०] भूरे रंग का। *पु०* छन्दशास्त्र के आचार्य।
**पिंगला** *स्त्री०* नाड़ी; धर्मनिष्ठ वेश्या।
**पिंचड़ा** *वि०* दब जाने से चिपटाकार।
**पिंचड़ाइल** *सक०* कुचला जाना।
**पिंजड़ा** *पु०* तोता-मैना आदि पक्षियों को पालने के लिए बाँस की कमाची या लोहे आदि की जालीदार सन्दूक।
**पिंजन** *पु०* धुनकी।
**पिंड** *पु०* ठोस पदार्थ; देह शरीर। **-छूटल** *मुहा०* छुटकारा मिलना। **-पड़ल** *मुहा०* पीछे पड़ना।
**पिंडदान** *पु०* श्राद्ध में पितरों के लिए पिण्डा देना।
**पिंडा** *पु०* [सं०] गोला, गीले पदार्थ का गोला, पके चावल का हाथ से बनाया हुआ गोला, जिसे पितरों को श्राद्ध में अर्पित किया जाता है। **-देहल** *मुहा०* श्राद्ध और तर्पण करना।

**पिंडि** *स्त्री०* [सं०] गोलक, गोला।

**पिंडी** *वि०* [सं०] पिण्डे का भागी; शरीरधारी।

**पिंडोर** *पु०* मानसिक क्लेश; परेशान; पीली मिट्टी।

**पिअ** *पु०* प्रिय। *वि०* प्यारा।

**पिअक्कड़** *पु०* बहुत पीने वाला; बड़ा शराबी।

**पिअनी** *स्त्री०* तम्बाकू।

**पिअर** *वि०* पीला। *उदा०* 'पिया पिया कहत पिअर भइल देहिया, लोगवा कहेला पिंड रोग। गँउवा के लोगवा मरमिओ ना जानेले, भइले गवनवाँ ना मोर'।

—लोकगीत

**पिअरका** *वि०* पीले रंग का।

**पिअराइल** *अक०* पीला पड़ना।

**पिअराई** *स्त्री०* पीलापन।

**पिअरी** *स्त्री०* हल्दी या पीले रंग में रँगी धोती, जिसका उपयोग प्राय: मांगलिक अवसरों पर होता है; पीलिया रोग।

**पिआ** *पु०* प्रियतम, पति।

**पिआज** *पु०* प्याज।

**पिआजी** *स्त्री०* हलका गुलाबी रंग।

**पिआदा** *पु०* [फा०, प्यादा] सिपाही; शतरंज की गोटी।

**पिआर** *पु०* प्यार।

**पिआरा** *वि०* प्यारा।

**पिआला** *पु०* [फा० प्याला] चीनीमिट्टी का एक कटोरीनुमा बर्तन।

**पिआव** *पु०* एक प्रकार की मिठाई-बालूशाही।

**पिआवल** *सक०* पिलाना दूध, पानी तरल पदार्थ इत्यादि।

**पिआस** *पु०* पानी पीने की इच्छा, प्यास। *उदा०* 'पिआसले कुआँ के पास जाला'।

**पिउनी** *स्त्री०* धुनी हुई रूई की तोटी बत्ती, जिसमें चरखे का सूत तैयार किया जाता है; पूनी। एक प्रकार का स्वादिष्ट आम।

**पिक** *पु०* [सं०] कोयल।

**पिकहरल** *सक०* धान के बाल को खींचकर डण्ठल से अलग कर देना।

**पिङला** *स्त्री०* एक रानी; एक नाड़ी।

**पिचक** *स्त्री०* पिचकारी।

**पिचकल** *अक०* पिचकना, सिकुड़ना।

**पिचकारी** *स्त्री०* दूर तक पानी या रंग फेकने वाली पोली यंत्री।

**पिचास** *पु०* एक प्रेतयोनि; अति निर्दयी मनुष्य।

**पिच्छु** *वि०* हाथी को पीछे की ओर हटाने के लिए बोला जाने वाला शब्द।

**पिछ** *पु०* 'पीछा' का लघु रूप। **-लगा** *पु०* अनुयायी। **-लगी** *स्त्री०* सेविका। **-लगू** *पु०* पिछलगा। **-वाड़ा** *पु०* घर के पीछे की जमीन।

**पिछलकड़ा** *पु०* पछलकड़ा।

**पिछलहरी** *स्त्री०* वर्षा या पानी के गिरने से जमीन का चिकना हो जाना, जिससे चलने वाले का पैर फिसल जाता है।

**पिछलाइल** *अक०* फिसलना।

**पिछली** *वि०* आँत। *उदा०* 'पिछली रोटी खाए तऽ पाछे बुद्धि आवे'।

**पिछवारा** *पु०* पिछला हिस्सा।

**पिछाड़ी** *स्त्री०* [हि० पीछा] पीछे का भाग।

**पिछान** *स्त्री०* पहचान।

**पिछारी** *स्त्री०* दे० 'पिछाड़ी'।

**पिजावल** *सक०* रगड़ कर तेज बनाना।

**पिजावा** *पु०* ईंट को पकाने के लिए बनाया गया भट्ठा।

**पिटउनी** *स्त्री०* पीटने की मजदूरी।

**पिटउर** *पु०* धान का वह डण्ठल, जिसका दाना पीटकर निकाल दिया गया हो।

**पिटना** *पु०* वह वस्तु, जिससे कुछ पीटा जाता हो।

**पिटपिटावल** *अक०* जोरों से वृष्टि होना।

**पिटवावल** *सक०* पीटने का काम किसी दूसरे से कराना।

**पिटाई** *स्त्री०* पीटने का कार्य या भाव।

**पिटाईल** *सक०* पीटा जाना। *उदा०* 'पिटाईल, खाईल ना भुलाय'।

**पिटुआ** *वि०* पीटकर बनाया हुआ।

**पिट्ठा** *पु०* मक्के के आटे से तैयार की गई बड़ी-बड़ी टिकिया।

**पिट्ठी** *स्त्री०* दाल या गुड़ के साथ बनाई गई गेहूँ की टिकिया।

**पिठांस** *पु०* पीठ।

**पिठार** *पु०* चावल का लेप।

**पिठास** *पु०* पीठ का चौड़ा भाग।

**पिठिआ** *वि०* पीठ का (घाव)।

**पिठिआठोक** *क्रि०वि०* ठीक पीछे।

**पिठिआवल** *अक०* पीछे-पीछे चलना।

**पिठारी** *स्त्री०* किसी सानी हुई खाद्य-सामग्री को मुट्ठी से दबाकर लम्बी-सी गुल्ली बनाना।

**पिठौरी** *स्त्री०* एक नमकीन व्यंजन।

**पिड़की** *स्त्री०* पीठ का एक प्रकार का घाव।

**पिड़िआ** *स्त्री०* मिट्टी की देव-प्रतिमा, जो गोले के रूप में रहती है; स्त्रियों का एक व्रत, जो अगहन में होता है।

**पिड़िकिआ** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई, जिसका उपयोग विशेषरूप से तीज व्रत के अवसर पर होता है; गुझिया।

**पिढ़ई** *स्त्री०* छोटा पीढ़ा।

**पिढ़िया** *स्त्री०* बैठने के लिए बनी काठ की पटरी।

**पितंबर** *पु०* एक प्रकार का पीला वस्त्र; पीले रंग का रेशमी वस्त्र।

**पितमरु** *वि०* सहनशील।

**पितरनेवतन** *पु०* पूर्वजों को आहूत करने की रस्म।

**पितरनेवती** *स्त्री०* पितृनिमन्त्रण।

**पितर-पछ** *पु०* आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, जिसमें पितरों को पिण्डा या तिलांजलि देते हैं।

**पितरसेली** *स्त्री०* एक साग (अजवाइन)।

**पितराइन** *वि०* पीतल की कसावट-सा।

**पितराइल** *अक०* पीतल की कसावट का आना।

**पितरिआ** *वि०* पीतल का बना।

**पिता** *पु०* [सं० पितृ] जन्म देने वाला, बाप। *उदा०* 'पिता पतितो भला'।

**पिताइल** *सक०* क्रोधित होना।

**पितामह** *पु०* [सं०] दादा; पितर; ब्रह्मा।

**पितामही** *स्त्री०* [सं०] दादी।

**पिताह** *वि०* क्रोधी।

**पितिआ** *पु०* पिता का भाई, चाचा। **-ससुर** *पु०* चचिया ससुर।

**पितिआउत** *वि०* पिता के भाई से उत्पन्न।

**पित्ती** *स्त्री०* लाल चकत्ता; एक लता।

**पिथार** *पु०* ऊँख पेरना आरम्भ करने के समय का उत्सव।

**पिधान** *पु०* [सं०] टकना, पिहान, आवरण।

**पिन** *स्त्री०* [अं०] बारीक कील, आलपीन।

**पिनकल** *अक०* पीनक होना; क्रोध करना; ऊँघना।

**पिनकाह** *वि०* तुनकमिजाज।

**पिनकी** *वि०* अफीमची; क्रोधी।

**पिनपिनाइल** *अक०* शीघ्र क्रुद्ध होना।

**पिनसिल** *पु०* [अं०] नौकरी के बाद मिलने वाला मासिक भत्ता; पेंसिल।

**पिन्हाना** *अक०* थन में दूध उतरना।

**पिनिक** *वि०* अफीम के नशे से उत्पन्न स्थिति।

**पिनिकल** *अक०* छोटी बात पर क्षुब्ध होना।
**पिनिकाह** *वि०* शीघ्र क्रुद्ध होने वाला।
**पिपरमिंट** *पु०* [अं०] पिपरमेंट।
**पिपरामूल** *पु०* पीपल की जड़।
**पिपरी** *स्त्री०* अति छोटी चींटी।
**पिपासा** *स्त्री०* पीने की इच्छा।
**पिपुही** *स्त्री०* सुरीली आवाज का बाजा, शहनाई, बाँसुरी।
**पियरी** *स्त्री०* पीली सूती साड़ी।
**पिया** *पु०* पति। *उदा०* 'पिया सुनरा आ हम सुनरी नगर के लोग बनरा बनरी'।
**पियार** *पु०* प्यार।
**पियारा** *वि०* प्यारा।
**पियावल** *सक०* पिलाना।
**पियास** *स्त्री०* प्यास।
**पियासा** *वि०* प्यासा।
**पिरकी** *स्त्री०* फुड़िया।
**पिरथिवी** *स्त्री०* धरती, पृथ्वी।
**पिराइल** *अक०* दुखना, दर्द करना, पीड़ा होना।
**पिरीत** *पु०* प्रेम, प्यार, प्रीत।
**पिरीतम** *पु०* प्रियतम।
**पिरीता** *वि०* प्यारा।
**पिरोवल** *सक०* डोरे में मनका डालना।
**पिलकल** *अक०* पकने से पूर्व पौधे पर पीलापन आना।
**पिलखी** *स्त्री०* अनाज का वह दाना, जो रोगग्रस्त होने के कारण पतला छोटा और बेकार हो गया हो।
**पिलपिला** *वि०* बहुत नरम।
**पिलपिलाह** *वि०* पीला चेहरा वाला; दुबला-पतला, रोगी-सा।
**पिलही** *स्त्री०* अँतड़ी का एक रोग, तिल्ली।
**पिलावल** *सक०* तरल पदार्थ को किसी जगह में डाल देना।
**पिल्ला** *पु०* कुत्ते का नर बच्चा।
**पिल्ली** *स्त्री०* कुतिया।
**पिलुआ** *पु०* सफेद रंग का लम्बा कीड़ा।
**पिलुआइल** *अक०* कीड़ा-सा लगना; पीला होना।
**पिलुआहा** *वि०* जिसमें कीड़ा लग जाता हो।
**पिसउनी** *स्त्री०* पीसने की मजदूरी।
**पिसता** *पु०* एक प्रसिद्ध मेवा।
**पिसनीहार** *पु०* आटा पीसने वाला।
**पिसमान** *वि०* परेशान।
**पिसल** *अक०* पीसा जाना।
**पिसवावल** *सक०* पीसने का काम किसी दूसरे से कराना।
**पिसाइल** *सक०* पिसा जाना।
**पिसाई** *स्त्री०* पीसने की मजदूरी, पीसने का भाव।
**पिसाच** *पु०* [सं०] भूत, प्रेत, राक्षस, दैत्य।
**पिसान** *पु०* [हि० पिसा + सं० अन्नम्] आटा।
**पिसावल** *सक०* पिसवाना।
**पिसिआ** *स्त्री०* पिसाई; पीसने का काम।
**पिहकार** *पु०* आगे चलने वाला एक समान।
**पिहकल** *अक०* सुरीले स्वर में गाना या बोलना।
**पिहान** *पु०* मिट्टी का ढक्कन।
**पिहुआ** *पु०* सुरीली आवाज में बोलने वाला पक्षी।
**पींचल** *सक०* कुचलना, दबाकर चिपटा कर देना।
**पींजरा** दे० 'पिंजड़ा'।
**पींजड़ा** दे० 'पिंजड़ा'
**पींड़** *पु०* गीली वस्तु का गोला।
**पी** *पु०* प्रियतम, कांत / **–कहाँ** *पु०* पपीहे की बोली। **–खग** *पु०* पपीहा।

**पीअर** *वि०* 'पीला रंग'।
**पीअल** *सक०* तरल पदार्थ को पीना।
**पीआर** *पु०* एक प्रकार का जंगली फल; पीले रंग का पशु।
**पीउनी** दे० 'पिउनी'।
**पीक** *पु०* थूक मिला पान-तम्बाकू का रस।
**पीकदान** *पु०* पीक थूकने का बर्तन, उगलदान।
**पीका** *पु०* पौधों के मध्य भाग से निकला पत्ता।
**पीछा** *पु०* पिछलगी।-**कइल** *मुहा०* खदेड़ना।
**पीछू** *अव्य०* पीठ की ओर।
**पीटल** *सक०* मारना, ठोंकना।
**पीठ** *पु०* पेट के पीछे की ओर का भाग।
**पीठक** *पु०* चौकी, आसन।
**पीठा** दे० 'पिट्ठा'।
**पीठास** *पु०* पीठ का मध्य भाग।
**पीठिआ-ठोक** *क्रि०वि०* पीछे-पीछे; ठीक पीछे।
**पीठी** दे० 'पिट्ठी'।
**पीडा** *स्त्री०* दर्द; व्यथा।
**पीढ़ई** *स्त्री०* छोटा पीढ़ा।
**पीढ़ा** *पु०* काढ की बनी बैठने की छोटी तखती, फरई।
**पीढ़ी** *स्त्री०* [सं० पीढी] कुल-परम्परा।
**पीत** *पु०* यकृत् से बनी एक द्रव धातु; पीला रंग।
**पीतम** *पु०* प्रियतम।
**पीतर** *पु०* मरे हुए पुरखे; पीतल। *उदा०* 'पीतर के नथिया पर एतना गुमान'।
**पीतांबरी** *स्त्री०* पीला वस्त्रविशेष।
**पीनस** *पु०* नाक का एक रोग।
**पीपर** *पु०* [सं० पिप्पल:] एक प्रकार की औषधि; एक बड़ा आकार वाला वृक्ष, पीपल।
**पीपा** *पु०* तरल पदार्थ रखने के लिए बना ढोल जैसा गोल बर्तन।
**पीब** *पु०* घाव का मवाद।
**पीय** *पु०* स्वामी।
**पीयर** *वि०* पीला।
**पीया** *पु०* पति।
**पीर** *पु०* मुस्लिम सन्त; पीड़ा, दर्द।
**पीरा** *पु०* व्यथा, दर्द, कष्ट, दु:ख।
**पीराइल** *अक०* दर्द करना।
**पीलवान** *पु०* हाथीवान।
**पील्ली** *स्त्री०* कुतिया।
**पीसल** *सक०* पीसकर आटा या सत्तू बनाना; कुचल जाना; किसी बात को बार-बार कहते रहना।
**पीसवन** *पु०* पीसने का कार्य या भाव।
**पीसू** *अव्य०* बिल्ली को बुलाने का शब्द।
**पीहर** *पु०* [सं० पितृगृहं] मायका।
**पुंछटँगा** *पु०* छोटी पूँछ वाला (बैल)।
**पुंछेटा** *पु०* पछौटा।
**पुआ** *पु०* गेहूँ के आटे तथा गुड़ के घोल से बना व्यंजन।
**पुआर** *पु०* धान का सूखा पौधा, पुआल।
**पुआरी** *स्त्री०* हाल का जमा ऊँख।
**पुका** *पु०* कारुणिक स्वर में (रुलाई)।
**पुकार** *पु०* किसी मुकदमें में सुनवाई के लिए उभय पक्षों का नाम लेकर पुकारने का काम, बुलाहट, आवाज।
**पुकारल** *सक०* किसी का नाम लेकर बुलाना, हाँक लगाना।
**पुकी** *स्त्री०* ऊँचा स्वर (रोना)।
**पुख** *पु०* आठवाँ नक्षत्र पुष्य।
**पुगावल** *सक०* पूरा करना।
**पुछड़ा** *पु०* ढेंकी का पावदान।
**पुछवइया** *वि०* पूछने वाला।
**पुछवावल** *सक०* पूछने का काम दूसरे से कराना।

**पुछार** *पु०* पूछने वाला।
**पुछारथ** *पु०* पूछ।
**पुछारी** *स्त्री०* विदाई के बाद कन्या से या किसी की मृत्यु के बाद परिवार वालों से जाकर मिलने का कार्य।
**पुजउल** दे० 'पुजवट'।
**पुजवावल** *सक०* पूजने का काम दूसरे से कराना।
**पुजाई** *स्त्री०* विवाह के पूर्व वर या कन्या को उपहार देकर विवाह तय करने का कार्य; पूजा का पारिश्रमिक।
**पुजारी** *पु०* देवी-देवताओं की नियमित पूजा करने वाला। पूजक।
**पुजावल** *सक०* पूरा करना; पूजित होना, आदर पाना।
**पुटपुरी** *स्त्री०* आँख और कान के बीच का भाग; कनपटी।
**पुट्ठा** *पु०* शरीर का एक अंग, जाँघ, चूतड़ के ऊपर का मांसल भाग।
**पुट्ठी** *स्त्री०* बैलगाड़ी के पहिये में लगा अर्द्ध चन्द्राकार लकड़ी का टुकड़ा।
**पुतर** *पु०* बेटा, लड़का, पुत्र।
**पुतरा** *पु०* पुतला; तृणादि की बनी मनुष्य की आकृति।
**पुतरी** *स्त्री०* काष्ठ, तृण, वस्त्र आदि की बनी स्त्री की मूर्ति, जिसका उपयोग खेल में होता है; आँख का काला भाग।
**पुतला** *पु०* लकड़ी, धातु, कपड़े की बनी पुरुष-प्रतिमा, जो खिलौने के काम आती है।
**पुतली** *स्त्री०* गुड़िया; आँख के बीच का काला भाग; सुन्दर कोमलांगी स्त्री। **-फिरल** *मुहा०* घमण्ड होना।
**पुतवामारी** *स्त्री०* वह स्त्री, जिसका पुत्र मर गया हो; स्त्रियों में प्रचलित एक गाली।
**पुतिया** *पु०* चूल्हे की आँछी पर बना विभाजक मृत्पिण्ड।
**पुत्ती** *स्त्री०* मडुआ की भुस्सी; कमरी; गेहूँ का अंकुर।
**पुत्र** *पु०* [सं०] बेटा; प्यारा बच्चा।
**पुत्रवती** *वि० स्त्री०* पुत्रवाली।
**पुत्रिका** *स्त्री०* बेटी।
**पुत्री** *स्त्री०* [सं०] कन्या।
**पुनकाल** *पु०* वह शुभ या पवित्र दिन, जब दान-धर्म करने का शास्त्र में आदेश है।
**पुनरवस** *पु०* सातवाँ नक्षत्र, पुनर्वसु।
**पुनेआ** *स्त्री०* माल गुजारी की प्रथम वसूली, जो दशहरे को प्रारम्भ होती है; प्रथम-प्रथम प्राप्त राशि; प्रारम्भ।
**पुपरी** *स्त्री०* गेहूँ के खेत में उपजने वाली एक खेसारी-सी घास।
**पुर** *पु०* नगर, शहर; ग्राम का बोध कराने के लिए यह परसर्ग-सा व्यवहृत होता है; मोट, चरसा।
**पुरइन** *पु०* कमल का पत्ता।
**पुरखा** *पु०* [सं० पुरुष:] बाप से ऊपर की पीढ़ी, पितर।
**पुरजा** *पु०* कागज का टुकड़ा; मशीन का अंग; चिट्ठी।
**पुरठ** *वि०* पुष्ट।
**पुरद्दिलही** *वि०* मन के अनुसार आपूर्ति; यथेष्ट होने का भाव।
**पुरधाष** *वि०* प्रमुख, प्रधान।
**पुरनका** *वि०* पुराना।
**पुरनवाँसी** *स्त्री०* पूर्णिमा तिथि, पूर्णमासी, शुक्ल पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन।
**पुरनाहुत** *पु०* यज्ञ की समाप्ति पर दी गई विशेष आहुति।
**पुरनिआ** *पु०* वृद्ध पुरुष।
**पुरबज** *पु०* पूर्व-पुरुष, पूर्वज।

**पुरबा** *पु०* एक नक्षत्र का नाम; पूर्व दिशा से चलने वाली हवा। *कहा०* 'जब पुरबा पुरवइया पावे सुखल नदी में नाव चलावे'।

**पुरबाहुत** *क्रि०वि०* पूर्व की ओर।

**पुरबिआ** *पु०* पूर्व देश का निवासी; पूर्व देश में काम करने वाला; पूरब का।

**पुरवइया** *पु०* पूर्व दिशा में चलने वाली हवा, पुरवा हवा।

**पुरवना** *पु०* वह सामग्री, जो कमी को पूरा करने के लिए दी जाती है।

**पुरवल** *सक०* पूरा करना।

**पुरवा** *पु०* मिट्टी की कटोरी, कसोरा; छोटा गाँव।

**पुरवावल** *पु०* किसी बात के कहने वाले से उसकी पुष्टि कराना।

**पुरवासाख** *पु०* किसी बात के कहने और सुनने वाले को पहले कही गई बात की पुष्टि कराने की स्थिति; गवाही।

**पुरसी** *स्त्री०* धान की बारीक भूसी।

**पुरहथ** *पु०* विवाह आदि में स्थापित कलश।

**पुरहर** *पु०* पूरा; अधिक।

**पुरहिआ** *वि०* प्रतिवर्ष बच्चा देने वाली (भैंस)।

**पुरा** *पु०* नाक का छेद।

**पुरान** *पु०* प्राचीन भारत का धार्मिक कथा साहित्य-पुराण। *वि०* बहुत दिनों का; प्राचीन। *उदा०* 'पुरान चाउर पंथ पड़े'।

**पुराना** *वि०* बहुत दिनों का।

**पुरावल** *सक०* पूरा करना।

**पुरिया** *स्त्री०* कागज के टुकड़े में लपेट कर रखी गई कोई वस्तु (दवा, रंग)। पुड़िया।

**पुरी** *स्त्री०* पवित्र स्थान; जगन्नाथपुरी; अतिथियों और संन्यासियों की उपाधि।

**पुरुख** *पु०* पति, मर्द, पुरुष।

**पुरुखा** *पु०* पूर्वज, बाप-दादा, पुरनियाँ।

**पुरुब** *पु०* पूर्व दिशा।

**पुरुब जनम** *पु०* पहले का जन्म।

**पुरोहित** *पु०* परिवार में पूजा कराने वाला व्यक्ति।

**पुल** *पु०* नदी आदि के आर-पार जाने का रास्ता, सेतु।

**पुलक** *पु०* [सं०] हर्ष से रोंगटे खड़े होना।

**पुलकल** *अक०* पुलकित होना।

**पुलपुल** *वि०* अति कोमल।

**पुलिन्दा** *पु०* गट्ठर।

**पुलिन** *स्त्री०* रेती।

**पुलिस** *पु०* शान्ति-व्यवस्था बनाए रखने वाले सिपाही और अधिकारी।

**पुस्टई** *स्त्री०* बल बढ़ाने वाली दवा।

**पुस्त** *पु०* कई पीढ़ियों से चला आने वाला; पैतृक।

**पुस्तक** *पु०* पोथी, किताब।

**पूँछ** *स्त्री०* [सं० पुच्छ:] पूँछ, लांगूल।

**पूंज** *पु०* ढेर; पुआल का ढेर।

**पूँजी** *स्त्री०* [सं० पुञ्ज:] किसी व्यवसाय में लगा मूलधन। *उदा०* 'पूँजी घास ना कूँजी के झाबा'।

**पूँजीपति** *पु०* धनवान; पूँजी रखने वाला; किसी व्यवसाय में रुपया-पैसा लगाने वाला।

**पूँठ** *पु०* पीठ का मध्य भाग।

**पूगल** *अक०* पूरा होना; लक्ष्य तक पहुँचना।

**पूछ** *स्त्री०* पूछने का भाव।

**पूछ-ताछ** *यौ०* जाँच-बूझ; जाँच-पड़ताल; तहकीकात।

**पूछल** *सक०* सवाल करना; खोज-खबर लेना।

**पूजल** *अक०* पूरा होना; पूरा करने में सक्षम होना; देवता की पूजा करना।

**पूजा** *स्त्री०* अर्चना, आराधना। *उदा०* 'पूजा से डंडवत भारी'।

**पूत** *पु०* बेटा, लड़का। *उदा०* 'पूत सोक सहा जाला, धन सोक ना'।

**पूतना** *स्त्री०* एक राक्षसी, जो कृष्ण को विष-लिप्त स्तन पिलाने के प्रयास में उनके द्वारा ही मारी गई।

**पूती** *पु०* गाँठदार जड़, कमरी।

**पून** *पु०* शुभ कार्य।

**पूनी** *स्त्री०* पिउनी; पुण्यात्मा। *उदा०* 'पूनी अरजे पापी खाय'।

**पूनो** *स्त्री०* शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि।

**पूरन** *वि०* पूरा, पूर्ण।

**पूरनमासी** *स्त्री०* पूर्णिमा, पूर्णमासी।

**पूरबी** *स्त्री०* एक धुनविशेष।

**पूरल** *सक०* रस्सी बटना।

**पूरा** *पु०* [सं० पूर्ण] भरा हुआ, पूर्ण।

**पूरिस** *स्त्री०* साढ़े चार हाथ की ऊँचाई का एक परिमाण, पोरसा।

**पूरी** *स्त्री०* आटे की रोटी की तरह बेलकर घी में छाना हुआ पकवान।

**पूरुख** *पु०* पुरुष।

**पूरुबी** *वि०* पूरब देश का।

**पूर्ण** *वि०* समूचा, समग्र। **-पात्र** *पु०* जल से भरा हुआ पात्र।

**पूर्णांक** *पु०* पूरी संख्या।

**पूर्णिमा** *स्त्री०* पूनो।

**पूला** *पु०* घास और अनाज के डण्ठल का बना मुट्ठा; सरपत की ढेरी।

**पूस** *पु०* अगहन के बाद का महीना; पौष। *उदा०* 'पूस के दिन फुस'।

**पें** *स्त्री०* रोने, बजाने से निकला शब्द।

**पेंग** *स्त्री०* झूले का आगे-पीछे जाना।

**पेंच** *पु०* पगड़ी की लपेट; धोती का वह भाग, जो कमर में लपेटा जाता है।

**पेंचकस** *पु०* कीलों को कसने या खोलने का औजार।

**पेंठिआ** *पु०* बाजार।

**पेंड** *पु०* वृक्ष, गाछ।

**पेंडी** *स्त्री०* सुरती का वह पौधा, जिसका पत्ता एक बार कट गया हो।

**पेंडुक** *पु०* एक प्रकार की चिड़िया।

**पेंडुकिया** दे० 'पिड़िकिआ'।

**पेंडुकी** *स्त्री०* पण्डुक चिड़िया का एक भेद, जो आकार में छोटी होती है।

**पेंडुरी** *स्त्री०* पेडू।

**पेंद** *पु० स्त्री०* किसी वस्तु का निचला भाग।

**पेंपची** *स्त्री०* एक प्रकार का कन्द।

**पेआम** *पु०* यात्रा, प्रयाण।

**पेआर** *पु०* दुलार, प्यार।

**पेआरी** *स्त्री०* प्यारी, प्रिया।

**पेउती** *स्त्री०* सामान रखने का सींक का ढक्कनदार बर्तन।

**पेकचा** *पु०* अरुई, घुइयाँ, घीया।

**पेडल** *वि०* काबिल, चतुर, दक्ष।

**पेच** *पु०* [फा०] चक्कर, लपेट; झमेला, झंझट; स्क्रू; धोखा। **-कस** *पु०* बढ़ई, लोहार का वह आला, जिससे कसने या निकालने का काम होता है। **-दार** *वि०* लपेटवाला, चक्करदार।

**पेचिस** *पु०* पेट का वह रोग, जिसमें बदहजमी होती है, आँव गिरता है।

**पेचीदगी** *स्त्री०* पेचीदा होने का भाव।

**पेचीदा** *वि०* [फा०] चक्करदार।

**पेचीला** *वि०* दे० 'पेचीदा'।

**पेट** *पु०* उदर; नदी की चौड़ाई। **-पोंछना** *पु०* अन्तिम सन्तान। **-पोसुवा** *पु०* जिसे पेट भरने की चिन्ता लगी रहती है। **-का हलका** *मुहा०* जो गम्भीर न हो। **-का हाल** *मुहा०* मन की बात। **-की आग** *मुहा०* भूख। *उदा०* 'पेट जे न करावे'।

**पेटकट** *पु०* पेटभर भोजन नहीं मिलने की स्थिति।
**पेटकस** *पु०* गाड़ी के निचले भाग में रस्सा लगाकर उसे कसने का काम।
**पेटकुनिआ** *स्त्री०* पेट के बल लेटे रहने का भाव या कार्य।
**पेटजरुआ** *स्त्री०* वह व्यक्ति, जिसके खाने के लिए कुछ भी नहीं हो।
**पेटझरी** *स्त्री०* पेट झरने की बीमारी।
**पेटपोछना** *पु०* अन्तिम सन्तान (प्यार भरा)
**पेटफुल्ली** *स्त्री०* पशुओं का एक रोग, जिसमें पेट फूल जाता है।
**पेटबत्थी** *स्त्री०* पेट का दर्द।
**पेटभरुआ** *वि०* जिसे केवल भरपेट भोजन की चिन्ता रहती है।
**पेटसुध** *वि०* पेट की बात।
**पेटहन** *वि०* पेट की बात; गुप्त बात।
**पेटा** *पु०* भीतरी भाग; गर्भ; घेरा।
**पेटाढ़ी** *स्त्री०* धान की आँटी।
**पेटारा** *पु०* बाँस का ढक्कनदार बर्तन।
**पेटारी** *स्त्री०* धान का पुआल; झाँपी।
**पेटी** *स्त्री०* सामान रखने का एक उपकरण; छोटी सन्दूक, पिटारी; बेल्ट।
**पेटीकोट** *पु०* साया।
**पेटू** *वि०* अधिक खाने वाला; दीर्घाहारी।
**पेटेंट** *पु०* [अं०] सरकारी स्वीकृतिप्राप्त प्रामाणिक उत्पादन।
**पेट्रोल** *पु०* [अं०] एक खनिज।
**पेठा** *पु०* एक प्रकार का मुरब्बा; कोहड़ापाग।
**पेठावल** *सक०* भेजना।
**पेठिया** *पु०* कहीं से आया हुआ सामान; बाजार।
**पेड़** *पु०* वृक्ष, पौधा।
**पेड़ा** *पु०* खोवा की मिठाई।
**पेड़ी** *स्त्री०* पेड़ का तना, छोटा पौधा।
**पेडू** *पु०* नाभि और जननेन्द्रिय के बीच का अंग।
**पेन** *स्त्री०* [अं०] कलम, लेखनी।
**पेनी** *स्त्री०* किसी वस्तु के नीचे का भाग; तल, पेंदी।
**पेन्हल** *अक०* पहनना, वस्त्र धारण करना।
**पेन्हाइल** *अक०* गाय या भैंस के थन से दूध उतर आना।
**पेन्हान** *पु०* दुधारू मवेशियों के स्तन में दूध के उतर आने की स्थिति।
**पेपर** *पु०* [अं०] कागज, परचा। **-मिल** *स्त्री०* कागज-मिल। **-वेट** *पु०* भारी टुकड़ा।
**पेम** *पु०* प्रेम।
**पेरल** *सक०* किसी पौधे या फल को इतना दबाना कि उसका रस निकलने लगे; सताना, दुःख देना; काम में बहुत विलम्ब करना।
**पेरवावल** *सक०* पेरल का प्रेरणार्थक रूप।
**पेरा** *पु०* पेड़ा।
**पेराइल** *सक०* यंत्र में दबाकर रस निकाला जाना; सताया जाना।
**पेरु** *वि०* टाल-मटोल करने वाला (व्यक्ति)।
**पेल** *पु०* [सं०] गमन, अण्डकोश।
**पेलक** *पु०* अण्डकोश।
**पेलल** *सक०* घुसेड़ना, धसाना, प्रविष्ट करना, सम्भोग करना।
**पेलवावल** *सक०* पेलल का प्रेरणार्थक रूप।
**पेलहड़ल** *सक०* जोर-जोर से प्रविष्ट करना; दबाकर भीतर पहुँचाना।
**पेलाइल** *सक०* पेला जाना।
**पेलाई** *स्त्री०* पेलने का भाव या काम।
**पेला-पेली** *यौ०* पेलने का भाव या काम।
**पेल्हड़** *पु०* अण्डकोश; फोता।

**पेवन** *पु०* फटे हुए वस्त्र में दूसरा जोड़ा गया कपड़े का टुकड़ा; पैबन्द।
**पेवसी** *स्त्री०* फेनसा।
**पेस** *पु०* सामने रखने का कार्य।
**पेसकार** *पु०* हाकिम के सामने कागज रखने के लिए नियुक्त कर्मचारी।
**पेसकी, पेसगी** *स्त्री०* काम से पहले दिया गया धन, अग्रिम।
**पेसतर** *क्रि०वि०* अकेले में।
**पेसरम** *स्त्री०* मेहनत, परिश्रम।
**पेसराज** *पु०* मकान बनाने वाला मजदूर, कारीगर।
**पेसल** *सक०* घुसाना, प्रवेश कराना।
**पेसा** *पु०* रोजगार, व्यवसाय।
**पेसाब** *पु०* मूत्र, पेसाब।
**पेसी** *स्त्री०* मुकदमें की सुनवाई।
**पेहना** *पु०* ढक्कन।
**पेहम** दे० 'पहम'।
**पेहान** *पु०* ढक्कन।
**पैंड़ा** *पु०* रास्ता, राह।
**पैंतरा** *पु०* पैर रखने की रीति या कला।
**पैंतालिस** *वि०* चालिस और पाँच।
**पैंसठ** *वि०* साठ और पाँच।
**पै** *पु०* 'पाय' [फा०] का लघु रूप, विकृत रूप। **-खाना** *पु०* पाखाना। **-माल** *वि०* पामाल। **-जामा** *पु०* पाजामा। **-ताना** पायँता।
**पैकड़** *पु०* पशुओं को बाँधने की लोहे की जंजीर।
**पैकर** *पु०* हाथी के पैर में बाँधने की लोहे की जंजीर।
**पैका** *पु०* गन्ने का गोफा सड़ने का रोग।
**पैकार** *पु०* छोटा व्यापारी, जो सौदा खरीदता-बेचता है।
**पैगम्बर** *पु०* [फा०] परमेश्वर के दूत।
**पैग** *पु०* पग, डग। उदा० 'तीन पैग बसुधा करी तऊ बावने नाम'—रहीम।
**पैगाम** *पु०* [फा०] सन्देशा, संवाद। **-बर** *पु०* दूत, सन्देशा पहुँचाने वाला।
**पैगामी** *पु०* [फा०] दूत, सन्देशवाहक।
**पैजनी** *स्त्री०* पाँवों में पहनने का एक गहना।
**पैजार** *पु०* [फा०] जूता।
**पैठ** *पु०* पहुँच; प्रवेश।
**पैठल** *अक०* प्रवेश करना।
**पैठान** *पु०* मुसलमानों की एक जाति, पठान।
**पैड** *पु०* [अं०] कागज की गड्डी।
**पैड़ी** *स्त्री०* पौदर। कुएँ से पानी खींचने वाले बैलों के लिए बना ढालुआ रास्ता।
**पैतरा** *पु०* कुश्ती, कलापूर्ण ढंग से विभिन्न स्थितियों में रहना। **-बाज** *वि०* चालबाज। **-बाजी** *स्त्री०* चालबाजी। **-बदलल** *मुहा०* नया हाथ दिखाना।
**पैतान** *पु०* खाट का वह भाग, जिधर सोने के बाद पैर रहता है।
**पैतींस** *वि०* पाँच और तीस।
**पैदल** *पु०* पाँव से चलने की स्थिति।
**पैदा** *पु०* [फा०] पैदावार, लाभ, उपज, प्राप्ति; जन्म।
**पैदाइस** *स्त्री०* [फा०] जन्म, उत्पत्ति।
**पैदावार** *पु०* खेत से उत्पन्न अन्न, फल आदि।
**पैन** *पु०* नाली।
**पैना** *पु०* बैलों को हाँकने की छड़ी, तेज धार का सामान।
**पैमाइस** *स्त्री०* [फा०] नाप, माप; मापने की क्रिया या भाव।
**पैमाना** *पु०* [फा०] नाप; प्याला।
**पैमाल** दे० 'पयमाल'।
**पैयाँ** *पु०* पैर, पाँव।

**पैर** *पु०* खलिहान में दाँवने के लिए छींटी हुई तैयार फसल; पाँव। *उदा०* 'पैर गरम सिर ठंढा, डाकतर आवे मारे डंडा'।
**पैरवी** *स्त्री०* [फा०] सफलता के लिए प्रयास; सिफारिश।
**पैरवीकार** *पु०* [फा०] पैरवी करने वाला।
**पैराँव** *पु०* खलिहान में गेहूँ के निकट डण्ठलों का दँवरी के लिए फैलाना।
**पैरा** *पु०* धान के लगे पौधों के बीच डाला गया दलहन, तेलहन का बीज जैसे खेंसारी।
**पैराकी** *स्त्री०* तैराक, वह व्यक्ति, जो अच्छी प्रकार तैरता है।
**पैराशूट** *पु०* [अं०] एक प्रकार की छतरी, जिसके सहारे ऊँचाई से उतरते हैं।
**पैरोकार** *पु०* पैरवीकार।
**पैरोल** *पु०* [अं०] वर्जित कार्य न करने और नियत समय पर हाजिर होने की प्रतिज्ञा।
**पैसा** *पु०* धन, द्रव्य। *उदा०* 'पैसा बा तऽ चकाचक बा'।
**पैसार** *पु०* प्रवेश, पैठ; घुसने-पैठने का मार्ग।
**पैसेंजर** *पु०* [अं०] यात्री। **-गाड़ी** *स्त्री०* सवारी ढोने वाली रेलगाड़ी। **-ट्रेन** *स्त्री०* पैसेंजर गाड़ी।
**पों** *स्त्री०* भोंपा; भोंपे की ध्वनि; अपान वायु निकलने का शब्द।
**पोंइटा** *पु०* धोती का वह भाग, जो दोनों जाँघों के बीच से पीछे की ओर खोंसा जाता है।
**पोंक** *पु०* पतला दस्त।
**पोंकिआवल** *सक०* कोई काम कराने के लिए बार-बार तंग करना।
**पोंछ** *स्त्री०* पूँछ, दुम।
**पोंछन** *पु०* बर्तन में लगी किसी वस्तु का शेषांश, जो पोंछने पर मिलता है।
**पोंछना** *पु०* वह वस्तु, जिससे पोंछा जाता है।
**पोंछल** *सक०* किसी बर्तन को कपड़े आदि से पोंछ कर साफ करना।
**पोंछवावल** *सक०* पोंछने का क़ाम दूसरे से कराना।
**पोंछड़ा** *पु०* ढेंकी का पावदान।
**पोंछ-डोलावन** *वि०* पिछलग्गू; चमचागिरी करना।
**पोंछिआ** *स्त्री०* बकरी की बिक्री में खरीददार द्वारा चरवाहे को दी गई छोटी राशि।
**पोंछी** *स्त्री०* मछली की पूँछ वाला हिस्सा।
**पोंछुई** *स्त्री०* पराठा।
**पोंटा** *पु०* नाक से निकलने वाला ढीला मैल, नेटा।
**पोअरा** दे० 'पुआर'।
**पोअल** *सक०* रोटी बनाना।
**पोआ** *पु०* साँप का बच्चा; तम्बाकू का छोटा पौधा।
**पोआरी** *स्त्री०* धान के पौधे की एक बीमारी, जिसमें वह सूख कर पुआल जैसा हो जाता है।
**पोइआ** *स्त्री०* घोड़े की एक चाल।
**पोई** *स्त्री०* हाल का जमा ऊँख; पंगोली, पोर, एक साग।
**पोखता** *वि०* मजबूत, दृढ़।
**पोखरा** *पु०* तालाब।
**पोखराज** *पु०* एक मूल्यवान पत्थर।
**पोखरी** *स्त्री०* छोटा जलाशय। *उदा०* 'पोखरी में पानी ना, हाथी के नेवता'।
**पोड़** *पु०* पशुओं द्वारा ढीला मल-त्याग के साथ निकलने वाली आवाज।

**पोचकारल** *सक०* प्रेमपूर्ण बातें कर किसी को अपने अनुकूल बना लेना। पुचकारना।
**पोचारा** *पु०* किसी घोल या तेल से दीवार को पोतने का कार्य; चापलूसी की बातें; चूने की पूताई।
**पोछल** *पु०* धोती का वह भाग, जो जाँघों के बीच से पीछे खोंसा जाता है।
**पोछिआ** *स्त्री०* बकरी खरीद पर दी गई छोटी राशि।
**पोटल** *सक०* अति प्रशंसा कर अपने अनुकूल बना लेना; अपनी तरफ कर लेना।
**पोटास** *पु०* एक रसायन पदार्थ; खाद।
**पोटी** *स्त्री०* पेट के दोनों बगल का हिस्सा।
**पोठरी** दे० 'पोठिआ'।
**पोठिआ** *स्त्री०* एक प्रकार की छोटी मछली। *उदा०* 'पोठिआ कनिया झींगवा बर'।
**पोढ़** *वि०* बलिष्ठ, मजबूत।
**पोतदार** *पु०* खजांची।
**पोतनहरी** *स्त्री०* मिट्टी की वह हाँड़ी, जिसमें मिट्टी और पोतना रखा रहता हो।
**पोतना** *पु०* लीपने के लिए व्यवहार में आने वाला टुकड़ा।
**पोतल** *सक०* किसी गीली वस्तु से लीपना; पोचारा करना।
**पोता** *पु०* [सं० पौत्रः] पुत्र का पुत्र; अण्डकोष।
**पोताई** *स्त्री०* पुताई।
**पोती** *स्त्री०* [सं० पौत्रीः] पुत्र की पुत्री, पौत्री।
**पोथा** *पु०* [सं० पुस्तकम्] विशालकाय पुस्तक; कागजों का बण्डल।
**पोथी** *स्त्री०* [सं० पुस्ती] छोटी पुस्तक। *उदा०* 'पोथी के आगे थोंथी कुछ ना'।
**पोदीना** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जो चटनी तथा औषधियों में प्रयुक्त होता है।
**पोय** *पु०* एक प्रकार की लता, जिसका साग बनता है।
**पोर** *स्त्री०* अँगुली की दो गाँठों के मध्य का भाग; पौधे की गाँठ।
**पोरगर** *वि०* लम्बा पोर वाला।
**पोरसा** *पु०* मनुष्य के हाथ उठाने पर पैर से उठाये हाथ की अँगुली तक की लम्बाई की माप।
**पोरसी** *स्त्री०* धान के पुआल की छोटी भूस्सी।
**पोरी** *स्त्री०* पोर।
**पोरुआ** *पु०* एक गहना।
**पोल** *पु०* रिक्त स्थान; भेद।
**पोला** *वि०* खोखला, जो ठोस न हो।
**पोलकारल** *सक०* किसी की चापलूसी कर बढ़ावा देना।
**पोलाव** *पु०* पुलाव।
**पोल्हावल** *सक०* फुसलाना।
**पोवल** *सक०* आटे की लोई की रोटी हाथ से बनाना।
**पोस** *पु०* पोसने की क्रिया।
**पोसउनी** *स्त्री०* मवेशी पोसने का पारिश्रमिक।
**पोसनिहार** *पु०* पालक।
**पोसपुत** *पु०* गोद लिया हुआ पुत्र, दत्तक पुत्र।
**पोसल** *सक०* पालन करना; पोसना।
**पोसाइल** *अक०* पूरा पड़ना; लाभदायक सिद्ध होना।
**पोसाक** *पु०* पहनने का वस्त्र।
**पोसुआ** *वि०* पालतू, पाला गया।
**पोसेआ** *वि०* पोसा हुआ; पोसने के लिए दिया हुआ।
**पोस्ट** *पु०* [अं०] डाक; खम्भा; स्थान, जगह; पद; नौकरी। **-ऑफिस** *पु०* डाकघर। **-कार्ड** *पु०* डाकखाने से खरीदा जाने वाला कागज, जिस पर चिट्ठी लिखी जाती है। **-बॉक्स** *पु०*

पेटी। -**बैग** *पु०* डाक का थैला। -**मास्टर** *पु०* डाकघर का प्रधान। -**मैन** *पु०* डाकिया, पत्रवाहक।

**पोस्टर** *पु०* [अं०] बड़े अक्षरों में प्रस्तुत नोटिस।

**पोस्टल** *वि०* [अं०] डाकघर सम्बन्धी; डाक विभाग सम्बन्धी। -**ऑर्डर** *पु०* डाकीय आदेश।

**पोस्ता** *पु०* एक पौधा, जिसकी छीमी से अफीम निकलती है।

**पोस्ती** *वि०* अफीमची, काहिल।

**पोहल** *सक०* पिरोना, गूँथना।

**पोहपित** *वि०* तरल पदार्थ से सिक्त; खिलना।

**पौंचा** *पु०* साढ़े पाँच का पहाड़ा।

**पौंड़ी** *स्त्री०* मछली मारने का एक प्रकार का जाल।

**पौ** *पु०* प्रात:काल की ज्योति, किरण; प्याऊ। -**फटल** *मुहा०* तड़का होना।

**पौआ** *पु०* पउआ।

**पौन** *पु०* एक के तीन चौथाई का पहाड़ा; काठ या लोहे का बड़ा करछुल; हवा।

**पौना** *पु०* करछुल।

**पौनी** *स्त्री०* बढ़ई, नाई आदि, जिन्हें इनाम दिया जाता है।

**पौर** *स्त्री०* ड्योढ़ी। पु० नागरिक।

**पौरा** *पु०* द्वार के पास का गोठा; आगमन; चरण।

**पौरी** *स्त्री०* द्वार, डेवढ़ी; खड़ाऊँ।

**पौरुख** *पु०* पौरुष।

**पौवा** *पु०* सेर का चौथा भाग।

**पौसरा** *पु०* जहाँ धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है।

**प्यार** *पु०* प्रेम, प्रीति।

**प्यारा** *वि०* प्रिय।

**प्याला** *पु०* [फा०] पीने का बर्तन।

**प्यास** *स्त्री०* तृषा, पीने की इच्छा, पिपासा।

**प्रकार** *पु०* [सं०] भेद, किस्म।

**प्रकास** *पु०* [सं०] उजाला, तेज।

**प्रकृति** *स्त्री०* [सं०] स्वभाव, मिजाज, जगत् का मूल तत्त्व।

**प्रकोप** *पु०* [सं०] उत्तेजना, विद्रोह, बीमारी का जोर।

**प्रखर** *वि०* [सं०] तेज, उग्र, प्रचण्ड।

**प्रगति** *स्त्री०* आगे बढ़ना, उन्नति।

**प्रचंड** *वि०* [सं०] अति तीव्र, प्रखर।

**प्रचार** *पु०* [सं०] घूमना-फिरना; प्रयोग; चलन।

**प्रचारक** *वि० पु०* प्रचार करने वाला।

**प्रछालन** *सक०* धोना।

**प्रजंत** *अव्य०* पर्यन्त।

**प्रजा** *स्त्री०* [सं०] सन्तति, जनता।

**प्रणाम** *पु०* [सं०] नमस्कार, अभिवादन।

**प्रतिनिधि** *पु०* [सं०] प्रतिरूप, स्थानापन्न व्यक्ति।

**प्रथम** *वि०* [सं०] पहला; प्रधान; अव्वल।

**प्रदेश** *पु०* [सं०] प्रान्त; स्थान, भू-भाग।

**प्रधान** *वि०* [सं०] सबसे बड़ा, मुख्य।

**प्रपंच** *पु०* [हिं०] छल, धोखा।

**प्रमाण** *पु०* [सं०] सबूत।

**प्रयोग** *पु०* [सं०] व्यवहार, इस्तेमाल।

**प्रसव** *पु०* [सं०] बच्चा जनना।

**प्रसाद** *पु०* [सं०] कृपा, चढ़ाई गई वस्तु; प्रसन्नता।

**प्रसार भारती** *स्त्री०* रेडियो और दूरदर्शन से सम्बद्ध संस्था।

**प्रांगण** *पु०* [सं०] आँगन।

**प्रांत** *पु०* प्रदेश।

**प्राइवेट** *वि०* [अं०] निजी, गुप्त।

**प्राण** *पु०* [सं०] वायु, जीवन, जान।

**प्रार्थना** *स्त्री०* याचना।

**प्रिय** *वि०* [सं०] प्यारा।

**प्रीतम** *पु०* अतिप्रिय व्यक्ति, पति।

**प्रेम** *पु०* [सं० प्रेमन्] स्नेह, प्रीति, अनुराग, प्यार। *उदा०* 'प्रेम में नेम कहाँ?'

**प्रेमी** *पु०* [सं०] प्रेम करने वाला।

**प्रेरक** *वि०* [सं०] प्रेरणा देने वाला।

**प्रेषक** *वि०* [सं०] भेजने वाला।

**प्रेस** *पु०* छापाखाना।

**कॉन्फरेंस** *पु०* पत्रकार सम्मेलन, प्रेसवार्ता।

**प्रेसिडेंट** *पु०* [अं०] राष्ट्रपति।

**प्रोफेसर** *पु०* [अं०] आचार्य।

**प्लान** *पु०* [अं०] योजना, स्कीम।

**प्लास्टर** *पु०* [अं०] प्लास्तर।

**प्लेट** *पु०* [अं०] तस्तरी, पट्टी।

**प्लेटफॉर्म** *पु०* [अं०] मंच; रेलवे स्टेशन पर बना लम्बा चबूतरा।

❑

# फ

**फ** देवनागरी वर्णमाला के पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

**फंक** *स्त्री०* फाँक।

**फँकनी** *स्त्री०* फंकी।

**फँकवावल** *सक०* फाँकने का काम दूसरे से कराना।

**फंका** *पु०* [हिं० फाँकना] किसी वस्तु का उतना भाग, जो एक बार फाँका जा सके। **-कइल** *मुहा०* नष्ट करना।

**फँकावल** *सक०* फाँकने में सहायक होना।

**फँकाह** *पु०* दूर-दूर पर की जाने वाली जुताई-बोआई से दूर-दूर तक जमा हुआ (पौधा)।

**फंकी** दे० 'फंक्की'।

**फंक्की** *स्त्री०* चूर्ण के रूप में दवा, जिसे फाँका जा सके।

**फंग** *पु०* फन्दा, बन्धन। *उदा०* 'मति कोई प्रीति के फंग परै'। -सूरदास

**फंड** *पु०* [अं०] कार्यविशेष हेतु अलग रखा हुआ धन।

**फंद** *पु०* [सं० बन्धः] छल, झंझट, झमेला। **-वार** *वि०* फँसाने वाला।

**फँदनी** *स्त्री०* एक प्रकार का पतला गन्ना।

**फंदा** *पु०* तागे या रस्सी का बना फँसाने का पाश; झंझट। **-छुड़ावल** *मुहा०* कैद से रिहा होना।

**फंदावल** *सक०* किसी से फँदाने का काम कराना।

**फंदिया** *पु०* खेत की चौड़ाई की ओर से की जाने वाली जुताई।

**फँफाइल** *अक०* खौलते हुए दूध, दाल का ऊपर उठना।

**फँफेली** *स्त्री०* गला।

**फँसड़ल** *अक०* फैल जाना (शरीर); बेतरतीब मोटापा आना।

**फँसरी** *स्त्री०* गले का फन्दा; फाँस।

**फँसल** *अक०* फन्द में पड़ना, बन्धन में आना; अवैध प्रेम-सम्बन्ध में पड़ना; उलझना।

**फँसवावल** *सक०* फँसाने का काम दूसरे से कराना।

**फँसाव** *पु०* अटकाव।

**फँसावल** *सक०* उलझाना।

**फँसिया** *पु०* एक प्रकार की मछली।

**फँसुल** *पु०* तरकारी काटने का एक औजार।

**फँसुली** *स्त्री०* ताड़ का फल काटने की हँसिया।

**फ** *पु०* [सं०] फूत्कार; जम्भाई। *वि०* प्रत्यक्ष।

**फइल** *वि०* चौड़ा, काफी जगह वाला, विस्तृत।

**फइलल** *अक०* पसरना, विस्तृत होना; लेट जाना, नकार देना।

**फइलार** *वि०* पूरा फैला हुआ।

**फइलावल** *सक०* पसारना, छितराना, विस्तृत करना।

**फइली** *स्त्री०* जगह की अधिकता।

**फउकल** *अक०* आवेश में आकर बोलना।

**फउज** *पु०* सेना, फौज।

**फउजदारी** *स्त्री०* वह कचहरी, जहाँ अपराध सम्बन्धी मुकदमें देखे जाते हैं, फौजदारी।

**फउती** *स्त्री०* जन्म और मृत्यु के उल्लेख की बही (पुलिस)।

**फक** *वि०* बदरंग; फीका; सफेद; स्वच्छ।

**फकड़ा** *पु०* एक विद्या, जिसमें गुप्त बातें जानी जाती हैं।

**फकत** *वि०* [अ०] अकेला, एकमात्र।

**फका** *पु०* टुकड़ा।

**फकीर** *पु०* [अ०] भिखारी, मुसलमान, साधु। *उदा०* 'फकीर, कर्जदार, लइका तीनों नाहिं समझे'। लोको०

**फकीरनी** *स्त्री०* भीख माँगने वाली स्त्री।

**फकीराना** *वि०* फकीरों-सा।

**फकीरी** *स्त्री०* फकीर का भाव; भिखारीपन।

**फक्क** *पु०* [सं०] पंगु, विकलांग।

**फक्क** *पु०* [अ०] खोलना, छुड़ाना।

**फक्कड़** *पु०* [अ० फकीर] लापरवाही के साथ खर्च करके निर्धन बना व्यक्ति।

**फख** *पु०* [फा०] घमण्ड, गर्व।

**फखर** *पु०* दे० 'फख'।

**फग** *पु०* जाल, फन्दा।

**फगुअही** *स्त्री०* होली के त्योहार के अवसर पर नौकरों को दी जाने वाली राशि।

**फगुआ** *पु०* होली के त्योहार के अवसर पर गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत; रंगभरी होली।

**फगुनहट** *स्त्री०* फागुन के महीने में बहने वाली तेज हवा।

**फगुनी** *वि०* फागुन में तैयार होने वाली फसल। *उदा०* 'चमचम चमकेला फगुनी उजोरिया चमकेला घर पछुआर। गमगम गमकेला आम के मौजरिया गमकेला अँगना दुआर'। -लोकगीत

**फचाफच** *पु०* पानी में चलने से पैदा होने वाली आवाज।

**फजली** *स्त्री०* एक बड़े आकार का आम।

**फजिरे** *पु०* [अ० *स्त्री०* फजर] सबेरा, प्रात:काल।

**फजिअत** *स्त्री०* [अ० *स्त्री०* फजीहत] बेइज्जती, गाली।

**फजिहतताई** *स्त्री०* फजीहत करने वाली बात।

**फजीलत** *स्त्री०* [अ०] गौरव।

**फजीहत** *स्त्री०* [अ०] अपमान, बदनामी।

**फजीहती** *स्त्री०* दे० 'फजीहत'।

**फजूल** *पु०* [अ०] व्यर्थ, बेकार। **-खरच** *वि०* बेकार (खर्च)।

**फट** *स्त्री०* सूखी हुई पतली लकड़ी के टूटने का शब्द।

**फटउँस** *पु०* फटा हुआ दूध।

**फटक** *पु०* किसी वस्तु के भाव का अनुमान लगाकर उस पर जुआ खेलना; स्फटिक मणि।

**फटकचंद** *पु०* वह व्यक्ति, जिसके पास कुछ भी नहीं हो फिर भी वह मस्त हो। *उदा०* 'फटकचंद गिरधारी जिनका लोटा ना थारी'।

**फटकन** *स्त्री०* खपरैल की छत पर लगा बाँस; किसी अनाज के फटकने पर उससे निकला बेकार पदार्थ।

**फटकल** *सक०* सूप के सहारे अन्न के दाने को साफ करना; व्यर्थ की बातें करना।

**फटकवावल** *सक०* फटकने का काम किसी दूसरे से कराना।

**फटका** *पु०* धुनिये की धुन; फाटक।

**फटकार** *स्त्री०* फटकारने का भाव, लजवाने, अपमानित करने के लिए कही गई कड़वी बात।

**फटकारल** *सक०* डाँटना, डपटना।

**फटकी** *स्त्री०* खेत का छोटा भाग, जिसका उपयोग मजदूर शीघ्र खतम करने के लिए करते हैं; चौड़ाई की तरफ से खेत की जुताई।

**फटफट** *पु०* फटफट की आवाज; अतिशीघ्र।
**फटफटाइल** *अक०* फटफट की आवाज होना; बकवास करना।
**फटफटिआ** *पु०* मोटरसाइकिल।
**फटल** *अक०* दरार पड़ना (जमीन); किसी वस्तु के अंश का उससे किंचित् अलग हो जाना। *उदा०* 'फटलोत पितंमरी'।
**फटलवांसी** *स्त्री०* फटा हुआ आम या नींबू।
**फटहई** *स्त्री०* बदमाशी।
**फटहा** *वि०* फटफट बोलने वाला व्यक्ति, व्यर्थ की बातें बोलते रहने वाला।
**फटा** *पु०* [सं०] साँप का फन; दाँत।
**फटाक** *पु०* किसी कड़ी वस्तु के टूटने की आवाज। **-से** *क्रि०वि०* झट से।
**फटाका** *पु०* 'फट' की बुलन्द आवाज; पटाखा।
**फटाटोप** *पु०* [सं०] साँप के फन का फैलाव।
**फटाफट** *क्रि०वि०* बराबर फटफट आवाज के साथ।
**फटाव** *पु०* फटने से पड़ी दरार।
**फटिका** *स्त्री०* एक तरह की शराब।
**फटीचर** *वि०* फटेहाल। *उदा०* 'शकल सूरत फटीचर के, नाम बा मनोहर लाल'।
**फट्** *स्त्री०* [सं०] एक शब्द, जिसका प्रयोग तंत्र-मंत्र में होता है।
**फट्ठा** *पु०* बाँस को फाड़कर बनाई गई लाठी; फटहा।
**फट्ठी** *स्त्री०* बाँस को फाड़कर बनाई गई बाती; पसली की हड्डी।
**फड़** *स्त्री०* [सं० पण:] जुए का दाँव; जुए का अड्डा; दल, पंक्ति। **-बाज** *पु०* जुआड़ी।
**फड़क** *स्त्री०* स्फुरण, स्पन्दन।
**फड़कन** *स्त्री०* दे० 'फड़क'।
**फड़कल** *अक०* थोड़ा-थोड़ा रुक-रुक कर कम्पित होना।
**फड़िंगा** *स्त्री०* [सं०] फतिंगा; झींगुर।
**फड़िया** *पु०* फुटकर माल बेचने वाला बनिया।
**फड़ी** *स्त्री०* ईंट का एक गज चौड़ा, एक गज ऊँचा, तीस गज लम्बा ढेर।
**फड़ुआ** *पु०* कुदाल, फावड़ा।
**फड़ई** *स्त्री०* लाई।
**फतिंगा** *पु०* उड़ने या कूदने वाला कीड़ा, पतंग; परवाना।
**फतुराती** *वि०* उपद्रव, खुराफात।
**फतुही** *स्त्री०* बण्डी, बिना बाँही की कुर्ती।
**फतेआ** *पु०* प्रार्थना। *उदा०* 'फतेआ पढ़ऽना, सिरनी पर मन लागल बा'।
**फतेह** *स्त्री०* [अ०] जीत, विजय।
**फद-फद** *पु०* किसी वस्तु को उबालते समय उससे निकली आवाज।
**फदगुद्दी** *स्त्री०* अत्यन्त छोटी चिड़िया।
**फदगोबर** *पु०* आलसी, सुस्त, फुहड़ा।
**फन** *पु०* हुनर; साँप के सिर का ऊपरी भाग।
**फनइता** *वि०* छलाँग भरने वाला बहादुर।
**फनगा** *पु०* कूदने और उड़ने वाला कीड़ा।
**फनगी** *स्त्री०* छोटा कीड़ा, जो गेहूँ, चना, जौ आदि की जड़ों को काटता है।
**फनफन** *क्रि०वि०* फुर्ती से।
**फनफनाइल** *अक०* आवेश में तेज चलना।
**फनस** *पु०* पनस, कटहल।
**फना** *स्त्री०* [अ०] मिटना, मौत, विनाश।
**फनूस** *पु०* एक प्रकार की कन्दील, जिसमें बत्तियाँ रखने के लिए गिलास आदि लगा रहता है।
**फफकार** *क्रि०वि०* मुँह फैला हुआ।
**फफनार** दे० 'फफकार'।

**फफरा** *पु०* लकड़ी के दो पटरों के बीच का खाली स्थान, छेद।

**फफाइल** *अक०* तेजी से बढ़ना, धन-सम्पदा, कारोबार।

**फफेली** *स्त्री०* गले से ऊपर ठुड्डी और गाल का भाग, जबड़ा।

**फफेहरा** *वि०* व्यग्र, बेचैन।

**फफोर** *पु०* मक्का का भात।

**फफोला** *पु०* [सं० प्रस्फोटः] जलने, रगड़ने से शरीर पर होने वाला उभार, छाला, झलका।

**फवती** *स्त्री०* चुटीली बात; प्रसंगानुकूल उक्ति।

**फबन** *स्त्री०* शोभा, फबने का भाव।

**फबल** *अक०* शोभा देना, सजना।

**फबीला** *वि०* सुन्दर, शोभा देने वाला।

**फयसन** *पु०* [अं०] चाल, ढंग, रीति, प्रथा, फैशन।

**फर** *पु०* फसलों एवं पौधों के फल; बिछावन।

**फरक** *स्त्री०* अन्तर, अलगाव।

**फरकझार** *वि०* अलग-अलग (फसल का पौधा)।

**फरकल** *अक०* किसी अंग में अचानक गति पैदा होना, फड़कना; फड़कने का भाव।

**फरका** *क्रि०वि०* अलग, जुदा; मिर्गी, अपस्मार।

**फरकावन** *पु०* एक प्रकार का शुल्क, जो जमींदारों के पटवारी रैयतों से मालगुजारी की रसीद देते समय लेते थे।

**फरकाह** *पु०* अलग-अलग रहने की स्थिति (पौधा)।

**फरकिल्ला** *पु०* बैलगाड़ी के फर में लगा कील।

**फरकोर** *वि०* अलग-अलग।

**फरगजी** *वि०* कपड़े के थान से काट कर निकाला गया वस्त्र-खण्ड।

**फरचउक** *वि०* निर्मल, फुर्तीला।

**फरछंत** *वि०* साफ-सुथरा रहने वाला व्यक्ति।

**फरछाँही** *स्त्री०* छाया, किसी छाँह से बनी आकृति।

**फरजी** *पु०* [फा०] शतरंज का एक मोहरा, जिसे वजीर भी कहते हैं। *वि०* [फा०] नकली, बनावटी, कल्पित।

**फरठा** *पु०* बाँस का चीरा गया टुकड़ा, जिससे घर छाया जाता है।

**फरद** *पु०* [अ०] किसी वस्त्र के दो पल्लों में एक टुकड़ा।

**फरदखान** *पु०* [अ०] खुली जगह।

**फरदवाल** *पु०* घोड़े की चाल, जिसमें वह तेजी से दौड़ता है।

**फरदा** *पु०* [फा०] आनेवाला दिन, कल।

**फरदाँव** *पु०* खुली जगह।

**फरनाठी** *स्त्री०* बाँस की फाड़ी, छड़ी।

**फरफंद** *पु०* फरेब, छल-कपट।

**फरफंदी** *वि०* फरेबी, चालबाज।

**फर फर** *यौ०* चिड़ियों के उड़ने पर उनके पंख से निकली आवाज।

**फरफराइल** *अक०* फर-फर शब्द करना।

**फरफरावल** *सक०* चिड़ियों द्वारा पंख फरफराना।

**फरमा** *पु०* [अं० फ्रेम] ढाँचा, साँचा।

**फरमाइस** *पु०* [फा०] किसी वस्तु के तैयार करने या लाने के लिए आदेश या आग्रह।

**फरमाइसी** *वि०* [फा०] विशेषरूप से आदेश देकर बनवाई गई कोई चीज।

**फरमान** *पु०* [फा०] आज्ञा।

**फरमावल** *सक०* किसी वस्तु के लिए आज्ञा या आदेश देना।

**फरल** *अक०* पौधों में फल लगना।

**फरवी** *स्त्री०* लाई।
**फरस** *स्त्री०* [अं०] दरी, बिछौना; जमीन।
**फरसस्त** *वि०* व्यवधानरहित; प्रशस्त।
**फरमा** *पु०* [सं० परशुः] चौड़ी और तेज धार का एक प्रकार का हथियार; फावड़ा।
**फरसाद** *पु०* [फा०] झगड़ा, बखेड़ा, उपद्रव।
**फरहत** *स्त्री०* [अ०] प्रसन्नता।
**फरहद** *पु०* एक प्रकार का पौधा।
**फरहर** *वि०* फुर्तीला; वर्षा के पानी सूखने पर जोतनेयोग्य खेत।
**फरहा** *पु०* एक प्रकार की बड़ी मछली।
**फरहारा** *पु०* बड़े आकार का पताका, झण्डा।
**फरहरी** *स्त्री०* फलने वाली सब्जी की लता।
**फरही** *वि० स्त्री०* चिउरी।
**फरांसीसी** *वि०* फ्रांस देश का रहने वाला; एक प्रकार का लाल छींट का वस्त्र।
**फराक** *पु०* [अं० फ्रॉक] बच्चियों के पहनने का एक लम्बा वस्त्र।
**फरागत** *पु०* [फा०] शौच से निवृत्ति।
**फरार** *पु०* [अ०] भागना।
**फरारी** *वि०* भागा हुआ।
**फरास** *पु०* डेरा लगाने वाला, बिछौना; बिछाने का काम करने वाला व्यक्ति।
**फराहिन** *पु०* अवकाश।
**फरिआ** *स्त्री०* लहँगा, ओढ़नी।
**फरिआइल** *अक०* साफ होना, निपटारा होना।
**फरिआवल** *सक०* तय करना, निपटारा करना।
**फरिऔता** *पु०* लेन-देन का हिसाब तय करने की स्थिति या भाव।
**फरिछ** *वि०* साफ; प्रकाश।
**फरिछाइल** *अक०* गन्दगी या तलछट का नीचे बैठ जाना, साफ होना।
**फरिछावल** *सक०* मामले का निपटारा करवाना।
**फरिया** *स्त्री०* दे० 'फरिआ'।
**फरियाद** *स्त्री०* [फा०] नालिश, दुहाई।
**फरियादी** *वि०* नालिश करने वाला।
**फरियाइल** *सक०* साफ होना, निर्णय आना।
**फरिस्ता** *पु०* [फा०] देवदूत; देवता।
**फरी** *स्त्री०* चमड़ा मढ़ी हुई एक छड़ी, जिसका उपयोग डण्डे के एक खेल में होता है; गाड़ी में ठुकी पट्टियाँ; धार।
**फरीक** *पु०* [अ०] विरोधी, विपक्षी; वादी-प्रतिवादी।
**फरीकैन** *पु०* वादी-प्रतिवादी।
**फरुआ** *पु०* लकड़ी का एक उपकरण, जिसका उपयोग प्याज रोपने में होता है; चौड़े फलक की कुदाल।
**फरुही** *स्त्री०* जौ का भूँजा; लाई; अधपकी इमली।
**फरेंद** *वि०* [फा०] ज्यादा फल देने वाला पेड़।
**फरे** *पु०* सफलता, कामयाबी।
**फरेन** *वि०* फल देने वाला वृक्ष।
**फरेनवा** *पु०* [फा०] बड़े आकार का जामुन का बेर।
**फरेब** *पु०* [फा०] कपट, छल, प्रपंच।
**फरेबी** *वि०* धूर्त, धोखेबाज, कपटी, जालसाज।
**फरेरा** *पु०* झण्डा, पताका।
**फरेरी** *स्त्री०* फरहरी।
**फरोख्त** *स्त्री०* बिक्री।
**फर्क** *पु०* [अ०] अन्तर, दूरी।
**फर्ज** *पु०* [अ०] कर्त्तव्य।
**फर्जी** *वि०* खयाली, काल्पनिक।
**फर्म** *स्त्री०* [अं०] साझेदारी।
**फर्राटा** *पु०* तेजी।
**फर्श** *पु०* [अ०] धरातल।

**फल** *पु०* परिणाम; आम, लीची, जामुन, अमरूद आदि।
**फलकार** *पु०* फलों पर लगने वाला कर या राजस्व।
**फलगुनी** *स्त्री०* फाल्गुन में होने वाली फसल; फल्गुनी नक्षत्र।
**फलगू** *पु०* गया के निकट बहने वाली एक प्रसिद्ध नदी, फल्गू।
**फलताड़-फलतार** *पु०* वह तालवृक्ष, जिसमें फल लगता है।
**फलदान** *पु०* वररक्षा।
**फलना** *वि०* [अ० फलाँ] अमुक।
**फलरा** *पु०* दुर्गम स्थान।
**फलसा** *पु०* फल्ली।
**फलान** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग।
**फलाना** *वि०* अमुक, कोई अनिश्चित व्यक्ति।
**फलालैन** *पु०* एक प्रकार का कपड़ा।
**फली** *स्त्री०* छिम्मी।
**फसकल** *अक०* शरीर के मांस का फैलना, मुटाई आना।
**फसल** *पु०* खेत की उपज; खेत में उपजने वाला पौधा।
**फसली** *स्त्री०* अकबर का चलाया सन्, जिसका व्यवहार कृषि एवं जमींदारी कार्य में होता है; हैजा।
**फसिल** दे० 'फसल'।
**फसिली** *स्त्री०* हैजे की बीमारी।
**फहम** *पु०* [अ०] होश, बुद्धि।
**फहरल** *अक०* [सं० प्रसरणम्] हवा में इधर-उधर उड़ना, फहराना।
**फाँक** *पु०* [सं० फलकम्] दरार; किसी वस्तु का कटा हुआ टुकड़ा।
**फाँकल** *सक०* फाँकना।
**फाँकी** *स्त्री०* फाँकने की वस्तु।
**फाँट** *पु०* हिस्सा; बखरा-बाँट; दूरी।
**फाँटल** *सक०* विभाजित करना, बाँटना।
**फाँड़** *पु०* किसी गोलाकार वस्तु के दो टुकड़ों में से एक।१
**फाँड़ल** *सक०* वृत्ताकार वस्तु को दो टुकड़ों में बाँटना।
**फाँड़ा** *पु०* कमर में लपेटी धोती का पेंच।
**फाँड़ी** *स्त्री०* शाखा, अंश; अन्तर, दूरी।
**फाँफड़** *पु०* दो वस्तुओं के बीच का रिक्त स्थान, दरार।
**फाँय-फाँय** *क्रि०वि०* जोरों की हवा के चलने की आवाज।
**फाँस** *स्त्री०* [सं० पाशः] नारी (नाली); बर्तन के गले के चारों ओर लपेटी हुई रस्सी की गाँठ।
**फाँसल** *सक०* घड़े में रस्सी बाँधना; जाल में फँसना।
**फाँसी** *स्त्री०* प्राणदण्ड; रस्सी का वह फन्दा, जो गले में डालकर किसी को मार डाला जाता है।
**फाइन** *पु०* [अं०] जुर्माना। *वि०* सुन्दर।
**फाइबर** *पु०* [अं०] रेशा।
**फाइल** *स्त्री०* [अं०] नुकीला तार, जिस पर सिलसिलेबार पेपर्स रखे जाते हैं।
**फाउंटनपेन** *पु०* [अं०] फाउन्टेनपेन।
**फाएट** *पु०* घूँसा।
**फाका** *पु०* [अ०] उपवास; भूखा रहना। **-कशी** *स्त्री०* भूखों मरना। **-मस्त** *वि०* अभाव में बेफिक्र रहने वाला।
**फाग** *पु०* फाल्गुन महीने में होने वाला उत्सव, होली; होली में गाया जाने वाला एक गीत।
**फागुन** *पु०* [सं० फाल्गुनः] माघ के बाद और चैत के पूर्व का महीना।
**फाजिल** *वि०* आवश्यकता से अधिक, जरूरत से ज्यादा।

**फाट** *स्त्री०* दरार, छिद्र। -**बंदो** *स्त्री०* बँटवारा।
**फाटक** *पु०* [सं० कपाट:] बड़ा दरवाजा; वह घेरा, जहाँ फसल को नुकसान करने वाले मवेशियों को पहुँचाया जाता है।
**फाटल** *अक०* दरार पड़ना, टुकड़ा होना। *उदा०* 'फाटल दूध ना जमें'।
**फाटल-चीथल** *वि०* फटा हुआ।
**फाटी** *स्त्री०* कोदो का टूटा चावल।
**फाटो** *पु०* धान की बाली का एक रोग।
**फाड़ल** *सक०* [सं० स्फाटनम्] फाड़ना।
**फान** *पु०* किसी गोल या फोंफली वस्तु का भीतरी या बाहरी घेरा; किसी को फँसाने के लिए रचा गया प्रपंच।
**फानल** *अक०* कूदना, फाँदना।
**फाना** *पु०* वन्य पशुओं को फँसाने का जाल; किसी को फँसाने के लिए रचा गया प्रपंच।
**फानी** *स्त्री०* चिड़ियों या वन-पशुओं को फँसाने के लिए लगाया गया फन्दा।
**फायदा** *पु०* नफा, लाभ।
**फार** *पु०* हल में लगा लोहे का धार, जिससे खेत जोता जाता है।
**फारखती** *स्त्री०* [फा०] ऋण की अदायगी के सबूत में दिया गया लेख, दस्तावेज।
**फारम ( गेहूँ )** *पु०* एक अच्छे किस्म का गेहूँ।
**फारल** *सक०* चीरना, टुकड़ा-टुकड़ा करना; दूध के पानी और ठोस भाग को अलग करना।
**फारस** *पु०* भारत के पश्चिम का एक मुस्लिम देश, ईरान।
**फारसी** *स्त्री०* फारस की भाषा।
**फारा** *पु०* किसी फल या लकड़ी को दो या अधिक हिस्सों में विभाजित करने पर प्राप्त हिस्सा, फाल, फरा।
**फाराई** *स्त्री०* पारने की मजदूरी, भाव या कार्य।
**फारुआ** *पु०* कूँड़ में बोया जाने वाला आलू।
**फाल** *पु०* डेग, छलाँग, चलते समय दोनों पैरों की दूरी, कदम।
**फालतू** *वि०* निकम्मा, जरूरत से अधिक बेगार, फाजिल।
**फालसा** *पु०* एक प्रकार का फल।
**फालिस** *पु०* लकवा।
**फालूदा** *पु०* एक व्यंजन।
**फासला** *पु०* अन्तर, दूरी।
**फाहा** *पु०* धूनी हुई रूई का टुकड़ा; इत्र से तर रूई।
**फिक** *पु०* चाबुक के फीते के अन्त का झालादार गुच्छा।
**फिकिर** *पु०* चिन्ता, उपाय, व्यवस्था।
**फिचकारी** *स्त्री०* पानी आदि को जोर से फेंकने का यंत्र, पिचकारी।
**फिटकाल** *पु०* मुसीबत, उलझन। -**पड़ल** *मुहा०* उलझन में पड़ना।
**फिटकिरी** *स्त्री०* एक श्वेत खनिज वस्तु, जिसका उपयोग पानी साफ करने में होता है।
**फिटन** *स्त्री०* [अं०] चार पहिए की धोड़ा-गाड़ी।
**फिटर** *पु०* [अं०] मिस्तरी।
**फितना** *पु०* [अ०] झगड़ा-फसाद; उपद्रव।
**फितरत** *स्त्री०* [अ०] स्वभाव, प्रकृति।
**फितरतन** *अव्य०* प्रकृति से, स्वभावत:।
**फितरती** *वि०* शरारती, चालबाज।
**फिदवी** *वि०* आज्ञाकारी; इसका प्रयोग कचहरियों में आवेदन-पत्र में होता था।
**फिनु** *क्रि०वि०* फिर।
**फिरंगी** *स्त्री०* इंग्लैण्ड का निवासी; गौरांग।

**फिरंट** *वि०* व्यर्थ घूमने वाला; झगड़ालू, विमुख।

**फिर** *अव्य०* पीछे, अनन्तर; तब; पुनः। **-फिर** *अव्य०* बार-बार। **-भी** *अव्य०* तब भी।

**फिरका** *पु०* [अ०] जमात, समुदाय; सम्प्रदाय।

**फिरकी** *स्त्री०* चकई; फिरहरी।

**फिरता** *पु०* अस्वीकार; वापसी।

**फिरती** *स्त्री०* लौटते समय।

**फिरल** *अक०* घूमना, चक्कर लगाना, लौटना।

**फिरहिरी** *स्त्री०* नाचने वाला, खिलौना।

**फिराक** *पु०* [अ०] चिन्ता; खोज; टोह; वियोग।

**फिरार** *वि०* भागा हुआ।

**फिरिस्त** *पु०* सूची-पत्र. सूची।

**फिलहाल** *अव्य०* तत्काल; अभी।

**फिल्ली** *स्त्री०* पिण्डली।

**फिस** *वि०* सारहीन। **-हो गइल** *मुहा०* बेकार हो जाना।

**फिसड्डी** *वि०* निकम्मा; पीछे रह जाने वाला।

**फिसफिसाइल** *अक०* फिस हो जाना।

**फिसलल** *अक०* सरकना।

**फिहरिस्त** *स्त्री०* [अ०] सूची।

**फींचल** *सक०* कचारना।

**फी** *अव्य०* प्रत्येक, हरएक।

**फीक** *वि०* लम्बा और पतला।

**फीका** *वि०* आवश्यकता से कम नमक, सीठा, नीरस।

**फीचन** *स्त्री०* फीचने का भाव या कार्य, झमेला, झंझट।

**फीता** *पु०* [पुर्त०] पतला और लम्बा वस्त्र-खण्ड, जिससे कुछ बाँधा जाता है।

**फीलपाँव** *पु०* एक रोग, जिसमें पैर सूजकर भारी हो जाता है।

**फीलवान** *पु०* [फा०] हाथी हाँकने वाला महावत।

**फीस** *पु०* शुल्क, पारिश्रमिक।

**फुटकर** *वि०* खुदरा, विविध प्रकार का थोड़ा-थोड़ा।

**फुटकल** *अक०* साथ छूट जाना, अलग हो जाना।

**फुटका** *वि०* अकेला।

**फुटकावल** *सक०* अलग-अलग करना, किसी व्यक्ति को दूसरे की ओर से अपनी ओर खींचना।

**फुटकुटिआ** *वि०* थोड़ी पूँजी वाला।

**फुटकुन** *पु०* एक प्रकार का फलीदार पौधा।

**फुटमत** *पु०* मतभेद, बिलगाव, विरोध।

**फुटसर** *पु०* जिसमें फूल या बाल निकल गया हो।

**फुटहरा** *पु०* चिपरी, गोहरी की आग में पकाई रोटी या बाटी, मकुनी।

**फुटहारा** *पु०* चूना हुआ (चना या मटर)।

**फुटहा** *पु०* दलहन या भूजा, चबेना, जो भूनने पर फूटा हो।

**फुटानी** *स्त्री०* आडम्बर।

**फुटुकल** *वि०* दे० 'फुटकल', 'फुटकर', दे० 'रेजकी'।

**फुटेहरी** *स्त्री०* लिट्टी।

**फुदुर-फुदुर** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे अस्पष्ट शब्दों में कथित।

**फुनगी** *स्त्री०* [सं० स्फुटनम्] किसी पौधे के शिखर की डाली का अग्रिम खण्ड।

**फुनफुनाइल** *अक०* आवेश में आना।

**फुनफुनी** *स्त्री०* शारीरिक दुर्बलता के कारण उत्पन्न एक प्रकार की सनसनाहट।

**फुनुस** *पु०* पौधा।

**फुफकार** *पु०* जोर के साथ मुँह से हवा छोड़ने से निकला शब्द; गेहुअन साँप की आवाज।

**फुफी** *स्त्री०* फूफी, बुआ।
**फुफुआ** *वि०* फूआ से सम्बन्धित।
**फुफुआइत** *वि०* फूफा या फूआ से सम्बन्धित।
**फुफुती** *स्त्री०* साड़ी का सामने का बँधा अंश। *उदा०* 'गोतीन के झुलनी चुराएब फुफती में लुकायेब नइहर भेजायेब' लोक०।
**फुफुहर** *पु०* वह स्थान, जहाँ फूआ ब्याही गई हों।
**फुफेरा** *वि०* फूफा से उत्पन्न भाई।
**फुर** *स्त्री०* फुर्र से उड़ने की ध्वनि।
**फुरकत** *स्त्री०* [अ०] वियोग।
**फुरती** *स्त्री०* [सं० स्फूर्तिः] तेजी, शीघ्रता।
**फुरल** *अक०* किसी बात का अचानक दिमाग में आना, याद आना।
**फुरसत** *स्त्री०* अवकाश, छुट्टी, अवसर।
**फुरहुरा** *पु०* स्त्रियों की साड़ी का लटकने वाला निचला भाग।
**फुर्ती** *स्त्री०* दे० 'फुरती'।
**फुर्सत** *स्त्री०* दे० 'फुरसत'।
**फुलउरी** *पु०* उड़द की दाल को भिगोकर, पीसकर बनाया गया खाद्य-पदार्थ।
**फुलका** *पु०* पतली हल्की रोटी, चपाती; फफोला।
**फुलकी** *स्त्री०* छोटा फुलका।
**फुलझरी** *स्त्री०* एक प्रकार की आतिशबाजी।
**फुलवा** *पु०* बैलों की एक किस्म।
**फुलवारी** *स्त्री०* [सं० फुल्लवाटी] पुष्प-वाटिका, बगीचा।
**फुलहा** *वि०* फूल नामक धातु से बना बर्तन।
**फुलाइल** *अक०* पुष्पित होना, फूल निकलना; पानी से लबालब भरना।
**फुलावल** *सक०* किसी अनाज या वस्तु को पानी में डालकर छोड़ देना, फुलाना।
**फुलुक** *वि०* मुलायम।
**फुलेना** *पु०* एक प्रकार की वनस्पति।
**फुलेल** *पु०* सुगन्धित तेल।
**फुस** *स्त्री०* धीमी आवाज।
**फुसकी** *स्त्री०* फुस आवाज के साथ निकली अपान वायु।
**फुसफुसहट** *स्त्री०* किसी बात को अत्यन्त धीमी आवाज में कहने की स्थिति।
**फुसरी** *स्त्री०* धीरे-धीरे कहने का भाव या कार्य; छोटा घाव। *उदा०* 'फुसरी से भोकंदर'।
**फुसलावल** *सक०* अपने अनुकूल बनाने के लिए मीठी-मीठी बातें करना, चकमा देना; फुसलाना।
**फुसिआइल** *अक०* किसी पौधे की बाढ़ के रुक जाने से उसमें फूल-फल का नहीं लगना।
**फुसुर-फुसुर** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे कही गई बात।
**फुहर** *वि०* फूहड़। **-पातर** *पु०* अशिष्ट बातें।
**फुहराह** *वि०* बेढंगा, भद्दा। *उदा०* 'फुहराह सिंगार सुरुखी के सेनुर'।
**फुहार** *पु०* [सं० फूत्कारः] झीनी बूँदों की बारिश।
**फुहारा** *पु०* पानी के बारीक छींटे; ऐसा यन्त्र, जिससे बारीक बूँदें निकलती हैं।
**फुहिआइल** *अक०* अति बारीक कणों के रूप में बूँदें पड़ना।
**फूँक** *स्त्री०* फूँकने का कार्य या भाव।
**फूँकल** *सक०* मुँह से जोरों से हवा फेंकना। *उदा०* 'फूँकि के ना फाँकि के टांग पसार के तापे के'।
**फूँका** *पु०* छोटा घाव।
**फूँट** *स्त्री०* एक प्रकार की बड़ी पकी ककड़ी, जो रेतीली जमीन में होती है।

**फूँदना** दे० 'फिक'।
**फूँस** *पु०* फूस।
**फू** *स्त्री०* फूँकने की आवाज।
**फूआ** *स्त्री०* पिता की बहन।
**फूई** *स्त्री०* फुहार; फफूँदी।
**फूट** *पु०* [अं०] पाँव, 12 इंच की माप। **-नोट** *पु०* पाद टिप्पणी। **-पाथ** *पु०* सड़क के अगल-बगल की पटरी। **-बाल** *पु०* बड़ा गेंद।
**फूटपूड़ी** *स्त्री०* दलही।
**फूटल** *अक०* कड़ी वस्तु के आघात से वस्तु का चूर-चूर हो जाना। फट जाना। *उदा०* 'फूटल हंड़िया ठाँरे भला'।
**फूत्ती** *स्त्री०* मरुएँ के दाने के ऊपर का कोसा।
**फूदेना** *पु०* सूत से बनी फूल-सी आकृति; एक छोटा पौधा, जो चटनी और औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।
**फूफा** *पु०* फूआ का पति, फूफी का पति।
**फूफू** *स्त्री०* फुआ।
**फूल** *पु०* [सं० फुल्लम्] पुष्प। *उदा०* 'फूल न पान चले गोसइयाँ थान'।
**फूलगोभी** *स्त्री०* ऐसी गोभी, जिसमें फूल निकलता है।
**फूलदान** *पु०* वह गिलासनुमा पात्र, जिसमें फूल और पत्तियों को शोभा के लिए सजाते हैं, गुलदस्ता।
**फूलदार** *वि०* जिस पर फूल-पत्ते बनाए गए हों (वस्त्र इत्यादि)।
**फूलभंगा** *वि०* वैसा फलदार वृक्ष, जिसमें फूल लगते हों पर फल नहीं लग पाते हों।
**फूलमती** *स्त्री०* एक देवी, छोटी गोटी वाला चेचक रोग।
**फूलल** *अक०* पुष्पित होना; रूठना; सूजन होना।
**फूलसूँघनी** *स्त्री०* छोटी काली चिड़ियाँ, जो फूलों का रस लेती है।
**फूला** *पु०* शव जल जाने के बाद चिता पर बची हड्डियाँ और राख; गन्ने का एक रोग; आँख की फूली।
**फूली** *स्त्री०* आँख का एक रोग, जिससे पुतली में सफेद धब्बा आ जाता है।
**फूलेल** *पु०* दे० 'फुलेल'।
**फूवा** *स्त्री०* फूफी।
**फूस** *पु०* सूखा खर, जो घर छाने के काम में आता है।
**फूस फास** *यौ०* महत्त्वहीन बात।
**फूह** *पु०* अतिबारीक जलकण।
**फूहर** *स्त्री०* बेढंगा, फूहरी।
**फूही** *स्त्री०* वर्षा का अति बारीक कण। *उदा०* 'फूही फूही भरे तलैया'।
**फेंकइता** *वि०* बहादुर, फुर्तीला।
**फेंकइल** *पु०* मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल।
**फेंकरल** *अक०* सियार का रोना; जोर-जोर से रोना।
**फेंकल** *सक०* [सं० क्षेपणम्] किसी वस्तु को झट से गिरा देना।
**फेंटल** *सक०* दो या अधिक वस्तुओं को एक में मिलाना।
**फेंटा** *पु०* कमर पर लपेटा कपड़ा।
**फेंटी** *स्त्री०* लकड़ी का बेकार टुकड़ा।
**फेंड़** *पु०* वृक्ष।
**फेंफरी** *स्त्री०* होठों के सूखने पर पड़ी परत।
**फेकैल** *पु०* फिकने वाला जाल।
**फेट** *स्त्री०* मिश्रण, मिलाने का भाव।
**फेटा** *पु०* कमर में लपेटा गया धोती का अंश; कोल्हू का एक अंग।
**फेटी** *स्त्री०* लकड़ी का एक टुकड़ा, जो बढ़ई सामान बनाते समय बेकार समझकर छाँट देता है।

**फेट्ट** *अव्य०* किसी को डाँटने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**फेदराह** *वि०* गन्दा, भद्दा।
**फेन** *पु०* झाग।
**फेनु** *क्रि०वि०* दोबारा, एक बार, और।
**फेन्सा** *पु०* तुरन्त ब्याई गाय या भैंस का दूध, जो औंटते समय फट जाता है।
**फेना** *पु०* कनवा नामक एक घास।
**फेफड़ा** *पु०* श्वाँस लेने का अवयव।
**फेफना** *पु०* एक प्रकार की घास।
**फेफरी** *स्त्री०* होठों के चमड़े पर की पपड़ी।
**फेफा** *पु०* गला, गर्दन।
**फेर** *क्रि०वि०* दोबारा। *उदा०* 'फेर फेर राम जनकपुर जइहन'।
**फेरल** *सक०* इधर से उधर करना, वापस करना, लौटाना।
**फेरवट** *स्त्री०* घुमाने का भाव; फेरौरी।
**फेरहई** *स्त्री०* मवेशियों की खरीद-बिक्री का व्यवसाय करने वाला।
**फेरहा** *पु०* पशुओं का दलाल।
**फेरा** *पु०* चक्कर, परिक्रमा; चालबाजी, प्रपंच; भाँवर।
**फेरा-फेरी** *क्रि०वि०* एक के बाद दूसरा।
**फेल** *वि०* [अं०] अनुत्तीर्ण, असफल, नाकामयाब, विफल। *उदा०* 'लिफ्ट भइल फेल अब सीढ़ीए सहारा'।
**फैंसी** *वि०* [अं०] भड़कदार, सुन्दर।
**फैकटरी** *स्त्री०* [अं०] कारखाना, शिल्पशाला।
**फैलाव** *पु०* विस्तार, प्रसार।
**फैलावट** *स्त्री०* दे० 'फैलाव'।
**फैशन** *पु०* [अं०] रीति-रिवाज, शैली।
**फैसला** *पु०* [अ०] निर्णय।
**फोंफड़** *वि०* सारहीन, खोखला।
**फोंफी** *स्त्री०* नरकुल का बाजा, फूँकी जाने वाली नली।
**फोकचा** *पु०* फफोला।
**फोकट** *वि०* व्यर्थ, मुफ्त, बिना दाम चुकाये। *उदा०* 'फोकट के कारन चोकट पिटइले'। लोको०
**फोटा** *पु०* बिन्दी, टीका।
**फोटो** *पु०* [अं०] छायाचित्र। **-ग्राफ** *पु०* छायाचित्र। **-ग्राफर** *पु०* फोटो उतारने वाला।
**फोड़ल** *सक०* तोड़ना।
**फोड़ा** *पु०* घाव, व्रण।
**फोता** *पु०* [अ०] अण्डकोश।
**फोद** *पु०* लिंग, शिश्न।
**फोफड़** *वि०* खोखला।
**फोरन** *पु०* दाल या तरकारी छौंकने का मसाला।
**फोरमैन** *पु०* [अं०] छापेखाने, कारखाने में कार्यरत मुखिया।
**फोहा** *पु०* फाहा।
**फौआरा** *पु०* [अ०] फुहारा।
**फौज** *स्त्री०* [अ०] सेना; मजमा; जनसमूह। **-दार** *पु०* सेनानायक। **-दारी** *स्त्री०* मारपीट, लड़ाई।
**फौजी** *वि०* फौज से सम्बन्ध रखने वाला, सैनिक।
**फौरन** *अव्य०* [अ०] अभी, झटपट, तुरन्त।
**फौलाद** *पु०* [फा०] कड़ा तथा बढ़िया लोहा।
**फौलादी** *वि०* फौलाद का बना हुआ।
**फौवारा** *पु०* दे० 'फौआरा'।
**फ्राक** *पु०* [अं०] ढीला कुरता, जो बच्चियाँ पहनती हैं।
**फ्री** *वि०* [अं०] मुफ्त, नियन्त्रणहीन।
**फ्रीज** *स्त्री०* [अं०] शीतक मशीन
**फ्रेम** *पु०* [अं०] चौकठा।

# ब

**ब** हिन्दी के पवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका। उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

**बँइछा** *पु०* एक तरह की कपास।

**बँउखा** *पु०* कच्चे तागे से बना सिर पर लगाने वाला फूल।

**बंक** *वि०* टेढ़ा, वक्र, तिरछा; विकट, दुर्गम। **-नाल** *स्त्री०* वह नली, जिससे सुनार जुड़ाई करते समय लौ को फूँकते हैं।

**बंक** *पु०* [अं० बैंक] रुपए के लेन-देन का कार्यालय।

**बँकइती** *स्त्री०* बहादुरी।

**बंकट** *वि०* टेढ़ा, वक्र, *उदा* 'बंकट भौंह चपल अति लोचन' -सूर।

**बंकराज** *पु०* एक प्रकार का सर्प।

**बँकवा** *पु०* कुएँ आदि की गोल परिधि बनाने के लिए प्रयुक्त अर्धवृत्त चौरस ईंट।

**बंका** *वि०* पुरुषार्थी।

**बंकिम** *वि०* टेढ़ा।

**बंकुआ** *वि०* पसनी (घास काटने का एक औजार)।

**बंग** *पु०* बंगाल, बंग।

**बंगट** *पु०* बदमाश।

**बंगड़** *वि०* दुष्ट, लुच्चा, काँइयाँ।

**बँगराह** *वि०* अनउपजाऊ, ऊसर।

**बंगला** *पु०* [अं० बँगलो] अमीरों का मकान, बगीचा या खुले स्थान में बना अधिकारियों या अमीरों का मकान।

**बंगा** *पु०* कपास के पौधे से प्राप्त रूई। *उदा०* 'बंगा में गीदर गइलन का ओढ़ले का बिछवले'।

**बंगाल** *पु०* बंगाल, भारत का पूर्वी प्रान्त।

**बंगाली** *स्त्री०* [सं० बंग] बंगाल देश का निवासी।

**बंगीड़** *पु०* एक प्रकार का पौधा।

**बँगुरी** *स्त्री०* एक आभूषण; एक प्रकार की मछली।

**बंचक** *पु०* नीच आदमी; गीदड़; ठग।

**बंचट** दे० 'बंचक'।

**बँचल** *अक०* बचना, वंचित रहना, मुक्त रहना।

**बँचवावल** *सक०* पत्र या पुस्तक को किसी से पढ़वाना।

**बँचावल** *सक०* रक्षा करना, विपत् में पड़े व्यक्तियों का उद्धार करना।

**बँछल** *सक०* वांछा करना, चाहना।

**बंजर** *वि०* ऊसर।

**बंजारा** *पु०* [सं० वणिज्] एक घुमक्कड़ जाति, परदेश में जाकर व्यापार करने वाला।

**बंजारी** *स्त्री०* एक देवी, जो व्यापारियों एवं गाड़ीवानों की रक्षिका है।

**बंझा** *वि०* न फलने वाला। *स्त्री०* बन्ध्या।

**बँझौड़ा** *पु०* पौधे के मर जाने या बीज के नहीं जमने की स्थिति।

**बँटइया** *वि०* पैदावार बाँटने के शर्त पर दी गई जमीन।

**बँटवत** *पु०* बँटाई दिए गए खेत से आया अनाज का हिस्सा।

**बँटवारा** *पु०* [सं० बन्टनम्] हिस्सेदारों में सम्पत्ति का विभाजन, बाँटने का कार्य।

**बँटवावल** *सक०* वितरित करना, विभाजित करना।

**बंटा** *पु०* छोटा डब्बा।

**बँटाइल** *सक०* बाँटा जाना, विभाजित होना।

**बँटाई** *स्त्री०* उपज के हिस्सेदार के रूप में विभाजन के लिए शर्त कर दी गई जमीन।

**बंटाधार** *वि०* चौपट, सत्यानाश।
**बँटावन** *वि०* बँटाने वाला।
**बँटैया** *पु०* बँटाने वाला।
**बंठा** *पु०* ऐसा घोड़ा, जिसे बाँधकर घास-भूसा खिलाते हैं।
**बंडल** *पु०* [अं०] पोटली, गुच्छ।
**बंडा** *पु०* अरुई की जाति का एक प्रकार का कन्द, जिसकी तरकारी होती है; पुँचकट्टा। *उदा०* 'बंडा बैल पुसंडा पाही, बंडा मरलन आवहजाही'।
**बंडी** *स्त्री०* बिना बाँही की कुर्ती।
**बँडेरी** *स्त्री०* खपरैल मकान का ऊपरी हिस्सा, जहाँ से दोनों ओर छप्पर की ढाल शुरू होती है; लरही के ऊपर की लकड़ी।
**बँड़वा** *पु०* इन्द्रधनुष।
**बंढा** *पु०* टूटी पूँछवाला बैल; बाँड़।
**बंतिआर** *वि०* अपने को अधिक दिखलाने वाला, बनने वाला।
**बंतू** *वि०* दे० 'बंतिआर'।
**बंद** *वि०* जो खुला नहीं हो; अवरुद्ध।
**बंदगी** *स्त्री०* [फा०] भक्तिपूर्ण वन्दना; सलाम, प्रणाम।
**बंदन** *पु०* वन्दन; रोली।
**बंदनवार** *पु०* [सं० बन्दनमाला] सुन्दर पत्तों, फूलों आदि की झालर, जिसे मण्डप, दरवाजे पर बाँधी जाती है।
**बंदना** *स्त्री०* [सं० वन्दना] वन्दन।
**बंदर** *पु०* [सं० वानरः] वानर।
**बंदा** *पु०* [फा०] सेवक।
**बंदिया** *पु०* भड़कने वाला बैल।
**बंदी** *पु०* [सं०] कैदी।
**बंदूक** *पु०* लोहे की नली से बना एक अस्त्र, जिसमें बारूद के सहारे गोली चलती है।
**बंदोबस्त** *पु०* [फा०] प्रबन्ध।
**बँदौर** *पु०* कपास का बीज।
**बंधक** *पु०* [सं०] गिरवी, बन्धन।
**बंध-छुड़ाई** *स्त्री०* विवाह के अन्त में बन्दनवार खोलने की रस्म।
**बँधना** *पु०* पात्रविशेष, बँधना।
**बंधु** *पु०* [सं०] भाई; सगोत्र; स्वजन।
**बँधुआ** *पु०* कैदी।
**बंधुल** *पु०* [सं०] कुलटा का पुत्र; वेश्या का टहलू। *वि०* झुका हुआ, सुन्दर।
**बंधूक** *पु०* [सं०] गुलदुपहरिया।
**बंध्या** *स्त्री०* [सं०] बाँझ।
**बंपुलिस** *स्त्री०* सर्वसामान्य हेतु निर्मित शौचालय।
**बंब** *पु०* डंका, 'बम-बम' शब्द।
**बंबा** *पु०* पानी की कल।
**बंमई** *स्त्री०* एक प्रकार का स्वादिष्ट आम।
**बंमड़** *वि०* बेढंगा, मूर्ख।
**बंमा** *पु०* लोहा, सीमेन्ट का नल।
**बँवरि** *स्त्री०* लता, बेलि।
**बंस** *पु०* कुल, सन्तान, वंश। **-लोचन** *पु०* वंशलोचन। *उदा०* 'बंस आ बाँस एकट्ठा ना रहे'।
**बँसइठा** *पु०* बाँस की मोटी लाठी।
**बँसखट** *पु०* बाँस की बनी खाट।
**बँसगेंडा** *पु०* मोटी और लम्बी ईख।
**बँसफोर** *पु०* डोमों की एक उपजाति।
**बसबल्ली** *स्त्री०* बँसौरी (बाँस का बल्ला)।
**बँसवारी** *स्त्री०* बाँसों का बागीचा, बाँसों की बहुत सी कोठियाँ हों।
**बंस विसेख** *पु०* वंशविशेष।
**बंसा** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**बँसिलवा** *पु०* भैंस का वह सींग, जो कुछ पीछे हटकर आगे की ओर घुमा हो।

**बंसी** *स्त्री०* [सं० वंशी] पतले बाँस की नली का बना एक बाजा; बाँसुरी; मछली फँसाने का काँटा। **-धर** *पु०* कृष्ण।
**बँसुरी** *स्त्री०* बाँस के पोर से बना फूँककर बजाने का एक बाजा, बाँसुरी।
**बँसुला** *पु०* लकड़ी गढ़ने का एक औजार।
**बँसौता** *पु०* एक जंगली बाँस।
**बँहगी** *स्त्री०* बहँगी।
**बँहड़ल** *अक०* गलत राह पकड़ना।
**बँहिया** *पु०* आरा से लकड़ी चीरने वाले दो व्यक्तियों में एक।
**बँहेल** *वि०* बेढंगा, विवेकरहित।
**बइठउआ** *वि०* जिससे माड़ नहीं पसाया जाता है (भात)।
**बइठका** *पु०* घर का वह भाग, जहाँ प्राय: पुरुष वर्ग बैठता है।
**बइठकी** *स्त्री०* बैठने का भाव या क्रिया।
**बइठल** *अक०* बैठना, बेकार रहना; खेत का कड़ा हो जाना। *उदा०* 'बइठल से बेगारी भला'।
**बइठाउर** *वि०* जो कोई काम-धन्धा नहीं करके बैठकर समय बितावे।
**बइठावल** *अक०* व्रत की अवधि पूरी हो जाने पर विधि-विधान के बाद उसे छोड़ देना।
**बइद** *पु०* वैद्य। *उदा०* 'बइद करे बइदाई, दइब करे से होई'। लोको०
**बइर** *पु०* [सं० बदरम्] एक कटीला पेड़ और उसका फल बेर; बैर।
**बइरी** *स्त्री०* दुश्मन, बैरी।
**बइसाख** *पु०* बैसाख माह।
**बइसाखा** *पु०* एक नक्षत्र, जो प्राय: कार्तिक में पड़ता है; विशाखा। *वि०* गर्मी की सब्जियाँ।
**बउआइल** *अक०* सपना या बेहोशी की स्थिति में अनाप-शनाप बकना।
**बउक** *पु०* मूर्ख, अज्ञानी।
**बउकार** *वि०* बली, शक्तिशाली।
**बउखलाइल** *अक०* क्रुद्ध होकर बोलना।
**बउखारह** *वि०* जो अलग-अलग जमा हो (फसल)।
**बउखाह** *वि०* टेढ़ा।
**बउखेह** *पु०* विक्षिप्त।
**बउचटाह** *वि०* मूर्ख-सा।
**बउठाँड़** *वि०* जिसे कोई काम नहीं हो, निठल्ला।
**बउड़िआइल** *अक०* इधर-उधर घूमते रहना।
**बउथ** *पु०* जो बोल नहीं सके, गूँगा।
**बउधावतार** *पु०* बौद्धावतार, बुद्ध के रूप में विष्णु का अवतार।
**बउरल** *वि०* मूर्ख।
**बउराइल** *अक०* पागल होना, विवेकहीन हो जाना।
**बउराह** *वि०* पागल, विक्षिप्त। जो अति शीघ्र क्रुद्ध या प्रसन्न हो जाता है। *उदा०* 'इसन बउराह वर से गौरी ना बियाहब मोरा गौरा रहिअन कुँवार।' लोको०
**बउआ** *पु०* बबुआ का लघु रूप।
**बऊठा** *पु०* धोबियों की उपाधि।
**बक** *स्त्री०* बकवास। **-झक** *स्त्री०* बकवास। **-वाद** *स्त्री०* निरर्थक बात। **-वासी** *वि०* बकवास करने वाला।
**बकइयाँ** *पु०* बच्चों का घुटने के बल चलने की स्थिति।
**बकउर** *पु०* सत्तू।
**बकटेंट** *वि०* बेढंगा, झगड़ालू।
**बकता** *वि०* व्याख्यान देने वाला; बहुत बोलने वाला।
**बक-बक** *क्रि०वि०* व्यर्थ की बात, लगातार बोलते रहना।

**बकरकसाई** *पु०* बकरे को मारकर उसका मांस बेचने वाला।

**बकरा** *पु०* [सं० बर्कर:] एक पालतू पशु। *उदा०* 'बकरा के माई कब तक खैर मनाई'। लोको०

**बकरी** *स्त्री०* मादा बकरा। *उदा०* 'बकरी करी घास से इयारी तऽ चरे कहाँ जाई'। लोको०

**बकरीद** *पु०* मुसलमानों का एक त्योहार।

**बकरू** *पु०* पठरू, भेड़ या बकरी का बच्चा।

**बकल** *सक०* व्यर्थ की बातें बोलते रहना; पिटाई के बाद चोरी या अन्य अपराधों का भेद खोलना।

**बकलँड़** *वि०* बुद्धिहीन।

**बकलस** *अव्य०* किसी बन्धन के दो सिरों को मिलाकर कसने की अँकुसी।

**बकला** *पु०* एक प्रकार की दलहन या छिलका।

**बकलोइया** *पु०* मक्के के बाल का छिलका।

**बकलोल** *वि०* चुपचाप बैठे रहने वाला, मूर्ख।

**बकसल** *सक०* क्षमा करना; कृपापूर्वक प्रदान करना। *उदा०* 'बकसऽ बिलार मुरगा बाँड़ होके रहिहें'।

**बकसीस** *पु०* ईनाम, दान।

**बकाईन** *पु०* नीम के समान पत्ता वाला एक पेड़।

**बकाया** *वि०* [अ०] बाकी।

**बकार** *पु०* मुँह से निकलने वाला शब्द।

**बकावल** *सक०* किसी को विवश कर गोपनीय बातें कहवाना।

**बकास्त** *पु०* रैयती जमीन, जो बाद में मालिक की जोत में आ जाती है।

**बकिया** *वि०* बाकी।

**बकिऔता** *पु०* शेष राशि।

**बकुचा** *पु०* गठरा, गठरी।

**बकुला** *पु०* लम्बी टाँग, सफेद गला एवं भूरे रंग का एक पक्षी, बगुला। *उदा०* 'बकुला टाँग उठवले आ ताल के थाह लागल'। लोको०

**बकुली** *स्त्री०* मादा बकुला।

**बकेन** *वि०* 5-6 महीने की ब्याई गाय या भैंस, जिसका दूध गाढ़ा हो जाता है।

**बकेया** *पु०* धान को नष्ट करने वाला एक लम्बा कीड़ा।

**बकैयाँ** *पु०* घुटनों के बल चलना, ऐसी चाल।

**बकोटल** *सक०* किसी को नाखून से खरोचना।

**बकोटा** *पु०* बकोटने की क्रिया।

**बकोय** *पु०* एक प्रकार का धान, जिसका चावल लाल होता है।

**बक्की** *स्त्री०* बकुला।

**बखत** *पु०* समय, वक्त। *उदा०* 'बखत पड़े तऽ बाँका, गदहा के कहे काका'। लोको०

**बखरा** *पु०* हिस्सा, किसी के लिए रखा गया भोजन।

**बखरी** *स्त्री०* मकान, बड़ा मकान, कच्चा मकान।

**बखाइन** *स्त्री०* बखो जाति की स्त्री।

**बखान** *पु०* प्रशंसात्मक वर्णन या वार्ता।

**बखानल** *सक०* प्रशंसात्मक वर्णन करना, गुणगान करना।

**बखार** *पु०* अन्न रखने के लिए बनाया गया लकड़ी या बाँस का घर।

**बखारी** *स्त्री०* कुठला। *उदा०* 'बखारी देख जुड़ैले छाती'।

**बखिया** *पु०* [फा०] एक प्रकार की महीन सिलाई। *कहा०* 'टाट का ऊपर रेशम के बखिया'।

**बखीर** *स्त्री०* ईख के रस से पका चावल, खीरविशेष।
**बखेड़ा** *पु०* झंझट, झमेला, परेशानी।
**बखो** *पु०* मुसलमानों की एक जाति, जो पुत्र-जन्म के अवसर पर बधावा गाती है।
**बखौर** *पु०* एक प्रकार का धान।
**बगइचा** *पु०* छोटा बाग, उपवन, गाछी।
**बगड़ेड़ा** *पु०* बवण्डर।
**बगदल** *अक०* खराब होना, बिगड़ना।
**बगबग** *वि०* एकदम सफेद।
**बगेंड़** *पु०* अण्डी का पौधा।
**बगल** *पु०* काँख, पाँजर।
**बगली** *स्त्री०* बगल का जेब; किवाड़ के बगल दी गई सेंध।
**बगाइल** *अक०* टेढ़ा-मेढ़ा चलना।
**बगावत** *स्त्री०* बागी होने का भाव, विद्रोह।
**बगास** *पु०* ईख की सिट्टी।
**बगिआ** *पु०* छोटा बगीचा।
**बगीचा** *पु०* बाग
**बगीची** *स्त्री०* छोटा बाग।
**बगुचा** *पु०* गट्ठर।
**बगुला** *पु०* बगला। उदा० 'बगुला मारले पाँखि हाथ'। लोको०
**बगूला** *पु०* [फा०] बवण्डर।
**बगेड़ी** *स्त्री०* मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया।
**बगैचा** *पु०* बगीचा।
**बग्गी** *स्त्री०* दे० 'बग्घी'।
**बग्घी** *स्त्री०* चार घोड़ोंवाली एक छायादार गाड़ी।
**बघ** *पु०* 'बाघ' का लघु रूप। **-छाला** *पु०* बघम्बर। **-नखा** *पु०* शेरपंजा।
**बघजर** *पु०* बाघ के भय से लगा डर।
**बघनाड़ा** *पु०* एक प्रकार की कँटीली लता; बच्चे के गले का एक आभूषण, जिसमें बाघ के नख मढ़े रहते हैं।
**बघरुआ** *पु०* तेल या घी में तलकर तैयार किया गया व्यंजन।
**बघार** *पु०* छौंक।
**बघारल** *सक०* गर्म घी या तेल में मसाला डालना।
**बघुआइल** *अक०* गुर्राकर ताकना, क्रोधपूर्वक देखना।
**बघेल** *पु०* राजपूतों की एक उपजाति।
**बच** *पु०* एक प्रकार की वनौषधि।
**बचकस** *पु०* बच्चे के समान कोमल अंगवाला नौजवान।
**बचका** *पु०* आलू, लौकी का पतला चिपटा टुकड़ा, जिस पर बेसन लगाकर तला जाता है।
**बचगानी** *वि०* बच्चों द्वारा प्रयुक्त होने लायक आकार में छोटा।
**बचत** *स्त्री०* बचने का भाव, शेष, बाकी, लाभ।
**बचन** *पु०* बात, वाणी, वादा।
**बचपन** *पु०* लड़कपन, शैशव।
**बचल** *अक०* प्रभावित नहीं होना, सुरक्षित रहना।
**बचवा** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**बचाव** *पु०* बचने की स्थिति, भाव या क्रिया।
**बचावल** *सक०* सुरक्षित रखना।
**बच्चा** *पु०* किसी प्राणी का छोटा शिशु। *उदा०* 'बच्चा खेलावे कोई, अंडा सेवे कोई'।
**बच्ची** *स्त्री०* बच्चा का विलोम।
**बच्चू** *पु०* किसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द, जिसके अन्तर्गत आक्रोश और प्रतिशोध की भावना हो।
**बच्छा** *पु०* गाय का नर बच्चा।
**बछदुही** *स्त्री०* दूध देने वाली गाय।

**बछमुँह** *वि०* सरल और सीधी प्रकृति का।
**बछड़ा** *पु०* दे० 'बच्छा'।
**बछरा** *पु०* दे० 'बच्छा'।
**बछरू** *पु०* दे० 'बच्छा'।
**बछवा** *पु०* गाय का डेढ़ वर्ष से तीन वर्ष तक का नर-बच्चा, बछड़ा। *उदा०* 'बछवा बैल बहुरिया जोय, ना घर बसे ना खेती होय'।
**बछिया** *स्त्री०* गाय का मादा बच्चा। *उदा०* 'बछिया के बाबा पड़िया के ताऊ'।
**बछेड़ा** *पु०* घोड़ी का बच्चा।
**बछेड़ी** *स्त्री०* घोड़ी का मादा बच्चा।
**बजका** *पु०* दे० 'बचका'।
**बजट** *पु०* [अं०] आय-व्ययक।
**बजड़** *वि०* कड़ा, सख्त।
**बजड़ा** *पु०* एक प्रकार का मोटा अन्न, बाजरा।
**बजड़ी** *स्त्री०* भैया दूज के दिन बहन द्वारा भाई को मिठाई में खिलाया जाने वाला दाना।
**बजना-बजनी** *यौ०* एक-दूसरे से युद्ध करने का कार्य।
**बजनिआ** *पु०* बाजा बजाने वाला।
**बजबज** *क्रि०वि०* अत्यधिक सड़ा हुआ।
**बजबजाइल** *अक०* तरल पदार्थ में सड़न के कारण कीड़े के पड़ने पर झाग आना।
**बजरंग** *पु०* [सं० बज्रांग] वज्र-सा कठोर अंगवाला (हनूमान)। **-बली** *पु०* हनूमान।
**बजर** *पु०* आकाश से गिरने वाली बिजली। *उदा०* 'बजर पड़े तऽ बजड़ा होय'।
**बजरतेरही** *स्त्री०* तेरह दिनों का पक्ष, जो अनिष्ट माना जाता है।
**बजरधसना** *यौ०* भारी विपत्ति।
**बजरबोंग** *पु०* भारी लाठी।
**बजरठूड़ी** *स्त्री०* जिसकी वृद्धि बन्द हो गई हो।
**बजरल** *अक०* गिरना, पहुँच जाना।
**बजरा** *पु०* सजी-धजी नाव।
**बजरी** *स्त्री०* छोटी मटर; कंकड़ी।
**बजरुआ** *पु०* बाजार जाने वाला व्यक्ति।
**बजवइया** *वि०* बजाने वाला।
**बजाज** *पु०* वस्त्र-व्यवसायी।
**बजारल** *सक०* मारना (लाठी)।
**बजारू** *वि०* बाजार में रहने वाला, बाजार की परिस्थिति में जीवन बिताने वाला।
**बजावल** *सक०* बजाना।
**बज्जड़** *वि०* कड़ा।
**बज्जा** *पु०* निन्दित (बैल)।
**बज्जी** *स्त्री०* कठार (गाय)।
**बज्जुला** *पु०* बाँह का एक गहना।
**बझावल** *सक०* फन्दे आदि में फँसाना, उलझना; रोते हुए बच्चे को फुसलाकर चुप कराना।
**बटइया** *पु०* आधी फसल बाँट देने की शर्त पर दी गई जमीन। *उदा०* 'बटइया खेत आ उढ़री मेहरी के कवन ठेकाना'। लोको०
**बटकर** *पु०* अधपके मटर की दाल।
**बटखरा** *पु०* [सं० बटकः] पत्थर या लोहे का बाट, जिससे वस्तुएँ तौली जाती हैं।
**बटखरी** *स्त्री०* छोटा बटखरा; अति छोटा आकार का आदमी।
**बटगायन** *पु०* वह गीत, जो रास्ता चलते गाया जाता है।
**बटम** *पु०* सिले वस्त्री की घुण्डी, बटन।
**बटरी** *स्त्री०* एक प्रकार की चंगेली।
**बटलोही** *स्त्री०* धातु-निर्मित चावल या दाल पकाने का बर्तन, बटलोई।
**बटसारी** *स्त्री०* रास्ते पर का सामान।
**बटही** *स्त्री०* बटेर पक्षी।

**बटा** *पु०* मिट्टी का छोटा बर्तन, जिससे पानी पीया जाता है; ताड़ीखाने में प्रयुक्त एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन; एक अंक के खण्ड को बताने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बटाई** *स्त्री०* बटने की क्रिया; बाँटने की क्रिया।
**बटाऊ** *पु०* बटोही।
**बटान** *पु०* औजारविशेष, जिससे सीध आदि देखी जाती हो।
**बटारी** *स्त्री०* रुखानी।
**बटाली** *स्त्री०* लकड़ी काटने, छिलने का औजार।
**बटिया** *स्त्री०* छोटा, गोल पत्थर, सँकरा मार्ग।
**बटिवन** *पु०* लोहे या मिट्टी की छोटी गोली।
**बटी** *स्त्री०* छोटी टिकिया।
**बटुआ** *पु०* [सं० वर्तुल:] खानेदार गोल थैला; बड़ी बटलोई।
**बटुरी** *स्त्री०* छोटे दाने वाली काली मटर।
**बटेर** *स्त्री०* एक चिड़िया। **-बाज** *पु०* बटेर पालने वाला। **-बाजी** *स्त्री०* बटेर लड़ाने का व्यसन।
**बटोर** *पु०* भीड़, जमाव।
**बटोरल** *सक०* छितराई हुई चीजों को इकट्ठा करना, जुटाना; झाड़ू देना।
**बटोही** *पु०* दे० 'बटाऊ'।
**बट्टा** *पु०* लोढ़ा; प्याला।
**बट्टी** *स्त्री०* टिकिया।
**बँड़इठा** *पु०* पनसोखा, इन्द्रधनुष।
**बड़** *पु०* बरगद। *वि०* उम्र में अधिक। *उदा०* 'बड़ के चोरी जीव का पाछा'।
**बड़** *पु०* 'बड़ा' का समास में प्रयुक्त रूप। **-दंता** *वि०* बड़े दाँत वाला। **-दुमा** *पु०* लम्बी पूँछ वाला। **-पेटा** *वि०* बड़े पेट वाला। **-बोला** *वि०* डींग हाँकने वाला। **-भागी** *वि०* बड़े भाग्यवाला। *उदा०* 'बड़ बड़ गेलऽ तऽ बैजूक ऐलऽ'।
**बड़** *स्त्री०* डींग, बकवाद। **-बड़** *स्त्री०* व्यर्थ बातें।
**बड़का** *वि०* बड़ा, विस्तृत; लम्बा, चौड़ा, ऊँचा। *उदा०* 'बड़का के आगा छोटका के दोहाई'।
**बड़गोहुँआ** *पु०* एक घास, जो गेहूँ के खेत में और गेहूँ की तरह होती है।
**बड़प्पन** *पु०* बड़ों के योग्य कार्य, बड़ा होने का भाव, बड़ाई।
**बड़वा** *वि०* इन्द्रधनुष।
**बड़सिंगा** *पु०* बड़े सींगवाला (बैल)।
**बड़हन** *वि०* आकृति में बड़ा।
**बड़हर** *पु०* एक खटमिट्ठे फलों वाला पेड़ और उसका फल।
**बड़हार** *पु०* ब्याह के बाद कन्यापक्ष की ओर से बारातियों की ज्योनार।
**बड़हारा** *पु०* बाँह में पहनने का एक गहना।
**बड़ा** *वि०* बहुत श्रेष्ठ-उम्र या रिश्ता में बड़ा।
**बड़ा** *पु०* उड़द से बना भोज्य-पदार्थ।
**बड़ाई** *स्त्री०* बड़ा होने का भाव, महत्त्व, प्रशंसा।
**बड़ा दिन** *पु०* ईसामसीह का जन्म दिन; 25 दिसम्बर।
**बड़ी** *स्त्री०* अदौरी; तम्बाकू की किस्म।
**बड़ियार** *वि०* बलिष्ठ।
**बड़ी माता** *स्त्री०* चेचक का एक भेद, जिसमें फुंसियों का आकार बड़ा होता है।
**बड़ेड़ा** *पु०* लोहे की छड़, जिसके नीचे माथी रहती है।
**बड़ेर** *पु०* लोकगीतों में कहीं-कहीं बड़ेरी के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बड़ेरी** *स्त्री०* छप्पर के बीच की मोटी लकड़ी, जहाँ से उसकी ढाल आरम्भ होती है।
**बढ़ंती** दे० 'बढ़ती'; नदी की धारा बदल जाने से निकली जमीन।

**बढ़इता** *वि०* अपने से श्रेष्ठ सम्बन्धियों के लिए लोकगीतों में प्रयुक्त शब्द।
**बढ़ई** *पु०* [सं० वर्द्धकि:] लकड़ी की कारीगरी करने वाली एक जाति। **-गिरी** *स्त्री०* बढ़ई का धंधा।
**बढ़ती** *स्त्री०* विस्तार, गिनती, तौल में अधिकता।
**बढ़नी** *स्त्री०* झाड़ू, कूँचा। *उदा०* 'बढ़नी ना मारो इनका तिलक लेहला के, करिया पतोह आइल गोर बेटा के'।
**बढ़ल** *सक०* नाप, तौल, परिमाण में अधिक होना; आगे निकल जाना।
**बढ़ाँव** *पु०* बढ़ने का भाव।
**बढ़ावल** *सक०* [सं० वर्द्धनम्] गिनती, माप, तौल, विस्तार और परिमाण में अधिक करना; बुझा देना।
**बढ़ावा** *पु०* प्रोत्साहन।
**बढ़ियाँ** *वि०* अच्छा, सुन्दर, बहुमूल्य।
**बढ़िआइल** *अक०* संख्या में अधिक हो जाना।
**बढ़ी** *स्त्री०* औचित्य से अधिक किया गया काम।
**बढ़ैया** *पु०* बढ़ई।
**बढ़ोतरी** *स्त्री०* वृद्धि, विकास।
**बतक** *स्त्री०* बतख।
**बतकूचन** *वि०* निरर्थक चर्चा।
**बतकही** *स्त्री०* बातचीत, वार्तालाप।
**बतंगड़** *पु०* लम्बी-चौड़ी बात; अच्छी बात को भी बढ़ा कर खराब कर देना।
**बतबढ़ाँव** *पु०* किसी बात का विस्तार करने का काम।
**बतरस** *पु०* बातचीत; वार्ता का रस।
**बतलावल** *सक०* बताना, *अक०* बात करना।
**बतसल** *अक०* बात या वायु के प्रभाव में आना; ठण्डक से पौधे तथा किसी बीमारी से शरीर की वृद्धि रुक जाना।
**बतहा** *वि०* बात रोग से प्रभावित।
**बतही** *स्त्री०* मूक स्त्री।
**बतास** *पु०* हवा, वायु।
**बतासफेनी** *पु०* एक प्रकार का धान।
**बतासा** *पु०* चीनी की चासनी से बनी मिठाई।
**बतासी** *स्त्री०* चौरसा।
**बतिआ** *पु०* हाल का निकला कोमल और कच्चा फल।
**बतिआइल** *अक०* बातें करना; किसी पौधे में फल लगना।
**बतिआवल** *अक०* बातचीत करना, वार्तालाप करना।
**बतीसा** *पु०* एक प्रकार का बड़ा केला, जो सब्जी के काम आता है।
**बतीसी** *स्त्री०* बत्तीस दाँतों का समूह; बत्तीस का संग्रह।
**बत्ती** *स्त्री०* बाती, दीप में तेल से जलाने वाला रूई या सूत का टुकड़ा।
**बत्तीस** *वि०* तीस और दो।
**बतुआइल** दे० 'बतिआइल'।
**बतुली** *स्त्री०* महत्वहीन बात।
**बतुस** *पु०* चीज, वस्तु।
**बथल** *अक०* दर्द करना, पीड़ा होना।
**बथान** *पु०* मवेशियों को रखने की जगह।
**बथुआ** *पु०* एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसके पत्तों का साग बनता है; एक प्रकार का आम, जो भादों में पकता है।
**बद** *वि०* [फा०] बुरा, खराब; दुष्ट; अशुभ। **-अमली** *स्त्री०* अव्यवस्था। **-किस्मत** *वि०* अभागा। **-गो** *वि०* निन्दक। **-गोई** *स्त्री०* बुराई। **-चलन** *वि०* दुश्चरित्र।**-जबान** *वि०* अपशब्द। **-तमीज** *वि०* जिसे सलीका न हो, गँवार। **-तमीजी** *स्त्री०* अशिष्टता। **-तर** *वि०*

अधिक बुरा। -**दिमाग** *वि०* घमण्डी। -**दिमागी** *स्त्री०* घमण्ड। -**दुआ** *स्त्री०* शाप। -**नसीब** *वि०* अभागा। -**नाम** *वि०* जिसकी निन्दा होती हो। -**नीयत** *वि०* बुरी नीयत वाला। -**बू** *स्त्री०* दुर्गन्ध। -**मास** *वि०* दुष्ट, लुच्चा। -**रंग** *वि०* बुरे रंग का। -**सूरत** *वि०* कुरूप। -**हजमी** *स्त्री०* अपच। -**हाल** *वि०* दुर्दशाग्रस्त। उदा० 'बद नीक बदनाम नहिं नीक'। लोको०

**बदइल** *वि०* बदमाश, उद्दण्ड।

**बदखोरा** *पु०* सिर की फुंसियाँ, एक प्रकार का सिर का घाव।

**बदजात** *वि०* नीच, बदमाश।

**बदन** *पु०* देह, शरीर।

**बदनेती** *स्त्री०* बुरी नियत; दगा।

**बदरकट्टू** *वि०* हलकी बदली रहने पर उगी हुई धूप। उदा० 'हे बदरा जिन बरसु केदली का बाग। जे राम चन्दर भीजी जइहे'। लोको०

**बदरिया** *स्त्री०* बदली।

**बदरी** *स्त्री०* बादल।

**बदरीआइल** *अक०* आकाश के मेघाच्छन्न होने की स्थिति।

**बदरीनाथ** *पु०* एक तीर्थस्थल के देवता, भगवान् विष्णु।

**बदल** *सक०* किसी बात का निर्णय करने के लिए किसी को पंच नियुक्त करना। *उदा०* 'बदलो पंच बेबदलो पंच जइसे मानऽ तइसे पंच'।

**बदलल** *अक०* परिवर्तन आना, व्यवहार या बात में प्रतिकूलता आना।

**बदला** *पु०* क्षतिपूर्ति, प्रतिशोध, प्रतिकार।

**बदली** *स्त्री०* स्थानान्तरण; छाए हुए बादल।

**बदलौवल** *स्त्री०* बदलने की क्रिया।

**बदहवास** *वि०* बेचैन, विकल, हतबुद्धि।

**बदान** *पु०* नियुक्त (पंच) अतिव्यस्तता; कुश्ती में जीतने के लिए रखी गई शर्त।

**बदाबदी** *स्त्री०* प्रतियोगिता।

**बदाम** *पु०* एक प्रकार का कड़ा छिलका वाला मेवा; मूँगफली।

**बदामी** *वि०* बादाम के सदृश रंगवाला।

**बदिअल** *वि०* बदमाश, मुँहजोर।

**बदी** *स्त्री०* महीने का कृष्ण पक्ष। *उदा०* 'बदी असाढ़ी पड़िवा बरसे, दिन सत्ताइस सूखा निकसे'। लोको०

**बदीना** *क्रि०वि०* बदले में।

**बदे** *अव्य०* के लिए, वास्ते।

**बदेल** *वि०* बदमाश।

**बदौलत** *क्रि०वि०* कृपा से, माध्यम से।

**बधंबर** *पु०* मुसलमानों द्वारा व्यवहृत टोंटीदार बर्तन।

**बधाई** *स्त्री०* किसी शुभ अवसर पर कहा गया मंगल-सूचक वचन या संवाद।

**बधार** *पु०* गाँव से दूर का खेत।

**बधावा** *पु०* मांगलिक अवसरों का गायन-वादन; ऐसे अवसर पर दिया गया उपहार।

**बधिया** *पु०* अण्डकोष निकाला या कूटा हुआ जानवर।

**बधिआवल** *सक०* पशुओं को नपुंसक बनाना।

**बधू** *स्त्री०* [सं०] वधू।

**बधैया** *स्त्री०* बधाई।

**बन** *पु०* [सं० वनम्]जंगल, बगीचा, उपवन; बन्द। *उदा०* 'बन के गीदड़ जाए किधर'।

**बनउनी** *स्त्री०* बनाने का मजदूरी।

**बनउर** *पु०* कपास का बीज, बिनौला।

**बनउरी** *स्त्री०* वर्षा के साथ गिरने वाला ओला।

**बनकट** *वि०* जंगली, वन का, बनैला।
**बनगोइँठी** *स्त्री०* जलावन के लिए चारागाह से चुना गया गोबर।
**बनघरा** *पु०* बाहर के कमरे, बहरपरा।
**बनच्चर** *वि०* [सं० वनचरः] असभ्य, असंस्कृत।
**बनछिहुली** *स्त्री०* वह जमीन, जिसमें झाड़ी पैदा होती है।
**बनजारा** दे० 'बंजारा'।
**बनतिल** *स्त्री०* तिल का एक भेद।
**बननी** *स्त्री०* स्त्रियों के सिर का एक आभूषण।
**बनपटुआ** *पु०* एक प्रकार का रेशेदार कटीला पौधा, जिससे सन निकलता है।
**बनपिअजुआ** *पु०* एक प्रकार का जंगली कन्द, जो प्याज-सा होता है।
**बनपोस्ता** *पु०* जंगली अफीम।
**बनफल** *पु०* [सं० वनफलम्] जंगली फल।
**बनबनाइल** *अक०* फुंसियों का अचानक अत्यधिक संख्या में निकलना।
**बनबिलार** *पु०* जंगली बिलाड़, बड़े आकार की बिल्ली।
**बनभुटका** *पु०* मकोय का एक प्रकार।
**बनमानुख** *पु०* [सं० बनमानुषः] मनुष्य की आकृति का एक जानवर।
**बनमुरगी** *स्त्री०* मुर्गी-सी एक चिड़िया, जो जंगल में पाई जाती है।
**बनरघुड़की** *स्त्री०* बन्दरों द्वारा मुँह बनाकर किसी को डराने का काम।
**बनरझोंप** *पु०* खेत की रखवाली के लिए बनी झोपड़ी।
**बनरमुहाँ** *वि०* बन्दर के समान मुँह वाला, बदसूरत।
**बनल** *अक०* किसी वस्तु या सामान का निर्माण होना; अपने को वास्तविकता से अधिक दिखाने का काम। *उदा०* 'बनले यार बिगड़ले भकुआ'।
**बनल-बनावल** *वि०* रेडीमेड।
**बनवारी** *पु०* कृष्ण का एक नाम।
**बनसपति** *स्त्री०* वन की अधिष्ठात्री देवी, जो वन में अपने को असहाय पाने वाले की सहायता करती है।
**बनसार** *पु०* बन्दीगृह।
**बनसारी** *स्त्री०* एक प्रकार की घास।
**बना** *पु०* दुलहा, वर, बन्ना।
**बनाइल** *अक०* व्यर्थ घूमते रहना।
**बनाई** *स्त्री०* किसी वस्तु को बनाने की मजदूरी।
**बनाउरी** *स्त्री०* बनावट, गढ़न।
**बनात** *स्त्री०* लाल रंग का बढ़िया ऊनी वस्त्र।
**बनार** *पु०* छिपी हुई या गुप्त बात के सम्बन्ध में जानकारी।
**बनाव** *पु०* अच्छा सम्बन्ध, मेल।
**बनावट** *स्त्री०* गढ़न, बनने का भाव।
**बनावटी** *वि०* दिखाऊ।
**बनावल** *सक०* किसी वस्तु का निर्माण करना, किसी सामान को अच्छे रूप से तैयार करना। *उदा०* 'बनावे आवेला ना, बिगाड़े आवे दूनू हाथे'।
**बनिअई** *स्त्री०* बनिये का व्यवसाय, नफा के लिए चालाकी की बात।
**बनिआ** *पु०* [सं० वणिज्] व्यापारी। *उदा०* 'बनिआ अपना बापो के ठगेला'।
**बनिआइन** *पु०* एक प्रकार की बुनावट की गंजी। *स्त्री०* बनियों की पत्नी।
**बनिआहा** *स्त्री०* बनी नामक देवी का उपासक।
**बनिऔटा** *पु०* किसी महाजन का कर्जखोर।
**बनिजिया** *पु०* व्यापार।
**बनिहार** *पु०* खेतिहर मजदूर।

**बनी** *स्त्री०* एक गृहदेवी शक्तिरूप; कृषि-कार्य की मजदूरी; दुल्हन।
**बनेआ** *वि०* थैला, जंगली।
**बनेठी** *स्त्री०* एक प्रकार की लाठी, जिसमें काठ का गुटका लगा रहता है।
**बनेया** *पु०* जंगली, बनैला।
**बनेसर** *पु०* महादेव।
**बनौरी** *स्त्री०* ओला।
**बन्हउआ** *पु०* मजदूरों द्वारा अपनी मजदूरी में लेने के लिए बाँधा गया बोझा।
**बन्हक** *पु०* बन्धक।
**बन्हका** *पु०* बड़ी धनुही की आकार की सरकी।
**बन्हकी** *स्त्री०* बन्धक में रखी गई वस्तु।
**बन्हगोड़** *पु०* पैरों को बाँध देने से उत्पन्न स्थिति, कुछ करने में असमर्थ व्यक्ति।
**बन्हवावल** *सक०* दूसरे से बँधवाना।
**बन्हाइल** *सक०* बाँधा जाना।
**बन्हिआ** *पु०* बाँधने का कार्य।
**बन्हुआ** *पु०* कैदी, बन्दी; वह मवेशी, जो द्वार पर बँधा रहता है।
**बन्हेज** *पु०* किसी वस्तु को नियमित देने की शर्त।
**बपंसी** *पु०* पिता का अंश।
**बपहर** *पु०* पिता का घर, पितृघर।
**बपौती** दे० 'बपंसी'।
**बफदर** *पु०* चेहरे के ऊपर का चर्म रोग।
**बफाइल** *सक०* किंचित् उबाला हुआ।
**बफारा** *पु०* मुँह या गर्म पानी से निकलने वाली भाप।
**बफुआ** *वि०* धान को उबालकर बनाया (चावल)।
**बफोरी** *स्त्री०* बिना तेल-घी के केवल भाव से बनी तरकारी।
**बबी** *स्त्री०* कम उम्रवाली स्त्रियों तथा उच्च कुल की लड़कियों के लिए सम्बोधन शब्द।
**बबुआ** *पु०* प्रिय पात्र; बच्चों के लिए सम्बोधन। *उदा०* 'बबुआ के सउरिए में ओझाई'। लोको०
**बबुनी** *स्त्री०* बच्ची, छोटी लड़की।
**बबुर** *पु०* [सं० बर्बुरः] एक प्रकार का काँटेदार पेड़, बबूल।
**बबुरी** *स्त्री०* छोटी और कँटीली झाड़ी, छोटे-छोटे पौधे।
**बभनई** *स्त्री०* ब्राह्मणों द्वारा व्यवहृत, ब्राह्मणों से सम्बन्धित।
**बभनगेंठरी** *स्त्री०* ब्राह्मण के गमछे की अनेक गठरियाँ, जिसमें मिले खाद्य-पदार्थ आदि रहते हैं।
**बभनटोली** *स्त्री०* वह टोला, जहाँ ब्राह्मणों की अधिक आबादी हो।
**बभना** *पु०* ब्राह्मणों के लिए अनादरसूचक शब्द। *उदा०* 'शिवबबा के कवन अँगना रे बता दे बभना'। लोकगीत
**बभनी** *स्त्री०* धान के पौधों का एक रोग; एक प्रकार का चौड़ी पत्ती की घास, जिसका साग बनता है; आँख की छोटी फुंसी; एक प्रकार का कीड़ा।
**बम** *अव्य०* गंगाजल लाने के लिए काँवर ढोने वाला शिवभक्त, शिवभक्तों द्वारा उच्चारित 'बम' शब्द *उदा०* 'बम-बम बोल रहल बा कासी'।
**बन-बखेड़ा** *यौ०* काँवर ढोने वाले शिवभक्तों द्वारा पालन किया जाने वाला कठोर नियम।
**बमउर** *पु०* खुजलाने पर उभड़ा हुआ चमड़ा।
**बमकल** *अक०* क्रोध में जोर से बोलना; बढ़ जाना (घाव)।
**बमगोला** *पु०* विस्फोटक पदार्थ से तैयार किया गया एक प्रकार का ध्वंसकारी गोला; पेट का गोला, ट्यूमर।
**बमचख** *पु०* झगड़ा, मारपीट।

**बमपिलाट** *वि०* अत्यन्त मोटा, जड़बुद्धि, अल्पबुद्धि का व्यक्ति।

**बमभोला** *वि०* सीधे स्वभाव का, सरल प्रकृति का।

**बमसुराह** *वि०* मूर्खतापूर्ण, हिम्मतवाला।

**बमू** *पु०* बाँस का मोटा टुकड़ा।

**बम्मड़** *वि०* मूर्ख, विवेकहीन।

**बम्मा** *पु०* मिट्टी, लोहा, सीमेण्ट आदि की बनी हुई जल-प्रणाली।

**बयगोला** *पु०* वायुविकार से उत्पन्न पेट का रोग।

**बयमरू** *वि०* बात रोग से ग्रसित होने के कारण कमजोर।

**बयान** *पु०* [अ०] कथन, वर्णन।

**बयाना** *पु०* पेशगी, अग्रिम।

**बयाबान** *पु०* [फा०] जंगल।

**बयाबानी** *वि०* जंगली।

**बयार** *पु०* बहती हुई हवा।

**बयाला** *पु०* ताखा, आला।

**बयालिस** *वि०* चालीस और दो।

**बयासी** *वि०* अस्सी और दो।

**बर** *पु०* बरगद; वरदान; दूल्हा। *उदा०* 'बर आउर बासी मुँहे।' लोको०

**बरइन** *स्त्री०* बरई की पत्नी।

**बरई** *पु०* पान की बिक्री करने वाली एक जाति।

**बरकत** *पु०* बढ़ती, वृद्धि; लाभ।

**बरकल** *अक०* किसी ठोस पदार्थ का गर्मी में पिघल जाना।

**बरकस** *पु०* छप्पर में प्रयुक्त बाँस बाँधने की रस्सी।

**बरख** *पु०* वर्ष।

**बरखज** *पु०* बैर, विरोध।

**बरखा** *पु०* वृष्टि, वर्षा। *उदा०* 'बरखा बिन सागर कौन भरे, माता बिन आदर कौन करे'।

**बरखास** *पु०* नौकरी से निष्कासित, बरखास्त।

**बरखासन** *पु०* श्राद्ध में दान किया जाने वाला एक वर्ष के भोजन के लिए अन्न।

**बरखी** *स्त्री०* वार्षिक श्राद्ध।

**बरग** *पु०* दर्जा, वर्ग।

**बरगद** *पु०* बड़े आकार का एक पेड़, वट।

**बरगाँवाँ** *वि०* अनेक गाँवों का।

**बरगा** *पु०* खम्भे का ऊपरी भाग।

**बरघरा** *पु०* मवेशियों के रहने की पलानी।

**बरच्छा** *पु०* एक वैवाहिक रस्म, वररक्षा।

**बरछा** *पु०* भाला। *स्त्री०* बरछी।

**बरजल** *सक०* मना करना, बात से रोकना। *उदा०* 'बरजौ कुतिया भीखो से बाज'।

**बरजात** *पु०* बदमाश।

**बरजेठाह** *वि०* ऐसा विवाह, जिसमें वर से कन्या की उम्र अधिक हो।

**बरजोरी** *स्त्री०* जबरदस्ती।

**बरत** *पु०* पूजनार्थ उपवास, व्रत।

**बरतन** *पु०* [वर्तनं] खाने-पीने का सामान या अन्य किसी वस्तु को रखने का मिट्टी या धातु का पात्र, भाँडा।

**बरतनी** *स्त्री०* हिज्जे, शब्द का वर्णक्रम।

**बरतनेम** *पु०* किसी अच्छे कार्य को करने के लिए नियम की पाबन्दी में आस्था।

**बरता** *पु०* पटसन का मोटा रस्सा।

**बरताव** *पु०* व्यवहार, व्यवहार करने की रीति, बर्ताव।

**बरतिया** *स्त्री०* बारात में जाने वाला व्यक्ति।

**बरती** *वि०* व्रती।

**बरतुई** *स्त्री०* विवाह तय हो जाने पर की जानेवाली रस्म।

**बरद** *पु०* बैल, बरधा।

**बरदहट्टा** *पु०* बैलों की खरीद-बिक्री का बाजार।

**बरदाइल** *अक०* मादा पशुओं का नर से जोड़ा खाना, गाभिन होना।
**बरदास** *पु०* सहने की क्रिया, सहनशीलता।
**बरदिया** *पु०* पशुओं को चराने के बदले मालिक को दिया जाने वाला कर; चरवाहा।
**बरदौर** *पु०* बरधा को बाँधने का स्थान, बधान।
**बरध** *पु०* बैल।
**बरधाइल** *सक०* बरदाना।
**बरधी** *वि०* बैल से सम्बन्धित, बैल का।
**बरन** *पु०* रंग, रूप, जाति।
**बरनन** *पु०* विस्तार से कुछ कहने का कार्य, वर्णन।
**बरनाँठ** *पु०* वह वर, जिसकी विवाह की उम्र बहुत पहले ही पार हो चुकी है। इसी के बाद खोरनाठ और झरनाठ वर आते हैं।
**बरनेति** *स्त्री०* बारात, विवाह की एक विशेष रस्म।
**बरपाय** *वि०* तन्दुरुस्त, स्वस्थ।
**बरफ** *स्त्री०* हिम, पाला।
**बरफी** *स्त्री०* खोआ और चीनी से बनी एक मिठाई, जिसका रंग बर्फ-सा सफेद होता है।
**बरबर** *पु०* अनाप-शनाप प्रलाप।
**बरबराइल** *सक०* व्यर्थ की बातें बोलते रहना, बड़बड़ाना।
**बरबरियत** *स्त्री०* बर्बरता, जंगलीपन।
**बरबरी** *स्त्री०* बूढ़ी बकरी।
**बरबस** *अव्य०* [सं० बलं+वश:] जबर्दस्ती, बलपूर्वक।
**बरबाद** *स्त्री०* नष्ट, चौपट, तबाह।
**बरबारगी** *स्त्री०* बड़प्पन, श्रेष्ठता।
**बरमसिआ** *वि०* बारहोमास फल देने वाला।
**बरमहल** *क्रि०वि०* हमेशा, सदा।
**बरमा** *पु०* लकड़ी आदि में छेद करने का लोहे का एक औजार; बर्मा, ब्रह्मदेश।
**बरमावल** *सक०* बरमा से छेद करना।
**बरल** *अक०* जलना, प्रज्वलित होना।
**बरवाह** *पु०* पानी को खेत में इधर-उधर फैलाने वाला व्यक्ति।
**बरस** *पु०* [सं० वर्ष] वर्ष, 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनट 46 सेकण्ड का समय। **-गाँठ** *स्त्री०* सालगिरह, जन्म-दिवस।
**बरसल** *अक०* मेघ का बरसना, वर्षा होना।
**बरसाइत** *पु०* जेठ की अमावस्या, जिस दिन वट-पूजन का त्यौहार होता है।
**बरसाइन** *वि० स्त्री०* हर साल बियाने वाली गाय या भैंस।
**बरसाऊ** *वि०* बरसने वाला।
**बरसात** *स्त्री०* वर्षा के दिन, ऋतु। *उदा०* 'बरसात में घोंघों के मुँह खुल जाला'। लोको०
**बरसाती** *वि०* वर्षा सम्बन्धी, वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक गीत, बरसात में पहनने का कपड़ा।
**बरसायन** *पु०* दे० 'बरसाइन'।
**बरसावल** *सक०* वर्षा करना, अधिक संख्या में ऊपर से नीचे की ओर गिरना।
**बरसाँह** *पु०* बरसने वाला (बादल)।
**बरहमासा** *पु०* एक प्रकार का गीत, जिसमें बारहो महीने का विरह-वर्णन होता है। बारहमासा।
**बरहा** *पु०* मोटा रस्सा।
**बरहिआ** *स्त्री०* प्रसव का बारहवाँ दिन।
**बरही** *स्त्री०* सन्तानोत्पत्ति के बारहवें दिन का उत्सव।
**बरहौधर** *पु०* छोटी मड़ई।
**बरांडा** *पु०* बरामदा, ओसारा।
**बरांडी** *स्त्री०* ब्राण्डी।
**बरा** *पु०* उड़द की पीसी हुई दाल से बना एक भोज्य-पदार्थ; बर्रा।

**बराइल** *अक०* लकड़ी का सूखकर फट जाना।
**बराठी** *पु०* भादों में होने वाला एक मोटा धान।
**बरात** *स्त्री०* विवाह या द्विरागमन के अवसर पर वर के साथ जाने वाला जन-समूह। *उदा०* 'बरात आवे कहीं से गीत गाइन तऽ गौवै के रही'।
**बराती** *स्त्री०* बारात में जाने वाले लोग।
**बरादीर** *स्त्री०* बड़े आकार की पालकी।
**बराबर** *स्त्री०* [फा०] गुण, मूल्य, माप या परिमाण आदि में समान, समतल (भूमि)।
**बरामद** *पु०* [फा०] *स्त्री०* चोरी गई वस्तु का कहीं से निकालने का काम।
**बरामदा** *पु०* [फा०] ओसारा, घर के मुख्य द्वार के आगे बना सायबान, जिसकी छत खम्भों पर टिकी रहती है।
**बरार** *पु०* एक जंगली जानवर।
**बरारी** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली, जिसमें काँटा कम होता है।
**बराव** *पु०* बचाव, किसी काम से बचने का भाव।
**बरावल** *सक०* परहेज करना।
**बराहिल** *पु०* कृषि-कार्य के लिए नियुक्त सिपाही।
**बरिआ** *वि०* ताकतवर, जबरदस्त। *कहा०* 'बरिआ हारे त हुरे जीते त थूरे'।
**बरिआई** *क्रि०वि०* बलात्, जबरदस्ती।
**बरिआत** *स्त्री०* बारात।
**बरिआर** *वि०* बलिष्ठ, बली। *उदा०* 'बरिआर चोर सेन्हें पर बिरहा गावें'। लोको०
**बरिच्छा** *स्त्री०* फलदान।
**बरिबंड** *वि०* प्रचण्ड।
**बरिया** *स्त्री०* गोली।
**बरियात** *स्त्री०* बारात।
**बरियार** *वि०* बलवान।
**बरिस** *स्त्री०* बारह महीने की अवधि।
**बरिसकाल** *पु०* वर्षा ऋतु।
**बरी** *स्त्री०* उड़द या चने की बरी, जो तेल या घी में तली रहती है; मुक्त होने की स्थिति।
**बरीस** *पु०* बरस।
**बरुआ** *पु०* वह बालक, जिसका यज्ञोपवीत हो रहा हो, ब्रह्मचारी।
**बरुन** *पु०* वरुण।
**बरुना** *स्त्री०* वरुणा।
**बरुनी** *स्त्री०* बरौनी।
**बरुथ** *पु०* वरुथ।
**बरेंठा** *पु०* बरें के डण्ठल की बनी झाड़ू।
**बरेंठी** *पु०* काठ के गोले लगाकर तैयार की गई एक प्रकार की लाठी।
**बरेंड़** *पु०* छप्पर के मध्य की मोटी लम्बी शहतीर।
**बरेठा** *पु०* धोबी, कपड़ा धोने वाला।
**बरेव** *पु०* वह खेत, जहाँ पान की खेती की गई हो।
**बरो** *पु०* एक घास।
**बरोह** *पु०* बट की शाखाओं से नीचे लटकी शाखाएँ, जो जमीन पकड़ने के बाद जड़ ही हो जाती हैं।
**बरौंखी** *स्त्री०* नरगोरी।
**बरौना** *पु०* छठ व्रत का वह प्रथम दिन, जब व्रती स्नान के बाद भोजन करती हैं।
**बरौनी** *स्त्री०* पलक के बाल; भौंह।
**बल** *पु०* [सं०] शरीर की शक्ति, ताकत; सेना; भरोसा, सहना। **-कारक** *वि०* बल देने वाला। **-दाऊ** *पु०* बलराम। **-पति** *पु०* सेनापति। **-वीर** *पु०* कृष्ण। **-बूता** *पु०* ताकत। **-भद्र** *पु०* बलराम।

**बलकट** *वि०* जो बाल काटकर प्राप्त किया गया हो (अनाज का बोझा)। ऊपर से बाल काटने की क्रिया।
**बलकल** *अक०* मिट्टी में से रेह का आना।
**बलको** *पु०* भुट्टे के ऊपर की पत्तियाँ।
**बलखंडी** *पु०* जंगल में रहने वाला साधु, वनखण्डी।
**बलगर** *पु०* जिसमें बड़े-बड़े बाल हों (फसल)।
**बलजोरी** दे० 'बरजोरी'।
**बलडौड़ा** *पु०* बहूँटी।
**बलतोड़** *पु०* बाल के टूट जाने से होने वाला फोड़ा या घाव।
**बलथर** *पु०* बालूमिश्रित भूमि।
**बलदान** *पु०* बलिदान।
**बलदेव** *पु०* कृष्ण के ज्येष्ठ भाई, बलराम।
**बलधूस** *पु०* बालू मिली हुई मिट्टी।
**बलबलाइल** *अक०* ऊँट का बोलना।
**बलम** *पु०* एक प्रकार का भाला, बल्ला।
**बलवंत** *वि०* ताकतवर, बली, बलवान।
**बलवा** *पु०* विद्रोह, बगावत; बालू मिली मिट्टी।
**बलवान** *वि०* शक्तिशाली, बलिष्ठ, ताकतवर।
**बलसुनरी** *स्त्री०* बालूमिश्रित मिट्टी।
**बलसेरी** *स्त्री०* ढाली हुई लोहे की काँटी।
**बलही** *स्त्री०* पुआल का बड़ा बोझा; भैंस।
**बलात** *क्रि०वि०* जबरदस्ती, बलपूर्वक।
**बलान** *पु०* बालू के ढेर के कारण बेकार पड़ी भूमि।
**बलाय** *पु०* विपत्ति, आफत, दुःख।
**बलिस्ता** *पु०* तकिया।
**बली** *वि०* बलवान, शक्तिशाली, ताकतवर।
**बलुअट** *स्त्री०* बालूमिश्रित मिट्टी।
**बलुई** *वि०* बालूमिली भूमि।
**बल्ला** *पु०* बाँस का काठ का मोटा और लम्बा टुकड़ा।
**बलुक** *अव्य०* परन्तु, इसके विपरीत, बल्कि।
**बलुरी** दे० 'बाल'।
**बलुरेत** *पु०* रेतीली भूमि। *उदा०* 'बलुरेतवा डगरिया चलब कइसे'। लोक०
**बलेक** *पु०* कालाबाजार, ब्लैक।
**बलेल** *पु०* मूर्ख।
**बलौंधी** *स्त्री०* एक प्रकार की चोइँटारहित मछली।
**बवंडर** *पु०* [सं० वायुमण्डलं] चक्रवात, आँधी। **–बान्हल** *मुहा०* मिथ्या बातों से भय पैदा करना।
**बवाल** *पु०* झंझट, झगड़ा।
**बवासीर** *पु०* एक रोग, जिसमें मलद्वार पर मस्सा निकलता है या सूजन होती है।
**बसंत** *पु०* एक ऋतु, जो चैत और बैशाख में पड़ती है।
**बसंती** *वि०* बसन्त सम्बन्धी, पीले रंग का।
**बस** *अव्य०* [फा०] पर्याप्त काफी, केवल।
**बसइठा** *पु०* बाँस का मोटा टुकड़ा।
**बसगीत** *पु०* घर बनानेयोग्य भूमि।
**बसती** *स्त्री०* जहाँ लोग रहते हों, बस्ती।
**बसरी** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**बसल** *अक०* रहना, मेला में डेरा डालना।
**बसहा** *पु०* जटा वाला बैल।
**बस्ता** *पु०* कागज-पत्र आदि रखने के लिए कपड़े का टुकड़ा; झोला।
**बसाइल** *अक०* गन्ध देना, दुर्गन्धि देना।
**बसावल** *सक०* रहने के लिए भूमि देना, निवास करने देना। *उदा०* 'बसाव सहर का और खेत नहर का'। फैलेन
**बसिआ** *वि०* बासी भोज्य-पदार्थ। *उदा०* 'बसिआ बचे न कुत्ता खाये'।

**बसिआ खिआई** *पु०* कुँवर कलेऊ; कलेवा के समय वर को दिया जाने वाला उपहार।
**बसीऔरा** *वि०* बासी।
**बसीना** *पु०* रहने वाला, निवासी। वाशिन्दा।
**बसुगीत** *पु०* वह स्थान, जहाँ लोग बसते हों, निवास-भूमि।
**बसुधारा** *पु०* बसोधारा, विवाह-संस्कार का एक अनुष्ठान।
**बसूँला** *पु०* लकड़ी छिलने या गढ़ने का लोहे का एक औजार। *उदा०* 'बसूँला अइसन मुँह आ रूखानी अइसन गोड़'।
**बसेड़** *पु०* निवास, ठहराव, टिकने का स्थान।
**बहँगी** *स्त्री०* कन्धे से सामान ढोने का एक साधन।
**बहंतु** *वि०* व्यर्थ घूमता-फिरता।
**बह** *पु०* किसी पौधे की जड़ से निकला तन्तु, जो पीछे पौधा हो जाता है।
**बहकल** *अक०* सही रास्ते को छोड़कर अन्य ओर जाना।
**बहखर** *वि०* हल खींचने में समर्थ बैल।
**बहगुना** *पु०* चौड़े मुँह का गहरा बर्तन।
**बहत्तर** *वि०* [सं० द्विसप्ततिः] सत्तर और दो।
**बहनी** *स्त्री०* बहने का भाव।
**बहनोई** *पु०* बहन का पति।
**बहमा** *पु०* अफवाह।
**बहर** *पु०* कारोबार।
**बहरखाल** *वि०* बदचलन।
**बहरल** *अक०* घर से बाहर निकलना या निकल जाना।
**बहरवासू** *वि०* जो बाहर रहता हो।
**बहरा** *पु०* बाहर, शौच के लिए स्त्रियों का रात में बाहर निकलने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बहरिआ** *पु०* बुहारने से प्राप्त अन्न।
**बहरिआवल** *सक०* बाहर करना।
**बहरुपिया** *स्त्री०* नाच या तमाशा से अनेक रूप दिखलाने वाला व्यक्ति।
**बहल** *अक०* प्रवाहित होना।
**बहलखाना** *पु०* बैलों के रहने की जगह।
**बहलल** *अक०* मनोरंजन होना।
**बहलवान** *पु०* बैलगाड़ी को हाँकने वाला व्यक्ति।
**बहलावल** *सक०* वाद-विवाद, तर्क या दलील उपस्थित करने का काम।
**बहसल** *अक०* बहकना, मन बढ़ना।
**बहादुर** *वि०* वीर, फुर्तीला।
**बहादुराना** *वि०* [फा०] वीरोचित।
**बहादुरी** *स्त्री०* वीरता।
**बहाना** *पु०* [फा०] किसी बात या काम से बचने के लिए झूठी बात कहना।
**बहार** *पु०* [फा०] आनन्द, मौज, मजा, मनोरंजन।
**बहारन** *पु०* झाड़ू देने के बाद निकला कूड़ा।
**बहारनी** *पु०* एक तरह का महीन धान।
**बहारल** *सक०* झाड़ू लगाना। *उदा०* 'बहारल देखी लीपल अइसन लीपल देखीं चनन अइसन'।
**बहाल** *वि०* [फा०] नियुक्ति; हृष्ट-पुष्ट।
**बहाव** *पु०* धारा या प्रवाह।
**बहावल** *सक०* प्रवाहित करना; तरल पदार्थ को गिराना।
**बहासी** *स्त्री०* एक प्रकार का सफेद मोटा धान।
**बहिंगा टाँड़ी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।
**बहिनउर** *पु०* घर या गाँव, जहाँ बहन ब्याही गई हो।
**बहिन दमाद** *पु०* बहन की पुत्री का पति।
**बहिनपा** *पु०* किसी स्त्री द्वारा किसी स्त्री से मैत्री करना, बहन-सा सम्बन्ध।

**बहिनबेटा** *पु०* बहन का बेटा।

**बहिना** *स्त्री०* बहन के लिए सम्बोधन-सूचक शब्द। *उदा०* 'बहिना के घर भाई कुक्कुर'।

**बहिनी** *स्त्री०* स्त्रियों द्वारा नाता या उम्र में समान स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्बोधन।

**बहियाँ** *पु०* साथी, संगी।

**बहिया** *पु०* बाढ़।

**बहियार** *पु०* गाँव के बाहर की जमीन।

**बहिर** *वि०* बहरा। *उदा०* 'बहिर अकाल, दुनिया अकाल'।

**बहिराठ** *वि०* बहिर।

**बहिलंठ** *स्त्री०* बाँझ, बन्ध्या।

**बहिला** *स्त्री०* गर्भ न धारण करने वाली।

**बही** *स्त्री०* [हिं० बंधी] हिसाब-किताब लिखने की जिल्द बाँधी लम्बी पुस्तक। **-खाता** *पु०* हिसाब की बहियाँ।

**बहुँटा** *पु०* बाँह का एक गहना।

**बहु** *वि०* [सं०] बहुत, ज्यादा। **-बल** *वि०* अति बली। **-भाग्य** *वि०* बड़भागी। **-भाषी** *वि०* बहुत बोलने वाला। **-भुजा** *स्त्री०* दुर्गा। **-भोग्या** *स्त्री०* वेश्या। **-भोजी** *वि०* पेट। **-मूत्र** *वि०* मधुमेह (सुगर)। **-रंगी** *वि०* बहुरुपिया। **-रूपिया** *वि०* अनेक रूप धारण करने वाला **-विवाह** *पु०* कई औरतों से विवाह करना।

**बहुआर** *पु०* लस्सेदार फलवाला एक पेड़ और उसकी लकड़ी।

**बहुत** *वि०* [सं० बहुतर] अनेक, ज्यादा। *उदा०* 'बहुत भोग बहुत रोग'। *अव्य०* अधिक मात्रा में। **-अच्छा** = बेहतर। **-कुछ** = काफी।**-खूब** = बहुत अच्छा।

**बहुरिया** *स्त्री०* दुलहिन।

**बहुवंश** *पु०* अयोग्य सन्तान, मूर्ख आदमी।

**बहुवाचक** *पु०* विभिन्न तरह से ऊँच-नीच बात करने वाला।

**बहुमत** *पु०* किसी विषय पर अधिक व्यक्तियों की सहमति।

**बहुरँवत** *पु०* विवाह के बाद वर-कन्या पक्ष से एक-दूसरे के यहाँ भेजी गई मिठाई-फल आदि।

**बहुरल** *अक०* वापस लौटना, फिर आना।

**बहुरा** *पु०* भादो कृष्ण चौथ का व्रत।

**बहुरिआ** *स्त्री०* बहू, वधू, नवविवाहिता स्त्री।

**बहुरी** *स्त्री०* अधपका भूना हुआ अन्न, भूजा।

**बहूँटा** *पु०* बाँह का गहना।

**बहू** *स्त्री०* [सं० वधूः] पतोहू। *उदा०* 'बहू न बेटा अपने पेटा', लोको०

**बहेंग** *पु०* लोक-कथाओं में चर्चित एक पक्षी।

**बहेंगवा** *पु०* मवेशियों की पूँछ का एक रोग।

**बहेंड़** *वि०* इधर-उधर व्यर्थ घूमते रहने वाला व्यक्ति; एक प्रकार का पौधा।

**बहेड़ा** *पु०* एक वृक्ष, जिसका फल औषधि के काम में आता है।

**बहेरुआ** *वि०* इधर-उधर व्यर्थ घूमने वाला।

**बहेल** *वि०* व्यर्थ घूमने वाला, फालतू।

**बहेला** *पु०* एक प्रकार का मछली मारने का जाल।

**बहोरनी** *स्त्री०* एक प्रकार का लम्बा उजला धान।

**बहोरल** *सक०* दे० 'बहुरल'।

**बहोरी** *क्रि०वि०* पुनः, फिर फिर।

**बाँए** *क्रि०वि०* बायीं ओर, बायीं तरफ।

**बाँक** *पु०* बाँह का एक गहना; टेढ़ापन।

**बाँकठा** *पु०* उपेक्षित होने के कारण नष्ट फसल।

**बाँकड़ा** *वि०* वीर, साहसी।
**बाँकपन** *पु०* टेढ़ापन।
**बाँका** *वि०* छैला, सुन्दर, बहादुर।
**बाँग** *पु०* कपास, कच्ची रूई। *स्त्री०* [फा०] आवाज, बोली।
**बाँगड़** *वि०* मूर्ख, देहाती, असभ्य।
**बाँगर** *पु०* बालूमिली पीले रंग की मिट्टी; वह भूमि-खण्ड, जहाँ बाढ़ न आवे।
**बाँगा** *पु०* कपास का डण्ठल; वन।
**बाँगुर** *वि०* जिसकी अँगुलियाँ छोटी और टेढ़ी हों, ऐसा व्यक्ति; *पु०* एक मछली।
**बाँचल** *अक०* बचना, मुक्त रहना; पढ़ना।
**बाँझ** *वि०* जिससे सन्तान पैदा नहीं होती है। *उदा०* 'बाँझ का जाने परसवती के पीरा'।
**बाँझी** *स्त्री०* वृक्षों की डाली पर लगने वाला लाल फूल; वृक्षों की एक बीमारी; पइया।
**बाँट** *पु०* विभाजन, बँटवारा। -**बूँट** *स्त्री०* हिस्सा बखरा।
**बाँटल** *सक०* बाँटना, विभाजन करना। *उदा०* 'बाँटल भाई पड़ोसिया'।
**बाँटी** *स्त्री०* सामूहिक शिकार में भाग लेने वालों का हिस्सा।
**बाँड़** *वि०* कृपण; बदमाश; पूँछविहीन पशु; दो नदियों के संगम के बीच की जमीन।
**बाँड़ा** *वि०* पूँछविहीन पशु; असहाय।
**बाँड़ी** *स्त्री०* छोटा रंगीन डण्डा, जिसे ताल के लिए बजाते हैं।
**बाँद** *पु०* टहलू, दास; बन्धन, फन्दा।
**बाँदर** *पु०* बन्दर।
**बाँदा** *पु०* एक तरह का पौधा, जो आम आदि के वृक्षों में लगकर उनके रस से हरा-भरा रहता है।
**बाँदी** *स्त्री०* लौंड़ी।
**बाँदू** *पु०* बन्दी, बन्धुआ।
**बाँध** *पु०* मेड़, बन्द; पानी रोकने हेतु लगाई गई ऊँची मेड़।
**बाँधल** *सक०* [सं० बन्धनम्] कसना, गाँठ देना, लपेटना।
**बांधव** *पु०* [सं०] भाई-बन्धु।
**बाँबी** *स्त्री०* साँप का बिल।
**बाँभन** *पु०* ब्राह्मण।
**बाँया** *वि०* बायाँ।
**बाँयारी** *वि०* बाँयी ओर स्थित।
**बाँये** *क्रि०वि०* बाँयी ओर। *उदा०* 'बायें मासा करे कविलासा'।
**बाँव** *वि०* टेढ़ा, विफल।
**बाँवाँ** *वि०* बायाँ।
**बाँस** *पु०* [सं० वंश:] कई गाँठों वाली एक वनस्पति; वंश। *उदा०* 'बाँसे के जरी बाँस जामेला'।
**बाँसकोठी** *स्त्री०* बाँसों का वन।
**बाँसगेड़ा** *पु०* एक प्रकार का लम्बी और मोटी ऊँख।
**बाँसफूल** *पु०* एक प्रकार का बारीक धान।
**बाँसल** *पु०* बाँस की खरीद-बिक्री करने वाला व्यक्ति।
**बाँसा** *पु०* नाक के बीच की हड्डी।
**बाँसी** *स्त्री०* बारीक सुगन्धित धान; बाँसुरी।
**बाँसुरी** *स्त्री०* वंशी।
**बाँह** *पु०* [सं० बाहु:] हाथ का ऊपरी हिस्सा; भुजा।
**बाँही** *स्त्री०* कुर्ते या अन्य परिधान का वह भाग, जिसमें बाँह डाली जाती है, किनारा।
**बाइ** *स्त्री०* बाई।
**बाइनि** *स्त्री०* बयना।
**बाइबिल** *स्त्री०* ईसाई धर्म-ग्रन्थ।
**बाइली** *वि०* बाहरी दूर स्थित।
**बाइस** *वि०* बीस और दो।

**बाइसिकिल**- *स्त्री०* [अं०] साइकिल, द्विचक्रिका।

**बाई** *स्त्री०* [सं० वायुः] वात रोग; नर्तकियों की उपाधि।

**बाईस** *वि०* दे० 'बाइस'।

**बाईसी** *स्त्री०* बड़े दाने वाली चेचक।

**बाउ** *पु०* वायु, अपान वायु।

**बाउग** *पु०* बुवाई की एक प्रक्रिया।

**बाउर** *वि०* खराब, अशुभ।

**बाउली** *स्त्री०* छोटा तालाब।

**बाकंदी** *स्त्री०* कपास की एक जाति।

**बाक** *पु०* यज्ञादि में ब्राह्मण द्वारा उच्चारित वाक्य या मंत्र।

**बाकल** *पु०* वृक्ष की छाल, लकड़ी की बाहरी परत। *वि०* मूर्ख व्यक्ति।

**बाकलर** *पु०* एक प्रकार का केला।

**बाकला** *स्त्री०* एक छोटा फसली पौधा, जिसके दाने दाल के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

**बाकस** *पु०* चौकोर बक्सा; एक प्रकार की लकड़ी।

**बाकिर** *अव्य०* लेकिन, किन्तु, बाकी।

**बाकी** *स्त्री०* शेष, बचत, किसी के जिम्मे की देय रकम।

**बाखर** *पु०* निवास-घर, हवेली, बखरी।

**बाखरी** *स्त्री०* बकेना (गाय)।

**बाग** *पु०* [फा०] वाटिका, उपवन, बाड़ी। **-बाग** *वि०* प्रमुदित होना। **-बान** *पु०* माली। **-बानी** *स्त्री०* बागबान का काम। **-वान** *पु०* दे० 'बागवान'। *उदा०* 'बाग बन दूनों राखे के चाहीं'। लोको०

**बागड़** *वि०* जो स्पष्ट न बोल सके, गूँगा।

**बागडोर** *पु०* नियन्त्रण करने वाली रस्सी (घोड़े को)।

**बागनर** *पु०* एक प्रकार का बड़ा केला।

**बागी** *स्त्री०* राजद्रोही, विद्रोही।

**बागेसरी** *स्त्री०* सरस्वती।

**बाघंबर** *पु०* बाघ की खाल; रोएँदार कम्बल।

**बाघ** *पु०* [सं० व्याघ्रः] हिंसक जन्तु, व्याघ्र। *उदा०* 'बाघ ना चिन्हे बाभन के पूत'।

**बाघा** *पु०* नसों में तनाव का रोग।

**बाघी** *स्त्री०* पेंडू और जाँघ की जोड़ पर की गिलटी।

**बाछल** *सक०* घने पौधे में से कुछ को निकालकर अलग कर देना, चुनना।

**बाछा** *पु०* गाय का नर-बच्चा, बछड़ा। *उदा०* 'बाछा लीहन बीन रुपया दीहन तीन'।

**बाज** *वि०* कोई-कोई। *पु०* एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी; बाजूबन्द।

**बाजदावा** *पु०* अपने दावे को त्याग देने का दस्तावेज।

**बाजन** *पु०* बाजा, मंगलवाद्य की आवाज।

**बाजल** *अक०* फूँकने या आघात से किसी वाद्य-यंत्र या वस्तु से आवाज निकलना; अधिकार का परित्याग करना।

**बाजरा** *पु०* एक अन्न।

**बाजा** *पु०* [सं० वाद्यम्] वादन यंत्र। *उदा०* 'बाजा छाजा केस ई तीन बंगाला देस'।

**बाजार** *पु०* [फा०] हाट, मण्डी; क्रय-विक्रय हेतु जमा लोग। **-भाव** *पु०* प्रचलित दर। **-के** मिठाई। *मुहा०* आसानी से उपलब्ध चीज; वेश्या। **-गिरल** *मुहा०* भाव घटना। **-तेज भइल** *मुहा०* भाव चढ़ना।

**बाजारी** *वि०* बाजार का **-औरत** स्त्री० वेश्या।

**बाजारू** *वि०* दे० 'बाजारी'।

**बाजियान** *पु०* बाजियों का देश। थारू लोग इतर हिन्दू जातियों को बाजी बोलते हैं।
**बाजी** *स्त्री०* हार-जीत पर लेन-देन की शर्त, शर्त के साथ खेला गया खेल।
**बाजु** *अव्य०* बिना, (के) सिवा।
**बाजू** *पु०* बाँह का एक गहना; थान।
**बाजूबन्द** *पु०* भुजबन्द।
**बाझल** *अक०* फँस जाना, उलझना, कार्यरत होना। *उदा०* 'बाझल बनिया देबे उधार'।
**बाट** *पु०* [सं० वटकः] राह, रास्ता; बटखरा। *उदा०* 'बाट चलत बटमारि'।
**बाटी** *स्त्री०* एक प्रकार का लता-फल, खरबूजा; फुटहरा, लिट्टी।
**बाटुर** *क्रि०वि०* बहुत।
**बाड़** *स्त्री०* झाड़बन्दी, टट्टी।
**बाड़न** *अक०* हैं।
**बाड़ा** *पु०* चारो ओर से घिरा मैदान, गोशाला; हाता।
**बाढ़** *स्त्री०* नदी में पानी की, वृद्धि; जलप्लावन।
**बाढ़न** *पु०* झाड़ू, बढ़नी।
**बात** *पु०* [सं० वार्ता] बात। *स्त्री०* वचन, वार्ता; प्रसंग; बहाना; गूढ़ अर्थ, मर्म। **-चीत** *स्त्री०* वार्तालाप। **-फरोस** *पु०* चापलूस। **-उठल** *मुहा०* जिक्र होना। **-उड़ल** *मुहा०* चर्चा फैलना। **-बात के धनी** *मुहा०* बात पर अडिग। **-पर आइल** *मुहा०* हठ करना। **-पूछल** *मुहा०* खोज खबर लेना। *उदा०* 'बात लाख के करनी खाक के'। लोको०
**बातकहनी** *स्त्री०* कहा-सुनी, वाद-विवाद।
**बाती** *स्त्री०* बतिहर; पसली की हड्डी; बाँस की फट्टी।
**बाती मिलौनी** *स्त्री०* दिया-बाती मिलाने की क्रिया।
**बाथा** *पु०* दर्द, कष्ट।
**बाद** *क्रि०वि०* पीछे।
**बादल** *पु०* [सं० वारिदः] मेघ, जलद। *उदा०* 'बादल ऊपर बादल धावे, तब भड्डर पानी बरसावे'।
**बादसाह** *पु०* महाराज, सम्राट्।
**बादुर** *पु०* चमगादड़।
**बाध** *पु०* [सं०] रोक; मूँज की रस्सी।
**बाधक** *वि०* विघ्नकारक।
**बाधा** *स्त्री०* रुकावट, व्यवधान।
**बाधी** *स्त्री०* खाट बुनने की रस्सी।
**बान** *पु०* तीर; आदत, प्रवृत्ति; एक जगह पर रोपे गए धान के बीजों का परिमाण।
**बानक** *पु०* बाना, आक्रमण; धूर्ततापूर्ण काम।
**बानगी** *स्त्री०* किसी वस्तु का वह अंश, जो ग्राहक को दिखलाने के लिए दिया जाता है, नमूना।
**बानबे** *वि०* नब्बे और दो।
**बानर** *पु०* [सं० वानरः] बन्दर। *उदा०* 'बानर बालक एक सुभाव'।
**बानबे** *वि०* [सं० द्वानवतिः] नब्बे और दो।
**बाना** *पु०* ताने के ऊपर बुना जाने वाला आड़ा सूत।
**बानी** *स्त्री०* बोली, सांकेतिक ढंग से कही गई प्रयोक्ति; जुलाहे को कपड़ा बुनने के बदले मिलने वाली मजदूरी।
**बान्ह** *पु०* बन्धन, जल आदि को बहने से रोकने के लिए बना मिट्टी, ईंट आदि का घेरा; बाँध।
**बान्ही** *स्त्री०* बाँध, मेंड़, खेत का घेरा।
**बाप** *पु०* [सं० बापः] पिता। *उदा०* 'बाप के नाव साग पात, पूत के नाम परोरा'।

**बापुत** *पु०* पिता और पुत्र।
**बापू** *पु०* बाप, आदरणीय सम्बोधन।
**बाफ** *पु०* [सं० वाष्पः] भाप।
**बाफता** *पु०* एक प्रकार का मोटा रेशमी वस्त्र।
**बाफल** *सक०* हलके तौर पर उबालना, गुनगुना करना।
**बाबड़ी** *स्त्री०* जुल्फ; लोहे को खरादने पर उससे निकला हुआ बुरादा।
**बाबत** *अव्य०* विषय में, सम्बन्ध में।
**बाबरची** *स्त्री०* रसोइया।
**बाबरा** *पु० स्त्री०* मालपुए जैसी फूली-फूली मिठाई।
**बाबा** *पु०* वृद्ध और पूज्य व्यक्ति के लिए सम्बोधन; पिता का पिता। *उदा०* 'बाबा कइले पतुरिया भइली महतरिया'।
**बाबी** *स्त्री०* साधुनी।
**बाबुल** *पु०* बाप, पिता।
**बाबू** *पु०* ठाकुर, जमींदार। **-जी** *पु०* पिताजी। **-साहब** *पु०* आदरणीय1
**बाभन** *पु०* ब्राह्मण। *उदा०* 'बाभन बानर बाँधलो न जाय'।
**बामत** *पु०* एक प्रकार का जादू; पुजारी की फूँक।
**बामय** *पु०* एक प्रकार की चोइटाँरहित मछली।
**बामी** *स्त्री०* साँपसदृश एक मछली।
**बायन** *पु०* इष्ट-मित्रों को कहीं से सौगात में से भेजी गई वस्तु; मिठाई की भेंट। *उदा०* 'बायन के भरोसे खरची बन्द'।
**बायबिडंग** *पु०* एक लता, जिसका फल औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।
**बायबी** *वि०* बाहरी, गैर, अजनबी।
**बायल** *क्रि०वि०* अलग, पृथक्।
**बाया** *पु०* अन्न तौलने वाला; एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया।
**बायु** *स्त्री०* वायु।
**बायें** *अव्य०* बायीं ओर; प्रतिकूल (होना)।
**बारंबार** *अव्य०* [सं० वारम्वारम्] कई बार, फिर-फिर।
**बार** *स्त्री०* समय; देर; दफा। **-बार** *अव्य०* पुनः-पुनः।
**बारजुन** *पु०* कैथीलिपि के ऊ के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बारता** *स्त्री०* वार्ता।
**बारनिस** *स्त्री०* [अं० वारनिश] रोगन, चमक।
**बारल** *सक०* प्रज्ज्वलित करना।
**बारहमासा** *पु०* लोकगीत की एक विधा।
**बारहमासी** *स्त्री०* पूरे साल फलने वाला फूल-फल।
**बारहवाँ** *वि०* [सं० द्वादशन्] ग्यारह के बाद वाला।
**बारहा** *अव्य०* [फा०] अनेक बार।
**बारा** *पु०* [फा०] वार, समय।
**बारात** *स्त्री०* बारात।
**बारादरी** *स्त्री०* बड़े आकार की एक प्रकार की डोली; बारह दरवाजे वाली।
**बारी** *स्त्री०* समय, अवसर; एक जाति; एक आभूषण।
**बारीक** *स्त्री०* [फा०] महीन, पतला, कलात्मक।
**बारीबस्त** *पु०* गाँव में स्थायी रूप से रहने वाला रैयत।
**बारूद** *पु०* विस्फोटक रसायन।
**बारे** *पु०* विषय में। अव्यय [फा०] अन्त में, खैर।
**बारौठी** *स्त्री०* द्वारचार।
**बाल** *स्त्री०* जौ, गेहूँ आदि का वह भाग, जिसमें दाने लगे होते हैं, खोसा; बाला, तरुणी। *पु०* [सं०] बच्चा, बालक। *वि०* नासमझ, मूर्ख। **-काल** *पु०* बचपन।

-**गोपाल** *पु०* बालकृष्ण; बाल-बच्चे। -**तोड़** *पु०* [हिं०] बाल टूट जाने से होने वाल फोड़ा। -**बुद्धि** *स्त्री०* नासमझी। -**भाव** *पु०* बचपन। -**मति** *स्त्री०* दे० 'बालबुद्धि'। -**मुकुन्द** *पु०* बालकृष्ण। -**लीला** *स्त्री०* बालचरित। -**विवाह** *पु०* छोटी उम्र का व्याह। -**सफा** *वि०* बाल साफ करने, उड़ाने वाला (साबुन)। -**हठ** *पु०* बच्चों की जिद। -**के खाल खींचल** *मुहा०* बारीकी निकालना। *उदा०* 'बाल ना बाचा नीन परे आछा'।

**बॉल** *पु०* [अं०] गेंद; नाच का जलसा। -**डांस** *पु०* सामूहिक नृत्य।

**बालक** *पु०* लड़का, बच्चा।

**बाल गोविद** *पु०* कृष्ण, बच्चा।

**बालछड़** *पु०* एक प्रकार का पौधा।

**बालटी** *स्त्री०* [अं० बकेट] एक प्रकार की डोल।

**बालभोग** *पु०* प्रात:काल का नैवेद्य, जो देवमूर्तियों के आगे रखा जाता है।

**बालम** *पु०* [सं० वल्लभ:] प्रियतम; पति।

**बालमखीरा** *पु०* एक प्रकार का बड़ा खीरा।

**बालल** *अक०* ऊपर से काटना, छोटा-छोटा टुकड़ा बनाना।

**बाला** *स्त्री०* [सं०] युवती, कामिनी।

**बालाई** *स्त्री०* हाथ का कड़ा। वलय।

**बालिग** *पु०* वयस्क, युवा, जवान।

**बाली** *स्त्री०* कान का एक गहना; फसल के अन्न का गुच्छा।

**बालू** *पु०* पत्थर का बारीक चूर्ण। *उदा०* 'बालू के भीत परदेसी के प्रीत'।

**बालूसाही** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई।

**बाव** *पु०* वायु। *उदा०* 'बाव बहे पुरवइया मोर लेख बयरिन भेल। पियबा का लागल आलस निनिया जगवलों से ना जागल हे'। लोक०

**बावग** *पु०* छींटकर बीज बोने की विधि।

**बावड़ी** *स्त्री०* बापी।

**बावन** *वि०* [सं० द्वापञ्चाशत्] पचास और दो।

**बावपेचिस** *पु०* उदर रोग, पेचिश।

**बावल** *सक०* मुँह खोलकर चौड़ा करना, फैलाना।

**बावला** *वि०* [सं० वातुल] विक्षिप्त, पागल, मूर्ख।

**बावली** *स्त्री०* छोटा और गहरा तालाब; पीछे की टेक।

**बास** *पु०* [सं० वास:] रहने की जगह, निवास-स्थान।

**बासठ** *वि०* [सं० द्विषष्टि] साठ और दो।

**बासन** *पु०* बर्तन; वस्त्र।

**बासमती** *स्त्री०* एक प्रकार का सुगन्धित चावल।

**बासा** *पु०* अस्थायी निवास, डेरा; भोजनालय।

**बासी** *पु०* रहने वाला, निवासी। *वि०* देर का पका हुआ।

**बासीया** *पु०* बासी अन्न। *कहा०* 'बासीया ना बचे कुत्ता खाय'।

**बासूदा** *पु०* रबड़ी।

**बाह** *पु०* चासा; खेत की जुताई।

**बाहर** *क्रि०वि०* किसी निश्चित सीमा से निकला हुआ। *उदा०* 'बाहर मियाँ सूबेदार घर में बीबी झोंकस भाड़'।

**बाहल** *अक०* मादा-पशु का नर-पशु से गर्भ धारण करना।

**बाहा** *पु०* छोटा नाला, पइन; बाहु।

**बिंग** *पु०* व्यंग्य।

**बिंजन** *पु०* व्यंजन।

**बिंदा** *पु०* बड़ी बिन्दी।

**बिंदी** *स्त्री०* शून्य।

**बिंदु** *पु०* बूँद।

**बिंबु** *पु०* सुपारी का पेड़।
**बिअड़ा** *पु०* रोपनी के लिए धान का तैयार पौधा।
**बिअर** *पु०* बिल, कीड़ों एवं रेंगने वाले पशुओं द्वारा बनाया गया धरती में छेद।
**बिअहुआ** *वि०* जिससे विवाह हुआ हो (पति)।
**बिअहुती** *वि०* विवाह में वर और कन्या के उपयोग की वस्तुएँ, विवाह सम्बन्धी।
**बिआइल** *सक०* बच्चे को जन्म देना, ब्याना।
**बिआउर** *वि०* जो बच्चा देती आ रही है (गाय, भैंस)।
**बिआड़** *पु०* वह खेत, जिसमें बीज बो कर बिचड़ा तैयार किया जाता है।
**बिआरी** *स्त्री०* धान का बिचड़ा जमाने वाला खेत।
**बिआहिल** *सक०* विवाह कर देना।
**बिकट** *वि०* कठिन, दुस्साध्य।
**बिकढांच** *पु०* व्यवधान, बाधा, रुकावट।
**बिकम** *पु०* विक्रमादित्य।
**बिकल** *अक०* बिक जाना।
**बिकाऊ** *वि०* बिक्री योग्य।
**बिकारी** *स्त्री०* [सं० विकृतिः] एक टेढ़ी पाई, जिसे रुपयासूचक अंक के बाद लगाते हैं; किसी अक्षर के बाद में दीर्घताबोधक लगा चिह्न।
**बिकिनल** *सक०* बेचना।
**बिक्री** *स्त्री०* [सं० विक्री] विक्रय।
**बिख** *पु०* जहर।
**बिखधर** *वि०* विषैला, विषधर (साँप)।
**बिखरल** *अक०* [सं० विकिरणम्] तितर-बितर होना।
**बिखान** *पु०* विविध प्रकार।
**बिखिआइल** *अक०* अति क्रुद्ध होना।
**बिखिन** *वि०* दुःखी, क्षुब्ध।
**बिखो** *पु०* गहना; सामान।
**बिगड़इल** *वि०* कुमार्गी।
**बिगड़ता** *पु०* कार्य में बाधा, कार्य-हानि।
**बिगड़ल** *अक०* गुण में विकृति आना, बुरी दशा को प्राप्त होना।
**बिगड़ा-बिगड़ी** *यौ०* परस्पर विरोध, झगड़ा।
**बिगड़ाह** *वि०* बिगड़े स्वभाव का, बिगड़ैल।
**बिगदल** *अक०* काम करने से आनाकानी करना।
**बिगरह** *पु०* विरोध, वैमनस्य, विग्रह।
**बिगल** *सक०* फेंकना, छितराना, बिखराना।
**बिगहट्टी** *स्त्री०* बड़ा खेत।
**बिगहा** *पु०* बीस लग्गी लम्बा और बीस लग्गी चौड़ा खेत का रकबा, बीघा।
**बिगाड़** *पु०* विरोध, वैमनस्य।
**बिगाड़ल** *सक०* विकृति पैदा करना; बुरी अवस्था में पहुँचाना।
**बिगाड़ू** *वि०* झगड़ा लगाने वाला; विरोध पैदा करने वाला।
**बिगुल** *पु०* अंग्रेजी सैनिकों की एक प्रकार की तुरही। **-बाजल** *मुहा०* युद्ध प्रारम्भ होना।
**बिघिन** *स्त्री०* उपद्रव, उत्पात।
**बिचकनी** *स्त्री०* कान के बीच का भाग।
**बिचकल** *अक०* असहमति या अस्वीकृति प्रकट करने के लिए मुँह बनाना।
**बिचका** *वि०* बीचवाला।
**बिचकावल** *सक०* उपेक्षा व्यक्त करने के लिए मुँह बनाना।
**बिचकिल्ला** *पु०* निचला गड्ढा।
**बिचरल** *अक०* स्वच्छन्द घूमना, भ्रमण करना।
**बिचवनिया** *पु०* मध्यस्थ, बीच-बचाव करने वाला।

**बिचहुत** *पु०* अन्तर।
**बिचार** *पु०* भाव, इरादा।
**बिचारमान** *वि०* विचार करने वाला, विवेकशील।
**बिचारल** *सक०* विचार करना।
**बिचारा** *वि०* बेचारा।
**बिचारी** *वि०* विचारवान।
**बिचाली** *स्त्री०* पुआल।
**बिचिलल** *अक०* इधर-उधर से जाना, पूर्व निश्चित बात से मुकर जाना।
**बिच्छन्न** *वि०* चतुर, निपुण।
**बिच्छी** *स्त्री०* [सं० वृश्चिक:] बिच्छू; केले की जड़ से निकलने वाला छोटा पौधा।
**बिछल** *अक०* अनेक में से एक या कुछ को अलग छाँट लेना।
**बिछलल** *अक०* फिसलना।
**बिछवँतिया** *पु०* छिपकिली।
**बिछिलहर** *पु०* फिसलन।
**बिछिलाइल** *अक०* फिसलना।
**बिछवना** *पु०* बिस्तर, बिछावन।
**बिछावल** *सक०* फैलाना, पसारना।
**बिछिआ** *स्त्री०* पैरों की अँगूठी; बिछने या चुनने का भाव।
**बिछुड़ल** *अक०* अलग होना, बिछोह होना, वियोग होना।
**बिछोह** *पु०* वियोग, बिलगाव।
**बिजमार** *पु०* खेत में डाले गए बीज के नहीं जमने की स्थिति।
**बिजय** *पु०* विजय।
**बिजयदशमी** *पु०* आश्विन शुक्ल दशमी; विजयदशमी।
**बिजली** *स्त्री०* एक आभूषण; ताप, प्रकाश से युक्त शक्ति।
**बिजाठ** *पु०* बाँह में पहनने का एक आभूषण।
**बिजार** *पु०* साँड।
**बिजुरी** *स्त्री०* दे० 'बिजुली'।
**बिजुली** *स्त्री०* बादलों के टक्कर से उत्पन्न प्रकाश-रेखा; आधुनिक संयन्त्रों की सहायता से उत्पन्न एक शक्ति, जो ताप और प्रकाश देती है; एक आभूषण। *उदा०* 'बिजुली के मारल लु आठ देख भागे'।
**बिजे** *पु०* भोजन के लिए बुलाहट।
**बिजौरा** *पु०* एक प्रकार का नींबू।
**बिज्जी** *स्त्री०* जंग (लोहा)।
**बिज्जु** *पु०* दे० 'बिजुली'।
**बिझौरा** *पु०* गहरा गड्ढा।
**बिटिनिया** *स्त्री०* दे० 'बिटिया'।
**बिटिया** *स्त्री०* लड़की।
**बिटुराइल** *अक०* इकट्ठा होना।
**बिटेव** *पु०* व्यवधान।
**बिटोर** *पु०* एकत्र होने का भाव।
**बिटौरा** *पु०* गोठौला।
**बिठई** *स्त्री०* रस्सी को ऐंठकर बनाया हुआ रूप।
**बिड़ई** *स्त्री०* गेंडुरी।
**बिड़र** *वि०* अलग-अलग।
**बिड़ार** *पु०* बियार, बेंगा।
**बिढ़नी** *स्त्री०* एक प्रकार का पीले रंग का विषैला कीड़ा।
**बितना** *पु०* बित्ते भर का या बहुत नाटा व्यक्ति।
**बितरल** *अक०* फसल का ठीक से नहीं जमना और बढ़ना।
**बितावल** *सक०* व्यतीत करना, गुजारना।
**बित्त** *पु०* वित्त, धन-दौलत।
**बित्ता** *पु०* कनिष्ठा से अँगूठे के उग्र भाग तक की दूरी; बालिश्त।
**बित्ती** *स्त्री०* चुंगी या बिक्रीकर; लड़कों का एक खेल।

**बिथकल** *अक०* थकना; मुग्ध होना।
**बिथरल** *अक०* बिखरना।
**बिथरावल** *सक०* छिटकाना।
**बिथा** *स्त्री०* व्यथा।
**बिदकल** *अक०* चौकन्ना; फटना।
**बिदकावल** *सक०* चौंकाना; भड़काना।
**बिदत** *पु०* दुर्गति, दुर्दशा।
**बिदा** *स्त्री०* गमन, गौना; जाने की आज्ञा।
**बिदाई** *स्त्री०* विदाई, रुखसती।
**बिदागरी** *स्त्री०* स्त्रियों का नैहर, ससुराल के लिए प्रस्थान।
**बिदाह** *पु०* उपजे हुए फसल में खाली जगह में हल चलाने का काम।
**बिदाहल** *सक०* जमी हुए फसल को बचाकर खेत को अलग-अलग जोतना।
**बिदेआरथी** *पु०* विद्या-प्राप्ति के लिए पढ़ने वाला विद्यार्थी।
**बिदेश** *वि०* परदेश, अन्य देश।
**बिदेसिआ** *पु०* एक लोकनाट्य, जिसके प्रस्तुतकर्त्ता स्व० भिखारी ठाकुर थे।
**बिदोरल** *सक०* किसी को चिढ़ाने के लिए या अस्वीकृति सूचित करने के लिए मुँह बनाना।
**बिधंस** *पु०* नाश, बर्बाद।
**बिध** *पु०* रस्म, प्रथा, परम्परागत।
**बिधना** *पु०* विधाता, ब्रह्मा। *उदा०* 'बिधना एक मिलावले जोड़ी। एक जने आन्हर एक जने कोढ़ी'।
**बिधर** *वि०* शरीर के कपड़े का चिथड़ा-चिथड़ा हो जाना।
**बिधवा** *स्त्री०* वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो।
**बिधाता** *पु०* सृष्टिकर्त्ता, किसी कार्य में कर्मठ और निपुण व्यक्ति।
**बिधान** *पु०* नियम, नियम की पाबन्दी।
**बिधि** *स्त्री०* रस्म, प्रथा, ढंग।
**बिधुआइल** *अक०* मुँह पर उदासी आना।
**बिधुन** *पु०* विध्वंस करना।
**बिन** *अव्य०* बिना।
**बिनई** *वि०* विनयी।
**बिनऊ** *स्त्री०* विनय।
**बिनति** *स्त्री०* दे० 'बिनती'।
**बिनती** *स्त्री०* प्रार्थना।
**बिननिहार** *पु०* चुननेवाला, बुननेवाला।
**बिनबिनाइल** *अक०* क्षुब्ध होना, क्रुद्ध होना।
**बिनल** *सक०* चुनना, छाँटना, बुनना।
**बिनवट** *स्त्री०* लाठी भाँजने की एक कला।
**बिनवल** *सक०* प्रार्थना करना।
**बिनसल** *अक०* विनष्ट होना, बर्बाद होना।
**बिना** *अव्य०* अभाव में, बगैर। *उदा०* 'बिना मेंह के दँवरी'। *कहा०*
**बिनाव** *पु०* परहेज, दुराव।
**बिनावट** *पु०* बुनने की क्रिया।
**बिनास** *पु०* विनाश; नाक से खून आना।
**बिनुआ** *वि०* चुना हुआ।
**बिनियाँ** *स्त्री०* गिरे अन्न को चुनने का कार्य।
**बिनौला** *पु०* कपास का बीज।
**बिपत** *स्त्री०* दु:ख, आपत्ति, आफत।
**बिपतमरू** *वि०* विपत्ति का मारा, विपत्तिग्रस्त।
**बिपन** *वि०* जो उपजा नहीं हो (पौधा), जिसमें फल नहीं लगा हो (फसल)।
**बिपनाश** *पु०* सर्वनाश, बर्बादी।
**बिभो** *पु०* धन-सम्पत्ति, विभव।
**बिमान** *पु०* वायुयान; अनादर।
**बिमौठ** *पु०* बल्मीक।
**बियहुती** *स्त्री०* नियमपूर्वक विवाहिता।
**बियाइल** *सक०* जन्म देना।

**बियान** *स्त्री०* दुधारू पशुओं द्वारा प्रजनन की क्रिया।
**बियारी** *स्त्री०* शाम का नाश्ता।
**बियाह** *पु०* शादी, विवाह।
**बिरंग** *वि०* कई रंगों का।
**बिरकन्ने** *पु०* कैथी लिपि में आकार का बोधक शब्द।
**बिरतंत** *पु०* हाल, वर्णन, वृत्तान्त।
**बिरथ** *वि०* बेकार, व्यर्थ।
**बिरधा** *वि०* बूढ़ा।
**बिरन** *पु०* भाई। *उदा०* 'ननदी बधाई मांगे अइले बोल दे राजा बिरन के'। लोक०
**बिरनाइल** *अक०* क्रुद्ध होना।
**बिरनियाई** *स्त्री०* पाले से मारी (फसल)।
**बिरवाई** *स्त्री०* पौधा, लता।
**बिरह** *पु०* वियोग, विरह।
**बिरहनी** *स्त्री०* विरहिणी।
**बिरहा** *पु०* विरह गीत।
**बिराजल** *अक०* सुशोभित होना, बैठना।
**बिरात** *पु०* घनी रात्रि, रात का सहचर शब्द।
**बिरान** *वि०* अन्य, पराया, गैर।
**बिरावल** *सक०* मुँह बनाकर चिढ़ाना।
**बिरिआ** *पु०* एक प्रकार का लवण।
**बिरिछ** *पु०* पेड़, वृक्ष।
**बिरिज** *पु०* गोकुल ग्राम, मथुरा।
**बिरिझल** *अक०* असन्तुष्ट होना, रूठना।
**बिरीत** *पु०* वह जमीन, जो ब्राह्मण, कलाकारों या अन्य किसी को जीविका चलाने के लिए निःशुल्क दी जाती है।
**बिरीतदार** *पु०* निःशुल्क भूमि पाने वाला व्यक्ति।
**बिरोग** *पु०* विरह-व्यथा, वियोग।
**बिरोजा** *पु०* चीड़ के पेड़ का गोंद, जो औषधि के रूप में व्यवहृत होता है।
**बिरोध** *पु०* झगड़ा, विरोध।
**बिरौ** *पु०* गोल आँधी, चक्रवात।
**बिलंउकी** *स्त्री०* एक रस्म, जिसमें विवाह के पूर्व वर या वधू गाँव में स्त्रियों के साथ जाते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।
**बिलंद** *पु०* ऊँचा, बड़ा, विशाल।
**बिल** *पु०* माँद, छेद।
**बिल** *पु०* [अं०] पुरजा; मसौदा, विधेयक।
**बिलइया** *पु०* किवाड़ बन्द करने के लिए उसमें लगा काठ का सामान।
**बिलखाइल** *अक०* आँखों में आँसू आना, आँखों में आँसू लेकर बोलना।
**बिलग** *वि०* पृथक्, अलग, पु० बिलगाव; रंज।
**बिलगल** *अक०* अलग होना, पृथक् होना।
**बिलगावल** *सक०* अलग करना, पृथक् करना, बँटवारा करना।
**बिलगी** *स्त्री०* अलग होने की स्थिति।
**बिलगोहिया** *पु०* गिरगिट की आकृति का एक जन्तु।
**बिलटल** *अक०* उपेक्षित होकर कष्ट भोगना या रोना (बच्चा), असमर्थ व्यक्ति।
**बिलटी** *स्त्री०* माल भेजने की रसीद।
**बिलनी** *स्त्री०* आँख की पलक पर की फुंसी; एक कीड़ा।
**बिलपल** *अक०* विलाप करना।
**बिलबिलाइल** *अक०* विकल; विह्वल; रोना-चिल्लाना।
**बिलम** *पु०* देर, बिलम्ब।
**बिलमल** *अक०* देर करना, ठहर जाना।
**बिलमावल** *सक०* रोक रखना, ठहराना।
**बिललाइल** *अक०* भयंकर अभाव में यत्र-तत्र घूमना।
**बिलवावल** *सक०* बर्बाद करना, नष्ट करना।

**बिलसल** *अक०* सजना, शोभित होना।
**बिलसावल** *सक०* भोगना, बरतना।
**बिलहरी** *स्त्री०* बाँस की तीलियों का बना पनडब्बा।
**बिला** *अव्य०* [अ०] बिना, बगैर। **-वजह** *अव्य०* अकारण। **-वास्ता** *अव्य०* सीधे।
**बिलाइत** *पु०* ग्रेट ब्रिटेन।
**बिलाइल** *अक०* लुप्त होना।
**बिलाई** *स्त्री०* बिल्ली; सिटकनी। *उदा०* 'बिलाई के भागे सिकहर टूटल'।
**बिलायिती** *वि०* ग्रेट ब्रिटेन का बना हुआ।
**बिलार** *पु०* नर बिल्ली।
**बिलाला** *वि०* रंक, कंगाल।
**बिलिल्ला** *वि०* मूर्ख, बेढंगा, बेकार।
**बिल्ल** *अव्य०* बिल्ली को भगाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बिल्ला-बाँट** *पु०* छोटे-छोटे अनेक हिस्सों में बँटवारा।
**बिस** *पु०* जहर, विष।
**बिसकरमा** *पु०* विश्वकर्मा।
**बिसखोपड़ा** *पु०* गोह की जाति का एक विषैला जन्तु।
**बिसतर** *पु०* बिछावन, बिस्तर।
**बिसतार** *पु०* फैलाव, विस्तार।
**बिसतुइया** *पु०* छिपकली।
**बिसबिसाइल** *अक०* जलन के साथ वेदना होना।
**बिसभोरी** *वि०* विस्मरणशील।
**बिसरल** *सक०* भूलना, विस्मृत होना।
**बिसराम** *पु०* आराम, विश्राम।
**बिसरावल** *सक०* भूलना, बिसराना।
**बिसरी** *स्त्री०* एक प्रकार का तिकोना जाल।
**बिसवा** *पु०* एक बीघे का बीसवाँ भाग।
**बिसवास** *पु०* भरोसा, विश्वास।
**बिसहर** *वि०* विष को हरने वाला।
**बिसाइन** *वि०* सड़े मांस की दुर्गन्ध वाली।
**बिसात** *पु०* [अ०] सामर्थ्य, हैसियत; शतरंज के खेल में व्यवहृत खानेदार (बिछावन)।
**बिसाती** *पु०* सिंगार की सामग्रियों और खिलौने आदि बेचने वाला (आदमी)।
**बिसारल** *सक०* भुला देना, विस्मृत कर देना।
**बिसाल** *वि०* बहुत बड़ा।
**बिसुकल** *अक०* दूधारू पशु का दूध देना बन्द कर देना।
**बिसेख** *पु०* विशेष।
**बिसेन** *पु०* राजपूतों की एक उपजाति।
**बिसेसर** *पु०* काशी-स्थित महादेव।
**बिसेस** *वि०* दे० 'बिसेख'।
**बिसैना** *पु०* मछली-मांस की रसोई के काम आनेवाला बर्तन।
**बिस्कुट** *पु०* मीठी, नमकीन टिकिया।
**बिस्तर** *पु०* [फा०] बिछौना।
**बिस्तरा** *पु०* बिस्तर।
**बिस्तुइया** *स्त्री०* छिपकली।
**बिहड़** *वि०* कठिन, दुर्गम, दुस्साध्य; विषम चरित्र; ऊबड़-खाबड़ भूमि।
**बिहदाना** *पु०* मीठा अनार।
**बिहनाह** *पु०* बीज, बीज का पौधा, बेहन।
**बिहनी** *स्त्री०* अभावग्रस्त।
**बिहफइया** *पु०* बृहस्पति ग्रह का तारा; बृहस्पति ग्रह का व्रत।
**बिहफे** *पु०* गुरुवार, बृहस्पति।
**बिहरल** *अक०* स्वच्छन्द घूमना।
**बिहान** *पु०* सबेरा।
**बिहाने** *अव्य०* दूसरे दिन, कल।
**बिहार** *पु०* पूर्वोत्तर भारत का एक प्रान्त बिहार।
**बिहिआवल** *सक०* दोनों ओर दबाकर बीच में जगह बनाना; घास निकालने के लिए पौधा को अलग-अलग करना।

**बिहुँसल** *अक०* फटना।
**बींगल** *अक०* फेंक देना, अलग या दूर कर देना।
**बींड़** *पु०* तीन बैलों से चलने वाली गाड़ी में अगला बैल; गेंडुरी।
**बीआ** *पु०* बीज, बीज से उगा पौधा, जो रोपा जाता है। *उदा०* 'बीआ फरहरे ना तऽ धरहरे'।
**बीघा** *पु०* खेत की नाप का एक परिमाण। बीस बिस्वा। बीस कट्ठे का परिमाण।
**बीच** *अव्य०* [सं० विच्] मध्य भाग, आधे-आध।
**बीछल** छाँटना, चुनना।
**बीजी** *स्त्री०* लोहा इत्यादि धातु में जमा मैल, जंग।
**बीजू** *पु०* वह आम, जिसका पौधा गुठली से तैयार हुआ हो।
**बीजे** *पु०* भोजन हेतु बुलावा।
**बीट** *स्त्री०* लकड़ी की मोटी और चौड़ी पट्टी; चिड़ियों का मैल।
**बीटा** *पु०* बाँस आदि की झाड़ी, जंगल।
**बीठई** *स्त्री०* धान के पुआल को बाँटकर बनाया हुआ छोटा बीठा।
**बीड़ा** *पु०* खर या पुआल को ऐंठकर बैठने के लिए बनाया गया आसन; कत्था, चूना, सुपारी के साथ तह लगाया हुआ पान; पान की गिलौरी।
**बीड़ी** *स्त्री०* तेंदू के पत्ते में तम्बाकू को लपेटकर तैयार की गई सिगरेट।
**बीतन** *पु०* छप्पर को बाँस की बाती से पाटने की स्थिति।
**बीतल** *अक०* [सं० व्यतीत] व्यतीत होना, गुजरना। *उदा०* 'बीतल बयस देह कदराई। अब का लदबऽ हो व्यवसायी'।
**बीता** दे० 'बित्ता'।
**बीनल** दे० 'बिनल'।
**बीन्हल** *सक०* बर्रे तथा मधुमक्खी के डंक से बिंधा जाना।
**बीपति** *स्त्री०* विपत्ति, आफत, कष्ट।
**बीफे** *पु०* गुरुवार, बृहस्पतिवार।
**बीबी** *स्त्री०* [फा०] स्त्री, धर्मपत्नी।
**बीम** *पु०* [अं०] शहतीर।
**बीमा** *स्त्री०* [फा०] आर्थिक हानि की जिम्मेदारी लेने का कार्य; जमानत, ठेका, इंश्योरेंस। **-दार** *पु०* पालिसीहोल्डर, बीमा कराने वाला।
**बीमार** *पु०* [फा०] मरीज। *वि०* रोगी; आशिक। *उदा०* 'बीमार के रात पहाड़ बरोबर'।
**बीमारी** *स्त्री०* [फा०] मर्ज; लत।
**बीया** *पु०* बीज; दाना।
**बीर** *पु०* शूर, समर्थ।
**बीरन** *पु०* भाई। *उदा०* 'ननदो बधाई माँगे अइली बोलादे राजा बीरन के'। लोक०
**बीरा** *पु०* पान की गिलौरी, बीड़ा।
**बीरो** *पु०* जड़ी-बूटी।
**बीस** *वि०* [सं० विंशतिः] दस का दूना, बीस।
**बीह** *स्त्री०* दो पौधों के बीच की खाली जगह।
**बीहड़** *वि०* [सं० विकटः] ऊबड़-खाबड़; विकट।
**बीहन** *पु०* रोपने हेतु उखाड़ा हुआ बीआ।
**बुंद** *पु०* बूँद; वीर्य।
**बुंदा** *पु०* टिकुली।
**बुंदिया** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई।
**बुंदीदार** *वि०* जिस पर बिंदिया हों।
**बुंदेला** *पु०* बुन्देलखण्ड के राजपूत।
**बुआ** *स्त्री०* बूआ, फूफी।
**बुकउर** *पु०* सत्तू; बुका हुआ खाद्य-पदार्थ।

**बुकचा** *पु०* गठरी।
**बुकची** *स्त्री०* छोटी तथा टेढ़ी छड़ी।
**बुकनी** *स्त्री०* बारीक चूर्ण।
**बुकवा** *पु०* जौ का आटा, जो विवाह में वर पक्ष की ओर से कन्या पक्ष के यहाँ जाता है; सरसों को पीस कर बनाया गया उबटन।
**बुखार** *पु०* [अ०] ज्वर, ताप।
**बुचकट** *स्त्री०* जिसके ऊपर का हिस्सा टूटा हो (घड़ा)।
**बुच्चा** दे० 'बूचा'।
**बुचिया** *स्त्री०* छोटी बहन या लड़की के लिए सम्बोधन का शब्द।
**बुजरी** *स्त्री०* स्त्रियों के लिए एक गाली।
**बुजुरुग** *वि०* बड़ा, बूढ़ा।
**बुझनउक** *वि०* आग की लपट का शान्त होना।
**बुझारत** *पु०* जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया।
**बुझावल** *सक०* किसी जलती वस्तु को पानी में डालना।
**बुझौवल** *पु०* पहेली।
**बुट्टी** *स्त्री०* छोटा टुकड़ा।
**बुड़बक** *वि०* मूर्ख।
**बुड़ल** *अक०* डूबना।
**बुड़वा** *वि०* आदमी के डूबने लायक (पानी)।
**बुड़ावल** *सक०* डुबाना (पानी या अन्य तरल पदार्थ में)।
**बुड़ाह** *वि०* अधिक पानी, जिसमें डूबा जा सके।
**बूड़ा** *पु०* पानी में डूबकर मरे व्यक्ति का भूत।
**बुढ़घाउस** *पु०* वृद्ध व्यक्ति की वासना।
**बुढ़वावल** *सक०* सब्जी या फल को जरूरत से अधिक दिनों तक नहीं तोड़ना; लड़का या लड़की का विवाह नहीं कर उसकी उम्र बढ़ने देना।
**बुढ़ाइल** *अक०* बूढ़ा होना, वृद्ध होना।
**बुढ़ापा** *स्त्री०* वृद्धावस्था।
**बुढ़ाही** *स्त्री०* वृद्धावस्था।
**बुढ़िया** *स्त्री०* वृद्धा, बूढ़ी स्त्री; बकुला। *उदा०* 'बुढ़िया बिया जहर के पुड़िया'।
**बुत** *पु०* मूर्ति। **-खाना** *पु०* मन्दिर।
**बुतका** *अव्य०* इसका प्रयोग किसी व्यक्ति के द्वारा कही गई सन्देहात्मक बात को दोहराने में होता है।
**बुतल** दे० 'बूतल'।
**बुतावल** *सक०* बुझाना।
**बुदबुद** *पु०* पानी से निकली आवाज, बुलबुला।
**बुदबुदाइल** *सक०* धीरे-धीरे अस्पष्ट शब्द बोलना।
**बुद्धि** *स्त्री०* विवेक, ज्ञान, समझ। **-बल** *पु०* बुद्धि का बल।
**बुद्धू** *वि०* मूर्ख, सीधा।
**बुध** *पु०* चन्द्रमा का प्रिय, नव ग्रहों में चौथा ग्रह; सात दिनों में चौथा दिन; पण्डित।
**बुधिसागर** *वि०* बुद्धिमान, होशियार।
**बुनका** *पु०* ललाट में सिन्दूर की छोटी बिन्दी, बुँदका।
**बुनछेवक** *पु०* वर्षा की बूँदों के बन्द होने की स्थिति।
**बुनिआ** *पु०* एक प्रकार की मिठाई, बूँदी।
**बुनिआइल** *अक०* आकाश से बूँदों का गिरते रहना।
**बुनिआद** *पु०* [फा०] नींव, जड़।
**बुर** *स्त्री०* भग, योनि (गाली में प्रयुक्त)।
**बुरका** *पु०* [अ०] नकाब।
**बुरचोदी** *स्त्री०* स्त्रियों के लिए गाली।
**बुरबक** *वि०* मूर्ख, बेवकूफ। *उदा०* 'बुरबक मरे विराने फिकिर, बुरबक रसिया अन्हार में मटकी'।

**बुरा** *वि०* [सं० विरूप] दूषित, दुष्ट।
**बुराई** *स्त्री०* खराबी।
**बुरादा** *पु०* लकड़ी का चूरा।
**बुरि** *स्त्री०* भग।
**बुरी** *वि०* स्त्री० बुरा। **-खबर** *स्त्री०* मौत की सूचना। **-गति** *स्त्री०* बुरा हाल।
**बुरूज** *पु०* नाश, खत्म, समाप्ति।
**बुरुस** *पु०* [अं०] ब्रश।
**बुलंद** *वि०* सुन्दर, स्वस्थ, मोटा-ताजा।
**बुलबुल** *स्त्री०* [फा०] एक छोटी चिड़िया।
**बुलबुला** *पु०* [सं० बुदबुदः] पानी से उठने वाली पोफला गोली, बुल्ला।
**बुलबुल्ली** *स्त्री०* पानी का बुलबुला।
**बुला** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**बुलाकी** *स्त्री०* नाक का एक गहना, नथिया का बड़ा रूप।
**बुलावल** *सक०* बुलाने का काम कराना।
**बुलावा** *पु०* न्योता, निमन्त्रण।
**बुलि** *स्त्री०* [सं०] योनि, भग; गुदा।
**बुलौआ** *पु०* बुलावा।
**बुल्ला** *पु०* एक प्रकार की छोटी मछली।
**बूट** *पु०* चना, चना का पौधा; रहिला, बूट। *उदा०* 'बूँट माँगे ऊँट चढ़ि'।
**बू** *स्त्री०* [फा०] गन्ध, वास; दुर्गन्ध।
**बूआ** *स्त्री०* फूफी।
**बूई** *स्त्री०* बच्चों को डराने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बूकल** *सक०* चूर्ण करना, कड़ी पिटाई करना।
**बूका** *पु०* चूर्ण; चावल का सत्तू, जिसमें चीनी एवं घी मिला हुआ रहता है।
**बूचा** *पु०* जिसका कान कटा हो (आदमी, या पशु)।
**बूची** *वि०* बहुत छोटा।
**बूझ** *स्त्री०* समझदारी। **-बड़ाई** *पु०* पूरी समझदारी। *कहा०* 'बूझ न बड़ाई तहाँ से उठ चल रे भाई।'
**बूझल** *अक०* दीये का बुत जाना। *सक०* किसी बात को समझना, ताड़ना, पहेली को हल करना।
**बूट** *पु०* [अं०] जूता, उपानह्।
**बूटा** *पु०* दाना, दाना से निकला पौधा, वस्त्रादि पर बनी बिन्दियाँ।
**बूटी** *स्त्री०* जड़ी, वनौषधि।
**बूड़ल** *अक०* डूबना, डुबकी लगाना। *उदा०* 'बूडल बंस कबीर के जनमल पूत कमाल'।
**बूड़ा** *पु०* डूबकर मरे व्यक्ति की प्रेतात्मा, जो पानी में रहती है।
**बूढ** *वि०* वृद्ध, बुड्ढा। *उदा०* 'बूढ़ पुरनिया दुआरी कै टाटी हऽ' लोको०।
**बूढ़उ** *पु०* वृद्ध पुरुष के लिए आदरसूचक शब्द।
**बूढ़ा** *स्त्री०* वृद्ध स्त्री।
**बूढ़ाठ** *वि०* अति वृद्ध।
**बूत** *पु०* बूता।
**बूतल** *अक०* बुझना (दीपक)। *सक०* बुतावल, बुझाना।
**बूता** *पु०* बल, सामर्थ्य, पौरुष शक्ति।
**बून** *स्त्री०* बूँद, ठोप, वीर्य।
**बूना** *पु०* बालू और पत्थर के योग से बनी धातु, बुन्दा।
**बूना-बूनी** *यौ०* हलकी वृष्टि।
**बूनेला** *वि०* बहादुर, बुन्देला।
**बूलनी** *स्त्री०* नाक का एक प्रकार का गहना।
**बूलल** *अक०* घूमना।
**बेंग** *पु०* मेढ़क।
**बेंच** *स्त्री०* बैठने का स्थान।
**बेंट** *स्त्री०* मूठ, दस्ता।
**बेंठ** *स्त्री०* चाँड़।
**बेंड़ल** *सक०* घेरना।
**बैंत** *पु०* बेत की छड़ी।

**बेंवत** *स्त्री०* ब्योंत।
**बे** [फा०] किसी पद के पूर्व उपसर्ग-सा प्रयुक्त शब्द, जिसका अर्थ है, बिना बगैर—जैसे बेजान, बेदाग; बेईमान।
**बेअकिल** *वि०* निर्बुद्धि, मूर्ख।
**बेअखरा** *पु०* व्यग्रता, बेचैनी।
**बेअगर** *वि०* बेचैन, व्यग्र।
**बेअरथ** *वि०* अर्थहीन, निष्प्रयोजन।
**बेआई** *स्त्री०* अन्न तौलने वाले की मजदूरी या मेहनताना।
**बेआकुल** *वि०* व्यग्र, परेशान, व्याकुल।
**बेआज** *पु०* सूद, ब्याज।
**बेआध** *पु०* रोग, बीमारी।
**बेआधा** *पु०* बहेलिया, व्याध।
**बेआधा हरदी** *स्त्री०* एक प्रकार की वनौषधि।
**बेआन** *पु०* कथन, इजलास में मुकदमे में कही गई बात।
**बेआना** *पु०* किसी वस्तु की बिक्री की बात पक्की करने के लिए दी गई अग्रिम राशि, पेशगी।
**बेआर** *पु०* बयार, हवा।
**बेआलिस** *वि०* चालीस और दो, बयालीस।
**बेइज्जत** *वि०* अप्रतिष्ठित, अपमानित।
**बेइलि** *स्त्री०* लता, एक प्रकार का सफेद फूल, बेला।
**बेउजुर** *क्रि०वि०* बिना किसी प्रकार के उज्र के।
**बेओपार** *पु०* व्यापार, क्रय, विक्रय।
**बेकति** *स्त्री०* दम्पति, पति-पत्नी।
**बेकदर** *वि०* बेढंगा, बेतरीका।
**बेकल** *वि०* [सं० विकल] व्याकुल।
**बेकवाई** *वि०* शारीरिक क्षमता के अनुपात से बहुत अधिक।
**बेकस** *वि०* विवश, लाचार।
**बेकसूर** *वि०* निरपराध, निर्दोष।
**बेकहल** *वि०* जो किसी की उचित राय को नहीं मानकर मनमानी चले।
**बेकाबू** *वि०* वश से बाहर, बूते के बाहर।
**बेकाम** *वि०* बेकार, व्यर्थ, निठल्ला।
**बेकायदा** *वि०* नियम के विरुद्ध, बेढंगा।
**बेकार** *वि०* बेकाम, व्यर्थ, निष्फल। *उदा०* 'बेकार से बेगार भला'। *मुहा०*।
**बेकूत** *वि०* बेशुमार।
**बेवकूफ** *वि०* मूर्ख, विवेकहीन, नासमझ।
**बेकोर** *वि०* असुविधाजनक, गलत जगह पर।
**बेखटक** *अव्य०* बेधड़क, निस्संकोच।
**बेखबर** *वि०* बेसुध, बेहोश, अनजान।
**बेग** *पु०* गति की तीव्रता, तेजी, प्रवाह, धारा।
**बेगम** *स्त्री०* रानी, महारानी, सम्भ्रान्त कुल की महिलाओं के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बेगमाती** *स्त्री०* देसी बंगला पान।
**बेगर** *अव्य०* बेमतलब, बेजरूरत।
**बेगार** *पु०* बिना मजदूरी दिए कराया गया काम।
**बेगारी** *स्त्री०* बेगार करने वाला व्यक्ति।
**बेगास** *पु०* सिट्ठी, चेफुआ।
**बेगुनाह** *वि०* निर्दोष, निरपराध, बेकसूर।
**बेघर** *वि०* जिसे घर नहीं हो।
**बेचारा** *वि०* असहाय।
**बेचेत** *वि०* बेहोश, अचेत।
**बेचैन** *वि०* व्याकुल, विकल, परेशान।
**बेजान** *वि०* निर्जीव, मुर्दा, निर्बल।
**बेजायँ** *वि०* अनुचित, बेमुनासिब।
**बेजोड़** *वि०* जिसमें कहीं जोड़ नहीं है; जिसका जोड़ा नहीं हो, अद्वितीय, अनुपम।
**बेझरा** *पु०* मिश्रित अन्न।
**बेटहा** *पु०* बेटावाला, वर पक्ष के आदमी।

**बेटा** *पु०* लड़का, पुत्र। *उदा०* 'बेटा मीठ भतरो मीठ केकर किरिया खाऊँरे'

**बेटिहा** *स्त्री०* बेटी वाला, कन्या पक्ष के आदमी।

**बेटी** *स्त्री०* पुत्री। *उदा०* 'बेटी के भार रजवों से ना सहाला'।

**बेटीचोद** *वि०* बेटी से समागम करने वाला (गाली)।

**बेट** *पु०* बेगार।

**बेठन** *पु०* किसी वस्तु को लपेटने का वस्त्र।

**बेठीक** *वि०* अनुचित, अयोग्य, गलत।

**बेठेकान** *वि०* अज्ञात जगह, असंख्य।

**बेड़ई** *स्त्री०* कचौड़ी।

**बेड़ल** *सक०* किसी को कोई काम करने से समझा-बुझा कर रोकना।

**बेड़ा** *पु०* नदी पार करने के लिए बाँस और लकड़ियों का ढाँचा।

**बेड़िया** *क्रि०वि०* चौड़ाई की तरफ से।

**बेड़ी** *स्त्री०* कैदियों के पैरों में पहनाया जाने वाला लोहे का कड़ा।

**बेडौल** *वि०* कुरूप, भद्दा, बेढंगा।

**बेढंगा** *वि०* बेतरतीब, बुरे ढंग का, कुरूप।

**बेढ़** *पु०* पशुओं को रखने के लिए बना घर।

**बेढ़ल** *सक०* मवेशियों को घेरना या रोकना।

**बेढ़वा** *पु०* एक पशुखाद्य घास।

**बेढब** *पु०* [फा०] बेढंगा।

**बेतरह** *अव्य०* असाधारण या अनुचित रीति से।

**बेतरीका** *वि०* नियमविरुद्ध, अनुचित रीति।

**बेताक** *पु०* असमय, कुअवसर।

**बेताल** *पु०* तालहीनता की स्थिति। *वि०* ताल रहित, बेताला।

**बेद** दे० 'वेद'।

**बेदखल** *वि०* जिसपर दखल नहीं हो।

**बेदनाई** *वि०* विवेकहीन।

**बेदम** *वि०* [फा०] प्राणहीन, मृतक।

**बेदामा** *पु०* लकड़ी की बीट की वह स्थिति, जब वह दोनों तरफ ढाल और बीच में ऊँचा रहता है।

**बेदामी** *स्त्री०* बादामी रंग।

**बेदी** *स्त्री०* वह स्थान, जहाँ बैठकर पूजा हो, चबूतरा।

**बेधल** *सक०* किसी नुकीली वस्तु से भोंकना।

**बेधड़ाल** *अव्य०* जोरों से, बहुत तेजी से।

**बेन** *पु०* [सं० वेणु:] एक बाजा, जो फूँक कर बजाया जाता है। *कहा०* 'भइस के आगे बेन बाजे भइस रही पगुराय'।

**बेना** *पु०* पंखा (हाथ का)।

**बेनिया** *स्त्री०* पंखी।

**बेनी** *स्त्री०* आड़ी या बेड़ी पट्टियाँ।

**बेपच्छ** *वि०* प्रतिकूल, विरुद्ध, नाराज।

**बेपरद** *वि०* जिसके आगे परदा नहीं हो, खुला, नग्न।

**बेपरवान** *अव्य०* मात्रा में अत्यधिक।

**बेपरवाह** *वि०* जिसे परवाह नहीं हो, बेफिक्र।

**बेपारी** *पु०* खरीद-बिक्री करने वाला, व्यापारी।

**बेपेनी** *वि०* बिना पेंदी का; बिना सिद्धान्त का।

**बेफाँट** *वि०* प्रतिकूल, बेमेल।

**बेफायदा** *वि०* [फा०] जिससे कोई लाभ नहीं हो।

**बेफिक्र** *वि०* बेपरवाह।

**बेबाक** *पु०* [फा०] चुकता किया हुआ, चुकाया हुआ।

**बेबूझ** *वि०* नासमझ, बुद्धिहीन।
**बेभंड** *वि०* अश्लील (गाली)।
**बेभरम** *पु०* बेइज्जत।
**बेमंतर** *वि०* गलत (राय)।
**बेमरतिआह** *वि०* रोगी।
**बेमवार** *वि०* बिना मालिक का।
**बेमोल** *वि०* बेइज्जत।
**बेमौका** *वि०* जो ठीक अवसर पर नहीं हो, अवसर बीतने पर किया गया कार्य।
**बेरंग** *पु०* प्रतिकूल, बेढंग।
**बेर** *पु०* समय, आवृत्ति।
**बेयाना** *पु०* अग्रिम।
**बेर-बेर** *अव्य०* बार-बार। उदा० 'बेर बेर थुकथुकीना नीमन एक बेर उपछाले नीमन'।
**बेरई** *स्त्री०* जौ और चने का मिश्रण।
**बेरल** *अक०* पृथक् होना, पृथकता का स्पष्ट नजर आना।
**बेरहम** *वि०* [फा०] निर्दय, निष्ठुर।
**बेरा** *पु०* समय, मौका।
**बेराइल** *अक०* अलग होना, स्पष्ट होना।
**बेरादर** *वि०* भाई-बन्धु-बान्धव, जाति-भाई।
**बेराम** *वि०* बीमार।
**बेरामी** *स्त्री०* रोग।
**बेराय** *पु०* पृथक् मत, प्रतिकूल।
**बेरावल** *अक०* पृथक् रहना, परहेज करना।
**बेरावा** *पु०* परहेज, बचे रहने की प्रवृत्ति।
**बेरासी** *वि०* अस्सी और दो।
**बेरोख** *वि०* नाराज, शीलरहित।
**बेर्हीं** *स्त्री०* अनाज रखने के लिए बना वृत्ताकार घेरा, जिसके ऊपर छप्पर रहता है।
**बेल** *पु०* एक प्रकार का फल। उदा० 'बेल फूटले राई छाई'।
**बेलगरामी** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई; गाजा।
**बेलगान** *पु०* वह भूमि, जिसकी मालगुजारी नहीं लगती है।
**बेलगावल** *सक०* दूर भगाना, खदेड़ना।
**बेलडबिआ** *पु०* बेल की बनी डिबिया, जिसका उपयोग दिये के रूप में होता है।
**बेलदार** *पु०* मिट्टी काटने वाली एक जाति।
**बेलधुक** *वि०* मूर्ख।
**बेलन** *पु०* दण्डाकार गोल भारी पदार्थ, जिसे चलाकर सड़क आदि का कंकड़ बैठाते हैं, रोलर।
**बेलना** *पु०* बेलने का काठ का लम्बा और गोल आला।
**बेलपत्तर** *पु०* बेल का पत्ता।
**बेलपानी** *स्त्री०* सावन के अन्तिम बृहस्पतिवार को होने वाला एक त्योहार, जिसमें हाथ में मेंहदी लगाई जाती है।
**बेल-बूटा** *पु०* फूल, पत्ती आदि के चित्र, जो दीवाल या कागज पर बनाए जाते हैं।
**बेलल** *सक०* चकले पर रखकर और बेलन घुमाकर उसे बढ़ाना।
**बेलव** *अव्य०* गलत ढंग से।
**बेलसल** *अक०* विलास करना, बोगना।
**बेलहट्ठी** *स्त्री०* बैल या घोड़े के पैर में निकली अस्वाभाविक गुलठियाँ।
**बेलहरा** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**बेला** *पु०* सफेद रंग का एक सुगन्धित फूल; बेल के फल का बना तेल नापने का बर्तन।
**बेलाग** *वि०* सब प्रकार से अलग, साफ।
**बेलावल** *सक०* खदेड़ना, भगाना।
**बेलि** *स्त्री०* लता, एक प्रकार का फूल, बेला।
**बेली** *स्त्री०* एक प्रकार का फूल।

**बेलुरा** *वि०* बिना ढंग का।
**बेलूर** *वि०* गलत ढंग का।
**बेवतल** *सक०* काटना, काँट-छाँट करना।
**बेववकड़** *वि०* हत, बेअक्ल।
**बेवखत** *अव्य०* कुसमय।
**बेवरा** *पु०* विवरण, ब्यौरा।
**बेवसथा** *स्त्री०* प्रबन्ध, इन्तजाम।
**बेवसाय** *पु०* पेशा, उद्यम, रोजगार।
**बेवहर** *पु०* सूद पर कर्ज देने का रोजगार।
**बेवहरिया** *पु०* सूद पर रुपया चलाने वाला।
**बेवहार** *पु०* बर्ताव, ढंग।
**बेवा** *स्त्री०* [फा०] विधवा।
**बेवान** *पु०* वायुयान, विमान; पचाठी, जिससे शव को श्मशान ले जाया जाता है।
**बेवाय** *पु०* पैर की एँड़ी के फटने का रोग, बेवाई।
**बेस** *वि०* अधिक, बहुत अच्छा।
**बेसक** *अव्य०* निस्सन्देह।
**बेसकीमत** *वि०* बहुमूल्य।
**बेसन** *पु०* चने की दाल का आटा।
**बेसनी** *वि०* शौकीन।
**बेसम्हार** *वि०* जो सम्हाला न जा सके, बहुत अधिक।
**बेसर** *स्त्री०* [सं० बेसरः] नाक का एक प्रकार का गहना; बुलाक। *उदा०* 'नकबेसर कागा ले भागा सइया अभागा ना जागा'। लोक०
**बेसरम** *वि०* बेहया, बेशर्म।
**बेसवा** *स्त्री०* वेश्या। *उदा०* 'बेसवा के भतार पइसा'।
**बेसहनी** *स्त्री०* खरीद का काम।
**बेसाहल** *सक०* खरीदना, मोल लेना।
**बेसी** *वि०* अधिक, ज्यादा।
**बेसुध** *वि०* बेखबर, अचेत, बेहोश।
**बेसुरा** *वि०* स्वरहीन, बेताल, बेमौका काम करने वाला।
**बेहँगवा** *वि०* आवारा, असावधान।
**बेहतर** *वि०* [फा०] अपेक्षाकृत अच्छा।
**बेहद** *वि०* [फा०] अपार, असीम।
**बेहन** *वि०* [फा०] धान का पौधा, जिसे अन्यत्र रोपा जाता है; गेंड़।
**बेहरा** *पु०* पछुआ के कारण लगने वाला रोग।
**बेहरी** *स्त्री०* चन्दा, दानरूप में ली गई राशि।
**बेहवर** *पु०* कर्ज के लेन-देन का व्यवसाय।
**बेहवार** *पु०* बर्ताव, व्यवहार।
**बेहाथ** *वि०* बेकाबू, अनियंत्रित।
**बेहाया** *वि०* निर्लज्ज, बेशर्म।
**बेहाल** *वि०* बेचैन, व्याकुल, बदहालत।
**बेहिसाब** *वि०* मूर्ख, विवेकहीन, नासमझ।
**बेहोस** *वि०* चेतनाशून्य।
**बैंक** *पु०* [अं०] जमा-निकासी का कार्यालय।
**बैंकर** *पु०* [अं०] महाजन।
**बैंगन** *पु०* दे० 'बैगन'।
**बैंगनी** *वि०* दे० 'बैगनी'।
**बैंड** *पु०* [अं०] बाजा; वादक दल। **-मास्टर** *पु०* बैण्ड का संचालक।
**बैंड़ल** *सक०* बेंड़ना।
**बैंत** *पु०* बेंत।
**बै** *स्त्री०* [अ०] जमीन की बिक्री। **-नामा** *पु०* वह कागज, जो विक्रेता क्रेता को लिखता है।
**बैकुंठ** *पु०* स्वर्ग, विष्णुलोक।
**बैखरा** *पु०* परेशानी, व्याकुलता, व्यग्रता।
**बैगन** *पु०* एक प्रकार की तरकारी, भण्टा।
**बैगनी** *वि०* बैगन के रंग का।
**बैजंती** *स्त्री०* एक प्रकार का पौधा और फूल; एक प्रकार की माला।

**बैजा** पु० अण्डकोष।
**बैट** पु० [अं०] बल्ला।
**बैठक** *पु०* बैठने का स्थान (घरों में यह बरामदे के पीछे होता है)। *उदा०* 'बैठे के चटाई ताने के तम्मू'।
**बैतरनी** *स्त्री०* वैतरणी।
**बैताल** *पु०* एक प्रेतयोनि।
**बैद** *पु०* वैद्य। **-ई** *स्त्री०* वैद्य।
**बैदक** *पु०* भारतीय चिकित्सा-शास्त्र, आयुर्वेद।
**बैदनाथ** *पु०* वैद्यनाथ।
**बैदार** *पु०* किसी की जमीन खरीदने वाला व्यक्ति।
**बैदिक** *पु०* वेदज्ञ, वेद का ज्ञाता।
**बैन** *पु०* वचन, बोल।
**बैना** *पु०* ब्याना।
**बैपार** *पु०* व्यापार।
**बैपारी** *पु०* व्यापारी।
**बैमान** *वि०* [फा०] दूसरे का हक हड़पने वाला, बेईमान।
**बैरंग** *वि०* जिस पर टिकट लगाए बिना डाकघर में छोड़ा गया हो, (ऐसी चिट्ठी)।
**बैर** *पु०* विरोध, झगड़ा, शत्रुता।
**बैरन** *पु०* बिना टिकट लगा पत्र, जिसका व्यय-भार प्राप्तकर्ता को वहन करना होता है।
**बैराग** *पु०* सांसारिक सुखों में अनासक्ति।
**बैरागी** *स्त्री०* वैष्णव साधुओं का एक भेद। *उदा०* 'बैरागी का हाथ से बटही भागी'।
**बैराह** *वि०* खाने के बाद वायुदोष उत्पन्न करने वाला, हानिकारक भोजन।
**बैरिया** *पु०* भूरे-लाल रंगवाला (बैल)।
**बैरिस्टर** *पु०* [अं०] वकील।
**बैरी** *स्त्री०* शत्रु, दुश्मन।
**बैल** *पु०* एक चौपाया, जिसका उपयोग हल या गाड़ी खींचने के लिए होता है; मूर्ख। **-गाड़ी** *स्त्री०* बैल द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी। *उदा०* 'बैल अगोतर गाय पछोतर'।
**बैलघारी** *पु०* बैल का घर।
**बैली** *स्त्री०* निमारा।
**बैलून** *पु०* [अं०] गुब्बारा।
**बैस** *पु०* जवानी।
**बैसाख** *पु०* चैत के बाद का महीना, बैशाख। **-नंदन** *पु०* गदहा।
**बैसाखी** *स्त्री०* लँगड़े आदमी के चलने का एक सहारा।
**बोंग** *पु०* लाठी।
**बोंगिया** *पु०* खाँची।
**बो** *पु०* नर बकरे की बोली। *स्त्री०* पत्नी (भाईजी बो, रामा बो आदि)।
**बोअनी** *स्त्री०* बोने का काम।
**बोअल** *अक०* खेत में छींटकर बीज डालना।
**बोआई** *स्त्री०* बोअनी।
**बोआरी** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**बोइया** *स्त्री०* ताड़-खजूर के पत्तों की डलिया।
**बोकड़ा** *पु०* अधकूटा धान।
**बोकरल** *अक०* वमन करना, कै करना।
**बोकला** *पु०* पेड़ का छिलका।
**बोकवा** *पु०* एक प्रकार का दुर्गन्धयुक्त पौधा।
**बोका** *पु०* नर बकरा; मूर्ख, बेवकूफ। *उदा०* 'बोका गइले नैपाल जीअबू कइसे बकरी'।
**बोकिआवल** *सक०* बो-बो कहकर किसी का अनादर करना।
**बोको** *पु०* एक प्रकार की टोकड़ी, जिसमें नेपाली किसी आदमी को बैठाकर ले जाता है।
**बोखार** *पु०* ज्वर, ताप, बुखार।

**बोच** *पु०* एक प्रकार का जलजन्तु।

**बोझ** *पु०* भार।

**बोझल** *सक०* किसी पात्र में किसी वस्तु को डालते जाना।

**बोझा** *पु०* रस्सी या अन्य चीज से बाँधा गया गट्ठर; वजन; भार।

**बोझाई** *स्त्री०* बोझने का काम।

**बोट** *स्त्री०* [अं०] नाव।

**बोटा** *पु०* लकड़ी का कुन्दा, टुकड़ा, सिलपट।

**बोटी** *स्त्री०* मांस का छोटा टुकड़ा।

**बोड़ा** *पु०* एक प्रकार की तरकारी; एक प्रकार का धान।

**बोतल** *पु०* [अं०] शीशी।

**बोतू** *पु०* नर बकरा।

**बोथ** *पु०* नदी का वह भाग, जहाँ घास उगी रहती है।

**बोथल** *सक०* पानी या रंग से सराबोर करना।

**बोदर** *पु०* एक प्रकार का जलपक्षी, जो सुस्त होता है।

**बोदा** *पु०* सुस्त, काम में ढीला; खराब असगुनी।

**बोध** *स्त्री०* ज्ञान, समझ।

**बोधक** *वि०* [सं०] सूचक, बोध कराने वाला।

**बोधन** *पु०* [सं०] ज्ञान कराना, जताना, जगाना।

**बोधल** *सक०* समझाना-बुझाना।

**बोधनी** *स्त्री०* [सं०] ज्ञान; प्रबोधिनी एकादशी; पीपल।

**बोधान** *वि०* [सं०] चतुर, बुद्धिमान।

**बोधी** *वि०* [सं०] जानने वाला, जनाने वाला।

**बोनी** *स्त्री०* बोने की प्रक्रिया।

**बोम** *पु०* बाँस की मोटी लाठी।

**बोमी** *स्त्री०* वमन।

**बोय** *पु०* दुर्गन्ध, बदबू। *उदा०* 'बोय जेतने छिपाएब ओतने फूटी'।

**बोर** *वि०* डुबाने वाला, नालायक। [सं०] इन्द्रधनुष।

**बोरल** *सक०* डुबाना।

**बोरसी** *स्त्री०* आग रखने का मिट्टी का बर्तन।

**बोरा** *पु०* टाट का बना बड़ा थैला। *उदा०* 'बोरा बरही कसले से ठीक रहेला'।

**बोरो** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान।

**बोल** *पु०* ध्वनि (वाद्य-यंत्र)।

**बोलक्कड़** *वि०* बहुत बोलने वाला।

**बोलचारी** *स्त्री०* बातचीत कर किसी को बुलवाने की स्थिति।

**बोलता** *पु०* जीव, आत्मा।

**बोलल** *पु०* उच्चारण करना, गुस्से में आकर डाँट-डपट करना।

**बोलवावल** *सक०* निकट आने को कहना, बुलवाना।

**बोलाना** *पु०* बुलावा।

**बोली** *स्त्री०* बोल, वचन; भाषा, बोल-चाल; व्यंग्य। **-टोली** *स्त्री०* कटाक्ष। **-दार** *पु०* वह आसामी, जिसे बिना लिखा-पढ़ी के खेत दिया गया हो। **-कसल** *मुहा०* ताने देना। **-बोलल** *मुहा०* फबती कसना; नीलाम में चीज का दाम लगाना।

**बोवल** *सक०* बोना।

**बोवाई** *स्त्री०* बोआई।

**बोवावल** *सक०* बोआना।

**बोह** *स्त्री०* डुबकी।

**बोहनी** *स्त्री०* प्रथम नकद बिक्री।

**बोहल** *सक०* किसी बर्तन को तेल, घी, दूध आदि का व्यवहार कर ऐसा बना देना कि वह सोख न सके।

**बोहा** *पु०* बाढ़-वर्षा के कारण नदी आदि में हुई जलवृद्धि।
**बोहाइल** *अक०* पानी से भींग जाना।
**बोहिआइल** *अक०* कपड़ा भिंगा लेना।
**बौंड़** *स्त्री०* लता; लम्बी टहनी।
**बौंड़र** *पु०* बवण्डर।
**बौंड़िआइल** *अक०* भटकना।
**बौंड़ी** *स्त्री०* कच्चा, छोटा फल; ढोंढ़ी।
**बौआइल** *अक०* सपने में प्रलाप करना।
**बौखल** *वि०* बदहवास, विक्षिप्त।
**बौखलाइल** *अक०* क्रोध से पागल हो उठना।
**बौखलाहट** *स्त्री०* बदहवासी, क्रोधवश।
**बौखा** *स्त्री०* हवा का तेज झोंका।
**बौखी** *स्त्री०* तेज हवा, आँधी।
**बौछार** *स्त्री०* [सं० वायुक्षरणं] झंझावत।
**बौड़िआइल** *अक०* चक्कर लगाना, घूमना।
**बौना** *वि०* नाटा। *उदा०* 'बौना चलल अकासे छूए'।
**बौर** *पु०* आम की मंजरी।
**बौराह** *वि०* पागल, बावला।
**बौरी** *वि० स्त्री०* पगली।
**ब्यक्ति** *स्त्री० पु०* व्यक्ति।
**ब्याज** *पु०* सूद। **-खोर** *पु०* सूद खाने वाला। **-बट्टा** *पु०* नफा-नुकसान।
**ब्योरा** *पु०* [सं० विवरणम्] विवरण।
**ब्रह्मंड** *पु०* संसार; सिरा; ब्रह्माण्ड।
**ब्रह्म** *पु०* [सं० ब्रह्मन्] परमात्मा, आत्मा; सृष्टि; विधाता; त्रिदेव में एक।
**ब्रह्मगाँठ** *पु०* यज्ञोपवीत की गाँठ।
**ब्रह्मचरज** *पु०* ब्रह्मचर्य।
**ब्रह्मचारी** *पु०* ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने वाला।
**ब्रह्मबेला** *पु०* सूर्योदय-पूर्व का समय।
**ब्रह्महत्या** *पु०* ब्राह्मण के वध का पाप।
**ब्राह्मण** *पु०* [सं०] अग्रजन्मा, विप्र। *उदा०* 'ब्राह्मण मिठाई, कायथ खटाई। राजपूत तिताई, और जात उलवाई॥' लोको०।
**ब्राह्मी** *स्त्री०* एक प्रकार की बूटी (जड़ी), जो उन्माद में व्यवहृत होती है; ब्रह्मा की शक्ति; एक लिपि।
**ब्रिगेड** *पु०* सेना का एक विभाग।
**ब्रिगेडियर** *पु०* ब्रिगेड का नायक।
**ब्रिटिस** *वि०* [अं०] ब्रिटेन का, अंग्रेजी।
**ब्रेक** *पु०* [अं०] गति रोकने वाला यंत्र।
**ब्लाउज** *पु०* [अं०] जनानी कुरती।
**ब्लाक** *पु०* [अं०] चित्र; ठप्पा; भूमिखण्ड।
**ब्लेड** *पु०* [अं०] पत्ती।

❑

# भ

**भ** देवनागरी वर्णमाला के पवर्ग का चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ।

**भँइस** *स्त्री०* दूध देने वाली काले रंग का एक चौपाया पशु, भैंस। *उदा०* 'भँइस के आगे बीन बजाई भँइस रहे पगुवाय।' *कहा०*

**भँइसवार** *पु०* भैंस का चरवाहा।

**भँइसा** *पु०* भैंस का नर भैंसा। *उदा०* 'भँइसा जोते लोहिया खाय, तेकरा तापे पड़ोसिया जाय'।

**भँउकी** *स्त्री०* टेढ़ा चलने का कार्य।

**भँउरी** दे० 'भँवरी'।

**भँकाड़** *पु०* बड़ा बिल।

**भंकार** *पु०* भीषण शब्द; भनभनाहट।

**भंकारी** *स्त्री०* [सं०] डाँस; फनगा।

**भंख** *पु०* निर्जनता, सूनापन।

**भंग** *वि०* टूटा हुआ।

**भंग** *स्त्री०* भाँग। -**घुटना** *पु०* घोंटने का सोंटा।

**भंगड़** *वि०* भँगेड़ी, बहुत भाँग सेवन करने वाला।

**भंगड़ी** *वि०* दे० 'भँगेड़ी'।

**भँगरा** *पु०* [सं० भृंगराजः] एक बूटी भँगरैया।

**भंगा** *स्त्री०* [सं०] भाँग। *उदा०* 'भंगा मत देहु गँवारन को, हंड़िया भर भात बिगाड़न को'। लोको०

**भंगान** *पु०* [सं०] एक प्रकार की मछली।

**भंगार** *पु०* वह मादा मवेशी, जिसके बच्चा पैदा होने के समय उसका गर्भाशय बाहर निकल जाता है।

**भंगारी** *स्त्री०* [सं०] दे० 'भंकारी'।

**भंगि** *स्त्री०* [सं०] टेढ़ापन, कुटिलता; लहर।

**भंगिमा** *स्त्री०* [सं०] कुटिलता, वक्रता।

**भंगी** *पु०* मैले, कूड़ा-करकट की सफाई करने वाला व्यक्ति।

**भंगी** *वि०* [सं०] नाशवान; भंग हो जाने वाला।

**भंगुआइल** *अक०* भाँग के नशे में आना।

**भँगूर** *वि०* विध्वंस, भ्रष्ट, खराब।

**भँगेड़ी** *पु०* भाँग खाने का अभ्यस्त आदमी।

**भँजनी** *स्त्री०* बारी-बारी से सम्मिलित काम करने वाला व्यक्ति।

**भँजाई** *स्त्री०* भाँजने की क्रिया; नोट भुनाने की क्रिया, भँजाना।

**भँजावल** *सक०* बड़े सिक्के के बदले में उसी मूल्य का छोटे सिक्के लेना; जमात बाँधकर ले जाना।

**भँजित** *पु०* बड़ी मुद्रा को छोटी मुद्रा में बदलने का कार्य या भाव।

**भंजी** *वि०* [सं०] तोड़ने वाला।

**भँटइला** *पु०* एक प्रकार की दलहन, भँटवास।

**भँटकटइया** *पु०* एक कटीला पौधा।

**भंटा** *पु०* बैगन।

**भंड** *पु०* पात्र, बर्तन।

**भंडा** *पु०* बर्तन, रहस्य, भेद।

**भंडार** *पु०* [सं० भाण्डारः] स्टोर।

**भंडार कोन** *पु०* पश्चिम और उत्तर का कोण।

**भंडारा** *पु०* साधुओं का भोज; उत्साहपूर्वक किया गया भोज।

**भंडारी** *पु०* रसोइया। भण्डार का मालिक।

**भँड़इती** *स्त्री०* एक अश्लील स्वाँग।

**भँड़उजा** *पु०* गाली।

**भँड़री** *पु०* वह पण्डित, जिसकी कृषि और फलित ज्योतिष् सम्बन्धी उक्तियाँ प्रचलित हैं; भड्डुरी।

**भँड़िया** *पु०* मिट्टी का बर्तन।
**भँडुआ** *पु०* वेश्याओं का दलाल।
**भँड़ेसर** *पु०* यज्ञादि में प्रयुक्त मिट्टी के हाथी के सिर पर रखा जाने वाला मिट्टी का बर्तन।
**भँड़ेहर** *पु०* वह मिट्टी का बर्तन, जिसमें रसोई बनती है।
**भँड़ौआ** *पु०* हास्य रस की भद्दी कविता।
**भँड़ौजा** दे० 'भँड़उजा'।
**भँभाइल** *अक०* खाली होना।
**भँमलोटल** *सक०* घर में किसी भी वस्तु का न होना, अभाव, शून्यता।
**भँवकिआवल** *अक०* टेढ़ा-मेढ़ा चलते हुए भागना।
**भँवजल** *पु०* उलझन, झंझट।
**भँवर** *पु०* [सं० भ्रमरक:] नदी के किसी गर्त में पानी का चक्कर, जगह, जहाँ पानी चक्कर काटता है; चक्रवर्त; जलावर्त; गड्ढा।
**भँवरा** *पु०* एक गाढ़े काले रंग का पंखवाला कीड़ा, जो फलों का रस लेता है, भ्रमर।
**भँवरी** *स्त्री०* पानी का चक्कर, बालों का चक्करदार समूह।
**भँवारा** *पु०* बड़े पुल का सुराख, जिसमें पानी निकलने पर चक्कर काटने लगता है।
**भंसा** दे० 'भनसा'।
**भंसिया** दे० 'भनसिया'।
**भइया** *पु०* भाई के लिए या बराबर वालों के लिए बोधक शब्द। *उदा०* 'भइया का ना मोटरी बहिनिया का ना लोर'।
**भइयाचार** *पु०* भाई जैसा व्यवहार।
**भइल** *अक०* होना। *उदा०* 'भइल बिआह मोर करबऽ का'।
**भउजल** *पु०* झमेला, झंझट, उलझन।
**भउजाई** *स्त्री०* बड़े भाई की पत्नी, भाभी।
**भउजी** *स्त्री०* भौजाई को पुकारने के लिए शब्द।
**भउर** *पु०* राखमिश्रित आग।
**भउलिआवल** *सक०* भरमाना, भुलावा देना।
**भएकड़ा** *पु०* भाई, भाइयों के लिए प्रयुक्त शब्द।
**भकंदर** *पु०* गुदा का घाव, भगन्दर।
**भक** *वि०* भौंचक।
**भक-भक** *पु०* इंजन से धुआँ निकलने की आवाज।
**भकअँजोरी** *स्त्री०* थोड़ा अन्धकार और थोड़ा प्रकाश।
**भकचोन्हर** *वि०* मूर्ख।
**भकठल** *अक०* खराबी पैदा होना। बिगड़ जाना।
**भकठा** *वि०* सड़ा-गला।
**भकठाह** *वि०* जिसमें खराबी हो (मशीन)।
**भकरमुहाँ** *वि०* भयानक मुँह वाला।
**भकरल** *अक०* भींगे हुए अनाज की ऊपरी सतह का पानी सूखना।
**भकरहाल** *पु०* खेत की नमी सूख जाने की स्थिति।
**भकसावन** *वि०* डरावना, भयानक।
**भकाऊँ** *पु०* डरावनी चीज।
**भकुआ** *वि०* मूर्ख। *उदा०* 'भकुआ भींगे गाँव के गोंयड़ा'।
**भकुआइल** *अक०* भकुआ बनना। *सक०* चकपका देना।
**भकुरल** *अक०* रूठना, मुँह डाल देना।
**भकुरा** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**भकुरी** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग (व्यंग्यात्मक शब्द)।
**भकोइयाँ** *पु०* बच्चे को पीठ पर चढ़ाकर गर्दन की बगल से उसका हाथ पकड़ खेलने की स्थिति।

**भकोल** *वि०* मूर्ख।
**भकोलवा** *पु०* बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित प्राणी।
**भकोसल** *सक०* शीघ्रतापूर्वक खाना।
**भकोसा** *पु०* बड़ा कौर।
**भकोसू** *वि०* भकोसने वाला।
**भक्त** *वि०* [सं०] अनुरागी।
**भक्ति** *स्त्री०* सेवा, आराधना।
**भक्ष** *पु०* [सं०] भोजन, भक्षण।
**भक्षक** *वि०* पेटू।
**भख** *पु०* आहार।
**भखल** *सक०* खाना।
**भग** *पु०* [सं०] योनि।
**भगई** *स्त्री०* छोटा भगवा, लंगोटी।
**भगउआ-परउआ** *पु०* कहीं से भगाकर लाया हुआ व्यक्ति।
**भगउती** दे० 'भगवती'।
**भगजिआर** *वि०* खूब प्रकाशयुक्त, स्पष्ट।
**भगजोगनी** *स्त्री०* एक प्रकार का छोटा कीड़ा, जिससे रात में प्रकाश निकलता है, सोनकिरवा, जुगनू।
**भगत** *पु०* वह व्यक्ति, जो मांस-मछली नहीं खाता है; भक्त। *उदा०* 'भगत भगत हो गइल सोर। भगत के मुँह में हाड़गोड़।'
**भगता** *पु०* वैसा व्यक्ति, जिसको किसी देवता का अनुग्रह प्राप्त हो और उसके स्मरण करने पर देवता उसके शरीर पर आ जाता हो।
**भगती** *स्त्री०* भगवान् या किसी देवता के प्रति अनुराग, भक्ति, 'परानुरक्तिरीश्वरे'।
**भगना** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**भगल** *पु०* प्रपंचपूर्ण रुदन या स्वाँग; बहाना।
**भगवंत** *वि०* भगवान्।
**भगवती** *स्त्री०* देवी, दुर्गा।
**भगवद्** *पु०* भगवत् का समासगत रूप। **-गीता** *स्त्री०* कृष्ण द्वारा प्रदत्त ज्ञान। **-भक्त** *वि०* भगवान् का भक्त।
**भगवा** *पु०* छोटा और पतला वस्त्र-खण्ड, जिससे केवल गुप्तेन्द्रिय ढँक जाती है; काषाय।
**भगवान** *पु०* परमात्मा, ईश्वर, विष्णु। *उदा०* 'भगवान के माया कहीं धूप कहीं छाया।'
**भगाड़ा** *वि०* बिना बाँधा हुआ कच्चा (कुआँ)।
**भगावल** *सक०* दूर करना, हटाना, खदेड़ना, छुड़ाना।
**भगिन पतोह** *स्त्री०* भाञ्जे की पत्नी।
**भगिनमान** *पु०* बहन के पुत्र-पौत्र आदि।
**भगिना** *पु०* बहन का पुत्र, भांजा।
**भगीरथ** *पु०* स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगाजी को लाने वाला तपस्वी।
**भउ** *पु०* खाद्य-पदार्थ, (कुत्सित)।
**भजन** *पु०* किसी देवता का बार-बार नामोच्चार, देवगुणगान। *उदा०* 'भज गोविन्दं भज गोविन्दं'।
**भजन-मंडली** *स्त्री०* भजन गाने वाली जमात।
**भजनानंद** *पु०* [सं०] भजन का आनन्द।
**भजनानंदी** *पु०* भगवद्-भजन करने में हर्ष अनुभव करने वाला।
**भजनिआ** *पु०* भजन गाने वाला व्यक्ति।
**भजनी** *पु०* भजन गाने वाला व्यक्ति।
**भजल** *सक०* देवता के नाम का भक्तिपूर्वक बार-बार उच्चारण करना।
**भजहा** *पु०* पशुओं का एक रोग।
**भट** *पु०* भाँटों की उपाधि।
**भटई** *स्त्री०* चापलूसी।
**भटक** *पु०* दुविधा, संकोच।

**भटकल** *अक०* रास्ता भूल जाने से अन्यत्र चला जाना।
**भटका** *पु०* बीया उखाड़ने के बाद खेत में छूटा हुआ धान का पौधा; व्यर्थ घूमना।
**भटकोंआ** *पु०* एक प्रकार की लता, जिसका फल खाया जाता है।
**भटन्त** *पु०* साँप का विष उतारने का एक प्रकार का मंत्र; व्यर्थ की बात।
**भटभटाइल** *अक०* स्पष्ट याद नहीं आना।
**भटभराह** *वि०* जिसका स्पर्श वर्जित है, उससे छुआया हुआ।
**भटरंग** *वि०* जिसका रंग हल्का हो; जिस पर रंग ठीक से नहीं चढ़ा हो।
**भटिन** *पु०* एक प्रकार का लाल और मोटा धान।
**भटी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।
**भट्ठा** *पु०* ईंट पकाने का पिजावा।
**भट्ठी** *स्त्री०* ईंट का बना बड़ा चूल्हा, जहाँ चूड़ियाँ बनती हैं; शराब बनाने एवं बेचने का स्थान।
**भठल** *अक०* किसी के साथ अनैतिक यौन-सम्बन्ध रखना; मिट्टी गिरने से गड्ढे का भर जाना।
**भठा** *पु०* चिमनी; पकाने के लिए ईंटों, खपरैलों आदि का विशेष प्रकार का बना हुआ पुंज।
**भठावल** *अक०* मिट्टी गिराकर बराबर करना, पाटना।
**भठिआरा** *पु०* मुसलमानों की एक जाति, जो पुराने समय से सराय चलाती थी और खाना बेचती थी।
**भठिला** *पु०* पानी बहने की दिशा।
**भड़** *पु०* [सं०] एक वर्णसंकर जाति।
**भड़क** *स्त्री०* दिखावा।
**भड़कताली** *स्त्री०* चकमापूर्ण बात, झूठी धमकी।
**भड़कदार** *वि०* भड़कीला, चमकदार।
**भड़कनी** *स्त्री०* चमकनी (गाय)।
**भड़कल** *अक०* फूटना, आवाज के साथ फूटना, किसी बात पर सहसा उत्तेजित हो जाना।
**भड़कावल** *सक०* फोड़ना, उभाड़ना, उत्तेजित करना।
**भड़की** *स्त्री०* किसी को भयभीत करने के लिए धमकी देने का कार्य या भाव।
**भड़कीला** *वि०* चमकदार, भड़कदार।
**भड़कूई** *स्त्री०* छोटा कच्चा कुआँ, कुइयाँ।
**भड़छल** *अक०* किसी की बातों पर काम करने से विमुख होना।
**भड़भड़** *स्त्री०* मक्का आदि को भूँजते समय उससे निकला शब्द; गिरने की आवाज; बकवास।
**भड़भड़ाइल** *अक०* भड़भड़ शब्द होना।
**भड़भड़ाहट** *पु०* किवाड़ों की आवाज।
**भड़भड़िया** *वि०* व्यर्थ की बात करने वाला, डींग मारने वाला।
**भड़भाड़** *पु०* एक काँटेदार पौधा, जो फसल को हानि पहुँचाता है; घमोटा।
**भड़भूँजा** *पु०* भाँड़ झोंकने और दाना भुनने वाले व्यक्ति, भुजवा।
**भड़वा** *पु०* दे० 'भड़ुआ'।
**भड़सा** *पु०* घर का भीतरी भाग।
**भड़साई** *स्त्री०* भाड़।
**भड़हर** *पु०* भाँड़ा, बरतन।
**भड़ाक** *पु०* किसी कड़े पदार्थ के फूटने या गिरने का शब्द।
**भडार** *पु०* दे० 'भंडार'।
**भड़ास** *स्त्री०* दिल में भरी हुई बातें, गुबार (निकालना)।
**भड़िहा** *पु०* चोर। **-ई** *स्त्री०* चोरी।
**भड़ी** *स्त्री०* बढ़ावा।

**भड़ुआ** *पु०* रण्डियों की दलाली करने वाला।

**भड्डु-भड्डुर** *पु०* कृषि, नीति सम्बन्धी लोक-साहित्य के सर्जक। यथा 'भड्डु कहे सुन भड्डुरी'।

**भड़ेहर** *पु०* रसोई बनाने का मिट्टी का बर्तन।

**भतखई** *स्त्री०* भात खाने का कार्य या भाव; विवाहादि में अपने सगे-सम्बन्धियों या समधी के साथ सामूहिक रूप से भात खाना।

**भतखोर** *वि०* अधिक चावल खाने वाला।

**भतरकाथा** *पु०* पत्नी द्वारा कथित अपने पति के व्यवहार की कथा; निजी कहानी, व्यर्थ की कहानी।

**भतरीन्हा** *पु०* रसोइया।

**भतवान** भात का भोज।

**भतहड़** *पु०* माड़ पसाने की टोकरी।

**भतहा** *पु०* भातवाला।

**भतार** *पु०* पति, स्वामी। *उदा०* 'भतार नीक पुतर नींक किरिया केकर खाऊँ'।

**भतिज-पतोह** *स्त्री०* भतीजे की पत्नी।

**भतिया** *पु०* बतिया, छोटा कोमल नवीन फल।

**भतीजा** *पु०* भाई का पुत्र।

**भतीजी** *स्त्री०* भाई की बेटी।

**भतुआ** *पु०* दे० 'भथुआ'।

**भत्ता** *पु०* किसी कर्मचारी को दिया जाने वाला दैनिक व्यय।

**भथराइल** *अक०* भूना या उबला हुआ भोज्य पदार्थ, जो ठीक से नहीं सिद्ध हुआ हो।

**भथिआन** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग।

**भथुआ** *पु०* कोहड़े की जाति का फल, जो श्वेत-हरित होता है तथा जिसका उपयोग मोरब्बा या अदौरी बनाने में होता है।

**भद** *पु०* किसी चीज के ऊपर से नीचे गिरने पर उत्पन्न शब्द।

**भदई** *स्त्री०* भादों में तैयार होने वाली फसल।

**भदकैला** *पु०* कुछ धौरा, कुछ काला (बादल)।

**भदरा** *पु०* कचरा; अशुभ योग।

**भदरल** *अक०* पके फल का बड़े पैमाने पर गिरना।

**भदराह** *वि०* अशुभ, जिसके प्रयोजन में पानी बरसे।

**भदवारा** *पु०* भादो में अधिक दिनों तक बादल घिरे रहने की स्थिति।

**भदवारी** *स्त्री०* भादों एवं उसके आस पास का वर्षा-काल।

**भदाक** *पु०* भदाक शब्द के साथ किसी वस्तु के गिरने की आवाज।

**भद्दर** *पु०* सिर के बाल मुड़े रहने की स्थिति।

**भद्दा** *वि०* कुरूप, बुरा।

**भदेरल** *सक०* भादों के महीने में खेत को जोत देना।

**भदेस** *पु०* वह स्थान, जहाँ के रहन-सहन में भद्दापन हो।

**भदैया** *पु०* दे० 'भदई'।

**भनक** *स्त्री०* कान में पड़ने वाली धीमी आवाज; उड़ती हुई खबर (पड़ना)।

**भनकल** *सक०* किसी बात का धीमी आवाज में कहना।

**भनभन** *पु०* मक्खियों के बोलने से पैदा भनभन शब्द।

**भनभनाइल** *सक०* भनभन शब्द करना (मक्खी); क्रोध में आकर अस्पष्ट शब्दों में धीरे-धीरे बोलना।

**भनल** *सक०* लगातार बोलते रहना, निरर्थक बात बोलते रहना। *उदा०* 'भनल विद्यापति ऊपर ऊपर'।

**भनसा** *पु०* रसोईघर।
**भनसिया** *स्त्री०* रसोइया।
**भब्भड़** *पु०* हो-हल्ला, अनियंत्रित भीड़।
**भभकल** *अक०* किसी बर्तन के उलट जाने से तरल पदार्थ का गिर जाना।
**भभकी** *स्त्री०* घुड़की, धमकी।
**भभक्कड़** *पु०* अपनी ताकत को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की स्थिति; आडम्बरपूर्ण बात।
**भभड़ल** *अक०* मोटा, बेडौल (शरीर)।
**भभरा** *पु०* किरौना, कीड़ा; चना, मूँग के बेसन की रोटी।
**भभरी** *स्त्री०* मसालेदार गोल और भरी मोटी रोटी।
**भभाइल** *अक०* दीये की लौ का बढ़कर बुझ जाना।
**भभिखन** *पु०* रावण का भाई, विभीषण।
**भभिस्य** *पु०* आगे आने वाला समय, भविष्य।
**भभुतिया** *पु०* एक प्रकार का केला, जो राख के रंग का होता है।
**भभूका** *पु०* लपट, शोला, चिनगारी।
**भभूत** *पु०* राख, जो चन्दन के रूप में व्यवहृत होती है; शिव द्वारा शरीर में पोता जाने वाला चन्दन।
**भम्हट** *पु०* भ्रम, संकोच।
**भम्होरल** *सक०* दाँत से काटकर खा जाना, नख से क्षतिग्रस्त करना।
**भयंकर** *वि०* [सं०] डरावना।
**भय** *पु०* [सं०] डर, खौफ, आशंका।
**भयकरा** *पु०* रिश्ते में दूर का भाई।
**भयरो** *पु०* भैरव।
**भया** *पु०* भैया, भाई।
**भयानक** *वि०* [सं०] डरावना।
**भयावन** *वि०* भयावना।
**भर** *वि०* पूरा, सब। *उदा०* 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे'।
**भर** *पु०* हिन्दुओं की एक जाति; पैसा के बराबर का वजन; कोल्हू के चारों ओर का वह क्षेत्र, जिसमें बैल घूमता है, पौदर। **-पूर** *वि०* परिपूर्ण। **-पेट** *अव्य०* जी भर कर।
**भरइत** *पु०* भार ले जाने वाला।
**भरकदत्त** *पु०* वह बैल, जिसके दाँत गिर पड़े हों, भरदन्ता।
**भरकल** *अक०* बिखर जाना, तितर-बितर होना; भड़कना।
**भरका** *पु०* दूह।
**भरकावल** *सक०* बिखेरना, छितराना।
**भरकी** *स्त्री०* धान की फसल में लगने वाला एक रोग।
**भरखर** *वि०* यथेष्ट, पर्याप्त।
**भरठ** *पु०* पतित चरित्र।
**भरत** *पु०* [सं०] शकुन्तला से उत्पन्न दुष्यन्त-पुत्र, जिसके नाम पर भारतवर्ष अपना देश है। **-खंड** *पु०* भारतवर्ष। **-भूमि** *स्त्री०* भारतवर्ष।
**भरता** *पु०* चोखा।
**भरती** *स्त्री०* भरने का कार्य या भाव; बड़ी संख्या में कर्मचारियों की नियुक्ति।
**भरथ** *पु०* राम के छोटे भाई, भरत।
**भरथरी** *पु०* लोकगाथा का एक पात्र, जो गोरखनाथ का शिष्य होकर योगी हो गया था, भर्तृहरि।
**भरदिना** *पु०* दिनभर काम करने की स्थिति।
**भरदूल** *पु०* एक छोटी चिड़िया।
**भरन** *पु०* कच्चा कुआँ (बिना बाधा)।
**भरना** *पु०* सूद के भुगतान में दी गई भूमि, सूद भरना।

**भरनी** *स्त्री०* सत्ताइस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र; बुनाई में चौड़ाई के रूप में लगाया गया सूत।
**भरपाया** *पु०* भुगतान।
**भरपूर** *वि०* पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण।
**भर पोरसा** *पु०* डुबान।
**भरभट्ठ** *वि०* भ्रष्ट, खराब।
**भर भर** *पु०* चिड़ियों के उड़ने से उत्पन्न शब्द।
**भरभराइल** *अक०* भर-भर शब्द होना।
**भरभांइस** *स्त्री०* एक प्रकार की घास।
**भरम** *पु०* प्रतिष्ठा, इज्जत; सन्देह, भ्रम। उदा० 'भरमे भूत'।
**भरमन** *पु०* घूमने का भाव या कार्य, भ्रमण।
**भरमल** *अक०* घूमना, चक्कर काटना।
**भरमार** *पु०* अधिकता।
**भरमावल** *सक०* व्यर्थ इधर-उधर घुमाना, मन में संशय पैदा करना।
**भरमाह** *वि०* सन्देहास्पद।
**भरल** *अक०* किसी वस्तु के रखने से किसी पात्र का भर जाना।
**भरवन** *पु०* जलाशय का बाँध।
**भरवावल** *सक०* दूसरे से भरवाना।
**भरसक** *क्रि०वि०* यथाशक्ति, जहाँ तक हो सके।
**भरसलिया** *पु०* पूरे वर्ष के लिए नियुक्त खेतिहर मजदूर।
**भरसाहा** *पु०* बोझ उठाने में सहायता, अवलम्ब।
**भरांत** *पु०* वह स्थान, जहाँ मिट्टी भरी गई हो।
**भरा** *वि०* भरा हुआ, पूर्ण। -**पूरा** *वि०* सम्पन्न।
**भराई** *स्त्री०* भरने का भाव, कार्य या मजदूरी।
**भराठा** *पु०* बाँस के टुकड़े को नीचे पेसकर किसी भारी वस्तु को उठाने की स्थिति।
**भरानी** *स्त्री०* फरी।
**भरिआ** *पु०* भार ढोने वाला।
**भरिआइल** *अक०* भारी होना, भारी अनुभव होना।
**भरी** *स्त्री०* एक रुपये के बराबर की तौल।
**भरुआ** *पु०* मसाले भरकर तली गई सब्जी।
**भरुआ पूड़ी** *स्त्री०* दाल की पूड़ी।
**भरुका** *पु०* मिट्टी का प्याला; कुल्हड़, पुरवा।
**भरेठ** *स्त्री०* हाल की भरी हुई मिट्टी, जो अभी बैठी नहीं हो, जैसे-तैसे पूर्ति मात्र के लिए डाली गई चीज।
**भरैया** *पु०* पानी पटाया हुआ खेत।
**भरोस** *पु०* आशा, विश्वास।
**भर्र** *क्रि०वि०* चिड़ियों के उड़ने की आवाज।
**भर्राई** *स्त्री०* रोने की-सी (आवाज)।
**भल** *वि०* अच्छा, सज्जन। *उदा०* 'भल आदमी के बातो भला'।
**भलमनसियत** *वि०* सज्जनता, बड़प्पन।
**भलमनसी** *वि०* सज्जनता।
**भलमनिक** *पु०* सज्जन।
**भलमानस** *पु०* भला आदमी, सज्जन।
**भला** *वि०* [सं० भद्रः] कल्याण, श्रेष्ठ, अच्छा। *उदा०* 'भला आदमी के एक बात'।
**भलाई** *स्त्री०* अच्छाई, बड़प्पन।
**भले** *अव्य०* भलीभाँति, खूब अच्छी तरह।
**भवकट्टी** *स्त्री०* मूल्य निर्धारित कर कर्ज में दिया जाने वाला अनाज।
**भवगर** *वि०* सस्ते मूल्य पर मिलने वाली वस्तु।
**भवतबिता** *पु०* होनहार, होनेवाली घटना; भवितव्यता।
**भवद** *पु०* कुल के सभी सदस्य।

**भवह** *स्त्री०* छोटे भाई की स्त्री।

**भवानी** *स्त्री०* देवी दुर्गा। **-नंदन** *पु०* गणेश।

**भस** *पु०* किसी वस्तु के गिरने या टूटने से उत्पन्न शब्द।

**भसकल** *अक०* चनकना, बिना आवाज के फूट जाना।

**भसकवा** *स्त्री०* गन्दी स्त्री।

**भसकाह** *वि०* जल्दी से टूटने वाला।

**भसम** *पु०* विभूति, राख, भस्म।

**भसमासुर** *पु०* एक राक्षस, जिसे शिव का वरदान मिला था कि जिसके सिर पर वह हाथ रखेगा, वह जलकर राख हो जाएगा।

**भसर-भसर** *पु०* भूँजा आदि के चबाने से उत्पन्न शब्द।

**भसल** *अक०* मकान का ढहना।

**भसान** *पु०* विसर्जन का कार्य या भाव, दुर्गा आदि की मूर्ति को जल में विसर्जित करने का कार्य।

**भसावल** *सक०* किसी वस्तु को पानी में ढाह देना, मूर्ति को नदी में विसर्जित करना।

**भसिआवल** *सक०* मूर्ति को नदी में ढाहकर गिराना; कन्या का निर्धन परिवार में विवाह करना।

**भसुर** *पु०* पति का बड़ा भाई।

**भसेड़** *पु०* कमल-मूल, कमल-ककड़ी।

**भहर-भहर** *पु०* मिट्टी के कण या अन्नादि के गिरने से उत्पन्न शब्द।

**भहराइल** *अक०* वृक्ष, मकान आदि का ढहना, गिरना।

**भाँख** *पु०* धान के बाल पर लगने वाला कीड़ा, जो उसके दूध को चूसकर उसे खखड़ा बना देता है।

**भाँखी** *स्त्री०* साँवा के फसल में लगने वाला एक रोग।

**भाँग** *पु०* [सं० भंग:] एक प्रकार की नशीली पौध, भंग।

**भाँज** *पु०* टेढ़ापन; खेती में सम्मिलित काम करने वालों में किसी खास व्यक्ति के खेत में काम करने की पारी।

**भाँजा** *पु०* बहन का पुत्र।

**भाँजी** *स्त्री०* बहन की पुत्री।

**भाँट** *पु०* बन्दीजनों की एक जाति।

**भाँटवाँस** *पु०* एक प्रकार की लता, जिसकी फली का उपयोग चबेना के लिए होता है।

**भाँटा** *पु०* बैगन।

**भाँड़** *पु०* [सं० भण्ड:] विदूषक, विनोदी।

**भाँड़ल** *सक०* किसी को गाली देना, काम बिगाड़ना।

**भाँत** *पु०* प्रकार, तरह, भाँति।

**भाँय-भाँय** *पु०* बैल की बोली का अनुकरणात्मक शब्द, भयंकर स्थिति।

**भाँव** *पु०* टेढ़े रास्ते से आने-जाने का कार्य।

**भाँवर** *पु०* [सं० भ्रमणम्] विवाह में अग्नि के चारों तरफ परिक्रमा की विधि, वृत्ताकार चक्कर काटने की स्थिति; सप्तपदी।

**भाँस** *पु०* कूड़ा-करकट, बुहारन।

**भा** *अव्य०* चाहे, या। *अक०* हुआ।

**भाइ** *पु०* भाव; प्रेम।

**भाइप** *पु०* भ्रातृत्व।

**भाई** *पु०* [सं० भ्रातृ] भाई, पिता का पुत्र; सहोदर। *उदा०* 'भाई अइसन हितना भाई अइसन मुदई'। **चचेरा भाई** - पितृव्यज, **छोटा भाई** - अनुज, **फुफेरा भाई** - पैतृष्वसेय, **बड़ा भाई** - अग्रज, **ममेरा भाई** - मातुल, **मौसेरा भाई**- मातृष्वसेय, **सौतेला** - वैमात्रेय।

**भाई-बंद** *यौ०* परिवार के सदस्य, जाति के लोग।

**भाउली** *स्त्री०* जमीन की पैदावार देखकर मालगुजारी निश्चित करने की प्रथा।

**भाकस** *पु०* घास-पात।

**भाकसी** *स्त्री०* भट्ठी।

**भाकुर** *पु०* भयानक आकृति वाला व्यक्ति; एक प्रकार की मछली।

**भाखल** *सक०* भविष्यवाणी करना; देवता की मनौती करना।

**भाखा** *पु०* [सं० भाषा] बोली, संकेतात्मक भाषा।

**भाग** *पु०* [सं०] अंश, खण्ड, हिस्सा; भाग्य। **-कइल** *सक०* बाँटना। **-भरोसा** *पु०* भाग्याश्रय। **-जगल** *मुहा०* भाग्योदय। *उदा०* 'भाग के भूत कमाय'।

**भागड़** *स्त्री०* भगदड़; वह जगह, जहाँ से नदी हट जाती है, छाड़न।

**भागमन्ती** *स्त्री०* भावी वधू को पहनाई गई जूड़ी; भाग्यवान।

**भागर** *पु०* किसी नदी के हट जाने से निकली हुई जमीन।

**भागल** *अक०* दौड़कर चलना, तेजी से दौड़ना; किसी काम को करने या वचन-पालन से हटना। *उदा०* 'भागल भूत के लंगोटी भला'।

**भागवत** *पु०* एक महापुराण।

**भागवन्ती** *स्त्री०* लक्खी (गाय)।

**भागवान** *वि०* भाग्यशाली, भाग्यवान।

**भागी** *पु०* अधिकारी, अंशधारी, हकदार।

**भागीरथ** *पु०* एक पुराणप्रसिद्ध राजा, जिसने गंगा को पृथ्वी पर अवतरित कराया।

**भागे-जोगे** *क्रि०वि०* संयोगवश।

**भाग्य** *पु०* तकदीर, सौभाग्य। **-बल** *पु०* तकदीर। **-विधाता** *पु०* नियन्ता। **-शाली** *वि०* भाग्यवान। **-हीन** *वि०* अभागा।

**भाजी** *स्त्री०* साग, शाक; तरकारी व्यंजन।

**भाट** *पु०* [सं० भट्टः] चारण।

**भाटिन** *पु०* बड़ी जाति का बैगन।

**भ.ठ** *स्त्री०* हल्की सफेद मिट्टी, वह क्षेत्र, जहाँ की मिट्टी सफेद और हल्की है।

**भाठा** *पु०* पाट या पाटी पर लिखने के लिए मिट्टी का बना एक सामान, खड़िया। ईंटों को पकाने का आँवा या भट्ठा।

**भाड़ा** *पु०* किराया, महसूल।

**भात** *पु०* [सं० भक्तं] पानी में उबाल कर पकाया चावल। *उदा०* 'भात खाके जात पूछे'।

**भातवान** *पु०* कन्या-विवाह के अवसर पर वर पक्ष के सगे-सम्बन्धियों को भात खिलाने की प्रथा।

**भाथी** *स्त्री०* आग सुलगाने की धौंकनी; चमड़े की धौंकनी।

**भादो** *पु०* सावन के बाद का महीना, भाद्रपद। *उदा०* 'भादो के आन्हर के हरिहरे लउके'।

**भान** *पु०* सूर्य, प्रकाश।

**भानजा** *पु०* बहिन का पुत्र।

**भानजी** *स्त्री०* बहिन की पुत्री।

**भानमती** *स्त्री०* राजा भोज की रानी, जादूगरनी।

**भानस** *पु०* रसोई।

**भाफ** *पु०* [सं० वाष्पः] पानी के खौलने पर उससे ऊपर उठा हुआ गैस, वाष्प।

**भा-बहिन** *यौ०* भाई-बहन।

**भाभी** *स्त्री०* [सं० भ्रातृभार्या] बड़े भाई की पत्नी।

**भाय** *पु०* दे० 'भा'; भाई का संक्षिप्त रूप, जिसका व्यवहार सम्बोधन में होता है।

**भायप** *पु०* भाई-चारा।

**भाया** *पु०* भाई के लिए सामूहिक रूप में सम्बोधन। *उदा०* 'हो भाया! ई काम जरूरी बा'।

**भार** *पु०* बाँस के फट्टे पर दोनों ओर लटकाया हुआ बोझ; उत्तरदायित्व।
**भारत** *पु०* भारतवर्ष, भरतखण्ड।
**भारती** *स्त्री०* वाणी।
**भारतीय** *वि०* भारतवासी।
**भारथी** *पु०* संन्यासियों की एक उपाधि, भारती।
**भारा** *पु०* किराया; मनौती (देवताओं की)।
**भारी** *वि०* वजनदार, बड़ा। उदा० 'भारी बियाज मूल को खाय'।
**भार्गव** *वि०* [सं०] भृगु सम्बन्धी।
**भार्या** *स्त्री०* पत्नी।
**भाल** *पु०* एक रोयेंदार जंगली जानवर, भालू।
**भालसरी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।
**भाला** *पु०* एक शस्त्र, बरछा का एक भेद।
**भाव** *पु०* अभिप्राय, विचार, इच्छा। **-ताव** *पु०* मूल्य। **-चढ़ल** *मुहा०* महँगा होना।
**भावइ** *अव्य०* मन में आए, जी चाहे तो।
**भावक** *वि०* भाव-भरा।
**भावज** *स्त्री०* भौजाई।
**भावता** *वि०* जो मन को भाए।
**भावना** *स्त्री०* विचार, भेद, आशंका।
**भावल** *अक०* पसन्द आना, रुचना।
**भावली** *स्त्री०* उपज के रूप में दिया जाने वाला राजस्व।
**भावा-जोखी** *यौ०* भय, आशंका।
**भावार्थ** *पु०* आशय, तात्पर्य।
**भावी** *स्त्री०* भविष्य में होने वाली घटना की बात; होनी।
**भावे** *स्त्री०* छोटे भाई की पत्नी।
**भावे-भावे** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे, उचित ढंग से, प्रकारान्तर से।
**भाष** *पु०* भाषा, वाणी।
**भाषा** *स्त्री०* ऐसी बोली, जिसका लिखित साहित्य हो, बोली; भाव व्यक्त करने का साधन। **-विद्** *पु०* भाषा का ज्ञाता।
**भास** *पु०* वह भूमि-खण्ड, जो बहते हुए पानी के धक्के से गिर जाता है।
**भासन** *पु०* व्याख्यान, भाषण।
**भिंडी** *स्त्री०* एक प्रकार की पतली और लम्बी फली, जिसकी तरकारी बनती है, रामतरोई।
**भिखमंगा** *पु०* भिक्षुक, निखारी।
**भिखहर** *पु०* यज्ञोपवीत के अवसर पर बटुक द्वारा भिक्षा माँगने की विधि; इस अवसर पर दी गई भिक्षा।
**भिखार** *पु०* भिक्षा माँगने वाला, भिक्षुक।
**भिच्छा** *स्त्री०* आवश्यकता-पूर्ति के लिए दीनतापूर्वक माँगने का काम।
**भिच्छु** *पु०* भिक्षुक।
**भिजवावल** *सक०* भिगवावल।
**भिजावल** *सक०* तर करना; गीला करना।
**भिटनी** *स्त्री०* स्तन का अग्रभाग, चुचुक।
**भिठगरी** *स्त्री०* छोटे दानों वाली मटमैली मटर।
**भिड़ंत** *स्त्री०* मुठभेड़।
**भिड़** *स्त्री०* बर्रे, ततैया।
**भिड़ल** *अक०* टकराना; सटना; लड़ना।
**भितराहुत** *क्रि०वि०* भीतर की ओर।
**भितरिया** *वि०* भीतर का, आन्तरिक, अन्तरंग।
**भितरी** *क्रि०वि०* भीतर वाला हिस्सा।
**भितल्ला** *पु०* भीतर का पल्ला, अस्तर।
**भितल्ली** *स्त्री०* चक्की के नीचे का पाट।
**भित्ति** *स्त्री०* [सं०] भीत, दीवार, नींव।
**भिनकल** *अक०* भिनभिनाना।
**भिनगी** *स्त्री०* मोठ।
**भिनसार** *पु०* सबेरा, प्रातःकाल।
**भिनहीं** *अव्य०* सबेरे, तड़के।
**भिनाइल** *अक०* घृणा का अनुभव करना, घिनाना।

**भिरंगी** *स्त्री०* एक प्रकार की भृंग।
**भिरल** *सक०* आक्रमण करना, भिड़ना।
**भिरावट** *स्त्री०* भिड़ने का भाव या कार्य।
**भिरुखी** *स्त्री०* पशुओं के कण्ठ या छाती का एक रोग। कण्ठार।
**भिलनी** *स्त्री०* भीलनी।
**भिसाढ़** *पु०* कमल का कन्द।
**भिहलाइल** *अक०* पिघलकर खत्म हो जाना।
**भींगल** *अक०* भीगना।
**भींगी** *स्त्री०* भृंगी।
**भींचल** *सक०* खींचना, दबाना।
**भींजल** *अक०* भीगना।
**भींट** *पु०* भीट।
**भी** *अव्य०* [सं० अपि] अवश्य; तक; अधिक।
**भीख** *स्त्री०* भिक्षा। उदा० 'भीख माँगि के खाइ बहिन दुआरी नाहीं जाइ'।
**भीखम** *पु०* भीष्म पितामह।
**भीजल** *अक०* तर होना, गीला होना, भींगना।
**भीजा** *वि०* सरस, सुखी।
**भीजोह** *वि०* किंचित् भींगा हुआ।
**भीठ** *स्त्री०* पान की लतर जिन ऊँची जगहों पर उगाई जाती है।
**भीडुक** *पु०* टीला।
**भीढा** *पु०* डीह।
**भीत** *स्त्री०* मिट्टी की दीवार।
**भीतर** *क्रि०वि०* [सं० अभ्यन्तरे] अन्दर।
**भीतर घामा** *पु०* हलकी बदली से छिपी धूप।
**भीतर मार** *पु०* ऐसी कड़ी पिटाई, जिससे अंग पर टूट-फूट का कोई निशान न हो।
**भीता** *पु०* हल के दो सिराओं के बीच बिना जोती गई भूमि; नाली का गहरा आन्तरिक भाग।
**भीनल** *पु०* शीत लगना, समाविष्ट होना।
**भीनी** *वि० स्त्री०* हलकी।
**भीम** *पु०* पाण्डवों में एक, जो महाबली भीमकाय थे।
**भीमसेनी (एकादशी)** *स्त्री०* जेठ सुदी की एकादशी।
**भीर** *स्त्री०* मनुष्यों का जमाव, जनसमूह।
**भीरी** *क्रि०वि०* निकट, पास।
**भील** *पु०* एक जंगली जाति।
**भीलनी** *स्त्री०* भील की स्त्री।
**भीस** *पु०* ऊँची जमीन।
**भीसम** *पु०* भीष्म पितामह।
**भुँइ** *स्त्री०* पृथ्वी, भूमि।
**भुँइकँप** *पु०* भूकम्प।
**भुँइ चूल्हा** *पु०* मिट्टी खोदकर धरती पर बनाया गया चूल्हा।
**भुँइपरी** *स्त्री०* धरती पर लेटते हुए देव-मन्दिर जाने का कार्य।
**भुँइया** *पु०* धरती, भूमि।
**भुँलोट** *पु०* एक प्रकार का केला, जिसका पेड़ छोटा होने के कारण उसका घौद धरती तक आ जाता है।
**भुँइसीकर** *पु०* एक प्रकार का धान।
**भुँइ सोहर** *पु०* पहने हुए वस्त्र के धरती तक लोटने की स्थिति।
**भुँजनी** *वि०* जिसमें भूँजा भूना जाता है, (कड़ाही)।
**भुअंगम** *पु०* साँप।
**भुअरी** *स्त्री०* एक सफेद रंग का अति सूक्ष्म पदार्थ, जो दही आदि पर पैदा होता है; फफूँदी।
**भुइला** *पु०* एक प्रकार का रोयेदार कीड़ा, जिसके स्पर्श से खुजली पैदा होती है।
**भुइली** *स्त्री०* भूआ।
**भुकभुक** *क्रि०वि०* सहसा, प्रकाशयुक्त।
**भुक भुकवा** *वि०* तेज प्रकाशयुक्त।

**भुक्खड़** *वि०* भूख की ज्वाला से पीड़ित, अति भूखा।

**भुख** 'भूख' का समासगत रूप। **-मरा** *वि०* भुक्खड़। **-मरी** *स्त्री०* भूखों मरने की स्थिति।

**भुखाइल** *अक०* भूख से पीड़ित होना। *उदा०* 'भुखाइल बंगाली भात भात'।

**भुगतल** *अक०* बीतना, पूरा होना।

**भुगतान** *पु०* अदायगी।

**भुच्च** *वि०* बेवकूफ।

**भुचेंग** *स्त्री०* एक काला पक्षी, भुजेंगा, ठाकुर चिड़िया।

**भुज** *पु०* [सं०] भुजा, बाहु। **-दंड** *पु०* भुजदण्ड। **-पास** *पु०* आलिंगन। **-बंद** *पु०* केयूर।

**भुजायठ** *पु०* एक आभूषण।

**भुजाली** *स्त्री०* तलवार की तरह का एक अस्त्र।

**भुजावल** *पु०* दूसरे से भुनवाना।

**भुजिया** *पु०* तेल या घी में भूँजी हुई सब्जी; उसीना।

**भुजी** *स्त्री०* टुकड़ा।

**भुजुरी** *स्त्री०* छोटा-छोटा टुकड़ा।

**भुटका** *पु०* एक प्रकार की मकोय; एक प्रकार का साग।

**भुटकुली** *वि०* कद में नाटा।

**भुट्टा** *पु०* मक्का।

**भुड्डरी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।

**भुतनी** *स्त्री०* स्त्री प्रेत।

**भुतलाइल** *अक०* खो जाना, भूल जाना।

**भुतहवा** *वि०* जहाँ भूत रहता हो. वैसा वृक्ष या स्थान।

**भुन्ना** *पु०* एक प्रकार की मछली।

**भुभुक्का** *वि०* ज्वाला, लपट।

**भुरकुटल** *सक०* किसी खाद्य पदार्थ को हाथ में दबाकर चूर्ण बनाना।

**भुरकुन** *पु०* चूर्ण।

**भुरकुरल** *सक०* बारीक चूर्ण करना।

**भुरकुस** *सक०* [सं०] चूर्ण, बारीक कण।

**भुरभुरी** *स्त्री०* महीन।

**भुरभूटल** दे० 'भुरहूटल'।

**भुरहरी** *स्त्री०* सूखी मिट्टी।

**भुरहुरा** *पु०* कीड़ों द्वारा धरती से ऊपर की ओर फेका गया बारीक मिट्टी का कण (खासकर गोबर या विष्ठा के निकट)।

**भुरहूटल** *सक०* किसी कच्चे बाल या फल को आग में किंचित् भूनना।

**भुरुकल** *सक०* चूर्ण बनाकर छींटना।

**भुरुका** *पु०* अचानक उठने वाली अफवाह।

**भुर्र-भुर्र** *पु०* चिड़ियों के उड़ने का शब्द।

**भुलकल** *अक०* रोंया का खड़ा होना।

**भुलकिआवल** *सक०* भुलावा देना, धोखा देना।

**भुलकी** *स्त्री०* झूठी धमकी, भुलावा।

**भुलक्कड़** *वि०* किसी बात को भूलने वाले स्वभाव का।

**भुलवावल** *सक०* भुला देना, खो जाना।

**भुलाइल** *अक०* बिसर जाना, बुलाना, खो जाना।

**भुलावल** *सक०* खो देना, बिसार देना; उलझाए रखना।

**भुलावा** *पु०* धोखा, चकमा।

**भुल्ल** *पु०* धरती से निकलने वाली जलधारा; भैंस का एक रंग।

**भुवन** *पु०* [सं०] जगत्, लोक। **-भय** *पु०* स्वर्ग, मर्त्य, और पाताल।

**भुवा** *पु०* घुआ, रूई।

**भुस** *पु०* भूसा।

**भुसउल** *पु०* भूसा रखने का घर।

**भुसउला** *पु०* भूसागार। घर के पास भूसा रखने की जगह।

**भुसहन** *पु०* वह अनाज, जिसमें भूसा हो।
**भुसुरी** *वि०* चूर्ण, आसानी से टूटकर बारीक हो जाने वाली मिट्टी।
**भूँइजबरा** *पु०* कन्दरा।
**भूँक** *पु०* कुत्ते की आवाज।
**भूँजल** *पु०* अनाज को तवा में तपाकर भूँजना।
**भूँजा** *पु०* चबेना।
**भूँड़** *स्त्री०* मेड़ का बिल, जिससे पानी निकलता है; कुआँ की पेंदी का बिल, जिससे जलधारा चलती है।
**भूअर** *वि०* भूरे रंग का।
**भूअरी** *स्त्री०* रेंगने वाला कीड़ा।
**भूआ** *पु०* रूई, सफेद फूल; रोआँ।
**भूक** *स्त्री०* भूख।
**भूकंप** *पु०* भूचाल, भूडोल।
**भूकल** *अक०* कुत्तों का बोलना; व्यर्थ की बातें बोलना।
**भूख** *स्त्री०* [सं० बुभुक्षा] क्षुधा, भोजन की जरूरत।
**भूखा** *वि०* क्षुधा, अन्नार्थी, भोजन की आवश्यकता। **-दूखा** *वि०* गरीब, भिखमंगा। **-नंगा** *वि०* अति दरिद्र, अकिंचन। **-प्यासा** *वि०* भूख-प्यास से पीड़ित।
**भूत** *पु०* प्रेत, भूतों द्वारा किसी को भरमाकर घुमाने का कार्य। *उदा०* 'भूत मारऽ लेना तऽ सतावऽ ले'।
**भूमर** *पु०* गर्म राख।
**भूमिहार** *पु०* भुइँहार।
**भूर** दे० 'भूँड़'।
**भूरा** *पु०* भुने चावल का चीनी मिला चूर्ण, जिसका उपयोग देवताओं के प्रसाद के रूप में होता है, चूरन; खाकी रंग।
**भूल** *स्त्री०* गलती, विस्मृति।
**भूलभूलैया** *पु०* एक प्रकार का चक्करदार मकान, जिसमें प्रवेश करने वाला निकलने का सही मार्ग शीघ्र नहीं पकड़ पाता।
**भूलल** *अक०* याद नहीं रहना, बिसर जाना।
**भूस** *पु०* एक प्रकार का कीटाणु, जो काटता है।
**भूसा** *पु०* अनाज के पौधों के डण्ठल का चूर्ण, जो पशुओं को खिलाया जाता है।
**भूसी** *स्त्री०* बाहरी महीन छिलका (अनाज का)।
**भें** *पु०* भेंड़ और बकरी की बोली के लिए प्रयुक्त शब्द।
**भें-भें** *पु०* बच्चों के रोने की आवाज (व्यंग्य०)।
**भेंगरइया** *पु०* एक पौधा, जिसके रस का उपयोग कटे घाव पर होता है।
**भेंट** *स्त्री०* मुलाकात।
**भेंड़वा** *पु०* भेंड़ा; बाजरे में लगने वाला एक कीड़ा।
**भेंभल** *अक०* रोते हुए नाक से बोलना।
**भेंभिआइल** *अक०* बच्चों का रोना (व्यंग्य०)।
**भेंवल** *सक०* भिंजना।
**भेअंकर** *वि०* जिसे देखने से डर लगे, भयानक।
**भेआइल** *अक०* भयभीत होना, डरना।
**भेआनक** *वि०* डरावना, भयंकर।
**भेआवन** *वि०* भय उत्पन्न करने वाला, डरावना।
**भेक** *पु०* [सं०] मेढ़क।
**भेख** *पु०* साधुओं की कण्ठी, तिलक-छाप। *उदा०* 'भेखे भीख मिलेला'।
**भेजल** *सक०* किसी व्यक्ति को कार्यवश कहीं रवाना करना, पेठाना, भेजना।
**भेजा** *पु०* दिमाग, मस्तिष्क, मगज।

**भेटल** *सक०* मिलना, प्राप्त होना।
**भेटाइल** *अक०* मुलाकात होना।
**भेड़** *स्त्री०* बकरी की जाति का एक चौपाया। उदा० 'भेड़ का जाने पुआर के मरम'।
**भेड़काबर** *पु०* एक प्रकार का धान।
**भेड़ा** *पु०* नर भेड़। *स्त्री०* भेड़ी।
**भेड़िआइल** *अक०* कायरता का आचरण करना।
**भेड़िया धसान** *पु०* सामूहिक रूप से देखा-देखी किसी काम के करने की स्थिति।
**भेड़हर** *पु०* हिन्दुओं की एक जाति, जिसका पेशा भेड़-पालन है।
**भेद** *पु०* [सं०] छिपी हुई बात, रहस्य, मर्म। **-खोलल** *सक०* रहस्य बताना। **-पावल** *सक०* गुप्त जानकारी। **-बुद्धि** *स्त्री०* विश्लेषण-क्षमता। **-भाव** *पु०* अन्तर।
**भेन** *स्त्री०* बहिन।
**भेर** *पु०* नगाड़ा।
**भेली** *स्त्री०* सफेद गुड़।
**भेव** *पु०* रहस्य, भेद, आशंका पैदा करने वाली बात।
**भेवल** *सक०* भिगोना।
**भेस** *पु०* बाहरी रूप-रंग-पहनावा आदि।
**भैंसा** *पु०* नर भैंस। उदा० 'भैंसा आगे बेनु बजावे' लोको०
**भैना** *पु०* भाँजा।
**भैरवानंद** *पु०* तांत्रिक योगी, जिसकी चर्चा लोक-कथाओं में है।
**भैरवी** *स्त्री०* प्रात:काल गाया जाने वाला एक राग।
**भैरो** *पु०* शिव के प्रमुख गण, भैरव।
**भोंकल** *सक०* नुकीली चीज को शरीर में घुसाना।
**भोंकार** *पु०* विलाप।
**भोंचड़** *वि०* मूर्ख, सुस्त।
**भोंथ** *वि०* कुण्ठित, जो पैना नहीं हो (हथियार की धार)।
**भोंकसल** *अक०* बैल का जोर से बोलना।
**भोंकाड** *पु०* मोटा बिल।
**भों-भों** *पु०* भूँकने की आवाज।
**भोग** *पु०* देवताओं को चढ़ाया गया नैवेद्य।
**भोगल** *अक०* सुख लूटना या उठाना, सुख-दु:ख का अनुभव करना; सम्भोग करना।
**भोगिला** *पु०* कपास की एक जाति।
**भोगी** *वि०* भोग करने वाला।
**भोज** *पु०* मालवा के एक राजा, जो कवि एवं विद्वान् थे; यज्ञादि के अवसर पर बहुत व्यक्तियों को एक साथ बैठाकर भोजन कराना। उदा० 'भोजन भात हर हर गीत'।
**भोजन** *पु०* सिद्ध खाद्य-पदार्थ खाने का कार्य।
**भोजनी** *स्त्री०* कन्याओं के बिदा होने के पूर्व या बाद में उसके सगे-सम्बन्धियों द्वारा भेजी गई भोजन की सामग्री।
**भोजपत्तर** *पु०* एक प्रकार का पेड़ और उसकी छाल, जिसका उपयोग प्राचीन काल में कागज के समान होता था।
**भोजपुर** *पु०* डुमराँव स्टेशन के पास का एक गाँव। उदा० 'भोजपुर जइहऽ मत जइबो करिहऽ तऽ रहिहऽ मत रहबो करिहऽ तऽ सूतिहऽ मत सूतिहऽ तऽ टोइह मत टोइबो करिहऽ त रोइहऽ मत'।
**भोजपुरिहा** *पु०* भोजपुरी भाषा-भाषी लोग।
**भोजपुरी** *स्त्री०* भोजपुरी बोली या भाषा, भोजपुरी भाषा साहित्य।

**भोज-भात** *पु०* त्योहार या उत्सव की रसोई।
**भोजरांव** *पु०* बड़े पैमाने पर भोज करने या होने का भाव।
**भोट** *स्त्री०* एक देश, भूटान। मतदान, वोट।
**भोटिया** *पु०* भोट का निवासी; एक प्रकार का घोड़ा।
**भोड़ा** *पु०* एक प्रकार की बड़ी मछली।
**भोथर** *वि०* धारविहीन हथियार। *उदा०* 'भोथर हंसुआ होई तऽ अपने ओर खींची'।
**भोम्ह** *पु०* लम्बी वस्तु, जिसमें आर-पार छेद हो।
**भोम्हाक** *पु०* मोटा छिद्र।
**भोर** *पु०* प्रात:काल।
**भोरल** *सक०* भ्रम में डालना, बहकाना।
**भोराइल** *अक०* भ्रमित होना।
**भोराह** *वि०* जिसमें दाना हो (मक्के का बाल)।
**भोला** *वि०* सीधा-सादा, प्रपंचहीन।
**भोलानाथ** *पु०* शिव, महादेव।
**भोस** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग।
**भोसड़ा** *पु०* बड़ा भग (गाली)।
**भोंसड़ी** *स्त्री०* स्त्रियों के लिए गाली।
**भोंसवा** *पु०* केले का एक भेद।
**भौं** *पु०* पलकों के ऊपर माथे पर जमे छोटे-छोटे बाल।
**भौंकी** *स्त्री०* अनाज रखने की टोकरी।
**भौंचाल** *पु०* भूकम्प।
**भौंटा** *पु०* अनाज के ओसाने के समय हवा में उड़ा हुआ महीन भूसा।
**भौंड़ा** *वि०* भोंड़ा।
**भौंडी** *स्त्री०* भोंडी।
**भौंता** *पु०* घुमान, लपेट।
**भौंर** *पु०* भ्रमर; जलावर्त, भँवर।
**भौंरा** *पु०* भ्रमर।
**भौंह** *स्त्री०* भौं।
**भौंचक** *वि०* हक्का-बक्का।
**भौजाई** *स्त्री०* भाभी।
**भौन** *पु०* भवन।
**भ्रम** *पु०* [सं०] मिथ्या ज्ञान।
**भ्रमर** *पु०* [सं०] भौंरा।
**भ्रस्ट** *वि०* [सं०] भ्रष्ट, नीच।
**भ्रात** *पु०* भ्राता।
**भ्राता** *पु०* [सं०] सगा भाई।

❑

# म

**म** देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का अन्तिम वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान ओंठ है।

**मंकुर** *पु०* [सं०] दर्पण।

**मंक्षु** *अव्य०* [सं०] तुरन्त, शीघ्रता से; अत्यधिक।

**मंख** *पु०* [सं०] भाट, बन्दीजन; एक दवा।

**मंग** *स्त्री०* माँग *पु०* [सं०] नाव का अगला भाग।

**मंगटीका** *पु०* माँग का गहना।

**मंगता, मंगन** *पु०* भिखमंगा, याचक।

**मँगनी** *स्त्री०* माँगने का भाव; माँग का काम हो जाने पर लौटा देने की शर्त पर ली हुई चीज; ब्याह पक्का करने की रस्म। *उदा०* 'मँगनी के सतुआ सास के पिंडा'।

**मंगर** *पु०* मंगलवार।

**मंगरइल** *पु०* काले रंग का मसाला-विशेष।

**मंगरा** *पु०* मोटी और छोटी नाली जैसा खपड़ा, जो बड़ेरी की छजनी में लगता है।

**मंगल** *पु०* [सं०] ग्रह-विशेष; सोमवार के बाद का दिन; कल्याण, सौभाग्य। *वि०* शुभ, कल्याणकारी।

**मंगलमय** *वि०* [सं०] मंगल रूप। *पु०* परमेश्वर।

**मंगला** *वि०* मंगली (पुरुष); मंगल को जन्म लेने वाला।

**मंगला** *स्त्री०* [सं०] पार्वती; पतिव्रता स्त्री; हल्दी।

**मंगलाचरन** *पु०* [सं०] देवस्तुति, मांगलिक पद।

**मंगलाचार** *पु०* जन्मोत्सव, विवाह आदि सुअवसरों पर गाया जाने वाला गीत; शुभ-अनुष्ठान।

**मंगली** *स्त्री०* [सं० मङ्गल:] वह पुरुष या स्त्री, जिसके चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह हो।

**मंगवावल** *सक०* दूसरे स्थान से मँगाना।

**मंगावल** *सक०* मँगाने का प्रेरणार्थक रूप।

**मंगिआवल** *अक०* पौधे को दोनों ओर दबाकर बीच की घास निकालना।

**मंगुरी** *स्त्री०* मछली विशेष, मङुरी।

**मंगेतर** *वि० स्त्री०* जिस लड़की की मँगनी हुई हो।

**मंच** *पु०* [सं०] मचिया; मचान; रंगभूमि। **-मंडप** *पु०* विवाहादि के समय बनाई गई मचान।

**मँचिआ** *स्त्री०* छोटी खाट।

**मंछर** *पु०* मच्छर।

**मंजन** *पु०* दाँत साफ करने हेतु प्रयोग में लाया जाने वाला चूर्ण।

**मंजर** *पु०* [सं०] मोती; वल्ली; मंजरी।

**मंजर** *पु०* [अ०] दृश्य, नजारा; झरोखा।

**मँजवावल** *सक०* माँजल का प्रेरणार्थक रूप।

**मँजाइल** *वि०* मँजा हुआ। अनुभवी।

**मंजिल** *स्त्री०* यात्रा; शवयात्रा; पड़ाव।

**मंजी** *स्त्री०* [सं०] मंजरी; लता।

**मंजीर** *पु०* [सं०] घूँघरू, नूपुर।

**मंजु** *वि०* [सं०] सुन्दर, मनोहर।

**मंजुल** *वि०* [सं०] सुन्दर, मनोहर। *पु०* कुंज; सोता।

**मंजूर** *पु०* स्वीकार।

**मँजूरी** *स्त्री०* स्वीकृति।

**मँझला** *वि०* मझला, बीच का।

**मँझा** *पु०* माँझा।

**मँझार** *पु०* भड़कने वाला बैल।

**मंझोला** *वि०* मझोला।

**मंडप** *पु०* यज्ञ आदि के लिए बना पावन स्थान।
**मंडल** *पु०* घेरा, क्षेत्र; जिला, प्रदेश, ग्राम-समूह; हलका।
**मँड़गिलाह** *वि०* माँड़मिश्रित भात।
**मँड़वा** *पु०* मण्डप, माड़ो। *उदा०* 'मँड़वा में माँड़ के दुख'।
**मंड़सटका** *वि०* माँड़ मिला हुआ भात।
**मंता** *पु०* मनौती।
**मंतरा** *पु०* व्यंजन के साथ लगाया गया स्वर; मात्रा।
**मंतरी** [सं० मन्त्रिन्] मन्त्री। *उदा०* 'मंतरी अब बनि गइले संतरी'।
**मंदा** *वि०* गिरी हुई कीमत का।
**मंदिल** *पु०* देवालय, ऊँचा मकान, मन्दिर।
**मंदी** *स्त्री०* कीमत गिर जाने की स्थिति।
**मँदोदरी** *स्त्री०* रावण की पत्नी।
**मंसा** *पु०* मतलब। 'जे मंसा से करबऽ दान से मनसा पुरइहेन भगवान'। कहा०
**मइँआ** *स्त्री०* स्त्री को दुलार से पुकारने का शब्द।
**मइका** *पु०* मायका।
**मइया** *स्त्री०* माता; देवी; भगवती, जगदम्बा आदि के लिए सम्बोधन। *उदा०* 'मइया के जीव गइया अइसन'।
**मइजल** *पु०* शवयात्रा, मंजिल।
**मइन** *पु०* सानने के पूर्व उसमें घी या तेल मलने का कार्य, जिससे पदार्थ मुलायम हो।
**मइनी** *स्त्री०* मैना जाति की एक चिड़िया, जो कत्थई रंग की होती है।
**मइल** *स्त्री०* गन्दगी, गन्दा। *उदा०* 'मइल कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कवन सँदेह'।
**मइला** *पु०* विष्टा, पैखाना।
**मइलाह** *वि०* गन्दा-सा।
**मइली** *स्त्री०* ईंख का रस औंटते समय उससे निकला मैल।
**मउअत** *स्त्री०* मृत्यु, मौत।
**मउगड़** *पु०* स्त्रियों के सदृश हाव-भाव, व्यवहार करने वाला।
**मउगा** *पु०* स्त्रियों की भाँति हाव-भाव दिखाने वाला पुरुष। *उदा०* 'मउगा मरद आ बिना नाथ के बरद बराबरे होला'।
**मउगानी** *वि०* स्त्रैण प्रकृति का।
**मउगाह** *वि०* स्त्रियों के सदृश हाव-भाव दिखाने वाला।
**मउगी** *स्त्री०* औरत।
**मउगिनिया** *स्त्री०* स्त्रियों के सदृश; मादा (पक्षी)।
**मउज** *पु०* उमंग, सुख, आनन्द, मौज।
**मउजा** *पु०* ग्राम, गाँव।
**मउनी** *स्त्री०* सींक का बना छोटा बर्तन।
**मउर** *पु०* मुकुट-विशेष, जिसे विवाह के अवसर पर वर पहनता है।
**मउरल** *अक०* अधिक धूप के कारण पत्ते का मुलायम होना, मुरझा जाना।
**मउरी** *स्त्री०* छोटा मौर।
**मउरीसी** *स्त्री०* पैतृक अधिकार में मिली हुई भूमि।
**मउसा** *पु०* माँ की बहन का पति।
**मउसिआउत** *वि०* मौसी से सम्बन्धित।
**मउसिहर** *पु०* मौसी का गाँव।
**मउसी** *स्त्री०* माता की बहन।
**मउसेरा** *पु० वि०* मौसा-मौसी के नाते से सम्बद्ध।
**मकई** *स्त्री०* मक्का, एक प्रकार का अन्न।
**मकड़ा** *पु०* एक प्रकार की घास, जो परती में उपजती है; बड़ी मकड़ी।
**मकरा** *पु०* एक कीड़ा-विशेष, जो अपने शरीर से धागे निकालता है, जिसके शरीर के दबने पर शरीर में घाव हो जाता है।

**मकरी** *स्त्री०* मादा मकड़ा, मकड़ी; खम्भे में छोर लगी घिरनी।
**मकान** *पु०* घर, गृह, निवास-स्थान।
**मकुना** *पु०* बिना दाँत का या छोटे दाँत वाला नर हाथी; खूब मोटा आदमी।
**मकुनी** *स्त्री०* बेसन-भरी आटे की मोटी-छोटी रोटी। लिट्टी, भभरी।
**मकुरावल** *सक०* धीरे-धीरे प्रेमपूर्वक खाना।
**मकोय** *पु०* जंगली बेर की एक जाति।
**मकोर** *पु०* बाँस का एक भेद, जिसका पोर लम्बा होता है।
**मकोरल** *सक०* मरोड़ना।
**मकोसल** *पु०* एक सदाबहार पेड़।
**मकोहा** *पु०* फसल में लगने वाला एक कीड़ा।
**मकौड़ा** *पु०* पशुओं की उछल-कूद।
**मक्कड़** *पु०* नर मकड़ी।
**मक्का** *पु०* मकई। [अ०] अरब का एक मुख्य नगर, जो मुहम्मद का जन्म-स्थान और मुसलमानों का प्रधान तीर्थ है।
**मक्कार** *वि०* [अ०] छली।
**मक्कारी** *स्त्री०* कपट, धोखेबाजी।
**मक्खन** *पु०* नवनीत, कच्चा घी।
**मक्खी** *स्त्री०* [सं० मक्षिका] मक्षिका। -**चूस** *वि०* कंजूस। -**मार** *वि०* मक्खियाँ मारने वाला। *उदा०* 'मक्खी खोजे घाव दुसमन खोजे दाव'।
**मख** *पु०* [सं०] यज्ञ, याग।
**मखदूर** *पु०* शक्ति, सामर्थ्य, हैसियत।
**मखन** *पु०* दे० 'मक्खन'।
**मखमल** *पु०* एक प्रकार का बढ़िया नरम और महीन वस्त्र। *उदा०* 'मखमल में मूँजे के बखिया'।
**मखल** *सक०* पैर से विष्ठा रौंदना।
**मखाना** *पु०* काँटेदार कमल का बीज, जिसका प्रयोग भूनकर खाने में होता है।
**मखूला** *पु०* शरण लेते समय किसी जमीन या मकान को बन्धक रखने का काम।
**मखौल** *पु०* ठट्ठा।
**मखौलिया** *पु०* मजाक करने या मखौल उड़ाने में सिद्ध।
**मग** *पु०* मार्ग, [अ०] छोटा डब्बा।
**मगज** *पु०* मस्तक, सिर, दिमाग।
**मगध** *पु०* दक्षिणी बिहार; चारण।
**मगन** *वि०* आनन्दित, मग्न, लीन।
**मगर** *पु०* बड़े आकार का एक जल-जन्तु; घड़ियाल। *अव्य०* किन्तु, परन्तु, लेकिन।
**मगह** *पु०* बिहार में गंगा के दक्षिण का क्षेत्र। *उदा०* 'मगह देस कंचनपुरी देस अच्छा भाखा बुरी'।
**मगहर** *पु०* बस्ती जिले में 'कबीर' की समाधि वाला स्थान।
**मगहिया** दे० मगह का।
**मगही** *स्त्री०* *वि०* मगह (मगध) की भाषा; मगह का, मगहर-सम्बन्धी; एक प्रकार का पान। *उदा०* 'मगही पान आ पतरी तिरिया, बड़े भाग पर आवे भीरिया'।
**मघवट** दे० 'मघाड़'।
**मघवा** *पु०* [सं० मघवन्] इन्द्र। *उदा०* 'मघवा मूल बिड़ौजा टीका'।
**मघाड़** *पु०* माघ के महीने में खेत को जोतकर खाली रहने देने की स्थिति।
**मङजरउनी** *स्त्री०* जिसका सौभाग्य जल गया हो वह स्त्री; स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त गाली का शब्द।
**मङटीका** *स्त्री०* मँगटीका, माथे का गहना।
**मङढकी** *स्त्री०* मथढँका की विधि।
**मङता** *पु०* दे० 'मंगता'।
**मङन** दे० 'मंगन'।

**मङनयन** *पु०* वह व्यक्ति, जो किसी से माँगकर खाता फिरता है।
**मङनी** दे० 'मँगनी'।
**मङर** दे० 'मंगर'।
**मङरइल** *पु०* मगरैल।
**मङरा** दे० 'मंगरा'।
**मङल** दे० 'मंगल'।
**मङली** *स्त्री०* दे० 'मंगली'।
**मङावल** दे० 'मंगावल'।
**मङुरी** दे० 'मंगुरी'।
**मच-मच** *पु०* दबाव पड़ने पर उत्पन्न शब्द; जूते की आवाज।
**मचमचवा** *पु०* एक प्रकार की घास, जिस पर चलने से मच-मच की ध्वनि निकलती हो।
**मचमचाइल** *अक०* बोझ पड़ने से मच-मच का शब्द करना।
**मचर-मचर** *पु०* आवाज (जूते की)।
**मचल** *सक०* धूम-धाम के साथ किसी काम को आरम्भ करना।
**मचवा** पु० बड़ी खटिया।
**मचान** *पु०* खेतों की रखवाली या शिकार के लिए बाँस आदि का बना ऊँचा मंच।
**मचामच** *पु०* मच-मच की आवाज।
**मचावल** *सक०* मचल का प्रेरणार्थक रूप।
**मचिया** *स्त्री०* [सं० मंच:] बैठने के लिए छोटी खाट।
**मचोला** *पु०* छोटी खाट।
**मच्छर** *पु०* एक छोटा कीड़ा, जिसके काटने से जलन पैदा होती है, मच्छर।
**मछर-खउका** *पु०* मछली खाने वाला।
**मछरहट्टा** *पु०* मछली का बाजार।
**मछराइन** *स्त्री०* जिससे मछली की गन्ध आती हो।
**मछराह** *पु०* *वि०* वह बर्तन, जिसमें मछली बनाई जाती हो।
**मछरी** *स्त्री०* [सं० मत्स्य:] मछली, मीन। *उदा०* 'मछरी के अगोरा बिलाई'।
**मछहर** *पु०* किसी जलाशय में बड़े पैमाने पर मछली पकड़ने का काम।
**मछिन्दरनाथ** *पु०* गोरखनाथ के गुरु; मत्स्येन्द्रनाथ।
**मछुआ** *पु०* मछली मारने वाली एक जाति मल्लाह।
**मछैता** *पु०* पोस्ते के खेत में उगनेवाली एक घास।
**मछोदरी** *स्त्री०* राजा शान्तनु की स्त्री और व्यास की माता, मत्स्योदरी।
**मजगर** *वि०* बढ़िया, स्वादिष्ट, अच्छा।
**मजगूत** दे० 'मजबूत'।
**मजदूर** *पु०* कल-कारखाने या खेत में काम करके मजदूरी पाने वाला।
**मजदूरी** *स्त्री०* [फा०] शरीरश्रम, मेहनत, मजदूरी का पेशा।
**मजनू** *वि०* [अ०] पागल, बावला; आशिक।
**मजधार** दे० 'मझधार'।
**मजबूत** *वि०* बलिष्ठ, सबल, पुष्ट।
**मजबूर** *वि०* [अ०] विवश, लाचार।
**मजबूरी** *स्त्री०* विवशता, लाचारी।
**मजमा** *पु०* [अ०] जमाव, भीड़।
**मजमून** *पु०* [अ०] लेखादि का भाव; निबन्ध; वर्ण्य विषय।
**मजलिस** *स्त्री०* सभा।
**मजहब** *स्त्री०* धर्म, सम्प्रदाय।
**मजा** *स्त्री०* स्वाद, सुख, आनन्द; आराम; चस्का, लुत्फ। *उदा०* 'मजा मारे गाजी मिया मार खाए डफाली'।
**मजाक** *स्त्री०* दिल्लगी, ठट्ठा, हँसी, उपहास।
**मजाकिया** *पु०* मजाक करने में चतुर।
**मजार** [अ०] मजार, समाधि, कब्र।

**मजाल** *पु०* हिम्मत, ताकत।
**मजिस्ट्रेट** *पु०* [अं०] मुकदमा सुनने और शासन-प्रबन्ध का काम करने वाला अफसर।
**मजिस्ट्रेटी** *स्त्री०* मजिस्ट्रेट की अदालत।
**मजीठ** *पु०* एक पौधा, जिससे लाल रंग निकलता है।
**मजीठा** *पु०* लाल रंग का जलपक्षी।
**मजीठी** *स्त्री० वि०* मजीठ-सा गहरा लाल रंग।
**मजीरा** *पु०* लोहे या पीतल का कटोरीनुमा बाजा।
**मजूर** *पु०* मजदूर।
**मजूरा** *पु०* मजदूर, कुली।
**मझधार** *पु०* नदी का मध्य भाग; मध्य धारा; मजधार।
**मझरिया** *पु०* नदी से घिरे गाँव के लिए प्रयुक्त नाम।
**मझार** *पु०* बीच में; माँझा।
**मझिला** *वि० पु०* बीच वाला, (भाई, बेटा)।
**मझोल** *वि०* [सं० मध्य] न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा; बीच की आकृति का।
**मटकल** *अक०* नखरे से चलना।
**मटका** *पु०* मिट्टी का बड़ा घड़ा; एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
**मटका-मटकी** *स्त्री०* एक-दूसरे को आँख से इशारा करने का कार्य; आँख के किनारे पर बिन्दी का गोदना।
**मटकावल** *सक०* आँख या मुँह हिलाकर कुछ संकेत करना।
**मटकी** *स्त्री०* आँख से संकेत, आँख मारने की क्रिया। *उदा०* 'बुरबक रसिया, अन्हार घर में मटकी'।
**मटकोड़** *पु०* विवाहादि के अवसर पर स्त्रियों द्वारा मिट्टी कोड़कर लाने की एक विधि।
**मटकोड़ा** *पु०* वह गढ़ा, जो घर लीपने के लिए मिट्टी कोड़ने से बनता है।
**मटकौअल** *स्त्री०* मटकाने का कार्य।
**मटर** *पु०* दलहन, द्विदल अन्न। **-गश्त** *पु०* टहलना। **-गश्ती** *स्त्री०* मटरगस्त। **-चूड़ा** *पु०* घुघुनी।
**मटरदाना** *पु०* गोल दाना वाला एक प्रकार का हार।
**मटरमाला** *पु०* गले का एक गहना।
**मटसन** *वि०* जिसमें मिट्टी मिली हो ऐसा अन्न।
**मटिया** *वि०* मिट्टी के रंग का, मिट्टी से उत्पन्न।
**मटिया तेल** *पु०* मिट्टी से प्राप्त होने वाला तेल, किरासन।
**मटिआर** *वि०* जिस खेत की मिट्टी कड़ी हो, मटियार।
**मटिआवल** *सक०* मिट्टी लगाकर मलना, मिट्टी से ढँकना।
**मटिकोड़** *दे०* 'मटकोड़'।
**मटिगर** *वि०* मिट्टीयुक्त।
**मटुक** *पु०* मुकुट। यज्ञादि में प्रयुक्त कलश के ऊपर रखा जाने वाला एक प्रकार का मिट्टी का पात्र।
**मटुकी** *स्त्री०* दूध-दही रखने का मिट्टी का पात्र।
**मठ** *पु०* [सं० मठः] साधुओं का निवास-स्थान, साधुओं के रहने का घर।
**मठरी** *स्त्री०* गेहूँ के आटे का घी में सना खाद्य-पदार्थ।
**मठा** *पु०* मट्ठा। *उदा०* 'मठा घोटाय ना पीठा धकेल'।
**मड़ई** *स्त्री०* झोपड़ी, मड़इया।
**मड़वा** *पु०* शुभकार्य के सम्पादन के लिए बना मण्डप; एक मोटा अनाज।

**मड़सटका** *पु०* माँड़युक्त भात।
**मड़िआह** *वि०* माँड़ लगा हुआ।
**मड़ुआ** *पु०* छोटे दाने वाला एक अनाज। *उदा०* 'मड़ुआ के रोटी पर दुधही खीर'।
**मड़ैया** दे० 'मड़ई'।
**मड़ोर** *पु०* ऐंठन, शूल, (पेट का)।
**मड़ोरल** *अक०* पेट की ऐंठन या शूल होना, ऐंठना, ममोरल।
**मढ़** *पु०* मठ। *वि०* जो एक जगह बैठ जाने पर वहाँ से हटना नहीं चाहता।
**मढ़ल** *सक०* [सं० मण्डनं] मढ़ना; थोपना; गहने में नग बैठाना।
**मढ़वावल** *सक०* मढ़ने का काम कराना।
**मढ़ाई** *स्त्री०* मढ़ने का काम।
**मढ़ी** *स्त्री०* छोटा मठ, कुटी।
**मढेरल** *सक०* बिना कुछ बोले टाल-मटोल करना, अनसुनी करना, आनाकानी करना।
**मतंग** *पु०* [सं०] हाथी; बादल।
**मतंगी** *पु०* [सं०] हाथी का सवार।
**मत** *पु०* मत, राय, सलाह, विचार; धर्म पंथ; *अव्य०* न, नहीं। **-दान** *पु०* मत देने का काम। **-भेद** *पु०* मत भिन्नता।
**मतखाह** *वि०* गमगीन, उदास।
**मतधिनू** *वि०* विवेकहीन, बुद्धिहीन।
**मतभरम** *वि०* विक्षिप्त, बेसुध।
**मतलब** *पु०* अर्थ, अभिप्राय, सम्बन्ध, लगाव।
**मतलबी** *वि०* स्वार्थी।
**मतवाला** *वि०* [सं० मत्तः] मदमस्त, पागल; नशे में चूर।
**मताय** *पु०* वैभव, सम्पत्ति, 'माल-मताय'।
**मतार** *पु०* मोरा।
**मतारी** *स्त्री०* माता, जननी, माँ।
**मतावल** *अक०* नशीला पदार्थ खिलाकर मदमस्त बनाना।
**मति** *स्त्री०* बुद्धि, विवेक।
**मतिन** *अव्य०* सदृश, समान, की तरह।
**मतिसरी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।
**मतौना** *वि०* मताने वाला; नशा करने वाला।
**मथझँका** *पु०* विवाहोपरान्त की एक विधि, जिसमें वर का पिता कन्या के सिर को ढँकता है, मथढँका।
**मथझक्का** दे० 'मथझँका'।
**मथढँका** दे० 'मतझँका'।
**मथनी** *स्त्री०* शिखर, उच्चतम भाग; दही मथने का काठ का दण्ड; रही।
**मथबन्हनी** *स्त्री०* एक प्रकार की छोटी चिड़िया, जिसके सिर पर कलँगी रहती है।
**मथबोई** *स्त्री०* बोझा बाँधकर सिर पर ढोने का काम।
**मथल** *सक०* [सं० मथनं] दूध या दही को बार-बार हाथ या रही से चलाकर घृत या मक्खन निकालना।
**मथहरा** *पु०* ऊँचाई की ओर।
**मथार** *पु०* पौधे के ऊपर का भाग; नदी का वह भाग, जहाँ से धारा टूट जाती है।
**मथुरा** *पु०* [सं० मथुरा] यमुना के किनारे कृष्ण की जन्मभूमि। *उदा०* 'मथुरा के बेटी गोकुलो के गाय, करम फूटे त अनते जाय'।
**मथेला** *पु०* शीर्षक, किवाड़ के ऊपरी भाग में लगा काठ।
**मद** *पु०* खाता, विभाग; नशा।
**मदत** *स्त्री०* सहायता, सहारा।
**मदतगार** *वि०* सहायक, सहायता करने वाला। मददगार।
**मदनोना** *वि०* मात्रा से कम नमक वाला।
**मदरसा** *पु०* उर्दू, अरबी, फारसी की पढ़ाई वाला प्रारम्भिक विद्यालय।

**मदार** *पु०* अकवन, आक, मन्दार।

**मदरा** *पु०* गोलाकार काठ, जिसमें चरखा बैठाया जाता है।

**मदारी** *पु०* बन्दर, भालू नचाकर पैसा कमाने वाली जाति।

**मदेसिया** *वि०* मध्यदेश का निवासी, मध्य, देशीय।

**मध** *वि०* बीच, उपयुक्त खेती का समय; मधु, शहद।

**मधछोड़वा** *पु०* मधु के छत्ते से मध छुड़ाने वाला।

**मधमाछी** *स्त्री०* शहद की मक्खी।

**मधान** *पु०* मुख्य दिन, शास्त्र द्वारा निश्चित दिन।

**मधिम** *वि०* हल्का, धीमा।

**मधु** *पु०* मदिरा, मधुआ।

**मधुआ** *पु०* आम की मंजरी पर लगने वाला एक रोग।

**मधुआइल** *अक०* फल का पकने पर खूब मीठा होना; गमगीन होना।

**मधुकरी** *पु०* भ्रमरी, लिट्टी, बाटी; भिक्षा।

**मधुबन** *पु०* ब्रजदेश का एक वन।

**मधुरी** *स्त्री० वि०* मीठा, हलका। *उदा०* 'एक छाक तड़ियाऽ पिआव भइया पसिया लागल बाड़े मधुरी पिआस।'

**मधे** *क्रि०वि०* हिसाब में, खाते में; बीच में।

**मधेसी** *स्त्री०* चम्पारण की भोजपुरी के लिए डॉ० ग्रियर्सन द्वारा प्रयुक्त नाम।

**मन** *पु०* [सं०] चालीस सेर का वजन; चित; इच्छा; जी। **-कामना** *स्त्री०* मनोकामना। **-गढंत** *वि०* कल्पित। **-चला** *वि०* मनमौजी। **-चाहा** *वि०* मनका चाहा हुआ। **-चीता** *वि०* सोचा हुआ, मनभाया। **-भावन** *वि०* जो मन को प्रिय लगे। **-मति** *वि०* स्वच्छन्द। **-माना** *वि०* जो चाहे। **-मानी** *स्त्री०* मनमाना काम। **-मुटाव** *पु०* वैमनस्य। **-मोहन** *वि०* मन को मोहने वाला। **-मौजी** *वि०* स्वच्छन्द। **-रंजन** *वि०* मनोरंजन। **-हर** *वि०* मनोहर। **-अटकल** *मुहा०* किसी पर दिल आना। **-कइल** *मुहा०* जी चाहना। **-के लड्डू खाइल** *महा०* खाली पुलाव पकाना। **-फटल** *मुहा०* विरक्ति होना। **-भरल** *मुहा०* अघाना। *उदा०* 'मन चंगा तऽ कठउती में गंगा'।

**मनई** *पु०* मनुष्य, मानव।

**मनउनी** *स्त्री०* मनोकामना पूरी होने पर किसी देवता-देवी को पूजा देने का निश्चय।

**मनका** *पु०* माला का दाना।

**मनकोढ़ी** *पु०* काम के समय बैठ जाने वाला बैल।

**मनखप** *पु०* खेत की मालगुजारी अन्न में लेने की स्थिति।

**मनगँवे** *क्रि०वि०* खुशी मन से।

**मनगर** *पु० वि०* प्रसन्नचित्त मनपसन्द।

**मनगो** *पु०* एक प्रकार की ईख।

**मनटुट्टू** *पु० वि०* मुलायम तबीयत का आदमी।

**मनता** *पु०* मनौती।

**मनना** *पु०* भलीभाँति पसन्द की स्थिति; मन में जँच जाने की स्थिति।

**मनफेरवट** *पु०* मन को बदलने के लिए भोजन या मनोरंजन के साधन में परिवर्तन।

**मनमुखी** *पु० वि०* मनमौजी, स्वच्छन्द विचार का।

**मनरखनी** *स्त्री०* दूसरों के मन की बात मान लेने वाली स्त्री।

**मनलग्गू** *पु० वि०* जिसमें मन लगे; मनपसन्द।

**मनवाँ** *पु०* एक प्रकार का कपास।
**मनवावल** *सक०* दूसरे से मनवाने के लिए प्रयास कराना।
**मनसरा** *पु०* एक प्रकार का लाल रंग का मोटा धान।
**मनसरी** *स्त्री०* लाल रंग वाला मोटा धान।
**मनसा** *पु०* मन, इच्छा, अभिप्राय; एक देवी विशेष। *उदा०* 'मनसा डाइन संका भूत'।
**मनसायन** *पु० वि०* मनोरंजक; गुलजार।
**मनसिफ** *पु०* न्यायकर्ता; मुनसिफी के मुकदमों का फैसला करने वाला।
**मनसी** *पु०* लिखनेवाला, मुहर्रिर; हिसाब-किताब रखने वाला मुंशी।
**मनसूबा** *पु०* इरादा, विचार; हिम्मत।
**मनहा** *पु०* चालिस सेर के वजन का बटखरा।
**मनहूस** *पु० वि०* भीतर-भीतर उदास रहने वाला, बुरा।
**मना** *वि०* निषिद्ध, वर्जित।
**मनावल** *पु०* रूठे हुए व्यक्ति को प्रसन्न करने का काम।
**मनाही** *स्त्री०* निषेध, रोक।
**मनिआर** *पु०* मणिवाला सर्प; मणिधर।
**मनिका** *स्त्री०* गर्दन के पीछे की रीढ़ की जुड़ी हड्डी।
**मनियर** *पु०* जलाशय, जो नदी के आकार-सा लगता हो; मन।
**मनिहारी** *स्त्री०* श्रृंगार का सामान बेचनेवाली।
**मनी** *पु०* वजन; एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, रत्न; रुपया-पैसा। **-आर्डर** *पु०* धनादेश। **-बैग** *पु०* बड़ा बटुआ।
**मनु** *पु०* ब्रह्मा के पुत्रों में से एक, जिनसे मनुष्यों की सृष्टि मानी जाती है।
**मनुआ** *पु०* मन, मनुष्य; बकरी के बच्चे के लिए प्रेमबोधक शब्द।
**मनुस** *पु०* आदमी, मनुष्य। *उदा०* 'मनुस के छाँछ ना बिलाई के मलाई'।
**मनुसदेव** *पु०* प्रेतों की एक योनि।
**मन्हुआइल** *अक०* उदास होकर मौन-सा रहना।
**मने मने** *अव्य०* चुपचाप, मन ही मन।
**मनेजर** *पु०* जमींदारी या कारखाने का काम देखने वाला बड़ा अधिकारी।
**मनोरथ** *पु०* मनोकामना।
**मनोविकार** *पु०* मन का आवेग।
**मनोविज्ञान** *पु०* मानवशास्त्र।
**मनोविनोद** *पु०* मनोरंजन।
**मनोहारी** *पु० वि०* एकमन को वश में करने वाला।
**मनौती** *स्त्री०* मानता, मन्नत।
**ममत** *पु०* अपनापन, प्रेम, ममत्व।
**ममरिआइल** *अक०* पपड़ी पड़ना।
**ममरी** *स्त्री०* हल्की वर्षा के बाद जमीन पर पड़ी पपड़ी।
**ममसल** *अक०* अधिक नमी के कारण अनाजों का इतना सड़ जाना कि मीसने से नष्ट हो जाए।
**ममहर** *पु०* मामा का घर, मामा का निवास-ग्राम।
**ममारखी** *स्त्री०* पुत्रजन्म की सूचना, बधावा।
**ममिआउत** *वि०* ममेरा।
**ममिला** *पु०* दे० 'मामला'।
**ममेरा** *पु० वि०* मामा से सम्बन्धित।
**ममोर** *पु०* शिकन।
**ममोरल** *सक०* ऐंठना।
**ममोराइल** *वि०* शिकनदार।
**मय** *अव्य०* साथ, समेत, सब।
**मयगर** *पु० वि०* दयालु, दयावान; गम्भीर गति से चलने वाला मस्त हाथी। *उदा०* 'मयगर चढ़े तिलक ना करे'।

**मयभा** *स्त्री०* सौतेली।
**मयभाउत** *वि०* सौतेली माँ से उत्पन्न।
**मयार** *वि०* दयालु, ममतामयी; ऐसा खेत, जिसमें नमी बनी रहती है।
**मये** *वि०* कुल, सब, सम्पूर्ण।
**मर** *अव्य०* विस्मयादिबोधक।
**मरउअत** *अक०* लिहाज, रियायत।
**मरउटी** *स्त्री०* युद्ध में मारे गए व्यक्तियों के परिवार को दी गई कर-मुक्त भूमि या राशि।
**मरउअती** *वि०* जो अपनी सलज्जता के कारण अपकार्य करने पर भी बाध्य हो जाता है।
**मरकट** *वि०* गन्दा।
**मरकन** *पु०* पेट का अधपचा अन्न, जो मलरूप में निकलता हो।
**मरकल** *अक०* किंचित् सूखने से पत्तों का मुलायम होना; मउरल।
**मरकही** *वि०* मारने वाली गाय।
**मरकी** *स्त्री०* महामारी, मृत्यु।
**मरखाह** *वि०* मारने वाला पशु।
**मरगंग** *स्त्री०* गंगा की धारा।
**मरघट** *पु०* मुर्दे फूँकने की जगह, श्मशान।
**मरचा** *पु०* एक तीता फल, लाल मिर्चा; एक सुगन्धित धान, जिसका चूड़ा प्रसिद्ध है।
**मरज** *स्त्री०* बीमारी, पीब।
**मरजा** *पु०* घाटा।
**मरजाद** *पु०* [सं० मर्यादा] प्रतिष्ठा, बारात के दूसरे दिन ठहरने की रस्म।
**मरजादी** *स्त्री०* मरजाद के दिन बाजे वाले को दिया गया ईनाम।
**मरजी** *स्त्री०* कृपा; इच्छा; रुचि। *उदा०* 'मरजी गोविंद के केरांव फरे भेली'।
**मरतबा** *पु०* बार, दफा।
**मरता** *वि०* मरता हुआ; दुर्बल।
**मरतुलाह** *पु०* *वि०* रुग्ण, अत्यन्त दुर्बल।
**मरथल** *वि०* मरणासन्न।
**मरद** *पु०* मर्द, बहादुर। *उदा०* 'मरद का आ बरध का पानी, के मोल हऽ'।
**मरदकित्ता** *पु०* पुरुषों हेतु बैठकखाना।
**मरद बच्चा** *पु०* पुरुष जाति।
**मरदवा, मरदे** *पु०* पुरुष के लिए सम्बोधन में किया गया व्यवहार।
**मरदल** *सक०* कसकर मलना, मसलना।
**मरदनवा** *पु०* *वि०* नरपक्षी।
**मरदा** *पु०* मर्द के लिए उपेक्षित-प्रयोग।
**मरदाना** *वि०* पुरुषोचित, वीरोचित।
**मरदानी** *स्त्री०* पुरुषों की धोती।
**मरदुआ** *पु०* मर्द जाति; स्त्रियों के द्वारा पुरुष के लिए प्रयुक्त शब्द।
**मरदूमी** *स्त्री०* बहादुरी।
**मरदे** *पु०* उपेक्षा आदि के अर्थ में सम्बोधन का शब्द।
**मरधर** *स्त्री०* नदी की सूखी धारा।
**मरन** *पु०* [सं० मरणम्] मृत्यु, मौत। *उदा०* 'मरन न जाने बेर कुबेर'।
**मरनाछ** *स्त्री०* मृतक-सी बनावटी स्थिति, काछल।
**मरम** *पु०* [सं० मर्मन्] भेद, रहस्य; दिल की गुप्त बात।
**मरमर** *पु०* काठ या पेड़ आदि के टूटने से उत्पन्न शब्द; पत्तियों के हिलने की आवाज।
**मरमराइल** *सक०* डाल के टूटने पर शब्द होना।
**मरमूढ** *स्त्री०* मूर्च्छा की बीमारी, जिसमें मुट्ठी बँध जाती हो। मिरगी।
**मरमोह** *पु०* गाढ़ी ममता।
**मरम्मत** *स्त्री०* टूटे-फूटे भाग को दुरुस्त करने का कार्य, दुरुस्ती।
**मरल** *अक०* शरीर से जीवात्मा का निकल जाना, मरना; जाना। *उदा०* 'मरल गाय बाभन के दान'।

**मरवावल** *सक०* किसी को मारने के लिए प्रेरित करना।
**मरसा** *पु०* मरुसा, एक प्रकार का साग।
**मरसोन** *वि०* मारा जाना, नष्ट, बर्बाद।
**मराछ** *स्त्री०* *वि०* वह स्त्री, जिसके बच्चे जन्म लेकर मर जाते हैं।
**मराता** *पु०* सूखा पौधा।
**मरावल** *अक०* सम्भोग करना।
**मरिच** *पु०* गोलमिर्च, काली मिर्च।
**मरिचा** *पु०* दे० 'मरचा'।
**मरियल** *वि०* दुबला-पतला, कमजोर।
**मरिया** *पु०* हथौड़ी।
**मरी** *स्त्री०* मरा प्राणी, मुआर।
**मरीज** *पु०* बीमार, रोगी।
**मरुअइनी** *स्त्री०* रब्बी मौसम की एक प्रकार की घास।
**मरुआ** *पु०* एक प्रकार का सुगन्धित पौधा, जो देवी को चढ़ता है।
**मरुआइल** *अक०* मुरझाना।
**मरुसा** *पु०* दे० 'मरसा'।
**मरेआ** *पु०* मजदूरों की पंक्ति का चहेता मजदूर।
**मरेन** *पु०* *वि०* जो सूखकर बर्बाद हो गया हो।
**मरेही** *स्त्री०* सूखे के कारण पतला और कमजोर पौधा।
**मरोड़** *पु०* आँव।
**मरोरल** *सक०* ऐंठना।
**मर्क** *पु०* [सं०] देह; प्राण; बन्दर।
**मर्कट** *पु०* [सं०] बन्दर।
**मर्चेंट** *पु०* [अं०] व्यापारी।
**मर्ज** *पु०* [अ०] व्याधि, रोग।
**मर्जी** *स्त्री०* [अ०] दे० 'मरजी'।
**मर्द** *पु०* [सं०] मर्दन [फा०] पुरुष, नर, मनुष्य। **-आदमी** *पु०* बहादुर, मरदाना। **-बच्चा** *पु०* वीर, बहादुर। **-बाज** *वि०* स्त्री० पुंश्चली।
**मर्दाना** *वि०* [फा०] पुरुष सम्बन्धी।
**मर्म** *पु०* [सं] रहस्य, तत्त्व, गूढ़ार्थ।
**मलंग** *पु०* मुसलमानों का एक सन्त; नाव का अगला हिस्सा।
**मल** *पु०* आँव; भूमिहार और राजपूतों की उपाधि; मैल; विष्ठा; विकार।
**मलकाउन** *पु०* पौधाविशेष, जिसका तेल अखाद्य होता है।
**मलकारी** *स्त्री०* गुड़िया।
**मलकावल** *सक०* पलक उठाते और गिराते रहना; चलाते रहना।
**मलकिनी** *स्त्री०* मालिक की पत्नी; स्वामिनी।
**मलकोका** *पु०* कुमुदनी।
**मलगजरी** *स्त्री०* सारवस्तु; बिना परिश्रम के आराम उठाने का भाव; योनि (देशज शब्द)।
**मलगोबा** *पु०* दही मिलाकर तैयार किया गया भोज्य-पदार्थ।
**मलछल** *अक०* कसक या व्यग्रता का अनुभव करना।
**मलछहूँ** *वि०* कुछ मलीन, मैला-सा।
**मलझाउन** दे० 'मलकाउन'।
**मलदहवा** *पु०* एक प्रकार का बड़ा और स्वादिष्ट आम, मालदह।
**मलपट** *पु०* कनपटी, कान तथा गाल के पास का स्थान।
**मलमल** *पु०* [सं० मलमल्लक:] महीन सूती वस्त्र।
**मलमास** *पु०* प्रत्येक तीसरे वर्ष में पड़ने वाला अधिक मास।
**मलय** *पु०* [सं०] मलाबार प्रदेश; उद्यान; नन्दन-कानन। **-गिरि** *पु०* मलय पर्वत। **-ज** *पु०* चन्दन।
**मलल** *सक०* [सं० मर्दनं] हाथ से रगड़ना; मालिश करना; मसलना।

**मलवावल** *सक०* दूसरे से रगड़वाना या मसलवाना।

**मलहम** *स्त्री०* घाव या दर्द में मलने की दवा, लेप।

**मलहोरिन** *स्त्री०* मालिन।

**मलाई** *स्त्री०* दूध की साढ़ी, बालाई; मूल-तत्त्व।

**मलाका** *स्त्री०* [सं०] कामवती स्त्री; दूती; हथिनी।

**मलामत** *स्त्री०* गन्दगी।

**मलार** *पु०* मल्हार राग-विशेष, जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

**मलाल** *पु०* दु:ख, रंज।

**मलाह** *पु०* मछली मारने वाली एक जाति, केवट।

**मलिआ** *स्त्री०* काठ या काँच का बना पात्र।

**मलिआवल** *सक०* मिट्टी को हेंगा चलाकर समतल करना।

**मलिक** *पु०* गान-विद्या में प्रवीण; गायक की उपाधि।

**मलिकई** *स्त्री०* मालिक का काम या अधिकार।

**मलिकाँव** *पु०* स्वामित्व।

**मलिखम** *पु०* धरन पर लगा खम्भ, जिस पर लरही रहती है, मलिकथम।

**मलीदा** *पु०* एक प्रकार की सुस्वादु पूड़ी; चूरमा।

**मलीन** *वि०* गन्दा, दूषित।

**मलुआइल** *अक०* उदास रहना।

**मलू** *पु०* बन्दर।

**मलूक** *पु०* एक चिड़िया; एक कीड़ा। *वि०* सुन्दर। **-दास** *पु०* एक सन्त कवि, जिनकी पंक्ति 'दास मलूक कह गए सबके दाता राम' बहुचर्चित है।

**मलेछ** *पु०* कृपण या गन्दा व्यक्ति; एक अदृश्य हानिकारक शक्ति।

**मलेयागिर** *पु०* एक प्रकार के चन्दन की सुगन्धित लकड़ी।

**मलेरिया** *पु०* जड़ैया, बुखार।

**मलेहरा** *पु०* एक प्रकार का पान।

**मलैया** *पु०* जाड़े में दूध को रातभर ओस में रखने के बाद उसमें चीनी, केशर, इलायची मिलाकर मथने से निकला फेन।

**मलोला** *पु०* अरमान; दु:ख।

**मल्ल** *पु०* [सं०] पहलवान। *वि०* पट्ठा, बलवान। **-भूमि** *स्त्री०* अखाड़ा। **-विद्या** *स्त्री०* कुश्ती। **-शाला** *स्त्री०* अखाड़ा।

**मल्लाह** *पु०* [अ०] केवट, माझी।

**मल्लाही** *वि०* मल्लाह सम्बन्धी।

**मवक्किल** *पु०* मुकदमे में वकील रखनेवाला व्यक्ति।

**मवस्सर** *वि०* उपलब्ध, प्राप्य।

**मवाद** *पु०* [सं०] पीब।

**मवाली** *पु०* दक्षिण भारत की अर्द्धसभ्य उत्पाति जाति।

**मवेसी** *पु०* ढोर, डंगर; चौपाया।

**मस** *पु०* मच्छर, मशक।

**मसक** *पु०* पानी रखने का थैला; चमड़े के थैले से बना एक बाजा।

**मसकल** *अक०* तनाव या दबाव से थोड़ा फट जाना।

**मसकरी** *स्त्री०* मजाक, दिल्लगी, मसखरी।

**मसका** *पु०* चबेना का फाँका।

**मसकावल** *सक०* दबाकर या खींचकर किंचित् फाड़ देना।

**मसकिल** *पु०* कठिन, दुष्कर।

**मसजिद** *पु०* मुसलमानों का प्रार्थना-गृह, जहाँ नमाज पढ़ी जाती है। *उदा०* 'मसजिद में दिया बारे के पहिले घर में दीया बारऽ'।

**मसनद** *पु०* बड़ा या मोटा तकिया, जिस पर ओठँगा जाता है।
**मसनिया** *पु०* डोम, श्मशान में रहने वाला।
**मसरफ** *पु०* काम या व्यवहार में आने की स्थिति, उपयोग।
**मसलंद** दे० 'मसनद'।
**मसल** *स्त्री०* [अ०] कहावत, लोकोक्ति, मिसाल।
**मसलभाभड़ी** *स्त्री०* चकमा देने के लिए कही गई प्रपंचपूर्ण बात।
**मसबरा** *पु०* राय, सलाह, सम्मति।
**मसरी** *स्त्री०* मुकीले ठाट वाली (भैंस)।
**मसहरी** *स्त्री०* मच्छरों से बचाव के लिए जालीदार कपड़े का घेरा, मच्छरदानी।
**मसहूर** *वि०* प्रसिद्ध, विख्यात।
**मसाढ़** *स्त्री०* मछली-विशेष।
**मसान** *पु०* [सं० श्मशानं] मरघट, श्मशान।
**मसाल** *पु०* एक बहुत बड़ी बत्ती, जो डण्डे में लगी रहती है; मशाल।
**मसाला** *पु०* तरकारी में डाले जाने वाली हल्दी, मिर्च आदि; रासायनिक खाद्य-पदार्थ।
**मसाह** *स्त्री०* पानीभरे खेत में रोपनी के लिए की गई जोत।
**मसाहल** *सक०* रोपनी के पूर्व जोतकर रखा गया पानीभरा खेत।
**मसि** *स्त्री०* [सं०] स्याही, रोशनाई।
**मसिहान** *स्त्री०* दावात।
**मसी** *स्त्री०* स्याही; एक पशु-खाद्य घास।
**मसीन** *स्त्री०* यन्त्र, कल।
**मसीनरी** *स्त्री०* [अं०] मशीनें, यंत्र-समष्टि।
**मस्ते** *पु०* अनुस्वार के लिए कैथी लिपि में प्रयुक्त शब्द।
**मसुरिया** *पु०* मकई जैसे पौधे में गुच्छेदार दानेवाला अन्न।
**मसूरी** *स्त्री०* एक प्रकार की दलहन, मसूर।
**मसूल** *पु०* किराया भाड़ा।
**मसोरल** *अक०* जोर से मीसना, मसलना।
**मसोसल** *अक०* दुःख के वेग को रोककर रखने का भाव।
**मसौदा** *पु०* लिखकर दिया गया प्रारूप।
**मस्ती** *स्त्री०* [सं० मत्तः] अत्यन्त प्रसन्नता का भाव।
**महँगा** *वि०* सामान्य से अधिक मूल्यवान, महँगा।
**महँगी** *पु०* महँगी की स्थिति या स्वभाव।
**महंथ** *पु०* [सं० महत्] साधुओं के किसी समूह का अधिष्ठाता। मठ का स्वामी।
**महंथी** *सं०* महन्थ का भाव।
**मह** *स्त्री०* धरती।
**महक** *स्त्री०* सुगन्ध।
**महकमा** *पु०* [अ०] विभाग।
**महकल** *अक०* सुगन्ध फैलना।
**महकार** *पु०* ईख के कोल्हू के निकट बनाई गई प्रतिमा। *कहा०* 'ना ऊँख रोपब, ना महकार के पूजब'।
**महकावल** *सक०* सुँघवाना।
**महङ** दे० 'महँगा'।
**महजड़ा** *पु०* झमेलापूर्ण बातचीत।
**महटिआवल** *सक०* काम करने में टाल-मटोल करना।
**महतारी** *स्त्री०* माता, महतारी।
**महतीन** *स्त्री०* मालकिन।
**महतो** *पु०* नुनिया, कोइरी आदि जातियों की उपाधि; रैयतों का प्रधान।
**महथा** *पु०* खत्रियों की उपाधि।
**महदेवा** *पु०* गाँठ, जिसमें रस्सी बाँधी जाती है; बैल।
**महमह** *क्रि०वि०* खूब सुगन्ध।
**महमूली** *वि०* साधारण।

**महरा** *पु०* चमारों की उपाधि; मजदूरों का मेठ।

**महराज** *वि०* गुरु, ब्राह्मणों, राजा या पूज्य लोगों के लिए सम्बोधन शब्द।

**महराजा** *पु०* राजाओं का राजा।

**महरानी** *स्त्री०* महाराजा की पत्नी, महारानी।

**महरी** *स्त्री०* ग्वालिन; एक चिड़िया।

**महल** *सक०* दही को मथनी से तोड़ना या मथना, बिलोना।

**महला** *वि०* मंजिलवाला (मकान)।

**महल्ला** *पु०* शहर या गाँव का छोटा खण्ड, जिसमें बहुत से घर आदि हों।

**महा** *वि०* बड़ा, बहुत, 'महत्' का समासगत रूप। **-कवि** *पु०* बहुत बड़ा कवि; महाकाव्य का रचयिता। **-काय** *वि०* भारी भरकम शरीरवाला। **-काल** *पु०* शिव का संहारकारी रूप, रुद्र। **-काली** *स्त्री०* दुर्गा। **-काव्य** *पु०* बड़ा काव्य, सर्गबद्ध विस्तृत आयाम वाला काव्य। **-कुल** *पु०* उच्च कुल। **-गुरु** *पु०* श्रेष्ठ गुरुजन। **-गौरी** *स्त्री०* दुर्गा। **-जन** *पु०* श्रेष्ठजन। **-जनी** *स्त्री०* महाजन का पेशा। **-जल** *पु०* समुद्र। **-ज्ञानी** *वि०* बहुत बड़ा ज्ञानी। **-ज्योति** *पु०* सूर्य; शिव। **-दंत** *पु०* शिव; बड़े दाँतों वाला हाथी। **-देव** *पु०* शिव। **-देवी** *स्त्री०* दुर्गा; पार्वती। **-गर** *पु०* बड़ा शहर। **-नट** *पु०* शिव। **-नवमी** *स्त्री०* आश्विन शुक्ल नवमी। **-पथ** *पु०* राजपथ। **-पातर** *पु०* महाब्राह्मण। **-फल** *पु०* बेल। **-भारत** *पु०* व्यास-रचित इतिहास-ग्रन्थ। **-मति** *वि०* अति-बुद्धिमान। **-मना** *वि०* उदारचित्त। **-माई** *स्त्री०* काली देवी। **-मुनि** *पु०* मुनिश्रेष्ठ; व्यास; अगस्त्य; बुद्धदेव। **-मोहा** *स्त्री०* दुर्गा। **-लौह** *पु०* चुम्बक। **-वाक्य** *पु०* महदर्थ प्रकाशक 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा ब्रह्म' आदि उपनिषद्-वाक्य। **-विद्यालय** उच्च शिक्षा देने वाला विद्यालय। **-सुख** *पु०* श्रृंगार, रति। **-हास** *पु०* अट्टहास।

**महाई** *स्त्री०* कारखाने में कच्चे माल को पेरने, गलाने का काम; मथने का काम।

**महाउत** *पु०* महावत।

**महाजाल** *पु०* मछली पकड़ने का बड़ा जाल।

**महाजोगिन** *स्त्री०* एक महीन धान।

**महाड़** *पु०* दही मथने का कार्य।

**महातम** *पु०* पुण्य प्रदान की शक्ति, बड़ाई।

**महातमा** दे० 'महात्मा'।

**महात्मा** *पु०* पुण्यात्मा, पवित्रात्मा, साधु।

**महादेवा** *पु०* पालो की एक गाँठ, जिसमें हल जोतते समय बैलों को रस्सी में बाँधा जाता है।

**महादेवी** *स्त्री०* शिवा, दुर्गा।

**महान** *वि०* बड़ा। **-ता** *स्त्री०* महत्ता।

**महानुभाव** *पु०* महाशय।

**महापाप** *पु०* बड़ा भारी पाप, भयंकर दुष्कर्म से लगा पाप।

**महामाया** *स्त्री०* दुर्गा, आदिशक्ति, महामाई।

**महामोद** *पु०* प्रबल, सुगन्ध।

**महाराज** *पु०* राजा, जमींदार; गुरु, ब्राह्मण आदि श्रेष्ठ जनों के लिए सम्बोधन शब्द।

**महावट** *पु०* माघ की वर्षा।

**महावत** *पु०* हाथी हाँकने वाला व्यक्ति।

**महाल** *पु०* विभाग।

**महावर** *पु०* पैर रँगने का लाल रंग, आलता।

**महासे** *पु०* महाशय।

**महाउर** *पु०* मट्ठे में पकाई गई खीर।

**महि** *स्त्री०* [सं०] पृथ्वी। **-देव** *पु०* ब्राह्मण। **-सुर** *पु०* ब्राह्मण।

**महिआ** *पु०* गुड़ बनाने में ईख के रस का मैल।

**महिनवन** *पु०* महीना का अनिश्चयवाचक शब्द।
**महिनवारी** *स्त्री०* रजोधर्म; वेतन; मासिक।
**महिम** *पु०* मित्र, हित, दोस्त, महिम।
**महिमा** *पु०* स्त्री०, महत्त्व, बड़ाई।
**महिया** *पु०* मठजाउर, महाउर।
**मही** *पु०* मथा हुआ दही, मट्ठा, छाछ।
**महीन** *वि०* [सं० महाक्षीण] पतला, बारीक।
**महीना** *पु०* [सं० मासः] दो पक्षों का समूह; तीस दिनों की अवधि।
**महुअर** *वि०* महुए के रंग का। *पु०* महुआ डालकर पकाई गई रोटी।
**महुआ** *पु०* [सं० मधुकः] एक वृक्षविशेष, जिसके फूल से शराब बनती है।
**महुई** *स्त्री०* महुआ, जिसका फूल छोटा होता है; एक प्रकार का पान।
**महूरत** *पु०* लग्न, मुहूर्त।
**महेला** *पु०* मेथी उबालकर तैयार किया गया खाद्य-पदार्थ।
**महोखा** *पु०* एक पक्षी, जो बँसवारी में रहता है। माँ, स्त्री, माता; देवी; जन्म देने वाली। *उदा०* 'माँ के पेट कोंहार के आँवा कोई गोरा कोई काला'।
**माख** *पु०* आन, अमर्ष।
**माँग** *स्त्री०* माँगने की क्रिया; सिर के बाल को दो भागों में बाँटने वाली रेखा। *उदा०* 'माँग खातिर गइली कोखी गँवा अइली'।
**माँगटीका** *स्त्री०* एक आभूषण।
**माँगर** *पु०* छप्पर के ऊपर वाला हिस्सा; मंगल।
**माँगल** *सक०* कोई वस्तु देने के लिए किसी से कहना; याचना; माँगना। *उदा०* 'माँगल हर्रे देवे बहेरा'।
**माँगलिक** *वि०* [सं० माङ्गलिकम्] शिव, शुभ, कल्याण।
**मांगला** *वि०* दे० 'माँगलिक'।
**माँगुर** *पु०* एक प्रकार की मछली।
**माँजल** *सक०* मलकर या रगड़कर साफ करना।
**माँजा** *पु०* कूँची।
**माँझ** *अव्य०* बीच; मध्य।
**मांझ** *पु०* ढेकी में लगे दो खम्भों को जोड़ने वाला लकड़ी का टुकड़ा, मझार।
**माँझिल** *वि०* बीच का, मध्यम।
**माँझी** *पु०* मल्लाह।
**माँड़** *पु०* पकाए हुए चावल का लसदार पानी। *उदा०* 'माँड़ घोटाय ना पीठा ढकेल'।
**मांड़ा** *पु०* एक प्रकार का नेत्र-रोग, जिसमें पुतली पर मोटी सफेद झिल्ली पड़ जाती है, जिससे दृष्टि मन्द पड़ जाती है।
**माँड़ी** *स्त्री०* कपड़े में लगाया गया मांड़ का पानी; कलफ।
**मांड़ो** *पु०* उपनयन संस्कार और विवाह के अवसर पर बना यज्ञ-मण्डप।
**मांय** *अव्य०* बकरी की बोली।
**मांस** *पु०* चमड़ा, चर्बी, रक्त आदि युक्त शरीर का अंश, गोश्त। **-भक्षी** *पु०* मांसाहारी *उदा०* 'मांस के ढेर पर गिध रखवार'।
**माँह** *अव्य०* बीच; मध्य।
**मांहे** *अव्य०* बीच, होकर; तरफ।
**माई** *स्त्री०* माता; माता के समकक्ष या समवयस्क के लिए सम्बोधन शब्द; देवी। *उदा०* 'माई कहे त राजी, बाप के जोरू कहे तऽपाजी'।
**माई-धीया** *यौ०* माता और पुत्री।
**माईराम** *स्त्री०* सधुनी।
**माऊ** *स्त्री०* माता।
**माकल** *अक०* दौड़ना।
**माख** *पु०* अप्रसन्नता, ओप।

**माखन** दे० 'मक्खन'।

**माघ** *पु०* पूस के बाद और फागुन के पूर्व का महीना–माघ। *उदा०* 'माघ के कनिया बाघ'।

**माघा** *पु०* अश्लेषा के बाद का नक्षत्र, मघा। *उदा०* 'माघा गरजे हथिया बरसे'।

**माघी** *स्त्री०* माघ में होने वाली सब्जी; मगही; असगुनी भैंस।

**माङ** दे० 'माँग'।

**माङल** दे० 'माँगल'।

**माछी** *स्त्री०* उड़ने वाला छोटा कीड़ा। *उदा०* 'माछी मारे हुकुम चलावे'।

**माजरा** *पु०* मामला, वृत्तान्त।

**माझिल** *वि०* मध्य वाला, बीच वाला।

**माझी** *पु०* मुसहरों की उपाधि, मल्लाह, केवट।

**माट** *पु०* मिट्टी का बड़ा घड़ा; मिट्टी का ढेर।

**माटा** *स्त्री०* लाल रंग की एक चींटी, जो पेड़ों के पत्तों में रहती है; दीमक।

**माटी** *स्त्री०* मिट्टी; धरती; खेल; शरीर लाश; शारीरिक गठन। *उदा०* 'माटी के देवता चनने में गायब'।

**माटी तेल** *पु०* किरासन।

**माठ** *पु०* कछार।

**माठल** *सक०* टाल-मटोल करना; चौरस करना।

**माठा** *पु०* मथा हुआ और पानीमिश्रित दही, मट्ठा; चाँदी का बाला।

**माड़वारी** *पु०* मारवाड़ का निवासी; राजस्थान का निवासी। *स्त्री०* माड़वारिन।

**माड़ो** *पु०* मण्डप।

**मात** *पु०* माता का संक्षिप्त रूप जैसे मात-पिता; हार, पराजय; शतरंज के खेल में बादशाह का अन्य मोहरों से घिर जाने से आगे खेल नहीं होने की स्थिति।

**मातदिल** *वि०* न अधिक गर्म और न अधिक ठण्डा; समशीतोष्ण।

**मातम** *पु०* [अ०] मृत्यु-शोक; रोना-पीटना, स्याण।

**मातमी** *वि०* मातम सम्बन्धी।

**मातर** *अव्य०* मात्र; इसका प्रयोग समय-बोधक परसर्ग के रूप में होता है जैसे देखते मातर।

**मातरा** *पु०* एक बार में खाई जाने वाली औषधि का परिमाण; व्यजनों के साथ लगाने वाला स्वर का संक्षिप्त रूप; मात्रा।

**मातरीपूजा** *स्त्री०* शुभ अवसरों पर घर के वृद्धों को पूजने की रीति; मातृपूजा।

**मातल** *अक०* नशे के प्रभाव में आना। *वि०* अधजमा दही।

**मातवर** *वि०* विश्वासी; सज्जन; प्रतिष्ठित; धनवान।

**मातहद** *पु०* किसी की अधीनता में काम करने वाला; मातहत।

**माता** *स्त्री०* [सं० मातृ] जन्म देने वाली माँ; देवी, पूजनीय स्त्री; चेचक; गाय; लक्ष्मी; दुर्गा; मातृका।

**मातामह** *पु०* [सं०] नाना।

**मातामही** *स्त्री०* [सं०] नानी।

**मातुल** *पु०* [सं०] मामा; धतूरा; एक प्रकार का धान।

**मातृ** 'माता' का प्रतिपादिक रूप, जो समास में व्यवहृत होता है। **-देव** *वि०* माता को पूजने वाला। **-पूजन** *पु०* माता की पूजा। **-भक्त** *वि०* माता का भक्त। **-भाषा** *स्त्री०* अपने जन्म-स्थान की, अपने घर में बोली जाने वाली भाषा। **-भूमि** *स्त्री०* जन्मभूमि, स्वदेश।

**मात्र** *अव्य०* [सं०] सिर्फ, केवल।

**मात्रा** *स्त्री०* [सं०] परिमाण, खुराक।

**माथ, माथा** *पु०* [सं० मस्तक] सिर, मस्तक, परिवार का स्वामी; किसी वस्तु का ऊपरी भाग; रहने का बील। *उदा०* 'माथे पर टोपी नहीं, कुत्ते को पैजामा'।

**माथी** *स्त्री०* पान के पौधे का आधा से ऊपर का हिस्सा।

**माथे** *अव्य०* सिर पर; भरोसा पर।

**मादक** *वि०* [सं०] सिर्फ, केवल।

**मादर** *स्त्री०* [फा०] माँ।

**मादा** *स्त्री०* [फा०] स्त्री।

**माधव** *पु०* [सं०] विष्णु, कृष्ण; बसन्त।

**माधुरी** *स्त्री०* [सं०] मधुरता, मिठास।

**माधो** *पु०* दे० 'माधव'।

**माध्यम** *वि०* [सं०] मध्य का, निचला; साधन।

**माध्यमिक** *वि०* [सं०] मध्य का।

**मान** *पु०* आदर, सम्मान; पिता की मृत्यु का दिन; प्यार, दुलार। *उदा०* 'मान के पान हीरा समान'।

**मानगी** *स्त्री०* थकावट; आलस्य, पुरवा हवा के कारण हुआ शरीर का दर्द।

**मानगो** *पु०* किसी बात को मान लेने की स्थिति; विचार-साम्य।

**मानजन** *पु०* दलित-पिछड़ी जातियों में सामाजिक व्यवस्था की देख-रेख करने वाला नेता।

**मानर** *पु०* ढोलक-सा एक बाजा।

**मानल** *अक०* रुष्टता छोड़कर अनुकूल होना; ठीक रास्ते पर आना। *सक०* अस्वीकार नहीं करना; मंजूर करना; आदर करना, प्रतिष्ठा करना, प्यार करना।

**मानव** *पु०* [सं०] मनुष्य की सन्तान, मनुष्य।

**मानवती** *वि०* स्त्री, मानिनी।

**मानवी** *वि०* मनुष्य का।

**मानस** *पु०* मनुष्य 'मनु अनेक मानस उपजाये'; मन; चित्त, मानसरोवर; रामचरितमानस।

**मानसून** *पु०* मानसून का मौसम, बरसात।

**मानिंद** *वि०* [फा०] समान, तरह।

**मानि** *स्त्री०* गुफा, वह गड्ढा, जिसमें जानवर रहते हैं।

**मानिक** *पु०* लाल रंग का एक रत्न, माणिक्य। *उदा०* 'गंगाजी के ऊँची अररिया त मानिक दीप जरे' लोक०।

**मानुख** *पु०* मनुष्य, आदमी।

**मानुस** *पु०* मनुष्य।

**माने** *पु०* अर्थ, तात्पर्य।

**माफ** *वि०* क्षमा किया हुआ; कर या कर्ज आदि देने से मुक्त।

**माफिक** *वि०* अनुकूल; उपयुक्त।

**मामलती** *वि०* मुकदमेबाज; मामला-मुकदमा समझने वाला।

**मामला** *पु०* मुकदमा; झगड़ा; कार्य सम्बन्धी बात।

**मामा** *पु०* माता का भाई, मामा, मातुल।

**मामी** *स्त्री०* मामा की पत्नी।

**माय** *स्त्री०* माता; इसका प्रयोग यौगिक रूप में होता है जैसे माय-बाप। *उदा०* 'माय मूइने पिता पितिया समान'।

**माया** *स्त्री०* दैविक लीला; प्रपंच; ममत्व। **-जोड़ल** *सक०* धनसंचय। **-मोह** *पु०* जग-जाल। **-वती** *स्त्री०* कामपत्नी। **-वाद** *पु०* भ्रान्तिवाद।

**मार** *पु०* आघात; चोट; किसी अस्त्र के आघात करने की दूरी। *उदा०* 'मार के डर से तऽ भूत भागेला'।

**मार-काट** *यौ०* लड़ाई; खून-खराबा।

**मारक** *वि०* नाश करने वाला; मारने वाला; किसी मंत्र या औषधि के प्रभाव को असरहीन कर देने वाला।

**मारका** *पु०* चिह्न, पहचान के लिए लगाया गया निशान।
**मारकीन** *पु०* एक प्रकार का मोटा सादा वस्त्र।
**मारकेट** *पु०* [अं०] बाजार।
**मारकेस** *पु०* घातक ग्रह-स्थिति।
**मारतौल** *पु०* हथौड़ी।
**मारन** *पु०* तंत्र-मंत्र की वह विधि, जिससे किसी का अनिष्ट कर दिया जाता है।
**मारफत** *अव्य०* जरिये, द्वारा।
**मारबल** *पु०* [अं०] संगमरमर।
**मारल** *सक०* वध या हत्या करना; आघात करना; चोट पहुँचाना; हड़प लेना। *उदा०* 'मारल जाले धिया हदासे ले पतोहिया'।
**मारा-मारी** *यौ०* मार-पीट; एक-दूसरे को मारने का काम।
**मरिखर** *स्त्री०* चमड़े की डोरी।
**मारुक** दे० 'मारक'।
**मारे** *वि०* कारण से, वजह से।
**मार्हा** *पु०* चीना का भूजा।
**माल** *स्त्री०* धन, रुपया; मवेशी; चर्खा के तकुवे को घुमाने वाली रस्सी; वह पदार्थ, जिससे कोई वस्तु बनती है; सुन्दर युवती (लक्षणा)। **-गोदाम** *पु०* बड़े व्यापारी का मालखाना। **-टाल** *पु०* रुपया-पैसा। **-मस्त** *वि०* धनमद से मत्त। **-महकमा** *पु०* राजस्व प्रबन्ध करने वाला सरकारी विभाग। *उदा०* 'माल महराज के मिरजा खेले होली'।
**मालगाड़ी** *स्त्री०* सामान ढोने वाली गाड़ी।
**मालगुजारी** *स्त्री०* सरकारी या जमींदार को दिया जाने वाला भूमि-कर।
**मालदार** *वि०* सम्पन्न, धनी।
**मालदेह** *पु०* एक प्रकार का सुस्वादु आम।
**मालदेही** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।
**मालधनिक** *पु०* बिक्री के सामान या मवेशी का स्वामी।
**मालपूआ** *पु०* एक प्रकार का मीठा भोज्य पकवान।
**मालभोग** *पु०* एक प्रकार का अच्छा केला; एक प्रकार का सुगन्धित धान।
**मालवर** *पु०* जंगली बिडाल।
**माला** *पु०* सोना या मोती आदि का हार; फूलों का हार; भगवत-भजन के लिए गुँथा हुआ 108 गुटकाओं का समूह।
**मालामाल** *वि०* धन-सम्पदा से परिपूर्ण।
**मालिक** *पु०* ईश्वर; स्वामी; पति। *उदा०* 'मालिक गरमे, बनिया नरमे औरत शरमे के मान होला'।
**मालिकाना** *वि०* वह धन, जो किसी चीज के मालिक को उसके स्वामित्व के बदले में मिलता है।
**मालियत** *स्त्री०* धन; सम्पत्ति, पूँजी।
**मालिस** *स्त्री०* मलने का कार्य।
**माली** *पु०* फूल-पौधे लगाने वाली एक जाति; पेड़-पौधों को सींचने का काम करने वाला। *उदा०* 'माली घरे बकरी जोलाहे घरे बानर'।
**मालीदा** *वि०* [फा०] मला हुआ। *पु०* चूरमा, मलीदा।
**मालूम** *वि०* ज्ञात, जाना हुआ।
**मावस** *पु०* अमावस।
**मावा** *पु०* जमीन की नमी; सत्त, खोवा।
**मास** *पु०* महीना। **-फल** *पु०* मास विशेष का शुभाशुभ फल।
**मासल** *अक०* किसी काम को नहीं करने के लिए टाल-मटोल करना।
**मासा** *पु०* देह पर उभरा हुआ काले, लाल रंग का छोटा दाना; तोला का बारहवाँ हिस्सा।
**मासिक** *वि०* महीना सम्बन्धी; महीने में एक बार निकलने वाला (पत्र)।

**मास्टर** *पु०* [अं०] मालिक; उस्ताद; शिक्षक। **-आव् आर्ट्स** *पु०* एम०ए०, साहित्य की डिग्री। **-आव् लाज** *पु०* एल-एल०बी०, कानून की एक डिग्री। **-की** *स्त्री०* वह कुंजी, जिससे बहुत से ताले खुल जाएँ। **-टेलर** *पु०* होशियार दर्जी। **-पीस** *पु०* श्रेष्ठ कृति।

**मास्टरी** *स्त्री०* मास्टर का काम।

**माँह** *अव्य०* मध्य, बीच, में।

**माह** *पु०* [फा०] चाँद; महीना। **-वार** *वि०* मासिक।

**माहि-माहा** *अव्य०* मध्य में; बीच में।

**माहरी** *स्त्री०* एक प्रकार की जंगली लता का फल, जो अनार के सदृश होता है और दवा के काम आता है।

**माहिर** *वि०* जानकार; दक्ष।

**माहुर** *पु०* अत्यन्त तींता, जहर।

**माहें** *वि०* बीच होकर।

**माहो** *पु०* सरसों में लगने वाला कीड़ा।

**मिआँ** *पु०* मुसलमानों की उपाधि। *उदा०* 'मिआँ के दौड़ मसजिद तक'।

**मिचकारल** *सक०* किसी मुलायम वस्तु को अँगुलियों से खूब मसलना; मिटाना।

**मिचकावल** *सक०* बन्द करना और खोलना।

**मिचलावल** *अक०* धीरे-धीरे चबाकर खाना।

**मिचली** *स्त्री०* वमन की इच्छा।

**मिजाज** *पु०* मन, तबीयत।

**मिटल** *अक०* नष्ट होना; विलुप्त होना, मिटना।

**मिटावल** *सक०* मिटाने का काम करना।

**मिट्टी** *स्त्री०* [सं० मृत्तिः] माटी; धूल; शव। **-के तेल** *पु०* माटी का तेल, किरासन। **-के पुतला** *पु०* मनुष्य। **-के माधव** *पु०* मूर्ख। **-के मोल** *मुहा०* सस्ता।

**मिठरस** *वि०* स्वाद में कुछ मीठा।

**मिठवावल** *सक०* मीठा करना।

**मिठाइल** *अक०* मीठा होना।

**मिठाई** *स्त्री०* पकवान, मिष्ठान्न।

**मिठास** *पु०* मीठापन, मिठाई।

**मिठुआ** *वि०* मीठा, मिठुआवा।

**मिठुआ** *पु०* एक प्रसिद्ध आम, जो कच्चा ही मीठा होता है।

**मिठुआतेल** *पु०* तिल का तेल, सरसों का तेल।

**मिडिल** *वि०* [अं०] मध्यवर्ती। **-ची** *वि०* मिडिल पास (तिरस्कारसूचक) **-स्कूल** *पु०* मिडिल तक की पढ़ाई वाला स्कूल।

**मिताई** *स्त्री०* मित्रता, दोस्ती।

**मिति** *स्त्री०* तारीख, विचार मेल।

**मिती** *स्त्री०* तारीख, तिथि।

**मित्त** *पु०* दे० 'मित्र'।

**मित्र** *पु०* [सं०] दोस्त, बन्धु, सखा, साथी **-द्रोह** *पु०* मित्र का अहित। **-द्रोही** *वि०* मित्र से द्रोह करना वाला। **-भाव** *पु०* मित्रता, दोस्ती। **-लाभ** *पु०* मित्र की प्राप्ति।

**मिथिल** *पु०* [सं०] राजा जनक।

**मिथिला** *पु०* तिरहुत; विदेह की राजधानी।

**मिनती** *स्त्री०* प्रार्थना, निवेदन।

**मिनहा** *अक०* किसी देय रकम को दूसरी रकम से घटाने की प्रक्रिया; मुजरा।

**मिन्ट** दे० 'मिनिट'।

**मिनिट** *पु०* एक घण्टा का (60वाँ) साठवाँ भाग।

**मिनिस्टर** *पु०* [अं०] मंत्री।

**मिनिस्टरी** *स्त्री०* मंत्रिमण्डल।

**मिमिआइल** *अक०* बकरी या भेंड़ का बोलना।

**मियाँमिट्ठू** *पु०* मीठी बोली बोलने वाला, आत्मप्रशंसी।
**मियाद** *पु०* अवधि।
**मिरका** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**मिरकिटाह** *वि०* दुर्बल, कमजोर, शक्तिहीन।
**मिरगा** *पु०* हरिन, मृगा। *उदा०* 'मिरगा बानर तीतर मोर ये चारो खेती के चोर'।
**मिरगिआह** *वि०* अपस्मार रोग से पीड़ित।
**मिरगी** *स्त्री०* मूर्च्छा रोग, मृगी, अपस्मार रोग।
**मिरजई** *स्त्री०* एक अँगरखा विशेष।
**मिरजा** *पु०* सम्भ्रान्तों की उपाधि; शहजादा; अमीरजादा।
**मिरतु** *स्त्री०* मृत्यु।
**मिरदंग** *पु०* ढोलक जैसा एक वाद्ययंत्र, मृदंग।
**मिरहिनी** *स्त्री०* स्वाभाविक अवस्था से बहुत छोटा आकार का अन्न।
**मिरिआस** *पु०* बपौती, पैतृक धन।
**मिरिगछाला** *पु०* हरिन का चर्म, मृगचर्म।
**मिरिगडाह** *पु०* एक नक्षत्र, मृगशिरा।
**मिरिगसिरा** *पु०* नक्षत्रविशेष, मृगशिरा।
**मिरिगा** *पु०* मृग।
**मिरिचवान** *पु०* केले का एक प्रकार।
**मिरितलोक** *पु०* पृथ्वी, धरती, मृत्युलोक।
**मिल** *स्त्री०* कल, कारखाना। **-मजदूर** *पु०* मिल में कार्यरत मजदूर। **-मालिक** *पु०* संचालक।
**मिलकियत** *स्त्री०* जमींदारी, जमीन-जायदाद, स्वामित्व।
**मिलन** *पु०* मिलने का कार्य या भाव।
**मिलनसार** *वि०* प्रेम से मिलने-जुलने वाला।
**मिलनी** *स्त्री०* विवाह के समय वर-कन्या पक्ष का मिलना और भेंट देने की रीति।
**मिलनुआ** *पु०* किसी स्त्री से चुपके से मिलने वाला; यार।
**मिलमिलाह** *वि०* दुबला-पतला, दुर्बल।
**मिलल** *अक०* [सं० मेलनं] दो जुदा-जुदा वस्तुओं या व्यक्तियों का एक जगह होना, एकाकार होना; प्राप्त होना।
**मिलाकुअत** दे० 'मिलकियत'।
**मिलान** *पु०* मिलाने के भाव; तुलना, मेल।
**मिलाप** *पु०* मेल, मेल-मिलाप, आपसी मिलन।
**मिलावट** *स्त्री०* मिलाने का भाव, बढ़िया में घटिया वस्तु मिलाने का भाव।
**मिलावल** *सक०* मिश्रित करना, जुटाना, सटाना, सन्धि कराना।
**मिसकार** *पु०* चिड़ियों को पकड़ने वाली एक जातिविशेष।
**मिसरी** *स्त्री०* दानेदार चीनी की मिठाई, मिश्री।
**मिसरीकन्द** *पु०* एक कन्द।
**मिसाल** *स्त्री०* मेल की वस्तु, उदाहरण।
**मिसिया** *स्त्री०* ताजिया में गाया जाने वाला शोकगीत, मर्सिया।
**मिसिर** *पु०* ब्राह्मणों की उपाधिविशेष 'मिश्र'।
**मिसिरिया** *वि०* मीठा, मिश्री-जैसा।
**मिसिल** *पु०* मुकदमें के कागजात।
**मिसी** *स्त्री०* दाँतों को रँगने का काला रंग-विशेष।
**मिसुआ** *पु०* घोड़े के अण्डकोश की नस मीसकर तोड़ने की क्रिया।
**मिस्तीरी** *पु०* कारीगर; मशीन की मरम्मत करने वाला; बढ़ई, लोहार, राजगीर।
**मिहलाइल** *अक०* पानी पड़ने से गल जाना।
**मीजल** *सक०* मीसना, मलना, पैर से रौंदना।

**मीजान** *पु०* जोड़, टोटल, कुलयोग।
**मीटिंग** *स्त्री०* [अं०] सभा।
**मीठ** *वि०* मधुर, गुड़ के स्वाद का; हल्का, सुस्त, धीमा। *उदा०* 'मीठ गब गब तीत छिया छिया'।
**मीठा** *पु०* गुड़, स्वाद-विशेष। *उदा०* 'मीठा रहइत त पुआ पकइतीं'।
**मीठी** *वि० स्त्री०* प्रिय, मधुर। **-गाली** *स्त्री०* बुरी न लगने वाली गाली। **-छुरी** *वि०* विश्वासघाती। **-नींद** *स्त्री०* निश्चिन्तता की नींद।
**मीत** *पु०* मित्र, दोस्त; एक ही नाम के दो व्यक्ति का पारस्परिक मेल।
**मीतरो** *पु०* मित्रता, दोस्ती।
**मीन** *स्त्री०* हिन्दू पंचांग की बारहवीं राशि; मछली।
**मीना** *पु०* नीले रंग का रत्न।
**मीनाबाजार** *पु०* ऐसा बाजार, जहाँ शृंगार-सामग्री बिकती हो।
**मीनार** *स्त्री०* [अ० 'मनार'] ऊँची इमारत।
**मीर** *पु०* सरदार, प्रधान। 'सिरा खाय मीरा, पोंछी खाय गुलाम' कहा०।
**मीरासी** *स्त्री०* मुसलमानों में गायन पेशा वाली एक जातिविशेष।
**मील** *स्त्री०* आधे कोस की दूरी, माइल।
**मीसल** *सक०* मसलना, रौंदना।
**मुंगड़ा** *पु०* बाँस या काठ का छोटा टुकड़ा, जो ठोकने के काम में आता है।
**मुंगौरी** *स्त्री०* मूँग की बनी बड़ी।
**मुँजवानी** *स्त्री०* मूँज पैदा करने की जगह, मूँजवान। जुबानी।
**मुंझउसा** *पु०* स्त्रियों द्वारा पुरुषों के लिए एक गाली।
**मुंडन** *पु०* हिन्दुओं में बच्चे के सिर के बाल को पहली बार छूरे से मूँड़ने का एक संस्कार-विशेष।
**मुंड़झराह** *वि०* सींग से मारने वाला मवेशी।
**मुँडल** *अक०* हथियार की धार का घूम जाना, मोच होना।
**मुँड़वार** *पु०* बैलगाड़ी के चक्के के बीच का भाग, जहाँ आरा ठोका रहता है, तम्मा।
**मुँड़वावल** *सक०* दूसरे से बाल मुड़वाने का काम करवाना।
**मुड़ली** *स्त्री०* वह औरत, जिसके सिर के बाल कटे हों।
**मुँड़** *पु०* ऐसा व्यक्ति, जिसके सिर के बाल साफ हो गए हों।
**मुँड़ाइल** *अक०* किसी हथियार की धार का एक ओर घूम जाना; पौधे की टहनी का काटा जाना।
**मुँड़ाई** *स्त्री०* मूँड़ने का भाव या क्रिया।
**मुँड़िआइल** *अक०* किसी काम के करने से बचने का प्रयास करना; हाथ खींचना।
**मुँड़िया** *पु०* एक प्रकार का अच्छा गेहूँ।
**मुँड़ियारी** *स्त्री०* अनेक व्यक्तियों के इकट्ठा होने पर उनके सिरों के नजर आने का भाव।
**मुँड़िआवल** *पु०* पौधों के ऊपरी भाग को काट लेना।
**मुँड़ेर** *पु०* छत का किनारा।
**मुँदरी** *स्त्री०* हाथ की अँगुलियों का आभूषण, अँगूठी।
**मुंसी** *पु०* लिखने वाला, पटवारी; कायस्थों की उपाधि, मुंशी।
**मुँह** *पु०* मुख, चेहरा; छेद, सुराख; किनारा। *उदा०* 'मुँह हइले ना बबुआ नाँव'। **-अखरी** *वि०* जबानी, मौखिक। **-चटौवल** *स्त्री०* चूमा-चाटी; बकवाद। **-चोर** *वि०* झेंपू। **-चोरी** *स्त्री०* मुँहचोर होना। **-छुआई** *स्त्री०* पूछने की रस्म

अदा करना। -छुठ *वि०* मुँहफट। -जोर *वि०* बहुत बोलने वाला, लड़ाका। -जोरी *स्त्री०* लड़ाकापन। -झौंसा *वि०* जिसका मुँह झुलस दिया गया हो (एक गाली)। -दिखाई *स्त्री०* दुलहिन का मुँह देखकर उसे धन, आभूषण देने की रस्म। -देखा *वि०* बिल्कुल ऊपरी, दिखाऊ। -भराई *स्त्री०* घूस। -लगा *वि०* ढीठ, सिरचढ़ा। -चाटल *मुहा०* प्यार करना, खुशामद करना।

**मुँहकरखी** *स्त्री०* मुँह में कालिख लग जाना, बेइज्जती।

**मुँहकुरिये** *क्रि०वि०* मुँह के बल, मुँह नीचे की ओर।

**मुँहखड़ा** *पु०* अन्न कोठी का खुलने वाला ढक्कन।

**मुँहगब** *पु०* जबानी कही गई आधारहीन बात।

**मुँहगर** *पु० वि०* सुन्दर मुखवाला; अच्छे ढंग से बोलने वाला।

**मुँहछुट्टू** *वि०* गाली बकने वाला।

**मुँहजबानी** *वि०* मौखिक, बिना देखे बोलने वाला।

**मुँहतोड़** *वि०* दूसरों को निरुत्तर करने वाली बात।

**मुँहतोड़ा** *पु०* नदी में बाढ़ का आधिक्य।

**मुँहदुब्बर** *वि०* कम बोलने वाला, बोलने में दब्बू।

**मुँहदेखौनी** *स्त्री०* नववधू या बच्चे का प्रथम-प्रथम मुँह देखने के समय दिया गया उपहार।

**मुँहदेखी** *वि०* किसी को प्रसन्न करने के लिए उसके अनुकूल कही गई बात।

**मुँहपेल** *वि०* बातचीत करने में हठपूर्वक बोलने वाला।

**मुँहबई** *स्त्री०* कोई बात सुनकर स्तम्भित होने से मौत हो जाने की स्थिति।

**मुँहबऊ** *वि०* हक्का-बक्का, स्तम्भित होने के कारण मौन होना।

**मुँहबोला** *वि०* बोलकर स्थापित किया गया सम्बन्ध।

**मुँहमाँगा** *पु०* माँगने के अनुसार, मनचाहा, यथेच्छा।

**मुँहचाही** *स्त्री०* मन-बहलाव के लिए किसी से बोलते-बतिआते रहना।

**मुँहा-मुँही** *स्त्री०* एक-दूसरे और अन्य व्यक्तियों तक पहुँचकर फैलने वाली बात।

**मुँहासा** *पु०* युवावस्था में चेहरे पर निकलने वाली छोटी-छोटी फुन्सियाँ।

**मुँहिआइल** *अक०* मुँह पर आना। कहने-कहने को होना।

**मुँहे** *अव्य०* ओर, तरफ।

**मुँहेमुँह** *क्रि०वि०* पूर्णत:, लबालब।

**मुअतार** *वि०* दूषित रक्त, सड़ने की स्थिति वाला।

**मुअना** *पु०* एक गाली, मरनेवाला।

**मुअवावल** *सक०* जान से मरवा डालना, मरवाना।

**मुआ** *वि०* दे० 'मूआ'।

**मुआर** *पु०* अनावृष्टि के कारण फसल का सूख जाना; झुलसा, मरायल।

**मुआरी** *वि०* कमजोर।

**मुआवल** *सक०* जान से मारना, कसकर पिटाई करना।

**मुकठी** *स्त्री०* किसी वस्तु के मुँह पर बनी गोल गाँठ।

**मुकति** *स्त्री०* मोक्ष, मुक्ति।

**मुकवसल** *सक०* मुक्के से खूब मारना।

**मुका-मुक्की** *स्त्री० यौ०* मुक्केबाजी।

**मुकिआवल** दे० 'मुकियावल'।

**मुकियावल** *सक०* मुक्के से मारना। *उदा०* 'मुकियाव ले कटहर नहिं पाक'।
**मुकुट** *पु०* राजाओं और देवताओं के सिर पर रत्नजड़ित टोपी।
**मुक्का** *पु०* बँधी मुट्ठी, घूँसा; एक प्रकार की घास।
**मुख** *वि०* प्रधान, महत्वपूर्ण, खास। *उदा०* 'मुख मलीन तन सुन्दर कैसे'।
**मुखड़ा** *पु०* मुँह, मुख।
**मुखपात** *पु०* साड़ी का चित्रित-अंचल, मुख्य भाग।
**मुखबत्ती** *स्त्री०* मृतक के मुख में धधकती बत्ती डालने की विधि।
**मुखाड़ी** *स्त्री०* पशुओं के मुख में बाँधने की जाली, खोंचा।
**मुखिया** *पु०* प्रधान, नेता-पंचायत का प्रधान।
**मुगदर** *पु०* व्यायाम करने के लिए लकड़ी का मुँगड़ा।
**मुधुकल** *अक०* दबाव, चोट या झटका से दर्द होना; मोच आना।
**मुछंदर** *पु०* मूँछ वाला आदमी।
**मुजहरल** *अक०* किसी हथियार की धार का गिरना।
**मुझाइल** *सक०* बुत जाना, आग की राख बन जाना।
**मुट्ठा** *पु०* अनाज के डण्ठलों का हल्का पूला; अँगुलियों की मोड़।
**मुट्ठी** *स्त्री०* [सं० मुष्टिः] हाथ की अँगुलियों को मोड़ने से बनी स्थिति। **-गरम कइल** *मुहा०* घूस देना।
**मुठुनी** *स्त्री०* एक धान-विशेष।
**मुठान** *पु०* मुखाकृति, मुँह की बनावट।
**मुठिया** *स्त्री०* पुण्य कार्य हेतु प्रतिदिन निकाला गया एक मुट्ठी अन्न।
**मुठिआवल** दे० 'मुठियावल'।
**मुठियावल** *सक०* मुट्ठी में पकड़ना।
**मुठैल** *पु०* छोटी सींग वाला बैल।
**मुड़रा** *पु०* एक मोटा धान।
**मुड़ल** *सक०* घूम जाना, दूसरी दिशा की ओर फिर जाना।
**मुड़ेरा** *पु०* दीवाल का ऊपरी भाग; बिना सींग का बैल; कूँए का चौतरा।
**मुतना** *वि०* असमय मूतना।
**मुतवास** *पु०* पेशाब करने की इच्छा।
**मुतावल** *सक०* पेशाब करने को प्रवृत्त करना; हराना।
**मुदई** *पु०* दुश्मन, वादी, बैरी, मुद्दई।
**मुदा** *अव्य०* लेकिन, परन्तु।
**मुदालह** *पु०* जिस पर दावा किया जाता है, प्रतिवादी।
**मुनक्का** *पु०* बड़ी किसमिस।
**मुनगा** *पु०* सहिजन का फल।
**मुनना** *पु०* ढक्कन।
**मुनवावल** *सक०* मूँदने के लिए प्रेरित करना, मुँदवाना।
**मुनरी** *स्त्री०* अँगूठी, मुद्रिका।
**मुनि** *पु०* तपस्वी, साधु; विचारक, चिन्तक।
**मुनिआ** *स्त्री०* एक चिड़ियाविशेष; बच्ची को प्यारसूचक सम्बोधन-शब्द।
**मुनीब** *पु०* व्यापारियों का हिसाब-किताब रखने वाला।
**मुनीम** *पु०* हिसाब-किताब रखने वाला कर्मचारी।
**मुनीमी** *स्त्री०* मुनीम का काम।
**मुन्ना** *पु०* बच्चों का प्यार का सम्बोधन।
**मुफुत** *वि०* बिना मूल्य का, मुफ्त। *उदा०* 'मुफुत के चूरा भर-भर फाँक'।
**मुरई** *स्त्री०* खाने के काम का एक कन्द-विशेष, मूली।
**मुरकल** *अक०* मोच खाना, मुचुकल।

**मुरका** *पु०* राड़ी, एक घास-विशेष; जाला, झंगरा।

**मुरखई** *स्त्री०* मूर्खता।

**मुरगा** *पु०* सिर पर कलंगी वाला एक पक्षी। मुर्गा, कुक्कुट।

**मुरगी** *स्त्री०* मुर्गी।

**मुरघटिया** *पु०* मुर्दा जलाने की जगह, श्मशान।

**मुरछा** दे० 'मूरछा'।

**मुरछाइल** *अक०* बेहोश होना, मूर्च्छित होना।

**मुरझाइल** *अक०* [सं० मूर्च्छनं] कुम्हलाना-किंचित् सूखना, मरकल।

**मुरदा** *पु०* मृतक, मरे हुए व्यक्ति का शव।

**मुरदाह** *वि०* मरा हुआ, मृत।

**मुरदासंख** *पु०* एक प्रकार की औषधि।

**मुरली** *स्त्री०* बाँसुरी, वंशी। **-धर** *पु०* श्रीकृष्ण।

**मुरहा** *वि०* मूल नक्षत्र में जन्मा हुआ; नटखट।

**मुराड़ा** *पु०* लुआठी। 'हम घर जाल्या आपना लिया मुराड़ा हाथ' -कबीर।

**मुराद** *स्त्री०* [अं०] मनोरथ।

**मुराया** *पु०* टखना।

**मुरुकल** *अक०* मोच आना।

**मुरुख** *वि०* मूर्ख 'मुरुख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरंचि सम'।

**मुरुम** *पु०* लाल मिट्टी, मोरंग।

**मुरेठा** *पु०* कम चौड़ा और अधिक लम्बा वस्त्र; सिर में लपेटने का वस्त्र, पगड़ी।

**मुर्ह-मुर्ह** *क्रि०वि०* अधिक सूखने के कारण दाँत से तोड़ने पर निकला हुआ शब्द।

**मुर्ही** *स्त्री०* खूब उबाले हुए धान से तैयार चबेना लाई।

**मुलकात** *स्त्री०* मिलना।

**मुलकानि** *वि०* देर, बहुत।

**मुलकन** अनेक। *उदा०* 'मुलकन योगी मठ उजार'।

**मुलकीन** *क्रि०वि०* बहुत, अत्यधिक।

**मुलहरी** *स्त्री०* जेठी मधु।

**मुलाँ** *पु०* मुल्ला।

**मुलाकात** *स्त्री०* [अ०] भेंट, जान-पहचान।

**मुलाकाती** *पु०* मिलने वाला।

**मुलाजमत** *स्त्री०* नौकरी, सेवा।

**मुलायम** *वि०* नरम, कोमल।

**मुल्हा** *पु०* मूर्ख, अनाड़ी।

**मुलुक** *पु०* देश, प्रान्त।

**मुलुर-मुलुर** *क्रि०वि०* चुपचाप बैठकर ताकते रहना।

**मुलेठी** *स्त्री०* एक पौधा, जो दवा के काम आता है।

**मुसकइल** *पु०* चूहे के बिल की मिट्टी। *उदा०* 'मुसकइल माटी पर कुदार चोख'।

**मुसकाइल** *अक०* मन्द-मन्द हँसना।

**मुसकी** *स्त्री०* मुसकान। *वि०* एक प्रकार का काला रंग।

**मुसकुर** *पु०* मसूढा।

**मुसमात-मुस्समात** *स्त्री०* स्त्री, विधवा स्त्री; नामवाली, नामधेया।

**मुसर** दे० 'मूसर'।

**मुसरा** *पु०* पेड़ की मोटी प्रधान जड़, मूसला।

**मुसरी** *स्त्री०* चुहिया, छोटा चूहा। *वि०* बच्चों का लिंग। *उदा०* 'मुसरी का गोहूँ होई तऽ सोहारी पाकी'।

**मुसलमान** *पु०* मुहम्मद साहब के बताए मार्ग को मानने वाला; यवन।

**मुसलमानिआ** *वि०* मुसलमान का, मुसलमान सम्बन्धित।

**मुसलमानी** *स्त्री०* मुसलमानों का एक संस्कार, खतना।

**मुसलमीन** *स्त्री०* मुसलमान लोग।
**मुसहर** *पु०* चूहे के बिल से अनाज निकालने वाली जातिविशेष, धांगड़। *उदा०* 'मुसहरा के बेटी नै नैहर सुख नै ससुरारै सुख'।
**मुसहरी** *स्त्री०* चूहों को फँसाने वाला लोहे का एक यंत्र; मच्छरों से बचने हेतु ओहार।
**मुसाफिर** *पु०* [अ०] पथिक, राही। **-खाना** *पु०* धर्मशाला।
**मुसीबत** *स्त्री०* आपत्ति, झंझट, विपत्ति।
**मुसुकाइल** दे० 'मुसकाइल'।
**मुसुकी** *स्त्री०* दे० 'मुसकी'।
**मुस्तैद** *वि०* [अ० मुस्तइद] तैयार।
**मुहताज** *वि०* [अ०] विवश, गरीब।
**मुहब्बत** *स्त्री०* [अ०] प्रीति, प्रेम।
**मुहर** *स्त्री०* प्रतीक; मुद्रा।
**मुहर्रम** *वि०* [अ०] शोक-काल।
**मुहावरा** *पु०* [अ०] बातचीत; लाक्षणिक प्रयोग; अभ्यास।
**मुहूर्त्त** *पु०* [सं०] शुभ काल।
**मूँग** *पु०* एक प्रकार का दलहन, मूँग।
**मूँगफली** *स्त्री०* [सं० भूमिफली] चीनिया-बादाम।
**मूँगा** *पु०* [हिं० मूँग] समुद्री कीड़ों की हड्डी से बना एक पत्थर-विशेष, जो रत्नों में गिना जाता है; एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
**मूँछ** *स्त्री०* [सं० श्मश्रुः] मोछ। **-उखाड़ल** *मुहा०* गर्व चूर करना। **-नीची भइल** *मुहा०* लज्जित होना। **-पर ताव फेरल** *मुहा०* शौर्य-प्रदर्शन।
**मूँज** *पु०* [सं० मुञ्जः] पतला और बड़ा तीक्ष्ण काँड़ा, जिसकी रस्सी बनती है। सरकण्डा।
**मूँड़** *पु०* सिर, तादाद, संख्या। *उदा०* 'पाँच मूड़ी'।
**मूँड़ल** *पु०* सिर के बालों को छूरे से साफ करना; पौधों का ऊपरी हिस्सा काटना; ठगना, धोखा देकर पैसे हथिया लेना; चेलना बनाना। *उदा०* 'मूँड़ल माँग में हूरपेटना'।
**मूँड़न** *पु०* यज्ञोपवीत संस्कार का एक अंश; संस्कार; सिर के बाल छूरे से बनाना।
**मूँड़ा** *पु०* खसी या मछली का सिर।
**मूँड़ी** *स्त्री०* सिर, मुण्ड।
**मूँड़ेठा** *पु०* पतला और अधिकाधिक लम्बा वस्त्र खण्ड, जिसे पगड़ी की तरह सिर में बाँधते हैं, 'पगड़ी'।
**मूँढ़** *वि०* [सं०] मूर्ख, जड़बुद्धि।
**मूँढ़ता** *स्त्री०* मूर्खता।
**मूँत** *पु०* मूत्र।
**मूँतल** *अक०* पेशाब करना।
**मूँद** *पु०* कण्ठी।
**मूँदल** *अक०* ढँक देना, बन्द कर देना। *उदा०* 'मूँदल आँख कतहुँ कछु नाहीं'।
**मूअल** *अक०* मरना, मुरझाना, सूख जाना।
**मूआ** *स्त्री०* वह स्त्री, जिसके मरे बच्चे पैदा होते हैं, मृता।
**मूका** दे० 'मुक्का'।
**मूङ** दे० 'मूँग'।
**मूङा** दे० 'मूँगा'।
**मूङफली** दे० 'मूँगफली'।
**मूठ** *पु०* बैट, परिहथ, हल का एक अंग, हथियार या औजार का दस्ता।
**मूठ** *स्त्री०* अँगुलियों के मोड़ने की स्थिति; जादू, टोना-विशेष; बीज का प्रथम-प्रथम बुआई का नाम।
**मूठा** *पु०* हूरा, मुट्ठा।
**मूठी** *स्त्री०* मुट्ठी।
**मूड़** दे० 'मूँड़'। *उदा०* 'मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी'।
**मूड़ल** दे० 'मूँड़ल'।

**मूढ़** *वि०* महामूर्ख, जड़।

**मूढवार** *पु०* किसी हथियार आदि का मुट्ठी से पकड़ा जाने वाला भाग।

**मूत** *पु०* पेशाब, मूत्र।

**मूतउर** *पु०* मवेशियों की जरायु का वह भाग, जिसमें पतले चमड़े के थैले में पानी रहता है।

**मूतल** *अक०* पेशाब करना।

**मूतना** *वि०* बिछावन पर रात के सोए में पेशाब कर देने वाला बच्चा।

**मूतान** *पु०* मूतने का काम।

**मूदल** *सक०* बन्द करना, ढँकना, तोपना, मूँदना।

**मूना** *पु०* प्रियों एवं बच्चों के लिए प्रेमसूचक शब्द, मुन्ना, मुन्नू।

**मून्ही** *स्त्री०* रस्सी के छोर पर बना वृत्ताकार घेरा।

**मूर** *पु०* मूलधन, कर्ज में दिया गया धन। *उदा०* 'मूर पलटे नाचे साहू'।

**मूरई** दे० 'मुरई'।

**मूरखई** दे० 'मूरुखई'।

**मूरछा** *पु०* बेहोशी, मूर्च्छा।

**मूरत** *पु०* मूर्ति, प्रतिमा, चित्र, आकृति।

**मूर्हा** *पु०* जड़, जड़ की गाँठ, दाँत की जड़, मूर्द्धा।

**मूरी** *स्त्री०* मूल, जड़ी-बूटी; धन।

**मूरुख** *वि०* नासमझ, मूर्ख, बेवकूफ।

**मूरुखई** *स्त्री०* बेवकूफी, मूर्खता।

**मूल** *पु०* जड़; उत्पत्ति-स्थान, उत्स; फल; एक नक्षत्र।

**मूल मंतर** *पु०* असली भेद, मूलमंत्र।

**मूली** *स्त्री०* एक पौधा, जिसकी जड़ और पत्ते खाए जाते हैं। **-गाजर समझल** *मुहा०* तुच्छ समझल।

**मूल्य** *पु०* कीमत, दाम।

**मूल्यवान** *वि०* कीमती।

**मूस** *पु०* चूहा। *उदा०* 'मूस मोटइहें लोढ़ा होइहें'।

**मूसर** *पु०* ओखली में धान कूटने का काठ का उपकरण।

**मूसरधारा** *वि०* बहुत तेज वर्षा (मूसलाधार)।

**मूसल** *सक०* चुराना।

**मृत** *वि०* [सं०] मरा हुआ।

**मृतक** *पु०* मुर्दा, शव।

**मृत्यु** *स्त्री०* मरण, मौत।

**मूसा** *पु०* यहूदियों के पैगम्बर।

**में** *स्त्री०* बकरी की बोली के लिए शब्द; अधिकरण विभक्ति के लिए प्रयुक्त एक शब्द।

**मेंआद** *पु०* अवधि, नियत समय, कैद की अवधि।

**मेंजन** *पु०* मेल, मिश्रण के लिए उपयुक्त वस्तु, खाद्य-पदार्थ आदि।

**मेंटा** *पु०* छोटा घड़ा।

**मेंड़** *पु०* खेतों के चारों ओर के मिट्टी का घेरा, उँड़ेर।

**मेंड़त** *पु०* बादल के कारण सूर्य या चन्द्रमा के चतुर्दिक् मण्डलाकार घेरा।

**मेंड़रा** *पु०* बाँस की फट्टी का बना मण्डलाकार सामान, जिसका उपयोग किसी वस्तु के ऊपरी हिस्से के बनाने में होता है।

**मेंढ़ा** *पु०* उलटा घूमें हुए सींग वाला बैल; नर भेड़।

**मेंढ़िआवल** *सक०* अच्छी तरह हेंगा देना।

**मेंबर** *पु०* [अं०] सदस्य।

**मेंबरी** *स्त्री०* सदस्यता।

**मेंव** *स्त्री०* बिल्ली की बोली के लिए अनुकरणात्मक शब्द।

**मेंह** *पु०* खलिहान के मध्य में गड़ा बाँस का खम्भा, जिसके चारों ओर बैलों को घुमाकर पौधों से अन्न निकाला जाता है।

**मेंहदी** *स्त्री०* एक प्रकार का पौधा, जिसके पत्ते से स्त्रियाँ हाथ रँगती हैं।
**मेंहना** *पु०* ताना, व्यंग्य।
**मेंहवार** *पु०* दँवरी करने के पूर्व मेह के सिरे पर बँधा हुआ अनाज का बाल।
**मेंहा** *पु०* दँवरी में मेंह के पास रहने वाला बैल।
**मेंहिअकी** *वि०* बारीक।
**मेंहिया** *वि०* बारीक, महीन।
**मेंही** *वि०* बारीक, महीन।
**मेआन** *पु०* तलवार रखने का लम्बा खोल, म्यान।
**मेआना** *पु०* एक प्रकार की पालकी, मियाना।
**मेख** *पु०* ज्योतिषशास्त्र की प्रथम राशि, मेष।
**मेखड़ा** *पु०* दउरा या डगरी में लगी बाँस की वृत्ताकार कमची।
**मेखला** *स्त्री०* करधनी।
**मेगजीन** *पु०* बारूदखाना; सामयिक पत्र।
**मेघ** *पु०* बादल। उदा० 'मेघ बरसे अहर पहर गाछ बरसे तीन पहर'।
**मेघउनी** *स्त्री०* बदली, घटउरी।
**मेघनाद** *पु०* रावण का पुत्र।
**मेघदिनाय** *पु०* वर्षा ऋतु में बढ़ जाने वाला दिनाय।
**मेघडंबर** *पु०* बाँस का एक प्रकार का छाता, बाँस की गोल कमची में लगा बड़ा सा हार।
**मेझरा** *वि०* मिला-जुला, मिश्रित।
**मेरकाइल** *सक०* किसी लिखी बात को रगड़कर उड़ा देना।
**मेटावल** *सक०* रगड़कर मिटाना।
**मेटा** *पु०* दूध दूहने का मिट्टी का बर्तन; भाँड़ा।
**मेटाइल** *सक०* मिट जाना, मिटाना।
**मेटावल** *सक०* किसी लिखी बात को रगड़-कर उड़ा देना; झगड़ा समाप्त कर देना।
**मेठ** *पु०* मजदूरों का सरदार, अगुआ।
**मेड़राइल** *अक०* पक्षियों का चारों ओर चक्कर काटना, मँडराना।
**मेढ़क** *पु०* मण्डूक।
**मेढ़ल** *सक०* दूसरी ओर घुमाना।
**मेथ** *पु०* एक प्रकार का निम्न कोटि का दलहन।
**मेथउरी** *स्त्री०* मेथ की दाल से तैयार किया गया व्यंजन।
**मेथी** *स्त्री०* एक प्रकार का मसाला, मधुमेह की दवाई।
**मेदनी** *स्त्री०* स्त्रियों का गुप्तांग।
**मेदा** *पु०* पेट।
**मेदिनी** *स्त्री०* धरती।
**मेधा** *पु०* विधि, रस्म। किसी काम को प्रारम्भ कर उसे छोड़ देने या बन्द कर देने की स्थिति।
**मेधावी** *वि०* मेधायुक्त।
**मेन** *पु०* एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल दवा बनाने में व्यवहृत होती है।
**मेम** *स्त्री०* यूरोपीय देशों की स्त्रियों के लिए प्रयुक्त शब्द; अंग्रेज साहबों की पत्नी। **-साहबा** *स्त्री०* यूरोपीय महिला।
**मेमिआइल** दे० 'मिमिआइल'।
**मेमो** *पु०* [अं०] मेमोरैण्डम का संक्षिप्त रूप।
**मेमोरियल** *पु०* [अं०] स्मारक।
**मेयर** *पु०* महानगर का अध्यक्ष।
**मेर** *पु०* मेल, प्रकार।
**मेरखुन** *पु०* अधकूटा धान, जो चावल फटकने पर निकलता है।
**मेरावल** *सक०* किसी एक वस्तु में दूसरे को मिला देना।

**मेल** *पु०* मित्रता, संगति, सलाह; ट्रेन, जो छोटे-छोटे स्टेशनों पर नहीं रुकती है; डाक।

**मेलवानी** *स्त्री०* सिंचाई में जहाँ करीन आदि से पानी गिरता है।

**मेला** *पु०* देवस्थान, तीर्थ, मजार आदि में निश्चित तिथि पर लोगों के इकट्ठा होने की स्थिति। **-ठेला** *पु०* मेला, सैर-तमाशा।

**मेलाघुमनी** *स्त्री०* मेलों का चक्कर काटने वाली स्त्री।

**मेल्नी** *स्त्री०* संगी, साथी, प्रेमी।

**मेवा** *पु०* [फा०] बादाम, काजू, किसमिस आदि; सूखा फल।

**मेवाती** *पु०* एक प्रकार का पौधा।

**मेह** *पु०* [सं०] मूत्र; प्रमेह; मेष।

**मेह** *वि०* [फा०] बड़ा, बुजुर्ग।**-तर** *पु०* भंगी।

**मेहनत** *पु०* परिश्रम। **-कस** *वि०* मेहनत करने वाला।

**मेहनताना** *पु०* पारिश्रमिक, मजदूरी।

**मेहनती** *पु० वि०* परिश्रमी, मेहनत करने वाला।

**मेहमान** *पु०* अतिथि, पाहुन, दामाद।

**मेहर** *स्त्री०* पत्नी, जोरू; कृपा, अनुग्रह।

**मेहरखउका** *पु०* वह पुरुष, जिसकी पत्नी मर जाती हो।

**मेहरबानी** *स्त्री०* कृपा, दया।

**मेहरा** *पु०* जनखा।

**मेहराइल** *अक०* किसी अन्न में नमी आ जाना।

**मेहराब** *पु०* तोरण।

**मेहरारू** *स्त्री०* औरत, पत्नी।

**मेहरी** *स्त्री०* पत्नी।

**मेहीन** *स्त्री० वि०* बारीक, अत्यन्त पतला या कण जैसा।

**मेहीनी** *स्त्री०* बारीकी।

**मैं** *सर्व०* हम। *उदा०* 'मैं भाटिन पिया जात चमार'।

**मैना** *स्त्री०* पार्वती की माता; काले रंग की एक चिड़िया, जो सिखाने पर मनुष्य की तरह बोलती है।

**मैका** *पु०* मायका।

**मैच** *पु०* [अं०] प्रतियोगिता वाला खेल।

**मैजल** *स्त्री०* शव।

**मैथिल** *सक०* मिथिला प्रान्त का निवासी। *वि०* मिथिला सम्बन्धी।

**मैथिली** *स्त्री०* सीता; मिथिला की भाषा।

**मैथुन** *पु०* [सं०] रतिक्रिया।

**मैदा** *पु०* बहुत महीन आटा, विशेषतः मसीन का पीसा हुआ।

**मैदान** *पु०* खुली जगह, सपाट भूमि, जहाँ कोई खेल खेला जाए।

**मैदानी** *स्त्री०* जलेबी के लिए मैदे का घोल; *वि०* मैदान का; समतल।

**मैन** *पु०* [अं०] व्यक्ति (पुलिस-मैन, मशीनमैन)

**मैना** *पु०* कानो के नीचे लटके सींगों वाला बैल। *स्त्री०* मीठी बोली वाली चिड़िया।

**मैनी** *स्त्री०* लक्खी (गाय)।

**मैभा** *स्त्री०* विमाता।

**मैया** *स्त्री०* माँ, माता, जननी। *उदा०* 'मैया के ना मोटरी धिया के ना लोर'।

**मैल** *पु०* मल, गर्द; विकार। **-खोरा** *वि०* जो मैल को छिपा सके; गर्दखोर।

**मैला** *पु०* कूड़ा; गू। **-कुचैला** *वि०* बहुत मैला। *उदा०* 'मैला पर ढेला फेंके छिटकि के आपनो पर पड़े'।

**मैहर** *पु०* मायका, नैहर।

**मोंचा** *पु०* मक्के के बाल से निकलने वाले रेशे।

**मोंछ** *स्त्री०* पुरुषों के ऊपरी ओठ के बाल।

**मोई** *स्त्री०* घी में सना हुआ आटा।
**मोक** *पु०* केंचुल।
**मोकदमा** *पु०* अभियोग, नालिश, दो पक्षों में किसी झगड़े के विषय में न्यायालय में गया हुआ विवरण। *उदा०* 'मोकदमा आ पीपर के लासा एके हऽ'।
**मोकदमाबाज** *वि०* बहुत मुकदमा लड़ने वाला व्यक्ति।
**मोकना** *पु०* एक प्रकार की घास।
**मोकरी** *स्त्री०* कम लगान पर दी जाने वाली भूमि।
**मोकल** *पु०* अवसर, उपयुक्त समय।
**मोका** *पु०* मौका।
**मोकाम** *पु०* रहने या ठहरने की जगह, निश्चित स्थान।
**मोकाबला** *पु०* मुठभेड़, मिलान, बराबरी।
**मोको** *पु०* एक तकिया कलाम 'मैंने कहा' के अर्थ में।
**मोखड़ा** *पु०* कुँआ बनाने में प्रयुक्त भट्ठे में पका हुआ मिट्टी का गोल पट्टा।
**मोखड़ी** *स्त्री०* मुहारी।
**मोखतसर** *वि०* संक्षिप्त, थोड़ा।
**मोखतार** *पु०* मुकदमे की देखभाल करने वाला कार्याधिकारी।
**मोखतारनामा** *पु०* अधिकार-पत्र।
**मोखा** *पु०* झरोखा।
**मोखातिब** *वि०* ध्यानपूर्वक सुनने वाला।
**मोखालिफ** *पु०* विरोधी, दुश्मन।
**मोगल** *पु०* मंगोल निवासी, मुसलमानों की चार प्रमुख जातियों में एक।
**मोगलवा** *पु०* बैंगनी रंग का मोटा शकरकन्द।
**मोगलान** *पु०* मुगलों का देश। इस शब्द का प्रयोग नेपाल तराई के निवासी भारत के लिए करते हैं।
**मोगली** *स्त्री०* बैलगाड़ी के टूटे हुए धूरे में लगाया गया लोहे का पत्तर।
**मोचंड** *वि०* हट्टा-कट्टा।
**मोच** *पु०* ऐंठन या चोट लगने से शरीर की किसी नस का अपने स्थान से हट जाना।
**मोचक** *वि०* [सं०] मुक्तिकारक।
**मोचन** *पु०* कष्ट से छुड़ाना।
**मोचना** *पु०* बाल उखाड़ने या गहने को मोड़ने वाला हथियार।
**मोचट्टी** *स्त्री०* खरुका।
**मोचरस** *पु०* सेमर का लस्सा, जिसका उपयोग औषधि के रूप में होता है।
**मोचल** *सक०* किसी को ठग लेना, हथिया लेना।
**ममोचलका** *पु०* न्यायालय में हाजिर होने का प्रतिज्ञापत्र।
**मोचा** *पु०* मक्के की नई बाल।
**मोची** *पु०* जूता बनाने वाला, चर्मकार।
**मोछइल** *वि०* बड़ी मूँछों वाला।
**मोछमुंडा** *पु०* सफाचट मूँछ वाला व्यक्ति।
**मोजर** *पु०* आम का बौर, मंजरी; मिनहा, निश्चित राशि में से घटाने का काम।
**मोजरा** *पु०* किसी निश्चित राशि में से कुछ रकम घटाने का कार्य; अभिवादन, सलाम; वेश्याओं द्वारा नाचने-गाने का कार्य।
**मोजराइल** *अक०* मंजरी निकलना।
**मोजा** *पु०* पायताबा, जुर्राब।
**मोजाहिम** *वि०* मुस्तैद।
**मोट** *पु०* पानी निकालने का चमड़े का थैला, चरस। *वि०* मोटा, स्थूल, अपरिष्कृत।
**मोटका** *पु० वि०* जो मोटा हो। *उदा०* 'मोटका पेड़ गहेके चाहीं'। *स्त्री०* मोटकी।
**मोटक्कड़** *पु०* अत्यन्त मोटा।

**मोटरढरवा** *पु०* मोट के बैलों को हाँकने वाला।

**मोटर** *स्त्री०* [अं०] गति बढ़ाने वाला यंत्र; सवारी गाड़ी। **-कार** *स्त्री०* मोटर, हवागाड़ी। **-खाना** *पु०* कार रखने का स्थान, मोटर गैरेज। **-ड्राइवर** *पु०* मोटर चलाने वाला। **-बस, लारी** *स्त्री०* आदमी, माल ढोने वाली गाड़ी, जो मोटर इंजिन से चलती हो। **-बोट** *स्त्री०* मोटर इंजिन से चलित नाव। **-साइकिल** *स्त्री०* मोटर इंजिन से चलित साइकिल।

**मोटरी** *स्त्री०* गठरी।

**मोटवावल** *सक०* खूब खिला-खिलाकर मोटा बनाना।

**मोटा** *वि०* मांसल; स्थूलकाय; भारी; भद्दा। **-असामी** *पु०* मालदार आदमी। **-काम** *पु०* जिसमें कुशलता की आवश्यकता न हो। **-झोटा** *वि०* घटिया। **-ताजा** *वि०* हृष्ट पुष्ट। **-आवाज** *स्त्री०* भद्दी आवाज। **-मल** *पु०* अधिक मोटा आदमी। **-हिसाब** *अव्य०* लगभग, कुछ कमोवेश।

**मोटाइल** *अक०* मोटा होना, शरीर पर मांस आना, बढ़ना।

**मोटाई** *स्त्री०* स्थूलता, मोटापन।

**मोटा-मोटी** *क्रि०वि०* मोटे तौर पर साधारणत:।

**मोटिआ** *पु०* खद्दर, गाढ़ा या खुरदरा कपड़ा।

**मोटी** *स्त्री०* दूर-दूर की जुताई।

**मोढ़ा** *पु०* बाँस की कमचियों और बेंत से बना बैठने का आसन।

**मोतरफा** *पु०* जमीन की ऊपरी सतह को इस्तेमाल करने वाले से लिया जाने वाला कर।

**मोताब** *पु०* तबीयत के अनुकूल।

**मोताबिक** *क्रि०वि०* अनुसार, अनुकूल।

**मोतिआबिन्द** *पु०* आँख का एक रोग, जिसमें पुतली पर एक पर्दा पड़ जाता है कम दीख पड़ती है।

**मोती** *पु०* [सं० मौक्तिकं] सीप से निकलने वाला एक प्रकार का रत्न।

**मोतीचूर** *पु०* महीन दाना का लड्डू।

**मोतीसर** *पु०* एक प्रकार का बारीक धान, मतिसरी।

**मोथा** *पु०* सबसे अधिक जड़ पकड़ने वाली एक घास।

**मौथी** *पु०* पतले पौधे वाला एक प्रकार का मोथा।

**मोदक** *पु०* लड्डू।

**मोदी** *पु०* आटा, दाल, सत्तू, चिउड़ा आदि बेचने वाला बनिया। **-खाना** *पु०* अन्न-भण्डार।

**मोनासिब** *वि०* उचित, उपयुक्त, समीचीन।

**मोफित** दे० 'मुफुत'।

**मोफिल** *पु०* विवाह के अवसर पर बारात आदि में नाच-गान; महफिल।

**मोम** *पु०* मधुमक्खियों के छत्ते का और चिकने भाग से तैयार एक लसीला पदार्थ। **-जामा** *पु०* मोम का रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा जिस पर पानी फिसल जाता है। **-दिल** *वि०* नरम दिल वाला। **-बत्ती** *स्त्री०* मोटे धागे पर मोम चढ़ाकर बनी बत्ती जिससे प्रकाश होता है।

**मोमबत्ती** *स्त्री०* मोम की बनी छड़ी, जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।

**मोयन** *पु०* आटा में मिलाया गया घी।

**मोर** *पु०* एक सुन्दर पक्षी, मयूर; सड़क का वह स्थान, जहाँ से वह किसी दूसरी ओर मुड़ती है। **-मुकुट** *पु०* मयूरमुकुट।

**मोरचा** *पु०* नमी के कारण लोहे में जमा लालरंग का मैल; युद्ध-स्थल।

**मोरनी** *स्त्री०* मादा मयूर, मयूरनी।
**मोरब्बा** *पु०* फलों में चीनी देकर तैयार किया गया भोज्य-पदार्थ। मुरब्बा।
**मोरब्बी** *पु०* [फा०] पिता।
**मोरल** *सक०* घुमाना, मोड़ना।
**मोरहन** *पु०* बोने के बाद से प्रथम बार ली गई फसल; तम्बाकू की एक जाति।
**मोरा** *सर्व०* मेरा।
**मोरातिब** *पु०* पद, प्रतिष्ठा।
**मोरी** *स्त्री०* गन्दे पानी के निकास की नाली।
**मोल** *पु०* कीमत, मूल्य, महत्त्व। **-तोल** *पु०* मूल्य निर्णय।
**मोलम्मा** *पु०* किसी सस्ते द्रव्य पर चढ़ाया गया अलमुनियम, सोने या चाँदी की तह; झूठी या बनावटी बात।
**मोलवी** दे० 'मौलवी'।
**मोलाई** *स्त्री०* किसी वस्तु की कीमत उसकी वास्तविक कीमत से अधिक बढ़ा चढ़ा कर कहने का भाव।
**मोलाजिम** *पु०* कार्यकर्त्ता।
**मोलायम** *वि०* *पु०* कोमल, हल्का।
**मोलावल** *सक०* किसी वस्तु की कीमत पूछना।
**मोसतैद** *वि०* तत्पर, तैयार, कटिबद्ध; मोस्तैदगी।
**मोसब्बर** *पु०* चिकुआर का जमाया हुआ रस, एक औषधि।
**मोसमी** *स्त्री०* एक प्रकार का नीम्बू, मौसम्बी।
**मोसल्लम** *वि०* समूचा, पूरा।
**मोसहरा** *पु०* मासिक वेतन।
**मोसीबत** दे० 'मुसीबत'।
**मोह** *पु०* ममता, प्रेम, आसक्ति। **-पास** *पु०* मोह का जाल। **-मुद्गर** *पु०* मोहभंजक।
**मोहकमा** *पु०* सिरिस्ता, विभाग।
**मोहखा** *पु०* मोहारी।
**मोहड़ा** *पु०* मुँह, अगला हिस्सा, मोहरा; गाड़ीवान के बैठने की जगह।
**मोहन** *पु०* कृष्ण; किसी को मोह लेने वाला मन्त्र। **-माला** *स्त्री०* सोने के दानों की बनी माला।
**मोहन भोग** *पु०* एक प्रकार का हलवा।
**मोहनी** *स्त्री०* *वि०* मोहने वाली, वश में करने वाली; मन्त्रविशेष, जिससे दूसरे को अपने वश में किया जाता है।
**मोहबरा** *पु०* मुहावरा।
**मोहब्बत** *पु०* प्रेम, स्नेह; कड़ियों का आगे का मुँह बाँधने वाली लकड़ी।
**मोहर** *पु०* सोने का सिक्का, अशर्फी, स्वर्ण-मुद्रा; पहचान के लिए लगाई गई छाप। *उदा०* 'मोहर दहायल जाय कोइला पर छापा'।
**मोहरइया** *स्त्री०* पीले मकई का अधफूटा भूँजा।
**मोहरमाला** *पु०* ऐसी माला, जिसमें एक सोने के दाने के बाद एक मूँगा दिया गया हो, अशर्फी का हार।
**मोहरा** *पु०* मुँह, सामने का हिस्सा; नाली के बगल से निकास के लिए बना पानी का रास्ता।
**मोहरी** *स्त्री०* मवेशियों के मुँह को खास प्रकार की रस्सी से बाँधने की व्यवस्था।
**मोहरीर** *पु०* जमींदारी सिरिस्ते का कागज लिखने वाला, मुहर्रिर।
**मोहर्रम** *पु०* अरबी वर्ष का वह महीना, जिसमें ताजिया बनता हो।
**मोहल** *सक०* भिगाना, अन्न या खाद्य-पदार्थ को पानी में भिगाना, मोअल; मोहित करना।

**मोहलत** *स्त्री०* अवधि, अवकाश।

**मोहाड़** *पु०* महत्त्वपूर्ण स्थान, केन्द्र।

**मोहाना** *पु०* अग्र भाग; नदी का किनारा; वह स्थान, जहाँ से रास्ता घूमता है।

**मोहाबरा** *पु०* बोलचाल में लक्षणा या व्यंजना से प्रभावित शब्द-प्रयोग।

**मोहाल** *पु०* दुर्लभ, दुष्कर, अलभ्य।

**मोहि, मोही** *सर्व०* मुझे, मुझको।

**मौका** *पु०* अवसर, उपयुक्त समय। **-बे मौका** *अव्य०* चाहे जब।

**मौखिक** *वि०* [सं०] जबानी, वाचिक।

**मौज** *स्त्री०* [अ०] लहर, तरंग; सुख, आनन्द। **-मारल** *मुहा०* ऐश करना।

**मौजा** *पु०* [अ०] स्थान; गाँव।

**मौजी** *वि०* जो मन में आए, वह कर बैठने वाला।

**मौजूँ** *वि०* [अ०] ठीक, उपयुक्त।

**मौजूद** *वि०* हाजिर, उपस्थित।

**मौत** *स्त्री०* मृत्यु, मौत।

**मौन** *पु०* चुप्पी, चुप, शान्त। **-व्रत** *पु०* न बोलने का व्रत।

**मौना** *पु०* सींक का एक प्रकार का पात्र।

**मौनी** *वि० पु०* चुप रहने का व्रत लेने वाला; चुप रहने वाला।

**मौनी अमावस** *स्त्री०* कृष्ण पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन।

**मौर** *स्त्री०* वर के सिर का अलंकार।

**मौरि** *स्त्री०* सिर, गर्दन।

**मौरी** *स्त्री०* स्त्रियों के सिर का एक शृंगार-प्रसाधन छोटा मौर।

**मौरूसी** *वि०* स्त्री० बाप-दादा से प्राप्त सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति, पैतृक (धन)।

**मौलवी** *पु०* अरबी-फारसी का विद्वान्, मौलवी।

**मौला** *पु०* [अ०] परमेश्वर।

**मौली** *स्त्री०* [सं०] पृथ्वी।

**मौलेसरी** *स्त्री०* एक प्रकार का सुगन्धित पुष्प, उसका पेड़।

**मौसम** *स्त्री०* ऋतु, उचित समय।

**मौसिमी** *वि०* [अ०] जिसका मौसम हो, वर्तमान ऋतु का। **-फल** *पु०* ऋतु फल। **-बुखार** *पु०* चैत, भादो में होने वाला बुखार।

**मौसिया** *वि०* मौसेरा।

**मौसी** *स्त्री०* माँ की बहन।

**मौसेरा** *वि०* दे० 'मौसिया'।

**म्याँवँ** *स्त्री०* [अनुकरण] बिल्ली की बोली। उदा० 'म्याँउ के मुँह के पकड़े'।

**म्यान** *स्त्री०* मियान।

**म्लेच्छ** *पु०* दुष्ट, असभ्य। *वि०* अधम, नीच, पापी।

**म्हारा** *सर्व०* हमारा।

# य

**य** देवनागरी वर्णमाला का छब्बीसवाँ व्यंजन वर्ण ('ई' तथा 'अ' के संयोग से उत्पन्न, कुछ भाषावैज्ञानिकों के अनुसार युक्ताक्षर)।

**यंता** *पु०* [सं० यन्तृ] शासक, निदेशक; चालक।

**यंत्र** *पु०* [सं०] जन्तर; औजार, कल, मशीन; ताला; बाजा; जाल; फन्दा। **-तोप** *स्त्री०* मशीन गन। **-पेषणी** *स्त्री०* चक्की। **-मंत्र** *पु०* टोना, टोटका।**-विद्या** *स्त्री०* यंत्रों के निर्माण और चालन की कला। **-शाला** *स्त्री०* बेधशाला।**-सूत्र** *पु०* कठपुतली नचाने का धागा।

**यक** *वि०* [फा०] एक; अकेला। **-जबान** *वि०* बात का पक्का। **-जान** *वि०* एक दिल, खूब घुला-मिला हुआ। **-तरफा** *वि०* एक तरफ का। **-फसली** *वि०* जो साल में एक ही फसल पैदा करे (जमीन)। **-बग्गा** *वि०* एक तरफ चलने वाला (घोड़ा)।**-बयक** *अव्य०* एकाएक, अचानक। **-बारगी** *अव्य०* सहसा, अचानक। **-मंजिला** *वि०* एक मंजिल का (मकान)। **-मुश्त** *अव्य०* इकट्ठे, एक बार में। **-रंग** *वि०* एक रंग का। **-रुखी** *वि०* एक रुख का। **-रोजा** *वि०* एक दिन का। **-लौता** *वि०* एकमात्र (पुत्र)। **-लौती** *स्त्री०* एकमात्र (पुत्री)। **-सर** *वि०* अकेला। **-साला** *वि०* एक साल का।

**यकीन** *पु०* [अ०] विश्वास।

**यकृत** *पु०* जिगर।

**यक्ष** *पु०* [सं०] एक देवयोनि; कुबेर के सेवक; भूत, प्रेत।

**यग्य** *पु०* यज्ञ।

**यच्छ** *पु०* यक्ष।

**यजमान** *पु०* [सं०] यज्ञ करने वाला।

**यजमानी** *स्त्री०* यजमानों का वास-स्थान; पुरोहिती; नाई बारी के काम को करने का अधिकार।

**यजुर्वेद** *पु०* [सं०] वह वेद, जिसमें यजुओं (गद्य मंत्रों) का संग्रह है। इसमें प्रमुखतः यज्ञ के विधि-विधान का विवरण है।

**यज्ञ** *पु०* [सं०] हवन-पूजनयुक्त एक वैदिक कृत्य; लोकहित हेतु पूजा, अनुष्ठान।**-काम** *वि०* यज्ञ करने का इच्छुक। **-कुंड** *पु०* हवन करने का कुण्ड। **-धूम** *पु०* होम का धुआँ। **-भूमि** *स्त्री०* यज्ञ का स्थान।**-मंडप** *पु०* यज्ञ का मण्डप।

**यज्ञोपवीत** *पु०* [सं०] यज्ञ द्वारा संस्कार किया हुआ उपवीत, यज्ञसूत्र, जनेऊ। **-संस्कार** *पु०* उपनयन संस्कार।

**यतन** *पु०* [सं०] प्रयत्न, कोशिश।

**यत्र** *अव्य०* [सं०] जहाँ। **-तत्र** *अव्य* जहाँ-तहाँ; जगह-जगह।

**यथा** *अव्य०* [सं०] जिस प्रकार; जैसे। उदा० 'यथा एने तथा ओने एने ओने तथैव च'। **-काल** *अव्य* उचित समय पर। **-कुल** *वि०* कुल के अनुसार। **-क्रम** *अव्य०* क्रमानुसार। **-नियम** *वि०* नियमानुसार। **-योग्य** *वि०* उपयुक्त। **-रुचि** *वि०* इच्छा के अनुरूप। **-लाभ** *वि०* जो मिले उसी के अनुरूप। **-समय** *अव्य०* निश्चित समय पर।

**यथारथ** *वि०* यथार्थ।

**यदा** *अव्य०* [सं०] जब, जहाँ। **-कदा** *अव्य०* जब-तब, कभी-कभी।

**यदि** *अव्य०* [सं०] अगर, जो।

**यदु** *पु०* [सं०] राजा ययाति का ज्येष्ठ पुत्र; यदुवंश। **-कुल** *पु०* यदुवंश। **-नन्दन, नाथ, राज** *पु०* कृष्ण। **-वंशी** *पु०* यदुकुल में उत्पन्न पुरुष, यादव।

**यम** *पु०* [सं०] मृत्यु के देवता। **-घंट** *पु०* दीपावली का दूसरा दिन। **-दुतिया** *स्त्री०* भैया दूज। **-दुआर** *पु०* यमराज के घर का दरवाजा। **-पास** *पु०* यम की फाँस। **-पुरी** *स्त्री०* यमनगरी।

**यव** *पु०* [सं०] जौ; एक जौ की तौल; तिहाई इंच; उँगली।

**यवन** *पु०* [सं०] गेहूँ; गाजर; घोड़ा; यूनान का निवासी, मुसलमान।

**यश** *पु०* [सं०] कीर्ति; प्रशंसा।

**यशी** *वि०* यशस्वी।

**यह** *सर्व०* नजदीक की वस्तु का निर्देशक सर्वनाम। विभक्ति लगाते समय खड़ी बोली में 'इस' और ब्रजभाषा में 'या' हो जाता है।

**यहाँ** *अव्य०* इस जगह।

**यही** *अव्य०* निश्चित रूप से ही। *उदा०* 'यही मुँह मसूर के दाल'।

**याचक** *पु०* [सं०] माँगने वाला, भिखारी।

**यातना** *स्त्री०* [सं०] पीड़ा, कष्ट।

**यातायात** *पु०* [सं०] आना-जाना, गमनागमन।

**यात्रा** *स्त्री०* [सं०] जाने की क्रिया; तीर्थ-यात्रा।

**यात्री** *पु०* [सं०] मुसाफिर, तीर्थयात्री।

**याद** *स्त्री०* [फा०] स्मृति, स्मरणशक्ति। **-गार, गारी** *स्त्री०* स्मृतिचिह्न।

**यादव** *पु०* [सं०] यदु का वंशज; कृष्ण।

**यायावर** *वि०* [सं०] सदा भ्रमण करने वाला, खानाबदोश। *पु०* संन्यासी।

**यार** *पु०* [फा०] मित्र; प्रेमी।

**यारी** *स्त्री०* मैत्री। *उदा०* 'यार के यारी भतार के लाली'।

**युग** *पु०* [सं०] युग्म, जोड़ा; पीढ़ी; जमाना। *वि०* दो की संख्या। **-चेतना** *स्त्री०* काल विशेष की विशिष्ट प्रवृत्ति। **-धर्म** *पु०* समयानुकूल आचरण। **-पुरुष** *पु०* युग का महान् पुरुष।

**युनिवर्सिटी** *स्त्री०* विश्वविद्यालय, विद्यापीठ।

**युवक** *पु०* [सं०] तरुण, जवान।

**युवती** *स्त्री०* [सं०] जवान स्त्री।

**यूनानी** *पु०* यूनान का नागरिक। *स्त्री०* यूनान की भाषा। *वि०* यूनान देश का।

**यूनियन** *स्त्री०* [अं०] संघ, सभा।

**यूनीफार्म** *पु०* [अं०] किसी विशेष संस्था की विशेष पोशाक।

**यूरोप** *पु०* [अं०] पूर्वी गोलार्द्ध का महाद्वीप।

**ये** *सर्व०* यह सब, सर्वनाम 'यह' का बहुवचन। *उदा०* 'ये छूँछा के के पूछा'।

**येई** *सर्व०* यही।

**येह** *सर्व०* यह। *उदा०* 'येह तिल में तेल नइखे'।

**येही** *सर्व०* इसी। *उदा०* 'येही माघे जाड़ा ना नू जाई'।

**येहू** *अव्य०* यह भी।

**योग** *पु०* [सं०] जोड़ने का कार्य; संयोग; सम्पर्क। **-फल** *पु०* जोड़।

**योगी** *वि०* [सं०] जुड़ा हुआ; सम्बन्धयुक्त; योगाभ्यासी; तपस्वी। *उदा०* 'योगी का कुत्ता बलाय'।

**योजना** *स्त्री०* [सं०] संयोजन, व्यवस्था, आयोजन।

**योनि** *स्त्री०* [सं०] उत्पत्ति स्थान, स्त्रियों की जननेन्द्रिय, गर्भाशय; भग।

**यौगिक** *वि०* [सं०] मिला हुआ; योग सम्बन्धी।

**यौन** *वि०* [सं०] योनि का, योनि सम्बन्धी।

**यौवन** *पु०* [सं०] जवानी।

# र

**र** देवनागरी वर्णमाला के अन्तस्थ का दूसरा वर्ण, उच्चारण-स्थान मूर्द्धा। यह सर्वनाम में प्रत्यय रूप में लगाने पर सम्बन्ध-कारक का बोध कराता है।

**रंक** *वि०* [सं०] गरीब, निर्धन; कंजूस; आलसी। *पु०* निर्धन मनुष्य। *उदा०* 'रंक राजा पूत प्रजा'।

**रंग** *पु०* [सं०] राँगा धातु; सोहागा; क्रीडागार; रंगमंच; वर्ण। **-कार** *पु०* रँगने वाला। **-क्षेत्र** *पु०* समारोह-स्थल। **-देवता** *पु०* रंगभूमि का देवता। **-पीठ** *पु०* नृत्यशाला। **-बिरंग, बिरंगा** *वि०* अनेक रंगों वाला। **-भरिया** *पु०* रंगसाज। **-भवन** *पु०* रंगमहल। **-मंच** *पु०* अभिनय का स्थान। **-मंडप** *पु०* रंगभूमि। **-महल** *पु०* प्रमोद भवन, अंत:पुर। **-रसिया** *पु०* मौजी, विलासी। **-रूप** *पु०* शक्ल, सूरत।

**रंग** *पु०* शोभा, सौन्दर्य; आनन्द-मौज; ठाट-बाट; असर, प्रभाव; प्रेम, राग, तरंग। **-ढंग** *पु०* हाल, तौर-तरीका। **-रली** *स्त्री०* आनन्द। **-उखड़ल** *मुहा०* धाक न रहना। **-उजड़ल** *मुहा०* रौनक घटना।

**रंगई** *पु०* छपे हुए वस्त्रों को धोनेवाली धोबियों की जाति।

**रंगत** *स्त्री०* चमक, हालत, छवि।

**रंगदार** *वि०* खूब रंगीन, चटकीला, चमकदार रोब जमाने वाला।

**रंगमेवा** *पु०* पपीता।

**रंगरूट** *पु०* [अं० रिक्रूट] सेना या पुलिस में नया भर्ती किया गया आदमी, नवसिखुआ।

**रंगरेज** *पु०* कपड़ा रँगने वाला।

**रंगल** *सक०* किसी रंग में डुबाकर या रंग लेपकर रंगीन बनाना।

**रंगा** *पु०* एक प्रकार की सफेद मुलायम धातु, जिसका उपयोग रंगने में होता है।

**रंगाई** *स्त्री०* रँगने की क्रिया या भाव, रँगने की मजदूरी।

**रंगावल** *सक०* दूसरे से रंग चढ़वाना।

**रँगिया** *पु०* रँगाई का काम करने वाला; रंग बनाने वाला।

**रंगी** *वि०* प्रसन्नचित्त, मनमौजी।

**रंगीन** *वि०* रँगा हुआ, रंगदार।

**रंगीनी** *स्त्री०* रंगीलापन।

**रंगीला** *वि०* विलास-प्रिय, रसिक हृदय।

**रंची** *स्त्री०* सरसों की एक किस्म।

**रंज** *पु०* अफसोस। *वि०* नाराज।

**रंजिस** *पु०* क्रोध, दुश्मनी।

**रंडा** *पु०* वह पुरुष, जिसकी पत्नी मर गई हो।

**रंडी** *स्त्री०* वेश्या, दुश्चरित्र स्त्री। *उदा०* 'रंडी केकर बहू भड़ुआ केकर सार'।

**रंडीबाज** *पु०* वेश्याओं में रुचि रखने वाला; दुश्चरित्र; वेश्यागामी।

**रँड़ापा** *स्त्री०* विधवापन।

**रँडुआ** *पु०* वह पुरुष, जिसकी स्त्री मर गई हो।

**रंथी** *स्त्री०* बाँस का बना एक ढाँचा, जिस पर मृतक को श्मशान घाट ले जाते हैं।

**रंदल** *सक०* रन्दा से छीलकर लकड़ी को चिकना बनाना।

**रंदा** *पु०* लकड़ी को छीलकर चिकना करने का औजार।

**रंबा** *पु०* लम्बे छेद के लिए एक औजार।

**रंभा** *पु०* लोहे का मोटा, चिपटे सिर वाला बड़ा डण्डा, जिससे दीवार में छेद किया जाता है। *स्त्री०* [सं०] केला; एक अप्सरा का नाम।

**रंभाइल** *अक०* गाय का बोलना।
**रइअत** *स्त्री०* [अ०] प्रजा, आसामी, नौकर।
**रइनि** *स्त्री०* रात, रैन।
**रई** *स्त्री०* मथनी, रही; चोकर।
**रईस** *पु०* [अ०] सरदार (राजा, नवाब, अमीर); शरीफ, प्रतिष्ठित आदमी। **-जादा** *पु०* रईस का लड़का। **-जादी** *स्त्री०* रईस की लड़की।
**रईसी** *स्त्री०* अमीरी।
**रउआँ** *सर्व०* आप, तुम के लिए आदर-सूचक सम्बोधन। *उदा०* 'रउआँ आगो में हईं, पानीओ में हईं'।
**रउताइन** *स्त्री०* राउत की पत्नी।
**रउताई** *स्त्री०* स्वामित्व।
**रउरे** *सर्व०* मध्यम पुरुष का आदरसूचक शब्द, आप।
**रउद** *पु०* धूप, घाम।
**रउनक** *पु०* चमक-दमक, शोभा, रौनक।
**रउनल** *सक०* रौंदना, चक्कर काटना, बार-बार आना-जाना।
**रउला** *पु०* धक्कम-धक्का, ठेलम-ठेला।
**रउस** *पु०* रंग-ढंग।
**रकझक** *यौ०* कहासुनी, नोक-झोंक।
**रकटना** *पु०* लालायित, वस्तु के नहीं मिलने पर उत्पन्न मनोदशा।
**रकटल** *अक०* प्रबल इच्छा रखते हुए भी उसे नहीं पाने पर लालायित रहना। *उदा०* 'रकटल बेटी का कोहड़ा सनेस'।
**रकत** *पु०* खून, लहू। *वि०* लाल।
**रकत चन्दन** *पु०* चन्दन की वह लकड़ी, जो घिसने पर लाल रंग की हो जाती है। लाल चन्दन।
**रकबा** *पु०* क्षेत्रफल।
**रकम** *पु०* धन, राशि, अन्न।
**रकसा** *पु०* चीना का एक भेद, लाल ज्वार।
**रकसी** *वि०* लाल गूदावाला (अमरूद)।
**रकबँच** *पु०* बेसन लगाकर तली गई सब्जी रिकबँछ।
**रकाब** *पु०* घोड़ा के जीन से लटकने वाला पावदान।
**रकाबी** *स्त्री०* [फा०] तश्तरी, छोटी छिछली थाली।
**रक्षक** *वि० पु०* पहरा देने वाला।
**रक्षा** *स्त्री०* [सं०] रखवाली, सुरक्षा।
**रख, रखा** *स्त्री०* चरी।
**रखउनी** *स्त्री०* रखवाली करने की मजदूरी।
**रखउर** *वि०* राख के रंग की मिट्टी।
**रखत-बखत** *यौ०* कारोबार की जगह या साधन।
**रखनिहार** *पु०* रखनेवाला।
**रखनी** *स्त्री०* रखैल, उपपत्नी।
**रखवाई** *स्त्री०* पहरेदारी।
**रखवार** *पु०* रखवाली करने वाला, पहरेदार।
**रखवारी** *स्त्री०* रखवाली।
**रखवाला** *पु०* रक्षा करने वाला, रक्षक; पहरेदार।
**रखवाली** *स्त्री०* सुरक्षा।
**रखांत** *पु०* खर और घास उपजाने के लिए बिना जोती छोड़ी गई भूमि।
**रखेली** *स्त्री०* यौन-सम्बन्ध के लिए रखी गई स्त्री। रखैल
**रग** *स्त्री०* [फा०] नस, नाड़ी; आँख का डोरा। **-दार** *वि०* रेशेदार।
**रगड़, रगड़ा** *पु०* रगड़ लगाना, झगड़ा करते रहने की स्थिति।
**रगड़ल** *सक०* घिसना, पीसना; किसी काम को परिश्रम से करना।
**रगड़ी** *वि०* हठी, जिद्दी।
**रगवासा** *पु०* दोनों जाँघों के बीच की जगह।

**रगुआ** *वि०* बनावटी।
**रगेदल** *सक०* खदेड़ना, भगाना, पीछे पड़ना।
**रघवा बरार** *पु०* समुद्र या नदी की एक बड़ी मछली, जो आदमी को निगल जाती है; लोक-कथाओं का एक कल्पित पात्र, जो कथा को गति देता है।
**रघुनंदन** *पु०* रामचन्द्र। *उदा०* 'रघुनंदन से करब बैर, सबकर तूँ ही धरब पैर'।
**रघुनाथ** *पु०* रामचन्द्र।
**रचना** *स्त्री०* कृति, किया गया कार्य।
**रचल** *सक०* कलात्मक ढंग से लिखना या चित्र बनाना।
**रचयिता** *पु०* निर्माता, ग्रन्थकार, रचनाकार।
**रछक** *पु०* रक्षा करने वाला, रक्षक।
**रछेया** *स्त्री०* रक्षा, बचाव, रक्षण।
**रछेया बंधन** *पु०* श्रावणी पूर्णिमा को होने वाला हिन्दुओं का त्योहार, जिसमें बहन अपने भाई की कलाई में रक्षासूत बाँधती है, रक्षाबन्धन।
**रजइसी** *वि०* राजा-सा, राजसी।
**रजउ** *वि०* राजा-सा। *पु०* राजा का विस्तृत रूप।
**रजगज** *यौ०* चहल-पहल, धूम-धाम।
**रजला** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान।
**रजवा** *पु०* राजा का विस्तृत रूप।
**रजवा-रनिया** *यौ०* राजा-रानी का विस्तृत रूप।
**रजाई** *स्त्री०* रूईभरा लिहाफ।
**रजिआ** *पु०* डेढ़ सेर की नाप (रकम)।
**रजिस्टर** *पु०* [अं०] पंजी, बही, हाजिरी की किताब।
**रजिस्टर्ड** *वि०* [अं०] पंजीबद्ध।
**रजिस्ट्रार** *पु०* [अं०] जो रजिस्ट्री करे, सरकारी अधिकारी का पद।
**रटंत** *स्त्री०* रटाई, रटने की क्रिया।
**रटंती** *स्त्री०* [सं०] माघ कृष्ण चतुर्दशी की पुण्यतिथि।
**रट** *स्त्री०* किसी शब्द या वाक्य को बार-बार कहने का कार्य।
**रटन** *स्त्री०* रटने की क्रिया।
**रटल** *सक०* [सं० रटनं] किसी शब्द या वाक्य को बार-बार कहना; जोर-जोर से कहना।
**रटावल** *सक०* किसी शब्द या वाक्य को दूसरे से बार-बार कहवाना।
**रड** *वि०* उद्दण्ड।
**रत** 'रात' का लघुरूप। **-जगा** *पु०* रात्रि-जागरण। **-वाँस** *पु०* रात का चारा (हाथियों, घोड़ों का)।
**रतउन्ही** *स्त्री०* आँख का एक रोग, जिससे रात को नहीं सूझता है, रतौंधी।
**रतजागा** *पु०* किसी उत्सव या अन्य कारण से रातभर जगने की स्थिति।
**रतन** *पु०* एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, रत्न। **-जेस** *स्त्री०* मणिविशेष।
**रतनाकर** *पु०* रत्नाकर। रत्नों का समूह।
**रतनागर** *पु०* सागर।
**रतनार** *वि०* [सं० रत्नं] लालीयुक्त, लालिमा लिये हुए।
**रतवा** *पु०* बड़ी टाँग वाला एक पक्षी।
**रतवाही** *स्त्री०* रात में काम करने की स्थिति।
**रतार** *पु०* एक प्रकार का कन्द, जिसकी तरकारी बनती है।
**रतालू** दे० [सं० रतालुः] रतार।
**रति** *स्त्री०* [सं०] कामदेव की पत्नी; प्रेम अनुराग, प्रीति; सम्भोग, मैथुन। **-कर** *वि०* प्रेमवर्द्धक। *पु०* कामी। **-कलह** *पु०* सम्भोग, मैथुन। **-कांत** *पु०* कामदेव। **-केलि** *स्त्री०* सम्भोग-क्रीडा। **-नाह** *पु०* कामदेव। **-प्रिया** *वि०* *स्त्री०* वह

स्त्री, जिसे मैथुन प्रिय हो। **-रस** *वि०* प्रेम जैसा मधुर। **-राइ** *पु०* कामदेव। **-समर** *पु०* मैथुन।

**रतिगराह** *क्रि०वि०* जब कुछ रात शेष रहती है तब का समय।

**रत्ती** *स्त्री०* [सं० रक्तिका] एक प्रकार की लता।

**रतोन्ही** *स्त्री०* रात्रि में नहीं सूझने का नेत्र-रोग, रतौंधी।

**रथ** *पु०* प्राचीन काल में व्यवहृत होने वाली एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

**रद्द** *वि०* जिसमें काट-छाँट या परिवर्तन किया गया हो।

**रद्दी** *वि०* बेकार, अनुपयोगी, रद्दी।

**रधिका** *स्त्री०* राधा।

**रन** *पु०* लड़ाई, युद्ध, रण।

**रनबन** *पु०* भयानक जंगल।

**रनिवास** *स्त्री०* रानियों का महल, अन्त:पुर।

**रपट** *स्त्री०* दौड़-धूप, चक्कर, बिछलन।

**रपटल** *अक०* चक्कर काटना, घूमना, बिछल जाना।

**रफ** *वि०* [अं०] कच्चा, जल्दी में किया हुआ; नमूने के तौर पर बना हुआ; खुरदरा।

**रफरी** *पु०* [अं०] वह व्यक्ति, जो किसी खेल, मामले का निर्णय करता है।

**रफल** *पु०* ऊनी चादर; रैपर। *स्त्री०* एक प्रकार की बन्दूक, राइफल।

**रफा** *पु०* [अ०] उठाना, ऊँचा करना; निकालना; दूर करना; फैसला करना। **-दफा** *पु०* खत्म करना, फैसला करना।

**रफू** *पु०* वस्त्र के फटे या कटे भाग को तागे की जाली से भरने का काम।

**रब** *पु०* [अ०] ईश्वर, मालिक।

**रबड़** *पु०* एक जंगली पेड़ से निकले द्रव से बनाया गया लचीला पदार्थ।

**रबड़ी** *स्त्री०* औंटा कर गाढ़ा किया हुआ दूध।

**रबदा** *पु०* कीचड़; बार-बार आने-जाने से होने वाला श्रम।

**रबर** *पु०* [अं०] दे० 'रबड़'।

**रबरब** *पु०* हल्की तीखाई।

**रबरबाइल** *अक०* हल्का तीखा लगना।

**रबाना** *पु०* एक प्रकार का झाँझ, डफ।

**रबिहन** *स्त्री०* बसन्त ऋतु में होने वाली फसल।

**रबी** *स्त्री०* बसन्त ऋतु में काटी जाने वाली फसल।

**रमइया** *पु०* राम का विस्तृत रूप।

**रमकजरा** *पु०* मोटा धान।

**रमचेलवा** *पु०* छोटा लड़का, जो विशेषत: साधुओं की सेवा में रहता है।

**रमजान** *पु०* अरबी पंचांग के अनुसार एक महीना, जिसमें मुसलमान रोजा रहते हैं।

**रमत-झमत** *क्रि०वि०* आरामपूर्वक चलना; गैरजिम्मेदार ढंग से चलना।

**रमता** *वि०* घूमते रहने वाला साधु, योगी आदि। *कहा०* 'रमता जोगी बहता पानी'।

**रमन-चमन** *यौ०* मनोरंजन, बन-बहलाव का साधन।

**रमना** *पु०* वह मैदान, जो टहलने, खेलकूद आदि के लिए रहता है।

**रमनी** *स्त्री०* रमणी। एक प्रकार का धान।

**रमनीक** *वि०* रमणीक।

**रमरमहट** *स्त्री०* बहुतों के एक साथ राम-राम कहने या धीरे-धीरे बोलते रहने की स्थिति।

**रमरहरा** *पु०* बड़े दानेवाली अरहर।

**रमल** *अक०* व्याप्त होना, घूमते-फिरते रहना, अनुरक्त होना।

**रमा** *स्त्री०* [सं०] पत्नी; लक्ष्मी; सौभाग्य; सम्पत्ति। **-कांत** *पु०* विष्णु। **-नरेश** *पु०* विष्णु। **-पति** *पु०* विष्णु। **-बीज** *पु०* एक तांत्रिक मंत्र।
**रमाली** *पु०* एक बारीक चावल।
**रमायन** दे० 'रामायण'।
**रमुझ** *पु०* रहस्य, तथ्य।
**रमुनी** *स्त्री०* एक प्रकार का गोल और मोटा धान।
**रमैनी** *स्त्री०* कबीर के बीजक का दोहों-चौपाइयों युक्त भाग।
**रमैया** *पु०* राम, ईश्वर।
**रयनि** *पु०* [सं० रजनी] रात।
**रर** *स्त्री०* रट, रटन।
**रव** *पु०* [सं०] ध्वनि, शब्द।
**रवल** *अक०* धीमी-धीमी आवाज करना।
**रवा** *पु०* चीनी या मिश्री का छोटा दाना; गहने में जड़ा छोटा टुकड़ा; घुँघरू।
**रवाइल** *अक०* लक़ड़ी का अधिक पककर फटने लगना।
**रवादार** *वि०* दानेदार।
**रवाना** *वि०* [फा०] चला हुआ, प्रस्थित।
**रवानी** *स्त्री०* बढ़ाव, प्रवाह; *वि०* आनन्द-प्रवाह में मग्न।
**रवि** *पु०* [सं०] सूर्य; अग्नि; सरदार; मदार। *उदा०* 'जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि'। **-तनया** *स्त्री०* यमुना। **-दिन** *पु०* इतवार। **-नाथ** *पु०* कमल। **-वार** *पु०* रविवार।
**रवें-बवें** *क्रि०वि०* अकारण, अकारथ।
**रवें-रवें** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।
**रवैया** *पु०* चाल-ढाल, रंग; तौर-तरीका।
**रस** *पु०* किसी फल या हरी सब्जी को निचोड़ने से प्राप्त तरल पदार्थ; आनन्द अनुराग; स्वाद; साहित्य के शृंगारादि नौ रत्न।
**रसगर** *वि०* जिसमें अधिक रस हो, रसदार।
**रसगुल्ला** *पु०* छेने की एक प्रकार की रसदार मिठाई।
**रसद** *पु०* [फा०] राशन।
**रसदार** *वि०* रसपूर्ण, रसयुक्त, रसीला, शोरबेदार।
**रसपिपरी** *स्त्री०* एक औषधि, जिसका उपयोग बच्चों की खाँसी में होता है।
**रसभरी** *स्त्री०* मकोय।
**रसराज** *पु०* शृंगार, औषधि।
**रसरी** *स्त्री०* रस्सी।
**रसल** *सक०* किसी धातु-निर्मित वस्तु के टूटे अंश की मरम्मत के लिए राँगा या पीतल गला कर उस पर लगाना।
**रसवत** *पु०* कोई काम कराने के लिए किसी को गुप्त रीति से दिया गया नाजायज पैसा, रिश्वत।
**रसहा** *पु०* ईख के कोल्हू की वह नाली, जिससे रस निकलकर बर्तन में आता है।
**रसा** *पु०* [सं० रसः] तरकारी या मांस आदि में डाला गया रसदार मसाला; शोरबा।
**रसाइन** *पु०* रसायन।
**रसाइल** *अक०* रसा जाना।
**रसाई** *स्त्री०* मक्खी के मल से उत्पन्न कीड़ा।
**रसातल** *पु०* पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में एक। **-में पहुँचावल** *मुहा०* किसी काम का नहीं छोड़ना।
**रसायन** *पु०* आयुर्वेदीय विधि से तैयार वस्तुओं की भस्म।
**रसाह** *वि०* रसदार (फल); नमीयुक्त (मिट्टी)। जो अभी ठीक नहीं हुआ हो, ऐसा पीब वाला घाव।
**रसिआउर** *पु०* ईख के रस या गुड़ से बनी खीर।
**रसिक** *वि०* [सं०] मौजी, आनन्दी।

**रसिदावन** *पु०* मालगुजारी की रसीद देते समय पटवारी द्वारा लिया गया शुल्क।
**रसिया** *वि०* रसिक, विलासप्रिय।
**रसिवढ़** *पु०* खलिहान में अनाज के ढेर से तौलने के पूर्व निकाला गया थोड़ा अनाज, जो ब्राह्मण को दिया जाता है।
**रसीद** *पु०* किसी से द्रव्य या कोई वस्तु मिलने का प्रमाण-पत्र।
**रसीला** *वि०* रसयुक्त, रसपूर्ण।
**रसुन** *पु०* [सं०] लहसुन।
**रसूम** *पु०* [अ०] रस्म का बहुवचन रस्म; नियम; नजराना, भेंट।
**रसूल** *पु०* पैगम्बर, ईश्वर का दूत।
**रसूली** *वि०* [अ०] रसूल का।
**रसे-रसे** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।
**रसोइया** *पु०* रसोई बनाने वाला।
**रसोई** *स्त्री०* भोजन, पकाया हुआ खाद्य-पदार्थ। **-घर** *पु०* पाकशाला, चौका। **-दार** *पु०* रसोइया, भोजन बनाने वाला। **-दारी** *स्त्री०* भोजन बनाने का काम।
**रसोन** *पु०* [सं०] लहसुन।
**रसोय** *स्त्री०* रसोई।
**रसौर** *पु०* रसिआउर।
**रस्ता** *पु०* रास्ता।
**रस्म** *स्त्री०* [अ०] प्रथा, चलन, रिवाज।
**रस्सी** *स्त्री०* डोरी। **-बाट** *पु०* रस्सी बनाने वाला।
**रह** 'राह' का संक्षिप्त रूप। **-जन** *पु०* लुटेरा। **-जनी** *स्त्री०* लुटेरापन। **-नुमा** *पु०* पथ-प्रदर्शक। **-बर** *पु०* मार्गदर्शक।
**रहजनी** *स्त्री०* डकैती, बटमारी।
**रहट** *स्त्री०* कुएँ से पानी निकालने का यंत्र।
**रहठा** *पु०* डण्ठल, रहर का सूखा पौधा।
**रहता** *पु०* रास्ता, राह, पगडण्डी।
**रहन** *स्त्री०* चाल-चलन, आचार, ढंग, व्यवहार।
**रहनि** *स्त्री०* चाल-ढाल।
**रहबट** *यौ०* आने-जाने का आम रास्ता।
**रहम** *पु०* [अ०] दया, कृपा।
**रहमत** *स्त्री०* [अ०] मेहरबानी।
**रहमान** *वि०* परम कृपालु।
**रहर** *स्त्री०* अरहर, एक प्रकार की दलहन। *उदा०* 'रहरिया रे तोर गुन गवलो न जाता'।
**रहल** *अक०* ठहरना, रुकना, निवास करना।
**रहसल** *अक०* अगराना, इतराना।
**रहसह** *यौ०* विलम्ब; बर्दाश्त।
**रहन-सहन** *यौ०* चाल-ढाल, व्यवहार, तौर-तरीका।
**रहा** *वि०* बचा हुआ। **-सहा** *वि०* बचा-खुचा।
**रहाइल** *पु०* कुछ समय के लिए फुर्सत, मोहलत।
**रहाई** *स्त्री०* मुकदमे से मुक्ति, छुटकारा।
**रहिला** *पु०* चना।
**रही** *स्त्री०* मथानी।
**रहेठा** *पु०* अरहर का सूखा डण्ठल।
**राँट** *पु०* वैसी ईंट, जो अधिक पक जाने पर टेढ़ी-मेढ़ी बेकार हो जाती है।
**राँकड** *स्त्री०* कंकरीली मिट्टी।
**राँड़** *स्त्री०* वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो, विधवा। *उदा०* 'राँड़ मउगी साँढ़'।
**राँड़सारी** *स्त्री०* श्राद्ध के समय मृत पुरुष की विधवा के लिए नेवता के साथ जाने वाली साड़ी।
**राँड़ी** *स्त्री०* स्त्रियों की एक गाली, विधवा।
**राँवाँ** *सर्व०* आदरसूचक।
**राइ** *पु०* राय, सरदार।
**राइल** *पु०* रायता।
**राइफल** *स्त्री०* [अं०] रायफल।
**राई** *स्त्री०* सरसों-सा एक तेलहन, जो आकार में छोटा होता है।

**राईबाल** *पु०* तितर-बितर, छिन्न-भिन्न।
**राउटी** *स्त्री०* मोटे नीचू कपड़े का घर जैसा बना डेरा।
**राउत** *पु०* अहीरों, कुरमियों आदि जात की एक उपाधि।
**राउर** *सर्व०* आपका।
**राउरे** *सर्व०* आपका ही।
**राकस** *पु०* राक्षस, दैत्य; वह बच्चा, जिसके अतिरिक्त नेत्र, हाथ, पैर आदि हों। *उदा०* 'राकस के घर में भँवरा पकरवान'।
**राकसाइन** *स्त्री०* राक्षसी, क्रूर स्वभाव की स्त्री।
**राका** *स्त्री०* [सं०] पूर्णिमा की रात; पूर्णिमा। **-पति** *पु०* चन्द्रमा।
**राक्षस** *पु०* [सं०] दैत्य।
**राख** *स्त्री०* भस्म, विभूति।
**राखल** *सक०* रखा हुआ।
**राखी** *स्त्री०* हाथ की कलाई पर बाँधने का मंगल-सूत्र। *उदा०* 'बँधा हुआ है इस धागे में भाई-बहन का प्यार, राखी धागों का त्योहार'।
**राग** *पु०* गाने की ध्वनि, जिसके छह प्रकार माने गए हैं।
**रागनी** *स्त्री०* प्रत्येक राग की अपनी रागिनियाँ होती हैं, जो गायन की ध्वनि के भेद हैं।
**रागी** *स्त्री०* रानी।
**रागी** *पु०* [सं०] प्रेमी।
**राघव** *पु०* [सं०] राम।
**राछ** *पु०* बाजीगरों का औजार।
**राछस** *पु०* [सं० राक्षसः] असुर, दानव, दैत्य।
**राज** *वि०* [सं० राज्यं] राज्य-शासन, राजा का अधिकार-क्षेत्र। *उदा०* 'राज छोड़ गौरा भीख माँगे'।
**राजगीर** *पु०* ईंट या पत्थर का घर बनाने वाला मिस्त्री।
**राजगृह** *पु०* एक स्थान, जो कभी मगध की राजधानी थी, राजगिरी।
**राजधानी** *स्त्री०* किसी देश के शासन के लिए, जहाँ राजा या उच्च शासक स्थायी तौर पर रहता है।
**राजपूत** *पु०* हिन्दुओं की एक जाति।
**राजपूतान** *पु०* भारत का एक प्रदेश, जहाँ राजपूतों की अधिक बस्तियाँ हैं।
**राजबाहा** *पु०* वह बड़ा नहर या नाला, जिससे छोटी-छोटी नालियाँ निकलती हैं।
**राजभँट** *पु०* भाँट जाति।
**राजभोग** *पु०* एक मिठाई।
**राजमहल** *पु०* राजा एवं उसके परिवार के सदस्यों के रहने का महल।
**राजवाड़ा** *पु०* देशी राज्य, रियासत, राज्यों का समूह।
**राजरेंट** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान।
**राजसी** *वि०* राजाओं के योग्य, बहुमूल्य।
**राजा** *पु०* राज्य का स्वामी और मुख्य शासक; बड़ा जमींदार; पति प्रेमी आदि के लिए। *उदा०* 'राजा बूझे से न्याय'।
**राजी** *वि०* कही बातों को मानने को तैयार, सहमत।
**राटन** *स्त्री०* एक प्रकार की घास, जिसे पशु खाता है।
**राटिन** *स्त्री०* एक मोटा धान।
**राठौर** *पु०* राजपूतों की एक उपजाति।
**राड़** *वि०* उद्दण्ड, दुष्ट। *उदा०* 'राड़ लतिअवले'।
**राड़ी** *स्त्री०* एक प्रकार की कुश की जाति की घास, खर।
**राढ़ी** *स्त्री०* आम का एक भेद; एक मोटी घास।

**रात** *स्त्री०* [सं० रात्रिः] सन्ध्या से प्रभात तक का समय, रात्रि। उदा० 'रात के जागे जोगी'। **-दिन** *अव्य०* सर्वदा।
**राताराती** *क्रि०वि०* रात में ही किया गया।
**रातरानी** *स्त्री०* रात में फूलने वाला एक प्रसिद्ध सुगन्धित फूल।
**रातुल** *वि०* लाल (लो०)।
**रादा** *पु०* जोड़ाई में उस पर रखी गई ईंटों की पंक्ति; पीठ पर मारा गया थप्पड़।
**राधा** *स्त्री०* वृषभानु की पुत्री और कृष्ण की प्रियतमा, राधिका। **-कांत** *पु०* कृष्ण। **-चक्कर** *पु०* एक प्रकार की आतिशबाजी, जो प्रज्ज्वलित होने पर बिजली-सी कौंधती है।
**रान** *पु०* जाँघ, जंघा।
**राना** *पु०* दे० 'रंदा'।
**रानी** *स्त्री०* [सं० राज्ञी] राजा की पत्नी।
**राफ** *वि०* दूर किया हुआ।
**राब** *पु०* औंटकर गाढ़ा किया गया ईख का रस, जिससे गुड़ बनता है।
**राबड़ी** *स्त्री०* औंट कर गाढ़ा किया हुआ दूध।
**राम** *पु०* विष्णु के दस अवतारों में एक, अयोध्या के राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र। उ० 'राम के नाम परात के बेरी'।
**रामजवाइन** *पु०* एक प्रकार का बारीक और सुगन्धित धान।
**रामतरोई** *स्त्री०* एक प्रकार की सब्जी, भिण्डी।
**रामदाना** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसका बीज बहुत छोटा होता है और उसकी लाई बनती है।
**रामदुलारी** *स्त्री०* एक प्रकार का धान।
**रामनवमी** *पु०* चैत्र शुक्ल नवमी, जिस दिन राम का जन्म हुआ है।
**रामनामा** *पु०* वह वस्त्र, जिस पर राम के नाम सर्वत्र छपे हों।
**रामबेलास** *पु०* एक प्रकार का धान।
**रामरज** *यौ०* एक प्रकार की पीली मिट्टी, जिससे साधु तिलक करते हैं और मकान रँगा जाता है।
**रामरस** *पु०* नमक के लिए प्रयुक्त शब्द।
**रामलड्डू** *पु०* प्याज के लिए संकेतात्मक शब्द।
**रामलीला** *स्त्री०* एक प्रकार का नाटक, जिसमें राम का चरित्र अभिनीत होता है।
**रामसाल** *पु०* एक प्रकार का धान।
**रामा** *स्त्री०* [सं०] सुन्दरी बाला।
**रामायण** *पु०* वाल्मीकि ऋषि द्वारा रचित वह काव्य-ग्रन्थ, जिसमें राम-चरित्र वर्णित है; रामचरितमानस।
**रामायनी** *स्त्री०* राम की कथा कहने में प्रवीण।
**रामेश्वर** *पु०* दक्षिण भारत के समुद्र-तट पर लंका जाते समय राम द्वारा पूजित शिवलिंग।
**राय** *पु०* भूमिहारों बन्दीजनों एवं अहीरों की उपाधि; परामर्श, मत।
**रायटर** *पु०* [अं०] समाचार भेजने वाली एक एजेंसी।
**रायता** *पु०* उबले साग में मसाला, दही मिलाकर तैयार एक चटकदार भोज्य-पदार्थ।
**रार** *पु०* झगड़ा, करार, विवाद।
**रावटी** *स्त्री०* कपड़े का बना खेमा, छोलदारी।
**रावन** *पु०* लंका का राजा, जिसने सीता का हरण किया था, रावण।
**रावली** *स्त्री०* चैत के महीने में होने वाला एक नृत्य, जिसमें मुख्य नर्तक राजा के रूप में रहता है।
**राष्ट्र** *पु०* [सं०] देश; राज्य; जाति। **-ध्वज** *पु०* राष्ट्रीय झण्डा। **-पति** *पु०* सर्वप्रधान

शासक। **-भाषा** *स्त्री॰* राष्ट्र की मुख्य प्रचलित भाषा, सार्वजनिक कार्यों हेतु प्रयुक्त भाषा। **-वादी** *पु॰* (नैशनलिस्ट) राष्ट्रहित को सर्वाधिक महत्त्व देने वाला व्यक्ति। **-संघ** *पु॰* (लीग ऑफ नैशन्स) विश्व के राष्ट्रों का संघ।

**रास** *पु॰* [अव्य॰] जुते हुए बैल की रस्सी; खलिहान में लगी अन्न की राशि; जन्म-लग्न।

**रासधारी** *स्त्री॰* थारुओं में प्रचलित एक प्रकार का नृत्य।

**रासलीला** *स्त्री॰* एक प्रकार का लोक- नाटक, जिसमें कृष्ण-चरित अभिनीत होता है।

**रास्ता** *पु॰* [फा॰] बाट, राह।

**राह** *स्त्री॰* [फा॰] रास्ता, बाट, मार्ग; प्रथा। *उदा॰* 'राह बतावे त आगे धावे'। **-खरच** *पु॰* मार्गव्यय। **-गीर** *पु॰* पथिक। **-चबेनी** *स्त्री॰* चने का भूँजा। **-चाह** *स्त्री॰* रंग-ढंग। **-जन** *पु॰* लुटेरा। **-जनी** *स्त्री॰* डकैती। **-वर** *पु॰* मार्ग-दर्शक। **-बरी** *स्त्री॰* मार्ग-प्रदर्शन। **-रीति** *स्त्री॰* व्यवहार। **-देखल** *मुहा॰* प्रतीक्षा करना।

**राहत** *स्त्री॰* [अ॰] आराम, चैन।

**राहर** *पु॰* अरहर।

**राही** *स्त्री॰* [फा॰] रास्ता चलने वाला, बटोही।

**राहु** *पु॰* नवग्रहों में एक ग्रह।

**रिंग** *स्त्री॰* [अं॰] अँगूठी, छल्ला। **-मास्टर** *पु॰* सरकस में पात्रों को नियन्त्रित करने वाला खिलाड़ी।

**रिआयत** *पु॰* नरमी, उचित से कम रकम लेने की स्थिति।

**रिकवँच** *पु॰* बेसन व मसाला लगाकर तली हुई सब्जी।

**रिक्सा** *पु॰* तीन पहिए वाली साइकिल-सी गाड़ी।

**रिगावल** *सक॰* चिढ़ाना।

**रिगिर** दे॰ 'रगड़'।

**रिचा** *पु॰* ऋचा वेद के मंत्र, मूल बात।

**रिझावल** *सक॰* किसी को अनुरक्त या प्रेमवश कर लेना, प्रसन्न करना।

**रित** *स्त्री॰* प्रथा, चलन, रीति; ऋतु।

**रितबा** *पु॰* उत्कर्ष।

**रिधसिध** *यौ॰* उत्कर्ष, सफलता, ऋद्धि-सिद्धि।

**रिधी-सिधी** *यौ॰* चावल-दाल।

**रिन** *पु॰* कर्ज, ऋण।

**रिनिया** *पु॰* कर्जदार।

**रिपोट** *स्त्री॰* [अं॰ रिपोर्ट] सूचना।

**रिपोटर** *पु॰* [अं॰] संवाददाता, समाचार-लेखक।

**रिपोटाज** *पु॰* [अं॰] घटना का साहित्यिक सरस विवरण।

**रिफार्म** *पु॰* [अं॰] संशोधन।

**रिफार्मर** *पु॰* [अं॰] सुधारक।

**रिबरिब** *पु॰* मुख में हल्की खुजलाहट पैदा होने की स्थिति।

**रिबरिबाइल** *अक॰* फूही पड़ते रहना; जीभ पर हलका तीताई या सनसनाहट मालूम होना।

**रिमझिम** *क्रि॰वि॰* छोटी-छोटी बूँदों का लगातार गिरते रहना।

**रियासत** *पु॰* राज्य, रईसी।

**रिवाज** *स्त्री॰* रीति, रस्म, प्रथा।

**रिस** *स्त्री॰* क्रोध, कोप। **-मारल** *मुहा॰* गुस्सा पी जाना।

**रिसल** *अक॰* छेदों से द्रव का निकलना।

**रिसहा** *वि॰* क्रोधी।

**रिसि** *पु॰* वेद-शास्त्र आदि का ज्ञाता, तपस्वी, ऋषि।

**रिसिआइल** *अक॰* क्रुद्ध होना, नाराज होना।

**रीझ-बूझ** *यौ०* प्रसन्नता, पसन्दगी।
**रीझल** *अक०* अनुरक्त होना, प्रसन्न होना, रीझना।
**रीठी** *स्त्री०* ऊनी वस्त्र को साफ करने में प्रयुक्त होने वाला बीज।
**रीढ़** *स्त्री०* पीठ के बीच की हड्डी।
**रीत** *स्त्री०* रीति, प्रचलन।
**रील** *अव्य०* बारीक और मजा हुआ तागा।
**रूई** *स्त्री०* कपास के बीजकोश का भुआ। उदा० 'जाड़ा में रूई की दुई'।
**रूईदार** *वि०* जिसमें रूई भरा हो।
**रूईभरा** *वि०* जिसमें रूई भरा गया हो।
**रूकल** *अक०* ठहर जाना, किसी चलते हुए काम का बन्द हो जाना।
**रूकमिन** *स्त्री०* कृष्ण की पत्नी, रूक्मणी।
**रूख** *पु०* पेड़, वृक्ष। उदा० 'जब आवे पूख रहे ना रूख'।
**रूखड़** *वि०* जो चिकना नहीं हो।
**रूखानी** *स्त्री०* लकड़ी में छिद्र करने का एक हथियार।
**रूखी** *स्त्री०* गिलहरी।
**रूचि** *स्त्री०* चाह, अनुराग, प्रवृत्ति।
**रूचिगर** *वि०* पसन्द आने वाला।
**रूज** *पु०* तृप्ति का भाव।
**रूठल** *अक०* रुष्ट होना, अप्रसन्न होना।
**रूढ़** *वि०* विचार का कठोर।
**रूतबा** *पु०* वर्चस्व, प्रतिष्ठा।
**रूदराछ** *पु०* एक प्रकार का पेड़ और उसका बीज, जिसका प्रयोग माला बनाने में होता है।
**रूनझुन** *पु०* घुँघरू आदि की आवाज।
**रून्हवावल** *सक०* दूसरे से घेरवाना, (काँटे आदि से किसी स्थान को)।
**रून्हान** *पु०* पौधों को बचाने के लिए उसके चतुर्दिक् का घेरा।
**रूनी** *स्त्री०* अमरूद; घोड़ों की एक जाति।
**रूप** *पु०* मुखाकृति, सूरत, सुन्दरता। उदा० 'रूप रोएला भाग हँसेला'।
**रूपधवर** *पु०* उजले रंग का बैल।
**रूपया** *पु०* [सं० रुप्यं] भारत राष्ट्र का सिक्का, धन-सम्पदा। उदा० 'रूपया तीन बैल कीनऽ बीन'। **-पैसा** *पु०* धन-दौलत। **-वाला** *वि०* धनी-अमीर। **-उड़ावल** *मुहा०* रूपया बर्बाद करना। **-जोड़ल** *मुहा०* धन संचय करना।
**रूपवान** *वि०* सुन्दर।
**रूपहुला** *वि०* चाँदी-सा सफेद।
**रूपा** *पु०* घटिया चाँदी, वह चाँदी, जिसमें एक चौथाई मिश्रण हो।
**रूपेया** *पु०* दे० 'रूपया'।
**रूम** *पु०* [अं०] कोठरी।
**रूमाल** *पु०* मुख पोछने के लिए एक छोटा वस्त्र-खण्ड।
**रूमाली** *स्त्री०* एक प्रकार का लंगोटा।
**रूल** *पु०* कानून, नक्शा नापने की पटरी।
**रूली-रूल्ही** *स्त्री०* वह खेत, जिसकी मिट्टी हलकी और ऊसर होती है।
**रूसल** *अक०* रूसना, रूठना। उदा० 'रूसल मनाव, फाटल सीयऽ'।
**रूसी** रूस की भाषा; सिर की गन्दगी।
**रूह** *पु०* [फा०] आत्मा।
**रेंकल** *अक०* गदहे का बोलना, भद्दे स्वर में गाना।
**रेंगनी** *स्त्री०* एक प्रकार का काँटेदार पौधा।
**रेंगल** किवाड़ में लगी लोहे की पट्टी। रेंगना, सरकना।
**रेंड़** *पु०* एक प्रकार का पेड़, जिसके बीज से तेल निकलता है। उदा० 'रेंड़ बढ़ी त टूटी, बाँस बढ़ी त झूकी'।
**रेड़ल** *अक०* धान के पौधों का बाल निकलने के पूर्व मोटा होना।

**रेंडमेवा** *पु०* पपीता।
**रेंड़वानी** *स्त्री०* वह खेत, जिसमें रेंड़ की खेती की गई हो।
**रेंड़ा** *पु०* छोटे दानावाला एक प्रकार का गेहूँ।
**रेंड़ी** *स्त्री०* रेंड़ के वृक्ष का बीज।
**रेंवठल** *अक०* किसी काम के लिए बराबर चक्कर काटते रहना।
**रेंहों-रेंहों** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे।
**रे** *अव्य०* दुत्कार या अनादर का सम्बोधन शब्द।
**रेउड़ा** *पु०* रेवड़ा।
**रेउड़ी** *स्त्री०* रेवड़ी।
**रेकार** *पु०* किसी को 'रे' कहकर पुकारने की स्थिति।
**रेख** *स्त्री०* लकीर, रेखा।
**रेख उठान** *वि०* जिनकी मूँछों की रेखा दौड़ी है परन्तु वे ठीक से उगी नहीं है, नौजवान।
**रेखा** *स्त्री०* [सं० रेखा] लकीर। **-गणित** *पु०* रेखाओं द्वारा सिद्धान्त-निर्धारण का विभाग।
**रेघल** *अक०* सिसकना, बच्चों द्वारा लगातार रोते रहना।
**रेघाइल** *अक०* राग से गाना, मधुर स्वर में गाना।
**रेघारी** *स्त्री०* घसीटने या जन्तुओं के चलने से बनी रेखा।
**रेचक** *वि०* [सं०] दस्तावर।
**रेजकी** *स्त्री०* छोटे मूल्य के सिक्के।
**रेजा** *पु०* बच्चा।
**रेट** *पु०* [अं०] भाव, दर, गति।
**रेडियो** *पु०* [अं०] श्रव्य माध्यम।
**रेढ़** *पु०* झगड़ा।
**रेत** *पु०* बालू का ढेर।
**रेतल** *सक०* रेती से किसी धातु को काटना, धीरे-धीरे काटना।
**रेता** *स्त्री०* नदी के किनारे की रेतीली भूमि, दियारा।
**रेती** *स्त्री०* कड़े लोहे का एक खुरदुरा हथियार, जिससे दूसरे लोहे को रेतते हैं।
**रेतीला** *वि०* बालू से युक्त।
**रेतो** *पु०* अपमानसूचक शब्द।
**रेफ** *पु०* 'र्' अक्षर, जो किसी अक्षर के ऊपर रहकर उसके पूर्व उच्चारित होता है।
**रेरा रेरी** *यौ०* रोष या उपेक्षा-भरे शब्दों में बार-बार पुकारने का कार्य।
**रेरी** *स्त्री०* किसी को पकड़ने के लिए ललकारना या हल्ला मचाना, जिससे लोग दौड़ पड़ें।
**रेल** *स्त्री०* [अं०] लोहे की शहतीर, लोहे की पटरी; रेलगाड़ी। **-गाड़ी** *स्त्री०* रेलवे ट्रेन। **-पुल** *पु०* रेलगाड़ी के यातायात हेतु बना पुल। **-मंत्री** *पु०* रेल मोहकमा क मंत्री। **-लाइन** *स्त्री०* रेल की पटरी। **-वे** *स्त्री०* रेलपथ; लौहपथ।
**रेलल** *सक०* आगे की ओर ढकेलना, धक्का देना।
**रेलवई** *वि०* रेलवे का, रेलवे से सम्बन्धित।
**रेला** *पु०* अधिकता; धावा; समूह।
**रेलिंग** *स्त्री०* [अं०] रोक हेतु लगाया जाने वाला छड़दार या ईंट का ढाँचा।
**रेवड़ा** *पु०* चाशनी फेंट कर बनाया हुआ टुकड़ा, जिस पर तिल जमाया होता है।
**रेवड़ी** *स्त्री०* रेवड़ा का छोटा रूप।
**रेवती** *स्त्री०* हिन्दू पंचांग का सत्ताइसवाँ नक्षत्र।
**रेवा** *पु०* नर्मदा नदी; एक प्रकार की मछली।

**रेवाज** *स्त्री०* रीति, रस्म, प्रथा।
**रेसम** *पु०* एक प्रकार के कीड़े के कोश से निकला तन्तु। *उदा०* 'रेसम फटलो पर रेसम कहाला'।
**रेसमी** *वि०* रेशम सम्बन्धी, रेशम से बना।
**रेसा** *पु०* पेड़ की छाल आदि से निकला तन्तु।
**रेह** *स्त्री०* क्षार, क्षार मिली मिट्टी।
**रेहन** *पु०* गिरवी, बन्धक।
**रेहल** *पु०* पुस्तक रखकर पढ़ने के लिए काठ का बना एक सामान।
**रेहाठ** *पु०* वह भूमि, जिसमें रेह की अधिकता हो।
**रेहू** *पु०* रोहू मछली।
**रैअत** *स्त्री०* रैयत।
**रैकेट** *पु०* [अं०] टेनिस खेलने का साधन।
**रैट** *वि०* ठीक, दुरुस्त।
**रैन** *स्त्री०* रात।
**रैपर** *पु०* ऊनी चादर।
**रैयत** *पु०* प्रजा, असामी। *उदा०* 'रैयत रिआइत ना सहे'।
**रोंई** *स्त्री०* मवेशियों के शरीर का रोंया, रंग।
**रोअनिया** *वि०* रोते रहने वाला बच्चा।
**रोअनिहार** *पु०* रोने वाले।
**रोअल** *अक०* रोना। *उदा०* 'रोअल गावल सब के आवेला'।
**रोआइन** *वि०* रोते ऐसा (मुँह)।
**रोआई** *स्त्री०* रोने का भाव या क्रिया।
**रोआवल** *सक०* रुलाना, तंग करना।
**रोक** *स्त्री०* [हिं०] रुकाव, अटकाव, छेंक, मनाही। **-टोक** *स्त्री०* अवरोध, मनाही। **-थाम** *स्त्री०* रोक टोक।
**रोकड़** *स्त्री०* जमा, नकद।
**रोकल** *अक०* बाधा डालना, मना करना।
**रोकल** *सक०* बढ़ने नहीं देना, किसी काम को करने नहीं देना।
**रोकसदी** *स्त्री०* विदाई।
**रोका** *पु०* वर के कोहबर जाते समय सालियों द्वारा रोके जाने पर पढ़ी जाने वाली गजल।
**रोख** *पु०* मुखाकृति, किसी के प्रति मनोभावना, प्रवृत्ति; घर के आगे का भाग, निकास।
**रोखाइल** *अक०* क्रोधित होना।
**रोग** *पु०* बीमारी।
**रोगिआह** *वि०* रोगी।
**रोगिया** *पु०* रोगी का विस्तृत रूप। *उदा०* 'जे रोगिया के भावे से वैदा फरमावे'।
**रोगी** *वि०* बीमार, रुग्ण।
**रोचक** *वि०* [सं०] रुचने वाला।
**रोज** *पु०* दिन, दिवस।
**रोजगार** *पु०* [फा०] जीविका, व्यवसाय, व्यापार।
**रोजनामचा** *पु०* डायरी।
**रोजहा** *पु०* दैनिक मजदूरी पर काम करने वाला।
**रोजा** *पु०* रमजान के महीने में पड़ने वाला मुसलमानों का व्रत, जिसमें दिन में निराहार रहना पड़ता है।
**रोजाना** *अव्य०* [फा०] हर रोज।
**रोजी** *स्त्री०* जीविका।
**रोजे** *क्रि०वि०* प्रतिदिन।
**रोट** *पु०* मोटी रोटी, जिसका उपयोग प्रायः पूजा में होता है।
**रोटी** *स्त्री०* [सं० रोटिका] चपाती, फुलका; टिकिया। *उदा०* 'रोटी मोट, नारी छोट'। **-कपड़ा** *पु०* गुजर-बसर की सामग्री। **-दाल** *स्त्री०* भोजन। **-कमाइल** *मुहा०* जीविका।
**रोठा** *पु०* एक तरह का बाजरा।
**रोडवेज** *पु०* [अं०] सरकारी मोटर-गाड़ियों द्वारा गमनागमन की व्यवस्था।

**रोड़ा** *पु०* ईंट का छोटा टुकड़ा।
**रोदन** *पु०* रोने का भाव।
**रोप** *पु०* रोपा गया धान या पौधा।
**रोपनिहार** *पु०* रोपने वाला।
**रोपनी** *स्त्री०* पौधों को उखाड़कर खेत में रोपने का काम।
**रोपल** *सक०* लगाना (पेड़, पौधा)। जमीन पर स्थापित करना। उदा० 'रोपल पेड़ बबूर के आम कहाँ से खाय'।
**रोब** *पु०* [अ०] धाक, दबदबा; तेज, प्रताप। **-दाब** *पु०* आतंक। **-दार** *वि०* तेजस्वी।
**रोर** *स्त्री०* कोलाहल।
**रोरी** *स्त्री०* हल्दी और चूने के योग से तैयार एक प्रकार का लाल चन्दन।
**रोल** *पु०* वह गोलाकार लकड़ी का तैयार टुकड़ा, जिससे रेखा खींची जाती है।
**रोलर** *पु०* बेलना।
**रोसन-चौकी** *स्त्री०* एक प्रकार की शहनाई। *कहा०* 'लागी से लगायेब बाकिर बाजी रोसन चौकी'।
**रोसनाई** *स्त्री०* स्याही।
**रोसनी** *स्त्री०* प्रकाश, चमक, दीपक।
**रोसायन** *वि०* सरस, मनोरंजक।
**रोहबकारी** *स्त्री०* बताने हेतु आमने-सामने की बातचीत।
**रोहल** *सक०* घेरना, रोक रखना।
**रोहा** *पु०* नाली।
**रोहा-रोहट** *यौ०* रोने-चिल्लाने का भाव या क्रिया।
**रोहिन** *पु०* हिन्दू पंचांग का चौथा नक्षत्र, रोहिणी।
**रोहिनिया** *वि०* रोहिनी नक्षत्र सम्बन्धी।
**रोहू** *पु०* एक प्रकार की बड़ी मछली।
**रौंथल** *सक०* पशुओं का पागुर करना।
**रौंदल** *अक०* धाँगना, मर्दित कर देना।
**रौ** *स्त्री०* [फा०] चाल, गति; वेग; बहस।
**रौजा** *पु०* [अ०] बाग, मकबरा, समाधि।
**रौताइन** *स्त्री०* रावत की पत्नी; ठकुराइन।
**रौताई** *स्त्री०* राव; ठकुराई; रावत का पद।
**रौनक** *स्त्री०* [अ०] चमक, ताब; ताजगी; बहार। **-दार** *वि०* बहारदार।
**रौर** *पु०* रोर, हल्ला।
**रौरव** *वि०* [सं०] डरावना, भयंकर; *पु०* एक भीषण नरक।
**रौरा** *सर्व०* रावरा, आपका। *स्त्री०* रौरी।
**रौरे** *सर्व०* आप, आपका। उदा० 'रौरे महिमा त अनते अपार बा'।
**रौसन** *वि०* रोशन।
**रौसनी** *स्त्री०* रोशनी, प्रकाश, उजाला।

❑

# ल

**ल** देवनागरी वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
**लँउड़ी** *स्त्री०* सेविका, दासी।
**लंक** *पु०* कमर।
**लंकलाट** *पु०* [अं० लांगक्लाथ] एक मोटा मजबूत सूती कपड़ा।
**लंका** *पु०* भारत के दक्षिण का एक द्वीप; रावण की राजधानी; आजकल 'सीलोन'। *उदा०* 'लंका निसिचर निकर निवासा'।
**लंकाधिराज** *पु०* [सं०] रावण; विभीषण।
**लंकारि** *पु०* [सं०] रामचन्द्र।
**लंकिनी** *स्त्री०* एक राक्षसी, जो हनूमान द्वारा मारी गई।
**लंकूर** *पु०* लंगूर।
**लंकेस** *पु०* रावण; विभीषण।
**लंग** *पु०* लँगड़ाने की क्रिया; लँगड़ापन।
**लँगटा** *वि०* नंगा। *उदा०* 'लँगटा परल उघार के पाले'।
**लँगटी** *वि०* नंगी।
**लंगड़** *वि० पु०* जिसका पैर टूटा हो; चलने में जो ठीक से पैर न रख पाता हो।
**लँगड़ल** *अक०* लँगड़ाकर चलना।
**लंगर** *पु०* [फा०] लोहे का भारी काँटा, जिससे नाव खड़ी की जाती है; पका-पकाया खाना जहाँ उपलब्ध कराया जाता है।
**लंगा** *लि०* नंगा; बदमाश, लम्पट; कंगाल। *उदा०* 'लंगा से खुदा डेराले'।
**लंगी** *स्त्री०* कुश्ती का एक दाँव।
**लंगूर** *पु०* बड़ी पूँछ और काले रंग का एक बन्दर।
**लंगोटा** *पु०* कमर में बाँधा जाने वाले पतला वस्त्र, जो मात्र लिंग और गुदा ढँक सके।
**लंगोटिया यार** *पु०* बालमित्र।
**लँगोटी** *स्त्री०* छोटा लंगोट, कौपीन।
**लंघक** *वि०* [सं०] लाँघने वाला।
**लंघल** *सक०* लाँघना, डाँकना।
**लँघावल** *सक०* पार उतारना।
**लंघासन** *पु०* नग्न, नंगा।
**लङ्गूर** दे० 'लंगूर'।
**लंच** *पु०* [अं०] दोपहर का भोजन। *उदा०* 'लंच बड़ा टंच भइल काम कहाँ सँपरी'।
**लंझाड़** *वि०* बहुत कठिन और बड़ा (काम), झंझट वाला।
**लंठ** *वि०* उजड्ड; मूर्ख, अविचारी।
**लंड** *पु०* पुरुषेन्द्रिय, लिंग, शिश्न।
**लंडूरा** *वि०* दुमकटा (पक्षी)।
**लंढर-मंढर** *वि०* आवारा, लफंगा।
**लँड़नी** *स्त्री०* लाँड़ का अल्पार्थक रूप, तुच्छ वस्तु।
**लँड़-मँड़** *वि०* खराब; नष्ट-भ्रष्ट; बर्बाद।
**लंड़देखना** *पु०* चुपचाप बैठकर मुँह ताकने वाला।
**लँड़ चोन्हर** *वि०* महामूर्ख, बेवकूफ।
**लंतरानी** *स्त्री०* [अ०] आत्मप्रशंसा।
**लंद-फंद** *पु० यौ०* झूठा अभियोग।
**लंप** *पु०* [अं०] दीपक।
**लंपट** *वि० पु०* कामुक, विषयी; इधर-उधर फालतू घूमने वाला।
**लंफ** *पु०* दीये की लौ; कूद।
**लंब** *पु०* [सं०] सरल रेखा के आधार पर समकोण बनाने वाली रेखा। **-तड़ंग** *वि०* ताड़ की तरह लम्बा।
**लंबर** *पु०* [अं०] नम्बर [सं०] एक प्रकार का ढोल।

**लंबा** *वि०* [सं० लम्ब:] जिसके दोनों सिरे दूर-दूर पर हों; जिसका विस्तार चौड़ाई से अधिक हो; जो अधिक ऊँचा हो। **-चौड़ा** *वि०* विस्तृत।

**लंबाई** *स्त्री०* लम्बा होने का भाव। **-चौड़ाई** *स्त्री०* लम्बान-चौड़ान का परिमाण।

**लंबी** *वि० स्त्री०* चौड़ाई से अधिक विस्तार वाला।

**लंबू** *वि०* लम्बी टाँगों वाला।

**लंबोतरा** *वि०* जो लम्बाई लिये हुए हो।

**लंबोदर** *पु०* [सं०] गणेश।

**लंबोस्ठ** *पु०* [सं०] ऊँट।

**लंभ** *पु०* [सं०] प्राप्ति।

**लइका** *पु०* छोटा बच्चा, लड़का, बाल-बच्चा। *उदा०* 'लइका के पढ़ावे नाहीं तऽ देस घुमावे'।

**लइकी** *स्त्री०* बच्ची, पुत्री, कन्या।

**लई लांगड़ी** *वि० यौ०* विकलांग, अति कंगाल।

**लउ** *स्त्री०* लौ, लगन।

**लउकल** *अक०* दिखलाई पड़ना, नजर आना।

**लउका** *पु०* कद्दू, लउकी; नाव, नौका। *उदा०* 'लउका के तरकारी सेहत इहे बनाई'।

**लउजमान** *पु०* वंशज।

**लउठा** *वि०* जवाबदेही का काम करने वाला।

**लउर** *स्त्री०* [सं० लगुड] लाठी। *उदा०* 'लउर से भेंट ना बाप बाप चिल्लाता'।

**लउरियार** *पु०* लाठी भाँजने या चलाने का खेल।

**लउरी** *स्त्री०* एक प्रकार की बस।

**लउजार** *वि०* सँभाल में नहीं आवे जो।

**लकठा** *पु०* बाँस का टुकड़ा, जमीन नापने में उपयुक्त।

**लकड़दादा** *पु०* परदादा से बड़ा दादा।

**लकड़पेंचा** *पु०* तरकीब, उपाय।

**लकड़बग्घा** *पु०* एक जंगली हिंसक जानवर।

**लकड़ बोर** *पु०* यौन कार्य। (व्यंगा०)

**लकड़सुँघवा** *पु०* बच्चों को जड़ी सुँघाकर बेहोश करके चुरा ले जाने वाला।

**लकड़हारा** *पु०* लकड़ी तोड़कर बेंचने वाला।

**लकड़िआइल** *अक०* लकड़ी-सा कड़ा होना; पौधे के बिचड़े का लम्बा और कमजोर होना।

**लकड़िहार** *पु०* दे० 'लकड़हारा'।

**लकड़ी** *स्त्री०* काठ, छड़ी; शारीरिक ढाँचा।

**लकम** *पु०* आदत।

**लकलक** *वि०* शरीर का पतला।

**लकवा** *पु०* एक व्याधि, जिसमें शरीर चेतना-शून्य हो जाता है, पक्षाघात।

**लकसी** *स्त्री०* फल तोड़ने का बाँस, लग्गी।

**लकालक** *वि०* पूर्णत: स्वच्छ।

**लकीर** *स्त्री०* पंक्ति, रेखा।

**लकुट** *पु०* लाठी।

**लकुटिया** *स्त्री०* छड़ी।

**लकुराथ** *पु०* अभियोग, दोषारोपण, अपराध।

**लक्ष** *वि०* सौ हजार।

**लक्षण** *पु०* [सं०] विशेषतासूचक शब्द।

**लक्ष्मी** *स्त्री०* [सं०] धन की देवी; महालक्ष्मी; गृह-स्वामिनी। **-कान्त** *पु०* विष्णु। **-पति** *पु०* विष्णु। **-पूजा** *स्त्री०* लक्ष्मी के पूजन का त्योहार।

**लक्ष्य** *पु०* [सं०] निशाना; अभीष्ट वस्तु; उद्देश्य।

**लख** *वि०* लाख, लाख का संक्षिप्त रूप। *उदा०* 'लख चउरासी जाइनि।'

**लखन** *पु०* लक्ष्मण।

**लखपति** *पु०* लाख रुपये की सम्पत्ति का स्वामी।
**लखल** *सक०* पहचानना, ताड़ना।
**लखराँव** *पु०* एक लाख आम के पेड़ों का समूह; सवा लाख मिट्टी के शिव का पार्थिव बनाकर पूजने की विधि।
**लखलख** *वि०* [फा०] दुबला-पतला। **-स्त्री०** गला सूखने पर उससे निकलने वाली आवाज।
**लखाइ** *स्त्री०* पहचान।
**लखाइल** *अक०* पहचाना जाना; ताड़ लिया जाना।
**लखार** *वि०* जो स्पष्ट नजर आता हो।
**लखावरी** दे० 'लखराँव'।
**लखावल** *सक०* पहचान करा देना, बता देना।
**लखिया** *पु०* लखने वाला। *वि०* लाख वर्ष जीने वाला।
**लखी** *पु०* लाख के रंग का घोड़ा।
**लखुत** *पु०* आदत।
**लखेदल** *सक०* खदेड़ना।
**लखैरा** *वि०* लम्पट, फालतू।
**लखौरी** *स्त्री०* पुराने ढंग की छोटी और पतली ईंट।
**लग** *अव्य०* निकट, पास।
**लगठा** *पु०* बाँस की लग्गी।
**लगड़** *पु०* खेतों में जरूरत से अधिक पानी का जमा होना।
**लगन** *पु०* विवाह का मुहूर्त; जन्म की राशि; लग्न; प्रबल रुचि, प्रवृत्ति; धुन। *उदा०* 'लगन बीत जाय, चमकल छूट जाय'।
**लगनइनी** *वि०* वैवाहिक लग्न से सम्बन्धित; विवाह के समय कन्या की पीली साड़ी।
**लगनपत्री** *स्त्री०* वह कागज, जिस पर ज्योतिषी विवाह का शुभ मुहूर्त लिखता है।
**लगभग** *अव्य०* करीब करीब, आस-पास।
**लगभीर** *अव्य०* लगभग, आस-पास।
**लगल** दे० 'लागल'।
**लगले** *क्रि०वि०* तुरन्त।
**लगवार** *पु०* जिससे अनुचित सम्बन्ध हो, यार, प्रेमी।
**लगवावल** *सक०* लागल क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।
**लगसी** *स्त्री०* फल तोड़ने वाला पतला बाँस; लग्गी।
**लगहर** *स्त्री०* दूध देने वाली गाय या भैंस।
**लगाइत** *पु०* सम्बन्ध, नाता, रिश्ता।
**लगाऊ** *वि०* लगनेवाला।
**लगातार** *अव्य०* निरन्तर।
**लगान** *पु०* मालगुजारी; भूमिकर।
**लगानी** *स्त्री०* कर्ज के रूपये; अनाज देने की रीति; झूठा अभियोग।
**लगाम** *पु०* घोड़े के मुँह में लगाया जाने वाला कँटीला ढाँचा, जिसे सवार पकड़कर घोड़ा हाँकता है।
**लगार** *क्रि०वि०* जोरों की वर्षा।
**लगाव** *पु०* सम्बन्ध, वास्ता, ताल्लुक।
**लगावल** *सक०* मिलाना, सटाना; पेड़-पौधे रोपना; क्रम में रखना।
**लगावरी** *वि०* सटा हुआ।
**लगिचाइल** *अक०* निकट आना, लगीचा।
**लगित** *पु०* लगने वाला खर्च, लागत।
**लगिचावल** *सक०* नजदीक पहुँचना।
**लगी** दे० 'लग्गी'।
**लगीचा** *क्रि०वि०* पास, निकट।
**लग्गी** *स्त्री०* खेत नापने में निश्चित लम्बाई का और फल तोड़ने वाला पतला बाँस।
**लगुआ** *वि०* जिससे हँसी-मजाक का रिश्ता हो।
**लग्गू-भग्गू** *पु०* इर्द-गिर्द चक्कर-काटने वाला। जैसे-तैसे सम्बन्ध वाला।

**लगे** *अव्य०* निकट, पास, नजदीक।
**लगेन** *वि०* जिसे खाने में नशा लग जाए।
**लङ** दे० 'लंग'।
**लङझारी** *स्त्री०* शरीर में रखे किसी सामान की वस्त्रों को हटाकर तलाशी।
**लङड़** दे० 'लंगड़'।
**लङड़ाइल** *अक०* लंगड़ कर चलना।
**लङोटा** दे० 'लंगोटा'।
**लच** *स्त्री०* लचकन, लचन।
**लचक** *स्त्री०* लचकने का भाव।
**लचकल** *अक०* किसी वस्तु का बीच में झुकाना; कमर का नजाकत से झुकाना।
**लचकावल** *सक०* नजाकत से कमर का झुकाना।
**लचरल** *अक०* लाचार होना।
**लचल** *अक०* झुकाना, लचना।
**लचलच** *पु०* किसी पतली और नरम वस्तु का भार से नीचे-ऊपर डोलने की स्थिति।
**लचार** दे० 'लाचार'।
**लचारी** दे० 'लाचारी'।
**लचारी** *स्त्री०* शिवजी का प्रशंसाबोधक गीत, नाचारी।
**लचालच** *पु०* बार-बार झुकने और ऊपर उठने की स्थिति।
**लचावल** *सक०* झुकाना, मोड़ना।
**लचीला** *वि०* लचकने वाला।
**लचुई** *स्त्री०* लुचुई।
**लच्छ** *पु०* बहाना।
**लच्छन** *पु०* चिह्न, पहचान; रोग के चिह्न; शकुन।
**लच्छा** *पु०* तागे या पतली वस्तुओं का गुच्छा, लच्छी।
**लच्छा** *वि०* सौहजार। *उदा०* 'जेकर लागल लच्छ रुपैया सेहूना कइल नेवान।' (लोक०)
**लछमना** *पु०* एक लताविशेष, जो औषधि में प्रयुक्त होती है।
**लछमिन** *स्त्री०* नवजात कन्या; गृहणी का आदरसूचक शब्द।
**लछमिनियाघर** *पु०* अस्पताल का वह घर, जहाँ छूत-रोगी रखा जाता है।
**लछमी** *स्त्री०* विष्णु की पत्नी; धन-सम्पदा की अधिष्ठात्री देवी; नवजात कन्या। *उदा०* 'लछमी से भेंट ना दरिद्रा से बैर'।
**लछिंदरा** *पु०* दोषारोपण; कलंक।
**लछुमन** *पु०* राम के छोटे भाई।
**लज** *स्त्री०* लाज का संक्षिप्त रूप; सामाजिक यौगिक शब्दों में प्रयुक्त शब्द।
**लजकोंकड़** *वि०* अत्यन्त लजालु।
**लजत** *पु०* स्वाद, मजा; सारवस्तु।
**लजवावल** *सक०* दूसरे को लज्जित करना।
**लजवन्ती** *वि०* शर्मीली; लज्जाशील।
**लजाइल** *अक०* लज्जित होना, लजाना।
**लजाउर** *वि०* लजाने वाली, लाजवन्ती। *उदा०* 'लजाउर बहुरिया सराय में डेरा'।
**लजौनी** *स्त्री०* पौधाविशेष, जिसके छूने पर उसके पत्ते सिकुड़ जाते हैं; लाजवन्ती।
**लज्जत** *पु०* स्वाद, रस।
**लझर-फजर** *पु०* ढीली-ढाली पोशाक।
**लट** *स्त्री०* केश पाश; सन के पौधे से निकला हुआ तन्तु।
**लटकन** *पु०* लटकने वाली वस्तु; सूत का गुच्छा, जो गहने-सा व्यवहृत होता है।
**लटकन** *अक०* झूलना, टँगना, ऊपर से नीचे की ओर लटका रहना; किसी काम का अधूरा रहना।
**लटका** *पु०* पद्यमय चुटकीला।
**लटकावल** *सक०* टाँगना, ऊपर से नीचे की ओर किसी वस्तु को अधर में लटकाना; आशा में उलझाये रखना।

**लटकेना** *पु०* केश में लटकाने का सूतों का गुच्छा।
**लटपट** *वि०* मिला-जुला; अस्पष्ट; अस्त-व्यस्त।
**लटपटाइल** *अक०* साथ में लगा रहना; मुँह से ठीक से बोली नहीं निकलना, कुछ का कुछ कहा जाना।
**लटपटाह** *वि०* अस्पष्ट, अस्तव्यस्त।
**लटपटिया** *पु०* लटपट काम करने वाला, जो लेन-देन में साफ न हो।
**लटबेहर** *पु०* बाधा, व्यवधान।
**लटल** *अक०* अशक्त होना, दुर्बल होना; लज्जित होना।
**लटावल** *सक०* बात मनवाने में तर्क से विवश कर देना।
**लट्ट** *पु०* [सं०] दुर्जन।
**लट्ट पट्ट** *वि०* लथपथ।
**लट्टा** *पु०* मक्के का लावा और महुआ से तैयार किया गया खाद्य-पदार्थ।
**लट्ठ** *पु०* बड़ी लाठी।
**लट्ठबाज** *वि०* लठैत, लाठी लेकर लड़ने वाला।
**लट्ठमार** *वि०* अप्रिय; कठोर; कर्कश।
**लट्ठा** *पु०* लकड़ी का पतला बड़ा लम्बा टुकड़ा; सफेद गाढ़ा कपड़ा।
**लटिआवल** *अक०* केशों का गुच्छा हो जाना या उलझ जाना।
**लटुआइल** *अक०* अशक्त होना; रोगग्रस्त होकर बिछावन पकड़ लेना।
**लटुरी** *स्त्री०* बच्चों के बालों का समूह।
**लट्टू** *पु०* काठ का एक खिलौना।
**लटेंग** *पु०* झंझट, बाधा।
**लठइत** *वि०* लाठी चलाने में दक्ष व्यक्ति।
**लठल** *अक०* किसी काम में सुगमता (आसानी) से लगा रहना।
**लठिअल** *वि०* लाठी चलाने में निपुण, लठैत।
**लठिआवल** *सक०* लाठी से पीटना, लाठी से मारना।
**लठिधर** *पु०* लाठी चलाने में निपुण।
**लठिया-मोदक्कर** *वि०* लठैत, लाठी चलाने में निपुण।
**लठैत** *वि०* लट्ठबाज।
**लडुआ** *पु०* लड्डू के आकार का गोल, पीला आम।
**लड्डू** *पु०* बेंसन और चीनी से बनी गोल मिठाई।
**लढ़क** *पु०* लालसा। उत्कट इच्छा। उत्साह।
**लढ़कल** *अक०* काम करने में उत्साहित हो उठना, उत्साह से काम करने का अभ्यस्त।
**लड़** *पु०* लड़का का संक्षिप्त रूप।
**लड़कपन** *पु०* बचपन।
**लड़कबुधी** *स्त्री०* बच्चों की नासमझी, बालबुद्धि; अज्ञानता।
**लड़का** *पु०* पुत्र, बेटा; बालक।
**लड़किनी** *स्त्री०* कन्या।
**लड़की** *स्त्री०* बच्ची, पुत्री; कुमारी कन्या।
**लड़कैयाँ** *स्त्री०* लड़कपन।
**लड़कोर, लड़कोरी** *वि० स्त्री०* दे० 'लड़कौरी'।
**लड़कौरी** *वि० स्त्री०* (वह स्त्री) जिसकी गोद में बच्चा हो।
**लड़खड़ाइल** *अक०* डगमगाना।
**लड़दूल** *पु०* साँप के बच्चे जैसा जीव।
**लड़नी** *वि०* तुच्छ।
**लड़पूता** *पु०* स्त्रियों द्वारा अनादर और उपेक्षापूर्ण कथन।
**लड़फालतू** *वि०* बहुत निकम्मा; बेकार।
**लड़बड़ा** *वि०* लटपटा; नपुंसक।
**लड़बुरबक** *वि०* महामूर्ख, अज्ञान, गँवार।

**लड़ल** *अक०* युद्ध करना। मल्लयुद्ध करना। मुकदमाबाजी करना।
**लड़ाई** *स्त्री०* युद्ध, कुश्ती; मुकदमेबाजी।
**लड़ाका** *वि०* योद्धा; झगड़ालू; मुकदमेबाज।
**लड़ावल** *सक०* दो व्यक्तियों में कुश्ती कराना; लड़ाना, झगड़ा कराना।
**लड़ाइल** *वि०* मादा मवेशी, जिसका गर्भ नष्ट हो गया हो।
**लड़िका** *पु०* बच्चा, पुत्र।
**लड़िकाई** *स्त्री०* बचपन, लड़कपन।
**लड़ी** *स्त्री०* कतार; माला।
**लड़ीला** *वि०* लाड़ला।
**लड़ू** *पु०* लड्डू।
**लड़ेता** *वि०* योद्धा, दुष्ट, ढीठ।
**लड़ैता** *वि०* लड़ने वाला।
**लढ़ा** *वि०* बैलगाड़ी।
**लढ़िया** *स्त्री०* छोटी बैलगाड़ी।
**लत** *स्त्री०* दुर्व्यसन, बुरा स्वभाव।
**लतखुर्दन** *पु०* लात से धाँगने की स्थिति।
**लतखोर** *वि०* सदा लात की मार खाने वाला व्यक्ति; कमीना, बेहाया। *वि०* किवाड़ का वह काठ, जो नीचे सतह पर रहता है, जिसे लाँघकर घर में आना-जाना होता है, चौखट।
**लतड़ी** *स्त्री०* लतरी।
**लतपत** *वि०* लथपथ।
**लतमरदन** *सं० यौ०* लातों से सदा रौंदे जाने की स्थिति।
**लतर** *स्त्री०* रस्सा के समान लम्बा होकर पृथ्वी पर फैलने वाला या किसी वस्तु से लिपट कर ऊपर चढ़ने वाला पौधा-विशेष।
**लतरल** *अक०* लत्ती के समान बढ़ना, फैलना।
**लतरी** *स्त्री०* खेसारी, दलहन।
**लतहा** *पु०* लात चलाने वाला पशु, लताह।
**लता** *स्त्री०* [सं०] जमीन पर फैलने वाला पौधा, बेल। **-कुंज** *पु०* लता से घिरा स्थान। **-भवन** *पु०* लताओं से मण्डप की तरह बना स्थान।
**लताड़** *स्त्री०* लथाड़।
**लताह** *वि०* लात चलाने वाला पशु।
**लतिआवल** *सक०* लात से मारना।
**लतिहर** *वि०* लतियर।
**लतीफ** *वि०* [अ०] बारीक; साफ-सुथरा; जायकेदार।
**लतीफा** *पु०* [अ०] चुटकुला, अनूठी बात।
**लत्ती** *स्त्री०* जमीन पर फैलने या पेड़ पर उसका सहारा लेकर चढ़ने वाला पौधा।
**लथपथ** *वि०* भींगा, पसीने से तरबतर।
**लथरियावल** *अक०* काम में आलसपने से पीछे रह जाना।
**लथरी** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।
**लथेर** *पु०* पशुओं द्वारा रौंदा हुआ घास-पुआल आदि; दाना निकाला हुआ मटर का पौधा।
**लथेरल** *अक०* पशुओं द्वारा लात से रौंद कर बर्बाद करना।
**लद** *स्त्री०* किसी मुलायम वस्तु के ऊपर से गिरने की आवाज।
**लदउरा** *पु०* बथुए के साग का एक भेद।
**लदकल** *पु०* किसी वस्तु का ढीला होकर लटक जाना।
**लदगर** *वि०* पेटवाला।
**लद-फद** *वि०* पानी से भींगा हुआ; प्रसवासन्न स्त्री या मवेशी।
**लदना** *वि०* बोझा लादा जाने वाला पशु।
**लदनी** *स्त्री०* लादने का कार्य या भाव।
**लदर-फदर** *सं० यौ०* पानी से कपड़ों के भींग जाने की स्थिति।

**लदरल** *अक०* दानेदार फसल का खूब फलना।

**लदवावल** *सक०* लादने का काम; दूसरे से काम करवाने का भाव।

**लदाइल** *अक०* बोझ का लादा जाना।

**लदाई** *स्त्री०* लादने का काम या भाव। लादने की मंजूरी।

**लदाऊ** *पु०* लदान, भराव।

**लदान** *स्त्री०* (माल) लादने की क्रिया।

**लदाव** *पु०* लादने का काम; बोझ; पटाव।

**लदुआ** *वि०* बोझ ढोने वाला।

**लद्धड़** *वि०* सुस्त। **-पन** *पु०* सुस्ती।

**लप** *पु०* लचीली छड़ी को हिलाने से निकली ध्वनि; तलवार की चमक; अंजलि। **-झप** *वि०* चंचल, फुर्तीला। **-चाल** *स्त्री०* बेढंगी चाल।

**लपक** *स्त्री०* लपट, लौ।

**लपकल** *अक०* पकड़ने के लिए तेजी से आगे बढ़ना या झुकना।

**लपची** *स्त्री०* बरारी मछली का बच्चा। *वि०* शरीर का कोमल और पतला होना।

**लपट** *स्त्री०* आग की ज्वाला, लौ।

**लपटा** *पु०* अपने फूल या फल से कपड़े को चिपट लेने वाला पौधा; लेई।

**लपटल** *अक०* पाने का प्रयास जारी रखना।

**लपटाइल** *अक०* लिपटना।

**लपटावल** *सक०* बातों में फँसाए रखना।

**लपलप** *क्रि०वि०* किसी पतली वस्तु के तेजी से हिलने-डुलने का कार्य; कुत्ते की जीभ का लपलपाना।

**लपलपाइल** *अक०* उद्यत होना; लुब्ध होना; ललचाना।

**लपसी** *स्त्री०* थोड़ा घी डाला हुआ लसीला हलुआ।

**लपेट** *पु०* घुमाव, घेरा, चक्कर लपेटने की क्रिया।

**लपेटल** *सक०* पतली, लम्बी वस्तु को घेरा देकर समेट लेना; शामिल करना।

**लप्प** *पु०* हाथ की सभी अँगुलियों के फैले और सटे होने की स्थिति।

**लप्पड़** *पु०* थप्पड़, चाँटा।

**लप्पा** *पु०* बैलगाड़ी के ढाँचे में प्रयुक्त बाँस।

**लप्पो-चप्पो** *वि०* चिकनी-चुपड़ी बात।

**लफंगा** *वि०* लम्पट, दुराचारी, आवारा।

**लफंदर** *वि०* फालतू, लम्पट।

**लफनल** *अक०* लपना।

**लफरा** *पु०* पानी से भींजे अन्न के दाने से निकला गुच्छा; झमेला।

**लफल** *अक०* आगे की ओर झाँकना; किसी वस्तु को पकड़ने के लिए लपकना।

**लफावल** *सक०* किसी चीज को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाना।

**लफूस** *वि०* लफंगा, लफुदा।

**लफेड़िया** *वि०* लम्पट, लफंगा।

**लब** *पु०* [फा०] ओठ; किनारा, तट।

**लबज** *पु०* शब्द।

**लबजा** *वि०* झूठा; केवल बात बनाने वाला, लबरा।

**लबजान** *वि०* अशक्त, मृतप्राय।

**लबझल** *अक०* फँसना।

**लबड़धोंधों** *स्त्री०* गुलगपाड़ा, हल्ला-गुल्ला।

**लबड़ा** *वि०* लबरा।

**लबदा** *पु०* लाठी, डण्डा।

**लबधल** *अक०* परिपूर्ण; फल से झुके रहना।

**लबना** *पु०* जीभ, जिह्वा। (व्यंगा०)

**लबनी** *स्त्री०* ताड़ी चुवाने का बर्तन।

**लबरलबर** *क्रि०वि०* अनर्गल बात। *उदा०* 'लबरलबर तीन पसर'।

**लबरई** *स्त्री०* झूठी बात।
**लबरा** *वि०* झूठ बोलने वाला; अनर्गल बोलने वाला।
**लबलब** *क्रि०वि०* फालतू, अनर्गल।
**लबलवाइल** *अक०* बोलने के लिए व्यग्र होना।
**लबाब** *पु०* तीसी को पानी में फुलाकर तैयार किया गया लस्सा, जिसका उपयोग पहले स्त्रियाँ जूड़ा बाँधने में उपयोग करती थीं; गूदा।
**लबार पांड़े** *पु०* नाच का मसखरा।
**लबालब** *अव्य०* ऊपर या मुँह तक भरा हुआ।
**लबेद** *पु०* वेदविरुद्ध।
**लबेदा** *पु०* मोटा डण्डा; फल आदि तोड़ने का झटहा। *उदा०* 'आयी आम चाहे जायी लबेदा'।
**लबेरी** *स्त्री०* जलहली।
**लभल** *अक०* झुकना, लहल।
**लभावल** *सक०* झुकना, लभल का सक० रूप।
**लभेरल** *अक०* मुँह में लपेटना।
**लभेसा** *पु०* दोषारोपण।
**लभ्भो-चभ्भो** *पु०* बहुत अपनापन या हाव-भाव, लप्पो-चप्पो।
**लम** *पु०* 'लम्बा' का समासगत रूप। **-गोड़ा** *वि०* लम्बी टाँगवाला। **-घिचा** *वि०* लम्बी गरदन वाला। **-छड़** *पु०* लम्बी बन्दूक; भाला। **-तड़ंग** *वि०* लम्बा तगड़ा (आदमी)।
**लमका** *वि०* आकार में लम्बा।
**लमघोड़** *वि०* अधिक लम्बा कद।
**लमछर** *वि०* आकार में लम्बा।
**लमडोरिया** *पु०* खेत (जब लम्बाई बहुत अधिक हो और चौड़ाई कम हो।)
**लमढ़ेंग** *वि०* बहुत लम्बा।
**लमता** *स्त्री०* एक प्रकार की नाव।
**लमती** *स्त्री०* लम्बाई।
**लमर** *पु०* संख्या, क्रम-संख्या, नम्बर।
**लमरल** *अक०* खींचने से लम्बा होना।
**लमरावल** *सक०* खींचकर लम्बा करना।
**लमरी** *स्त्री०* हक की लड़ाई के लिए अभियोग-पत्र। *वि०* नम्बर वाला सौ का नोट।
**लमहर** *वि०* लम्बाई में बड़ा, आकार में बड़ा।
**लमावल** *सक०* बात को बढ़ा देना; झगड़ा लगा देना।
**लमावल** *सक०* मवेशियों को तालाब आदि में पानी पिलाना; लम्बा करना।
**लमेट** *वि०* इधर-उधर व्यर्थ घूमते रहने वाला, लम्पट।
**लमेरा** *पु०* बिना बोए स्वतः जमने वाला पौधा।
**लमेरुआ** *वि०* ऐसा पशु, जिसका कोई मालिक न हो; योंही घूम-घूमकर चरने वाला पशु।
**लम्मर** *पु०* परीक्षा में प्राप्तांक।
**लय** *पु०* नाश, विनाश; गीत की ध्वनि, स्वर; आदत।
**लयन** *पु०* शान्ति, शरण।
**लरकई** *स्त्री०* लड़कपन।
**लरकल** *अक०* लटकना। भार से ऊपर नीचे की ओर झुकना; लटकना; घटा का बरसने की स्थिति में घटा का होना।
**लरकावल** *सक०* झुकाना, ऊपर से नीचे की ओर खींचकर लाना; लटकाना (डाली)।
**लरकोर** *स्त्री०* जिस स्त्री को लड़का या लड़की पैदा हो चुकी हो।

**लरखराइल** *अक०* मरणासन्न होना, डगमगाना, चलते समय पैर स्थिर न रहना।
**लरघस-मरघस** *सं० यौ०* प्राणियों के शरीर से निकलने वाला रसीला पदार्थ, खासकर जननेन्द्रिय से निकलता रहता है।
**लरछा** *पु०* सूत का छोटा गुच्छा।
**लरझर** *पु०* दूर का सम्बन्धी।
**लरना** *अक०* लड़ना।
**लरबर** *वि०* ढीला, रसेदार।
**लरबराइल** *अक०* मुलायम होना; ढीला होना।
**लरम** *वि०* मुलायम, नरम।
**लरमा** *पु०* कपास का एक भेद।
**लरवा** *पु०* कपास का एक रोग।
**लराई** *स्त्री०* लड़ाई।
**लराका** *वि०* लड़ाका।
**लरिकई** *स्त्री०* लड़िकाई।
**लरिक सलोरी** *स्त्री०* शैतानी; लड़कों का खेल।
**लरिका** दे० 'लड़िका'। *उदा०* 'लरिका के आँखे भूख हऽ'।
**लरिकौना** *वि०* बच्चा-सा, बच्चा के सदृश।
**लरी** *स्त्री०* सिलसिला; तारों का छोर; लड़ी।
**लल-विल्ल** *वि०* कंगाल; अति अभाव-ग्रस्त। *उदा०* 'अपना ला लल-विल्ल दोसरा ला दानी'।
**ललउरी** *स्त्री०* गुदा का भीतरी भाग; गाली का शब्द।
**ललक** *स्त्री०* गहरी लालसा।
**ललकल** *अक०* लालसा करना, इच्छा करना। *उदा०* 'ललकल पगिया, फरकल टीक'।
**ललका** *वि०* लाल रंग का।
**ललकार** *पु०* ललकारने की क्रिया या भाव।
**ललकारल** *सक०* लड़ने के लिए जोर से पुकारना; उत्तेजना पैदा करने वाली बातें; उकसाना।
**ललचल** *अक०* किसी चीज को पाने के लिए अभिलषित होना।
**ललना** *स्त्री०* कामिनी, सोहरों में इस शब्द का.... प्रयोग होता है।
**ललदेइया** *पु०* लाल रंग का एक धान-विशेष।
**ललरी** *स्त्री०* कान की लोलकी।
**ललसा** *पु०* इच्छा, चाह, कामना।
**ललही छठ** *स्त्री०* भाद्रपद कृष्ण षष्ठी, हलषष्ठी।
**लला** *पु०* प्यारा, दुलारा। *उदा०* 'लला फिर आइयो खेलन होरी'।
**ललाइल** *अक०* किसी भोज्य-पदार्थ के लिए व्यग्र होना।
**ललाई** *स्त्री०* लाली।
**ललाक** *पु०* [सं०] शिश्न।
**ललाट** *पु०* [सं०] माथा; भाग्य। **-रेखा** *स्त्री०* भाग्यलेख।
**ललाम** *वि०* [सं०] सुन्दर; स्मरणीय; उत्तम।
**ललिआइल** *अक०* पकने की समय आने पर फल आदि का रंग लाल होना।
**ललित** *वि०* [सं०] सुन्दर, रमणीय। **-कला** *स्त्री०* संगीत, काव्य आदि।
**ललितगर** *वि०* मधुर, सुन्दर।
**लली** *स्त्री०* प्यार, दुलार से पली लड़की।
**लल्ला** *पु०* प्यार, दुलार से पला लड़का।
**लल्लो-पत्तो** *पु०* चिकनी-चुपड़ी बातें।
**लवंग** *पु०* मसाला और औषधि में व्यवहत वृक्ष का फल; लौंग; एक तरह की मिठाई; एक छोटा गहना। **-लता** *स्त्री०* एक मिठाई।

**लवंगी** दे० 'लौंगी'।
**लवंडा** *पु०* छोटा लड़का; नाच का नर्तक; गुदामैथुन कराने वाला छोकड़ा।
**लव** *पु०* [सं०] थोड़ा अंश; वह, जो काटा जाए; रामचन्द्र के पुत्र; सुविधापूर्ण काम। **-लेस** *पु०* स्वल्प मात्रा में।
**लवक** *पु०* क्षणिक इच्छा या लालसा।
**लवकल** *अक०* आकाश में बिजली का प्रकाश होना।
**लवगर** *वि०* सुविधाजनक, सहूलियत वाला।
**लवङ** दे० 'लवंग'।
**लवता-भेंवता** *क्रि०वि०* किसी प्रकार का कामचलाऊ।
**लवना** *पु०* जलावन; लौना।
**लवनी** *स्त्री०* कटनी।
**लवटल** *अक०* वापस आना।
**लवटानी** *स्त्री०* वापसी, वापस आते समय।
**लवढा** *पु०* पासियों की ताड़ी लटका कर ले जाने वाली लाठी।
**लव-बेलव** *सं० यौ०* सावधानीपूर्वक, धीरे-धीरे।
**लवर** *स्त्री०* आँच, लपट।
**लवलासी** *स्त्री०* प्रेम सम्बन्ध।
**लवही** *स्त्री०* रोहू, नैनी आदि मछलियों के बच्चे।
**लवा** *पु०* तीतर जाति का एक पक्षी; लाना, खील।
**लवारा** *पु०* बछरू।
**लवालेस** *क्रि०वि०* थोड़ा भी। तनिक भी।
**लवे-लवे** *क्रि०वि०* धीरे-धीरे; सुविधापूर्वक।
**लस** *स्त्री०* रस्सा, बल, वीर्य; ताकत।
**लसउनल** *सक०* मिट्टी के सम्पर्क में लाकर गन्दा करना।
**लसकर** *पु०* फौज, सेना।
**लसकरिया** *वि०* झमेले में रहने वाला; लम्पट।
**लसगर** *वि०* लसीला, लस्सेदार।
**लसदार** *वि०* लसीला, चिपकने वाला।
**लसटूटू** *वि०* जिसका लसीलापन कम हो गया हो।
**लस फस** *क्रि०वि०* लस-लस।
**लस-फसिया** *पु०* एक पेड़, जिसका पका फल लस्सेदार होता है, लिसोड़ा।
**लस लस** *क्रि०वि०* लस्सा-सा।
**लसर-फसर** *पु०* लस-लस करने की स्थिति।
**लसर-लसर** *क्रि०वि०* लसीलापन लिए हुए।
**लसरी** *स्त्री०* रस्सी।
**लसाकूटन** *पु०* जोरों की पिटाई।
**लसारल** *सक०* पैरों से रौंदना।
**लसिआइल** *अक०* पिण्ड न छोड़ना, जरूरतवश साथ लगा रहना।
**लसी** स्त्री० दही मिश्रित शरबत।
**लसीला** *वि०* लसदार।
**लसुन** *पु०* लहसुन।
**लसोड़ा** *पु०* लस्सेदार फल या वृक्षविशेष।
**लसौटा** *पु०* बहेलियों का लस्सा रखने का बाँस का चोंगा।
**लस्टम-पस्टम** *क्रि०वि०* किसी प्रकार; कठिनाई से।
**लस्त** *वि०* अशक्त, शान्त, शिथिल।
**लहँगा** *पु०* साड़ी के नीचे पहनने का एक पहनावा; घाघरा।
**लहक** *स्त्री०* आग की लपट।
**लहकल** *अक०* आग का प्रज्वलित होना, दीपक की लौ तेज होना।
**लहकार** *पु०* ठाट-बाट; चमक-दमक।

**लहकावल** *सक०* प्रज्वलित करना; उत्तेजित करना।

**लहकौर** *स्त्री०* कोहबर में दूल्हे और दुलहिन द्वारा एक-दूसरे को खिलाना।

**लहजा** पु० [अ०] उच्चारण का खास ढंग; लय।

**लहठी** *स्त्री०* लाह की चूड़ी।

**लह ताडड़** *वि०* शक्तिहीन, दुर्बल।

**लहना** *पु०* दूकानदारों का ग्राहकों के यहाँ बाकी धन।

**लहना-गहना** *पु०* असामियों के यहाँ महाजनों के मूल और सूद न सधान होने पर बन्धक का स्वामी हो जाना; बन्धक का पूर्ण स्वामित्व महाजन का हो जाना।

**लहबर** *पु०* लम्बी ढीली पोशाक; चोंगा।

**लहमा** *पु०* क्षण, पल; मिनट।

**लहमाएल** *वि०* पशुओं से रौंदा हुआ डण्ठल, घास आदि।

**लहर** *स्त्री०* नदी या बड़े जलाशय में उठने वाली तरंग, हिलोर; उमंग, जोश; जलन, विष का वेग।

**लहरका** *पु०* किसी बात से दूसरों को जलाने का काम। **-लगावल** *मुहा०* गुप्त बात बता कर चाव पैदा करना।

**लहर चिउंटा** *स्त्री०* एक प्रकार की लाल विषैली चींटी।

**लहरदार** *वि०* भड़कीला, चमकदार, रंगदार।

**लहरल** *अक०* जलन होना; क्रोध होना।

**लहराइल** *अक०* पताके का हवा में उड़ते रहना; उत्तेजित करना।

**लहरा** *पु०* चुंगली।

**लहरा-पटोर** *पु०* धारीदार रेशमी वस्त्र-विशेष। *उदा०* 'तोहरा के देबो बाभन चढ़ने के घोड़वा बभनी के लहरा पटोर'। लोक०।

**लहरावल** *सक०* उत्तेजित करना।

**लहरि** *स्त्री०* [सं०] तरंग।

**लहरिया** *पु०* टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं का समूह। -दार *वि०* लहरदार।

**लहरी** *वि०* मनमौजी।

**लहल** *अक०* सहूलियत हो जाना।

**लहलह** *पु०* प्यास के मारे व्यग्रता; हरा-भरा।

**लहलहाइल** *अक०* हरे-हरे पौधों का हवा के झोंके में हिलते रहना।

**लहसन** *पु०* शरीर पर का लम्बा काला दाग; लहसुन।

**लहसुन** *पु०* एक प्रकार का तीक्ष्ण गन्धवाला कन्द।

**लहसुनिया** *पु०* एक रत्नविशेष।

**लहालोट** *वि०* हंसी के मारे लोटता हुआ हर्षातिरेक। *उदा०* 'गोरिया मार ना नजरिया, जियरा लहालोट होइ जाय'।

**लहान** *पु०* सहूलियत, सुविधा।

**लहास** *स्त्री०* आग की लपट; घोड़े की लगाम।

**लहारि** *स्त्री०* आनन्द, मजा, सुख।

**लहुरा** *वि०* छोटा, आयु में कम।

**लहू** *पु०* खून, रक्त, रुधिर।

**लहेड़ा** *पु०* बदमाश, निठल्ला, आवारा।

**लांघ** *स्त्री०* लाँघने की क्रिया; फाँदने का कार्य।

**लांघल** *अक०* कूद जाना, फाँदना, लाँघना।

**लाँच** *स्त्री०* घूस।

**लांछन** *पु०* दाग; कलंक।

**लाँड़** *पु०* पुरुषेन्द्रिय, शिश्न, लण्ड, लौड़ा।

**लाइची** *स्त्री०* इलायची।

**लाइट** *स्त्री०* [अं०] रोशनी।

**लाइन** *स्त्री०* [अं०] पंक्ति।

**लाइफ** *स्त्री०* [अं०] जीवन।

**लाइब्रेरी** *स्त्री०* [अं०] पुस्तकालय।
**लाइसेंस** *पु०* [अं०] अधिकारपत्र।
**लाई** *स्त्री०* भुना हुआ धान, लावा।
**लाई-फूसी** *स्त्री०* चापलूसी।
**लाकन** *वि०* पतले शरीर वाला।
**लाख** *वि०* [सं० लक्षं] संख्या, सौ हजार। *उदा०* 'लाख जाय पर साख न जाय'।
**लाखपति** *पु०* लाखों की सम्पत्ति का स्वामी।
**लाखराज** *पु०* करमुक्त भूमि।
**लाखी** *स्त्री०* लाह की बनी हुई वस्तु।
**लाग** *पु०* अनुचित सम्बन्ध; हँसी-मजाक का सम्बन्ध; यौन सम्बन्ध।
**लाग-डाँट** *पु०* ईर्ष्या, बैर, मुकाबला।
**लागत** *स्त्री०* किसी काम में लगने वाली राशि, यथार्थ खर्च।
**लागल** *अक०* दो वस्तुओं के तलों का परस्पर मिलना; लगना।
**लागि** *अव्य०* के लिए; तक; हेतु; द्वारा।
**लागू** *वि०* घटित होने वाला; चरितार्थ होने वाला; ठीक बैठने वाला।
**लागे** *अव्य०* वास्ते, लिए।
**लाचार** *वि०* मजबूर। *उदा०* 'लाचार का विचार का'।
**लाचारी** *स्त्री०* मजबूरी।
**लाची** *स्त्री०* एक प्रकार का सुगन्धित मसाला, इलायची।
**लाछन** *पु०* लांछन, कलंक।
**लाछी** *स्त्री०* लक्ष्मी।
**लाज** *स्त्री०* शर्म, लज्जा। *उदा०* 'लाज बीज धोकरी मोर नाव सुधकरी'।
**लाजिम** *वि०* लज्जाजनक।
**लाजिमी** *वि०* आवश्यक, उचित।
**लाझा** *पु०* मवेशी के बच्चे जनने पर उसके शरीर से निकली झिल्ली।
**लाट** *पु०* स्तम्भ, मीनार।
**लाटा** दे० 'लट्टा'। तीसी भुनने और कूटने के बाद तैयार भोज्य-पदार्थ, भुना महुआ।
**लाठ** *पु०* तेल पेरने के कोल्हू में डालने वाला मोटा लकड़ी का टुकड़ा।
**लाठा-लाठी** *स्त्री०* एक का दूसरे पर लाठी से प्रहार करना।
**लाठी** *स्त्री०* पतले बाँस का छोटा 3-3 हाथ का टुकड़ा, जो लड़ाई या अपनी रक्षा के लिए हाथ में रखा करते हैं।
**लाठी-चार्ज** *पु०* भीड़ हटाने हेतु लाठी से प्रहार करना।
**लाड़** *पु०* लालन, प्यार। **-चाव** *पु०* प्यार-दुलार।
**लाड़ला** *वि०* प्यारा।
**लाड़ली** *स्त्री०* प्यारी।
**लात** *स्त्री०* पैर, गोड़, पाँव।
**लाथ** *स्त्री०* बहाना, प्रपंच, प्रपंचपूर्ण बात।
**लाद** *पु०* पेट की आँत।
**लादल** *अक०* अपने पर बोझ लेना। *सक०* किसी पर बोझा लादना। गाड़ी आदि पर सामान रखना।
**लादी** *स्त्री०* धोबी का गदहे पर लादा गया मैले वस्त्र का गट्ठर।
**लानत** *पु०* धिक्कार, निन्दा, अपमान।
**लापता** *वि०* जिसका पता न हो।
**लापरवाह** *वि०* बेफिक्र, जिसे कोई चिन्ता न हो।
**लाभ** *पु०* नफा, फायदा, भलाई। **-कर** *वि०* जिससे लाभ हो।
**लाम** *वि०* *पु०* लम्बा।
**लामल** *अक०* मवेशियों का पानी पीना; रोपे गए पौधे का धरती से जड़ पकड़ना।
**लाम-लहकार** *पु०* फैशन; आवश्यकता से अधिक, बढ़ावा।

**लामा** *वि०* लम्बा।
**लायक** *वि०* योग्य; मनपसन्द।
**लायकियत** *स्त्री०* सज्जनता; भलमन-साहत।
**लायन** *पु०* दहेज में नकदी की जगह दी गई विविध वस्तुएँ, गिरवी रखी हुई चीज।
**लायचीदाना** *पु०* एक प्रकार की मिठाई।
**लार** *स्त्री०* मुँह से निकलने वाला रसेदार थूक।
**लार-पुआर** *पु०* अति मुलायम फसल, पौधा; नवजात शिशु।
**लार सराई** *स्त्री०* आँख के किनारे पर होने वाली फुंसी।
**लारी** *स्त्री०* मकई का पीला और पतला पौधा; मोटरगाड़ी।
**लाल** *पु०* लाल रंग का सुप्रसिद्ध रत्न; कायस्थों, वैश्यों की उपाधि; एक छोटी चिड़िया। *उदा०* 'लाल मिरचाई बड़ा तिताई'।
**लालगेंड़ा** *पु०* रसदार और मोटी ईख।
**लालच** *स्त्री०* किसी चीज को पाने का लोभ।
**लालटेन** *स्त्री०* [अं०] शीशे से आवृत्त दीपक; लैण्टर्न; चिमनीदार लैम्प।
**लालटेस** *वि०* टेसू के समान लाल; अतिशय लाल।
**लालपान** *पु०* ताश का एक रंग।
**लालबम** *पु०* प्रथम-प्रथम जल चढ़ाने के लिए काँवर ढोने वाला व्यक्ति।
**लाल बुझक्कड़** *पु०* घटनाओं में मनगढ़न्त ब्यौरा देनेवाला, मनमाना अर्थ लगाकर बोलने वाला।
**लालमी** *स्त्री०* खरबूज।
**लाल मोहन** *पु०* लाल (रसगुल्ला)।
**लालसा** *स्त्री०* अभिलाषा, इच्छा।
**लालिमा** *स्त्री०* लाली, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय की लाली।
**लाली** *स्त्री०* लालिमा, गुदे का भीतरी भाग।
**लाले** *पु०* अरमान, हवस।
**लालो** *पु०* संकट।
**लावन-झावन** *पु० यौ०* किसी हिसाब के भुगतान में अनावश्यक वस्तु देने का कार्य।
**लाव लसकर** *पु०* सेना और उसके साथ रहने वाले अन्य लोग तथा सामान आदि।
**लावनी** *स्त्री०* एक प्रकार का छन्द या गीत।
**लावा** *पु०* मक्का या दूसरे अन्न के भुनने पर फूटा हुआ रूप।
**लावा घोली** *स्त्री०* उचित तौल से कुछ अधिक दिया गया सामान।
**लावारिस** *अ०* जिसका कोई पिता या स्वामी न हो; आलसी, ढीला-ढाला।
**लावा-लेसी** *स्त्री०* सम्बन्ध, सरोकार।
**लास** *स्त्री०* मृतशरीर, शव, मुर्दा।
**लासा** *पु०* पीपल के दूध से तैयार रसीला पदार्थ; बेल का लसादार पदार्थ।
**लाह** *स्त्री०* लाक्षा, लाख, लाही; चमक, कान्ति।
**लाहढ** *स्त्री०* टूटी या फटी हुई लहठी को जोड़ना।
**लाही** *स्त्री०* सरसों आदि का हानिकारक कीड़ाविशेष।
**लाहौरी नमक** *पु०* सेंधा नमक।
**लाहौल** *पु०* [अ०] शैतान।
**लिंग** *पु०* [सं०] चिह्न; प्रमाण; पुरुष की जननेन्द्रिय।
**लिअवावल** *सक०* सम्भोग कराना।
**लिआवल** *सक०* किसी को संग ले जाना।
**लिखतंग** *पु०* कागज पर लिखी बात; दस्तावेज लिखा कागज। *कहा०* 'लिखतं का आगा बकतं का'।

**लिखनी** *पु०* भाग्य में जो लिखा हो वह।
**लिखनी** *स्त्री०* लिखने का काम।
**लिखनी पांड़े** *पु०* मेले में पशुओं की बिक्री की रसीद लिखने वाला।
**लिखल** *सक०* लिपिबद्ध करना, चित्रित करना, स्याही से अंकित करना।
**लिखाई** *स्त्री०* लिखने का भाव या क्रिया अथवा मजदूरी।
**लिखापढ़ी** *स्त्री०* पत्र-व्यवहार; किसी बात को लिखकर पक्का करने का काम।
**लिखावट** *स्त्री०* लिपि; लेख, लिखने की शैली।
**लिखावल** *सक०* लिखने का काम दूसरे से कराना।
**लिखौनी** *स्त्री०* लिखने की मजदूरी।
**लिट्ट** *स्त्री०* बड़ी एवं मोटी रोटी।
**लिट्टी** *स्त्री०* मसाला और सत्तूभरी हुई रोटी; भभरी; बाटी।
**लिधुर** *पु०* रक्त, देवी की बलि का रक्त, रुधिर।
**लिपवावल** *सक०* दूसरे से लीपने का काम कराना।
**लिपाइल** *अक०* लिपा जाना; गोबर, मिट्टी और पानी से पोता जाना।
**लिपाई** *स्त्री०* लीपने का कार्य, भाव या मजदूरी।
**लिपि** *स्त्री०* [सं०] लिखावट; लिखने की पद्धति जैसे नागरी, रोमन, अरबी लिपि। **-कार** *पु०* लेखक।
**लिपिक** *पु०* [सं०] क्लर्क।
**लिफाफा** *पु०* चिट्ठी या लेख आदि रखने की कागज की थैली; खोल।
**लिबलिबी** *स्त्री०* कण्ठ में लटकी मांस की घण्टी।
**लियाकत** *स्त्री०* योग्यता, सभ्यता।
**लिलकंठ** *पु०* दशहरे के दिन दर्शन करने का शुभ माना जाने वाला पक्षीविशेष; नीलकण्ठ।
**लिलगाय** *स्त्री०* हिरन की एक जाति; नीलगाय।
**लिलाफा** *पु०* दे० 'लिफाफा'।
**लिलाम** *पु०* सबसे अधिक डाक बोलकर बिक्री लेने की प्रथा; नीलाम।
**लिलार** *पु०* मस्तक, ललाट।
**लिलुहा** *पु०* कलाई, पहुँचा।
**लिबाल** *पु०* लेने वाला।
**लिवैया** *पु०* लाने वाला।
**लिस्ट** *स्त्री०* [अं०] सूची।
**लिहाज** *पु०* [फा०] ख्याल; अदब; संकोच।
**लिहाड़ा** *वि०* नीच; निकम्मा।
**लिहाड़ी** *स्त्री०* हँसी, निन्दा।
**लिहाफ** *स्त्री०* [अ०] मोटी रजाई।
**लीक** *स्त्री०* रेखा, कतार; परम्परा।
**लीख** *स्त्री०* जूँ का अण्डा; बैलगाड़ी के चलने से बना रास्ता।
**लीचड़** *वि०* निकम्मा, नीच, कंजूस।
**लीची** *स्त्री०* एक प्रकार का मीठा फल।
**लीडर** *पु०* [अं०] नेता, मुखिया।
**लीद** *स्त्री०* घोड़े, गदहे का मल।
**लीपल** *सक०* दीवार या सतह का पोतना।
**लील** *पु०* नील का पौधा; नीलरंग।
**लीलगाय** *स्त्री०* हिन्दुओं में गाय के समान माना जाने वाला हिरन जाति का एक वन्य पशु।
**लीलल** *सक०* निगलना, घोंटना।
**लीला** *स्त्री०* राम, कृष्ण आदि के चरित्र का अभिनय; मनोरंजन कार्य, खेल; बनावटी व्यवहार।
**लीहल** *अक०* लेना या प्राप्त करना।
**लीहल-दीहल** *अक०* लेना-देना।

**लुंगी** *स्त्री०* कमर में लपेटने का वस्त्र।
**लुंच** *वि०* नोचने वाला।
**लुंज** *वि०* लँगड़ा-लूला।
**लुअठिया** *पु०* राजाओं के मृतक व्यक्ति के मुख में आग लगाने वाला व्यक्ति, जो वंशगत होता है।
**लुआठ** दे० 'लुकाड़'।
**लुआठी** *स्त्री०* दे० 'लुकाठी'।
**लुआर** *पु०* लू।
**लुक** *स्त्री०* तप्त हवा, अग्निपुंज; मृगतृष्णा।
**लुक-झुक** *पु०* सूर्यास्त की बेला; झुट-पुट।
**लुकदेवी** *स्त्री०* देवी, जो रात में घूमते समय जहाँ-तहाँ प्रकाश कर देती है; नमी वाली जगहों पर जल उठने वाली गैस।
**लुकाइल** *अक०* छिपना, छिप जाना, लुकना।
**लुका-छिपी** *स्त्री०* लुकने-छिपने का खेल।
**लुकाठी** *स्त्री०* जलता हुआ काठ का टुकड़ा।
**लुकाड़** *पु०* लकड़ी या खरपात का बड़ा गट्ठर, जिसके एक छोर को जलाकर दूसरे को जलाते हैं। **-भाँजल** *मुहा०* प्रदर्शन करना।
**लुकाड़ी** दे० 'लुकाठी'।
**लुकावल** *सक०* छिपाना, लुकाना, ओट में करना।
**लुकुन्दर** *वि०* बदमाश बालक, चंचल।
**लुगरी** *स्त्री०* फटी-पुरानी, गन्दी धोती या साड़ी। *उदा०* 'लुगरी में डोरा हेवान'।
**लुगाई** *स्त्री०* स्त्री, औरत, महिला।
**लुग्गा** *वि०* कपड़ा, लत्ता, साधारण वस्त्र।
**लुचुई** *स्त्री०* पतली पूरी।
**लुच्चा** *वि०* चाईं; लम्पट।
**लुटल** *अक०* लुटा जाना।
**लुटावल** *सक०* अन्धाधुन्ध खर्च करना।
**लुटिया** *स्त्री०* छोटा लोटा।
**लुटेरा** *पु०* लूटने वाला।
**लुड़ेठल** *सक०* लूँड़े में बन्द करना।
**लुत्ती** *स्त्री०* चिनगारी।
**लुपलुपाइल** *अक०* टिमटिमाना।
**लुरकी** *स्त्री०* कान की बाली, कान का गहना।
**लू** *स्त्री०* तप्त वायु का झोंका।
**लूक** *स्त्री०* दे० 'लू'।
**लूकट** *पु०* आग।
**लूगा** *पु०* वस्त्र, धोती।
**लूट** *स्त्री०* डकैती। **-खसोट** *स्त्री०* लूटमार।
**लूमड़ी** *स्त्री०* लोमड़ी।
**लूला** *वि०* हाथकटा व्यक्ति, जिसका हाथ मात्र आधा हो।
**लेंड़ी** *स्त्री०* बकरी का गोल बँधा हुआ मल।
**लेंड़आ** *पु०* लड्डू; एक खिलौना, जो लुढ़खने पर खड़ा हो जाता है।
**लेंस** *पु०* [अं०] किरणों को केन्द्रीभूत करने वाला शीशे का ताल।
**लेंहड़** *स्त्री०* लेहँड़ा।
**लेंहड़ी** *स्त्री०* भेंड़, बकरी का झुण्ड।
**ले** *अव्य०* लेकर; तक; शुरू होकर।
**लेई** *स्त्री०* लपसी; चिपकाने हेतु बनाया गया घोल।
**लेक्चर** *पु०* [अं०] व्याख्यान, भाषण।
**लेखक** *पु०* लिखनेवाला (व्यक्ति)।
**लेखा** *पु०* हिसाब; आय-व्यय का ब्योरा। *उदा०* 'लेखा जोखा थाहे, लइका बूड़ल काहे'।
**लेखे** *क्रि०वि०* लिए, खातिर, बदे।
**लेट** *वि०* [अं०] देर करके आने वाला।
**लेटर** *पु०* [अं०] अक्षर; चिट्ठी, पत्र।
**लेटल** *अक०* आराम करना।
**लेडी** *स्त्री०* [अं०] महिला।
**लेदी** *स्त्री०* चारा, घास।

**लेन** *पु०* पावना; प्राप्त करना।

**लेबर** *पु०* [अं०] शारीरिक, मानसिक परिश्रम। **-पार्टी** *स्त्री०* मजदूरों का दल। **-यूनियन** *स्त्री०* मजदूर संघ।

**लेमन** *पु०* [अं०] नीबू। **-चूस** *पु०* नीबू का सत मिलाकर बनी टिकिया।

**लेरुआ** *पु०* गाय का बच्चा, लेरू।

**लेव** *पु०* धान रोपने हेतु पाँकी जैसा तैयार खेत।

**लेवा** *पु०* सुजनी, साधारण बिछौना।

**लेसल** *अक०* जलाना, बारना।

**लेहना** *पु०* पशु के लिए चारा।

**लोक** *पु०* [सं०] भुवन (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल); पृथ्वी; संसार; यश। *उदा०* 'लोक पतित कि बंस पतित'। **-कांत** *वि०* सर्वप्रिय। **-बार** *पु०* शिव। **-गति** *स्त्री०* लोकाचार। **-गाथा** *स्त्री०* पारम्परिक गीत। **-चार** *पु०* लोकाचार। **-तंत्र** *पु०* जनतंत्र। **-धुनि** *स्त्री०* लोकध्वनि। **-नायक** *पु०* लोकों का नयन करने वाला (सूर्य)। **-नेता** *पु०* शिव। **-पथ** *पु०* जगत् का तरीका। **-प्रिय** *वि०* जो बहुत लोगों को प्रिय लगे। **-मत** *पु०* जनता की राय। **-सत्ता** *स्त्री०* वह शासन-व्यवस्था, जिसमें सत्ता जनता के हाथ में हो। **-सेवक** *पु०* सार्वजनिक काम करने वाला। **-हित** *पु०* मानव मात्र का कल्याण।

**लोकनी** *स्त्री०* दाई, नौकरानी।

**लोग** *पु०* आदमी, जनता। **-बाग** *पु०* आदमी का समूह। *उदा०* 'लोग-लुगाई आपे आपे'।

**लोगारो** *पु०* लोगों की भीड़।

**लोचना** *पु०* पुत्र-जन्म का समाचार; हल्दी-चूनामिश्रित चन्दन।

**लोट** *पु०* नोट।

**लोटकी** *स्त्री०* लुटिया।

**लोटन** *पु०* एक कबूतरविशेष। *उदा०* 'अटरिया पर लोटन कबूतर रे'।

**लोटनी** *स्त्री०* तोरी का एक प्रकार।

**लोट-पोट** *स्त्री०* बिछावन पर लेटने की स्थिति।

**लोटल** *अक०* भूमि पर पड़ना, लोटनी।

**लोटा** *पु०* पानी पीने का धातु-पात्र। *उदा०* 'लोटा बेटा बाहरे चमकेला'।

**लोटाइल** *अक०* धरती पर लुढ़कना।

**लोटिया** *पु०* छोटा लोटा।

**लोटी** *स्त्री०* छोटा लोटा।

**लोढ़ल** *सक०* फूल चुनने का भाव।

**लोढ़निया** *पु०* लोढ़नियाने का कार्य या भाव।

**लोढ़निआइल** *अक०* जमीन पर लुढ़कना।

**लोढ़ा** *पु०* बट्टा।

**लोथ** *वि०* लकवे के कारण चलने-फिरने में असमर्थ व्यक्ति।

**लोथड़ा** *पु०* मांसपिण्ड।

**लोदा** *पु०* गीली मिट्टी का गोला।

**लोन** *पु०* नमक। **-हरामी** *वि०* कृतघ्न।

**लोना** *वि०* नमकीन।

**लोटाई** *स्त्री०* सुन्दरता।

**लोनिया** *पु०* नोनियाँ।

**लोप** *पु०* नाश, क्षय, छिप जाना।

**लोभ** *पु०* लालच, किसी वस्तु को लेने की इच्छा।

**लोभाइल** *अक०* लुब्ध होना, मोहित होना।

**लोभी** *पु०* लालची। *उदा०* 'लोभी घर में ठगो उपास'।

**लोमर** *स्त्री०* लोमड़ी।

**लभरिआइल** *अक०* लोमड़ी के समान आस-पास में चक्कर काटना।

**लोर** *पु०* आँसू; मुर्गे के गले में लटकता हुआ लाल मांस।
**लोराइल** *अक०* आँख से आँसू या पानी गिरना।
**लोरी** *स्त्री०* बच्चों को खिलाने-पिलाने का गीत।
**लोल** *पु०* चोंच।
**लोला** *पु०* जीभ, बच्चों का काठ का खिलौना।
**लोलार** *वि०* गाली बकने वाला।
**लोहइन** *स्त्री०* लोहार की स्त्री।
**लोहई** *वि०* लोहे का बना।
**लोहखर** *पु०* हजाम का हथियार रखने का थैला।
**लोहचून** *पु०* लोहे को रेतने पर प्राप्त चूर्ण।
**लोहड़ा** *पु०* लोहे का चौड़ा मुँहवाला बर्तन, जिसमें कुएँ से पानी निकाला जाए।
**लोहबान** *पु०* पेड़विशेष का सुगन्धित लस्सा, जो जलाने और औषधि के काम आता है।
**लोह-लँगड़** *पु०* लोहे का भारी खम्भा या कोई सामान।
**लोहसारी** *स्त्री०* लोहार का कारखाना।
**लोहसियान** *पु०* लोहे का कण।
**लोहा** *पु०* कल, पुर्जे, हथियार के काम आने वाली एक धातुविशेष। *उदा०* 'लोहा के लोहा काटे ला'।
**लोहाइन** *वि०* लोहे के स्वाद का।
**लोहार** *पु०* लोहे का काम करने वाला, लोहकार।
**लोहिया** *स्त्री०* लोहे का बर्तन; मुस्लिम युग का ताँबे या लोहे का पैसा।
**लोहू** *पु०* खून, रक्त।
**लौं** *अव्य०* तक; समान, बराबर।
**लौंग** *पु०* दे० 'लवंग'।
**लौंग चूरा** *पु०* एक उत्तम धानविशेष।
**लौंगी** *स्त्री०* लौंग के आकार का फल; छोटा मिर्चविशेष।
**लौंडा** *पु०* छोकड़ा, नाच का नर्तक; नमकीन सुन्दर लड़का। **-पन** *पु०* लड़कपन, छिछोरपन। **-बाज** *वि०* बालकों से प्रेम और अप्राकृतिक सम्बन्ध रखने वाला।
**लौंड़ा** *पु०* पुरुष की जननेन्द्रिय।
**लौंड़ी** *स्त्री०* टहलनी, दासी, मजदूरनी। *उदा०* 'लौंड़ी बनके कमाय बीबी बन के खाय'।
**लौ** *स्त्री०* लपट, ज्वाला; आया, कामना।
**लौआ** *पु०* कद्दू।
**लौकल** *अक०* देख पड़ना।
**लौका** *पु०* दे० 'लौआ'।
**लौकी** *स्त्री०* दे० 'लौका'।
**लौटल** *अक०* वापस आना, फिरना।
**लौह** *पु०* [सं०] लोहा; हथियार। *वि०* लोहे, ताँबे का बना हुआ। **-कार** *पु०* लोहार। **-पुरुष** *पु०* दृढ़निश्चयी व्यक्ति। **-युग** *पु०* लोहे के प्राथमिक उपयोग का ऐतिहासिक काल।

❑

# व

**व** देवनागरी वर्णमाला का उनतीसवाँ अन्तस्थ वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान दन्तोष्ठ है।

**वंक** *वि०* झुका हुआ। *पु०* [सं०] नदी का घुमाव।

**वंकट** *वि०* टेढ़ा; विकट।

**वंकिम** *वि०* कुछ झुका हुआ।

**वंग** *पु०* [सं०] बंगाल; राँगा; एक पहाड़। **-देस** *पु०* बंगाल।

**वंचक** *वि०* [सं०] ठग, धूर्त्त; दुष्ट। *पु०* नीच आदमी।

**वंटन** *पु०* [सं०] हिस्सा लगाने का काम।

**वंड** *पु०* [सं०] वह, जिसके लिंगाग्र पर चमड़ा न हो।

**वंडा** *स्त्री०* [सं०] व्यभिचारिणी।

**वंदन** *पु०* [सं०] स्तुति; पूजन; नमस्कार। **-माला** *स्त्री०* वन्दनवार।

**वंदी** *स्त्री०* [सं०] कैदी; स्तुति। **-जन** *पु०* चारण, भाट। **-पाल** *पु०* कैदियों का रक्षक, जेलर।

**वंधु** *पु०* बन्धु।

**वंभ** *पु०* [सं०] बाँस।

**वँस** *पु०* [सं०] बाँस; बाँसुरी; कुल परिवार; जाति।

**वंसावली** *स्त्री०* [सं०] वंशतालिका, वंशावली।

**वकत** *स्त्री०* [अ०] इज्जत; साख, विश्वास।

**वकालत** *स्त्री०* [अ०] वकील का पेशा। **-नामा** *पु०* मुकदमे की पैरवी का अधिकार-पत्र।

**वकील** *पु०* [अ०] वकालत करने का अधिकारी; प्रतिनिधि।

**वक्त** *पु०* [अ०] समय; अवकाश; मौका। **-के पाबन्द** *पु०* समय पर कार्य करने वाला। **-बेवक्त** समय-कुसमय।

**वक्ता** *वि०* [सं०] बोलने वाला।

**वक्र** *वि०* [सं०] टेढ़ा; तिरछा; चालबाज।

**वगैरह** *अव्य०* [अ०] इत्यादि।

**वचन** *पु०* [सं०] वाणी, बात; आदेश।

**वजन** *पु०* [अ०] तौल; भार। **-दार** *वि०* बोझवाला; भारी; महत्त्वपूर्ण।

**वजनी** *वि०* वजन रखने वाला।

**वजह** *स्त्री०* [अ०] कारण; सबब।

**वजीफा** *पु०* [अ०] छात्रवृत्ति।

**वजीर** *पु०* [अ०] मंत्री, सचिव। **-आजम** *पु०* प्रधानमंत्री। **-खारिजा** *पु०* पर-राष्ट्रमंत्री। **-जंग** *पु०* युद्धमंत्री। **-तालीम** *पु०* शिक्षा।

**वट** *पु०* [सं०] बरगद का वृक्ष; कौड़ी; बटिका; रस्सी।

**वटी** *स्त्री०* [सं०] गोली; रस्सी।

**वटु** *पु०* [सं०] ब्रह्मचारी; बालक।

**वतन** *पु०* [अ०] जन्म-स्थान; स्वदेश। **-दोस्त** *पु०* देश-हितैषी। **-परस्ती** *स्त्री०* देशभक्ति।

**वतनी** *वि०* अपने देश का, स्वदेशी।

**वत्सर** *पु०* [सं०] वर्ष, साल।

**वद** *वि०* [सं०] बोलने वाला।

**वदन** *पु०* [सं०] चेहरा, मुखड़ा; शक्ल।

**वदाम** *पु०* [सं०] बादाम नामक फल।

**वध** *पु०* [सं०] नाश, हनन; मृत्यु।

**वधु** *स्त्री०* [सं०] पुत्रवधू; दुलहिन; युवती।

**वधू** *स्त्री०* [सं०] दुलहिन, पतोहू; स्त्री। **-गृह प्रवेश** *पु०* गृह-प्रवेश की विधि।

**वनिता** *स्त्री०* [सं०] स्त्री; प्रिया; मादा।

**वपन** *पु०* [सं०] बीज-बोना।
**वपु** *पु०* [सं०] शरीर।
**वफा** *पु०* [अं०] प्रीति, मित्रता का निर्वाह। **-दार** *वि०* वचन-पालक।
**वबाल** *पु०* [अ०] कठिनाई; बोझ; बला।
**वर** *पु०* [सं०] चुनाव; पसन्द; भेंट; दान।
**वरन्** *अव्य०* बल्कि, ऐसा नहीं।
**वरानसि** *स्त्री०* [सं०] वाराणसी, बनारस।
**वर्ग** *पु०* [सं०] दल; स्वजातीय समूह; शक्ति। **-मूल** *पु०* समान राशियों का गुणनफल।
**वर्ण** *पु०* [सं०] रंग जाति; भेद; अक्षर।
**वर्णन** *पु०* [सं०] चित्रण; बयान; गुण-कथन।
**वर्तमान** *वि०* [सं०] चालू; उपस्थित; हाल का।
**वर्ष** *पु०* [सं०] वृष्टि; साल।
**वर्षा** *स्त्री०* [सं०] बरसात। **-काल** *पु०* बरसात।
**वल्द** *पु०* [अ०] बेटा, पुत्र।
**वल्दीयत** *स्त्री०* वंश-परिचय।
**वल्लभ** *वि०* [सं०] प्रिय, प्यारा।
**वसंत** *पु०* [सं०] चैत्र-बैशाख वाली ऋतु। **-पंचमी** *स्त्री०* सरस्वती-पूजा। उदा० 'हे वसंत तूं संत बन सनक मत देख टिकोरा के'।
**वसन** *पु०* [सं०] वस्त्र।
**वसुंधरा** *स्त्री०* [सं०] पृथ्वी; देश; राज्य।
**वसूल** *पु०* [अ०] प्राप्ति। *वि०* मिला हुआ।
**वसूली** *पु०* [अ०] उगाही।
**वस्तु** *पु०* [सं०] चीज, पदार्थ; धन-सम्पत्ति। **-जगत्** *पु०* दृश्यमान संसार।
**वस्त्र** *पु०* [सं०] कपड़ा; पोशाक।
**वह** *सर्व०* बातचीत में दूर स्थित व्यक्ति के संकेत का शब्द।
**वहाँ** *अव्य०* उस जगह।
**वाँ** *अव्य०* वहाँ, उस जगह।
**वाइपर** *पु०* [अं०] फर्श पोंछने का साधन।
**वाइस** *पु०* [अं०] प्रतिनिधि के रूप में काम करने वाला व्यक्ति। **-चॉसलर** *पु०* कुलपति। **-चेयरमैन** *पु०* उपसभापति।
**वाउचर** *पु०* [अं०] ब्योरेवार खर्च का पुर्जा।
**वाकई** *अव्य०* [अ०] वस्तुतः, सचमुच।
**वाकिया** *पु०* [अ०] घटना; हादसा; वृत्तान्त। **-नवीस** *पु०* खबर लिखने वाला।
**वाक्य** *पु०* [सं०] पदों का वह समूह, जिससे अभिप्राय समझ में आ जाए; कथन। **-खंड** *पु०* उपवाक्य। **-रचना** *स्त्री०* वाक्य बनाना।
**वाचक** *वि०* [सं०] सूचक, बताने वाला।
**वाचन** *पु०* [सं०] उच्चारण, प्रतिपादन।
**वाचनालय** *पु०* [सं०] वह स्थान, जहाँ दैनिक पत्र एवं पत्रिकाएँ सामान्य नागरिकों हेतु पढ़ने के निमित्त रखी जाती हैं।
**वाज** *पु०* [सं०] पंख, पर।
**वाटर** *पु०* [अं०] पानी। **-कलर** *पु०* जल और गोंद मिले रंग से तैयार चित्र। **-प्रूफ** *वि०* जिस पर पानी का असर न हो। **-मैन** *पु०* पानी पिलाने वाला सेवक।
**वाटिका** *स्त्री०* [सं०] उद्यान, उपवन।
**वात** *पु०* [सं०] वायु; पवनदेव, गठिया।
**वातास** *स्त्री०* बयार।
**वादा** *पु०* [अ०] वचन, प्रतिज्ञा, इकरार। **-खिलाफ** *वि०* वचन भंग करने वाला।
**वादाम** *पु०* [सं०] बादाम।
**वादी** *पु०* [सं०] वक्ता, मुकदमा चलाने वाला, मुद्दई।
**वापसी** *वि०* फेरा, लौटाया हुआ।
**वाम** *स्त्री०* वामा, स्त्री।

**वामा** *स्त्री०* [सं०] दुर्गा, गौरी, लक्ष्मी।
**वायरल** *पु०* [अं०] प्रसार, संक्रमण।
**वायु** *स्त्री०* [सं०] हवा; साँस; प्राणवायु। **-कोण** *पु०* पश्चिम-उत्तर का कोना। **-मंडल** *पु०* आकाश; वातावरण। **-यान** *पु०* हवाईजहाज।
**वारंट** *पु०* [अं०] वह आज्ञापत्र, जिससे किसी को कोई विशेष कार्य करने का अधिकार दिया जाए।
**वारंवार** *अव्य०* बारम्बार।
**वार** *पु०* आक्रमण; आघात; युद्ध।
**वारनिस** *स्त्री०* [अं०] लकड़ी पर चमक लाने हेतु लगाया गया रोगन।
**वाराणसी** *स्त्री०* [सं०] बनारस, काशी।
**वारि** *पु०* [सं०] जल; वर्षा।
**वारिस** *पु०* [अ०] उत्तराधिकारी।
**वार्डर** *पु०* [अं०] रक्षक, पहरेदार।
**वालंटियर** *पु०* [अं०] स्वयंसेवक।
**वास** *पु०* [सं०] निवास, रहना; घर, मकान।
**वासन** *पु०* [सं०] वस्त्र।
**वासर** *पु०* [सं०] दिन।
**वासुदेव** *पु०* [सं०] वसुदेव-पुत्र, कृष्ण।
**वास्ता** *पु०* [अ०] सम्बन्ध, लगाव; नाता।
**वास्ते** *अव्य०* [अ०] लिए, हेतु।
**वाह** *अव्य०* [फा०] धन्य, साधु, शाबाश। **-वाह** *अव्य०* क्या कहना!
**विंश** *वि०* [सं०] बीसवाँ। *पु०* बीसवाँ भाग।
**विकट** *वि०* [सं०] भद्दा; विशाल; भयंकर।
**विकराल** *वि०* [सं०] भयंकर, विकराल।
**विकल** *वि०* [सं०] बेचैन, भीत; व्याकुल।
**विकलांग** *वि०* [सं०] बेकार अंगवाला, न्यूनांग, दिव्यांग।
**विकार** *पु०* [सं०] परिवर्तन; मल; रोग।
**विकास** *पु०* [सं०] खिलना; खुलना (मुँह आदि का), प्रसन्नता; फैलाव।
**विकेट** *पु०* [अं०] क्रिकेट खिलाड़ी; स्टम्प और गुल्ली।
**विख** *वि०* [सं०] जहर।
**विगत** *वि०* [सं०] अतीत, बीता हुआ; रहित।
**विघटन** *पु०* [सं०] अलग करना; तोड़ना; बरबादी।
**विघन** *पु०* [सं०] बाधा, अड़चन, कठिनाई।
**विचार** *पु०* [सं०] निर्णय; चिन्तन।
**विजय** *स्त्री०* [सं०] जीत का पारितोषिक; युद्ध में होने वाली जीत।
**विजया** *स्त्री०* [सं०] दुर्गा; भाँग।
**विज्ञान** *पु०* [सं०] ज्ञान; समझ, प्रज्ञा; विवेक; दक्षता।
**विज्ञापन** *पु०* [सं०] सूचना, इश्तहार; निवेदन।
**विटप** *पु०* [सं०] पेड़; छतनार पेड़।
**वितंडा** *स्त्री०* [सं०] वितण्डा, निरर्थक दलील; हुज्जत।
**वितान** *पु०* [सं०] फैलाव, विस्तार।
**वित्त** *वि०* [सं०] प्राप्त; ज्ञात। *पु०* धन-सम्पत्ति।
**विथा** *स्त्री०* व्यथा, पीड़ा।
**विदा** *स्त्री०* [सं०] ज्ञान; समझ; विद्या। [अ०] विदाई। **-ई** *स्त्री०* विदा होने की क्रिया।
**विदेस** *पु०* [सं०] दूसरा देश, परदेश। **-वासी** *वि०* परदेश में रहने वाला।
**विदेह** *वि०* [सं०] शरीररहित; विरागी। *पु०* राजा जनक। **-कुमारी** *स्त्री०* सीता। **-नगर** *पु०* जनकपुर।
**विद्या** *स्त्री०* [सं०] ज्ञान-विज्ञान; दुर्गा। **-दाता** *पु०* शिक्षक। **-देवी** *स्त्री०* सरस्वती। **-पीठ** *पु०* शिक्षा-केन्द्र।
**विद्युत** *स्त्री०* [सं०] बिजली; वज्र।

**विधाता** *वि०* [सं०] व्यवस्था करने वाला; ब्रह्मा।
**विधान** *पु०* [सं०] प्रबन्ध; कार्य का आयोजन।
**विधायक** *वि०* [सं०] बनाने वाला; कार्य करने वाला; कानून बनाने वाला।
**विधि** *स्त्री०* [सं०] कार्य करने का ढंग; संगति, मेल।
**विनती** *स्त्री०* प्रार्थना।
**विनय** *स्त्री०* [सं०] मार्गदर्शन; अनुशासन; भद्रता; शिष्टता।
**विना** *अव्य०* [सं०] न होने पर, अभाव में।
**विनास** *पु०* विनाश।
**विपत्ति** *स्त्री०* [सं०] संकट; आफत; मृत्यु।
**विपदा** *स्त्री०* [सं०] दु:ख, विपत्ति।
**विपरीत** *वि०* [सं०] उलटा; प्रतिकूल; बेमेल।
**विप्र** *पु०* [सं०] ब्राह्मण; पुरोहित।
**विभा** *स्त्री०* [सं०] प्रभा; कान्ति; सौन्दर्य।
**विभाग** *पु०* [सं०] बँटवारा; पार्थक्य; मुहकमा।
**विभु** *वि०* [सं०] सर्वव्यापक; शक्तिशाली; महान्।
**विभोर** *वि०* निमग्न, तल्लीन।
**विमल** *वि०* [सं०] बेदाग, साफ; विशुद्ध; निर्दोष। **-मति** *वि०* शुद्ध हृदय वाला।
**विमला** *स्त्री०* [सं०] एक देवी; सरस्वती। **-पति** *पु०* ब्रह्मा।
**विमाता** *स्त्री०* [सं०] सौतेली माँ।
**विमान** *वि०* [सं०] असम्मानित। *पु०* देवयान; वायुयान; अरथी।
**वियोग** *पु०* [सं०] पार्थक्य; विरह; अभाव।
**विरंच** *पु०* [सं०] ब्रह्मा।
**विरह** *पु०* [सं] वियोग, जुदाई; अभाव; परित्याग।
**विरागी** *वि०* [सं०] चाह; उदासीन; विरक्त।
**विराजल** *अक०* शोभित होना; बैठना।
**विराम** *पु०* [सं०] ठहराव, अन्त; विश्राम।
**विरासत** *स्त्री०* [अ०] तरका; उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पदा।
**विरुद्ध** *वि०* [सं०] रोका हुआ; अवरुद्ध; विरोधी।
**विरेचन** *पु०* [सं०] दस्तावर दवा, जुलाब।
**विरोध** *पु०* [सं०] बाधा; अवरोध; प्रतिबन्ध।
**विरोधी** *वि०* [सं०] विरोध करने वाला; बाधक; वैरी; झगड़ालू।
**विलम्ब** *पु०* [सं०] लटकना, झूलना; सुस्ती; देर।
**विलखल** *अक०* दु:खी होना।
**विलखावल** *सक०* दु:ख देना, कष्ट देना।
**विलग** *वि०* अलग। *पु०* भेद।
**विलपल** *अक०* रोना, विलाप करना।
**विलपावल** *सक०* रुलाना।
**विलसल** *अक०* विलास करना; मौज मारना।
**विलसावल** *सक०* भोग में प्रवृत्त करना।
**विलाप** *पु०* [सं०] शोक करना; रोना।
**विलायती** *वि०* विलायत का; यूरोपीय; विदेशी। **-माल** *पु०* विदेशी माल।
**विलासी** *वि०* [सं०] चमकदार; आराम-तलब।
**विलोक** *पु०* [सं०] दृष्टिपात; नजर।
**विलोकल** *सक०* देखना।
**विलोप** *पु०* [सं०] लेकर भाग जाना, बाधा, नाश।
**विलोम** *वि०* [सं०] उलटा; क्रमविरुद्ध।
**विवरण** *पु०* [सं०] व्याख्या; वर्णन; ब्योरा।
**विवाद** *पु०* [सं०] बहस; झगड़ा; खण्डन।
**विवाह** *पु०* [सं०] शादी।

**विविध** *वि०* [सं०] कई तरह का।
**विवेक** *पु०* [सं०] यथार्थ ज्ञान; छानबीन।
**विशेष** *वि०* [सं०] असामान्य; प्रचुर।
**विश्व** *पु०* [सं०] ब्रह्माण्ड; संसार।
**त्रिष** *पु०* [सं०] जहर, गरल।
**विसर्जन** *पु०* [सं०] अन्त; मलत्याग; त्याग।
**विसाल** *वि०* विशाल।
**विस्तार** *पु०* [सं०] फैलाव; लम्बाई-चौड़ाई।
**विहग** *पु०* [सं०] पक्षी।
**विहान** *पु०* भोर, प्रात:काल।
**विहार** *पु०* [सं०] मटरगश्ती; मनोरंजन-स्थल, भिक्षुओं का मठ।
**वीर** *वि०* [सं०] बहादुर; शूर; शक्तिशाली।
**वृंदा** *स्त्री०* [सं०] तुलसी; राधा।
**वृक्ष** *पु०* [सं०] पेड़; पौधा; वंशवृक्ष।
**वृथा** *अव्य०* [सं०] बेकार; मूर्खता से; भूल से।
**वृद्ध** *वि०* [सं०] बूढ़ा; बड़ा; बढ़ा हुआ।
**वेग** *पु०* [सं०] प्रवाह, धारा; तीव्र प्रवृत्ति।
**वेटेरिनरी** *वि०* [अं०] पालतू जानवरों के रोग से सम्बन्ध रखने वाला।
**वेतन** *पु०* [सं०] तनख्वाह, सैलरी; जीविका।
**वेद** *पु०* [सं०] ज्ञान; हिन्दुओं का आदि-धर्मग्रन्थ।
**वेदी** *स्त्री०* [सं०] शुभ अवसरों पर बना हुआ चतुष्कोण मण्डप।
**वेश्या** *स्त्री०* [सं०] गणिका; नाच-गान सम्भोग से जीविका चलाने वाली स्त्री।
**वेसन** *पु०* [सं०] बेसन।
**वैदेही** *स्त्री०* [सं०] सीता।
**वैद्य** *वि०* [सं०] वेद सम्बन्धी; आयुर्वेद सम्बन्धी।
**वैयाकरण** *पु०* [सं०] व्याकरण जानने वाला।
**वैर** *पु०* [सं०] विरोध, शत्रुता, दुश्मनी।
**वैराग्य** *पु०* [सं०] विरक्ति; उदासीनता।
**वैसा** *वि०* उस तरह का। *अव्य०* उस प्रकार, उतना।
**वैसे** *अव्य०* उस प्रकार से; यों।
**वोट** *पु०* [अं०] निर्वाचन के लिए दिया जाने वाला मत।
**वोटर** *पु०* [अं०] वह व्यक्ति, जिसे वोट देने का अधिकार प्राप्त हो।
**वोदर** *पु०* उदर।
**वौद्ध** *पु०* [सं०] बौद्ध।
**व्यक्ति** *स्त्री०* [सं०] व्यक्त; प्रकट रूप।
**व्यभिचार** *पु०* [सं०] कुमार्गगमन; पाप, दुष्कर्म।
**व्यभिचारी** *वि०* [सं०] दुश्चरित्र; कुमार्गगामी।
**व्यय** *पु०* [सं०] खर्च, आय का विपरीत।
**व्यवसाय** *पु०* [सं०] प्रयत्न; उद्योग; वृत्ति; जीविका।
**व्यवसायी** *वि०* [सं०] उद्यमी, परिश्रमी।
**व्यवस्था** *स्त्री०* [सं०] प्रबन्ध, इन्तजाम।
**व्यवहार** *पु०* [सं०] कार्य; आचरण; प्रयोग।
**व्याख्या** *स्त्री०* [सं०] टीका; वर्णन।
**व्रत** *पु०* [सं०] धार्मिक अनुष्ठान, नियम; संयम; जीवनयापन का ढंग।
**व्रह्म** *पु०* [सं०] जगत् का मूलतत्त्व; प्रणव; ब्राह्मण; ब्रह्मचर्य।

❑

# श

**श** देवनागरी वर्णमाला का तीसवाँ व्यंजन वर्ण; उच्चारण-स्थान तालु।
**शंक** *स्त्री०* शंका, सन्देह।
**शंकर** *पु०* [सं०] शिव; शुभ, मंगल। **-किंकर** *पु०* शिवभक्त। **-जटा** *स्त्री०* जटाधारी। **-शैल** *पु०* कैलास पर्वत।
**शंकरा** *स्त्री०* [सं०] पार्वती; शमी वृक्ष।
**शंकराचारी** *पु०* शंकरमत को मानने वाला व्यक्ति।
**शंकराचार्य** *पु०* [सं०] अद्वैतवाद के प्रवर्तक, वैदिकधर्म की प्रतिष्ठा इनके द्वारा हुई। बदरिकाश्रम, करवीर-पीठ, द्वारकापीठ तथा शारदापीठ के संस्थापक।
**शंका** *स्त्री०* [सं०] संशय; भय।
**शंख** *पु०* [सं०] समुद्र में पैदा होने वाले एक जन्तु की खाल, अति पावन और शुभप्रद, पूजन के समय बजाया जाता है।
**शंभु** *पु०* [सं०] शिव; प्रधान रुद्र; सिद्ध व्यक्ति।
**शऊर** *पु०* [अ०] विवेक, बुद्धि, कौशल।
**शक** *पु०* [सं०] शकद्वीप में रहनेवाली जाति; प्रसिद्ध सम्राट् कनिष्क इसी जाति के थे। **-संवत्** *पु०* ईसवी सन् के 78 वर्ष पीछे महाराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित संवत्।
**शक** *पु०* [अ०] सन्देह, संशय।
**शकर** *पु०* [फा०] चीनी, शर्करा।
**शकुन** *पु०* [सं०] सगुन; शुभ घड़ी।
**शक्कर** *स्त्री०* [सं० शर्करा] चीनी।
**शक्ति** *स्त्री०* [सं०] सामर्थ्य, बल; क्षमता। **-सम्पन्न** *पु०* शक्तिशाली। **-हीन** *वि०* निर्बल।
**शठ** *वि०* [सं०] धूर्त, छली।
**शत** *पु०* [सं०] सौ की संख्या। *वि०* सौ।
**शत्रु** *पु०* [सं०] बैरी; दुश्मन।
**शनि** *पु०* [सं०] सातवाँ ग्रह; शनिवार।
**शबरी** *स्त्री०* [सं०] शबर जाति की नारी।
**शब्द** *पु०* [सं०] ध्वनि, आवाज; आप्त-वचन। **-कोश** *पु०* वह ग्रन्थ, जिसमें शब्दों के अर्थ, प्रयोग, पर्याय दिए जाते हैं। **-शास्त्र** *पु०* व्याकरण।
**शयन** *पु०* [सं०] निद्रा; शय्या।
**शरबत** *पु०* [अ०] पेय; औषधि का अर्क, जो चीनी के साथ लिया जाता है।
**शराब** *स्त्री०* [अ०] मद्य। **-खाना** *पु०* शराब की दुकान। **-खोर** *पु०* शराबी।
**शराबी** *वि० पु०* शराब पीने वाला।
**शरीफ** *वि०* [अ०] नेक; कुलीन।
**शरीर** *पु०* [सं०] हड्डी, मांस, मज्जानिर्मित जीवों का सम्पूर्ण अंग।
**शर्ट** *स्त्री०* [अं०] कमीज।
**शर्त** *स्त्री०* [अ०] प्रतिज्ञा; कार्यविशेष हेतु अनिवार्य वस्तु; पाबन्दी, बाजी।
**शर्मा** *पु०* [सं० शर्मन्] एक उपाधि।
**शस्त्र** *पु०* [सं०] हथियार; तलवार; औजार।
**शहद** *पु०* [अ०] मधु।
**शहर** *पु०* [फा०] नगर।
**शहीद** *वि०* [अ०] कत्ल किया हुआ; अपने को बलि कर देने वाला।
**शांडिल्य** *पु०* [सं०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। बाल गंगाधर तिलक शाण्डिल्य गोत्र के हैं—'बालो गंगाधरश्चाहं शाण्डिल्य गोत्रभृत्।'
**शांत** *वि०* [सं०] मौन, चुप; सुनसान; नि:शब्द।

**शांति** *स्त्री०* [सं०] निःशब्दता, सूनापन; मन की स्थिरता, तसल्ली।
**शाक** *पु०* [सं०] साग, तरकारी।
**शाख** *स्त्री०* [फा०] शाखा, डाली; फाँक; अंश।
**शागिर्द** *पु०* [फा०] विद्यार्थी, शिष्य।
**शादी** *स्त्री०* [फा०] खुशी; हर्षोत्सव, ब्याह।
**शान** *स्त्री०* [फा०] गौरव; दबदबा; ठाट; प्रतिष्ठा।
**शाप** *पु०* [सं०] बुरी भावना व्यक्त करना; आक्रोश व बद्दुआ।
**शाबाश** *अव्य०* [फा०] खुश रहो; वाहवाह; साधु-साधु।
**शाम** *स्त्री०* [फा०] सन्ध्या, सूर्यास्त का समय।
**शायद** *अव्य०* [फा०] सम्भवतः, कदाचित्।
**शायर** *पु०* [अ०] शेर कहने वाला, कवि।
**शायरा** *स्त्री०* [अ०] कवयित्री।
**शायरी** *स्त्री०* शेर कहना; कविकर्म।
**शारदा** *स्त्री०* [सं०] सरस्वती; दुर्गा।
**शाला** *स्त्री०* [सं०] गृह; स्थान।
**शासक** *पु०* [सं०] शासन करने वाला व्यक्ति; शास्ता; संचालक; व्यवस्थापक।
**शासन** *पु०* [सं०] नियंत्रण, संचालन, हुकूमत का कार्य; आज्ञा, हुक्म।
**शास्त्र** *पु०* [सं०] आदेश; धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला सम्बन्धी ग्रन्थ, जिनसे शिक्षा मिलती है; ज्ञान; सिद्धान्त।
**शाह** *पु०* [फा०] राजा, बादशाह; स्वामी।
**शिकायत** *स्त्री०* [अ०] निन्दा, बुराई, दोष कथन।
**शिकार** *पु०* [अ०] आखेट; पशु-पक्षियों को मारना; मरे हुए पशु-पक्षी का मांस।
**शिक्षा** *स्त्री०* [सं०] ज्ञान की प्राप्ति; चारित्रिक और मानसिक गुणों का विकास; प्रशिक्षण; उपदेश; विद्या, विज्ञान, कला में उत्कृष्टता। **-दीक्षा** *स्त्री०* उपदेश द्वारा सर्वतोमुखी विकास। **-शास्त्र** *पु०* शिक्षा-विधि को व्याख्यायित करने वाला शास्त्र।
**शिक्षार्थी** *पु०* [सं०] विद्यार्थी, छात्र।
**शिक्षालय** *पु०* [सं०] विद्यालय, कॉलेज, स्कूल।
**शिखर** *पु०* [सं०] शृंग, पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग; मुँड़ेर; कलश; किसी वस्तु का सिरा; अग्र भाग।
**शिखा** *स्त्री०* [सं०] चोटी, चुटिया; आग की लपट; दीये की लौ; मोर, मुर्गा।
**शिथिल** *वि०* [सं०] ढीला; खुला हुआ; सुस्त आलसी; जिसे छूट दी गई हो।
**शिर** *पु०* [सं०] सिर। **-मौर** *पु०* सरदार।
**शिरा** *स्त्री०* [सं०] रक्त की नाड़ी।
**शिला** *स्त्री०* [सं०] पत्थर; पत्थर की पटिया, चट्टान।
**शिव** *पु०* [सं०] महेश, महादेव; मंगल, कल्याण; *वि०* मंगलकारी, सुखी। **-पुर** *पु०* काशीपुरी। **-पुरी** *स्त्री०* वाराणसी, बनारस। **-लोक** *पु०* वह लोक, जहाँ शिव निवास करते हैं, कैलास।
**शिशिर** *पु०* [सं०] माघ-फाल्गुन में पड़ने वाली ऋतु; हिम; शीतकाल।
**शिशु** *पु०* [सं०] बालक, बच्चा।
**शिष्ट** *वि०* [सं०] शिक्षा-दीक्षा द्वारा सुसंस्कृत; सभ्य; लोकाचार में पटु; सुशील; धीर। **-मंडल** *पु०* संस्था द्वारा चयनित अधिकारप्राप्त समूह, जिसका कुछ विशिष्ट उद्देश्य हो। **-समाज** *पु०* सभ्य समाज।
**शिष्टाचार** *पु०* [सं०] शिष्टजनों का आचार-व्यवहार; विनम्रता।
**शुक** *पु०* [सं०] सुग्गा, तोता।

**शुक्र** *पु०* [सं०] वीर्य, बीज; सार, तत्त्व; सप्ताह का छठवाँ दिन।

**शुक्ल** *वि०* [सं०] सफेद, शुभ्र।

**शुद्ध** *वि०* [सं०] निर्मल, पवित्र, साफ; निर्दोष; सही, ठीक।

**शुभ** *वि०* [सं०] कल्याणकर; अनुकूल; सुन्दर। पु० मंगल, कल्याण; सुख।

**शुल्क** *पु०* [सं०] कर, महसूल, फीस।

**शूद्र** *पु०* [सं०] हरिजन, अछूत; निम्न व्यक्ति।

**शून्य** *वि०* [सं०] खाली, रिक्त; निर्जन; निराकार। पु० रिक्तता; निर्जन स्थान; आकाश; अभाव।

**शूर** *वि०* [सं०] वीर, शक्ति-सम्पन्न।

**शृंखला** *स्त्री०* [सं०] परम्परा, क्रम; श्रेणी।

**शृंगार** *पु०* [सं०] साहित्य के नौ रसों में से एक प्रधान रस; किसी वस्तु का सजाव; शोभा की वस्तु।

**शेखी** *स्त्री०* घमण्ड; डींग। **-बघारल** *मुहा०* अपने मुँह अपनी बड़ाई करना।

**शेयर** *पु०* [अं०] भाग।

**शेर** *पु०* [अ०] गजल के दो चरण; पद्य। [फा०] बाघ, सिंह।

**शेष** *वि०* [सं०] बाकी, अवशिष्ट; समाप्त।

**शैतान** *पु०* [अ०] प्रेत, पिशाच। *वि०* नटखट, दुष्ट, उपद्रवी।

**शैव** *वि०* [सं०] शिव से सम्बन्ध रखने वाला।

**शोक** *पु०* [सं०] वियोग; व्यथा; मन; पीड़ा।

**शोखी** *स्त्री०* ढिठाई; चंचलता; नटखटपन।

**शोच** *पु०* [सं०] चिन्ता; शोक; दु:ख, पीड़ा।

**शोध** *पु०* [सं०] शुद्धि, सफाई; शुद्ध करने की प्रक्रिया; संस्कार; खोज, अनुसन्धान।

**शोभा** *स्त्री०* [सं०] चमक, कान्ति, प्रभा; सौन्दर्य, छवि। **-हीन** *वि०* असुन्दर।

**शोर** *पु०* [फा०] कोलाहल, हल्ला।

**शोहरत** *स्त्री०* [अ०] ख्याति, प्रसिद्धि; धूम, जोरदार खबर।

**शौक** *पु०* [अ०] प्रबल चाह; चसका; व्यसन।

**शौकीन** *वि०* रुचि रखने वाला; छैला; तमाशबीन।

**शौच** *पु०* [सं०] शुचिता; शरीर-शुद्धि।

**श्रद्धा** *स्त्री०* [सं०] पूज्य भाव; विश्वास; आस्था।

**श्रम** *पु०* [सं०] मेहनत, परिश्रम; प्रयत्न; दौड़-धूप; थकान; कष्ट। **-दान** *पु०* सार्वजनिक हित हेतु पारिश्रमिक न लेकर स्वेच्छा से अपने श्रम का दान करना। **-जीवी** *वि०* परिश्रम कर जीविका चलाने वाला, *पु०* मजदूर, मेहनतकश।

**श्राद्ध** *वि०* [सं०] श्रद्धायुक्त। *पु०* पितरों का क्रिया-कर्म; शास्त्रीय विधि से श्रद्धापूर्वक सम्पादित पितृ-कर्म।

**श्री** *स्त्री०* [सं०] शोभा, सौन्दर्य; विभूति; शान-शौकत; राजोचित गौरव, प्रभा।

**श्रीमती** *स्त्री०* [सं०] स्त्रियों के नाम के पहले जोड़ा जाने वाला आदरसूचक शब्द; राधिका।

**श्रीमान्** *वि०* [सं०] शोभायुक्त, गौरवशाली। *पु०* पुरुषों के नाम के पूर्व लगाया जाने वाले आदरसूचक शब्द।

**श्रेष्ठ** *वि०* [सं०] सबसे अच्छा; सर्वप्रधान; ज्येष्ठ।

**श्लोक** *पु०* [सं०] यश, कीर्ति, प्रशंसा; प्रशंसात्मक पद्य। **-कार** *पु०* श्लोक बनाने वाला।

❑

# ष

**ष** देवनागरी वर्णमाला का इकतीसवाँ व्यञ्जन वर्ण। उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसे मूर्द्धन्य 'ष' कहते हैं।

**षंजन** *पु०* आलिंगन।

**षंड** *पु०* [सं०] बैल, साँड़; हिंजड़ा।

**षट** छह की संख्या। **-दस** *पु०* सोलहो शृंगार।

**षट** *वि०* [सं० षष्] छः। **-कर्म** *पु०* ब्राह्मणों के छः कर्तव्य (अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह। **-खंड** *वि०* जिसमें छह भाग हों। **-रस** *पु०* षड्रस। **-राग** *पु०* षड्राग। **-शास्त्र** *पु०* वेद को प्रमाण मानकर चलने वाले छः दर्शन (न्याय, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा एवं वैशेषिक)।

**षड्** 'षष्' का समासगत रूप। **-अंग** वि० छः अंगोंवाला। **-आनन** *वि०* छः मुखों वाला, कार्तिकेय। **-गया** *स्त्री०* गया, गयासुर, गायत्री, गयागंज, गयादित्य एवं गदाधर, जो मुक्तिदायक हैं। **-गुण** *वि०* छगुना; छः गुणों से युक्त। **-यंत्र** *पु०* साजिश, दुरभिसन्धि। **-रस** *वि०* छः प्रकार के स्वादों वाला। *पु०* छः प्रकार के स्वाद—मीठा, नमकीन, कड़वा, तीखा कसैला तथा खट्टा। **-रिपु** *पु०* काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर। **-वदन** *वि०* छः मुखों वाला।

**षड्धा** *अव्य०* छः प्रकार से।

**षष्टि** *स्त्री०* [सं०] साठ की संख्या। *वि०* साठ।

**षष्ठ** *वि०* [सं०] छठा।

**षष्ठी** *स्त्री०* [सं०] पक्ष की छठी तिथि; छट्ठी। -पूजा *स्त्री०* प्रसव के छठे दिन होने वाली षष्ठी देवी की पूजा।

**षोडश** *वि०* सोलहवाँ। *पु०* सोलह की संख्या। **-कला** *स्त्री०* सोलह कला। **-सिंगार** *पु०* प्रसाधन के सोलह साधन (उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, अंजन लगाना, तिलक लगाना, ठोड़ी पर तिल बनाना, मेंहदी रचाना, सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पाहार पहनना, पान खाना, ओठ रँगना तथा मिस्सी लगाना)। **-संस्कार** *पु०* सोलह धार्मिक कृत्य।

**षोडशी** *स्त्री०* *वि०* [सं०] सोलह वर्ष की युवती।

**षोडशोपचार** *पु०* [सं०] देव-पूजन के सोलह अंग (आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा तथा वन्दना)।

❑

# स

**स** देवनागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान दन्त है, इसीलिए दन्त्य 'स' कहा जाता है।

**सँइतल** *सक०* किसी वस्तु को सुरक्षित जगह पर रखना, सम्भालना; खूब पीटना; सहेजना; सुरक्षित रखना।

**सँइया** *पु०* [सं०] स्वामी। *उदा०* 'सँइया मीठ बेटवो मीठ केकर किरिया खाँव'।

**सँउपल** *सक०* साँप देना; समर्पित करना।

**सँउसे** *वि०* सम्पूर्ण; समूचा। *उदा०* 'सँउसे खीरा खाके भेंटिए के तींता कहनी'।

**सँकचल** *अक०* संकुचित होना; हिचकिचाना।

**संक** *स्त्री०* शंका, डर।

**संकट** *वि०* [सं०] दुर्गम; घना; घनीभूत। *पु०* तंग रास्ता; कठिनाई; मुसीबत। **-नाशन** *वि०* कष्ट दूर करने वाला। **-मोचन** *पु०* हनुमान की काशी में प्रतिष्ठित मूर्ति।

**संकटा** *स्त्री०* [सं०] काशी में प्रसिद्ध एक देवी।

**संकटी** *वि०* [सं०] जो संकट में पड़ा हो।

**संकर** *पु०* शिव, शंकर; मिश्रण; योग, एक में मिलना; दो जातियों का मिश्रण।

**सँकरल** *अक०* किसी काम का पूर्ण हो जाना।

**सँकरा** *वि०* तंग, संकीर्ण।

**संकरात** *स्त्री०* मकर संक्रान्ति में सूर्य का प्रवेश।

**संकरी** *वि०* दोगला।

**संकलप** *पु०* [सं० संकल्पः] दृढ़ विचार, निश्चय; यज्ञादि में हाथ में जल लेकर मंत्र द्वारा यज्ञ पूर्ण करने की प्रतिज्ञा।

**संका** *स्त्री०* भय, डर; चिन्ता, खटका, सन्देह, संशय।

**सँकार** *पु०* स्वीकृति, सहमति; स्वीकृति सूचक वचन।

**सँकारल** *सक०* स्वीकार करना; कबूल करना, राजी होना।

**संकीर्तन** *पु०* [सं०] स्तुति; देवता के नाम का जप; संकेत *पु०* इशारा।

**सँकेता** *पु०* संकट, कष्ट, दुःख, अभाव।

**सँकेर** *पु०* सकाल।

**सँकोचल** *अक०* [सं० सङ्कोचनं] हिचकिचाना, लज्जा का अनुभव करना।

**सँकरोल** *सक०* समेटना; अपनी ओर खींच लेना।

**संख** *पु०* एक प्रकार का घोंघा, जो देव-पूजन आदि में फूँक कर बजाया जाता है, शंख। *उदा०* 'संख बाजे, बलाय भागे'।

**संखदरार** *पु०* एक प्रकार का नींबू।

**सँखरी** *स्त्री०* रसोई का दाना, जो जमीन पर गिर जाता है।

**संखा** *पु०* सन्तान।

**सँखासह** *वि०* श्वास रोग से पीड़ित (व्यक्ति)

**संखिआ** *स्त्री०* एक प्रकार का भयंकर विष।

**संखेया** *स्त्री०* अंक, गिनती।

**संग** *पु०* संगति, साथ, मेल। *उदा०* 'संग गुने सासत'।

**संगठन** *पु०* बिखरी हुई शक्तियों को मिलाकर एक अनुशासन के भीतर लाना; इस प्रकार गठित संस्था।

**संगम** *पु०* दो या अधिक नदियों का मिलन-स्थल।

**सँगराँव** *पु०* एकत्र होने का कार्य, संग्राम।

**सँगिया** *स्त्री०* दाहा, कटनी का साधन।

**संगिरहा** *पु०* 'संग्रह'।
**संगी** *वि०* [सं०] साथ लगने वाला। *पु०* साथी।
**संगीत** *पु०* वाद्य और गीत का समाहार।
**संगीन** *पु०* एक पतली और नुकीली तलवार, जो बन्दूक के सिरे पर लगी रहती है।
**संघ** *पु०* [सं०] समूह, झुण्ड मण्डली।
**संघत** *पु०* संचय, एकत्र या जमा करने का काम; साथ, संगत; मेल।
**संघतिया** *पु०* साथी; साथ-साथ चलनेवाला।
**संघाती** *पु०* साथ रहने वाला संगी।
**संघार** दे० 'संहार'।
**संघारल** *सक०* नष्ट करना; समाप्त करना।
**संघुता** *पु०* संगति, मेल, संगठन।
**सँचउटी** *स्त्री०* सच्चाई, सत्यता।
**संचय** *पु०* [सं०] भाण्डार।
**संचयी** *वि०* संचय करने वाला।
**संचर** *वि०* [सं०] मार्ग; गमन।
**सँचल** *सक०* एकत्र कर रखना; रक्षा करना, जोगाकर रखना; संचित कर रखा हुआ।
**संचा** *पु०* मक्के की वह बाल, जिसमें अभी दूध आ रहा है।
**संचार** *पु०* [सं०] गमन; भ्रमण; प्रवेश; रास्ता। **-पथ** *पु०* टहलने का स्थान; जाने का मार्ग।
**संचारक** *वि०* [सं०] ले जाने, चलाने, फैलाने वाला। *पु०* नायक; वक्ता।
**संचारल** *सक०* फैलाना; प्रवेश कराना; प्रयोग में लाना।
**संचालक** *पु०* [सं०] संचालन करने वाला; प्रबन्ध करने वाला व्यक्ति।
**संछेप** *वि०* [सं० सङ्क्षेप:] सारांश या थोड़े में कहने की स्थिति।
**संजम** *पु०* परहेज, देख-भाल।
**संजाइल** *अक०* किसी पौधे का हरी पत्तियाँ देकर बढ़ते जाना।
**संजाफ** *पु०* चौड़ी मगजी या गोट।
**संजीवनी** *स्त्री०* जिलाने वाली एक जड़ी-बूटी। **-विद्या** *स्त्री०* मृत को जिलाने वाली विद्या।
**संजोग** *पु०* मेल, मिलावट; उपयुक्त अवसर, मौका।
**सँझलोका** *पु०* सन्ध्या की बेला, साँझ का समय; गोधूलि।
**सँझवत** *पु०* सन्ध्या का दीप।
**संझा** *स्त्री०* सन्ध्या समय गाया जाने वाला गीत। *उदा०* 'संझा बोले ली माई हे केकरा घरे जाई।'
**सँझिआ** *पु०* साँझ का समय, शाम का समय, सन्ध्या बेला।
**संठ** *पु०* कृपण, शठ।
**संड** *पु०* साँड़। **-मुसंड** *वि०* मोटा-ताजा।
**सँड़सा** *पु०* दो चपटे छोटे छड़ों का बना कैंचीनुमा औजार, जिससे गरम चीजें पकड़ी जाती हैं।
**सँड़वाह** *पु०* श्राद्ध में बछड़े को दागकर छोड़ देने की विधि।
**सँड़सल** *अक०* दो वस्तुओं के बीच की तंग जगह में अटकना।
**संडास** *पु०* पैखाना के नीचे का गढ़ा; शौचकूप।
**संत** *पु०* [सं० सन्त:] साधु, महात्मा; भगवान् का भक्त। **-समागम** *पु०* सत्संग।
**संतति** *स्त्री०* [सं०] विस्तार; कुल; सन्तान। **-निरोध** *पु०* कृत्रिम उपायों से गर्भाधान न होने देना। **-पथ** *पु०* योनि। **-होम** *पु०* पुत्रेष्टि यज्ञ।
**संतरा** *पु०* नारंगी; बड़ा नीबू।
**संतरी** *पु०* पहरेदार।
**संतान** *पु०* बाल-बच्चा; औलाद; वंशज।
**संतानबे** *वि०* नब्बे और सात।
**संताप** *पु०* दु:ख, मुसीबत।

**संतावन** *वि०* पचास और सात।
**संतावल** *पु०* दु:ख देना; सताना।
**संती** *अव्य०* बदले में।
**संतोख** *पु०* सन्तुष्टि, सब्र। *उदा०* 'संतोखे घर मेवा'।
**संतोखी** *वि०* सदा सन्तोष करने वाला; सब्र रखने वाला।
**संदर्भ** *पु०* [सं०] पिरोना; एक साथ बाँधना; व्यवस्थित करना; साहित्यिक रचना; सम्बन्ध-निर्वाह; आए हुए प्रसंग का उल्लेख।
**संदूक** *पु०* लोहे या काष्ठ का ढक्कनदार पिटारा या बक्सा।
**संदेश** *पु०* [सं०] संवाद, वार्ता।
**संदेह** *पु०* संशय, शंका, शक।
**संपत** *पु०* धन-दौलत; जायदाद, वैभव। *उदा०* 'संपत के बहिन विपत के यार'।
**संपदा** *स्त्री०* धन, वैभव, दौलत।
**संपनी** *स्त्री०* काठ की बनी एक प्रकार की गाड़ी, जो सवारी ढोने के काम में आती है।
**संपन्न** *वि०* धनी, वैभवशाली।
**संपरक** *पु०* सम्बन्ध, लगाव।
**सँपरल** *अक०* किसी काम को करने के लिए सोचते रहना।
**सँपरावल** *सक०* समाप्त करना; पूरा करना।
**सँपहरल** *अक०* साँप के काटने से विष से प्रभावित होना।
**संपादक** *पु०* वह व्यक्ति, जो समाचार, रचना को शुद्ध कर प्रकाशनयोग्य बनाता है।
**संपादकीय** *पु०* सम्पादक की लिखी हुई लेख या टिप्पणी।
**संपादन** *पु०* [सं०] पूरा करना, प्रस्तुत करना, क्रम आदि ठीक करना। **-कला** *स्त्री०* पत्र-पत्रिका, ग्रन्थ को संपादित करने की कला।
**सँपेरा** *पु०* मदारी, साँप का खेल दिखाने वाला।
**संपै** *स्त्री०* सम्पत्ति। *उदा०* 'संपै देखि न हर्षिये, विपति देखि ना रोइ' —कबीर।
**सँपोला** *पु०* साँप का बच्चा।
**सँपोलिया** *पु०* साँफ पकड़ने वाला।
**संबंध** *पु०* नाता, रिश्ता; सम्पर्क, लगाव।
**संबंधी** *पु०* नातेदार।
**संबोधन** *पु०* [सं०] जगाना; समझाना; सम्बोधित करना।
**संबोधल** *सक०* सान्त्वना देना; समझाना।
**संभत** *पु०* सम्वत् वर्ष, साल; होलिका-दहन।
**संभाल** *स्त्री०* देख-भाल, प्रबन्ध।
**संभालल** *सक०* रोक-थाम करना; सहारा देना; भार उठाना।
**संभाषण** *पु०* [सं०] बातचीत।
**संभु** *पु०* शंकर, शम्भु।
**संभो** *पु०* सम्भव साध्य, मुमकिन; जो हो सकने वाला हो।
**संमेलन** *पु०* किसी प्रश्न पर विचार करने या प्रकाश डालने के लिए किसी संगठन के सदस्यों का जमाव।
**संयम** *पु०* [सं०] नियंत्रण इन्द्रियनिग्रह; तपस्या।
**संयमी** *पु०* यति; ऋषि।
**संयोग** *पु०* मिलन, सम्बन्ध।
**संलाप** *पु०* वार्तालाप; गपशप; बड़बड़ाना।
**सँवकेर** *पु०* नियत समय से कुछ पूर्व की बेला।
**सँवठ** *पु०* सुविधा।
**सँवतावल** *सक०* धारी में बीज डालना।
**सँवरल** *अक०* संभाल में आना।
**सँवरी** *स्त्री०* शबर जाति की एक तपस्विनी, जिसके हाथ का बैर राम ने खाया था; श्रमणा।

**सँवलिया** *पु०* कृष्ण, श्याम। *उदा०* 'हो सँवलिया प्यारे। तोहरा से लागल नेहिया'।

**सँवाग** *पु०* परिवार के पुरुष सदस्य।

**सँवारल** *सक०* सजाना, शोभनीय बनाना; व्यवस्थित करना; ठीक या दुरुस्त करना; संभालना।

**संविदा** *स्त्री०* इकरार।

**संविधान** *पु०* [सं०] विधान तथा सिद्धान्तों का समूह, जिनसे देश, राज्य का संचालन होता है।

**सँसरल** *अक०* भीड़ से गुजरना; दो के बीच से कठिनाई से पार होना।

**सँसरी** मन्द या धीमी गति का श्वास; अन्तिम साँस।

**संस** *वि०* फसल की बाढ़; वृद्धि।

**संसा** *पु०* चिन्ता, आशंका, अन्देशा।

**संसार** *पु०* जगत्, दुनिया।

**संसारी** *वि०* संसार सम्बन्धी; संसार की माया में लिप्त; गृहस्थ।

**संस्कार** *पु०* [सं०] शुद्धि, सफाई; मानसिक शिक्षा; पवित्रीकरण; शास्त्र- विहित बारह कृत्य संस्कार-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नाम-कर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, केशान्त, समावर्तन तथा विवाह। दूसरे चार संस्कार कर्णवेध, विद्यारम्भ, वेदारम्भ तथा अन्त्येष्टि है। **-पूत** *वि०* संस्कार द्वारा परिष्कृत। **-हीन** *वि०* जिसके संस्कार न हुए हों।

**संस्कारी** *वि०* [सं०] अच्छे संस्कार वाला।

**संस्कृत** *पु०* [सं०] संस्कार द्वारा शुद्ध किया हुआ; अलंकृत। *पु०* विद्वान्। *स्त्री०* आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा, जो वैदिक भाषा के बाद प्रयोग में आई थी।

**संस्मरण** *पु०* [सं०] स्मरण; स्मृति के आधार पर लिखित लेख।

**संहार** *पु०* विनाश-कार्य, नाश; समाप्ति।

**संहारल** *सक०* नाश करना; समाप्त करना।

**सइँआ** *पु०* पति, प्रेमी, स्वामी।

**सइँकी** *स्त्री०* इशारा करना।

**सइँतल** *सक०* किसी वस्तु को सम्हाल कर रखना; सुरक्षित करने के लिए रखना।

**सइयद** *पु०* मुहम्मद साहिब के नाती हुसैन के वंशज; मुसलमानों की चार जातियों में एक ऊँची जाति।

**सइ** *स्त्री०* एक सौ।

**सइन** *पु०* पुराना घाव; बारीक सुराख।

**सइअन** *पु०* सहिजन।

**सइना** *स्त्री०* सेना।

**सइहार** *पु०* संभाल।

**सइहारल** *सक०* सम्हालना; व्यवस्था करना।

**सउँज** *पु०* सहूलियत, व्यवस्था।

**सउँढ़ा-मउँढ़ा** *यौ०* मिश्रण, मिलावट।

**सउँपल** *सक०* सुपुर्द करना; हवाले करना, जिम्मे करना।

**सउँफ** *पु०* एक प्रकार का बारीक बीज, जो मसाले, शर्बत और औषधि के काम में आता है।

**सउतिन** *स्त्री०* पति की अन्य पत्नी, सौत।

**सउतेला** *वि०* सौत का पुत्र, सौत से उत्पन्न।

**सउदा** *पु०* सामान, कोई भी क्रेय वस्तु। *उदा०* 'सउदा लाभ के राजा दाव के'।

**सउनल** *सक०* एक साथ मिलाकर सानना (दाल-भात)।

**सउरी** *स्त्री०* एक प्रकार की बड़ी मछली।

**सक** *स्त्री०* [फा० शक] सन्देह, शंका, शक।

**सकड़ी** *स्त्री०* साँस।

**सकती** *स्त्री०* बल, ताकत, शक्ति।

**सकदम** *पु०* श्वास रोग की स्थिति।

**सकनाचून** *वि०* पूर्ण रूप से टुकड़ा-टुकड़ा होना।
**सकपक** *पु०* संकुचित होने की स्थिति; दम घुटने की अवस्था।
**सकपकाइल** *अक०* संकोचना, हिचकना।
**सकरउरी** *स्त्री०* दूध में बुनिया डालकर तैयार किया गया एक भोज्य-पदार्थ।
**सकरकन** *पु०* एक प्रकार का कन्द, जो खाने में मीठा होता है; शकरकन्द।
**सकरपाला** *पु०* एक प्रकार की चौकोर मिठाई।
**सकरी** *वि०* तंग, संकीर्ण।
**सकल** *पु०* मुखाकृति, चेहरा, बनावट।
**सकसकाइल** *अक०* संकोच अनुभव करना; हिचकना।
**सकसकाह** *वि०* इतना गीला कि उसमें चल न सके ऐसा खेत।
**सकसल** *अक०* तंग स्थान में फँस जाना या दबाव में पड़ना। अँटकना।
**सकसीहन** *स्त्री०* तंगी, कमी, अभाव।
**सकार** *पु०* स्वीकृति, कबूल, करने का वादा।
**सकी** *वि०* शक करने वाला; सन्देह करने वाला।
**सकेत** *वि०* संकीर्ण, तंग।
**सकोरा** *पु०* पुरवा (मिट्टी का)।
**सक्कर** *पु०* दानेदार गुड; शक्कर।
**सक्की** *वि०* शक करने वाला; सन्देह करने वाला।
**सखँरी** *स्त्री०* बर्तन में लगा कच्चे भोजन का अन्न-कण।
**सखत** *वि०* कड़ा, कठोर, दृढ़।
**सखरज** *वि०* खर्चीला, दानी।
**सखरा** *पु०* कच्ची रसोई, कच्ची रसोईवाला बर्तन।
**सखियारे** *स्त्री०* दो स्त्रियों के बीच मित्रता।
**सखी** *स्त्री०* किसी स्त्री की मित्र सहेलो। *उदा०* 'सखी के भखी केहू केहू लखी'।
**सखुआ** *पु०* एक प्रकार की मजबूत लकड़ी या विशाल पेड़। *उदा०* 'सखुआ के घर में रेड़ के खंभा'।
**सखुआट** दे० 'सखुवानी'।
**सखुवानी** *स्त्री०* सखुए का जंगल।
**सगड़** *पु०* घोड़े से खींची जाने वाली एक प्रकार की गाड़ी, ताँगा।
**सगपहिता** *पु०* दलसग्गा।
**सगबग** *वि०* सराबोर।
**सगबगाइल** *अक०* सोए हुए व्यक्ति का जागने का उपक्रम करना।
**सगरा** *वि०* सब। *पु०* तालाब।
**सगरे** *वि०* सभी जगह; सभी स्थान पर; पूरा, सम्पूर्ण।
**सगहुआ** *पु०* किसी स्त्री का वह पति, जिससे पुनर्विवाह हुआ हो।
**सगा** *वि०* एक ही माता-पिता से उत्पन्न।
**सगाई** *स्त्री०* मँगनी, वरक्षा।
**सगुन** *पु०* शुभाशुभसूचक; गाड़ी का अगला हिस्सा।
**सगुनउती** *वि०* सगुन सम्बन्धी; वैवाहिक रस्म से सम्बन्धित।
**सगुनी** *पु०* सगुन करने वाला या शुभ-अशुभ बताने वाला व्यक्ति; अच्छा बैल।
**सगेयान** *वि०* सयाना बड़ा, वयस्क, समझदार।
**सगोतरी** *वि०* जिनके एक ही गोत्र हो; एक वंश के। समगोत्री।
**सगौती** *पु०* खस्सी का मांस।
**सगौड़** *पु०* घोड़ागाड़ी।
**सङ** दे० 'संग'।
**सङ फुट** *पु०* साथ छूटने की स्थिति; विद्रोह।
**सङ मिलू** *वि०* हिलमिल कर रहने वाला।

**सङ्रह** *पु०* संचय, इकट्ठा करने की स्थिति; संग्रह।
**सङ्गिरहा** *पु०* संग्रह, रक्षा, सेवा।
**सङी** *स्त्री०* संगी, साथी।
**सङीन** दे० 'संगीन'।
**सच** *वि०* सही, ठीक, सच्चा, सत्य।
**सचमुच** *अव्य०* वस्तुत:; वास्तव में; यथार्थ।
**सचान** *पु०* लाज।
**सचेत** *वि०* चैतन्य; चेतनायुक्त; होशियार।
**सचेती** *स्त्री०* सतर्कता।
**सच्चा** *वि०* सावधान; होशियार।
**सजधज** *यौ०* सजावट, बनाव, सिंगार।
**सजन** *पु०* पति, स्वामी।
**सजनी** *स्त्री०* सखी, सहेली।
**सजल** *वि०* [सं०] जलयुक्त।
**सजवावल** *अक०* सजने का काम दूसरे से कराना।
**सजा** *स्त्री०* [फा०] दण्ड, जुर्माना।
**सजाय** *स्त्री०* सजा, अपराध के लिए दण्ड, जुर्माना, जेल, पिटाई इत्यादि।
**सजायी** *पु०* जिसे सजा दी गई हो, सजायाफ्ता।
**सजाव** *पु०* ठीक से जमा दही, जिससे साढ़ी न निकली हो; बढ़िया दही।
**सजावल** *अक०* किसी चीज को व्यवस्थित करना।
**सजी** *वि०* बिल्कुल; तैयार।
**सजीम** *वि०* अधिक, बेसी।
**सजीला** *वि०* गठीला।
**सजोर** *वि०* मजबूत, बलवान; तेज।
**सज्जन** *पु०* सत्पुरुष, भला आदमी। *उदा०* 'सज्जन बइठे आठ तबो न टूटे, खाट'।
**सज्जम** *पु०* परहेज देखभाल; संयम।
**सज्जी** *वि०* पूरा, सम्पूर्ण।
**सज्जे** *वि०* सभी, सब, समस्त।
**सझिदार** *पु०* हिस्सेदार।
**सझिदारी** *स्त्री०* साझा।
**सझिया** *पु०* हिस्सेदार।
**सझुरावल** *सक०* सुलझाना।
**सट** *पु०* पतली छड़ी से मारने पर निकली आवाज।
**सटक** *पु०* हुक्के की लम्बी नली; पतली छड़ी।
**सटकल** *अक०* मौन हो जाना; दुबकी लगाना; लुप्त हो जाना।
**सटका** *पु०* पतली लाठी या छड़ी से मारने पर उखड़ा दाग।
**सटल** *अक०* निकट की दो वस्तुओं का एक-दूसरे को स्पर्श करने की स्थिति; परस्पर मिलना; प्रेमपूर्वक व्यवहार करना; चिपकना।
**सटवावल** *अक०* सटाने का काम दूसरे से कराना।
**सटहा** *पु०* पतली छड़ी।
**सटाक** *पु०* छड़ी से मारने पर निकली आवाज।
**सटासट** *वि०* एक के बाद दूसरा लगातार, मारना, पीटना; सटासट की आवाज।
**सटिआइल** *अक०* सटे रहना; निकट रहना।
**सटीक** *वि०* ठीक-ठीक; सही बात; टीका।
**सटुआ** *पु०* स्त्रियों द्वारा साड़ी के नीचे व्यवहृत होने वाला वस्त्र-खण्ड, साया। *उदा०* 'पटुआ के सारी पेन्हलू सटुआ लगाके'।
**सट्टा** *पु०* इकरारनामा; बैलों को हाँकने का चाबुक, जिसमें चमड़े की पट्टी रहती है।
**सट्टी-घट्टी** *यौ०* गुप्त राय या सम्बन्ध।
**सट्ठा** *वि०* साठ दिनों में तैयार होने वाली फसल; साठ वर्ष की आयु वाला। *उदा०* 'सट्ठा तऽ पट्ठा'।
**सठ** *वि०* कृपण, मक्खीचूस; दुष्ट।
**सठई** *स्त्री०* शठता।
**सठनगर** *वि०* जैसा चाहिए वैसा; सटीक।
**सठान** *पु०* सहूलियत; ठिकाना।

**सठिआइल** *अक०* साठ वर्ष का होना; बूढ़ा होने के कारण मन्द पड़ना।

**सड़ँसठ** *वि०* साठ से सात अधिक।

**सड़क** *पु०* चौड़ा रास्ता; पक्का किया हुआ मार्ग।

**सड़ल** *वि०* विकृत, दुर्गन्धयुक्त, दुर्बल। उदा० 'सडल तेली तऽनौ अधेली'।

**सड़सड़** *यौ०* सड़-सड़ की आवाज।

**सड़ासड़** *वि०* शीघ्रतापूर्वक।

**सढुआन** *पु०* साढ़ू का घर या गाँव।

**सतंजा** *पु०* सात अनाजों का समूह; इसका भूँजा श्रावणी पूर्णिमा को ग्रामदेवता को चढ़ाया जाता है।

**सत** *वि०* सत्य, यथार्थ। *पु०* सत्त्व, किसी वस्तु का सार। उदा० 'सत के सोर पताले हऽ'। **-कार** *पु०* सम्मान। **-गुरु** *पु०* परमात्मा। **-जुग** *पु०* सत्य युग। **-भाव** *पु०* सद्भाव। **-संग** *पु०* अच्छी संगति।

**सत** *वि०* सौ। **-दल** *पु०* शतदल।

**सत** *वि०* 'सात' का लघु रूप। **-कोन** *वि०* सात कोनों वाला। **-दंता** *वि०* सात दाँतों वाला। **-पतिया** *स्त्री०* एक प्रकार की तरोई; सात पति करने वाली स्त्री। **-पदी** *स्त्री०* सतफेरा। **-मासा** *वि* सात मास में उत्पन्न होने वाला। **-रंग** *वि०* सात रंगों वाला।

**सतइसा** *पु०* मूल नक्षत्र में पैदा होने वाले बच्चे के जन्म से सताईस दिन बाद होने वाली विधि।

**सतजुग** *पु०* चारों युगों में से पहला युग।

**सतधन** *पु०* मृत्यु का सातवाँ दिन, उस दिन परिवार की स्त्रियाँ सिर में तेल और खली लगाकर गाँव के बाहर स्नान करती हैं।

**सतधर** *वि०* वह वयस्क बैल, जिसके मुँह में सात दाँत हों।

**सतन जी** *अव्य०* किसी के छींक आने पर कहा गया शब्द; 'शतं जीवेत्' का सरल रूप।

**सतनाम** *पु०* भगवान् का नाम।

**सतनारायण** *पु०* विष्णु; सत्यनारायण।

**सनुख** *पु०* सन्दूक, बाक्स।

**सतपुतिया** *स्त्री०* छोटी जाति की तरोई।

**सतभतरी** *स्त्री०* सात भतार या पति वाली स्त्री; यह स्त्रियों में गाली के रूप में प्रचलित है। उदा० 'सतभतरी के कारने वादी बाप'।

**सतभाव** *पु०* सद्भाव।

**सतमी** *स्त्री०* पक्ष की सातवीं तिथि, सप्तमी।

**सतमेझरा** *वि०* एक में मिले हुए सात अन्न।

**सतरंज** *पु०* एक प्रकार की गोटी का खेल, शतरंज।

**सतरंजी** *स्त्री०* कई रंगों का छपा फर्श; दरी।

**सतर** *पु०* पंक्ति, पाँती; लकीर, रेखा; साठ और दस सत्तर की संख्या।

**सतरकी** *वि०* शीघ्रतापूर्वक; प्रतिष्ठा।

**सतरह** *वि०* सात और दस।

**सतराज** *पु०* एक प्रकार का उझला अगहनी धान।

**सतरिआ** *पु०* एक प्रकार का चैतहा धान।

**सतरुघ्न** *पु०* राम के सबसे छोटे भाई शत्रुघ्न।

**सतवंती** *स्त्री०* सती, साध्वी; पतिव्रता।

**सतवांस** *पु०* वह बच्चा, जो गर्भ से सातवें महीने में उत्पन्न हो।

**सतवादी** *वि०* सच्चा, सत्य बोलने वाला। उदा० 'सतवादी धक्का खाय खुशामदी सम्मान'।

**सतसंग** *पु०* ऐसी संगति, जहाँ धर्म-चर्चा या कथा होती है; साधुओं का साथ।

**सतह** *पु०* किसी पदार्थ का ऊपरी तल या भाग; धरातल।

**सतहवा** *पु०* सप्तर्षि तारा।
**सतहतर** *वि०* सत्तर और सात।
**सताइस** *वि०* सात और बीस।
**सतालू** *पु०* एक प्रकार का फल।
**सतावल** *सक०* [सं० सन्तापनं] दु:ख देना; कष्ट देना।
**सतासी** *वि०* [सं० सप्ताशीति:] अस्सी और सात।
**सती** *स्त्री०* [सं०] साध्वी, पतिव्रता स्त्री; पति के शव के साथ जल जाने वाली स्त्री; संन्यासिनी। **-चौरा** *पु०* सती के स्मारक के रूप में बना चबूतरा। **-व्रत** *पु०* पातिव्रत्य।
**सतीबाड़** *पु०* सती का स्थान।
**सतुआ** *पु०* भूने हुए अनाज का बारीक चूर्ण; सत्तू। *उदा०* 'सतुआ के पेट सोहारी से ना भरी'।
**सतुआन** *पु०* मेष संक्रान्ति का प्रथम दिन, जब सत्तू खाया जाता है।
**सतुई** *स्त्री०* चने का बारीक सत्तू।
**सतुर** *पु०* दुश्मन, शत्रु।
**सतुवांड़** दे० 'सतीबाड़'।
**सतेयानास** *पु०* सर्वनाश, विनाश, पूरी तरह बर्बादी।
**सत्त** *पु०* सत्त्व; तत्त्व; सत्य।
**सत्तर** *वि०* साठ से दस अधिक। *उदा०* 'सत्तर चूहा खाय, बिलाई चलली हज के'।
**सत्ता** *पु०* ताश के खेल का साँतवाँ पत्ता।
**सत्तानबे** *वि०* नब्बे से सात अधिक।
**सत्तावन** *वि०* पचास से सात अधिक।
**सत्तासी** *वि०* अस्सी से सात अधिक।
**सत्तू** *पु०* दे० 'सतुआ'।
**सथर** *पु०* स्थल, भूमि, पृथ्वी।
**सथिया** *पु०* दीवार; स्वस्तिक [卐]
**सदई** *अव्य०* हमेशा, सदा, सदैव।
**सदन** *पु०* [सं०] घर, मकान।
**सदमा** *पु०* [अ०] धक्का, आघात।
**सदर** *वि०* मुख्य; प्रधान; सही स्थान।
**सदरआला** *पु०* [फा०] सब जज।
**सदरथ** *पु०* समर्थन, पुष्टीकरण।
**सदर-बदर** *वि०* पानी से भींगा हुआ; रसयुक्त।
**सदरी** *स्त्री०* बिना बाँह का कुर्त्ता, जाकेट।
**सदस** *पु०* सभासद; किसी संस्था का सदस्य।
**सदा** *अव्य०* [सं०] नित्य, हमेशा, निरन्तर। *उदा०* 'सदा दिवाली संत घर'। **-नीरा** *स्त्री०* वह नदी, जिसमें बराबर जलधारा रहे। **-फल** *वि०* हमेशा फलने वाला। *पु०* बेल, कटहल, गूलर, नारियल आदि। **-बहार** *वि०* हमेशा फूलने वाला। **-वर्त** *पु०* हमेशा अन्न बाँटने वाला व्रत। **-सुहागिन** *वि० स्त्री०* जो हमेशा सुहागिन बनी रहे।
**सदाकत** *स्त्री०* [अ०] सच्चाई; खरापन।
**सदाचार** *पु०* [सं०] अच्छा तौर-तरीका।
**सदाचारी** *वि०* [सं०] सुकर्मी; अच्छे चाल-चलन वाला।
**सदा बरत** *पु०* प्रतिदिन भूखों एवं दीन-दु:खियों को अन्न बाँटने का काम।
**सदाबोर** दे० 'सराबोर'।
**सदिया** *वि०* सादा रंग का, ढंग का।
**सदी** *स्त्री०* शताब्दी; सौ वर्षों की इकाई।
**सदेह** *वि०* बिना शरीर छोड़े; प्रत्यक्ष।
**सधउआ-पटउआ** *यौ०* ऋण लेने में खेत को बँधक रखने की वह विधि, जिसमें खेत की पैदावार से एक निश्चित समय के भीतर सूद और मूल का भुगतान होता है।
**सधपट** *यौ०* ऋण या देय राशि का भुगतान।
**सधल** *अक०* कर्ज की अदायगी होना; काम पूरा होना; निशाना ठीक बैठने की स्थिति।

**सधवावल** *अक०* सही जानकारी के लिए जोखी हुई वस्तु को फिर से जोखवाना।
**सधान** *स्त्री०* कर्ज के भुगतान की स्थिति।
**सधावल** *सक०* कर्ज की अदायगी करना; किसी के द्वारा किए गए किसी काम या व्यवहार के प्रतिकार में कुछ करना।
**सधुअई** *वि०* साधु की स्थिति या काम।
**साधुआइल** *अक०* साधु सा व्यवहार करना; साधु की प्रवृत्ति आना।
**सधुआ-भोकास** *पु०* साधुओं द्वारा बेढंगे और बेताल भजन गाने की स्थिति।
**सधुनी** *स्त्री०* वह स्त्री, जो साधु हो गई हो; साधु की स्त्री।
**सन** *पु०* पाट; पतला रेशा; आम की गुठली का तन्तु; साल, वर्ष। *उदा०* 'सन न कपास जोलहा से मुक्कामुक्की'।
**सन-सोनहुली** *स्त्री०* विवाह में कंगन बाँधने का रंगीन और सोनहुला धागा।
**सनइठा** *पु०* सन का डण्ठल।
**सनई** *स्त्री०* छोटी जाति का सन या पाटा।
**सनक** *स्त्री०* मन की झोंक; पक्की धुन; पागलपन।
**सनकल** *अक०* पागल हो जाना; उग्र मानसिक उत्तेजना में आना; उत्तेजना की मनोदशा में विवेकहीन सा काम करने वाला।
**सनकी** *वि०* पागल-सा व्यवहार करने वाला।
**सनगर** *वि०* शान वाला; हिम्मत वाला।
**सनचिरइआ** *स्त्री०* कपड़े पर अनेक पक्षियों के विविध रंगों के पंखों को सी कर बनाई गई चिड़ियाँ।
**सनठल** *अक०* वृद्धि का रुक जाना; पूरी तरह विकास नहीं होना।
**सनद** *अव्य०* सबूत, प्रमाण-पत्र, आदेश-पत्र।
**सनदी** *वि०* जिसके पास सनद हो।
**सनम** *पु०* [अ०] मूर्ति; प्रेम-पात्र; माशूक।
**सनमत** *पु०* सहमत; अच्छा विचार।
**सनमान** *पु०* आदर, सत्कार; प्रतिष्ठा देने का कार्य; सम्मान।
**सनमुख** *अव्य०* सामने, सम्मुख। *उदा०* 'सनमुख छीकँ दोबर लाभ'।
**सन-सन** *पु०* हवा के तेजी से चलने या पानी के खौलने का शब्द।
**सनसनाहट** *पु०* पानी के खौलने या हवा के तेज चलने का भाव या आवाज।
**सनसनी** *स्त्री०* खलबली; उद्वेग; घबराहट।
**सनाइल** *अक०* पानी से आटा या मिट्टी को गीला करना।
**सनहा** *पु०* किसी बात या घटना की प्रथम सूचना थाने में दी जाती है।
**सनहा** *वि०* तेजी से; अति शीघ्रतापूर्वक।
**सनातन** *वि०* [सं०] जो अति प्राचीनकाल से चला आता हो; परम्परागत; नित्य।
**सनातन धरम** *यौ०* हिन्दूधर्म का एक रूप।
**सनातनी** *वि०* हिन्दूधर्म के परम्परागत रूप को मानने वाला।
**सनाय** *पु०* एक वनौषधि, जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं।
**सनार** *वि०* तेज; जिसकी सान चढ़ाई गई हो; फुर्तीला।
**सनाह** *वि०* जिसकी गुठली में रेशा अधिक हो।
**सनीक** *वि०* निकट, नजदीक, समीप।
**सनीचर** *पु०* हिन्दू पंचांग के अनुसार सातवाँ दिन; शनिवार एक ग्रह शनि।
**सनीचरा** *पु०* प्राथमिक पाठशालाओं में शनिवार को पाठ-पूजा के रूप में गुरुजी को दिया जाने वाला एक या दो पैसा।
**सनेआस** *पु०* हिन्दुओं के चार आश्रम में अन्तिम आश्रम, जिसमें मनुष्य को सिर

मुड़ाकर घर छोड़ देना चाहिए और निष्काम भाव से सत्कर्म करना चाहिए।

**सनेआसी** *पु०* संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करने वाला।

**सनेस** *पु०* सन्देश; हाल-समाचार; एक प्रकार की मिठाई।

**सनेह** *पु०* प्रेम, प्यार, स्नेह।

**सनेहिया** *पु०* सनेही।

**सनेही** *वि०* स्नेही, प्रेमी।

**सनैठा** *पु०* सनई तथा छिलकारहित पटुआ।

**सन्न** *वि०* तेजी से; शीघ्रतापूर्वक; स्तब्ध।

**सन्नाटा** *पु०* नि:शब्दता; स्तब्धता; निर्जनता; सूनापन।

**सपटल** *अक०* जमीन पर लेट जाना।

**सपटिआ** *पु०* एक साथ काम करने वाला व्यक्ति।

**सपटिआवल** *सक०* काम में किसी को साझीदार बनाना; शामिल करना।

**सपन** दे० 'सपना'।

**सपनदोष** *पु०* [सं० स्वप्नदोष:] निद्रा की दशा में वीर्यपात होने की स्थिति या रोग।

**सपना** *पु०* निद्रा या अर्द्ध सुप्तावस्था में देखा गया दृश्य स्वप्न। *उदा०* 'सपना देख रहे मन गोय'।

**सपनाइल** *अक०* निद्रावस्था में स्वप्न देखते समय बोलना।

**सपरल** *अक०* पार लगना।

**सपरिवार** *वि०* परिवार के साथ।

**सपाट** *वि०* समतल, बराबर।

**सपाटा** *पु०* घूमने-फिरने की क्रिया या भाव; तेजी, झोंक।

**सपाटू** *पु०* एक प्रकार का फल।

**सपुरा** *पु०* धान के रोपे गए बीज की पंक्ति।

**सपूत** *पु०* कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्र; अच्छा लड़का, सुपुत्र।

**सपेद** दे० 'सफेद'।

**सपेदा** *पु०* जस्ते की भस्म; आम और अमरूद का एक भेद।

**सपेरा** *पु०* सँपेरा।

**सपोला** *पु०* सर्प का छोटा बच्चा।

**सप्तमी** *स्त्री०* [सं०] पक्ष की सातवीं तिथि।

**सप्लाई** *स्त्री०* [अं०] पहुँचाना। **-आफिस** *पु०* पूर्ति कार्यालय।

**सप्ताह** *पु०* [सं०] हफ्ता; सात दिनों तक चलने वाला यज्ञ।

**सफइआ** *स्त्री०* कारखाने की सफाई।

**सफक्का** *वि०* अच्छा, स्वच्छ, सफेद।

**सफड़** *पु०* खुला मैदान।

**सफड़ी** दे० 'सफरी'।

**सफर** *पु०* यात्रा; राह चलने की स्थिति। **-खर्च** *पु०* मार्ग व्यय।

**सफरी** *वि०* सफर का; यात्रा सम्बन्धी; यात्रा के अनुरूप।

**सफल** *वि०* फलयुक्त, अच्छा परिणाम।

**सफा** *वि०* स्वच्छ, निर्मल, साफ।

**सफाई** *स्त्री०* स्वच्छता, निपुणता; मुकदमे में अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए दिया बयान और गवाह।

**सफाचट** *वि०* साफ; बिल्कुल चिकना; बालरहित।

**सफाया** *पु०* समाप्ति; नाश।

**सफेद** *वि०* [फा० सुफ़ैद] उजला। **-पोश** *वि०* भला आदमी; शिष्ट किन्तु निर्धन; दिखावा।

**सफेदा** *पु०* एक प्रकार का आम।

**सफेदी** *स्त्री०* सफेद होना; गोराई; चूने की पुताई।

**सब** *वि०* सम्पूर्ण, सारा। [अं०] छोटा, गौण (समास रूप में) *उदा०* 'सब कुकुर कासी जइहन तऽ हांड़ी के ढूँढ़ी'। **-इन्स्पेक्टर** *पु०* नायब इन्स्पेक्टर। **-जज** *पु०* नायब जज। **-डिवीजन** *पु०* तहसील।

**सबई** *स्त्री०* एक प्रकार का खर, जिसकी रस्सी बनती हैं।

**सबक** *पु०* पाठ, शिक्षा।

**सबजी** *स्त्री०* हरा शाक; कच्ची और हरी तरकारी।

**सबद** *पु०* आवाज; सन्तों के पद; सन्तों की वाणी।

**सबर** *वि०* सबल। *पु०* सब्र।

**सबरसी** *वि०* सभी प्रकार की स्थिति के अनुकूल अपने को बना लेने वाला।

**सबराह** *वि०* अधिक, ज्यादा।

**सबील** *पु०* उपाय; व्यवस्था।

**सबुज** *वि०* हल्का हरा; घोड़े का एक रंग।

**सबुजा** *पु०* एक प्रकार का आम, जो पकने पर हरा रहता है।

**सबुजी** *स्त्री०* तरकारी।

**सबुनिआवल** *सक०* वस्त्रादि में साबुन लगाकर साफ करना।

**सबुर** *पु०* सन्तोष, धैर्य। *उदा०* 'सबुर के डार में मेवा फरेला'।

**सबूत** *पु०* प्रमाण, साक्षी।

**सबेर** *पु०* समय से किंचित् पूर्व की बेला; सुबह।

**सबेरे** *वि०* प्रात:; समय से किंचित् पहले।

**सभ** *वि०* बराबर, समान, अच्छा, श्रेष्ठ, सभ्य। सदृश्य। *उदा०* 'सभ दिन जात न एक समाना'।

**सभत्तर** *अव्य०* सभी जगह पर; सर्वत्र।

**सभइल** *पु०* बैलगाड़ी के जुए में लगी खूँटी, जो बैलों को उससे बाहर होने से रोकती है।

**सभकरा** *वि०* सब लोगों का।

**सभन** *वि०* सभी, सब।

**सभा** *स्त्री०* किसी प्रश्न पर विचारार्थ या अपने विचार को दूसरे के सामने रखने के लिए इकट्ठी भीड़।

**सभादिना** *क्रि०वि०* प्रतिदिन, हमेशा, सदा।

**सभापति** *पु०* सभा का अध्यक्ष; किसी सभा के संचालन के लिए चुना गया व्यक्ति।

**समगम** *वि०* पूर्णत: भरा हुआ; समान सतह का।

**समग्गर** *वि०* सम्पूर्ण, समूचा।

**समचा** *पु०* कार्य-विस्तार; महत्ता; यश, कीर्ति; उन्नत सामाजिक और आर्थिक स्थिति।

**समच्चर** *वि०* कृपण, कंजूस।

**समझ** *स्त्री०* बुद्धि, प्रज्ञा; विचार। *उदा०* 'समझ समझ के चरीहऽ ए हिरना'। -दार *वि०* बुद्धिमान।

**समझल** *अक०* जान लेना; विचार करना।

**समझावल** *सक०* बोध, ज्ञान कराना।

**समझौता** *पु०* राजीनामा, मेल।

**समत, सम्मत** *पु०* फागुन की पूर्णिमा; जिस दिन होलिका-दाह होता है; होलिका दाह के लिए एकत्रित घास-पात, लकड़ी इत्यादि।

**समताई** *स्त्री०* समता।

**समतूल** *वि०* समान, सदृश्य; बराबर।

**समतोला** *पु०* नारंगी, सन्तरा।

**समथीर** *वि०* मजबूत, बलिष्ठ।

**समदिआ** *पु०* संवाद लाने वाला व्यक्ति।

**समधउत** *पु०* समधी का पुत्र।

**समधिन** *स्त्री०* पुत्र या पुत्री की सास; समधी की पत्नी।

**समधियान** *पु०* समधी का घर; जहाँ समधी का रिश्ता हो।

**समधी** *पु०* पुत्र या पुत्री का श्वसुर।

**समधो** *पु०* विवाह के अवसर पर कन्या और वर के पिता के मिलने की एक परम्परा।

**समन** *पु०* अदालत में हाजिर होने की नोटिस या बुलावा।

**समय** *पु०* काल, बेला; अवसर, मौका; फुरसत। *उदा०* 'समय पड़ले पर गदहो के बाप कहल जाला'।

**समर** *पु०* युद्ध; परिश्रम करने का अवसर। **-शूर** *पु०* वीरता दिखाने वाला व्यक्ति।

**समरथ** *वि०* बलवान; पराक्रमी। *उदा०* 'समरथ के नहिं दोस गोसाईं'।

**समरसेबल** *पु०* [अ०] गहराई से पानी निकालने का यन्त्र।

**समवावल** *सक०* घुसाना, ढुकाना; ठूसना।

**समसिङार** *पु०* हरशृङ्गार।

**समस्त** *वि०* सम्पूर्ण, सब, बिल्कुल।

**समस्या** *स्त्री०* [सं०] कठिन विषय; जटिल प्रश्न।

**समहुत** *पु०* प्रारम्भ।

**समाइत** *पु०* गुंजाइश, समावेश।

**समाइल** *अक०* घुसाना, प्रवेश करना; अँटना।

**समाचार** *पु०* संवाद, हाल, खबर। **-पत्र** *पु०* अखबार।

**समाज** *पु०* एक स्थान के निवासी; एक धर्म को मानने वाले या समान विचार रखने वाले लोगों का समूह; सभा, संस्था; संगठन या दल। **-वाद** *पु०* वह सिद्धान्त जिसमें उत्पादन के समस्त साधनों पर समाज का अधिकार हो, यथासम्भव समान रूप से वितरण हो। **-शास्त्र** *पु०* समाज के प्रति कर्त्तव्यों का विवेचन करने वाला शास्त्र।

**समाजी** *पु०* समाज में रहने वाला; नर्त्तकों के गिरोह में साज बजाने वाला।

**समाद** *पु०* सन्देश; किसी के पास भेजी गई खबर या समाचार। *उदा०* 'समादे दही ना जामे'।

**समाधि** *स्त्री०* लम्बी अवधि तक ध्यानमग्न रहने की अवस्था; वह स्थान, जहाँ संन्यासी ध्यानमग्न होकर प्राण त्यागता है।

**समान** *वि०* सदृश, तुल्य; बराबर; रूप, गुण, रंग।

**समापत** *वि०* पूर्ण, अन्त, खत्म।

**समापन** *पु०* [सं०] समाप्ति करना।

**समारल** *सक०* अपने ऊपर दायित्व लेकर उसका निर्वाह करना; रोके रहना; नीचे नहीं गिरने देना।

**समारोह** *पु०* [सं०] धूमधाम।

**समालोचक** *पु०* किसी कृति के गुण-दोष, महत्त्व का प्रतिपादक।

**समास** *पु०* [सं०] योग, मेल।

**समासूध** *पु०* सीमा, अन्त।

**समिआ** *पु०* शामिल; किसी काम में साझी; साझीदार।

**समियाँ** *स्त्री०* मूसल के अग्रभाग में लगाई गई लोहे की चूड़ी।

**समीप** *वि०* [सं० समीपं] निकट, नजदीक।

**समंदर** *पु०* [फा०] अपार जल-राशि; समुद्र।

**समुंदर फेन** *यौ०* समुद्र का फेन, जो औषधि के रूप में व्यवहृत होता है।

**समुच्चा** *वि०* समूचा सम्पूर्ण, अखण्ड। *उदा०* 'समुच्चा रामायन हो गइल सीता केकर जोय'।

**समुझ** *पु०* [हिं० समझ] बुद्धि, विवेक, समझदारी।

**समुझदारी** *वि०* बुद्धिमान, विवेकशील।

**समुझल** *अक०* सीझे भात में अगर कोई कसर हो तो उसका ठीक हो जाना; किसी बात को बूझना-समझना।

**समुझौता** *पु०* किसी विवाद की समाप्ति के लिए आपसी बातचीत; सुलह-समझौता।

**समुदाय** *पु०* समूह।

**समूचा** *वि०* सम्पूर्ण, सब, समस्त।

**समे** *स्त्री०* नीची जातियों द्वारा पूजित एक देशी श्यामा; समय।

**समेया** *पु०* नीलगाय की कोटि का एक वन्य-पशु।

**समेट** *पु०* एक प्रकार की खाट, जिसे समेट कर रखा जा सकता है।

**समेटल** *सक०* फैली हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना; बटोरना।

**समेत** *वि०* संयुक्त, मिला हुआ।

**समेन** *पु०* मोटे कपड़े का बना एक प्रकार का चन्दोवा या मण्डप, जिसका उपयोग सभा आदि आयोजन में होता है; शामियाना।

**समोधल** *सक०* सम्बोधन, समझना; सत्कार करना; बीज छीटने के बाद खेत को जोतकर मिलाना।

**सम्हरल** *अक०* सम्भलना, सावधान या सचेत होना; हानि उठाने से बच जाना।

**सम्हार** *वि०* काबू के भीतर रहने की स्थिति; व्यवस्था।

**सय** *वि०* सौ; बढ़ती; विस्तार; बरकत।

**सयगर** *वि०* जो देखने में कम लगे परन्तु बाँटते समय बहुतों को मिल जाए (पैसा); प्रचुर।

**सयन** *पु०* [सं० शयनम्] सोने की क्रिया या कार्य।

**सयान** *वि०* युवा, जवान, तरुण।

**सर** *पु०* [फा०] सिर।

**सरई** *स्त्री०* सरपत।

**सरउर** *पु०* एक प्रकार की घास।

**सरऊ** *पु०* साला; एक गाली। *उदा०* 'बीच बरीयतिया के जुतवा चोराके, भागल जाले सरऊ हमार'।

**सरकंडा** *पु०* एक प्रकार का पौधा, जिसका उपयोग टाट बाँधने में होता है।

**सरकल** *अक०* भोजन करते समय अन्न या पानी का अचानक नाक में चढ़ जाना; रस्सी के फन्दे का खिसक कर छोटा हो जाना।

**सरकवासी** *स्त्री०* रस्सी की ऐसी गाँठ, जो खींचने से सरक जाए।

**सरकस** *वि०* अपेक्षाकृत बड़ा; हिम्मतवाला। *पु०* [अं०] सर्कस।

**सरका** *पु०* लकड़ी आदि का पतला अंश, जो शरीर में गड़ जाता है।

**सरकार** *पु०* राज्य संस्था; प्रशासन; उच्च सरकारी अधिकारियों एवं बड़े लोगों के लिए सम्बोधन-शब्द।

**सरकारी** *वि०* सरकार सम्बन्धी; राजकीय।

**सरकावल** *सक०* खींच कर बड़ा या लम्बा बनाना; सामान को एक जगह से दूसरी जगह घसकाना।

**सरग** *पु०* देवलोक, बैकुण्ठ; स्वर्ग।

**सरग-पताली** *यौ०* बैल के वे सींग, जो एक ऊपर की ओर उठा हो और दूसरा नीचे की ओर लटका हो। *उदा०* 'सरग-पताली भौंआ टेर, आपन खाय पड़ोसिया हेर'।

**सरगबासी** *वि०* दिवंगत; मृत।

**सरगही** *स्त्री०* सूर्योदय के पूर्व का भोजन, जिसे व्रत या रोजा के दिनों में किया जाता है।

**सरजाम** *पु०* किसी विशेष कार्य का सामान।

**सरजुग** *स्त्री०* अवध की एक नदी; सरयू।

**सरत** *पु०* बदान; नियम, शर्त।

**सरता-परता** *वि०* अच्छा और बुरा दोनों प्रकार की।

**सरतिया** *वि०* शर्तिया, अवश्य।

**सरद** *पु०* [सं० शरद्] आश्विन कार्तिक की ऋतु का नाम।

**सरदर** *वि०* सब एकसाथ मिलाकर; एक सिरे से दूसरी ओर; कुँए की ऊपरी सतह के बीच में रखी लकड़ी, जिस पर पैर रखकर लोग पानी खींचते हैं।

**सरदल** *अक०* नमी लगना; किसी वस्तु का ठण्ड लगने से खराब होने लगना।

**सरदार** *वि०* मुखिया; नेता; नायक।

**सरदिआइल** *अक०* सर्दी का शिकार होना; सर्दी लगना।
**सरधा** *स्त्री०* अभिलाषा या लालसा; श्रद्धा।
**सरन** *पु०* आश्रय, रक्षा, पनाह; बचाव की जगह; मकान।
**सरनाम** *वि०* प्रसिद्ध, विख्यात।
**सरपंच** *पु०* पंचों का मुखिया या सरदार; पंचायत का सभापति।
**सरप** *पु०* साँप।
**सरपट** *क्रि०वि०* घोड़े की एक चाल; तेजचाल।
**सरपावट** *वि०* समतल, बराबर।
**सरपुत** *पु०* साले का पुत्र।
**सरपोटल** *सक०* ढीले भोज्य-पदार्थ को जल्दी से खा जाना।
**सरफोंका** *पु०* एक वनौषधि।
**सरब** *वि०* सब; सम्पूर्ण; समूचा। *उदा०* 'दरब से सरब चाहब से करब'।
**सरब-गरास** *पु०* चन्द्रमा या सूर्य का पूर्ण ग्रहण; समूचा निगल जाने की स्थिति।
**सरबत** *पु०* चीनी के योग से तैयार किसी फल का अर्क; चीनी मिलाया हुआ पानी।
**सरबदा** *वि०* सदा; सब समय।
**सरबनाश** *यौ०* पूर्ण बर्बादी।
**सरबर** *पु०* बराबरी।
**सरबस** *पु०* सब कुछ; सारी सम्पत्ति।
**सरभोगी** *वि०* सभी प्रकार की स्त्रियों से समागम करने वाला।
**सर भंग** *पु०* औघड़ पंथ का एक वर्ग, जिसके अनुयायी चम्पारण में हैं।
**सरभंटा** *पु०* टमाटर।
**सरम** *स्त्री०* लाज, हया।
**सरमेर** *वि०* सम्मिलित; एक साथ।
**सरमेर** *पु०* मिश्रण।
**सररा** *पु०* घिरनी (लट्टू) की धुरी, जिस पर वह नाचती है।
**सरल** *अक०* सड़ना। *उदा०* 'सरल घोड़ी के लाल लगाम'।
**सरलाइन** *वि०* सड़ी हुई वस्तु-सा (स्वाद, गन्ध)।
**सरलाही** *वि०* दुबली-पतली।
**सरवतल** *सक०* खर से छाए हुए छप्पर पर बाती चलाना; ओसौनी के बाद झाड़ू से राशि पर का भुस्सा बहारना।
**सरवन** *पु०* अन्धक मुनि का पुत्र, जिसे दशरथ ने हिरन के भ्रम में मार डाला था।
**सरवन** *पु०* श्रवण नक्षत्र।
**सरवनी** *स्त्री०* सुमरनी।
**सरवर** *पु०* [फा०] सरदार। *स्त्री०* बराबरी।
**सरवरिया** *वि०* सरयूपार, सरवार का। *पु०* वह ब्राह्मण, जो सरयूपार का हो।
**सरवार** *पु०* सरयूपार का भूखण्ड।
**सरवे** *पु०* भूमि की नाप-जोख; सरकार द्वारा भूमि को नपवा कर उसका नक्शा बनाने और जमीन पर हक निश्चित करने की प्रक्रिया।
**सर-वेसर** *वि०* अच्छा और बुरा दोनों प्रकार का।
**सर-सामान** *पु०* माल-असबाब; सामग्री, सामान।
**सरसो** *पु०* सरसों, एक प्रकार का पीले रंग का छोटा दाना वाला तेलहन।
**सरहज** *स्त्री०* साले की पत्नी।
**सरहत** *पु०* बाँस की बाती में लगे नोकदार काँटों का समूह, जिससे मल्लाह मछली मारते हैं।
**सरहद** *पु०* सीमा, सीवान।
**सरहो** *वि०* सामान्य आकार का फसल का बोझा।
**सराइँन** *वि०* सड़ने से उत्पन्न गन्ध।
**सराध** *पु०* मृतक के लिए पिण्ड-दान, तर्पण आदि; श्राद्ध।

**सराप** *पु०* [सं० शाप:] अमंगलकारी वचन; बददुआ; शाप।
**सरापित** *वि०* शाप से प्रभावित।
**सराफत** *पु०* सज्जनता।
**सराफा** *पु०* सराफों का बाजार।
**सराब** *पु०* मदिरा, मद्य।
**सराबोर** *वि०* भींगा हुआ।
**सराय** *पु०* यात्रियों के ठहरने का स्थान।
**सरावल** *सक०* सड़ने देना।
**सरास** *पु०* नाली आदि को किसी छड़ से खोदकर साफ करने की स्थिति।
**सरासर** *अव्य०* पूर्णरूपेण, पूरा।
**सराहना** *पु०* प्रशंसा, बड़ाई।
**सराहल** *सक०* [सं० श्लाघनं] प्रशंसा करना। *उदा०* 'सराहल बहुरिया डोम घर जासु'।
**सरिआतिअ** *पु०* विवाह में एकत्रित कन्या-पक्ष के आदमी।
**सरिआइल** *अक०* व्यवस्थित होना; सम्हलना।
**सरिआँव** *पु०* क्रमबद्ध; व्यवस्थित ढंग।
**सरिआवल** *सक०* क्रम से सम्हाल कर रखना।
**सरिखा** *वि०* समान; तुल्य।
**सरिहन** *पु०* अगहन में कटने वाला धान।
**सरीक** *वि०* शामिल, साझी।
**सरीखा** *वि०* समान।
**सरीफ** *वि०* कुलीन; सज्जन।
**सरीफा** *पु०* एक गोल मीठा और हरा फल।
**सरीर** *पु०* बदन, अंग।
**सरुआर** *पु०* सरयूपार का क्षेत्र।
**सरुप** *पु०* आकृति, आकार।
**सरुवरिआ** *वि०* सरयू नदी के उत्तरी प्रान्त में बसने वाला ब्राह्मण।
**सरुवार** *पु०* सरयू नदी के उत्तर का प्रान्त।
**सरेख** *वि०* चतुर, समझदार, वयस्क। *उदा०* 'हँसि-हँसि पूछहिं सखी सरेखी'।
**सरेनी** *वि०* नए सिरे से; आरम्भ से।
**सरेव** *पु०* बढ़ावा; किसी गलत काम को करने के लिए उकसाने का काम।
**सरेस** *पु०* एक प्रकार का लसीला पदार्थ; लोहा, लकड़ी आदि को खुरचने का कागज।
**सरेह** *पु०* गाँव के बाहर की भूमि।
**सरोकार** *पु०* [फा०] रिश्ता, व्यवहार, सम्बन्ध।
**सरोतर** *वि०* साफ; लगातार।
**सरोता** *पु०* श्रोता; सरौता।
**सरोद** *पु०* [फा०] एक बाजा।
**सरौता** *पु०* सुपारी काटने का हथियार।
**सल** *पु०* शक्ति, ताकत।
**सलकल** *अक०* लगातार पानी लगने के कारण जमीन का गीला होना।
**सलका** *पु०* निकट में पानी होने के कारण जमीन का दलदल-सा हो जाने की स्थिति।
**सलकी** *स्त्री०* दल-दल भूमि।
**सलग** *वि०* पूरा।
**सलगम** *पु०* गाजर जैसा एक कन्द, जिसकी तरकारी बनती है।
**सलज** *वि०* लज्जाशील; शीलवान।
**सलटल** *अक०* मेल-मिलाप से विवाद का समाप्त होना।
**सलतंत** *वि०* शान्त, सुखी, निश्चिन्त।
**सलतनत** *पु०* राज्य; प्रबन्ध; इन्तजाम।
**सलप्फा** *वि०* आसानी से, बिना रोक-टोक का।
**सलमसाही** *पु०* एक प्रकार का जूता।
**सलमा** *पु०* सोने या चाँदी का तार, जो बेल-बूटे बनाने के काम आता है।
**सलवार** *पु०* एक विशेष प्रकार की काट का पाजामा (स्त्रियों का)।

**सलसल** *वि०* पानी से तर-बतर होने के कारण मुलायम; मुटापा के कारण शरीर का ढीला होना।
**सलसलाइल** *अक०* पानी लगने से जमीन का दल-दल-सा हो जाना।
**सलसलाहट** *स्त्री०* 'सल-सल' की आवाज; खुजली।
**सलहंत** *पु०* शान्ति।
**सलहज** *स्त्री०* साले की पत्नी।
**सलहाल** *पु०* वर्षा के कारण जमीन की अच्छी स्थिति।
**सलहिया** *वि०* वह व्यक्ति, जो राय दे या जिससे राय ली जाए; सलाहकार।
**सलाई** *स्त्री०* काठ या धातु की बनी पतली छड़; दियासलाई।
**सलाकल** *अक०* निशान बनाना।
**सलाख** *स्त्री०* धातु की छड़, सलाई।
**सलाजीत** *स्त्री०* शिलाजीत।
**सलाद** *पु०* मूली, प्याज एवं अन्य साग-सब्जियों से तैयार भोज्य-पदार्थ।
**सलाम** *पु०* आदाब, बन्दगी, नमस्कार।
**सलामत** *स्त्री०* [अ०] कुशल।
**सलामी** *स्त्री०* नमस्कार की रीति; माननीय व्यक्तियों के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए दागे गए तोप के गोले।
**सलाह** *अव्य०* राय, मशविरा; मेल।
**सलाही** *स्त्री०* काठ की तश्तरी।
**सलाना** *वि०* वार्षिक।
**सलीका** *पु०* [अ०] ढंग, शऊर।
**सलीता** *पु०* सन के धागे-सी बनी चटाई; सन के धागे की बनी चट्टी; मारकीन।
**सलीपर** *पु०* [अ०] स्लिपर; पटरा।
**सलील** *वि०* आसान; सुगम।
**सलुकत** *पु०* सद्व्यवहार।
**सलूका** *पु०* कुर्ती, जिसे औरतें पहनती हैं।
**सलोना** *वि०* [सं० सलवणं] सुन्दर।
**सलोर** *पु०* किसी तरल पदार्थ के मिलने के कारण ढीला, गीला (भोजन)।
**सवंगर** *वि०* जिस घर में अधिक सवांग (सदस्य) हो ऐसा (परिवार)।
**सवँरल** दे० 'सँवरल'।
**सवइया** *पु०* एक प्रकार का छन्द; सवा से गुणित होने वाला पहाड़ा।
**सवत्था** *पु०* ताकत, शक्ति।
**सवरव** *पु०* शौक।
**सवरवल** *अक०* हरा होकर बढ़ना; उमंग में आना।
**सवत** *स्त्री०* सपत्नी।
**सवलान** *वि०* परेशान।
**सवाँग** *पु०* पति, परिवार का पुरुष सदस्य।
**सवाँस** *पु०* [सं० श्वासः] फुर्सत; अवकाश।
**सवा** *वि०* [सं० सपाद] एक पूरा और उसका चौथा हिस्सा, चतुर्थांश।
**सवाई** *वि०* सवा गुना; चतुर्थांशयुक्त एक।
**सवाचल** *सक०* पूछना; पता लगाना।
**सवाद** *पु०* जायका; मजा।
**सवादू** *वि०* वह व्यक्ति, जो स्वादिष्ट भोजन या स्वाद का प्रेमी हो।
**सवारथ** दे० 'सोआरथ'।
**सवारी** *स्त्री०* चढ़ने का वाहन; चढ़कर आने-जाने का साधन।
**सवाल** *पु०* जो पूछा जाए; प्रश्न।
**सवाल खानी** *पु०* कचहरियों में प्रार्थना-पत्र लेने का समय।
**ससुर** *पु०* [सं०] श्वसुर।
**ससुरा** *पु०* एक गाली; ससुराल।
**ससुराल** *पु०* [सं० श्वसुरालयः] श्वसुर का गाँव या घर।
**सस्ता** *वि०* उचित से कम मूल्य का। *उदा०* 'सस्ता रोवै बार-बार महँगा रोवे एके बार'।

**सस्ती** *स्त्री०* सस्तापन, मन्दी।

**सहकल** *अक०* मन बढ़ जाने के कारण फालतू काम करना या बातें करना। *उदा०* 'सहकल पूत घिनौना'।

**सहज** *वि०* साधारण; सुगम। *उदा०* 'सहजे राम बैरागी भइलन'।

**सहजन** *पु०* एक प्रकार का वृक्ष, उसका फल।

**सहजोग** *पु०* परस्पर मिलकर काम करने की स्थिति; साथ।

**सहजोर** *वि०* सशक्त।

**सहटइली** *स्त्री०* साथ के कारण निकटता।

**सहता** *वि०* सस्ता। *उदा०* 'सहता माल बहता पानी'।

**सहतीर** *पु०* लम्बा लकड़ी का लट्ठा।

**सहतूत** *पु०* एक मीठा छोटा फल।

**सहथीर** *वि०* मोटा और मजबूत।

**सहदूल** *पु०* सिंह; लोक-कथाओं की एक बड़ी चिड़िया, जो वजनी सामान भी अपने चंगुल में दबाकर उड़ जाती है।

**सहदेइया** *पु०* एक प्रकार का धान।

**सहदेव** *पु०* युधिष्ठिर के सबसे छोटे भाई।

**सहन** *पु०* घर की निचली सतह, जो समतल होती है; बर्दाश्त।

**सहनउक** *वि०* बरदाश्त करने योग्य।

**सहनाई** *पु०* रौशन चौकी।

**सहनी** *पु०* मल्लाहों की उपाधि।

**सहबोलिया** *पु०* दूल्हे का छोटा भाई या अन्य बालक, जो विवाह में उसके साथ जाता है; सहबाला।

**सहम** *पु०* भय, शंका; लिहाज।

**सहमत** *वि०* एक मत या विचार का; राजी।

**सहमल** *अक०* सशंकित होना; संकोच करना।

**सहर** *पु०* बड़ी बस्ती; नगर; शहर। *उदा०* 'सहर सिखावे कोतवाली'।

**सहरदाँव** *पु०* निर्बाध स्थिति; मुक्त।

**सहरी** *स्त्री०* शफरी मछली; [अ०] सहरगही।

**सहरु** *वि०* शहर में रहने वाला।

**सहरोस** *वि०* समतल; बराबर (भूमि)।

**सहल** *सक०* बर्दाश्त करना; कष्ट झेलना। *उदा०* 'सहल से लहल'।

**सहलाइल** *अक०* जमीन का भींगकर दलदल हो जाना; फल का पककर मुलायम होना।

**सहलावल** *सक०* शरीर पर धीरे-धीरे हाथ फेरना; सहलाना।

**सहलो** *वि०* किसी के साथ व्यर्थ घूमते रहने वाला।

**सहस्सर** *वि०* जो गिनती में दस सौ हो।

**सहाइ** *पु०* [सं० सहाय:] सहायक।

**सहाई** *पु०* दे० 'सहाइ'।

**सहादी** *स्त्री०* समर्थन, स्वीकृति।

**सहाना** *पु०* विवाह में वर की सजावट की सामग्री; एक प्रकार का लग्न-गीत, जिसमें वर और दुल्हन की सजावट का वर्णन रहता है।

**सहाम** *वि०* कृपालु; सहायक।

**सहायक** *पु०* सहायता करने वाली, सहकारी।

**सहारा** *पु०* सहायता, मदद; आश्रय।

**सहिजन** दे० 'सहजन'।

**सहित** *अव्य०* साथ; समेत।

**सहिल** *पु०* छींटकर बोया जाने वाला एक प्रकार का धान।

**सही** *वि०* ठीक; दुरुस्त; यथार्थ।

**सहुआइन** *स्त्री०* साहूकार की पत्नी।

**सहुरल** *अक०* सम्हलना।

**सहूर** *पु०* कार्यक्षमता; बुद्धि; अक्ल।

**सहूलियत** *पु०* सुविधा; सुगमता; आसानी।

**सहेजल** *सक०* पुनरावृत्ति करना; एकत्रित करना; बतलाना; सँभालना; जाँचना।

**सहेजा** *पु०* बटोरा हुआ, इकट्ठा किया हुअए, एकत्रित।
**सहेली** *स्त्री०* सखी; संगिनी।
**सहोदर** *वि०* एक ही माता से उत्पन्न (सन्तान); सगा।
**सहोरल** *सक०* किसी छितराई हुई वस्तु को बटोरना।
**साँई** *पु०* [सं० स्वामिन्] प्रभु, ईश्वर।
**साँकड़** *पु०* पैर में पहनने का एक गहना; सीकड़।
**साँख** *पु०* दमे की बीमारी।
**साँखड़** *पु०* एक प्रकार का गेहुँआ रंग का कम विषैला और छोटा साँप, जो अधिकतर दीवारों या पत्थरों में रहता है।
**साँच** *पु०* सत्य; वास्तविक; यथार्थ। *उदा०* 'साँच में आँच का'।
**साँचा** *पु०* वह उपकरण, जिसमें कोई गीली वस्तु डालकर उसकी आकृति की वस्तु बनाई जाती है। *वि०* सच्चा।
**साँचिया** *पु०* साँचा बनाने वाला।
**साँची** *पु०* एक प्रकार का पान।
**साँचो** *अव्य०* सचमुच।
**साँझ** *स्त्री०* सन्ध्या।
**साँझा** *पु०* साझा।
**साँट** *स्त्री०* छड़ी, कोड़ा; चोट का दाग।
**साँटी** *स्त्री०* पतली छड़ी।
**साँठ** *पु०* साँटा; ईख; मेल। **-गाँठ** *स्त्री०* हेल-मेल; साजिश।
**साँढ़** *पु०* वह बैल, जिसका अण्ड निकाला नहीं गया हो।
**साँढार** *वि०* आकार और आकृति में साँड़ के सदृश।
**सांत** *वि०* जो उग्र या चंचल नहीं हो; शान्त।
**सांतिर** *अव्य०* बदला में; खातिर; लिए।
**साँप** *अव्य०* एक रेंगने वाला लम्बा विषैला कीड़ा; सर्प। *उदा०* 'साँपो मरे आ लाठी भी बचे'।
**साँपिन** *स्त्री०* सर्पिणी।
**साँय-साँय** *वि०* धीरे-धीरे (बोलना); हवा के बहने का शब्द।
**साँवर** *वि०* [सं० श्यामल] साँवला, श्यामल।
**साँवरिया** *पु०* पति।
**साँवाँ** *पु०* एक प्रकार का अन्न। *उदा०* 'सावाँ सोहले बुरबक सरहले'।
**साँस** *पु०* जीवधारियों द्वारा हवा खींचने और छोड़ने की स्थिति। *उदा०* 'जबले साँस तबले आस'।
**साँसत** *स्त्री०* बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बखेड़ा। **-घर** *पु०* कालकोठरी।
**साँसा** *पु०* फिक्र, चिन्ता; अन्देशा, शंका।
**साँसारिक** *वि०* [सं०] संसार सम्बन्धी।
**साइंस** *स्त्री०* [अं०] विज्ञान।
**साइत** *पु०* शुभ मुहूर्त।
**साइनबोर्ड** *पु०* [अं०] नामपट्ट।
**साइयाँ** *पु०* साईं।
**साइर** *पु०* शायर।
**साइरी** *वि०* उदाहरण के तौर पर कही जाने वाली (बात) शायरी।
**सइस** *पु०* घोड़े की हिफाजत के लिए रखा गया नौकर।
**साई** *पु०* किसी नियत समय पर कोई वस्तु बनाकर देने की अग्रिम राशि या अन्न।
**साउड़ी** *स्त्री०* गाड़ी के ऊपर बाँधा गया बाँस की करचियों का ढाँचा; जिसपर ओहार या छज्जा लगाया जाता है।
**साउथ** *पु०* [अं०] दक्षिण दिशा।
**साक** *पु०* साग।
**साकट** *वि०* शाक्तमत मानने वाला; दीक्षा-हीन व्यक्ति; निगुरा; खल।

**साकदीप** *वि०* शाकद्वीपीय।
**साकल** *पु०* हवन-सामग्री।
**साकार** *वि०* परमात्मा का आकार-सहित रूप।
**साकिन** *वि०* रहनेवाला; निवासी।
**साकी** *पु०* [अ०] शराब पिलाने वाली।
**साकेत** *पु०* [सं०] अयोध्या।
**साक्षर** *वि०* [सं०] शिक्षित।
**साक्षरता** *स्त्री०* पढ़े-लिखे होने का भाव।
**साक्षात्** *अव्य०* [सं०] प्रत्यक्ष, सीधे, सामने।
**साक्षी** *स्त्री०* गवाही।
**साख** *पु०* लेन-देन; मर्यादा; धाक; डाल; वंशवृक्ष; शाखा; विश्वास।
**साखा** *पु०* विभाग; वैदिक साहित्य का पाठ और क्रम-भेद।
**साखी** *पु०* गवाह; प्रवचन।
**साखू** *पु०* सखुआ।
**साखोच्चार** *पु०* पूर्वजों की नामावली का वर्णन; गोत्रोच्चार।
**साग** *पु०* हरे पत्तों की तरकारी; सब्जी; तरकारी। *उदा०* 'साग तोड़ी के नींद भोरी के'। **-पात** *पु०* साग-भाजी।
**सागर** *पु०* समुद्र।
**सागर** *पु०* [फा०] शराब का प्याला।
**साङ** *पु०* किसी नुकीले हथियार के शरीर में घुसने से उत्पन्न पीड़ा के समान दर्द।
**साङ-सोहगइली** *पु०* विवाह में कंगन बाँधने का रंगीन और सोनहुला धागा।
**साङ-पाङ** *वि०* विस्तार के साथ।
**साछात** *अव्य०* प्रत्यक्ष; आँखों के सामने।
**साजन** *पु०* प्रेमी; पति, ईश्वर।
**साझा** *पु०* भाग, हिस्सा। *उदा०* 'साझा काम होय बेकाम'।
**साझी** *पु०* हिस्सेदार।
**साझीदारी** *स्त्री०* हिस्सेदारी।
**साट** *स्त्री०* छड़ी; छड़ी की चोट का दाग।
**साटन** *पु०* [अं०] एक बढ़िया रेशमी कपड़ा।
**साटल** *सक०* मिलाना, चिपकाना, जोड़ना।
**साटी** *स्त्री०* पतली छड़ी से मारने पर उखड़ा दाग।
**साठ** *वि०* पचास और दस की संख्या।
**साठा** *वि०* साठ वर्ष की अवस्था। *उदा०* 'साठा तऽ पाठा'।
**साठी** *पु०* एक धान, जो साठ दिनों में तैयार होता है जिसका प्रयोग पूजा-पाठ में किया जाता है।
**साड़ी** *स्त्री०* स्त्रियों की बेलबूटे वाली रंगीन धोती।
**साढ़** *पु०* साली का पति; पत्नी का बहनोई।
**साढ़े** *वि०* आधे के साथ पूरा।
**सात** *वि०* छह और एक सात। *उदा०* 'सात पाँच के लाठी एक आदमी के बोझ'।
**साथ** *पु०* सहित, युक्त। *उदा०* 'साथे सूते के मुँह लुकावे के'।
**साथी** *पु०* मित्र, संगी; साथ रहने वाला।
**सादा** *वि०* जो रंगीन नहीं हो; जिस पर कुछ लिखा न हो। *उदा०* 'सादा सबसे जादा'।
**सादी** *पु०* विवाह, शादी।
**साध** *पु०* साधु, महात्मा; सज्जन। *उदा०* 'साधके बेटा सबादू'।
**साधक** *पु०* साधना करने वाला।
**साधन** *पु०* कार्य-सम्पादन हेतु सामग्री।
**साधना** *पु०* सिद्धि के लिए की गई उपासना।
**साधल** *सक०* वजन जानने के ख्याल से तौलना; अनावश्यक पौधों एवं घास-पात को चुन-चुन कर निकाल देना।
**साधारन** *वि०* मामूली; कम कीमती; सामान्य।
**साधु** *पु०* महात्मा, सन्त; सज्जन।

**साथो** *पु०* साधु (सम्बोधन में)।
**सानंद** *वि०* [सं०] प्रसन्न।
**सान** *पु०* गर्व; गुमान; रोब।
**सानत** *वि०* शान्त, मौन; गतिहीन, शिथिल; मृत।
**सानल** *सक०* सूखे पदार्थ को तरल में मिलाकर सानना; शामिल करना; जिम्मेवार बनाने का।
**सानी** *स्त्री०* पानी में डाला गया मवेशी के खाने का कटा घास-पात इत्यादि।
**सापट** *पु०* साझीदारी।
**साफ** *वि०* स्वच्छ, निर्मल; जिसमें झंझट नहीं हो; स्पष्ट; निष्कलंक; शुद्ध; पवित्र; बिना छल-कपट। *अव्य०* खुले तौर पर (साफ कहना); सफाई से। **-गोई** *स्त्री०* स्पष्टवादिता। **-दिल** *वि०* छल-कपट न हो। **-दीदा** *वि०* निर्लज्ज। **-साफ** *अव्य०* स्पष्टत:।
**साफा** *पु०* मुरेठा, पगड़ी।
**साफिर** *वि०* [अ०] सफर करने वाला।
**साफी** *स्त्री०* रूमाल; गाँजा पीने के समय चिलम के नीचे लगाया जाने वाला कपड़ा।
**साबत** *वि०* साबूत।
**साबन** *पु०* साबुन।
**साबर** *पु०* [सं० शाबर:] एक मंत्र, जो शिव का बनाया माना जाता है। *उदा०* 'कलि बिलोकि जग-हित हर गिरजा साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरजा। अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाव महेस प्रतापू॥' कम्प्यूटर-इन्टरनेट-साइबर ऑन लाइन पत्रकारिता का मूल यही है।
**साबल** *पु०* लोहे का एक प्रकार का औजार।
**साबस** *अव्य०* शाबाश; चाबस।
**साबिक** *वि०* पहले का; आगे का; भूतपूर्व।
**साबित** *पु०* सिद्ध; प्रमाणित।
**साबूत** *वि०* समूचा।
**साबूदाना** *पु०* सागू नामक पेड़ के गूदे से बने छोटे-छोटे दाने।
**साबून** *पु०* [अ०] साफ करने का प्रसाधन।
**साभिमान** *वि०* [सं०] घमण्डी।
**साम** *पु०* एक वेद, सामवेद; कृष्ण; काला; सन्ध्या।
**सामगिरी** *स्त्री०* सामान; किसी वस्तु के लिए उपयोगी वस्तुएँ; सामग्री।
**सामजीरा** *पु०* काले रंग का एक बारीक धान।
**सामता** *वि०* साँवले रंग का; साँवला होने का भाव।
**सामति** *स्त्री०* दुर्भाग्य, आफत, कष्ट।
**सामने** *अव्य०* आगे; सीधे; सम्मुख।
**सामरथ** *पु०* शक्तिशाली; बलवान; सम्पन्न।
**सामा** *स्त्री०* एक प्रकार की चिड़िया; साँवाँ।
**सामाजिक** *वि०* समाज सम्बन्धी; समाज का।
**सामान** *पु०* उपकरण-सामग्री।
**सामिल** *वि०* मिला हुआ; मिश्रित; जो साथ में हो; भागीदार।
**सामी** *पु०* पति, स्वामी।
**साय** *वि०* परास्त; दमन; विवश; शान्त।
**सायक** *पु०* [सं०] बाण।
**सायम्** *अव्य०* शाम का वक्त।
**सायर** *पु०* सागर।
**साया** *पु०* स्त्रियों का अधोवस्त्र।
**सारंग** *पु०* बड़े आकार का काले रंग का पंखवाला कीड़ा; जल जहाज चलाने वाली सीटी, सायरन।
**सारंगा** *स्त्री०* एक गाथा की नायिका; एक रागिनी।
**सारंगी** *स्त्री०* एक मधुर स्वरवाला तार का बाजा।

**सार** *पु०* तत्त्व, सारांश; एक गाली; पत्नी का भाई। *उदा०* 'सार के आ भाँड़के मुँह ना रोकाय'।

**सारजेंट** *पु०* [अं०] घुड़सवार सिपाहियों का जमादार।

**सारण** *पु०* रावण का एक मंत्री; कृष्ण का एक भाई; बिहार का एक प्रसिद्ध जिला, जिसका मुख्यालय छपरा है।

**सारनाथ** *पु०* बौद्धों का तीर्थस्थल, जो काशी के निकट है।

**सारस** *पु०* लम्बी टाँग वाला पक्षी; हंस; कमल।

**सारसुती** *स्त्री०* सरस्वती।

**सारांश** *पु०* [सं०] सार; निचोड़; उपसंहार।

**सारा** *वि०* सम्पूर्ण, पूरा, सभी। *उदा०* 'सारा सहर जर गइल बीबी के खबरे नाहीं'।

**सारी** *स्त्री०* स्त्री या पत्नी की छोटी बहन; साली। *उदा०* 'सारी खुदाई एक ओर, जोरू के भाई एक ओर'।

**सारो** *पु०* धान।

**सार्थक** *वि०* [सं०] अर्थपूर्ण।

**सार्थी** *पु०* सारथि।

**सार्वभौम** *वि०* [सं०] सारी भूमि सम्बन्धी।

**सार्वलौकिक** *वि०* सर्वज्ञात।

**साल** *पु०* [फा०] वर्ष, बारह महीना।

**सालन** *पु०* तरकारी; चने के बेसन की बनी तरकारी; मांस।

**सालल** *अक०* पीड़ा देना; चुभना; टीसना।

**सालसा** *पु०* रक्तशोधक अर्क।

**सालगराम** *पु०* शालिग्राम; नदी में मिलने वाली विष्णु भगवान् की पत्थर की अनगढ़ मूर्ति।

**साला** *पु०* पत्नी का भाई।

**सालाना** *वि०* [फा०] वार्षिक।

**सालार** *पु०* [फा०] सरदार।

**सालियाना** *पु०* वार्षिक वृत्ति।

**साली** *स्त्री०* अगहन धान की उपज; पत्नी की बहन। *उदा०* 'साली आधा सरहज पूरा'।

**साव** *वि०* वणिक् वर्ग की उपाधि; कर्ज देने वाला व्यक्ति; साहु।

**सावधान** *वि०* सतर्क; सचेत।

**सावन** *पु०* एक महीना, जो आषाढ़ के बाद आता है, श्रावण। *उदा०* 'सावन से भादवे दूबर'।

**सावनी** *वि०* सावन सम्बन्धी; सावन में होने वाला।

**सास** *स्त्री०* पति या पत्नी की माँ या उसकी समकक्ष की स्त्री।

**सासटांग** *वि०* साधुओं में प्रचलित जमीन पर मुँह के बल लेटकर किया गया (प्रणाम); आठ अंगों से युक्त।

**सासत** *पु०* कष्ट; पीड़ा; यातना।

**सासन** *पु०* राज्य-व्यवस्था; हुकूमत; दण्ड, सजा।

**सासु** *स्त्री०* सास। *उदा०* 'सासु घरु आरी, पतोहू दरबारी'।

**सासुर** *पु०* ससुर-गृह; ससुराल।

**सास्तर** *पु०* वे धर्मग्रन्थ, जो लोगों के जीवन को संयमित और अनुशासित रखने के लिए लिखे गए हों; धर्मशास्त्र।

**साहकरन** *वि०* जिसका सम्पूर्ण शरीर सफेद और कान काला हो (घोड़ा)।

**साहखरच** *वि०* उदारतापूर्वक खर्च करने वाला।

**साहपसंद** *पु०* एक प्रकार का आम।

**साहब** *पु०* [अ०] साथी, मित्र; स्वामी; सरदार; आदरणीय। (*वि०*) वाला, रखनेवाला। **-जादा** *पु०* बड़े आदमी का बेटा। **-सलामत** *स्त्री* सलाम-बंदगी। **-कमाल** *वि०* आत्मद्रष्टा। **-दिमाग** *वि०* घमंडी। **-दिल** *वि०* बुद्धिमान।

**साहबान** *पु०* [अ०] 'साहब' का बहुवचन।
**साहबाना** *वि०* साहबी; साहब का।
**साहबी** *वि०* साहब का; साहब जैसा।
**साहबुलबुल** *स्त्री०* बुलबुल का एक भेद।
**साहबनवा** *पु०* एक ही बाल में मिलने वाला बैगनी, काला, लाल आदि रंगों का मक्का।
**साहबीयत** *स्त्री०* साहबी चाल-ढाल।
**साहस** *वि०* [सं०] जल्दबाज।
**साहसिक** *वि०* दिलेर।
**साहसी** *वि०* प्रचण्ड, हिम्मतवर।
**साहि** *पु०* राजा।
**साहित्य** *पु०* [सं०] साथ, संयोग, मेल; वाङ्मय; ज्ञान-राशि।
**साहिब** *पु०* [अ०] साहब।
**साही** *पु०* भूमिहारों और राजपूतों की उपाधि; एक जीव, जिसके शरीर पर काँटा रहता है।
**साहु** *पु०* सेठ, बनिया, महाजन। *उदा०* 'साहु जी गाँव के अनेसा से दूबर'।
**साहुल** *पु०* राजगीरों का एक औजार, जिससे दीवाल की सिधाई की जाँच की जाती है।
**साहेब** *पु०* स्वामी; मालिक; अधिकारी वर्ग के लिए सम्मानसूचक शब्द।
**साहेबी** *वि०* साहब-सा; साहब से सम्बन्धित।
**सिंउठा** *पु०* चिमटा; केकड़े के अगले पैर का काँटा।
**सिंकिया** *वि०* सींक-सा; सींक के ऐसी पतली धोती की किनारी।
**सिंकोरल** *सक०* संकुचित करना; समेटना।
**सिंगल** *पु०* सिगनल।
**सिंगा** *पु०* एक बाजा; शृंग।
**सिंगार** *पु०* शृंगार।
**सिंगासन** *पु०* सिंहासन।
**सिंघ** *पु०* सिंह।
**सिंघड़िआ** *वि०* सिंघा बजाने वाला।
**सिंघनी** *स्त्री०* मादा सिंह।
**सिंघल** *पु०* सिंहल द्वीप; सिगनल।
**सिंघा** *पु०* सींग की आकृति का एक बाजा, जिसे फूँककर बजाया जाता है।
**सिंघाड़ा** *पु०* जल में फैलने वाली एक लता या काँटेदार तिकोना फल; एक नमकीन समोसा।
**सिंघासन** *पु०* राजगद्दी; सिंहासन।
**सिंघी** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली, जिसके सिर पर काँटे निकले रहते हैं।
**सिंचाई** *स्त्री०* सींचने का कार्य या भाव।
**सिंदूर** *पु०* [सं०] लाल चूर्ण, जिससे स्त्रियाँ माँग भरती हैं। **-दान** *पु०* विवाह की एक रस्म, जिसमें वर वधू की माँग में सिन्दूर लगाता है।
**सिंदूरिया** *वि०* सिन्दूर के रंग का।
**सिंदोरा** *पु०* सिन्दूर रखने का पात्र।
**सिंध** *पु०* पाकिस्तान का एक प्रदेश; पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी।
**सिंह** *पु०* [सं०] शेर।
**सिंहनी** *स्त्री०* शेरनी।
**सिअन** *पु०* सिलाई।
**सिअरा** *पु०* सियार का विस्तृत रूप; एक जंगली जन्तु गीदड़, सियार।
**सिआई** *पु०* सीने का कार्य या मजदूरी।
**सिआवल** *सक०* सीने का काम दूसरे से कराना।
**सिआह** *वि०* काला पान; ताश के चार रंगों में एक।
**सिआही** *स्त्री०* रोशनाई, स्याही।
**सिआही सोख** *पु०* वह मोटा कागज, जो स्याही को सोख लेता है।

**सिकंदरी गज** *वि०* बड़ा गज।
**सिकउतिया** *स्त्री०* एक पीले रंग की चिड़िया।
**सिकड़** *पु०* लोहे की भारी जंजीर।
**सिकमी** *स्त्री०* दूसरे काश्तकार को मालगुजारी देकर उसकी जमीन में खेती करने की स्थिति।
**सिकरहना** *स्त्री०* बूढ़ी गण्डक नदी।
**सिकस्त** *पु०* तंगी या परेशानी की स्थिति।
**सिकहर** *पु०* सींक आदि घास की रस्सी का बना एक उपकरण, जिसे लटकाकर उस पर बर्तन रखा जाता है; छींका।
**सिकहुती** *स्त्री०* मूँज की बनी टोकरी।
**सिकहुल** *पु०* सींक की जाति की एक घास।
**सिकाइत** *स्त्री०* निन्दा; शिकायत।
**सिकार** *पु०* किसी जन्तु को मारने या पकड़ने के लिए किया गया प्रयास; आखेट।
**सिकारी** *पु०* शिकार करने वाला या शिकार करने में निपुण व्यक्ति।
**सिकोरल** *सक०* सिंकोड़ना।
**सिक्का** *पु०* रुपया; पैसा।
**सिख** *पु०* गुरुनानक के पथ का अनुयायी; सिक्ख, शिष्य।
**सिखवावल** *सक०* सिखाने का काम दूसरे से कराना।
**सिखावल** *सक०* किसी काम को करने का ढंग बताना। *उदा०* 'सिखावल बुद्धि अढ़ाई घरी'।
**सिङार** *पु०* सजावट; शोभा।
**सिङारहाट** *पु०* वेश्यालय; रण्डीखाना।
**सिङारहार** *पु०* एक प्रकार का छोटा सफेद फूल, हरसिंगार।
**सिच्छा** *पु०* उपदेश; शिक्षा।
**सिजिन** *पु०* [अं०] सीजन।
**सिजिल** *वि०* छीलकर चिकना बनाया हुआ।
**सिझावल** *सक०* आँच पर भोज्य-पदार्थों को पकाना; तेल आदि में तलना।
**सिटपिटाइल** *अक०* मौन हो जाना; डर जाना; दब जाना।
**सिटी** *पु०* [अं०] शहर।
**सिट्टी** *स्त्री०* वाचालता।
**सिठिआइल** *अक०* लज्जित होना; निरुत्तर होना।
**सितम** *पु०* जुल्म; अत्याचार; दुःख।
**सितल बुकनी** *स्त्री०* सत्तू।
**सितार** *पु०* [सं० सप्ततार] सात तारों वाला एक वाद्ययंत्र।
**सितिआइल** *वि०* शीत से भींगा हुआ।
**सितुई** *स्त्री०* सुतुही।
**सितुहा** *पु०* सीप।
**सिधरिया-लमान** *पु०* जिस प्रकार छोटी मछलियाँ जमात में एक तरफ चलती हैं वैसी स्थिति।
**सिधरी** *स्त्री०* छोटी आकार की मछली। *उदा०* 'सिधरी चाल चलस, बरारी पर बीते'।
**सिधवाही** *स्त्री०* रसोई के लिए तैयार कच्चा अन्न रखने की बाँस की छँइटी।
**सिधा** *पु०* चावल, दाल, तरकारी आदि भोजन बनाने की सामग्री।
**सिधाई** *वि०* सीधापन; सरलता।
**सिधारल** *अक०* चला जाना; स्वर्गवासी होना।
**सिनिअर** *वि०* बहादुर; तेज; बड़ा।
**सिनेट** *स्त्री०* [अं०] विश्वविद्यालय की प्रबन्ध समिति।
**सिनेमा** *पु०* [अं०] चलचित्र, छायाचित्र। **-हाउस** *पु०* सिनेमाघर।
**सिन्नी** *स्त्री०* मिठाई; देवता को चढ़ाकर प्रसादरूप में बाँटी जाने वाली मिठाई।

**सिपड़** *पु०* जाड़े की सर्द हवा; जाड़े की रात की हवा।

**सिपदा** *पु०* बैलगाड़ी को खड़ा करने के लिए उसमें लगाया गया बाँस का दो टुकड़ा।

**सिपहगिरी** *पु०* सिपाही का काम।

**सिपारिस** *स्त्री०* किसी पर अनुकम्पा करने के लिए दूसरे से आग्रह करने की स्थिति।

**सिपावल** *सक०* सिपवा लगाकर बैलगाड़ी को खड़ा करना या रखना।

**सिपाही** *पु०* फौज या पुलिस दस्ते का निचले स्तर का व्यक्ति; जमींदारों के यहाँ साधारण कामों के लिए नियुक्त व्यक्ति। *उदा०* 'सिपाही के जोड़ हमेसा राँड़'।

**सिपिआ** *पु०* पतली गुठली वाला एक प्रकार का स्वादिष्ट आम।

**सिफर** *पु०* शून्य।

**सिफारिस** *स्त्री०* [फा०] खुशामद; जरिया; संस्तुति। -**नामा** *पु०* सिफारिसी चिट्ठी।

**सिमटल** *अक०* सिकुड़ना; बटुरना।

**सिमरिख** *पु०* एक अन्य प्रकार का विष।

**सिमसिमाह** *वि०* कुछ भींगा हुआ-सा (वस्त्र); स्त्रैण प्रकृति का पुरुष।

**सिय** *स्त्री०* सीता।

**सियल** *सक०* सीना।

**सिया** *पु०* मुसलमानों का एक सम्प्रदाय, जो हजरत अली को पैगम्बर का उत्तराधिकारी मानता है। *स्त्री०* सीता।

**सियार** *पु०* श्रृगाल, गीदड़। *उदा०* 'सियार के सामत आवे तऽ गाँव तरफ दौरे'।

**सियाराम** *पु०* सीताराम।

**सियाही** *स्त्री०* स्याही, विशेषकर काली स्याही।

**सिर** *पु०* मुण्ड; मस्तक; खोपड़ी। *उदा०* 'सिर में बाल ना भालू से लड़ाई'।

**सिरई** *स्त्री०* सिरहाने की पाटी।

**सिरका** *पु०* [फा०] धूप में सड़ाकर खमीर उठाया हुआ ईख का रस।

**सिरकी** *स्त्री०* सरकण्डा।

**सिरखार** *पु०* मानवाकृति।

**सिरगिट्टी** *वि०* शरीर का अति दुबला; कृशकाय।

**सिरजना** *पु०* रचना; बनावट।

**सिरजल** *सक०* रचना; बनाना।

**सिरनामा** *पु०* शीर्षक।

**सिरनी** *स्त्री०* मिठाई; शीतला माँ को न्योछावर प्रसाद।

**सिरपंचमी** *पु०* बसन्त पंचमी।

**सिरपचइ** दे० 'सिरीपंचई'।

**सिरबरह** *पु०* पानी चढ़ाने के लिए खेत के बीच में बनी नाली।

**सिरमिट** *पु०* सीमेण्ट।

**सिरहंट** *पु०* एक प्रकार का बोया जाने वाला धान।

**सिरसोपता** *पु०* [सं० शिरस्तूपा] छठ में घाट पर रखी गई तालाब की मिट्टी, जो छठी माई का प्रतीक है।

**सिरहत** *वि०* [सं० श्रीहत] नतमस्तक (कष्ट से), गमगीन।

**सिरहथ** *पु०* खलिहान में धान का ढेर बहारने की झाड़ू।

**सिरहन्नी** *स्त्री०* तकिया।

**सिरहाना** *अव्य०* सिर के नीचे।

**सिरहानी** दे० 'सिरहन्नी'।

**सिरा** *पु०* रक्तनलिका; ऊपरी हिस्सा; मछली या अन्य मारे गए भक्ष्य जन्तुओं का सिरा। *कहा०* 'सिरा खाय मीरा, पोछी खाय गुलाम'।

**सिराइल** *अक०* बीत जाना; समाप्त होना; ठण्ढा होना।

**सिरिफ** *वि०* केवल; सिर्फ।
**सिरिस** *पु०* एक कोमल फूल वाला विशाल पेड़। *उदा०* 'सिरिस सुमन कत बेधिय हीरा' तुलसी।
**सिरिस्टी** *स्त्री०* संसार की रचना; मनुष्य की उत्पत्ति।
**सिरिस्तादार** *पु०* किसी महकमें का प्रधान।
**सिरिस्ता** *पु०* शासकीय कार्यालय; जमींदारी कार्यालय।
**सिरी** *पु०* किसी के नाम के पूर्व आदरार्थ जोड़ा जानेवाला एक शब्द, श्री।
**सिरीपंचमी** *पु०* बसन्त पंचमी।
**सिरीपचई** दे० सिरी पंचमी।
**सिरुआ** *पु०* मांस का पका रस; तरकारी का रस।
**सिल** *स्त्री०* शिला, चट्टान। **-बट्टा** *पु०* सिल और लोढ़िया।
**सिलउट** *पु०* पत्थर का टुकड़ा, जिसपर मसाला पीसा जाता है।
**सिलकी** *पु०* बेल, श्रीफल।
**सिलगर** *वि०* शीलवान। *उदा०* 'सिलगर मरदा निखार। सिलगर मउगी छिनार'।
**सिलपट** *पु०* काठ की पटरियाँ, जिनपर रेल-लाइन बिछाई रहती है।
**सिलवट** *स्त्री०* सिकुड़न।
**सिलवर** *पु०* अलमुनियम-सा एक प्रकार की धातु; चाँदी।
**सिलसिलवार** *वि०* क्रमानुसार।
**सिल्ली** *स्त्री०* लकड़ी के धड़ का बड़ा और मोटा टुकड़ा; पत्थर का छोटा टुकड़ा।
**सिवंस** *पु०* नई फसल में से दानार्थ या पूजार्थ निकाला गया भाग।
**सिव** *पु०* महादेव।
**सिवा** *क्रि०वि०* बिना, छोड़कर, अलावा।
**सिवान** *पु०* सीमान्त, सीमा, हद; बिहार का एक जिला।
**सिवाला** *पु०* [सं०] शिवालय।
**सिविर** *पु०* [सं०] शिविर।
**सिवैयों** *स्त्री०* सिवई।
**सिस** *पु०* शिशु।
**सिसकल** *अक०* सिसकी भरना।
**सिस्न** *पु०* शिश्न।
**सिहरन** *स्त्री०* कम्पन।
**सिहरावन** *पु०* थोड़ा ठण्डा, शीत।
**सिहाइल** *अक०* ईर्ष्या करना।
**सिहुला** *पु०* शरीर पर सफेद दाग या धब्बा।
**सिहोर** *पु०* एक छोटा पौधा, जो प्रायः दातु के काम आता है।
**सींक** *स्त्री०* सरकण्डा। एक प्रकार की घास।
**सींकर** *पु०* लोहे की बनी काँटेदार जंजीर, जिससे कुँए में गिरे बर्तन को निकाला जाता है।
**सींखचा** *पु०* लोहे की छड़।
**सींघ** *पु०* [सं० शृंगः] सींग, विषाण।
**सींघा** *पु०* वाद्यविशेष; धुत्तुक।
**सींझल** *अक०* [सं० सिद्ध] उबलना, पकना।
**सी** *अव्य०* 'सा' का स्त्रीलिंग रूप; समान। *स्त्री०* पीड़ा या आनन्द की गहन अनुभूति या सर्दी लगने पर मुँह से निकलने वाली आवाज, सीत्कार।
**सी०आई०डी०** *पु०* [अं०] गुप्तचर विभाग; खुफिया पुलिस।
**सीउ** *पु०* शीत।
**सीकर** *पु०* [सं०] जल कण; स्वेद-बिन्दु।
**सीका** *पु०* चींका।
**सीख** *स्त्री०* सिखावन, शिक्षा। *उदा०* 'घाघ के बोल, सीख अनमोल'।
**सीखल** *सक०* पढ़ना; अभ्यास करना; अनुभव पाना।
**सीखा-पढ़ा** *वि०* शिक्षित, जानकार।
**सीखा-सिखाया** *वि०* शिक्षित, कुशल।

**सीजल** *अक०* सीझना। *उदा०* 'सीजल केतना कि बसिया रहल'।
**सीट** *स्त्री०* [अं०] बैठक, आसन।
**सीटी** *स्त्री०* बाजे, इंजन से निकला हुआ सीटी जैसा शब्द।
**सीठा** *वि०* फीका, बेमजा।
**सीड़** *स्त्री०* नमी, सीलन।
**सीढ़ी** *स्त्री०* जीना, निसेनी। **-का डंडा** *पु०* सोपान।
**सीत** *स्त्री०* [सं० शीतम्] ओस। *उदा०* 'सीत चटला से पिआस ना जाई'।
**सीतल** *पु०* ठण्डा, शान्त।
**सीतला** *स्त्री०* चेचक रोग।
**सीताफल** *पु०* शरीफा, एक प्रकार का फल; कोंहड़ा।
**सीध** *पु०* सीधा, सामने। *उदा०* 'सीध अँगुरी से घी ना निकले'।
**सीधा** *पु०* कच्ची खाद्य-सामग्री का दान। **-सादा** *वि०* सरल स्वभाव।
**सीधे** *अव्य०* ठीक सामने।
**सीन** *पु०* दृश्य, नजारा।
**सीना** *पु०* [फा०] छाती। **-जोरी** *स्त्री०* जबरदस्ती.
**सीनियर** *वि०* [अं०] वरिष्ठ, 'जूनियर' का विलोम।
**सीमा** *पु०* हद; सिवाना।
**सीमेंट** *पु०* [अं०] पत्थर का चूर्ण, जो पलस्तर के काम आता है।
**सीयन** *स्त्री०* सिलाई।
**सीर** *पु०* वह जमीन, जिसपर जमींदार स्वयं खेती करता है।
**सीरियल** *पु०* [अं०] धारावाहिक।
**सीवर** *पु०* [अं०] मल-मूत्र निस्तारित करने का उपक्रम।
**सुँघनी** *स्त्री०* नस; तम्बाकू का चूर्ण।
**सुअना** *पु०* तोता, सुग्गा।
**सुइया** *स्त्री०* सूई।
**सुअर** *पु०* शूकर, वराह; एक गाली।
**सुकुवार** *वि०* कोमल, सुकुमार।
**सुखण्डी** *स्त्री०* सूखा रोग, जिसमें बच्चों का विकास रुक जाता है।
**सुख** *पु०* [सं०] आनन्द; आराम; अनुकूल; सुविधा। **-कर** *वि०* आनन्ददायक। **-द** *वि०* आनन्ददायक। **-दुःख** *पु०* आनन्द और कष्ट। **-धाम** *पु०* बैकुण्ठ। **-सार** *पु०* मोक्ष।
**सुखराज** *वि०* सूखी जमीन; स्वच्छ दिन।
**सुखवन** *पु०* अन्न के सूख जाने पर उसके वजन में कमी की स्थिति।
**सुखारि** *स्त्री०* सूखा, अनावृष्टि।
**सुखावल** *अक०* बीज या अन्न को धूप में सुखाना।
**सुखिया** *स्त्री०* सुखी, दुःखों से रहित।
**सुगबुगाइल** *अक०* हिलना, डुलना।
**सुघरी** *स्त्री०* शुभ मुहूर्त, अच्छा समय।
**सुचित** *वि०* निश्चित, प्रसन्न।
**सुजनी** *स्त्री०* मोटा बिछौना।
**सुझावल** *अक०* समझाना, दिखलाना।
**सुटुकल** *अक०* चुपचाप बैठना, छिपकर रहना।
**सुटुकी** *वि०* दुबला, कमजोर।
**सुत** *पु०* बेटा, पुत्र।
**सुतरी** *स्त्री०* सुतली।
**सुतही** *स्त्री०* सीपी।
**सुता** *स्त्री०* बेटी।
**सुतार** *पु०* सुयोग, सुभीता, सुगमता।
**सुथनी** *स्त्री०* एक प्रकार का जमींकन्द। आलू के आकार की एक तरकारी।
**सुधा** *स्त्री०* अमृत; दूध।
**सुधाकर** *पु०* चन्द्रमा।

**सुधी** *पु०* पण्डित, व्यक्ति।
**सुन** *वि०* सुन्न।
**सुनगुन** *स्त्री०* कानाफूसी।
**सुनल** *सक०* सुनना।
**सुनवाई** *स्त्री०* श्रवण।
**सुनवैया** *पु०* श्रोता।
**सुन्ना** *पु०* शून्य।
**सुफल** *पु०* सुन्दर फल।
**सुबह** *पु०* सबेरा, प्रात:काल, भोर।
**सुबहा** *पु०* शक, सन्देह, भ्रम।
**सुमार** *पु०* गिनती, गणना, मूल्य।
**सुसुम** *वि०* थोड़ा गर्म, जो सहने योग्य हो।
**सुहबत** *स्त्री०* [अ०] संग; मित्रता; सहवास।
**सुहाग** *पु०* [सं० सौभाग्यं] सौभाग्य, अहिवात; मांगलिक गीत। **-रात** *स्त्री०* वर-वधू के मिलन की पहली रात।
**सुहागन** *स्त्री०* सौभाग्यवती।
**सुहारी** *स्त्री०* सादी पूरी।
**सुहाली** *स्त्री०* दे० 'सुहारी'।
**सुहावन** *वि०* [सं० शोभनं] सुहावना।
**सुहास** *पु०* [सं०] मृदुहास।
**सुहासी** *वि०* [सं०] हँसता हुआ।
**सूँड़स** *पु०* सूँस।
**सूँघल** *सक०* बास लेना, सूँघना।
**सूँड़** *स्त्री०* शुण्ड।
**सूअर** *पु०* सूकर।
**सूआ** *पु०* [सं० सूचा] बड़ी सूई; तोता।
**सूई** *स्त्री०* [सं० सूची] बारीक, नोकदार तार, सूची।
**सूकर** *पु०* [सं०] सूअर।
**सूखल** *अक०* सूखना, जलहीन होना। *उदा०* 'सूखल नदिया नाव चलावे'।
**सूखा** *वि०* [सं० शुष्क] सूखा हुआ, रसहीन।
**सूचना** *स्त्री०* [सं०] संकेत; विज्ञापन; बताने की क्रिया।
**सूची** *स्त्री०* विषय तालिका।
**सूजी** *स्त्री०* गेहूँ का रवेदार आटा।
**सूझ** *स्त्री०* [सं०] सूझने का भाव; नई बात की उत्पत्ति।
**सूट** *स्त्री०* [अं०] पूरा पहनावा, कोट-पतलून आदि।
**सूद** *पु०* [फा०] लाभ, नफा, ब्याज।
**सूधा** *वि०* सीधा। *उदा०* 'सूधा के मुँह कुत्ता चाटे'।
**सूप** *पु०* अनाज पछोरने का पात्र, छाज। *उदा०* 'सूप पर हँसे चलनी जेकरा में सहसर छेद'।
**सूर** *पु०* [सं०] सूर्य।
**सूल** *पु०* दर्द।
**सेंउठिआइल** *अक०* सेंउठी पड़ना।
**सेंउठी** *स्त्री०* शरीर पर जलने या चोट से उत्पन्न सिकुड़न।
**सेंकल** *सक०* आग की आँच पर पकाना (रोटी); गरम करना।
**सेंकुरल** *अक०* संकुचित होना; संकीर्ण; सिकुड़ना।
**सेंगर** *वि०* राजपूतों की एक उपजाति।
**सेंढा** *पु०* ऊँची भूमि।
**सेंतिहा** *पु०* मुफ्त या अल्प मूल्य में मिलने वाली वस्तु; फालतू आदमी।
**सेंथन** *पु०* खलिहान में ओसाए हुए अनाज को बहारने का झाड़ू।
**सेंमू** दे० 'संभु'।
**सेंवार** *पु०* एक प्रकार का जल में उत्पन्न हरे रंग का लच्छादार होने वाला पौधा; शैवाल।
**सेआन** *वि०* वयस्क।
**सेआम** *वि०* कृष्ण, श्याम।
**सेख** *वि०* मुसलमानों का एक वर्ग, जो अपने को अन्य से श्रेष्ठ मानता है शेख; एक उपाधि।
**सेखी** *स्त्री०* घमण्ड, अभिमान।

**सेखुआ** दे० 'सखुआ'।
**सेगा** *पु०* स्थिति; प्रगति।
**सेज** *पु०* पति-पत्नी के सोने का पलंग। *उदा०* 'आधी-आधी रतिया के बोले कोइलरिया। चिहुँक उठे ना हो सेजरिया पर गोरिया॥'
**सेठ** *पु०* [सं० श्रेष्ठिन्] बड़ा व्यापारी, साहूकार; धनाढ्य व्यक्ति।
**सेढ़** *पु०* एक प्रकार का धान, जो साठ दिनों में तैयार होता है।
**सेतिहा** *वि०* मुफ्त। उदा० 'सेतिहा के गेहूँ घर-घर पूजा'।
**सेतु बान्ह** *पु०* भारत और लंका के बीच के समुद्र में राम द्वारा बाँधा गया पुल; सेतु-बन्ध।
**सेदल** *सक०* किसी वस्तु या अंग में आग से गर्मी पहुँचाना; पिटाई करना।
**सेना** *स्त्री०* [सं०] फौज, वाहिनी; सशस्त्र व्यक्तियों का दल। **-नायक** *पु०* सेनापति। **-पति** *पु०* सिपहसालार।
**सेनुआर** दे० 'सेनुवार'।
**सेनुर** *पु०* सधवा स्त्रियों के माँग में लगाने का एक प्रकार का लाल चूर्ण, सिन्दूर। *उदा०* 'सेनुर टिकुली जरल तऽ कोखो बजर पड़ल'।
**सेनुरवा** *वि०* लाल रंग का (आम), जो प्रायः खट्टा होता है।
**सेनुरिआ** *पु०* सिन्दूर बेचने वाला व्यक्ति।
**सेनुवार** *पु०* एक प्रकार का वृक्ष; एक गाँव का नाम।
**सेन्ह** *पु०* चोरी करने के लिए दीवार में किया गया बड़ा छेद।
**सेंन्ह मरनी** *स्त्री०* सेन्ध मारने का हथियार।
**सेन्हा** *पु०* एक प्रकार का खनिज नमक।
**सेम** *पु०* एक प्रकार की छिम्मी, जिसकी तरकारी बनती है।
**सेमर** *पु०* एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, जिसके फल से रूई निकलती है, सेमल।
**सेर** *पु०* सोलह छटाँक या अस्सी रुपये भर की तौल; हिम्मती व्यक्ति; बाघ; शेर। *उदा०* 'सेर भर चिउरा घर भर भोज'।
**सेर-खोंपड़** *यौ०* घरेलू सामान। *कहा०* 'राम करस हर गोयड़े बहे, सेर-खोपड़ नजर पर रहे'।
**सेरवावल** *सक०* किसी गर्म वस्तु को ठण्ढा करना।
**सेरसाह** *पु०* भोजपुरी क्षेत्र का एक पठान सरदार, जो हूमायूँ को हराकर दिल्ली का बादशाह बना, शेरशाह सूरी।
**सेरहा** *वि०* जिसमें एक सेर अँट जाए ऐसा बर्तन।
**सेराइल** *अक०* गर्म वस्तु का ठण्ढा होना; क्रोध शान्त होना।
**सेल्फी** *स्त्री०* [अं०] स्मार्टफोन (मोबाइल फोन) से स्वयं से स्वयं की मनोनुकूल फोटोग्राफी।
**सेल्हल** *अक०* छिलना।
**सेल्हा** *पु०* एक प्रकार का मोटा धान; उसीना चावल।
**सेव** *पु०* पहाड़ी क्षेत्र में होने वाला एक फल; बेसन का सूत-सा नमकीन खाद्य-पदार्थ।
**सेवइत** *पु०* मन्दिर के नाम लिखी गई जमीन या सम्पत्ति की देख-भाल करने वाला।
**सेवई** *स्त्री०* गेहूँ के आटे के सूत जैसा तार, जिसे दूध में पकाकर खाया जाता है।
**सेवख** *पु०* सेवा करने वाला; पूजा करने वाला; सेवक।
**सेवराह** *वि०* मुलायम (रोटी)।
**सेवल** *सक०* सेवा करना; पक्षियों द्वारा अपने अण्डे को पंख से ढँके रहना।
**सेवा** *पु०* खिदमत, टहल; रोगी की देखभाल; पूजा, आराधना। **-धरम** *पु०*

सेवा सम्बन्धी कर्तव्य। -**बंदगी** *स्त्री०* आराधना।

**सेवा टहल** *यौ०* दूसरे को आराम पहुँचाने के लिए किया गया काम; साधु-सेवा।

**सेवाती** *स्त्री०* स्वाति नक्षत्र।

**सेवाय** *अव्य०* अलावा, सिवा, सिवाय। *वि०* अधिक।

**सेवार** *पु०* सिवार।

**सेविंग बैंक** *पु०* [अं०] ब्याज पर लेने वाला बैंक।

**सेविका** *स्त्री०* [सं०] दासी, परिचारिका।

**सेवी** *वि०* [सं०] सेवा करने वाला; आराधक।

**सेसनाग** *पु०* शेषनाग।

**सेसर** *वि०* श्रेष्ठ, बड़ा, वजनी।

**सेहत** *स्त्री०* [अ०] स्वास्थ्य।

**सेहथल** *सक०* साफ-सुथरा बनाना।

**सेहर** *वि०* भयभीत; दबा हुआ; उदास।

**सेहरा** *पु०* फूलों की लड़ी का बना एक प्रकार का आवरण, जो दूल्हे की पगड़ी से नीचे की ओर लटका रहता है।

**सेहुला** *पु०* त्वचा पर हल्का सफेद दाग। *उदा०* 'सुखे सेहुला दुखे दिनाय'।

**सैंतालिस** *वि०* सात और चालीस।

**सैंतीस** *वि०* [सं० सप्तत्रिंशत्] सात और तीस।

**सैंपुल** *पु०* [अं०] नमूना।

**सैंया** *पु०* पति, स्वामी।

**सै** *वि०* सौ। *उदा०* 'सै चोट सुनार के, एक चोट लुहार के'।

**सैकड़ा** *वि०* सौ का समूह।

**सैकड़े** *वि०* प्रतिशत; सौ में।

**सैतान** *पु०* दुष्ट, बदमाश। *उदा०* 'सैतान से भगवान डरे'।

**सैना** *पु०* फौज, दल; संकेत।

**सैनिक** *वि०* फौजी।

**सैनिटरी** *वि०* [अं०] स्वास्थ्य और सफाई से सम्बन्धित।

**सैर** *स्त्री०* भ्रमण।

**सैल** दे० 'सैर'।

**सोंच** *पु०* चिन्ता, विचार, गौर; पछतावा।

**सोंचल** *अक०* किसी विषय पर विचार या गौर करना; चिन्ता करना; पछताना।

**सोंटल** *सक०* बालों को कंघी से सँवारना; किसी वस्तु को मलकर चिकना बनाना; मारने के लिए लाठी उठाना।

**सोंटहड़ल** *सक०* सोंटे से पिटाई करना।

**सोंटहाड़ी** *स्त्री०* छोटा किन्तु मोटा सोटा।

**सोंटा** *पु०* [सं० शुण्ड:] छोटी लाठी, डण्डा।

**सोंठ** *पु०* सुखाया हुआ अदरख।

**सोंठउर** *पु०* सोंठ का लड्डू; सोंठ, गुड़, मेवा-मिश्रित लड्डू, जो जच्चा को पुष्ट होने के लिए खिलाया जाता है।

**सोंय-सोंय** *क्रि०वि०* सोने पर नाक से निकलने वाली ध्वनि।

**सोंरा** *पु०* क्षारीय मिट्टी के रस को उबालकर उससे तैयार किया गया एक पदार्थ, जो बारूद बनाने के काम में आता है।

**सोंस** *पु०* मगर की आकृति का एक जल-जन्तु; घड़ियार।

**सोंसिआइल** *अक०* सों-सों की आवाज करना।

**सोंअबर** स्वयंवर।

**सोआ** *पु०* एक तरह का सुगन्धित साग।

**सोआगत** *पु०* आए हुए व्यक्ति का आदर-सत्कार।

**सोआती** *स्त्री०* एक नक्षत्र, जो प्राय: कार्तिक महीने में पड़ता है, स्वाति।

**सोआमी** *पु०* पति मालिक; ईश्वर; संन्यासियों की उपाधि।

**सोआरथ** *पु०* अपना प्रयोजन या मतलब; अपना लाभ; अपनी भलाई।
**सोआहा** *पु०* जलकर राख होने या खत्म होने की स्थिति।
**सोइरी** *स्त्री०* वह घर, जहाँ किसी स्त्री को बच्चा पैदा होता है, प्रसूतिगृह।
**सोक** *पु०* दु:ख, सन्ताप, चिन्ता।
**सोकड** *पु०* खाँटी; पक्का; दुरुस्त।
**सोकन** *वि०* सफेद रोयों के साथ हल्का काले रंग के रोयों के मिश्रण वाला (बैल)।
**सोख** *वि०* ढ़ीठ नटखट; चंचल।
**सोखइत** *वि०* सोखा को पूजने वाला।
**सोखल** *सक०* पानी को भीतर खींचना (भूमि)।
**सोखा** *पु०* झाँड़-फूँक करने वाला; एक कुलदेवता।
**सोखाई** *स्त्री०* झाँड़-फूँक की क्रिया।
**सोख्ता** *वि०* [हिं०] स्याही-सोख।
**सोग** *पु०* शोक, विलाप।
**सोगनी** *स्त्री०* स्त्रियों की एक गाली।
**सोगलाही** *स्त्री०* शोकाकुल।
**सोगहा** *वि०* पूर्ण, पूरा-पूरा।
**सोच** *पु०* [सं० शोचनम्] सोचने की क्रिया, विचारने का भाव; शोक; पश्चात्ताप। **-विचार** *पु०* किसी विषय का विवेचन।
**सोचल** *सक०* विचार करना, विवेचन करना।
**सोजनी** *स्त्री०* [फा०] सुजनी।
**सोजाति** *वि०* अपनी जाति का, स्वजातीय।
**सोझ** *वि०* सीधा, सरल स्वभाव का। *उदा०* 'सोझ अंगुरी घीउ ना आवे'।
**सोझवार** *वि०* सीधा व्यवहार का।
**सोझा** *क्रि०वि०* सामने, सम्मुख।
**सोझिआ** *वि०* सीधा; प्रपंचहीन।
**सोड़ा** *पु०* एक प्रकार का क्षार, जिससे कपड़ा साफ किया जाता है।
**सोतंत्र** *वि०* [सं०] स्वाधीन, स्वच्छन्द; मुक्त, स्वतंत्र।
**सोता** *पु०* पानी की धारा; झरना।
**सोथ** *पु०* शोथ, सूजन।
**सोदर** *वि०* [सं०] सगा।
**सोधल** *सक०* शुद्ध करना; खोजकर या जाँच कर तथ्य का पता लगाना।
**सोधाइल** *सक०* शोधा जाना।
**सोन** *स्त्री०* भोजपुरी क्षेत्र में होकर बहने वाली गंगा की सहायक नदी।
**सोन किरवा** *पु०* एक प्रकार का कीड़ा, जिसका पंख सोने-सा चमकता है।
**सोनचिरइया** *स्त्री०* पक्षियों के पंखों को गुदड़े में सीकर बनाई गई चिड़िया की आकृति।
**सोनपापरी** *स्त्री०* एक प्रकार की मिठाई।
**सोनहा** *स्त्री०* वाल्मीकिनगर के निकट गण्डक में मिलने वाली एक नदी, जिसकी रेत में सोने का कण मिलता है।
**सोनहुला** *वि०* सोने के रंग का; सोने के समान।
**सोना** *पु०* [सं० सुवर्ण] हल्की लाली लिए पीले रंग की बहुमूल्य धातु; स्वर्ण। *उदा०* 'सोना दहाइल जाय कोइला पर मोहर'।
**सोनार** *पु०* सोने का काम करने वाला; हिन्दुओं की एक जाति; स्वर्णकार। *उदा०* 'सोना सोनार के गहना संसार के'।
**सोनारी** *वि०* सुनारों से सम्बन्धित, सुनारों का।
**सोनी** *पु०* सोनार।
**सोप** *पु०* [अं०] साबुन।
**सोपाइट** *पु०* सुविधा सहूलियत।
**सोपान** *पु०* [सं०] सीढ़ी।

**सोपारी** *स्त्री०* सुपारी।
**सोफा** *पु०* [अं०] गद्दीदार आसन या शायिका।
**सोबरन** *वि०* सुन्दर, स्वस्थ; सोना।
**सोबरात** *पु०* प्रसिद्ध मुस्लिम त्यौहार, शबे-बारात।
**सोभमान** *वि०* शोभायुक्त; सुन्दर।
**सोभा** *स्त्री०* शोभा। **-कारी** *वि०* शोभायुक्त।
**सोभाव** *स्त्री०* स्वभाव।
**सोमरा** *पु०* दोबरे की जुताई।
**सोमार** *पु०* हिन्दू पंचांग का दूसरा दिन; चन्द्रवार, सोमवार।
**सोमारी** *वि०* सोमवार को होने वाली अमावस्या का व्रत; सावन के सोमवार को लगने वाला मेला।
**सोम्ह** *वि०* कंजूस, कृपण।
**सोम्हड़** दे० 'सोम्ह'।
**सोम्हड़ई** *वि०* कृपणता।
**सोर** *पु०* वृक्ष एवं पौधों के तन्तु, जड़; हल्ला; कोलाहल।
**सोरकार** *पु०* सम्बन्ध; लगाव।
**सोरसती** *स्त्री०* सरस्वती।
**सोरह** *वि०* दस और छह।
**सोरहा** *वि०* सोरह। *उदा०* 'सोरहो सिंगार घेघवे बिगाड़'।
**सोरहिया** *पु०* चोरों का सरदार; चोरों से साँठ-गाँठ रखने वाला।
**सोरही** *स्त्री०* लोक-कथाओं में चर्चित एक प्रकार की गाय, चाक।
**सोलकन** *पु०* शूद्र, नीच जाति।
**सोलखे-सोलखे** *वि०* बिना किसी प्रकार के झंझट या बाधा का।
**सोसती** *पु०* [सं० स्वस्ति] कल्याण के लिए प्रयुक्त शब्द, स्वस्ति।
**सोसतैन** *पु०* मंगल कार्यों में पढ़ा जानेवाला स्वस्तिवाचक मंत्र।
**सोसइटी** *स्त्री०* [अं०] सहकारी समिति; समाज; संघ।
**सोसील** *वि०* सुशील।
**सोहगइली** धागा; लम्बा सिंधोरा।
**सोहदा** *वि०* गुण्डा; बदमाश।
**सोहन** *पु०* खेत की निकौनी करने से निकली घास।
**सोहनी** *स्त्री०* खेत में उगी फसल से घास-पात आदि निकालने का कार्य।
**सोहवत** *पु०* साथ; संग; संगति।
**सोहर** *पु०* पुत्र-जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला एक प्रकार का मंगल-गीत।
**सोहरत** *पु०* प्रख्याति, प्रसिद्धि; सार्वजनिक चर्चा।
**सोहरल** *सक०* जमीन तक लटकना (वस्त्र)।
**सोहरा** *वि०* जमीन के निकट होकर।
**सोहल** *सक०* निकौनी करना।
**सोहाइल** *अक०* अच्छा लगना, रुचना; पसन्द आना।
**सोहाग** *पु०* अहिवात, स्त्रियों का सधवापन; विवाह के पूर्व वर या वधू को सधवा स्त्रियों द्वारा दिया गया अंचल का सूत्र।
**सोहागा** *पु०* गर्म गन्ध की स्रोतों से निकला एक प्रकार का क्षार, सुहागा।
**सोहागिन** *स्त्री०* सधवा स्त्री, सौभाग्यवती।
**सोहारी** *स्त्री०* बड़ी एवं पतली पूड़ी, सुहारी। *उदा०* 'साधु संत का सतुआ दुलम बा मउगा खाय सोहारी प्रभु जी कबके चूक हमारी'।
**सोहावन** *वि०* मनोरम, अच्छा लगनेवाला; सुहावन।
**सौं** *स्त्री०* कसम। *अव्य०* समान।
**सौंकार** *पु०* सबेरा।
**सौंकेरे** *अव्य०* तड़के।
**सौंध** *स्त्री०* सुगन्ध।

**सौंपल** *सक०* सौंपना।
**सौंफ** *स्त्री०* सौंफ (मसाला)।
**सौंर** *स्त्री०* चादर।
**सौंसे** *वि०* बहुत बड़ा, समस्त
**सौ** *वि०* नब्बे और दस के योग से बनी इकाई। *उदा०* 'सौ के लाठी एक के बोझ'।
**सौकीन** *वि०* शौकीन।
**सौकीनी** *स्त्री०* शौकीनी।
**सौख** *पु०* किसी वस्तु के प्रयोग के लिए तीव्र लालसा।
**सौखीन** *वि०* शौक करने वाला, बना-ठना रहने वाला।
**सौगात** *पु०* किसी सम्बन्धी या मित्र के यहाँ भेजा गया वस्त्र, उपहार, तोहफा।
**सौत** *स्त्री०* सपत्नी।
**सौतन** *स्त्री०* सौत।
**सौतिन** *स्त्री०* दे० 'सौतन'।
**सौतिया डाह** *स्त्री०* दो सौतों में होने वाली ईर्ष्या।
**सौतुक** *वि०* सुन्दर, पूर्ण, उत्तम।
**सौदा** *अव्य०* बेचने-खरीदने का माल; सामान; खरीद-बिक्री।
**सौदागर** *पु०* सौदा करने वाला; व्यापारी।
**सौरा** *पु०* एक प्रकार की बड़ी मछली।
**सौरी** *स्त्री०* [सं० सूतिकागारं] सूतिगृह; सफरी मछली।
**सौहँ** *स्त्री०* कसम। *अव्य०* सम्मुख।
**सौहर** *पु०* शौहर।
**स्काउट** *पु०* [अं०] बालचर।
**स्कूल** *पु०* [अं०] पाठशाला, विद्यालय।
**स्टेबलाइजर** *पु०* [अं०] विद्युत्-प्रवाह को नियन्त्रित करने का उपकरण।
**स्टेशन** *पु०* ठहरने का स्थान जैसे रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन।
**स्त्री** *स्त्री०* [सं०] औरत; पत्नी, मादा पशु।
**स्थान** *पु०* [सं०] ठहराव, टिकाव; पद; भू-भाग।
**स्नातक** *पु०* [सं०] अध्ययनोपरान्त, जो गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे।
**स्नेह** *पु०* [सं०] प्रेम, मुहब्बत।
**स्पर्श** *पु०* [सं०] छूना, सम्पर्क।
**स्पष्ट** *वि०* [सं०] साफ-साफ देखा जा सके; सही।
**स्वर्ग** *वि०* देवलोक जाने वाला। *पु०* देवलोक।
**स्वर्ण** *पु०* [सं०] सोना नाम की धातु।
**स्वस्तिक** *पु०* [सं०] मंगलचिह्न।
**स्वीकार** *पु०* [सं०] अंगीकार; अपनाने की क्रिया; ग्रहण; इकरार।

❑

# ह

**ह** देवनागरी वर्णमाला का तैंतीसवाँ और उष्म वर्ग का अन्तिम व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है।

**हँ** *अव्य०* स्वीकृतिसूचक शब्द। किसी की बातें सुनते समय ऐसा 'हँ' कहने से सुनने में ध्यान लगाने की क्रिया समझी जाती है।

**हँइचल** *सक०* धाँगना; रौंदना; बलपूर्वक दबाना।

**हँउकल** *सक०* हाँकना।

**हँउजार** *पु०* हल्ला, कोलाहल।

**हँउड़ल** *अक०* किसी तरल पदार्थ का तंग जगह में चक्कर कटवाना; मथकर फेंट-फाँट करना।

**हंक** *स्त्री०* हाँक, पुकार; ललकार।

**हँकड़ल** *अक०* हुंकारना; गला फाड़कर चिल्लाना।

**हँकड़ान** *स्त्री०* हँड़काव।

**हँकड़िया** *वि०* हाँक लगाने वाला; उत्साही।

**हँकवा** *पु०* हाँकने वाला; पर्या० हँकनिहार।

**हँकवावल** *सक०* दूसरे से हाँकने का काम कराना; पंखे से हवा कराना; मवेशियों को आगे की ओर बढ़ाना।

**हंका** *स्त्री०* हाँक, ललकार।

**हँकार** *पु०* पुकार, बुलाहट।

**हँकारल** *सक०* ललकारना। *अक०* हुँकारना।

**हँकारा** *पु०* बुलावा; निमंत्रण; पुकार।

**हँगामा** *पु०* [फा०] हुल्लड़; हल्ला-गुल्ला।

**हंटर** *पु०* कोड़ा, लम्बा चाबुक।

**हंडल** *पु०* हैण्डिल।

**हंडा** *पु०* बड़ी हाँड़ी। (पीतल, काँसे की)

**हँड़िया** *स्त्री०* [सं० हण्डिका] मिट्टी की छोटी हाँडी। *उदा०* 'हँड़िया में अछतोना चल समधी जेंवे'।

**हँड़िया-डाबर** *पु०* सीधा गहरा गड्ढा या डबरा।

**हंत** *अव्य०* [सं०] हर्ष, खेद, आश्चर्य का बोधक।

**हंता** *पु०* [सं० हन्ता] मार डालने वाला; डाकू।

**हंत्री** *वि० स्त्री०* [सं०] वध करने वाली।

**हँथोरी** *स्त्री०* हथेली।

**हँथौरा** *पु०* हथौड़ा।

**हँफनि** *स्त्री०* हाँफने की क्रिया।

**हँसन** *पु० स्त्री०* हँसने की क्रिया।

**हँसनी** *स्त्री०* हँसने का भाव या क्रिया; हँसी।

**हंसमुख** *वि०* प्रसन्न, विनोदी।

**हँसल** *अक०* प्रसन्नता से मुँह खोलकर शब्द निकालना; कहकहा लगाना; खिल-खिलाना। *उदा०* 'हँस देनी लाज परा गेल'। *सक०* निंदा करना, उपहास करना।

**हँसली** *स्त्री०* गले के नीचे की एक हड्डी; एक गहना।

**हँसागर** *पु०* वह गर्दन, जो घेंघा रोग के प्रभाव से मोटी हो जाती है। *उदा०* 'टेढ़ी टोपी हंसागर तब जनिह जे भोपतपुर घर'।

**हँसाय** *स्त्री०* हँसी, हँसाई।

**हँसारत** *स्त्री०* निन्दा, शिकायत।

**हँसावल** *सक०* दूसरे को हँसाना; हँसने वाली बात बोलना।

**हँसी** *स्त्री०* हँसने का भाव या कार्य; मजाक; दिल्लगी; उपहास; खेल-मजाक। *उदा०* 'हँसी में मसकरी'।

**हँसी खेल** *पु०* मजाक में किया गया काम।

**हँसी ठठोली** *स्त्री०* दिल्लगी।

**हँसुआ** *पु०* हँसिया फसल काटने का दाँत वाला एक हथियार। *उदा०* 'हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत'।

**हँसुली** *स्त्री०* स्त्रियों के गले का एक गोलाकार आभूषण; पासियों का ताड़ छेने का हँसुआ।

**हँसोड़** *वि०* हँसने-हँसाने वाला; हँसी-मजाक करने में दिलचस्पी लेने वाला; विनोदप्रिय।

**हँसोतल** *सक०* हाथ में जमा करना।

**हइसा-हइसी** *वि०* इधर से उधर की ओर।

**हई** *सर्व०* यह। *वि०* यह। *अक०* हूँ।

**हई-हयार** *पु०* दौड़-धूप कर खेती को नुकसान पहुँचाने वाला मवेशी।

**हउअव** *सक० वर्त०* है।

**हउआ** *पु०* बच्चों को डराने वाला एक भयंकर जीव।

**हउआइल** *अक०* किसी वस्तु के लिए अति व्यग्र हो जाना। (भोजनादि); खुजलाना।

**हउआवल** *सक०* खुजलाना; दूसरे से खुजलाने का काम कराना।

**हउद** *पु०* हौज।

**हउस** *पु०* बड़ी दालान या मकान।

**हउहद** *स्त्री०* खुजलाहट।

**हऊ** *वि०* वह।

**हऊ** *सर्व०* वह। *अक०* वर्तमान काल।

**हक** *पु०* अधिकार, न्याय।

**हकदार** *पु०* अधिकारी, अधिकार रखने वाला।

**हकरल** *अक०* जोर-जोर से रोना; चिल्लाना; जोर से हाँक मारकर किसी को बुलाना।

**हकीम** *पु०* [तु०] वैद्य, चिकित्सक; ज्ञानी; बुद्धिमान।

**हगनउती** *स्त्री०* गुदामार्ग।

**हगल** *अक०* मल-त्याग करना। बच्चा, पशु-पक्षी का पाखाना करना।

**हगवास** *पु०* मल-त्याग की इच्छा; उसका वेग।

**हगाई** *स्त्री०* हगने का काम या भाव।

**हगामा** दे० 'हँगामा'।

**हगावल** *सक०* पाखाना फिराना।

**हगास** *स्त्री०* हगने की इच्छा।

**हगोड़ा** *वि०* बार-बार शौच जाने वाला।

**हग्गू** *वि०* दे० 'हगोड़ा'।

**हचक** *स्त्री०* धक्का, झटका।

**हचकल** *अक०* कीचड़ या अन्य जगह में गाड़ी का फँसना।

**हचका** *पु०* गाड़ी के रास्ते का गड्ढा, जिससे गाड़ी हिचकोले खाती है।

**हचर-हचर** *पु०* कीचड़युक्त पानी में चलने पर उससे निकली ध्वनि।

**हज** *पु०* मुसलमानों द्वारा मक्काशरीफ की यात्रा।

**हजम** *पु०* पेट में खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया या भाव; पाचन।

**हजाम** *पु०* बाल बनाने वाली एक जाति, नाई। *स्त्री०* हजामिन। *उदा०* 'हजाम के बराती सबे ठाकुरे ठाकुर'।

**हजामत** *स्त्री०* सिर के बालों को मुड़वाने या छूरे से छिलने का काम।

**हजार-खाँड़** *वि०* हजार का एक खण्ड। हजार का आधा या चौथाई।

**हजारा** *पु०* फौव्वारा, पानी पटाने का टोटीदार बर्तन, जिसमें पतले-पतले हजारों छिद्र रहते हैं। *वि०* हजार रुपये का नोट।

**हजारी** *वि०* एक बड़ी जाति का गेंदा का फूल, जिसमें बहुत अधिक पँखुड़ियाँ रहती हैं; हजार से सम्बन्ध रखने वाला।

**हजूर** *पु०* अधिकारियों या बड़े व्यक्तियों के लिए सम्बोधन शब्द। *अव्य०* उपस्थिति-बोधक शब्द; सम्मुख, सामने।

**हजूरी** *स्त्री०* दरबारी सेवक; हाजिर रहने का भाव।

**हज्ज** *पु०* [अ०] मक्के की यात्रा।

**हटई** *स्त्री०* काठ या धातु का बना छोटा नपना, जिसमें बारह मनके से से एक सेर तक अन्न अँट सके।

**हटकल** *सक०* हिचकना। हटने की इच्छा रखना।

**हटका** *पु०* कैंची के रूप में बाँधा गया दो खम्भा, जिस पर फूस के मकान की छत का भार रहता है।

**हटल** *अक०* खिसकना, टल जाना; दुर्बल होना; किसी स्थान से अन्यत्र चला जाना; झगड़े या विवाद में हार मानकर मौन हो जाना।

**हटहट** *पु०* परेशानी, कठिनाई।

**हटावल** *सक०* तकरार करने वालों को शान्त करा देना; खिसकाना; एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

**हठ** *पु०* आग्रह, जिद्द, किसी प्रश्न को लेकर अड़ने का काम। *वि०* हठी।

**हठी** *वि०* जिद्दी।

**हठीनाई** *स्त्री०* एक देवी।

**हड्डा** *पु०* बड़ी जाति का एक विषैला कीड़ा, जिसके टूँडे गड़ने से जलन और सूजन पैदा होती है, हाड़ा।

**हड्डी** *स्त्री०* जीवों की देह की मूल कड़ी वस्तु, जिससे शरीर का ढाँचा बनता है।

**हड़कंप** *पु०* तहलका, हलचल, आतंक।

**हड़खाड़** *पु०* हाड़ में दर्द की बीमारी।

**हड़गर** *वि०* जिसकी हड्डियाँ मोटी हों।

**हड़जोड़वा** *पु०* एक प्रकार की घास, जो अनेक टुकड़ों से जुड़ी रहती है।

**हड़परी** *स्त्री०* किसी स्वजन की हत्या करने के कारण हत्यारा परिवार या गाँव में भोजन नहीं करने की प्रतिज्ञा।

**हड़पल** *सक०* किसी की चीज या धन लेकर उसे न लौटाना। अनुचित ढंग से पराई वस्तु को हथिया लेना।

**हड़बड़** *पु०* उतावलापन या जल्दबाजी-सूचक गतिविधि।

**हड़बड़ाइल** *अक०* व्याकुल होना। शीघ्रता करने के लिए व्यग्र होना।

**हड़बड़ावल** *सक०* शीघ्रता करने का आदेश देना या आग्रह करना।

**हड़बड़िया** *वि०* काम को व्यग्रता से करने वाला।

**हड़बड़ी** *स्त्री०* शीघ्रता, आतुरता; जल्द बाजी। *उदा०* 'हड़बड़ी में बिआह कनपटी पर सेनुर'।

**हड़बोम** *वि०* उजड्ड, उद्दण्ड, लठमार।

**हड़वर** *पु०* वह खेत-मजदूर, जो पूरे वर्ष के लिए नियुक्त रहता है।

**हड़सिहरी** *स्त्री०* जड़ैया। जाड़ा देकर आने वाला बुखार।

**हड़हड़** *पु०* रेलगाड़ी, आँधी आदि के चलने से उत्पन्न आवाज।

**हड़हड़ावल** *सक०* किसी वस्तु को हिलाकर-डुलाकर हड़हड़ की आवाज निकालना; डाँटकर या बोलकर भय उत्पन्न करना।

**हड़हवा** *वि०* भयंकर।

**हड़ाह** *वि०* उद्दण्ड, उजड्ड, लण्ठ।

**हड़ोरल** *सक०* किसी तरल पदार्थ को हाथ या लकड़ी से बार-बार हिलाना, मथना।

**हतना** *वि०* इतना।

**हतल** *सक०* मार डालना, वध करना। *अक०* पेट खाली रहने के कारण पीठ में दब जाना।

**हतवन** *क्रि०वि०* इतना बड़ा (हाथ से संकेत से बोला जाता है)।

**हतवावल** *सक०* वध कराना। मरवाना।
**हतहत** *वि०* इतना बड़ा।
**हतावल** *सक०* पेट को पीठ की तरफ खींचकर गड्ढा जैसा बना देना।
**हतिना** *क्रि०वि०* इतना।
**हती** *क्रि०वि०* इतना हाथ के संकेत के साथ बोला जाता है।
**हतुना** दे० 'हतिना'।
**हतेया** *पु०* मार डालने का काम; निर्दोष वध का पाप।
**हतेयार** *पु०* वध या हत्या करने वाला; खूनी, निर्दयी, हत्यारा।
**हत्था** *पु०* नर हाथी। घौद में केलों का समूह।
**हथ** *पु०* हाथ का संक्षिप्त रूप। [सं०] चोट; वध; आघात। **-उधार** *पु०* बिना लिखा-पढ़ी के किसी को उधार देना। **-कंडा** *पु०* षडयंत्र, चतुराई की चाल।
**हथउड़ी** दे० 'हथौड़ा'।
**हथकर्टा** *वि०* एक हाथ से दूसरे हाथ में दी गई वस्तु।
**हथकड़ी** *स्त्री०* कैदी के हाथ में पहनाने की लोहे की कड़ी।
**हथड़ा** *पु०* चक्की में ऊपर का हाथ के आकार का लगा काठ, जिसे पकड़ कर चक्की घुमाई जाती है।
**हथफेर** *पु०* थोड़े दिनों के लिए दिया जाने वाला बेसूदी ऋण।
**हथरखी** *स्त्री०* फूल या गंगाजल आदि लाने का पात्र, जो हाथ में लटकाया जाता है।
**हथलपक** *वि०* आसानी से उठाकर ले जाने योग्य; दूसरों की चीज बिना पूछे हाथ में लेकर चल देने वाला।
**हथवँसल** *पु०* दूसरे की किसी वस्तु को चोरी या प्रपंच से ले लेना।
**हथसंकर** *पु०* हथेली के पीछे पहनने का एक आभूषण।
**हथहँड़** *पु०* टोंटीदार जल-पात्र।
**हथिआवल** *सक०* दूसरे का धन धोखे से ले लेना। *पर्या०* 'हथवँसल'।
**हथिनी** *स्त्री०* मादा हाथी, हथुनी।
**हथिया** *पु०* हिन्दू पंचांग का एक नक्षत्र; हस्त। *उदा०* 'हथिया बरसे चितरा मँड़राय, घर बइठे किसान अगराय'।
**हथियार** *पु०* मिस्त्रियों के काम करने का औजार; युद्ध में प्रयुक्त भाला, तलवार; काम करने का उपकरण। *उदा०* 'हथियार हाथे के'।
**हथिवान** दे० 'हथिवाह'।
**हथिवाह** *पु०* महावत, फीलवान; हाथी हाँकने वाला।
**हथिसार** *पु०* हाथी बाँधने का घर।
**हथेली** *स्त्री०* [सं० हस्ततलं] करतल।
**हथोड़ा** *पु०* दे० 'हथौड़ा'।
**हथोरी** *स्त्री०* दे० 'हथेली'।
**हथौटी** *स्त्री०* हस्त कौशल। *वि०* मौखिक लेन-देन।
**हथौड़ा** *पु०* काँटा आदि ठोकने का एक बड़ा औजार। *स्त्री०* हथौड़ी।
**हद** *स्त्री०* [अ० हद्द] मर्यादा, सीमा; किसी वस्तु के आकार-प्रकार की अन्तिम सीमा।
**हदका** *पु०* धक्का।
**हदर-हदर** *क्रि०वि०* पानी चूने या पानी के कारण दही के हिलने-डुलने की स्थिति।
**हदरल** *अक०* किसी अप्रिय स्थिति या घटना के पूर्व ही भयभीत होना।
**हदरा** *पु०* ताजिया में कूदने-फाँदने का काम। **-कुटल** *मुहा०* अति उत्साहित होकर दौड़-धूप करना।
**हदास** *पु०* भय, दहशत।

**हनल** *सक०* जोर जोर से मारना-पीटना; प्रहार करना। *उदा०* 'हनला प हनिए, दोस पाप न गनिए'।

**हनहनाइल** *अक०* जोर-जोर से बोलना।

**हनुमान** *पु०* अंजनी के पुत्र, राम का सेवक, महावीर, लंगूर। *उदा०* 'जय हनुमान ज्ञान गुण सागर'।

**हनुमाना** *पु०* लम्बी पूँछ और काले मुँह वाले बन्दरों की एक जाति।

**हनू** *अव्य०* किसी बात की स्वीकृति में कही गई बात; दूसरे से कहा गया वाक्यांश।

**हप** *पु०* दोनों होठों को फुर्ती से दबाने पर उत्पन्न शब्द।

**हपसल** *अक०* किसी वस्तु का भीतर घुसना।

**हपसावल** *सक०* भीतर घुसाना।

**हप्ता** *पु०* सात दिनों की अवधि, सप्ताह।

**हँफनी** *स्त्री०* हाँफने का कार्य या बीमारी।

**हफर-हफर** *पु०* हाँफने की मुँह से निकली ध्वनि।

**हफीम** *स्त्री०* अफीम।

**हब** *पु०* किसी काम को जल्दबाजी में करने की स्थिति।

**हबक** *स्त्री०* दाँत से काटने का काम।

**हबकल** *सक०* दाँत से जोरों से काटना।

**हबका** *पु०* दाँत से जोर से काटने की स्थिति या क्रिया।

**हब कुनिया** *पु०* मुँह नीचे और पीठ ऊपर करके गिरने की स्थिति।

**हब-गब** *पु०* बातचीत, प्रेमालाप।

**हब्बा-डब्बा** *पु०* बच्चों का एक रोग, जिसमें साँस तेज चलती है।

**हम** *सर्व०* 'मैं' का बहुवचन रूप। *उदा०* 'हम चराईं दिल्ली हमरा के चरावे पिल्ली'।

**हम** *अव्य०* [फा०] समान, एक-सा; संग, साथ; आपस में। **-उमर** *वि०* समवयस्क। **-जोली** *वि०* एक ही उम्र का; बचपन में एक साथ खेला हुआ। **-दरद** *वि०* सहानुभूति रखने वाला। **-पेशा** *वि०* सहव्यवसायी। **-बिस्तरी** *स्त्री०* सह-शयन, सम्भोग। **-राह** *वि०* साथ चलने वाला।

**हमन** *सर्व०* हम।

**हमरा** *सर्व०* हमको, हमको भी। *उदा०* 'हमरा माथ में केतना बार'।

**हमला** *पु०* [अ०] धावा, आक्रमण।

**हमार** *सर्व०* हमारा।

**हमेल** *स्त्री०* सोने-चाँदी की माला।

**हमेसा** *अव्य०* [फा०] सदैव।

**हय** *पु०* [सं०] घोड़ा।

**हया** *स्त्री०* लज्जा, शर्म।

**हर** *पु०* खेत जोतने का एक उपकरण; प्रत्येक; हल। *उदा०* 'हर के मारल हेंगा विसराम'।

**हरइया** *स्त्री०* माला या कण्ठे के दो मनकों के बीच दी जाने वाली कपड़े की गोटी।

**हरई** *स्त्री०* हल्कापन।

**हरउती** *स्त्री०* बाँस का एक भेद, यह लम्बा और मोटा होता है।

**हरए** *अव्य०* धीरे-धीरे।

**हरक** *पु०* [सं०] चोर, ठग।

**हरकत** *स्त्री०* [अ०] हिलना-डुलना, गति, चेष्टा।

**हरकल** *अक०* भयभीत होना; आतंकित होना; सचेत होना; डरकर भागना। *उदा०* 'हरकल मानेला परिकल ना माने'।

**हरकारा** *पु०* डाक ढोने वाला; दूत; डाकिया।

**हरकावल** *सक०* डराकर भगा देना।

**हरकाह** *वि०* डरकर भागने वाला (बैल)।

**हरख** *पु०* खुश, आनन्द, हर्ष।

**हरखड़ा** *पु०* बिना बैल का हल।
**हरखाँचड़** *पु०* दोगला, हरामी।
**हरखाइल** *अक०* खुश होना। आनन्दित होना।
**हरखाड़** *पु०* हड्डियों का दर्द; गठिया का दर्द।
**हरखित** *वि०* आनन्दित; प्रसन्न; हर्षित।
**हरगिज** *अव्य०* कदापि।
**हरगेंड़ा** *पु०* लकड़ी का वह टुकड़ा, जो हल के लिए काटा जाता है।
**हरछुटाव** *पु०* उस दिन की हलवाही की समाप्ति।
**हरछूटन** *पु०* दे० 'हरछुटाव'।
**हरज** *पु०* हानि, नुकसान, हर्ज।
**हरजा** *पु०* हानि, घाटा; हैजा।
**हरजाई** *स्त्री०* कुलटा नारी, व्यभिचारिणी।
**हरजाना** *पु०* क्षतिपूर्ति।
**हरठ** *वि०* दुराग्रही, दुष्ट।
**हथियार** *पु०* औजार।
**हरना** *पु०* हानि, नुकसान।
**हरनाल** *पु०* एक विषैला खनिज पदार्थ, जो पीले रंग का होता है; हरिनाल; हड़ताल।
**हरदम** *अव्य०* हमेशा, सतत। *उदा०* 'हरदम ऊँखे मुहें राह'।
**हरदा** *पु०* गेहूँ का एक रोग, जो गेहूँ के पौधे को पीला कर देता है।
**हरदी** *स्त्री०* एक मसाला, जो पीसने पर पीला हो जाता है, हल्दी। *उदा०* 'हरदी जरदी ना तेजे'।
**हरद्वार** *पु०* उत्तर भारत का एक तीर्थ, जहाँ गंगा पर्वत से समतल भूमि में आती हैं।
**हरनठल** *अक०* फल-फूल का लगना, बन्द हो जाना; मवेशियों का बच्चा देना बन्द होना।
**हरना** *पु०* नर हरिण।
**हरनाकुस** *पु०* एक प्रसिद्ध दैत्य; प्रह्लाद का पिता, हिरण्यकशिपु। *वि०* कष्ट पहुँचाने वाला दुष्ट व्यक्ति।
**हरना-चिकार** *सं०यौ०* जोरों से चिल्लाकर रोने का काम; परिवार में प्रिय विछोह या अन्त, अति कष्टदायक स्थिति; जोर-जोर से सामूहिक क्रन्दन।
**हरनाधा** *पु०* हल से बैलों को जोड़ने की रस्सी।
**हरनाम** *पु०* भगवान् का गुणगान, नर्तकों द्वारा भगवान् का यशोगान कराने की प्रथा।
**हरफ** *पु०* अक्षर।
**हरफरौरी** *स्त्री०* एक प्रकार का खट्टा फल; अनावृष्टि में इन्द्र से पानी माँगने के समय स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत।
**हरबर** *स्त्री०* हड़बड़।
**हरबा** *पु०* हथियार, औजार, शस्त्र।
**हरबाही** *स्त्री०* वह खेत, जहाँ हल जोता जा रहा हो।
**हरबोलिया** *पु०* कीर्तनिया; नाच का विदूषक।
**हरम** *पु०* [अ०] घेरा; अन्तःपुर; विवाहिता स्त्री; रखेली।
**हरमजदगी** *स्त्री०* हरामजादापन, दुष्टता, शरारत।
**हरमार** *पु०* एक से दूसरे खेत में हल ले जाने में उपस्थित बाधा।
**हरमुढाह** *वि०* उद्दण्ड, उजड्डु।
**हरल** *सक०* छीन लेना, चुरा लेना; विमुक्त करना; दुःख दूर करना।
**हरवँत** *पु०* वर्ष में प्रथम-प्रथम खेत को जोतने का काम।
**हरवाही** *स्त्री०* हल चलाने का कार्य; वह खेत, जहाँ हल जोता जा रहा हो।

**हरसइन** *पु०* बबूल (पलामू)।
**हरसिंगार** *पु०* एक प्रकार का सफेद और छोटा फूल।
**हर-हर** *वि०* अत्यन्त तीखा, नीम; शिवलिंग पर जल चढ़ाने के समय बोला जाने वाला शब्द।
**हर-हर खर-खर** *वि०* जो शान्तिदायी नहीं हो।
**हरहा** *पु०* हल में जुतने वाला बैल। *वि०* भागने वाला, डरपोक।
**हरही** *स्त्री०* जंगली गाय; दुष्ट स्त्री। *उदा०* 'हरही गाव बीच खेत खाय'।
**हराई** *स्त्री०* जमींदार के खेत में रैयतों द्वारा की गई मुफ्त जुताई (शाल); हल से खींची गई गहरी रेखा।
**हराठ** *वि०* परिश्रम या असुविधा सहने वाला।
**हरान** *वि०* चकित, भौचक्का, क्लान्त, परेशान।
**हराम** *वि०* त्याज्य, निषिद्ध, विधिविरुद्ध।
**हरामजादा** *पु०* दुष्ट, बदमाश, वर्णसंकर। *स्त्री०* हरामजादी।
**हरामी** *वि०* दुष्ट, दोगला, बदमाश।
**हराहर** *वि०* अत्यन्त तीता। *पु०* हलाहल।
**हरावल** *सक०* लड़ाई या किसी प्रतिद्वन्द्विता में विपक्षी को हराना; पराजित करना।
**हराहरी** *क्रि०वि०* पूर्णत: बेदाग; नि:संकोच; सरासर।
**हरि** *पु०* भगवान्, स्वामी, पति, प्रियतम।
**हरिअर** *वि०* हरा, जो सूखा न हो, जिस पर उदासी न हो।
**हरिअर-कलेहरा** *वि०* अत्यन्त हरा; जो काला-सा नजर आवे।
**हरिअरका** *वि०* हरे रंग का। *स्त्री०* हरिअरकी।
**हरिअरा** *पु०* मेवा को दूध में औंटने से बना पेय पदार्थ, जो प्राय: प्रसूता को दिया जाता है।
**हरिअराइल** *अक०* हरा होना; शरीर पर मांस आने लगना; मोटा होने लगना।
**हरिअरी** *स्त्री०* हरियाली; हरा चारा; पुत्र-विवाह के बाद कन्या पक्ष को आम, कटहल आदि फल भेजने की सौगात; मुख पर प्रसन्नता या स्वास्थ्य-वृद्धि के लक्षण।
**हरिआठल** *सक०* हरिस में ठोकना।
**हरिकीर्तन** *पु०* भगवान् या उनके अवतारों, शिव आदि का यशोगान।
**हरिचंद** *पु०* सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र।
**हरिजन** *पु०* भगवान् का भक्त; शूद्र।
**हरिनकेर** *पु०* एक महीन धानविशेष।
**हरिना** *पु०* नर हरिण। *उदा०* 'हरिना के जामिन सूअर'।
**हरिनी** *स्त्री०* मादा हरिण।
**हरिस** *पु०* हल का एक हिस्सा।
**हरिहर-क्षेत्र** *पु०* सोनपुर स्टेशन के निकट गंगा और गण्डक के संगम पर स्थित एक तीर्थ।
**हरी** *स्त्री०* हल के आकार का काठ का एक सामान, जिसमें कैदी का पैर फँसाकर उसे बन्द कर दिया जाता है; बरधानेयोग्य गाय।
**हरूआ** *वि०* बदमाश, पाजी।
**हरे** *अव्य०* धीरे, हौले। **-हरये** *अव्य०* धीरे-धीरे। **-हरे** *अव्य०* धीरे-धीरे।
**हरेठा** *पु०* अरहर का डण्ठल।
**हरेया** *वि०* हल खींचने वाला बैल।
**हर्रे** *पु०* एक रेचक फल, हरीतकी।
**हरौरी** *स्त्री०* हल जोतने के लिए मजदूरों को दी गई मजदूरी।
**हलका** *पु०* किसी काम के लिए बनाया गया कुछ गाँवों का समूह। *वि०* हल्का।

**हलकांत** *पु०* जिस जगह पर पैदल चलकर पार करने लायक पानी हो।

**हलकोरा** *पु०* झोंका रूप में, लहर।

**हलखोर** *पु०* पाखाना साफ करने वाली जातिविशेष; हलालखोर।

**हलगर** *वि०* नमी से परिपूर्ण।

**हलचल** *पु०* जनता में फैली घबराहट, शोर-गुल, खलबली; आन्दोलन।

**हलतलबी** *स्त्री०* जल्दीबाजी।

**हलफ** *पु०* सौगन्ध, सत्यापन, शपथपूर्वक बयान।

**हलफा** *वि०* जोतने से अति मुलायम धूलिमय खेत।

**हलबल** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक। *सं०* शीघ्रता, हड़बड़ी।

**हलब्बी** *वि०* मोटा (शीशा); बढ़िया; आईना।

**हलर-हलर** *स्त्री०* हवा के चलने से पत्तों के हिलने का शब्द; नदी-प्रवाह ध्वनि।

**हलरा** *पु०* लहर, तरंग।

**हलल** *अक०* मिट्टी में गड़ जाना, कीचड़ में फँस जाना, घुस जाना।

**हलवाह** *पु०* हल चलाने वाला, हलवाह।

**हलसावल** *सक०* गहरा हलाना, गड़ाना; घुसेड़ना।

**हलहलावल** *सक०* जोरों से हिलाकर हलाना, गाड़ना।

**हलाई** *स्त्री०* हलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**हलाल** *पु०* धर्मानुकूल जबह करने का काम।

**हलावल** *सक०* मिट्टी या कीचड़ आदि में किसी वस्तु को गाड़ना।

**हलुआ** *पु०* घृत, चीनी, आटे से बना एक भोज्य पदार्थ विशेष; मोहनभोग।

**हलुआई** *पु०* मिठाई बनाने और बेचने वाली एक जाति। *स्त्री०* हलुआइन।

**हलुक** *वि०* वजन में जो भरी न हो; जो गम्भीर न हो।

**हलुकदामा** *वि०* कम कीमत का।

**हलोरल** *सक०* अनाज के डण्ठलों को बटोर कर दाना साफ करना।

**हलोरवावल** *सक०* हलोरने का काम दूसरे से कराना।

**हलोरा** *पु०* हलोरने का भाव।

**हल्ला** *पु०* शोरगुल, कोलाहल, चिल्लाहट ललकारा।

**हवन** *पु०* किसी देवता का मंत्र पढ़कर घृत, तिल आदि वस्तु अग्नि में डालना।

**हवलदार** *पु०* सिपाही का सरदार।

**हवला** *वि०* हलका।

**हवा** *स्त्री०* वायु, अपान वायु; समीर। **-पानी** *पु०* आबहवा।

**हवाई** *वि०* हवा सम्बन्धी जहाज, वायुयान।

**हवागाड़ी** *स्त्री०* मोटरकार।

**हवादार** *वि०* यथेष्ट खिड़कीयुक्त मकान, जिसमें हवा आ-जा सके।

**हवाल** *पु०* वृत्तान्त, समाचार, खबर; हालत, दशा; परिणाम।

**हवालदार** *पु०* हवलदार।

**हवाला** *पु०* सुपुर्दगी, सौंपने की क्रिया; पता-ठिकाना।

**हवालात** *स्त्री०* [अ०] पहरे, चौकी में रखना, हिरासत।

**हवालाती** *वि० पु०* विचाराधीन कैदी।

**हसरत** *स्त्री०* [अ०] खेद, अप्राप्ति का दु:ख; चाह, अरमान, लालसा।

**हसीन** *वि०* [अ०] हुस्न वाला; प्यारा; लुभावना।

**हहरल** *अक०* किसी वस्तु की प्राप्ति की आशा से निराश होना; चकपकाना; डर से काँपना।

**हहास** *पु०* तेज हवा चलने का शब्द; चिड़िया के झपट्टे से निकली ध्वनि।
**हहाहू** *पु०* साँड़ को पुकारने का शब्द।
**हाँ** *अव्य०* स्वीकृति, निश्चय, आत्मसन्तोष, स्मृति का सूचक शब्द। *स्त्री०* स्वीकृति देने 'हाँ' कहने का कार्य।
**हाँक** *पु०* [सं० हुङ्कारः] किसी को बुलाने के लिए जोर से पुकारने का काम।
**हाँकल** *सक०* मवेशियों को बोलकर या मारकर आगे बढ़ाना; डींगभरी बातें करना; हवा के लिए पंखा आदि हिलाना।
**हाँका** *पु०* शिकार के लिए बुलाहट ललकार; शिकार में हल्लाकर जानवर को एक तरफ कर देने का कार्य।
**हाँचल** *सक०* चोट मारना।
**हाँफल** *अक०* श्रम के कारण जोर-जोर से साँस लेना; खाँसी से तीव्र गति से साँस लेना; हाँफना।
**हाफुर** *पु०* स्वाँस।
**हाँव-हाँव** *पु०* कुत्ते की बोली; अनावश्यक हल्ला-गुल्ला।
**हाँस** *पु०* बतख जाति का एक पक्षी। *स्त्री०* हाँसिन, हंस।
**हाउ** *पु०*-हौवा, *वि०* खाने में आतुर।
**हाउ-हाउ** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक, हड़बड़ी के साथ।
**हाकिम** *पु०* शासक, ऑफिसर, हुकूमत करने वाला। *उदा०* 'हाकिम टरे हुकुम नहिं टरे'।
**हाजत** *स्त्री०* हिरासत, गिरफ्तार व्यक्तियों को थोड़ी देर रखने की जगह।
**हाजिर** *वि०* उपस्थित, मौजूद, विद्यमान।
**हाजा** *पु०* जो हज कर आया हो।
**हाड़** *पु०* हड्डी, अस्थि; कुलीनता।
**हाड़ा** *पु०* दे० 'हड्डा'।
**हाता** *पु०* घेरा हुआ स्थान। किसी खेत या बाग को घेरने के लिए उसके चारों तरफ खोदी गई पतली खाई।
**हाथ** *पु०* [सं० हस्तः] बाहु, भुजा; बाहु मध्य की गाँठ से अँगुली की छोर तक का; अंग। *उदा०* 'हाथ सुमिरनी बगल कतरनी'।
**हाथा** *पु०* नर हाथी; घौद में केले के फल का वह समूह, जो एक जगह सटा हुआ रहता है; हत्था; खेत सींचने का एक उपकरण।
**हाथापाई** *स्त्री०* उठापटक।
**हाथा बाही** *स्त्री० यौ०* झगड़े में एक-दूसरे को पकड़ने का कार्य।
**हाथी** *पु०* सूँड़ के रूप में पैरों तक नाक वाला विशाल पशु विशेष, हस्ती। *उदा०* 'हाथी से हाथी बाझेला'।
**हाथे-पाथे** *वि०* मिलजुलकर।
**हाथे-हाथे** *क्रि०वि०* एक हाथ से दूसरे हाथ तक और इसी प्रकार आगे। शीघ्रतापूर्वक।
**हान** *पु०* घाटा, नुकसान, हानि।
**हाफिज** *वि०* [अ०] रक्षक (खुदा-हाफिज, ईश्वर रक्षक है) *पु०* वह व्यक्ति, जिसे पूरी कुरान कण्ठ हो।
**हामिद** *वि०* [अ०] तारीफ, ईश-गुणगान।
**हामी** *स्त्री०* स्वीकृति।
**हाय** *अव्य०* [सं० हा] पीड़ा होने पर निकलने वाला शब्द।
**हायन** *पु०* [सं०] वर्ष, संवत्सर।
**हायल** *सक०* किसी वस्तु को घेरकर अपने लिए रखना।
**हार** *स्त्री०* पराजय; सोना, चाँदी, मोतियों की माला। प्रत्ययविशेष, जिसका अर्थ रखनेवाला होता है। *उदा०* 'हारे त हूरे जीते त थूरे'।

**हारसिन** दे० 'हिरसिन'।
**हारा बाजी** *स्त्री०* प्रतिद्वन्द्विता, बाजी रखकर किया गया मुकाबला।
**हारिल** *पु०* हरे रंग का पक्षीविशेष, जो अपने चंगुल में लकड़ी का टुकड़ा पकड़े रहता है।
**हाल** *पु०* दशा; समाचार; नमी; वृत्तान्त। पहिए के चारों तरफ चढ़ाया जाने वाला लोहे या रबर का बन्द; दालान।
**हॉल** *पु०* [अं०] बड़ा कमरा।
**हालत** *स्त्री०* दशा, अवस्था आर्थिक स्थिति।
**हाला-हाली** *स्त्री०* बार, मर्तबा। *क्रि०वि०* जल्दी।
**हाली-हाली** *क्रि०वि०* शीघ्रतापूर्वक।
**हाव-भाव** *पु०* स्त्रियों की आकर्षक चेष्टाएँ। नाज-नखरा।
**हासिया** *पु०* किनारा।
**हासिल** *वि०* उपलब्ध, प्राप्त। *पु०* खेत की फसल।
**हाहर** *पु०* जोरों से हँसने का शब्द।
**हाहा** *पु०* [सं०] एक गन्धर्व; एक बहुत बड़ी संख्या। *अव्य* आश्चर्य, शोक का सूचक शब्द। **-कार** *पु०* रोने की ध्वनि।
**हाहा** *पु०* खुलकर हँसने की आवाज; गिड़गिड़ाने की आवाज। **-ठीठी** *स्त्री०* हँसी-मजाक। **-हीही** दे० 'हाहा-ठीठी'। **-हूहू** *पु०* हँसी-ठट्टा।
**हाहाइल** *स्त्री०* गाड़ी, हवाईजहाज आदि के चलने से ध्वनि पैदा होना।
**हाही** *स्त्री०* कुछ पाने के लिए सदैव व्यग्रता की स्थिति।
**हिंक-पुराँव** *वि० पु०* इच्छाभर, मनभर।
**हिंछघर** *वि०* सदा अशुभ सोचकर काम से भागने वाला; आलसी।
**हिंछा** *पु०* इच्छा।
**हिंज-मिंज** *पु०* छिन्न-भिन्न; बाधा।
**हिंजड़ा** *पु०* नपुंसक; नामर्द। *उदा०* 'हिंजड़ा कमावे टिकुली में गँवावे'।
**हिंड़ोला** *पु०* झूला; पालना; एक राग-विशेष।
**हिराँन** *पु०* मवेशियों के विश्राम करने की जगह।
**हिआव** *पु०* हिम्मत; साहस; जीवट।
**हिकमत** *पु०* युक्ति, तदवीर, चतुर। *वि०* हिकमती।
**हिकवटल** *अक०* मनभर उपयोग करना।
**हिकारत** *पु०* तुच्छ या उपेक्षा की दृष्टि से देखने का भाव।
**हिक्का** *पु०* छाती का उभड़ा हुआ मांस।
**हिगरल** *अक०* अलग होना।
**हिगरावल** *सक०* अलग करना।
**हिचकल** *अक०* किसी काम को करने में आगा-पीछा करना।
**हिचकिचाइल** *अक०* दे० 'हिचकल'।
**हिचकी** *स्त्री०* उदर की वायु का वेग के साथ कण्ठ से निकलना; एक प्रकार का रोग।
**हिच्छा** *पु०* इच्छा, मन।
**हित** *पु०* भला चाहने वाला सम्बन्धी, मित्र। *उदा०* 'हित घर डाइन खाले'।
**हिदाइत** *पु०* आदेश, ताकीद, निर्देश। [अ०] हिदायत।
**हिन** *सर्व०* ये।
**हिनाई** *स्त्री०* छोटापन, हीनता, शिकायत।
**हिनुआ** *वि०* हिन्दू से सम्बन्धित; हिन्दू जाति के अन्तर्गत; हिन्दू का।
**हिनू** *पु०* हिन्दू [फा०] *उदा०* 'हिनू बढ़े नेते'।
**हिनूई** *वि०* हिन्दू या हिन्दुओं से सम्बन्धित।
**हिन्दी** *स्त्री०* भारत की प्रमुख भाषा।

**हिन्दुस्तान** *पु०* हिन्दुओं का निवास-स्थान, भारतवर्ष।

**हिन्दुस्तानी** *स्त्री०* हिन्दुस्तान सम्बन्धी; हिन्दुस्तान का निवासी।

**हिन्दू** *पु०* हिन्द का निवासी, भारतीय।

**हिमाले** *पु०* भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वतमाला, हिमालय।

**हियरा** *पु०* हृदय, दिल, छाती।

**हिया** *पु०* हृदय, दिल।

**हिरदावल** *पु०* घोड़े की छाती की भौंरी।

**हिरदेया, हिरदै** *पु०* मन, दिल, हृदय।

**हिरल** *अक०* किसी स्थान पर मवेशियों का थोड़ी देर तक ठहरकर विश्राम करना; स्वार्थ से किसी के निकट सदा रहना।

**हिरसिन** *स्त्री०* ह्रस्व इकार का चिह्न।

**हिरात** *पु०* मवेशियों के धूप में विश्राम करने की जगह।

**हिरामन** *पु०* लाल रंग का सुग्गा; लोक-कथाओं में एक सुग्गा, जो पण्डित माना गया है।

**हिरावल** *सक०* ठहराना (मवेशियों का) हिरल का सक० रूप।

**हिरिस** *पु०* अतृप्त इच्छा, तृष्णा, लोभ।

**हिलकोरल** *अक०* लहराना, तरंगित होना।

**हिलकोरा** *पु०* लहर, तरंग, पानी का झोंका।

**हिल-डोल** *पु०* हिलने डोलने का भाव।

**हिलल** *अक०* काँपना, डोलना, स्थिर नहीं रहना।

**हिलवावल** *सक०* हिलाने का काम दूसरे से कराना।

**हिलसा** *स्त्री०* एक प्रकार की मछली।

**हिलावल** *अक०* कँपाना, डोलाना, हिलाना।

**हिलोर** *स्त्री०* लहर, तरंग, हलकोरा।

**हिसका** *पु०* स्पर्धा, देखादेखी से उत्पन्न इच्छा।

**हिसकार** *वि०* ईर्ष्यालु, डाही।

**हिसाब** *पु०* [अ०] गिनती, गणना; लेन-देन, क्रय-विक्रय का ब्योरा; लेखा। *उदा०* 'हिसाब लेब कि बनिया डंडब'। **-किताब** *पु०* बही-खाता।

**हिसाबी** *वि०* हिसाब जानने वाला; हिसाब से चलने वाला।

**हिस्टीरिया** *पु०* [अं०] एक मूर्च्छा रोग, जो प्रायः औरतों को होता है।

**हिस्सा** *पु०* भाग, अंश, खण्ड; विभाजन से प्राप्त प्रत्येक का अंश।

**हिहवाँ** *अव्य०* इसी जगह पर, यहीं।

**हिहाँ** *अव्य०* यहाँ।

**हींग** *स्त्री०* एक पौधाविशेष, जिसका गोंद तीव्र गन्ध वाला होता है और वह दवा तथा मसाले के काम में आता है।

**हीक** *पु०* दिल, मन, हृदय।

**हीकाबोर** *क्रि०वि०* इच्छाभर, मनभर।

**हीङाइन** *वि०* हींग-सी गन्ध वाला।

**हीड़ल** *पु०* पानी को पैरों से कन्दा करना; हाथ लगाकर पानी में खोजना।

**हीन** *वि०* देखने में अपेक्षाकृत तुच्छ या ओछा; दुबला-पतला।

**हीमत** *स्त्री०* साहस, पराक्रम।

**हीर** *स्त्री०* किसी वस्तु का भीतरी हिस्सा, सार भाग।

**हीरा** *पु०* एक चमकीला और बहुमूल्य रत्न।

**हीरा-रोसी** *स्त्री०* प्रतिद्वन्द्विता की भावना।

**हीलल** दे० 'हिलल'।

**हीला** *पु०* बहाना, हवाला, जिम्मा, आश्रय, सिलसिला।

**हीं** *अव्य०* निश्चयबोधक अव्यय।

**हुँआँ-हुँआँ** *पु०* गीदड़ की बोली।

**हुँआई** *स्त्री०* हूँआ-हुँआ बोलने की अदम्य इच्छा। **-आवल** *मुहा०* निषेध के बावजूद बोलने या करने की इच्छा।

**हुँकारी** *स्त्री०* किसी बात की स्वीकृति या सहमति या 'हुँ' का काम।

**हुंडा** *पु०* खेत को साल के लिए निश्चित अन्न-राशि की दर पर रैयतों को देने की प्रथा।

**हुँड़रहो** *पु०* भेड़ियों का उत्पात; हल्ला-गुल्ला।

**हुँड़ार** *पु०* भेड़िया। *उदा०* 'हुँड़ार चिन्हें बाभन के पूत'।

**हुक** *पु०* चौकठ में लगाने की टेढ़ी की हुई लोहे की छड़।

**हुक-हुकी** *स्त्री०* हृदय की धड़कन; अन्तिम साँस चलना। **-चलल** *मुहा०* मृत्यु के अति निकट होना।

**हुकाइल** *सक०* पराजित होना; घाटे में डाला जाना; बुरी तरह पीटा जाना।

**हुकुम** *पु०* आदेश, आज्ञा। *वि०* हुकुमी, हुकुम मानने वाला।

**हुकुमत** *स्त्री०* आधिपत्य, आदेश।

**हुकुर-हुकुर** *स्त्री०* किसी तरह स्वाँस का चलना। *उदा०* 'मरतानी ना जियतानी हुकुर हुकुर कर तानी'।

**हुक्का** *पु०* तम्बाकू पीने वाला; नल लगा बर्तन।

**हुच** *पु०* गुल्ली-डण्डा के खेल में वह स्थिति, जब खेल बन्द रहता है।

**हुचकी** *स्त्री०* कमर को आगे की ओर बार-बार चलाने का कार्य। **-पारल** *मुहा०* मनाही के बावजूद किसी कार्य में अनावश्यक ताक-झाँक करना।

**हुचुकल** *अक०* कमर को आगे की ओर झोंकते हुए आगे को चलना।

**हुचुक्का** *स्त्री०* हुचुक कर चलने का काम।

**हुजुक्का** *पु०* जोर, प्रयास।

**हुज्जत** *स्त्री०* व्यर्थ का तर्क, बहाना बनाने का काम। *वि०* हुज्जती।

**हुड** *वि०* बिना परिणाम सोचे दुस्साहसिक काम करने वाला; उजड्ड, उद्दण्ड।

**हुत्था** *पु०* बँधी मुट्ठी के सामने का भाग।

**हुथका** *पु०* बँधी हुई मुट्ठी। हुत्था।

**हुथकावल** *सक०* हुत्थे से खोदना।

**हुथुका** *पु०* मुट्ठी बाँधने पर हाथ की बनी आकृति। *उदा०* 'ताहि चउका बइठले महादेव, गइले अलसाइ हुथुका का मार से गउरा देई देहली जगाइ'।

**हुथुकावल** *सक०* बँधी मुट्ठी से खोदना; ध्यान आकृष्ट करने के लिए मुट्ठी से धीरे से मारना।

**हुदबुदी** *स्त्री०* किसी बात को जानने या कहने की व्यग्रता; घबराहट; उत्सुकता।

**हुद-हुद** *पु०* कठफोरवा।

**हुदा** दे० 'हूदा'।

**हुन** *सर्व०* वे।

**हुनर** *स्त्री०* गुण, कला-कौशल। कारीगरी। *वि०* हुनरी।

**हुमचल** *अक०* किसी काम को करने के लिए प्रयत्न करने को सोचना; ऊपर से चढ़कर जोर-जोर से दबाना।

**हुमचावल** *सक०* किसी वस्तु को दबाकर चाँतकर जोर से दबाना; आजमाने के लिए ताकत लगाना।

**हुमरल** *पु०* जोर से बोलना; वाद्य आदि का गरजना।

**हुरकल** *सक०* किसी को डराने के लिए सिर उठाना; डाँटना।

**हुरका** *पु०* गाँड़ऊ नाच का एक वाद्य-यन्त्र।

**हुरकावल** *सक०* किसी को काम करने के लिए उकसाना; उत्प्रेरित करना; बुरे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पीछे लगाना।
**हुरदंग** *पु०* धूम, कोलाहल; हल्ला, उत्पात।
**हुरपेटल** *सक०* सींग से मारना; डाँटना।
**हुरवावल** *सक०* हूरने का काम दूसरे से कराना।
**हुर-हुर** *पु०* एक प्रकार का छोटा पौधा।
**हुरिआवल** *सक०* हूरे से मारना; किसी कार्य के लिए विवश करना।
**हुरुक** *पु०* आगे की ओर निकला हुआ भाग।
**हुलकावल** *सक०* हाँकना; खदेड़ना, भगा देना।
**हुलकी-मुलकी** *स्त्री०* डराने-धमकाने का काम।
**हुलचुल** *पु०* जल्दीबाजी।
**हुलबुल-हुलबुल** *क्रि०वि०* जल्दीबाजी में।
**हुलबुलावल** *सक०* किसी को कोई काम जल्द कर डालने के लिए जोर देना।
**हुलबुलिया** दे० 'हुलबूली'।
**हुलबूली** *वि०* किसी काम को बिना सोचे जल्दीबाजी से करने वाला।
**हुलसल** *अक०* उल्लसित होना; आनन्दित होना; उमंग में आना।
**हुलसावल** *सक०* आनन्दित करना; प्रसन्न करना।
**हुल्लड़** *पु०* हल्ला, कोलाहल, हुड़दंग, उपद्रव।
**हुलास** *पु०* आनन्द, उमंग, उल्लास।
**हुलिया** *पु०* किसी व्यक्ति के रूप-रंग आदि का विवरण।
**हुहुआइल** *अक०* कँपकँपी के साथ बुखार आना।
**हूँ** *अव्य०* भी, स्वीकृतिसूचक शब्द। पर्या० 'हाँ'।
**हूक** *स्त्री०* झोंके से कलेजे में उठने वाली दर्द; कसक, सन्ताप।
**हूदा** *पु०* योग्य, लायक; सीधा रास्ता; पद, दर्जा, ओहदा; पीड़ा, शूल।
**हूफल** *सक०* किसी कार्य के लिए अपनी इच्छा का बारबार कहना।
**हूब** *स्त्री०* उत्साह, हिम्मत।
**हूबहू** *वि०* ठीक-ठीक, वैसा ही।
**हूबा** *पु०* ताकत, शक्ति।
**हूम** *पु०* धूप, यव, तिल आदि के मिश्रण को प्रज्वलित अग्नि में मंत्र से डालने का कार्य, होम।
**हूमा-हूमी** *स्त्री०* झगड़ा, तकरार का उपक्रम।
**हूम्मा** *पु०* जलप्लावन; जोरों की बाढ़।
**हूरल** *सक०* खम्भे आदि को स्थिर करने के लिए लाठी के हूरा से मिट्टी को दबाना; ठूँस ठूँस कर खाना।
**हूरवँठल** *सक०* किसी को हूरे से मारना।
**हूरा** *पु०* लाठी का छोर।
**हूल** *पु०* कै, उलटी की प्रवृत्ति।
**हूलक** *सक०* पीछे ठेलना; किसी को कोई काम करने के लिए प्रेरित करना।
**हूलल** *अक०* ठेलना, धकेलना।
**हेंगही** *स्त्री०* हेंगा में व्यवहृत रस्सी।
**हेंगा** *पु०* जुते हुए खेत की मिट्टी को बराबर करने का पट्टा।
**हेंगावल** *सक०* खेत जोतने के बाद उसमें हेंगा लगाना; गाली देना या मुँहतोड़ जवाब देना।
**हेंगौनी** *स्त्री०* हेंगा देने का कार्य।
**हें हें** *पु०* धीरे से हँसने का शब्द।
**हेंको-हेंको** *स्त्री०* गदहे की बोली।
**हे** *अव्य०* [सं०] सम्बोधन, पुकारने हेतु प्रयुक्त शब्द। *अक०* थे। *उदा०* 'हे कुकुर तूँ दूबर काहे?'

**हेकड़** *वि०* जबरदस्त; अशिष्ट; उजड्डु; तन्दुरुस्त।
**हेकड़ी** *स्त्री०* अशिष्टता, उजड्डुपन।
**हेठ** *वि०* कम; नीचा। *अव्य०* नीचे।
**हेठी** *स्त्री०* हीनता; अप्रतिष्ठा।
**हेड** *पु०* [अं०] सिर; प्रधान; सर्वोच्च अधिकारी। **-आफिस** *पु०* प्रधान कार्यालय। **-क्वार्टर** *पु०* सदर मुकाम। **-मास्टर** *पु०* प्रधान अध्यापक।
**हेर फेर** *पु०* परिवर्तन; उलट-पुलट की क्रिया; अदल-बदल करने का काम।
**हेरल** *सक०* हेरना, ढूँढ़ना, खोजना।
**हेरवावल** *सक०* पता लगवाना, खोजवाना।
**हेरी** *स्त्री०* पुकार, गुहार, आह्वान।
**हेल** *पु०* परिचय। **-मेल** *पु०* मेल-जोल।
**हैं** *अक०* 'है' का बहुवचन रूप। *अव्य०* आश्चर्यसूचक शब्द।
**हैंडबैग** *पु०* [अं०] छोटा बैग, जिसमें आवश्यक चीजें रखी जाती हैं।
**हैंडिल** *पु०* [अं०] मुठिया, दस्ता।
**है** *अक०* 'होना' का वर्तमानकालिक एकवचन रूप।
**हैजा** *पु०* [अ०] संक्रामक रोग, जिसमें कै-दस्त आते हैं।
**हैरत** *स्त्री०* [अ०] अचम्भा।
**हैरान** *वि०* [अ०] भौचक्का; परेशान।
**होंठ** *पु०* ओष्ठ।
**हो** *अक०* 'होना' का सामान्य भूत, था। *अव्य०* हे।
**होटल** *पु०* [अं०] पैसे देकर खाने, रहने, मनोरंजन की व्यवस्थायुक्त स्थान।
**होड़** *स्त्री०* चढ़ा-ऊपरी; प्रतिस्पर्द्धा, प्रतियोगिता।
**होनहार** *वि०* होने वाला, विकास का आभास देने वाला। *उदा०* 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'।
**होरहा** *पु०* चने का फलदार हरा पौधा; आग पर भूना हुआ दाना।
**होरी** *स्त्री०* दे० 'होली'।
**होलिका** *स्त्री०* होली का त्यौहार; लकड़ी; घास-फूस का ढेर, जिसे फाल्गुन पूर्णिमा की रात में जलाया जाता है।
**होली** *स्त्री०* एक त्यौहार; एक प्रकार का गीत।
**होल्डर** *पु०* [अं०] निब वाली कलम; वह साधन, जहाँ बिजली के बल्ब लटकाए जाते हैं।
**होस** *पु०* [फा०] चेतना, सुधबुध, स्मरण, समझ।
**हौआ** *पु०* भगाऊँ, डरावना चीज, हौवा।
**हौदा** *पु०* हौज।
**हौसला** *पु०* [अं०] सामर्थ्य; साहस, हिम्मत, उत्साह। **-मंद** *वि०* हौसलेवाला, उत्साही।

❑

# परिशिष्ट

- भोजपुरी लोकोक्तियाँ
- मुहावरा
- पहेली
- नारा और कहावत
- पर्यायवाची शब्द
- विलोम शब्द

## परिशिष्ट - I

(अ)

# भोजपुरी लोकोक्तियाँ

"The genius, wit and spirit of a nation are discovered in its proverbs." (Francis Bacon)

(राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता और भावना उसकी लोकोक्तियों के द्वारा अन्वेषित होती है।)

× × × ×

"Proverbs are short sentences drawn from long experiences."
(Don Quixote Cervantes)

लोकोक्तियाँ जन-जन के ज्ञान, अनुभव, सूझ-बूझ के चोखे और चुभते सूत्र हैं। व्यावहारिक जीवन की कुंजी, समाज के अलिखित कानून-संग्रह, मानव-व्यवहार के सिक्के, समष्टि का चातुर्य, लोकमान्य निष्कर्ष तथा अनुभव की बिटिया के रूप में लोकोक्तियाँ कण्ठहार हैं। मुहावरे, कहावत, सुभाषित, रोजमर्रा, पहेली, लौकिक न्याय, सूक्ति, नीति, दृष्टान्त—ये सभी लोकोक्ति के सजातीय हैं। इनका डीएनए एक ही है।

भोजपुरी की सम्पदा उसके बोलचाल वाले रूप में ही निहित है। जनता के जीवित उच्चारित रूप में मूर्त्तिमान लोकोक्तियों को कोश में सुप्रतिष्ठित कर भोले-भाले सरल भारतवासियों का अभिनन्दन किया जा सकता है। इसी क्रम में फैलन के लोकोक्ति कोश की एक बानगी प्रस्तुत है—

अलख पुरुष के माया, कहीं धूप कहीं छाया॥
मँगनी के सतुआ सास के पिंडा॥
मिरग बाँदर तीतर मोर, ये चारो खेती के चोर॥
सिर में बाल ना भालू से लड़ाई॥
बुड़बक देवी के कुलथी के अच्छत॥
मान के माहुर और अपमान के लड्डु॥
जीजा के माल पर साली मतवाली॥
बाँस बढ़े झुक जाए एरंड बढ़े टूट जाय॥
बाहर मीयाँ सूबेदार, घर में बीबी झोंके भाड़॥

हिन्दी अपनी भोजपुरी बहन के आँचल में संचित वाणी की विभूतियों को आत्मसात् कर विकसित और मौलिक होगी, विराट् लोक-समुदाय की भाषा बनेगी।

—अँइटा से गोंइठा बड़ सुकुमार।

—अँखिए फूटी तऽ आजन का लगाइब।

—अँगुरी धरत धरत पहुँचा पकड़ लिहलैं।

—अण्डा सिखावे बच्चा के कि चेउँ चेउँ बोल।

—अँटकल बनिया दे उधार।

—अन्धा के आगे रोवे आपन दीदा खोवे।

—अइली ना गइली दु केबऽ कहवली।

—अइले दमाद मन हरियर भइल।
कठवत के माँड़ हेन पतर भइल।

—अइसन दुनियाँ बाउर, बेटा के पीठा, दमादे के जाउर।

—अइसन देश मँझउवाँ, जहाँ भात न पूछे कउवा।

—अइसन घसकट्टा के ई कवलगट्टा।

—अउर अन्न खइलें, ना गोहूँ गँठिअवले।

—अकरब मुए ना छुतिहर फूटे।

—अकुतइले गूलर ना पाकेला।

—अकुताइल से बउराइल।

—अकेले चले न बाट, झार के बइठे खाट।

—अगहन दूना पूस सवाई, माघ मास घरहू से जाई।

—अगहन रजपुत अहीर असाढ़, भादो भइँसा चइत चमार।

—अगिया लगाय छउँड़ी बरतर ठाढ़।

—अघाइल बकुला पोठिया तीत।

—अघाइल भइँसा तबो अढ़ाई कट्ठा।

—अच्छी गाय बेसाइये जिसकी कज्जल बान.
सोलह सिंह बत्तीस खुरी नव थन तेरह कान।

—अभी पोखरा ना खोनाइल तले घरियाड़ डेरा डाल देहलस।

—आँगन बरसे घर भरे बाछा घास न खाय,
पहिले दही जमाई के पीछे कीन्ह गाय।

—अजगर के अहार राम चेतलन।

—अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कहि गये, सबके दाता राम॥

—अतना पर तऽ अइसन, काजर देला पर कइसन।
—अदमी ना हवे, बागड़ हवे।
—अदरा गइल तीनों गइल, सन साठी कपास।
हथिया गइल सभ कुछ गइल, आगिल पाछिल चास॥
—अदरा मास जे बोए साठी, दुख के मार निकाल लाठी।
—अधजल गगरी छलकति जाये।
—अधिका जोगी मठ उजार।
—अनकर दाना, हक लगाके खाना।
—अनकर सेनूर देखिके, आपन कपार फोरीं।
—अनका खाती काँटा बोवलन, काँटे उनके गड़ल।
—अनका कमाई पर तेल बुकवा।
—अनदेखल चोर राजा बरोबर।
—अन धन अनेक धन, सोना रूपा कतेक धन।
—अनाज खाये आपन, लोग कहे दलिद्दर।
—अन्हरा के दूगो अँखिये चाहीं।
—अन्हरा के आगे रोवे आपन दीदा खोवे।
—अन्हरा के आगे हीरा कंकड़ बरोबरि।
—अन्हरा बाँटे अपने ले।
—अन्हरी बिलाई माँड़े तिरपित।
—अन्हरे सियार के पिपरे मेवा।
—अन्हेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी, टका सेर खाजा।
—अन्हरे के भइँस बिआइल पड़िया, गाँव के लोग ले दऊरल हँड़िया।
—अपन खूँटा पर कुकुरो बली।
—अपन मन के मउजी, माउग के कहे भउजी।
—अपना दुआरे पर कुकुरो बरियार।
—अपने मन के जौ की, भात पकाईं कि लौकी।
—अपने जाँघ उघारऽ अपने लाजे मरऽ।
—अपनी करनी पार उतरनी।
—अपने करे से काम, पास रहे से दाम।
—अपने पहरें रहीं जाग, आन के पहरे लागे आग।
—अपने मन से जानीं पराया मन की बात।
—अबका लिलाम से तिलाम होई।

—अबकी अब के साथ जबकी जब के साथ।
—अबरे ओन्चास बयारि।
—अबहीं एगो चना के दू दाल ना भइल।
—अब्बर घोड़ी पहिलहीं जीन कसेली।
—अब्बर पइली बनियाइन, नाप देहली डेढ़ सेरी।
—अमवाँ झोर बहे पुरवाई, तब जानी बरखा रितु आई।
—अरकी के चढ़वइया, पोंछि के लगान।
—अरकी के नाउन बाँस के नोहरनी।
—अरकी के पीबइया पोंछिटा में हुँक्का।
—अरिया चोर परोसिया छिनार ना पकड़ाय।
—अलगी बिलइया के अलगे डेरा।
—अवर जानवर के लीदना हाथी के चिरकल।
—अस रहिला बरियार होइहें, जे भरसाई फोरिहें।
—असल से खाता ना, कमस्सल से नाफा ना।
—चन्दा निकले बादर फोर, साड़े तीन माह बरसा के जोर।
—अस्सी चुटकी नब्बे ताल तब जाने खैनी के हाल।
—अहमद के पगड़ी, मुहम्मद के सिर पर।
—अहीर के बखानल मछरी, मलाहे के बखानल दही, एके किसिम के हऽ।
—अहीर बुझावे से ही मरद।
—आँख हइले ना कजरवटे चाहीं।
—आँख एगो कजरवटा तीन गो।
—आँखी देखी काने सुनी।
—ऑगाँराइलि बिटिआ बरके आँखि फोरे।
—ऑनाका के पाँड़े दीन देखें, अपने पाँड़े ढिमिलिया खाले।
—ऑनॉका सिंगार का पाछाँ आपन नाक ना कटवावल जाला।
—ऑपना करते उढ़रल जाई, आ कहे कि दइबा उढ़रले जाइ।
—ऑपना दुआर पर कुकुरो बाघ होला।
—ऑपना नीनी सूतल, ऑपना नीनी जागल।
—ऑपना पेटे सुअरियो जीयेले।
—ऑपना बउराहे रोअल जाला, ऑनका बउराहे हँसल जाला।
—आई आम की जाई लबेदा।
—आई तऽ आई, ना तऽ खाली चरपाई।

—आइल अगहन हाँड़ी दे अदहन।

—आइल कनकट फूलल काँस, बराहमन उछललन नब नब बाँस।

—आइल चइत फूलल गाल, माघ महीने उहे हाल।

—अगता खेती आगे आगे पिछता खेती भागे जोगे।

—आग लगे मड़वा, बजड़ परे कोहबरवा।

—आगा चलऽ आ राह दिखाव।

—आगे कूबर, पाछे कूबर, हमरा भतार ले बाड़ा सूघर।

—आगे खेती आगे आगे, पीछे के खेती भागे जोगे।

—आगे गेहूँ पीछे धान, वाको कहिये बड़ा किसान।

—आगे नाथ ना पीछे पगहा।

—आगे मेघ पाछे भान, बरखा होखे ओस समान।

—आजु तोहर महतारी खरजिउतिया कइले रहलि हा।

—आजु बनिया, काल्हु सेठि।

—आजु भइनी बासूदेव, काल्ह भइनी बसुवा,
पीठि पर लात धऽ के सास उतारस हँसुवा।

—आटा रहित त पुआ पकइती गुड़, पइचा लइतीं लेकिन तेले नइखे।

—आठ आना पर दुर्गा पाठ, सतनारायन सूकी,
एहू पर जे ना सूने, सेहू करम के चूकी।

—आठ कोस पर पानी बदले दस कोस पर बानी।

—आठ जुलाहे नव हुक्का, तबनो पर थूकम-थुक्का।

—अथई गिरलन कुइआँ में, कहलन भले बानी।

—आदमी मुअला पर, चीज भुलइला पर सूझेला।

—आध के साझ, बरोबरी के दरद।

—आधा कहे से मरद बूझे, सरबस कहे से बरध बूझे।

—आधा घर देउकुरि, आधा घर भरसाई।

—आधा तजे पण्डित, सर्बस तजे गँवार।

—आधा पेट खाना, बनारस का रहना।

—आधा माघे कम्मर कान्हे।

—आधा मार धरहरिया का।

—आधा रोटी बस, कायथ हई के पस।

—आन के आटा आन के घी, चाबस-चाबस बाबाजी।

—आन के धन पर बिकरम राजा।

—आन ताल के बकुला, आन ताल बकलोल।
—अन्हरा के आगे रोई, आपन दीदा खोई।
—अन्हरा के लेखे, दिन रात बरोबरि।
—अन्हेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा।
—आन्हर कुकुर, बतासे भूँके।
—आन्हर गइया के राम रखवइया।
—आन्हर के हाथे दरपन सोभे।
—आन्ही के आगे बेना के बतास।
—आपन अँकवारि पूजल आगे बऽम्हना के खेत।
—आप आप गइले साथे बाँड़ा के ले ले गइले।
—आपन ढेड़ ना देखे, आन के फुल्ली निहारे।
—आपन पत अपने हाथ।
—आपन काका मरहर गइले उनकर काका आपन भइले।
—आपन बैल केल्हुबाडी नाथब।
—आपन बैला मोहि दे, तें जो अगवारि कर।
—आपन मामा मरि गइले, जोल्हा धुनिया मामा भइले।
—आपन मीठ, अनकर तीत।
—आपन हाथ जगरनाथ के भात।
—आपन हारल, मेहरी के मारल केहू जाने केहू जनबो ना करे।
—आम लगबे ना कइल कि मँगरा डेरा डलले।
—आम के आम गुठली के दाम।
—आम फरे निहुर चले, रेंड़ फरे इतराये।
—अरबी ना फारसी, मियाँजी बनारसी।
—आलस नींद किसाने नासे, चोरे नासे खाँसी।
—आवत आदर ना कइलन, जात ना देलन हस्त।
ये ही में दूनों गइलन पाहुन आ गिरहथ॥
—आवा में नाद भुलाई?
—आस पास रबी, बीच में खरीफ, नीमक मरिचा डाल के खा गइल हरीफ।
—आसिन मास बहे ईसान थर थर काँपे गाय किसान।
—आहर भरल, पोखर भरल, बहुरिया के पेट कबहूँ ना भरल।
—इडिल मिडिल के छोड़ऽ आस, खुरपी लेके गढ़ऽ घास।

—इहाँ न लागी राउर माया।
—ई उ गुड़ ना हऽ जेकरा चूँटा खइहें।
—ई गूलर के फूल लीहन।
—ई तऽ गांधी बाबा के सुराज हो गइल।
—ई तऽ जोंक जइसन सटल बाड़न।
—ई अँखियन के एही बिसेख, यह भी देखा वह भी देख।
—ई मँझउवाँ के बागड़ हऽवन।
—ई लड़का ना हवे, लड़का के पोंछ हवे।
—ईहो पूता जामल होइहें तऽ छीपा बाजल होई।
—उखरे बार ना नाँव का हऽ तऽ बरियार खाँ।
—उचकले ना मिली दान, मँगले ना रही मान।
—उजरा गाँवे ऊँट आइल लोग कहे कि दद्दू अइलन।
—उत्तम खेती जेहर गहा, मद्धिम खेति जेहर संग रहा।
जे पूछे हर गइल कहाँ, तेकर घर दिन दुपहरे जरा॥
—उत्तम खेती, मध्यम बान, निखिद चाकरी, भीख निदान।
—उतरल घाँटी होखल माटी।
—उधियाइल सतुआ पितरन के।
—उपास भला कि मेहरी के जूठ भला।
—उलटा साँप सपहेरिए काटे।
—उसिना चाउर दाल खेंसारी मगह देश जनि जइह मुरारी।
—ऊख तिस्सा गोहूँ बिस्सा।
—ऊँच हबेली फोफड़ बाँस, करज खासु उ बरहो मास।
—ऊँट, बिदारथी, बानर, तीन जात बड़ आन्हर।
—ऊखि करे सब कोई, जो जेठ बीच न होई।
—ऊगे अगस्त बन, फूले काँस, अब नइखे बरखा के आस।
—ऊगे तारा तऽ चले सोनारा।
—ऊँच बड़ेरी फोंका बाँस, रिन खैनी हम बरहो मास।
—ऊपर माला, भीतर भाला।
—ऊलुँगी का बेटा भइल, उतपाती नाँव परल।
—ए कुकुर तूँ दूबर काँहि, दू घर के आये जाये से।
—एगो गौरा अपने गोर, ऊपर लेहली कमरी ओढ़।
—ए छूँछा तोह के के पूछा।

—ए माई अरजी, त ए पूता बरजीं।
—ए मियाँ एढ़े, तऽ हम तोहसे टेढ़े।
—एक तऽ अहीर दोसरे जवान, तीसरे हो गइल नौ मन धान।
—एक कलम घसके तऽ बावन गाँव खसके।
—एक तऽ बाग ना आइब, दोसरे आम ना खाइब, तेसरे खाइब तऽ लोक लोकउवा।
—एक टका के चटाई, नौ टका बिदाई।
—एक तावा के रोटी, का छोटी का मोटी।
—एक दिन पहुना, दोसर दिन ठेहुना, तीसर दिन केहुना।
—एक नाद दूइ भइँसा, ता घर कूसल कइसा।
—एक पूत के पूत ना कहीं, एक आँखि के आँखि ना कहीं।
—एक बोलाबे, तेरह धावे।
—एक बूँद जल चइत चुए, लाखन बुन्द सावन के मुए।
—एक लोटा रस, हमार कहानी बस।
—एक सेर मुर्गी नौ सेर मसाला।
—एगो अनार, सय गो बीमार।
—एने गिरीं तऽ कुइयाँ, ओने गिरीं तऽ खाई।
—एने पाकड़ि ओने बर, एके सोझा दूनो घर।
—एह पार नदी, ओह पार नदी, ई बिपति कहिया के बदी।
—एहि रहिला के पूरी कचौड़ी, एहि रहिला के दाल।
एहि रहिला के खाई खिरौली, खूब मोटाइल गाल।
—ओढ़े के कुछ ना दरी बिछौना।
—ओढ़े के लुगरी बिछावे के गलइचा।
—औरत के जात केरा के पात।
—कंक के महुए मीठ।
—कँकरी के चोर के कनइठिए बहुत बा।
—कइसन दुनिया बाउर, लइका के भभरी दमादे के जाउर।
—कउवा कपूर खइले कहूँ उज्जर होला।
—कखगघ आवे ना दे माई पोथी।
—कटे अहीर के, सीखे बेटा नाउ के।
—कतनो करऽ जोगा टोना, बुआ बैठिहें उहे कोना।
—कदुआ पर सितुहा चोख।
—कनियाँ से बर दूना।

—कनियाँ के माँड़ ना, लोकनी के बुनियाँ।
—कनियाँ के आँख में लोरे ना, लोकनी हँकन करे।
—कपड़ा पहिरे तीन बार, बुद्ध बिरहस्पत सुकुरबार।
—कब जमले कब राकस भइले।
—कब पाँड़े मरले कब भूत भइले।
—कर करबा कोपीन, भजु राधे गोबीन।
—कर खेती परदेस जाय, तेकर जनम अकारथ जाय।
—करज करज के खाइल, पुअरा के तापल बरोबर।
—करनी ना बरनी, धिया ओठ बिदोरनी।
—करमहीन खेती करे, ओला गिरे कि पाला पड़े।
—करिया अच्छर भइँस बराबर।
—कहाँ गरजल कहाँ बरसल।
—कहाँ जातारऽ त ससराँव, एक जोड़ी जाँत लेले अइह।
—कहाँ राजा भोज कहाँ भोजुआ तेली।
—कह सुनाई कि कर देखाई।
—कहावे के सइयद चोरावेले छूँछी।
—कहेलन बघार के, सुनेलन खरिहार के।
—कहीं सूरज डलिया तरे झँपालन।
—का जाने गँवार, औरत के पियार।
—का न होई धरणीधर से।
—का बाँगर के अन्ने, का जोलहा के धन्ने।
—का जाने पूड़ी के हाल बलम सतुआ के खवैया।
—का पर करीं सिंगार पिआ मोर आन्हर।
—का मुरगा ना बोलिहें त बिहान ना होई।
—का मूस मोटा के लोढ़ा होइहें।
—काम भइल दुखे बिसरि गइल, दादा हो चहुँपा दऽ।
—काजर कइनी बीजर कइनी; टिकुली तऽ हइये ना।
—काजर देहले के ना हऽ, मटकवलो के हऽ।
—कातिक कुतिया माघ बिलाई, चइत चिरइया, सदा लुगाई।
—कातिक में गइले हेंगा ले आवे चइत में लवटले।
—कानी गैया के अलगे बथान।
—काम पियारा होला, चाम ना।

—कायथ के कागदे में सूझेला।

—कायथ के कुछ लेलें देले, बराम्हन खिअवले।
रजपूत के बोध-बाध, नान्ह जात लतिअवले॥

—कासी बसले का होखल जब घर औरंगाबाद।

—कि अपना बोअले, कि अपना जमले।

—कि मुँह पान कि मुँह पनही।

—कुआर जाड़े कऽ दुआर।

—कुकुर मरे अँठई झरे।

—कुछ हाथ के सफाई, कुछ डण्डी के फेर, दोसरा के तीन पाव बनिया के सेर।

—कुल बिआन बिलरिए खइलस।

—कुबंस से निरबंस भला।

—कुल गोत्र पूछे ना कोई, पइसा दी से समधी होइ।

—केकर-केकर धरी नाँव, कमरी ओढ़ले सगरी गाँव।

—केरा पर हँसुओ तेज होला।

—केकरो भंटा बेरी, अउरु केकरो पन्थ।

—केकरा कुले काई ना रहे।

—केहु के पइया ना बूझे के।

—केरा कटले पर फरेला।

—कोइरी के घरे लरिका होला, कुँजरा के घरे बधावा बाजेला।

—कोइरी के बरद अहीर के गाय, कवने कारन बेचल जाय।

—कोख खातिर गइली, माँगो गँवाइ अइली।

—कोदो देके पढ़ल बाढ़े।

—को बड़ छोट कहत अपराधू।

—खइनी खाय न पीअनी पीए।
से परानी कइसे जीए॥

—खउरलें बिना भेंड़ बिगड़ल बाड़ी।

—खग जाने खग ही के भाखा।

—खड़ा होखऽ त कोड़ऽ बइठऽ तऽ चिखुरऽ।

—खर के टाटी गुजराती ताला।

—खरच तऽ खरचे सही, दे दाल में पानी।

—खरबूजा चाहे धूप, आम चाहे मेह, नारी चाहे जोर, बालक चाहे नेह।

—खल के दवा पीठि के पूजा।

—खाइ के परि रहु, मारि के टरि रहु।
—खाइब गोहूँ ना तऽ रहब एहूँ।
—खाइब हम नाना के रोटी, कहाइब हम दादा के पोती।
—खाइल दोसरा के होला, मगर पेट तऽ अपने हऽ।
—खा कर्जा, जल्दी मर जा।
—खाके मूर्ती, सूर्ती बाँव, काहे के बैद बसाव गाँव।
—खाद पड़े तऽ खेत, ना तऽ कूड़ा रेत।
—खाये के हइये ना नहाये के तड़के।
—खाये के खर्ची ना दुआरी पर नाच।
—खाले जीभ लजाले आँख।
—खाहूँ के बा टोअहूँ के बा।
—खिचड़ी के चार इयार दही, पापड़, घी, अँचार।
—खियावे के ना पियावे के, धा धा माँग टीके आवे के।
—खुस भइली भिखना दमाद लिअइले गाजर।
—खूँटा के जोर पर बछवो कूदेला।
—खेत खाय गदहा, मार खाय जोलहा।
—खेत बेपनियाँ जोतऽ तब, ऊपर कुँआ खोनावऽ जब।
—खेतिहर गइल घर, दाएँ बाएँ हर।
—खेती पाँती बिनती और घोड़ा के तंग।
  अपने हाथ सँवारिए तब जीने का ढंग॥
—खेती करे खाद से भरे, सौ मन कोठिला में ले धरे।
—खेती बेटी नित्ते गाय, जे ना देखे ओकर जाय।
—खेती राज रजावे, खेती भीख मँगावे।
—खेती जोरू जोर के जोर घटे त और के।
—खोरही कुतिया, रेशम के झूल।
—गँजेड़ी यार किसके, दम लगाये खिसके।
—गँवई के दाल भात सहर के रमरमी।
—गंगा के धार, हाकिम के मन, केहू ना जाने।
—गइल माघ दिन उनतीस बाकी।
—गइलो घर के कवन ठेकाना?
—गइल मरद जे खाय खटाई, गइल नारि जे खाय मिठाई।
—गगरी अनाज भइल जोलहन के राज भइल।

—गइले बात रूखर होले, गढ़ले लकड़ी चीकन होले।

—गदहा के इयारी लात के सनसनाहटि।

—गरजे सो बरसे नहीं।

—गर परल ढोलक बजावहीं के पड़ी।

—गरीब के मेहरारू, गाँव भर के भउजाई।

—गाँव गन्दा लोक अन्धा।

—गाइ गुन बछरू पिता गुन घोड़।
 ना होखे त थोड़हुँ थोड़॥

—गाछ न बिरीछ तहाँ रेंड़ परधान।

—गाय के दूध सो माय के दूध।

—गाय ना बाछा नींद पड़े आछा।

—गाय बाभन के घूमले से पेट भरेला।

—गाय मार के जूता दान।

—गुरु के गुरु, बजनियाँ के बजनियाँ।

—गुरु गुड़े रहि गइले, चेला चीनी हो गइले।

—गुरु गोसैइयाँ एके हँउवें।

—गुरु ना गुरु भइया, सबसे ब्रड़ा रुपइया।

—गुरु से कपट, साधु से चोरी, कि घर निरधन, कि घर कोढ़ी।

—गुलगुला खाये के आ मीठा से परहेज।

—गेयान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से।

—गोंयड़ा के खेती सिखा के साँप, मैभा कारन बैरी बाप।

—गोदी में लरिका सहर में ढिंढोरा।

—गोदी के लरिका मुअल जाव, ढींढ के ओझाई।

—गोबर मइला पानी में सड़े, तब खेती में दाना पड़े।

—गोबर बिनत लछिमिनिआ देखलीं, भीख माँगत महिपाल।
 चिता जरत अमर के देखलीं, सबसे भला ठँठपाल॥

—गोहुमा सभ के घरे होला, रोटिया बिरले घरे बनेला।

—गोहूँ गिरे अभागा के, धान गिरे सुभागा के।

—घड़े कोंहार, भरे संसार।

—घन मारे घनवहिया, हँकड़े लोहार।

—घर के मुरगी दाल बरोबर।

—घर के भेदिया लंका ढाहे।

—घर जरल तऽ जरल, बाकिर मूस ओसराइल।
—घर घोड़ा पैदल चले, अछइत काढ़े रीन।
थाती धरे दमाद घर, जग में भकुआ तीन॥
—घरे फूटे, गाँव लूटे, गाँव फूटे, जवार लूटे।
—घर में आइल जोय, टेढ़ी पगिया सीधी होय।
—घर में ना ताग, अलबेला माँगे पाग।
—घर में लागे आग बहुरिया पारे काजर।
—घर रही या जाई, बहरबूँटा गढ़ाई।
—घीव के लड्डू टेढ़ो भला।
—घीव सँवारे काम, बड़ी बहू का नाम।
—घीवो खाइब तऽ खेसाड़ी के दाल में।
—घोड़ा के पिछाड़ी, अउर हाकिम के अगाड़ी ना जाये के।
—घोड़ा के लात अदमी के बात।
—घोड़ा बेटा के खियावल बेकार ना होला।
—घोड़ा गाड़ी नोना पानी अउर राँड़ के धक्का।
एइ तीनों से बचल रहे, तऽ केलि करे कलकत्ता॥
—चइत सूते भोगी कुआर सूते रोगी।
—चउथ के चान अँचरा से ना तोपाई।
—चट ते राँड़ कि पट अहिवाती।
—चट मँगनी पट बिआह।
—चढ़ते बरसै आदर उतरत बरसै हस्त।
बीच बरिसै माघा, चैन करे गिरहथ॥
—चमके पच्छिम उत्तर ओर, तब जनिहऽ बरखा बा जोर।
—चना चितरा चौगुना, स्वाती गोहूँ होय।
—चलनी दूसे सूप के जेकरा सहसर छेद।
—चलनी में दूध दूहे करम के दोस।
—चाचा चोर भतीजा पाजी, चाचा के सिर पर जूताबाजी।
—चाम के जूता, कुकुर रखवार।
—चारि आना के जनेरा, चउदह आना के मचान।
—चारि कवर भीतर, तब देवता पीतर।
—चाल चले सादा, जे निबहे बाप दादा।
—चालिस के भइँस लिहलीं, चोकरे के सेहुँ सेहुँ।

—चिउड़ा के गवाह दही।
—चित्तो तोहार, पट्टो तोहार।
—चिरई में कउवा, मनई में नउवा।
—चील्ह के खोता में मास कहाँ।
—चुनरी फाट गइल चमकल मेट गइल।
—चूना चाम कूटले से ठीक होला।
—चोर अँजोर ना सहेला।
—चोर के दिल सरसों बरोबरि होला।
—चोर चोर मौसिआउत भाई, साँझे हसुआ धइल पिंजाई।
—चोर जइसन हीरा के, ओइसने खीरा के।
—चोरवा के मन बसे ककरी के खेत में।
—चोरावे के ऊँट आ चले के खाले-खाले।
—चौबे गइले छब्बे होखे दूबे होके अइले।
—छँउड़ी छिनार गहगस्ता कहाँ बजार कहाँ रस्ता।
—छँउड़ीवाला बिदा न करे नउनिया करे लबलब।
—छूँछ हाँड़ी टन-टन बाजे?
—छूँछ छोह हतेया बरोबरि।
—छिलाइल चाम पर नून दरल।
—जंगल में मोर नाचल, के देखल?
—जंजाल अच्छा कंगाल ना अच्छा।
—जइसन अन ओइसन मन।
—जइसन करनी, ओइसन भरनी।
—जइसन करे तइसन पावे, पूत भतार ना आगे आवे।
—जइसन दिगम्बर पांड़े, ओइसन रसुल्ला।
उन्हका ना छान्ह छप्पर इनका ना चूल्हा।
—जइसन खीरा के चोर ओँइसन हीरा के चोर।
—जइसन देखी गाँव के रीत, ओइसन उठाई आपन भीत।
—जइसन देवता ओइसन पूजा।
—जइसन देस, ओइसन भेख।
—जइसन बजार, तइसन भतार।
—जइसन बाबा अपने लबार ओइसन उनकर कुल परिवार।
—जइसन माई, ओइसन धीया, जइसन काकर ओइसन बीया।

—जइसन साँपनाथ वइसन नागनाथ।
—जइसन लाल चाउर, तइसन दँतनिपोर खनिहार।
—जग में जगदीशपुर शहर ससराँव।
चट्टी में दाउदनगर भोजपुर में डुमराँव।
—जतना जाल देखेला, ओतना मल्लाह देखे ते छाति फाटि के मर जाई।
—जतना मुँह ओतने बात।
—जेतने गहिर खेत जोताई, ओतने फसल झझाई।
—जब अपने बर बउराह तऽ बरेछा कहाँ से परी।
—जनमें के बिगरी का सुधरी?
—जनम के दुखिया नाम सदासुख।
—जब जइसन तब तइसन, ना करे त, मरद कइसन।
—जबले निरधन तबले सधुआई, धन भइले सधुओ बउराई।
—जबले रसरी खेत पर तबले दिवान दिवान।
—जब हम तूँ राजी तऽ का करिहें काजी।
—जल में केवट, वन में अहीर, नइहर में जोय आपन ना होय।
—जल में रहके मगर से बैर।
—जवन पंडितजी बिआह करावे उहे सराधो करावेले।
—जवन रोगिया के भावे सो बैदा फरमावे।
—जवना पत्ता में खाये के वोही पत्ता पर छेरे के।
—जवना पत्तल में खाए के, तवने में छेद करेके।
—जस मनई तस पनहीं।
—जहँवा जेई, ताहाँ जीमा।
—जहाँ खेत तहाँ खरिहान।
—जहाँ के पीये पानी, तहाँ के बोले बानी।
—जहाँ के ईसर अइसन, उहाँ के दलिदर कइसन।
—जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़े सूखा।
—जहाँ बूझ ना बड़ाई, तहाँ से भाग चल रे भाई।
—जहाँ रोग उहाँ दावा।
—जहाँ सूई ना घुसी उहाँ फार घुसावेले।
—जाएवाला के गोड़ हो जाला।
—जागी से पाई सोई से खोई।
—जाड़ काटे रूई ना तऽ धूस।

—जाड़ा गए जड़वार जोबन गए भतार।
—जात पाँत पूछे ना कोई, हरि के भजे से हरि के होई।
—जाति सोभाव ना छूटे, टाँग उठाके मूते।
—जान न पहचान बड़े मिया सलाम।
—जान मारे कनियाँ अनजान मारे ठग।
—जानेली चिलम, जेपर पड़ेली अँगारी।
—जाहाँ जाली खेहो रानी, तहाँ ना मिले आग पानी।
—जितला के आगा हरला के पाछा।
—जीजा के माल पर साली मतवाली।
—जे इयारी हाटे बाटे, से केल्हुवड़िए नाहीं।
—जेकर आँख ना, ओकर साख का।
—जेकर छाती बार ना, ओकर एतबार का।
—जेकर बनल असढ़वा रे, सेकर बरहो मास।
—जेकर बेटी अन्दर ओकर भाग सिकन्दर।
—जेकर कोठी में धान सेकर कोट में ग्यान।
—जेकर खाइब ओकर गाइब।
—जेकर सुखबन तेकर गाय, उ पापी जे हाँकि जाय।
—जेकरा हरि अस ठाकुर, ओकरा जम्म से कवन डर।
—जेकरे बियाह ओकरे खाँड़ा बारा।
—जेकर हाथ जोर, ओकरे हाथ मुलुक।
—जेकरे हाथे लोई, ओकरे सभ कोई।
—जे जइसन बोएला, ते तइसन काटेला।
—जेठ के दुपहरिया, भादो के अन्हरिया, पूस के भिनसहरा अभागा काम करेले।
—जेठ मास में जे नर सोए, सेकर जर असाढ़ में रोए।
—जे पंडित के पतरा, से पंडिताइन के अँचरा।
—जे बाँस के बाँस बँसुरिया, ओही बाँस के कलसूप दउरा।
—जे राह बतावे से आगे चले।
—जे रुचे से पचे।
—जे हमरा राम के ना, से कवना काम के।
—जे हर जोते खेती ओकर, अउर नातऽ जेकर तेकर।
—जे दिन जेठ बहे पुरवाई, ते दिन सावन धूरि उड़ाई।
—जेहे हाथ, उहे साथ।

—जे होखे के होला उ होके रहेला।
—जो पुरवा पुरबइया पावे, सूखलि नदिया नाव चलावे।
—जो भल रहती रूपा, तऽ का पंच लगाइत लूका।
—जोर जर जाला तऽ जरे जाला, बाकिर अँइठन ना जरे।
—झगड़ा के जड़ हाँसी, रोग के जड़ खाँसी।
—झूठ आ साँच में चार अँगुरी के फरक होला।
—झोंके के भाड़ निरखे के झुलनी।
—झोरी में भाँग ना, सराय में डेरा।
—टकसावऽ न हिलावऽ बइठले खियावऽ।
—टिटिहरी भइली उतान कि बादरे थाम्ह लेब।
—टीम टाम एतना जलपातर नदारत।
—टूटलो हथीसार नव घर के बराबर होला।
—टूटलो तेली तऽ नव अधेली।
—ठाढ़ नाच मोरा, तऽ निहुर के नाचब तोरा।
—ठाँव गुने काजर, कुठाँव गुने कारिख।
—ठिकरियो से घइला फूटेला।
—ठेस लागल पहाड़ पर, फोड़ीं घर के सिलवट।
—ढेउआ ना कौड़ी सलाम करे छौंड़ी।
—ढिल मिल बेंट कुदारी के, हँस के बोलल नारी से।
हँस के माँगल दामा, ई तीनों काम नकामा॥
—ढेउआ देके दुख बेसाहऽ।
—ढेर जोगी मठ के उजाड़।
—ढोवे के टोकरी गावे के गीत।
—तन सुखी तऽ मन सुखी।
—तन के कपड़ा न पेट के रोटी।
—तपे जेठ तऽ बरखा भरपेट।
—तसलवा तोर कि मोर।
—ताई दिहलस तेल, बड़ेरी उठल धुआँ।
—ताकन, तरकन, कोन पइस, दंत चिआर।
चार तरह के रिश्तेदार।
—ताकन समधी तरकन जमाय।
चूल्हन सार कहावे भाय।

—तिरिया तेरह मरद अठारह।
—तीतर के मुँह में लक्षमीनरायन।
—तीतर बरनी बादरी, बिधवा काजर रेख।
ई बरखे उ घर करे एह में मीन ना मेख॥
—तीन कनउजिया तेरह चूल्हा।
—तीन के तीसी तेरह लागलि, तब तेलनियाँ पेरे लागल।
—तीन टिकट महा विकट।
—तीन पानी तेरह कोड़, तब देख ऊखी के पोर।
—तीन में कि तेरह में?
—तीन में ना तेरह में, सुतरी के गीरह में।
—तीन बैल दुगो मेहरी, गइल घर ओ खेती ओकरी।
—तीरि ना कमान, कहे कि पैठान।
—तू डाढ़ि डाढ़ि हम पात-पात।
—तेज घोड़ा के कोड़ा कैसा?
—तेंतर बेटी राज रजावे, तेंतर बेटा भीख मँगावे।
—तेली के तेल जरे मसालची के जीव जाय।
—तेहार नउजी बिकाय, मोर घलुआ दे।
—तोहरा मुँह में घी शक्कर।
—थरिया भुलाला त गगरी में खोजाला।
—थाकल ऊँट सराये ताके।
—थान हारों तऽ हारों गज भर ना फारों।
—थूके सातू ना सनाला।
—थोथा चना, बाजे घना।
—थोर करे बाली मियाँ बहुत करे डफाली।
—दखिनी कुलछनी, माघ पूस सुलछनी।
—दमड़ी के पान बनिआइन खासु, भाई घरे रहे कि जाय।
—दमड़ी के भागवति, दोकरा के पुरान।
—दम्मा जाय दम के साथ।
—दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे।
—दस के लाठी एक के बोझा।
—दही चूड़ा के सुनगुन पाई, अस्सी कोस निहुरिए धाई।
—दाता दान करे, भंडारी के पेट फाटे।

—दाना खाय आपन लोग कहे दरिदरी।
—दाना ना घास दूनो जूनि खरहरा।
—दाने दाने रासि, पियादे पियादे फौद।
—दाम सँवारे काम।
—दाल भात में मूसरचंद।
—दू कवर भीतर तब देवता पीतर।
—दुलहा के फूटहा ना, बजनिया माँगे बुनिया।
—दूर के ढोल सोहावन।
—दू हर खेती, एक हर बारी, एक बैल से भला कुदारी।
—देख भाई करम के खेल, पढ़े फारसी बेंचे तेल।
—देखा देखी ठाने जोग, छीजे काया, बाढ़े रोग।
—देखा देखी पाप देखा देखी पुन्न।
—देवकुर गइले दूना दुख।
—देशी घोड़ी, मरहठी चाल।
—देह घरला के दंड हऽ।
—देही पर लत्ता ना पान खाय अलबत्ता।
—दोसरा के सिर कद्दू, बरोबरि।
—धन मद्धे कठवति।
—धन उ राजा धन उ देश, जहवाँ बरसे अगहन सेस।
—धन के बढ़ल नीमन, मन के बढ़ल ना नीमन।
—धनी के बात सुनी, गरीब के भात खाई।
—धरम करे में जो होखे हानी, तबो ना छोड़ी धरम के बानी।
—धाइ के चलबि ना, हारि के गिरबि ना।
—धाई से पाई।
—धान, पान, खीरा, तीनों पानी के कीरा।
—धोबी के बेटी के, ना घरे सुख ना घाटे सुख।
—नइकी धोबिनिया लुगरियो में साबुन लगावेले।
—नउवा केवट चीन्हे जात, बड़ लोगनि के चिक्कन बात।
—नकटी के बिआह, हजार जिया जोखिम।
—नकद कायथ भूत, उधार कायथ देवता।
—नदी ताप्ती, खैरा बन, छतरी राजा गेहूँए अन्न।
नदी तरैना, परसा बन, कुरमी राजा, मेडुवे अन्न॥

—नदी नाव संयोग।
—ननदो के ननद होला।
—नव के लकड़ी, नब्बे खरच।
—नसकट खटिया, दुलकत घोड़, कलही नारि, विपत के ओर।
—न सूप हँसे लायक न चलनी सराहे लायक।
—नाउ के आगे केकर माथ ना नवे।
—नाचे के लूर ना अँगनवे टेढ़।
—ना कइलीं नइहरे सुख, ना देखलीं पिआ के मुख।
—नाँव गुलाबचन गन्ह के ठेकाने ना।
—नाँव दाताराम पुन्नि के ठेकाने ना।
—नाँव भवानी, मुँह छूछनरि के।
—ना अति वक्ता, ना अति चुप्प, ना अति बरखा, ना अति धूप।
—ना ऊधो के लेना, ना माधो के देना।
—नाउ धोबी दरजी, तीनों जात अलगरजी।
—नाक ना कान बाली के अरमान।
—ना खँड़लिच के गोड़े लागे के, ना ढेले फेंके के।
—ना गेहूँ बा ना गेरूई लागी।
—नाच काछ अइले मोरवा, गोड़वा देखि झँवाय।
—नाचे कूदे बानर, माल मदारी खाय।
—नाचे से ना बाँचे।
—ना धोबिया के दोसर जनबरवा, ना गदहा के दूसरे मउवार।
—ना नव मन तेल होइहें, ना राधा नचिहें।
—नानी के धन, बैयमानी के धन, जजमानी के धन ना रहेला।
—ना नीमन गीत गायब, ना दरबार धके जाएब।
—नानी मरल नाता टूटल।
—ना बाँस रही ना बँसुरी बाजी।
—ना मोरा बोलाचाली, ना मोरा केहु।
सिकहर पर पूआ बाटे, काढ़ि खाय केहू॥
—नाया हकीम देले अफीम।
—निपुती के मुँह देखते सात उपबास।
—निरगुन गावे, धक्का पावे, बात बनावे, पइसा पावे।
—नीचन कुट्टन, देवन पूजन।

—नीमन के साथ रहला से नीमने बुद्धि होला।
—पँचबरतो के फटले गुदरिया बेसवा पेन्हे सारी।
—पंडित नाया बैद पुरान।
—पंच कहे बिल्ली तऽ बिल्ली।
—पंच बड़ा परमेसर से।
—पइसा आदमी के आन्हर बना देला।
—पइसा पास के, बिदेया कंठ के।
—पकले आम सोहावन, पकले मरद घिनावन।
—पगरीदास नगरी ले ले।
—पढ़ल लिखल कवन काम, खेती करब घनिआइब धान।
—पत्थर पर जब जामे गुरमी, तबहु न होखे आपन कुरमी।
—पत्ता खड़कल कि बन्दा भड़कल।
—पर घर नाचे तीन कायथ बैद दलाल।
—परमुण्डे फरहार।
—परले राम कुकुर के पाले, खींच खाँच, ले गइल खाले।
—प्रातकाल जे रोज नेहाय, तेकरा देखि बैद पछिताय।
—परुवा बैल के हऽ के असरा।
—पहिला पहर में सभ कोई जागे, दोसरा पहर में रोगी।
तीसरा पहर में चोरवा जागे, चउथा पहर में जोगी॥
—पहिले पीये जोगी, बीच में पीये भोगी, पीछे पीये रोगी।
—पहिले बोअऽ पहिले काटऽ।
—पाँच कवर भीतर तब देवता पीतर।
—पाँचे आम पचीसे महुआ।
तीस बरिस पर इमली को फहुआ।
—पानी कलसा गरम होय चिरई नहाये घूर।
अण्डा ले चूँटी चढ़े, बरखा होय भरपूर॥
—पानी पीजे छान, गुरु कीजे जान।
—पानी बरसे आधा पूस, आधा गोहूँ, आधा भूस।
—पानी में मछरी, नौ-नौ कुटिया बखरा।
—पाव भर के देवी, नव पाव के पूजा।
—पीठा के मजा माठा सँगे।
—पूत भइले सयान दुख गइले पराय।

—पूतवो मीठ भतरो मीठ किरिया केकर खाईं।
—पुरनका चाउर पथ में दिआला।
—पूरवा बहल, सूखलो घाव फफदल।
—पूस के दिन फूस बरोबरि।
—पूस ना बोए, पीस खाए।
—पेट करे खाँव खाँव, माँगे के टिकुली।
—पेट बिगाड़े मूढ़ी, घर बिगाड़े बूढ़ी।
—पेट भारी तऽ माथ भारी।
—पैर गरम सिर ठण्डा डाक्टर आवे मार डण्डा।
—पैर ओतने पसारे के चाहीं, जतना चद्दर लाम होखे।
—फटकचन्द गिरधारी, जिनका लोटा ना थारी।
—फागुन मास बहे पुरवाई, तब गेहूँ में गेरुई धाई।
—फाटल दूध ना जमे।
—फूहा फूही भरे तलैया।
—फेर-फेर राम जनकपुर जइहें।
—बइठे के चटाई ना बा ताम्बूल के फरमाइस।
—बकुला टाँग उठवलस तऽ दह के पता लागल।
—बगुला से मछरी के यारी।
—बघवा खाय या ना, बाकी ओकर मुँह रक्तावन।
—बड़ घूघ, तनी तकलो चाहीं।
—बड़ बड़ जना दहाइल जास, गदहा पूछे कतना पानी।
—बड़ बड़ मार कोहबरे बा।
—बड़ बेटा बाप के, छोट बेटा महतारी के, माझिल घुनसारी के।
—बड़ दुलार भाँड़ भाँड़ के बुकवा।
—बदलो पंच बे बदलो पंच, जइसे माने तइसे पंच।
—बनले मल्ल बिगरले कुरमी।
—बरखा बिन सागर कौन भरे माता बिन आदर कवन करे।
—बरात के तीन मन, बर चाहे कनिया।
समधी चाहे धन अउर बराती चाहे सतकार॥
—बराम्हन बचन परमान।
—बरियार चोर सेन्हीं में गावे गीत।
—बरियार से भगवानो ना अरुझाले।

—बलवान के हर भूत जोतेला।
—बहरा सुने धरम के कथा।
—बसन्त आइल, ऊखि पाकल।
—बसुला अस मुँह रुखानी अस गोड़।
—बहरा के खाई घर के गाई।
—बाँझ का जाने परसोति के पीरा।
—बाँड़ी रे तोर अँगने कतना।
—बाँस के जरी बाँसे जामेला।
—बाँस के परिहथ, कुसे के नाधा, जोतें के मेरें, गाँव के आधा।
—बाघ न देखल देखल बिलारि, ठग न देखल देखल पंसारी।
—बाढ़े पूत पिता के धरमा खेती उपजे अपने करमा।
—बात कहीं अगाध के काम देखाई गीध के।
—बात कहीं फरिछा, गुर लागे चाहे मरिचा।
—बात के चूकल अदमी, अउर डारि के चूकल बानर के ठेकान ना मिले।
—बात बताई दिल्ली के, पोंछ देखाई बिल्ली के।
—बानर का जाने अदरख के सवाद।
—बानर पहले आपन घर छावसु, तब दोसरा के छइहें।
—बाप के गला में गुरिया ना, बेटा के गला में उदराछ।
—बाप के नाँव सागपात, पूत के नाँव परोरा।
—बाप दीहें हँसुआ तऽ बन करे जाइब।
—बाप पूत मिल खेती करीं, बाप के मुअले माई के धरीं।
—बाप बटोरे गोबर नित, पूत बकसें गोहरउरि।
—बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपइया।
—बाप मरस अन्हरिया में, बेटा के नाँव पावर हाउस।
—बाप हवन ओझइत, माई हई डाइन।
—बासी पानी जे पिये, जे नित हर्रे खाय।
मोटा दतुअन जे करे, ता घर बैद ना जाय॥
—बासी बाँची ना कुकुर खाई।
—बाहर उज्जर धोती, घर अँठुली के रोटी।
—बाहर के लोग खा जासु, घर के लोग गावें गीत।
—बाहर देखावे तीन सेर के नेउरा, घरे कलसूप ना दउरा।
—बाहे के ना बिआए के तीन हाला खाये के।

—बिछि के काटल रोवे, साँप के काटल सोवे।
—बिन घरनी घर भूत के डेरा।
—बिन बैलन खेती करे, बिन गैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करे, चउदह लाख लबार॥
—बिन मारे बेटी मरे, खाढ़े ऊखि बिकाय।
बिन मारे मुदई मरे, ता पर देव सहाय॥
—बिना बान तिलक से लिलार चरचराय।
—बिना रोवेले माई भी दूध ना पिआवेले।
—विप्र टहलुआ चीक धन, ओ बेटी के बाड़।
एहू से धन ना घटे, तऽ करीं बड़न से राड़॥
—बियाह मोतीचूर के लड्डू ह, जे खाला उहो पछताला जे ना खाला, उहो पछताला।
—बिरले कान होइहें भलमानुस।
—बिलारि के भागे सिकहर टूटल।
—बीली में हाथ तूँ लगावऽ मन्तर हम पढ़ऽ तानी।
—बुड़बक कनियाँ के नव आना खोइँछा।
—बुड़बक के धन होय फहीमा मार खाय।
—बुड़बक के मेहरारू सभ के भौजाई।
—बुड़बक रसिया, अन्हारे मटकी।
—बुढ़वा भतार पर पाँच टिकुली।
—बुढ़ारी में अइसन चोना बा, जवानी में का कइले होखबू।
—बुढ़िया सराहे घीव खिचड़ी।
—बुध कहैं मैं बड़ा सयान, भोरे दिन जनि करिहो पयान।
कौड़ी से नहिं भेंट कराऊँ, छेम कुशल से घर पहुँचाऊँ॥
—बेटा बेटी केकरो, गुरहत्थे बइठली मँगरो।
—बेटा लोटा बहरे चमकेला।
—बेमेंह के दौरी।
—बेमेंह के दौरी, घोड़ा बिन लगाम, बे माथ के लसकर, तीनों भइल नकाम।
—बेल फूटले राई।
—बैद पंसारी आधे आध।
—बैल लीहऽ कजरा, दाम दीहऽ अगरा।
—बोखार के जरि खाँसी, लड़ाई के जरि हाँसी।

—बोलत लुखरी फूलत काँस, अब नाहीं बरखा के आस।
—भईंसा भईंसा के लड़ाई, खोंता बिरनी के उजाड़।
—भइँसी के आगे बीन बजावे भइँसी बैठी पगुराय।
—भइल बीआह मोर करब का?
—भगवान जेकर मुँह चीरेलन, ओकरा दाना भी देलन।
—भजन भोजन एकान्त भला।
—भर गाँव मोर इतिया पितिया, अपने पिसान के लगवलीं लिटिया।
—भर फागुन बुढ़ऊ देवर लागेलन।
—भरल झोरी जोइया के, छूँछ बात भउजइया के।
—भल अदमी के एगो बात, भल घोड़ा के एगो लात।
—भला संग रहबऽ, खइबऽ बीरा पान।
बुरा संग रहबऽ, कटइबऽ दुनु कान॥
—भागलपुर के भगोलिया, कहलगाँव के ठग।
पटना के देवालिया, तीनों नामजद॥
सुनि पावे भोजपुरिया, तऽ तीनों के तूरे रग।
—भात में कोदो के भात, सास में ममियाँ सास।
—भादो भइँसा, चइत चमार।
—भुसहुल के चूअल छव महीना बाद बुझाला।
—भुखाइल बंगाली भात भात।
—भूख में गूलर मेवा।
—भूखे भजन न होय गोपाला लेलऽ आपन कण्ठी माला।
—भूत मारेला ना तऽ सतावेला।
—भूसा कुटला से खीर ना भेंटेला।
—भूल गइलन राजरंग भूल गइलन चौकरी।
तीन चीज याद रहल, नून तेल लकड़ी॥
—भोजपुर में जइहऽ जन, जइहऽ तऽ रहिहऽ जन, रहिहऽ तऽ खइहऽ जन
खइहऽ तऽ सूतिहऽ जन, सूतिहऽ तऽ टोइहऽ जन, टोइहऽ तऽ रोइहऽ जन।
—भोजपुर : बावन गली, तिरपन बाजार, दिया जरे छप्पन हजार।
—भोथड़ हँसुवा अपने ओर खींचेला।
—मँगनी के चन्नन घस रघुनन्दन।
—मँगनी के मरिचा आँख में लगाईं।
—मँगनी के बयल, अँजोरिया राति।

—मँगनी में चँगनी बिलरिया माँगे आधा।

—मंगल पड़े तो लू चले, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहुचें पड़े अकाल॥

—मंगर बुध उत्तर दिसि कालू सोम सनीचर पूरब ना चालू।
जे बिहफै को दक्खिन जाय, बिना गुनाहे पनही खाय॥

—मंगले मउवत ना मिले।

—मँहगा रोये एक बार सस्ता रोये बार-बार।

—मइया के जीव गइया नियर पूत के जीउ कसाई नियर।

—मइल कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कवन संदेह।

—मछरी के पथार बिलाई रखवार।

—मथुरा के बेटी गोकुला के गाय।
करम जरे तऽ अनते जाय॥

—मगही पान पतरी तिरिआ।
बड़े भाग से आवे भीरिआ॥

—माँगे चाँगे काम चले तऽ बियाह करे बलाय।

—माँड़ पीए के बहुत सवाद।

—मांस मछरी आपहु खाय, हत्या ले ले पाहुन जाय।

—माँ मरे मउसी जीए।

—मास खाये तोंद बाढ़े, साग खाये ओझरी।

—माई के पेट, कोंहार के आँवा, कोई करिया कोई गोर।

—माई के जियवा गाई अइसन, पूत के जियवा कसाई अइसन।

—माई धिया गवनहर, बाप पूत बरियाती।

—माई निहारे ठठरी, जोइया निहारे मोटरी।

—माघ के जाड़ा, जेठ में धूप, बिरले खेत में उपजी ऊख।

—माघ पूस जो दखिना चले, तो सावन के लच्छन।

—माघ में बादल लाली धरे, साँचे जानहु पत्थर परे।

—माघा में मक्कर पूरवा घास उतरा में भई सबके नास।

—माघे पूर बहे पुरवाई, तब सरसों के माहुर खाई।

—माटी के घोड़ा, सूत के लगाम।

—माटी के देवता तिलके में ओरइहें।

—माठा घोंटाय ना, पीठा ढकेल।

—माँड़ पिए के बहुत सवाद।

—माय गुन धी पिता गुन घोड़।
नाहीं कुछ तऽ थोड़वो थोड़।
—मार के डर से भूत भागेला।
—मारल चोर, उपासल हीत, फेरू फेरू दुआरे ना लागे।
—मारे ठेहुना, फूटे लिलार।
—मारेल भतार बाकी परोसेला कसार।
—माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, गंगा-जमुना पानी।
रामा कृष्णा मरते देखो, चारो वेद कहानी॥
—मियाँ के दउर महजिदिए तक।
—मियाँ के मिले माँड़ ना खोजस ताड़ी।
—मियाँ से पार न पाई, बिबिआ के बकोटि खाई।
—मिये के थूक, मियें के दाढ़ी।
—मीठ मीठ गप गप, तीत तीत थू थू।
—मुँह अइसन मुँह तिनकोनी, एक लात मार देव चल जइबऽ डेहरी के कोनी।
—मुँह अस मुँह ना, रुपया मुँहदेखाई।
—मुँह देख बीड़ा, चतुर देख पीढ़ा।
—मुँह में दाँत ना पेट में आँत।
—मुँह दुब्बर के मेहरारू, गाँव भर के भउजाई।
—मुँह में राम बगल में छूरी।
—मुँह सुतही मतिन, घूँघट घोंघा अइसन।
—मुअला धान में पानी परल।
—मुअला पर कोदो दरे अइले।
—मुअलो घोड़ा घास खाला।
—मुअलो पर बैद अइले, दाँत चियार के घरे गइले।
—मुरगा ना बोली तऽ का बिहान ना होई।
—मूस मोटइहें लोढ़ा होइहें।
—मुसरी के मुँह में मूसर ना जाई।
—मुसलमान के लइका, भइल तऽ साहजादा।
बिगड़ल तऽ हरमजादा, मुअल तऽ जीनजादा॥
—मूड़ी काट के बाल के रच्छा।
—मूल से ब्याज पियारा होला।
—मेटा घूँचा दियरी घाटी, सभके जरि बाटे कोहरे के माटी।

—मेहरी के झूला ना, बिलाई के गाँती।
—मैदे गेहूँ-ढेले चना।
—मैं मर जइबों, तोहे ना भजइवों, तोहरा के देखि देखि जिअरा जुड़इबों।
—मोर पिया बात न पुछसु, मोर सुहागिन नाँव।
—मोर बबुआ बड़ पण्डित केहू के कहल मनबे ना करसु।
—मोर भइल बिआह, अब करबे का।
—यथा एन्ने तथा वन्ने एन्ने वन्ने तथैव च।
—यही मुँह मसूर के दाल।
—यहे मुहे पान यहे मुहे पनही।
—ये छूँछा के के पूछा?
—रंक राजा पूत प्रजा।
—रण्डी केकर बहू भँडुआ केकर सार।
—रउताइन के दही राजा के भेंट।
—रजपूत अऊरू धान के ओर ना मिले।
—रजपूत जात मुसर के धेनुही, टूटे तऽ टूटे नवे ना कबहीं।
—रवि को पान सोम कर दरपन, मंगर करिय धनियाँ चक्खन।
बुद्ध राई बिरसपत मिठाई, शुक्र कहे मोहि दही सोहाई॥
—रस्सी जल गइल बाकी अइठनि ना गइल।
—रहर के टाटी अउरू अलीगढ़ के ताला।
—रहल करिमना तऽ घर गइल, गइल करिमना तऽ घर गइल।
—रही बाँस ना बाजी बँसुरी।
—रहे के चमार घर, करे के एतबार।
—रहे निरोगी जो कम खाय, बिगरै काम न जो गम खाय।
—राँड़ि का सरपले ले आस।
—राँड़ि कहे जे सब कोई मरो, गाय कहे कि परती परो।
—राँड़ खुस जब सब मरे।
—राँड़ि ना भइली, साँढ़ि भइली।
—राँड़ माँड़े में सुखी।
—राँड़ि, साँढ़ि, सीढ़ी, सन्यासी, एहसे बचे तऽ सेवे कासी।
—राग, रसोइया, पागरी कबो कबो बनि जाई।
—राजा हो राजा नगरिया के मूड़ि;
तू अपना के सोच जेकरा बार होई से उपाई करी।

—राति खाँ भूत से डरसु, नाँव ओझइत।
—रात के बोले कउवा, दिने बोले सियार,
उ गउवाँ होला उजियार।
—रात बहुरिया चाचर खेलस, दिन कउवा देख डरास।
—रात भर मियानी तऽ एक बच्चा बियानी।
—रानी के माँड़ ना, लोकनी के बुनिया।
—राम गति आवे ना, दे माई पोथी।
—राम कहऽ राम कहऽ तोता, राम भजन बिन खइबऽ गोता।
—राम केकरा ना भावे ले।
—राम के बन केकयी के अकलंक।
—रामनगर में रामलीला, डोल डुमराँव।
कोचस में कंसलीला, तजिया ससराँव॥
—राम नाम में आलसी, भोजन में तइयार।
—राम बिना दुःख कवन हरी, बरखा बिनु सागर कवन भरी।
माता बिनु सेवा कवन करी, लछिमी बिनु आदर कवन करी॥
—राम भजे से लड्डू पावे।
—राम भाई पतुकी, सलाम भाई चूल्हा।
—राम मिलवले जोड़ी, एगो आन्हर एगो कोढ़ी।
—राम राम कहत रहऽ, मन में राखऽ चेत,
चारो ओर ताक के, कबारे लागऽ खेत।
—राम राम रटना, चिउरा दही सपना।
—राम लखन नाँव, मुँह कुकुर अइसन।
—रूख ना बिरिछ ताहाँ रेंड़ परधान।
—रुपया तीनि बयल लेव बीनि।
—रोपया तो सेख ना तऽ जोलहा।
—रोये के रहली, आँखिये खोदा गइलि।
—रोये अबरू गावे केकरा ना आवे।
—रोवत गइलें, मुअला के खबरि ले अइलें।
—लंका के जे छोट बड़ से हो उन्चास हाथ के।
—लंगरी बिलार, घर ही में सिकार।
—लँगटा नाचे फाटे का।
—लँगटा परल उघार के पाले।

—लंगा से गंगा हरान रहे ली।
—लउर ना अउर चले, चल मियाँ जगदीसपुर।
—लइका भीरी जाइब ना, जबनका मेरे भाई।
बुढ़वा के तऽ छोड़ब ना, कतनो ओढ़े रजाई॥
—लइकन के दोस्ती ढेला के सनसनाहट।
—लउके हइले ना चसमें चाहीं।
—लउरी कपारे भेंट ना भइला—बाप-बाप गोहरावे लागल।
—लकड़ी के बल मकड़ी नाचे।
—लजाइल लरिका ढोंढी टोबे।
—लड़की आइलि, ना पेठिया लागलि।
—लड़े सिपाही नाँव कपतान के।
—लड्डू लड़े झिल्ली जरे, कायथ बेचारे के पेट भरे।
—लदले छव मन, बेचले नव मन।
—लरिका का बहाने, लरिकोरी जियेले।
—लरिका मालिक बूढ़ देवान।
ममला बिगड़े साँझ बिहान॥
—लरिका घोड़ा, दरे पर बिकाला।
—लाजे भवह बोलस ना, सवादे भसुर छोड़स ना।
—लाठी हाथ के, भाइ साथ के।
—लात के भूत बात से ना मानेला।
—लाद दऽ लदवा दऽ रेखा घाट पहुँचा दऽ।
—लाल पीअर जब होय अकास, तब ना बा बरखा के आस।
—लाल लूगा फाटि जाई चमकल मेटि जाई।
—लाला के मकान के ओरी बहारल जाला।
—लाला के लावा कोइरिये खाय।
—लिखसु रहीम पढ़सु करीम।
—लुग्गा नव दिन लुगरी बरिस दिन।
—लूट में चखें नफा।
—लूट के लाए कूट के खाए।
—ले लुगरिया, चल डुमरिया।
—ले लुगरिया, चल बजरिया।
—लोटा न थारी फटकचन्द गिरधारी।

—लोढ़वो कहे महादेव के भाई।

—लोहइनि के बचल कोहइनि ले के सती होई।

—लोहा से लोहा कटेला।

—लोभी गुरु लालची चेला
दुनू नरक में ठेलमठेला।

—लोभी घर में ठग उपास।

—लोहा के लोहा काटे अउर जात के जात।

—लोहो करस बड़ाई जे हमहूँ सम्भुनाथ के भाई।

—लोहा के सहताई, सियार गढ़वले टाँगा।

—लोहा तामें अइसन, तऽ सोने-चानी में कइसन।

—लौटल सुहाग हाँक पिया माँछी।

—वक्त परे पर जानिल के बैरी के हीत।

—वक्त पड़े बाँका तो गदहे को कहे काका।

—शनि अढ़ाई मंगल तीन, रवि गुर रहे आठो दीन।

—शेर के जूठ गीदर खाला।

—सँइया अस कहीं तऽ नतवे टूटे।
भइया अस कहीं तऽ सेजिए छूटे॥

—संख बाजे बलाय भागे, मुदई के मुँह कारिख लागे।

—संगे संगे लँगरो, देवाल फानेली।

—संग घोड़ा पैदल चले, तीर चलावे बीन।
थाती धरे दमाद घर, जग में भकुआ तीन॥

—सइ गुण्डा एक मोछमुण्डा।

—सइ घर में एक घर डाइनों बकसेले।

—सइ पुराचरन ना एक हूरा चरन।

—सइ चूहा खाइके, बिलारि भइली भगतिन।

—सइ चोट सोनार के, एके चोट लोहार के।

—सइ वक्ता ना एक चुप्पा।

—सइ में सूर हजार में काना, सवा लाख में अइँचा ताना।
अइँचा ताना कहे पुकार, कजरा से रहिअऽ होसिआर॥

—सइयाँ के अरजल भइया के नाँव।
चोलिया पहिरि हम जाएब ससुरारि॥

—सइयाँ भइले कोतवाल, अब डर काहे के।

—सइ हत्या बाघ मराला।

—सगरे खीरा खाके भेंटी तीत।

—सगरे गाँव पराइल जाय, घूरा बहू कहस जे मँगिये हीक दऽ।

—सगरे रमायन हो गइल सीता केकर जोरू।

—सती आपन मान राखसु तऽ आन के रखिहें।

—सती सती समझावे सती न होखे पावे।

—सत्तर चूहा खाके बिल्ली चलली दुअरिका।

—सब धान साढ़े बाइसे पसेरी।

—साइत से सुतार भला।

—सात पाँच के लाठी एक अदिमी के बोझ।

—साधु के नेवान ना, चोरन के दँवरी।

—साधे घोड़ी बिअइली पाड़ा।

—साव के दाव हाट में, चोर के दाव घाट में।

—सावन के आन्हर के हरियरे सूझेला।

—सावन पछवा महि भरे, भादो पुरवा पाथर पड़े।

—सावन पुरवाई बहै, भादो में पछियाव।
कन्त डगरवा बेंचि के, लरिका भागि जिआवऽ॥

—सावन पछुआ सींकि डोलावे, बरसत मेघ कवन बिलगावे।

—सावन मासे बहे पुरबइया, बरधा बेचि लीह धेनु गइया।

—सावन में जमले सियार, भादो में अइलि बाढ़ि।
बाप रे बाप अइसन बाढ़ कबहुँ ना देखली॥

—सावन में ससुरारी गए पूस में खाए पूआ।
चइत में छैला पूछत डोलें, तोहरो कतना हुआ॥

—सावन से भादवे दूबर।

—सावन सुक्ला सत्तमी, छपि के उगहि भान।
तो लगि मेघा बरसे, जो लगि देव उठान॥

—सावाँ साठी साठि दिन, बरखा होखे रात दिन।

—सावाँ सोहले, बुरिबक सरहले।

—सास के ओढ़ना पतोह के बिछौना।

—सास के हाथे खपल तऽ खपल, अब पतोह के हाथे खपऽ तऽ जानी।

—साहु बटोरे कौड़ी कौड़ी, राम बटोरे कुप्पा।

—सिंहा गरजे, हथिया लरजे।

—सिखावलि बुधि अढ़ाई घरी।
—सिंघरी चाल चले रोहु का सिरे बीती।
—सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गँवार का।
—सुधा के मुँह कुत्ता चाटे।
—सींघ मुड़े माथा उठा, मुँह का होवै गोल।
रोम नरम चंचल करन तेज बैल अनमोल॥
—सुअर के बाचा धरऽ तब काँई काँई, मारऽ तब काँई-काँई।
—सुख चाहे खेती करे, धन चाहे बयपार।
—सुख दुख गइल बिसरि जब जामल तीसर।
—सुखी होय के पान न खाई, दुखी हो के नून न खाई,
सेकर जनम अकारथ जाई।
—सुख सम्पत के सब कोई साथी।
—सुखे सिहुला दुखे दिनाय।
—सूखल रोटी अइसन तऽ नूने तेल कइसन ?
—सूखी के सिंगार, भूखे के आहार।
—सगरे के सौव, भोजपुर के नौव।
—सूते रजपूत उठे अजगूत।
—सूप हँसे तो हँसे चलनिओ हँसे जवना का सहसरि गो छेद।
—सूमिन पूछे सूम से काहे बदन मलीन।
का गाँठी ना गिर पड़ा, का काहू को दीन।
ना गाँठी का गिर पड़ा, ना काहू कछु दीन।
देत लेत पर देखिया, तातें बदन मलीन॥
—सूरदास के काली कामरि चढ़े ना दूजो रंग।
—सूरदास मनमौजी मेहरी के कहें भौजी।
—सेतिहाँ के गंगा हरामी के गोता।
—सेतिहाँ के चिउरा भर भर गाल।
—सेर के जवाब सवा सेर।
—सेर भर चिउरा घर भर भोज।
—सेर सूते पउवा जागे छटँकी के छटपटी बरे।
—सोझे अँगुरी घीव ना निकले।
—सोझिया के मुँह कुकुर चाटे।
—सोनरा के ठुकुर ठुकुर लोहरा के ठाँय दे।

—सोना के अँगुठी, पीतल के टाँका, माई छिनरी पूत बाँका।
—सोना के पावल भुलाइल दूनो बुरा होला।
—सोना जाने कसे, मनई जाने बसे।
—सोना सोनार के, अबरन संसार के।
—सोम सुकवा रवि गुरु जब जब सभा बइठिहे।
चार दिन के भीतरे घुम घुम देउआ बरिसिहें॥
—सौ दिन चोर के, तऽ एक दिन साह के।
—सौ पग चले खाय के जोई, ताको बैद न पूछे कोई।
—सौ पर फूली हजार पर काना, सवा लाख पर ऐंचाताना।
—सौ मुँह एक ओर एक मुँह चुप्पा।
—सौ में फूली सहसर में काना, सवा लाख में ऐंचाताना।
ऐंचाताना कहे पुकार, बिलरँखा से रहियो होसियार॥
—सौ सौ जूता खाय तबहूँ तमासा पइस के देखे।
—हंसा चले भाग केहुना संगे लाग।
—हँसुआ अपने ओर खिंचेला।
—हँसुआ के बिआह, खुरपा के गीत।
—हँसुआ चोख ना, खुरपा भोथर।
—हईं जनाना, भेख मरदाना।
—हड़बड़ी में बिआह, कनपटी में सेनुर।
—हती चूके बाछी कान गइलि गाछि।
—हतेया मँगरे चढ़ि चिल्लाय।
—हत्या के भरोसे गाय खेत खाली।
—हथिया झरे आ चितरा मँड़राय, घर भइठल गिरहथ अगराय।
—हथिया पूँछ डोलावे घर बइठे गेहूँ आवे।
—हथिया बरसे चितरा घहराई घर में बैइठि के धनहा अगराइ।
—हम करीं अनकर हमरा के करे कमकर।
—हम चराईं डिल्ली हमरा के चरावे पिल्ली।
—हम अपना छान्ही पर होरहा लगाइबि, तोहार का।
—हम बउरहिया आग कहाँ से पाइब।
—हमरा माथ में केतना बार?
मालिक आगहीं गिरता।
—हमरा किहँवा अइबऽ तऽ का ले अइबऽ,

तहरा किहाँ जाइबि तऽका खिअइबऽ।
—हमरा के केहु ना मारे, तऽ हम सनसार के मारि आई।
—हम राजा तू रानी, के भरी गगरी से पानी।
—हम लरकोरी तू अलवाँति, दूनो परोसा लइहऽ जाँत।
—हमार काका पहलवान नूँ हवे।
—हमार दादा घीव खात रहलें, देख हमार बाँहि महँकति आ।
—हरनट्ठ देवता, भरनट्ठ पूजा।
—हर्रे लागे ना फिटकिरी, आवे चोखा रंग।
—हर हेंगा में अइसन तइसन, पंगुरी में रंथ।
—हराम के कमाई हराम में गँवाई।
—हाँजी हाँजी सबसे कहिए करिए अपने मन की।
—हाथी के दाँत खाए के अउर, दिखावे के अउर।
—हाथी के पैर में सभ के पैर।
—हाथी के बोझ हाथी सम्हारे।
—हाथी चलले बजार, कुकुर भूँकसु हजार।
—हाथी भुलाला तऽ चूका में खोजाला।
—हाथे धनुही कान्हे बान कहाँ चले डिल्ली सुलतान।
—हाथो तर से गइल, लातो तर से गइल।
—हारल बैला हारल आवे, छूँछ बैला कँहरत आवे।
—हींगु ओराइ जाले बाकी ओकर गमक ना ओराला।
—हींड़ल पोखर केहू, मछली मारल दोसर केहू।
—हीले रोजी, बहाने मउअत।
—हेल बाँड़ा हेल आतऽ पोंछि अलगले बानी।
—हेहर के हाँथे जामल रूख, बइठे के छाँह भइल।
—होत बियाह विपत के नेवता।
—होली के भड़ुआ बेंचे तेल कड़ुआ।

●

## ( ब )

# घाघ के बोल : सीख अनमोल

भोजपुरी जगत् में 'इसुरी' अपनी फाग के लिए, 'विसराम' अपने 'बिरहा' के लिए तथा 'घाघ' अपने बोल के लिए प्रसिद्ध हैं। अल्पायु में ही घाघ ने एक सीख दी—

आधा खेत बटैया देके, ऊँची दीह कियारी।
जो तोर लइका भूखे मरिहें, घघवे दीह गारी॥

घाघ और उनकी पुत्रवधू के बीच नोंक-झोंक की निम्नलिखित पंक्तियाँ नारी सशक्तिकरण के प्रमाण हैं—

**घाघ** -

मुये चाम से चाम कटावै, भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा उढ़रि जाइँ पै रोवै॥

**पुत्रवधू** -

दाम देइ के चाम कटावै, नींद लागि जब सोवै।
काम के मारे उढ़रि गई जब समुझि आइ तब रौवै॥

**घाघ** -

तरुन तिया होइ अँगने सोवै रन में चढ़ि के छत्री रौवै।
साँझे सतुवा करै बियारी घाघ मरै उनकर महतारी॥

**पुत्रवधू** -

पतिव्रता होइ अँगने सौवै बिना अस्त्र के छत्री रोवै।
भूख लागि जब करै बियारी मरै घाघ ही के महतारी॥

**घाघ** -

बिन गौने ससुरारी जाय बिना माघ घिउ खींचरि खाय।
बिन वर्षा के पहनै पउवा घाघ कहैं ये तीनों कउवा॥

**पुत्रवधू** -

काम परे ससुरारी जाय मन चाहे घिउ खींचरि खाय।
करै जोग तो पहिरे पउवा कहै पतोहू घाघे कउवा॥

**घाघ –**

पातर दुलहा मोटलि जोय, घाघ कहें रस कहाँ से होय।

**पुत्रवधू –**

घाघ दहिजरा अस कस कहे, पाती ऊँख बहुत रस रहे।

## उत्तम खेती

उत्तम खेती मध्यम बान।
निरधिन सेवा भीख निदान॥

**शब्दार्थ**—बान = वाणिज्य, बनिज, व्यापार। निरधिन = निषिद्ध। निदान = अन्तिम, निन्दनीय।

उत्तम खेती जो हर गहा।
मध्यम खेती जो सँग रहा॥

उड़द मोठ की खेती करिहौ।
कुण्डा तोड़ ऊसर में धरिहौ॥

खेती वह जो खड़े रखावै।
सूनी खेती हरिना खावै॥

खेती कर अधिया, बैल न बधिया।

खेती तो थोरी करै, मिहनत करे सिवाय।
राम कहें वहि मनुष को, टोटा कबौं न आय॥

खेती तो उनकी, जो करे अहान-अहान।
और उनकी क्या खेती, जो देखें साँझ बिहान॥

(अहान-अहान = निगरानी, देखभाल।)

खेती करै साँझ घर सोवै।
काटै चोर हाथ धरि रोवै॥

खेती करै तो अपने बहै।
ना तो जाय कन्हौड़े रहै॥

(बहै = बहो, करो ('बहाना' क्रिया सकर्मक)। कन्हौड़े = कन्धे पर सवार रहना, मुस्तैदी, निगरानी।)

तिल कोरे उर्द बिलोरे॥

तेरह कार्तिक तीन अषाढ़।
जो चूका सो गया बजार॥

पूरी खेती स्वयं सेती।
आधी केकी? जो देखै तेकी।
बिगड़ै केकी? घर बैठे पूछे तेकी॥

बहुत करै सो और को।
थोड़ी करै सो आपको॥

मास असाढ़ जो गवहीं कीन्ह।
ताकी खेती होवै हीन॥

अगसर खेती अगसर मार।
घाघ कहैं ते कबहूँ न हार॥

यकसर खेती यकसर मार।
घाघ कहै ये सदहूँ हार॥

बैल चमकना जोत में, और चमकीली नार।
ये बैरी हैं जान के, कुशल करें करतार॥

आपन-आपन सब कोई होई, दुख में नाहिं सँघाती कोई।
अन्ने वस्त्र खातिर झगड़न्त, घाघ कहैं यह बिपतिक अन्त॥

फूटे से बहि जातु हैं, ढोल गँवार अङ्गार।
फूटे से बनि जातु हैं, फूट कपास अनार॥

गया पेड़ जब बगुला बैठा, गया गेह जब मुड़िया पैठा।
गया राज जहँ राजा लोभी, गया खेत जहँ जामी गोभी॥

सावन सोवे ससुर घर, भादो खाये पूआ।
खेत-खेत में पूछत डोलै, तोहरे केतिक हूआ॥

## खाद का महत्त्व

खेती करै खाद से भरै।
सो अन कोठिला में धरै॥

गोबर मैला नीम की खली।
इससे खेती दूनी फली॥

खाद पड़े तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत॥

जेकरे खेत पड़ा नहिं गोबर।
उस किसान को जानो दूबर॥

गोबर मैला पाती सड़े।
तब खेती में दाना पड़े॥

खादी कूरा ना टरै, कर्म लिखा टर जाय।

गोबर चोकर चँकवर रूसा।
उनको छोड़े होय न भूसा॥

खेते पाँसा जो न किसान।
उसको करे दरिद्र समान॥

तीन कियारी तेरह गोड़।
तब देखो ऊखी कै पोर॥

थोर जुताई बहुत हेंगाई, ऊँचा बाँधे आरी।
उपजै तो उपजे नहीं, घाघै देवैं गारी॥

जौ हल जोतै खेती बाकी।
और नहीं तो जाकी ताकी॥

दस बाँह का गाड़ा।
बीस बाहों का माड़ा॥

बाहें क्यों न असाढ़ एक बार।
अबका बाहें बार बार॥

बाली छोटी भई काहें।
बिना असाढ़ के दो बाहें॥

गेहूँ भवा काहें, असाढ़ के दुइ बाहें।
गेहूँ भवा काहें, सोलह बाहें नौ गाहें॥

गेहूँ भवा काहें ? सोलह बाहें बाहें।
गेहूँ भवा काहें ? कार्तिक के चौबाहें॥

गहिर न जोतै बोवै किसान।
सो घर कोठिला भरै धान॥

कच्चा खेत न जोतै कोई।
नाहीं बीज न अंकुर होई॥

कहाँ होय बहु बाहें, जोता जाय न थाहें॥

कार्तिक मास रात हल जोतौ।
टाँग पसारे घर मत सूतौ॥

चिरैया में चीर फार।
असरेखा में टार-टार।
मघा में कांदो सार॥

सावन शुक्ला सप्तमी, उगत न दीखे भान।
तब लगि देव बरीसिहैं, जब लगि देव उठान॥

हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल।
चढ़त सेवाती झपा झूल॥

हँसुवा ठाकुर खसुआ चोर।
इन्हें ससुरवन गहिरे बोर॥

हरहट नारी बास एकाह।
परुवा बरद सुहुत हरवाह॥
रोगी हाथ होय इकलन्त।
कहैं घाघ ई बिपति क अन्त॥

उत्तर चमकै बीजुरी, पूरब बहती बाउ।
घाघ कहैं सुन भड्डुरी, बरधा भीतर लाउ॥

आवत आदर ना कियो, जात न दीनो हस्त।
ये दोऊ पछितात हैं, पाहुन औ गिरहस्त॥

औआ बौआ बहै बतास।
तब होवे बरखा कै आस॥

खन पुरवैया खन पछियाव।
खन-खन बहै बबूरा बाय।
जो बादर-बादर में जाय।
घाघ कहैं जल कहाँ समाय॥

करिया बादल जिउ डेरवावै।
धवरे बदरे पानी आवै॥

वायु में वायु समाय।
घाघ कहैं जल कहाँ समाय॥

पुरवा में पछियाँ बहै।
हँसिके नारि पुरुष से कहै॥
ऊ बरसे ई करे भतार।
घाघ कहैं यह सगुन विचार॥

रोहिन बरसे मृग तपे, कुछ-कुछ अद्रा जाय।
घाघ कहैं घाघिन से, स्वान भात नहिं खाय॥

लाल पियर जब होय अकास।
तब नहीं रखे बरखा की आस॥

सब दिन बरसै दखिना बाय।
कभी न बरसै बरखा पाय॥

माघ पूस जो दखिना चले।
तो सावन के लच्छन भले॥

घर की खुनुस और जर की भूख, छोट दमाद बराहे ऊख।
दूबर खेती बउरहा भाय, घाघ कहैं दुख कहा न जाय॥

घर घोड़ा पैदल चले, तीर चलावै बीन।
थाती धरै दमाद घर, जग में भकुआ तीन॥

साँझे से परि रहती खाट, पड़ी भंड़ेहर बाहर घाट।
घर आँगन सब घिन-घिन होय, घाघ गहिरे देव डुबोय॥

अतरे-खोतरे डण्ड करै, ताल नहाय ओसमाँ परै।
देव न मारे आपुई मरै॥
(अतरे-खोतरे = नागा देकर, कभी-कभी। डण्ड = कसरत। ताल = तालाब।)

विप्र टहलुआ चीक धन औ बेटी की बाढ़।
याहू पर धन ना घटै तो करै बड़न से राढ़॥

आमा नींबू बानियाँ, गर चाँपे रस देयँ।
कायथ कौआ ककहरा, मुर्दाहू से लेयँ॥

अहिर मिताई, बादर छाही।
होवै होवै, तो नहिं नाहीं॥

प्रातकाल खटिया से उठि के, पियै तुरन्तै पानी।
ता घर बैद कभी ना आवै, बात घाघ के जानी॥

बिन बैलन खेती करे, बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार॥

आठ कठौती मट्ठा पीवै, सोरह मँकुनी खाय।
वाके मरे न रोइये, घर का दारिद जाय॥

बिगड़ विराने जो रहै, मानै तिय की सीख।
तीनों योहीं जायेंगे, पाही बोवै ईख॥

काँटा बुरा करील का, जों बदरी का घाम।
सौत बुरी है चूस की, और साझे का काम॥

उधार काढ़ि ब्योपार चलावै, छप्पर डारै तारो।
सारे के संग बहिन पठावै, तीनों के मुँह कारो॥

बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजै अपने कर्मा॥

कलियुग में दुई भगत हैं, बैरागी और ऊँट।
वे तुलसीवन काटहीं, ये किये पीपर ठूँठ॥

चाकर चोर राज बेपीर, कहैं घाघ का राखै धीर॥

जेहि घर साला सारथी, तिरिया की हो सीख।
सावन में बिन हल लवे, तीनों माँगे भीख॥

आलस नींद किसानै नासै, चोरै नासै खाँसी।
अँखियाँ लीबर बेसवै नासै, बाबै नासै दासी॥

परहथ बनिज सदेशे खेती, बिन वर देखे ब्याहे बेटी।
द्वार पराये गाड़े थाती, ये चारों मिलि पीटैं छाती॥
(परहथ = पराये के हाथ में। बनिज = व्यापार, रोजगार। थाती = धन।)

बनियाँ क सखरज ठकुर क हीन।
बैद क पूत ब्याधि नहिं चीन॥
पंडित चुपचुप बेस्वा मइल।
कहैं घाघ पाँचों घर गइल॥

(सखरज = शाहखर्च। ठकुर क = ठाकुर का, क्षत्रिय का लड़का। ब्याधि = रोग। बेस्वा = वेश्या।)

नारि करकसा कटहा घोर, हाकिम होइ के खाई अँकोर।
कपटी मित्र पुत्र हो चोर, घग्घा इनको गहिरे बोर॥

## गृहस्थ के बारह बकार

बाँस, बाँध, बिगहा, बिया, बारी, बेटा बैल।
ब्योहार, बढ़ई, बन, बबूर, बात सुनो यह छैल॥
जो बकार बारह बसै, सो पूरन गृहस्थ।
औरन को सुख दे सदा, आप रहैं अलमस्त॥

बैल बगौधा निरधिन जोय।
ता घर ओरहन कबहूँ न होय॥

जेकरे ऊँचा बैठका, जेकर खेत निचान।
ओकर बैरी का करै, जेकर मीत दिवान॥

ऊँच अटारी मधुर बतासा।
घाघ कहैं घरहीं कैलासा॥

जहाँ चारि काछी, उहाँ बात ओछी।
जहाँ चारि कोरी, उहाँ बात ओरी॥
जहाँ चारि भुँजी, उहाँ बात ऊँझी॥
(काछी = अच्छी। कोरी = इस नामकी एक जाति। ऊँझी = उलझी हुई।)

चोर, जुआरी गठकटर, जार और नार छिनार।
सौ सौगन्धे खाय जौं, घाघ न करु इतवार॥

कोपै दई मेघ ना होय, खेती सूखै नैहर जोय।
पूत विदेश खाटपर, कहैं घाघ ई विपति क अन्त॥

भुइयाँ खेड़े हर हों चार।
घर हो गिहथिन गऊ दुधार॥
रहर की दाल जड़हन कै भात।
गागल निबुआ और घिउ तात॥
दही खाँड़ जो घर में होय।
बाँके नैन परोसै जोय॥
कहैं घाघ तब सबही झूठा।
उहाँ छाँड़ि इहवैं वैकुण्ठा॥

तीन बैल दुइ मेहरी।
काल बैठ या डेहरी॥

जोइगर बँसगर बुझगर भाई।
तिय सतवन्ती नीक सुहाई॥
धन पुत हो मन होय विचार।
कहैं घाघ ई सुक्ख अपार॥

ना अति बरषा ना अति धूप।
ना अति बकता ना अति चूप॥

खाइके मूतै सूतै बाऊँ। काहै बैद बसावै गाऊँ॥

मारि के टरि रहै, खाय के परि रहै॥

बूढ़ा बैल बेसाहै, झीना कापड़ लेय।
आपुन करै नसौनी, दैवे दूषण देय॥

खेती पाती बीनती और घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिये तब जीव रहे आनन्द॥

छज्जे की बैठक बुरी, परछाहीं की छाँह।
नियरे का रसिया बुरा, नित उठि पकरै बाँह॥

लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान।
मामिला बिगड़ै साँझ बिहान॥

निहपछ राजा मन हो हाथ। साधु परोसी नीमन साथ।
हुकुमी पुत्र धिया सतवार। तिरिया भाई रखै विचार।
कहैं घाघ हम करत विचार। बड़े भाग से दें करतार॥

जेहिकी छाती होय न बार।
ओहिसे सदा रहो हुशियार॥

एक तो बसा सड़क पर गाँव, दूजे बड़े बड़न में नाव।
तीजे पड़े दरब से हीन, घग्घा हमको विपदा तीन॥

खेती करैं बनिज को धावैं, ऐसा डूबै थाह न पावै॥

कोरी संचै तीतर खाय, पापी को धन पर ले जाय॥

●

परिशिष्ट - II

# मुहावरा

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ परस्पर वार्तालाप, सवाल-जवाब करना है। उर्दू में इसे 'तर्जे कलाम', 'इस्तलाह' और 'रोजमर्रा' कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'ईडियम' कहा गया है। मुहावरे वाक्यांश या पदबंध होते हैं, ये हमारी भाषा को अधिक प्रभावपूर्ण बना देते हैं। ये सार्थक और सटीक होते हैं। सरलता, सरसता, चमत्कार, विलक्षणता, प्रवाह के चलते मुहावरे जन-मानस के सन्निकट हैं।

**अंग लगावल** - लिपटा लेना, गले लगाना।

**अंगार उगिलल** - कठोर बातें कहना।

**अंडा सेवल** - बहुत देखभाल करना।

**अंत पावल** - भेद पाना।

**अधजल गगरी छलकत जाय** - कम ज्ञान और बोल बड़ा।

**अपने त इरीविरी, अनका के खीर-पुड़ी** - असाध्य कार्यो का प्रयास।

**आँख खुलल** - ख्याल करना।

**आँख दिखावल** - धमकाना।

**आँख के तारा** - अत्यन्त प्यारा।

**आँख के आन्हर, नाम नयनसुख** - प्रतिकूलता का प्रतीक।

**आग भइल** - क्रोधित होना।

**आगे नाथ, ना पीछे पगहा** - स्वच्छन्द।

**आनकर पूत, आनका लेखे भूत** - स्वार्थजनित अवहेलना।

**आन्हरा में काना राजा** - अयोग्यता में योग्यता।

**आन्ही के आम भइल** - बहुत सस्ता।

**ईहा ना लागि, राउर माया** - छल-छद्म निरर्थक सिद्ध।

**ईमान बेंचल** - बेईमान होना।

**ईमान से कहल** - सच कहना।

**ऊँगली पर नचावल** - परेशान करना।

**ऊँचा सुनल** - कुछ कम सुनना।

**ऊँट के मुँह में जीरा** - अत्यल्प मात्रा होना।

**एक आँख से देखल** - एक-सा समझना।

**एक त गिरनी गाछ से, दोसर मरलस मेहरी** - विपत्ति पर विपत्ति।

**एक त गउरा अपने गोर, दोसर लेहली कमरी ओढ़** - अति कुरूपता।

**एक तो करैला अपने तीत, दोसर चढ़ नीम पर** - विकृति।
**ओखरी में माथा त मूसर के का डर** - परिणाम का क्या भय।
**कउआ अस गोर भइल** - काला होना।
**कपार फूटल** - भाग्य फूटना।
**कमर कसल** - निश्चय करना।
**करम फूटल** - भाग्यहीन होना।
**करिया आखर भईंस बराबर** - निरक्षर होना।
**कागद के घोड़ा दौड़ावल** - लिखा-पढ़ी करना।
**कानी गईया के अलगे बथान** - दोषयुक्त व्यक्ति का दुराग्रह।
**कान पाकल** - ऊब जाना।
**कान भरल** - शिकायत करना।
**कुकुर भइल** - लालची होना।
**कोदो देके पढ़ल** - बिना व्यय किए पढ़ना।
**कौड़ी के तीन भइल** - कुछ भी इज्जत न होना।
**कौड़ी-कौड़ी जोड़ल** - थोड़ा-थोड़ा संचय करना।
**खटाई में पड़ल** - दुविधा में पड़ल।
**खराद पर चढ़ल** - काबू में आना।
**खाक छानल** - बहुत खोजना।
**खा-पका गईल** - बर्बाद कर देना।
**खिचड़ी पकल** - गुप्त रूप से सलाह करना।
**खून उबलल** - बहुत क्रोधित हो जाना।
**खोपड़ी खाइल** - व्यर्थ बकवाद करना।
**ख्याली पोलाव पकावल** - असम्भव बात सोचना।
**गंगा लाभ लिहल** - मरना।
**गया-गुजरा** - अधम।
**गाछे कटहर, ओठे तेल** - अस्वाभाविक आकांक्षा।
**गाजर-मूली समझल** - तुच्छ मानना।
**गाल बजावल** - बढ़-चढ़कर बातें करना।
**गाय ना बाछा, नींद परे आच्छा** - चिन्तामुक्त।
**गुड़ गोबर भइल** - काम बिगाड़ना।
**गुड़ खाय, गुलगुला से परहेज** - मिथ्या दिखावा।
**गोबर गनेस भइल** - मूर्ख होना।
**घंटा हिलावल** - व्यर्थ का काम करना।

**घर के भेदी लंका ढाहे** - स्वजनों से धोखा।

**घर के जोगी जोगड़ा, आन गाँव के सिद्ध** - अपनों के बजाय दूसरों को अवांछित सम्मान देना।

**घर के मुर्गी दाल बराबर** - सहज उपलब्धि को महत्त्वहीन मानना।

**घर फूटे, गँवार लूटे** - आपसी द्वेष सहज पतन का कारण।

**घीव के लड्डू टेढ़ो भला** - अच्छाई की छोटी त्रुटि अनदेखी योग्य।

**घोर के पी घालल** - अन्याय करना।

**चकनाचूर कइल** - टुकड़े-टुकड़े करना।

**चकमा दिहल** - धोखा देना।

**चींटी के चाल** - धीमी गति।

**चेला मुड़ल** - चेला बनाना।

**छक्का-पंजा** - दाव-पेंच।

**छुछुन्दर के माथे चमेली के तेल** - अवांछित सत्कार।

**छाती जुड़ाइल** - इच्छा पूरी होना।

**छेद निकालल** - बुराई खोजना।

**छोट मुँह बड़ बात** - अनाधिकारिक प्रयास।

**जहाँ गाछ ना बिरिछ, उहाँ रेंड़ प्रधान** - जहाँ विद्वान् नहीं, वहाँ मूर्ख भी सम्मानित।

**जहाँ बड़बड़ ढोल, तहाँ टिमकी के मोल** - समर्थवान के समक्ष असमर्थ का क्या महत्त्व।

**जान न पहचान, हम तहार मेहमान** - अवांछित सम्मान की अपेक्षा।

**जीभ से पानी चूअल** - लालच होना।

**जे रोगिया के भावे, से, बयदा फरमाए** - मनोनुकूल स्थिति की अपेक्षा।

**झंझट बेसाहल** - झगड़ा करना।

**झक-झक कइल** - हुज्जत करना।

**झख मारल** - बेकार बैठना।

**टंट-घंट कइल** - पूजा-पाठ का आडम्बर करना।

**टकटकी बाँधल** - ध्यान देना।

**टरटर कइल** - बकवास करना।

**टाल मटोल कइल** - टाल देना।

**टुम-टाम** - सजावट।

**टेढ़ी खीर** - कठिन काम।

**टोपी उछालल** - अपमान करना।

**ठीकरा समझल** - तुच्छ समझना।

**ठोकर खाइल** - इधर-उधर मारा-फिरना।

**डंका बजल** - मशहूर होना।
**डकार गइल** - रकम पचा लेना।
**तबीयत लागल** - दिल लगना।
**तलवा चाटल** - चापलूसी करना।
**तूल देहल** - बढ़ाना।
**थपड़ी पीटल** - मजाक करना।
**दंग रह गइल** - हैरत में पड़ना।
**दलदल में फँसल** - झंझट में फँसना।
**दिमाग अकासे चढ़ल** - गर्व होना।
**धन्ना सेठ** - बहुत धनी।
**धुन के पक्का** - तहे दिल काम करने वाला।
**धूल फाँकल** - धोखा खाना।
**नजर से गिरल** - अपमानित होना।
**नाक के बाल** - घनिष्ठ मित्र
**नाक कटल** - इज्जत खत्म होना।
**नाकि में पानी कइल** - परेशान करना।
**नागिन नियर डसल** - चुपके से नुकसान पहुँचा देना।
**नेनुआ के बतिया बूझल** - बिलकुल निर्बल समझना।
**पंजा में कइल** - कब्जे में करना।
**पतवार भइल** - सहारा होना।
**पानी उतारल** - इज्जत उतारना।
**पानी-पानी भइल** - बेइज्जत होना।
**पानी चढ़ावल** - उत्तेजित करना।
**पानी थाहल** - अन्दाज लेना।
**पानी पीके जात पूछल** - ढोंग करना।
**पीठ दिखावल** - हार कर भाग जाना।
**पेट में आग लागल** - बहुत भूख लगना।
**फरफंद रचल** - माया फैलाना।
**फूटी आँख न देखल** - जलना, कुढ़ना।
**फेर फार के बात** - चालाकी की बात।
**बईठल बनियाँ का करे, एह कोठी के दान ओह कोठी करे** - बेकार व्यक्ति की व्यर्थ काम में तल्लीनता।
**बड़ाई के पुलि बान्हल** - प्रशंसा करना।

**बूड़ि के पानी पीयल** – चालाकी करना।

**बरवो के भाई, कनिअवो के भाई** – ढुलमुल नीति वाला।

**बाप के नाम सागपात, पूत के नाम परोरा** – झूठे दिखावे का दम्भ करना।

**बिच्छी के मंतर ना जाने साँप के बिल में हाथ** – मूर्खतापूर्ण।

**बेड़ा पार लगावल** – काम पूरा करा देना।

**बैल भइल** – मूर्ख होना।

**भईल बिआह मोर, करबे का** – काम निकलने पर अँगूठा दिखाना।

**भर घर देवर, भतार से ठाठा** – अस्वाभाविक व्यवहार।

**भुखले भजन ना होई भुआला, ले ल आपन कंठीमाला** – निस्वार्थ भगवान् का भजन सम्भव नहीं।

**मझधार में पड़ल** – आफत में पड़ना।

**माठा घोंटाय ना, पीठा ढकेलीं** – असाध्य कार्य का व्यर्थ प्रयास।

**मारे गईले मेहरी, ठेठावे लगले डेहरी** – झूठ प्रदर्शन।

**मुँह में राम, बगल में छूरी** – विश्वासघात करना।

**रंग जमल** – असर डालना।

**रंग में भंग पड़ल** – आनन्द में बाधा पड़ना।

**रंगल सियार भइल** – ढोंगी भइल।

**लकीर के फकीर** – परम्परावादी।

**लहू पीके रह गइल** – गुस्से को मन में रखना।

**लाख टका के बात** – उपयोगी बात।

**लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर** – मूर्ख।

**लोहा मानल** – प्रभुत्व स्वीकारना।

**वजन राखल** – महत्त्व देना।

**सब धान साढ़े बाईस पसेरी** – सही मूल्यांकन में असमर्थ।

**सराहल बहुरिया डोम घरे गईली** – प्रशंसा विनाश का कारण।

**सुधा के मुँह कुकुर चाटे** – अति भोलापन कष्टकर।

**सांड़ भइल** – बल दिखाना।

**सूखि के पुआर भइल** – दुर्बल होना।

**हवा से लड़ल** – व्यर्थ लड़ना।

**हाथ के मइल** – तुच्छ वस्तु।

**हाय-हाय मचावल** – शिकायत करना।

**हुलिया बिगाड़ल** – दुर्दशा करना।

●

परिशिष्ट - III

# पहेली

गूढ़ार्थ, प्रश्नदूती, समस्या-पूर्ति एवं पहेली बुद्धि-कौशल एवं सूझ-बूझ का पर्याय है। वक्ता पहेलियाँ बुझवाकर दूसरे की परीक्षा लेता है। तर्क-वितर्क, परख-शक्ति एवं मनोरंजन की पीठिका यही है। लोक-यात्रा की सफलता में पहेली, कूट, मुकरी, बुझौवल की कोई सानी नहीं है, किन्तु कष्ट है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लोक-मानस की जीवन्तता को हतप्रभ करने को उतारू है। अपनी थाती बची रहे—इसी शुभ संकल्प के साथ महत्त्वपूर्ण पहेली प्रस्तुत है—

— अँगना में कचबच, बारी में तऽ हइए ना;
अस फल खइहऽ कि ओकरा बोकला त हइए ना। [ ओला ]

— अगल-बगल खूँटा, गाय मरखनी दूध मीठा। [ सिंघाड़ा ]

— आड़ी है गाड़ी, पहाड़ पर चढ़ी।
मरदा पर मउगी झमाक से चढ़ी। [ पालकी ]

— ई त्रेता के अजगुत बात,
बे दूलहा के गइल बरात। **[ राम की बारात, राम पहले ही से वहाँ थे। ]**

— ऊपर आगि नीचे पानी, बीच में बइठे पंडित ज्ञानी।
ई बुझौवल बूझे से बड़ा गियानी। [ हुक्का-चिलम ]

— ऊपर से चित कइनी, जेतना मन औंतना धँगनी। [ सील-बट्टा ]

— ऊजरी बिलइया के हरिअर पोछि। [ मूली ]

— एक ओर जट तिवारी, दूसरी ओर जटुली।
दुनु जाना में भेंट भइल, लागल चटाचटही। [ केवाड़ी ]

— एक घड़ा में दू रंग पानी। [ अण्डा ]

— एक चिरइया चट, ओकर पाँख दुनु पट।
ओकर खलरा ओदार, लागे मांस मजेदार॥ [ ईख ]

— एक जीव असली, ओकरा हाड़ ना पसली। [ जोंक ]

— एक ठो गगरा, ना तोरा से उठे,
और ना तोरा बाप से उठे। [ कुँआ ]

— एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा,

चारो ओर वह थाली फिरे,
मोती उससे एक न गिरे॥ [ आकाश ]

— एक नगर में दो बादशाह, दोनों छतर धरे,
मैं तुझसे पूछों हे सखी, किस विधि राज करे? [ स्तन ]

— एक नार देखी मैं न्यारी,
अन्दर कपड़ा ऊपर उघारी।
अपने काम की बड़ी सेयानी,
और के हाथ से पीवे पानी॥ [ दावात ]

— एक नारी अचरज करे,
साँप मारि पिंजड़ा में धरे। [ दीपक ]

— एक नारी, पुरुष हैं ढेर,
सबसे मिले एक ही बेर। [ कंघी ]

— एक नारी बहुरंगी, घर से बाहर निकली नंगी।
ओ नारी के इहे सवाल, नीचा नथुनी मुँह पर धार॥ [ तलवार ]

— एक पहलवान के नकवे टेढ़। [ चना ]

— एक पेड़ कसमीरा कुछ लौंग फरे कुछ जीरा,
कुछ काकरि कुछ खीरा। [ महुआ का पेड़ ]

— एक पहलान के पेटवे काटल। [ गेहूँ ]

— एक बाटे फेंड़, ओपर ओखरि अनेर। [ कटहल का पेड़ ]

— एक बित्ता के नाइले, सउँसे देह हिलाईले। [ दतुवन ]

— एक मुरगी चलते-चलते थक गैल।
छूरी से टाँग काटिले त फेरु चले लागलै। [ पेन्सिल ]

— एक लड़की अइसन, फुन्सी के बाटे फैसन। [ कटहल फल ]

— एक सजन मोरे दिल को भावे,
जागे मजलिस खड़ा सुनावे।
सोवत जान उठ दौड़े जाग,
ऐ सखी साजन, ना सखी राग॥ [ राग ]

— एक समय में ऐसा देखा बन्दर दूहे गाय,
छाली काट जंगल में फेंके दूध बनारस जाय। [ पासी, ताड़ और ताड़ी ]

— एगो औरत चतुर कहावे,
मूरुख के ना पास बुलावे।
पढ़ल-लिखल जे हाथ लगावे,
खोल-खाल के आप देखावे॥ [ पुस्तक ]

— ऐंठत कान तुरंते रोवे,
ओकर आँसू प्यास बुझावे। [ पानी का नल ]
— ऐसा सबद कहाँ कोई ज्ञानी,
घूँची देख डण्टा फुँफुवानी।
दोनों हाथ से मसोर के धरे,
जे-जे मन में ओ सब करे॥ [ कुम्हार, चाक, मिट्टी का पिण्ड ]
— कटोरा पर कटोरा, बेटा बाप से भी गोरा। [ नारियल ]
— काजर अस कजरारी बेटी, इंगुर के सिंगार।
बइठल बाड़ी पतरी डाढ़ी देखत बा संसार॥ [ जामुन ]
— करिया कमर ऊजर सूत,
जे ना बूझे मेहरी के पूत। [ भैंस और उसका दूध ]
— करिया बिलार ओकर हरियर पोंछ। [ बैंगन ]
— कारी गाय पाछाँ में बाँधल। [ स्त्रियों का जूड़ा ]
— किस में एक अनोखी बात,
मुख कड़ुआ आ मीठी बात। [ खीरा ]
— कुच-कुच करिया कौआ नाहऽ,
बढ़हन बेढ़ब हौआ नाहऽ,
करे नाक से सगरो काम,
बतलाव तूँ एकर नाम॥ [ हाथी ]
— कोठी पर बोले कंगना, झलक जाय अँगना। [ दीपक ]
— कौन सहर आगी लागल कौन सहर सुँआ।
चलु सखी देखन, सोर करे कुँआ। [ हुक्का ]
— खड़ी है, मनभरी है, लाख मोती जड़ी है,
राजा जी के बाग में दोसाला ओढ़े पड़ी है। [ मकई ]
— खर खाए बढ़ जाए, पानी पीए मर जाए। [ आग ]
— खेत में उपजे सब केहू खाए,
घर में उपजे घर बहि जाए। [ फूट ]
— गर्मी में सुख पहुँचावेला और जाड़ में आग।
बिना पाँव के चले बराबर वाह रे सुन्दर भाग। [ पंखा ]
— गोर बदन मुख साँवला बसे नदी के तीर।
पहिले रण में वह लड़े एक नाम दोउ वीर। [ दोनों स्तन ]
— घर घर भैंसी नाथल बा। [ तराजू ]
— घर में बुढ़वा लटकल बा। [ ताला ]

— खड़ा दुआरे अइसन घोड़ा,
जे जे चाहे पेट मरोड़ा। **[ ताला ]**

— चउकी पर बन बइठी रानी,
सिर पर आग बदन पर पानी। **[ मोमबत्ती ]**

— चढ़ल नाक पर, धइलस कान,
बोलऽ जल्दी कउन जवान। **[ चश्मा ]**

— चाँद-सुरुज में भइल लड़ाई, सुकवा आवे तबे छोड़ाई। **[ ताला-चाभी ]**

— चार महीने बहुत चले, आठ महीने थोड़ी;
मीर खुसरो यों कहे, तूँ बूझ पहेली मोरी। **[ पानी की नाली, 'मोरी' ]**

— चार सुग्गा चार रंग, चारो बदरंग।
पिंजड़ा में डाल दिया चारो एक रंग। **[ पान, सुपारी, चूना, कत्था ]**

— चीर दिया, फाड़ दिया, लाल बनाके छोड़ दिया। **[ माथे पर सिन्दूर लगाना ]**

— चुम्मा लेली, हाथे दबवली, जे-जे निकलल से से खइली। **[ आम चूसना ]**

— चुम्मा लेते चिचिआ के उठे। **[ शंख बजाना ]**

— चौंसठ कनिया, चौसठ भतार।
चार चवन्नी, एक भतार॥ **[ रुपया ]**

— छाती फाटल, कपारे घाव।
नीमन घर में ओकर ठाँव॥ **[ शंख ]**

— छाती से छाती लड़े, लड़े छेद से छेद।
घिसिर-घिसिर कइला से निकले चीज सफेद॥ **[ जाँते से गेहूँ पीसना ]**

— छेद में घुसइली, घोड़ा के दौड़इली। **[ सूई-तागा ]**

— छोटकी बबुनिया के नकिए टेढ़। **[ चना ]**

— छोटी चुकी बाड़े फाटल उनकर पेट,
गरीबन के के पूछो, राजा खाले ढेर। **[ गेहूँ ]**

— छोटी मुकी रहनी त भगई पहिरनी,
जब बड़ भइनी तब लंगटे रहनी। **[ बाँस का पेड़ ]**

— जंगल उपजे हाट बिकाय, हिंदू तुरुक सभे मिलि खाय।
नाम लेत में आवे हँसी आधा गदहा आधा खँसी॥ **[ खरबूजा ]**

— जब परदेसी घर में अइलन।
बाँधल आ लटकावल गइलन॥ **[ परदा ]**

— जब मोरे मंदिर में आवे,
सोते मुझको आन जगावे।
पढ़त फिरत विरह का अच्छर,
ऐ सखि साजन, ना सखि मच्छर॥ **[ मच्छर ]**

— जब हम रहनी बारी कुँआरी,
तब हम पहिरनी सोरह सारी।
जब हम भइनी बिअहन जोग,
लोगवा देखे खोलि-खोलि सारी॥ [ भुट्टा ]
— जवान रहली त उज्जर बार।
बुढ़िया भइली त करिया बार। [ भुट्टा ]
— जाते के साथे धक्का मारे,
धीरे धीरे निकले ठोपे-ठोपे चुए। [ बाल्टी द्वारा कुएँ से पानी निकालना ]
— जादू के डंडा हम देखल,
बिना तेल आ बाती।
नाक दबाव लाइट पाव,
भगजोगनी के भाग सराह॥ [ टॉर्च ]
— जाये में दुःख, समाए में सुख। [ चूड़ी पहनना ]
— जे कीनल से पेन्हल ना, जे पेन्हल से देखल ना। [ कफन ]
— झाँझर कुइयाँ रतन के वारी,
बुझिबे त बूझ नात देइब गारी। [ चलनी ]
— टीप से टपाक से कपार काहें फोरले,
रातहिं, विरातिहिं कुजून काहे डोलले। [ महुए का टपकना ]
— ढुकइली घुमइली निकलली त खइली। [ करछुल और खाद्य-सामग्री ]
— ढुनमुन चिरई, बर सुकुमार,
बीच में चीरल, आरी-आरी बार। [ आँख ]
— तनी बड़के भालू मियाँ,
बूढ़-बूढ़ मरद के कान्हा लिया। [ खड़ाऊँ ]
— तनी गो छउड़ी बड़ कहरी,
तनी सा टुंग देहनी सब जहरी। [ मिरचाई ]
— तर मेहा ऊपर खलिहान, तापर खेती करत किसान। [ कुम्हार का चाक ]
— तहरा माई के पेट फूले, हमहीं दबाई ले। [ रोटी पकाना ]
— तोरा अँगना गइलीं त बिना मँगले देलू। [ पीढ़ा ]
— तोरा घर गइलीं खोलि के बइठलीं। [ जूता ]
— थप्पर मारते छींक बोलावे,
रास्ते-पैरे भीख मँगावे। [ खैनी, सुरती ]
— दिन में सोए रात में रोए,
जेतना रोवे ओतना खोवे। [ मोमबत्ती ]

— दुबली पतली गुनभरी, सीस चले निहुराय,
वह नारी जब हाथ में आवें, बिछुड़े दे मिलाय। **[ सूई ]**

— दूध के जान, दही के बच्चा,
सब कोई खाला ओकरा के कच्चा। **[ मक्खन या नेउन ]**

— देखे में गोल-गोल, पीतर के लोटा,
जेना बूझे से बन्दरे के बेटा। **[ बेल ]**

— दौड़ा-दौड़ा मोहि घर आवे,
जो कुछ पावे सो कुछ खावे।
घर पड़ोसिन सब कोई सूता,
ए सखि साजन; ना सखि कुत्ता॥ **[ कुत्ता ]**

— धड़ गइल दुआरी मुँहे, हम कवना मुँहे जाईं। **[ जाल, पानी, मछली ]**

— धूप लगे पर सूखे नाहीं, छाँह लेग कुम्हिलाय।
तुमसे पूछो ए सखी, पवन लगे मरी जाय॥ **[ पसीना ]**

— नया जमाना के हम बच्चा,
एक कान से हम हइ कच्चा।
तू जवना कहब एही पार,
पहुँचाएब हम ओही पार॥ **[ टेलीफोन ]**

— नाक पर चढ़े आ पकड़े कान,
बतावऽ ये बाबू ई कवन जवान। **[ चश्मा ]**

— अलबेली ऊ सुन्नर नार,
बहुत करे बुढ़वन से प्यार।
बिना माथ ऊ नयन नचावे,
जे देखे ऊ नाक चढ़ावे॥ **[ चश्मा ]**

— नाथल थरिया घर-घर घूमे। **[ तराजू ]**

— नाव करे ढक-ढक नदी घोंघिआय,
केवला के पात पर सोना उतराय। **[ मक्खन ]**

— नीचे पतला ऊपर चौड़ा, ई मत जानऽ नारी हऽ,
टाँग उठाके डाल दिया, ई मत जानऽ गारी हऽ। **[ पाजामा ]**

— पंख बिना उड़ रहल अकेला,
बाँध गला में डोर।
बतलाव चिरई के नाम,
जे नापे अम्बर के छोर॥ **[ पतंग ]**

— पण्डित! पण्डित! बूझऽ बात,
रात भर में तीनो जनमे-
बाप, बेटा अवरु नात। [ दही, घी, मट्ठा ]
— पान अइसन पातर, चाँद अइसन चकता [ पापड़ ]
— पीअर सुराही लम्बा घेंट,
मोती भरल ओकर पेट। [ अनार ]
— पैर बिना ऊपर चढ़े, बिन मुख भोजन खाय,
एक अचम्भा देखल भाई, जल पीए मरिजाय। [ आग ]
— फरे ना फुलाय, भर ढाका तुराय। [ पान-पत्ता ]
— फाटल पेट दरिद्री नाम, उत्तम घर में वाको ठाम,
श्री को अनुज, विष्णु को सारो, पण्डित होय तऽ अरथ बिचारो। [ शंख ]
— बन में रहली, बन फल खइली,
बन में भइल बियाह।
अइसन पुरुष का पाले परलीं,
पीठी लागल सेवार॥ [ नाव ]
— बन में बछरू डँकरत बा, केहू धरे ना। [ शेर ]
— बन में ओखर टाँगल बा। [ कटहल का फल ]
— बन में गोजी फेंकल बा। [ साँप ]
— बन में बरहा बिगल बा। [ साँप ]
— बाट चलत मोर अँचरा गहे,
मोरे सुने न आपन कहे।
अस एहवात का झगड़ा छोटा,
ऐ सखी साजन, ना सखी काँटा। [ काँटा ]
— बाते-चीते कब से, जब बहियाँ धइलस तब से,
आँय-उँय कब से, जब आधा गइल तब से,
नीक लगुए कब से जब सेंउसे गउए तब से। [ चूड़ी पहनना ]
— बाप जनमही के रहले,
पूत पिछुआरे गइले। [ धुँआ ]
— बाप गरम बेटा ठण्ढ, पोता चिक्कन छह-छह। [ दूध, दही एवं घी ]
— बारह निंबो, सोलह बेल,
एकइस कटहल, एके पेड़। [ स्त्री ]
— बोल ना हम तऽ पाइले,
अउर ना कुछ सुन पाइले।

आँखों नइखे आन्हर बानी,
सभके राह देखाइले। [ ग्रन्थ ]

— बीच ताल में बसे तिवारी,
बे कुंजी के लगे किवाड़ी। [ घोंघा ]

— बीसों के सिर कट गइल,
ना मुअल ना खून भइल। [ नाखून ]

— बोलवला पर बोले ना, मरला पर उड़े। [ फुटबाल ]

— मथनपुर के राजा चिटुक पुर धरइले।
तरहथी पुर बिचार भइल नोहपुर मरइले॥ [ जूआँ ]

— ममोर के डालीले, लेहुआ के निकाली ले। [ पान खाना ]

— माथ पर मोटरी, चूतड़ में लकड़ी। [ चूल्हा ]

— मुसलमान के दुलारा, हिन्दू टाँग धर के चिआरा। [ दातौन ]

— मुँहवा से निकसी त चारु ओर फैली,
कुलि देहिया छोड़ि के, कनवे के पकड़ी। [ कड़वी बात ]

— मूअल भइसा सोंय-सोंय करे। [ भाथी ]

— मेरे घर में छोटी रानी, ना खाली ना पीए ली,
बइठल बइठल एक जगह से नीमन गीत सुनावेली। [ रेडियो ]

— बिना पैर के बिना हाथ के, कहीं ना आना-जाना,
दूर-दूर दुख दरद बटोरे सबके रोज सुनाना। [ रेडियो ]

— बेजुबान फिर भी ऊ बोले, सारी दुनिया के दिल खोले।
बा निर्जीव सजीवे जानऽ बोलऽ बोलऽ काहऽ जान॥ [ रेडियो ]

— राजा के बेटा नबाबे के नाती, सौ गज कपड़ा के बान्हेला गाँती। [ प्याज ]

— लाल छड़ी भूईं में गाड़ी। [ गाजर ]

— लाल गाय खर खाय,
पानी पीए मर जाय। [ आग ]

— लाल ढकना, टहकार ढकना,
खोल खिड़की पहुँचाव पटना। [ लेटरबॉक्स ]

— वह फल कवन बिन बोअले बढ़ जाय,
बढ़त-बढ़त एतना बढ़े आखिर में ढल जाय। [ स्तन ]

— सगरे गाँव में एके ढेला। [ सूरज ]

— सब कोई चल गइल, बुढ़वा लटक गइल। [ ताला बन्द करना ]

— साँझ के पैदा भइल, अधरतिया जवान,
होत सबेरा मर गइल, घरवा भइल मसान। [ ओस ]

— सावन फरे चैत गदराय, ताकर फर सुग्गा ना खाय। [ बबूल ]

— सिर पर आग बदन में पानी। [ हुक्का ]

— सोने के सामपियारी, सोने के पिंजड़ा,
उड़ गइली साम पियारी, पड़ल बाटे पिंजड़ा। [ प्राण ]

— हती बुटी गाजी मियाँ, लम्बा बा पोंछ,
भागल जाले गाजी मियाँ, खदेरेला पोंछ। [ सूई-धागा ]

— हमर बाबा के नौ सौ गाय,
रात चरे दिन कहाँ समाय। [ तारे ]

— हरदी के गादगुद पीतरे के लोटा,
ई बुझउअल बूझे ना त बनरे के बेटा। [ बेल ]

— हाथ-गोड़ लकड़ी पेट खदहा,
जे न बूझे ओकर बाप गदहा। [ नाव ]

— हाथ न गोर, पाँव न पेटी,
घर-घर घूमे केकर बेटी।
जेकरा घर में ई बसेली,
तेकर जान सस्ते ले ली। [ चिन्ता ]

— हाथ नाँही पैर नाँही आउर न रेखा,
आदमी के के कहे, दैवो न देखा। [ भूत-बैताल ]

— हाथ पकड़ते आँह-ऊँह,
आधा गइल बड़ दुख भइल,
समूचा गइल बड़ सुख भइल। [ चूड़ी पहनना या पहनाना ]

— हाथ में हरा, मुँह में लाल। [ पान का बीड़ा ]

— हाथे लेके खूब घुमइली,
आँधी आयल खूब जुड़इली। [ ताड़ का पंखा ]

●

परिशिष्ट - IV

# नारा और कहावत

'मोका के बतकही' जैसे स्तम्भ में भोजपुरीरत्न सम्पादक हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जी ने लिखा—

नारा गढ़ल जाला, कहाउत गढ़ल-पढ़ल-सुनल रहेला। नारा लगावल जाला, कहाउत कहल जाला। नारा जंगल में भीड़ हऽ, कहाउत चमन के कोठी। नारा सम्प्रसारन हऽ, कहाउत उदाहरन। नारा रौद्र के क्रान्ति अहंकार हऽ, कहाउत शान्त के दृष्टान्त अलंकार। नारा खीझ, आवेश अउर उत्साह भरेला, कहाउत हास्य अउर आनन्द परगट करेला। नारा द्वैतवाद (पच्छ-विपच्छ) हऽ, कहाउत विशिष्टाद्वैत (पच्छ-विपच्छ अउर तटस्थ)। नारा पच्छपात करेला, कहाउत बिलकुल तटस्थ आ कूटस्थ रहेला। नारा लगाए वाला सवारथी होलन, कहाउत कहनिहार परारथी। नाग्रा अपने मुँह मियाँ मिट्ठू अउर पक्ष के टट्टू, बाकिर कहाउत के कवनो पक्ष ना होले, खाली मुँहफट्टू। तीर दूनो चलावेला— नारा उकसावेला, कहाउत पछतावेला।

नारा अउर कहाउत—दूनो बखी हऽ, बाकिर नारा बुलबुला के तरह असत्, कहाउत इतिहास-अनुभव से सिद्ध सत्। नारा झूठ के सहारा लेला, कहाउत साँच के। नारा रास्ता फेर देवे खातिर दियाला, बाकिर कहाउत रास्ता पर ठीक से चले खातिर कहल जाला। नारा दुश्मन के प्रहार हऽ, कहाउत गुरुजन के। नारा घिरिना अउर द्वेस से बनल बीख हऽ, कहाउत नीति के सीख आ रोगी के अउसध। कहाउत अप्रियो होके कलयान करेला, बाकिर नारा प्रियो होके घिरिना भरेला। नारा आगि लगा देला, कहाउत ठंडा कर देला। नारा नगाड़ा हऽ, कहाउत सहनाई। नारा महाभारत हऽ, कहाउत भगवद्‌गीता। नारा संहार वास्ते प्रचार हऽ, कहाउत आचार खातिर विचार। एह परिभाषा के साथे-साथ लोगन के नारा बा—

आहि बाप! ई का हो गइल!

एकरा पर भोजपुरी के कुछ कहावत—

1. बजर गिर पड़ल।
2. सरग टूट गइल।
3. समुन्दर सोखा गइल।
4. पानी में आगि लागि गइल।
5. बेंग तौला गइलन सँ।

6. सुरुज पुरुब से पच्छिम उगि गइलन।
7. चिरई समुन्दर उबीछ देलस।
8. अगस्त मुनि समुन्दर पी गइलन।
9. बौना सरग छू लेलस।
10. बालू से तेल निकल गइल।
11. पानी से घीव बन गइल।
12. आलू से भीत उठि गइल।
13. तरहथी प बार उगि आइल।
14. राई से पहाड़ खड़ा हो गइल।
15. मुसुरी पहाड़ खोद देलस।
16. तिल से ताड़ बन गइल।
17. राजा से रंक, अउर रंक से राजा।
18. एड़ी अलगा के बराबर हो गइल।
19. टिटिहिरी टाँग उठा के सरग रोक देलस।
20. संग लागल लँगड़ी देवाल फानि गइल।
21. काल्हु के बनिया, आजु के सेठ।
22. का सुनाइ फिरु काइ दिखाइ।
23. जस करनी तस भोगहुँ ताता।
24. जइसन करनी, ओइसन भरनी।
25. अपना मन कछु और है, करता के कुछ और।
26. उघरहि अन्त न होंहि निबाहू।
27. अझब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल।
28. दूध के दूध, पानी के पानी।
29. अगिली भइलि पछिली, पछिली भइलि अगिली।
30. घरअवलू बर तर, बरअवलू घर तर।
31. ईश्वर के माया, कहीं धूप कहीं छाया।
32. अब पछताये होत का चिरई चुग गइल खेत।
33. जइसन नीयत, ओइसन बरक्कत।
34. जनम भर के कमाई, एके दिन में गँवाई।
35. दोसरा पर जे ढेला चलावे, अपना पर बज्जर गिरावे।
36. शंख बाजल, बाकिर पाँड़े पँड़ाइन के रोवा के।
37. धोवल-धावल भँइस लेवाड़ माँज देलस।
38. अच्छा घर में बायन देलू।

39. आखिरी बार, बेड़ा पार।
40. कबहीं गाड़ी पर नाव, कबहीं नाव पर गाड़ी।
41. कहाँ के मूस, कहाँ के मुसकइल कवन बेयार बहल कि एक ठाँव भइल ?
42. का कहीं करम के बात, बकरी मरलस फान के लात।
43. गज भर ना फरलस, बाकिर थान भर हरलस।
44. घर के भेदिया लंका डाहे।
45. घर फूटे गँवार लूटे।
46. गा-बजाके ले लेलस।
47. छल-छल कइलीं, पूआ पकवलीं सेहू पुआ खाये ना पवलीं।
48. अतिशय लोभ बकुलवे कीन्हा, छन में प्रान कैंकड़वे लीन्हा।
49. शोख बिटियबा, बरे के आँखि फोरे।
50. प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।
51. धरमो गइल, तुम्मो फूटल।
52. कोख खातिर गइलीं, माँगो गँवा अइलीं।
53. नफा खातिर धवलू, मूर वो गँववलू।
54. देवघर गइले, दूना दुख ।
55. जबले रहल लाल लूगा, तबले रहली कनिया, लाल लुगा फाटि गइल, हो गइली पुरनिया।
56. दुनियाँ हऽ धोखा के टट्टी, सटी तऽ सटी, हटी तऽ हटी।
57. छड़ी लागे चट, विद्या आवे झट।
58. बूड़ल बंस कबीर के, जे जमले पूत कमाल।
59. जे दिन पूता पण्डित भइले, सभ जजिमान सरग चलि गइले।
60. एक त बबुआ अपने गोर, दोसरे अइले कम्मर ओढ़।
61. जव के साथे घुनो पिसाइल।
62. खेत खइलस गदहा, मारल गइल जोलहा।
63. परले राम कुकुर के पाला, घीचघाँच के ले गइल खाला।
64. खेल भइल खतम, पइसा भइल हजम।

●

परिशिष्ट - V

# पर्यायवाची शब्द

अंगड़-खंगड़ — अगड़म-बगड़म, कूड़ा-कर्कट, फालतू।
अंड-बंड — अंटशंट, अटपटा, अनर्गल, बेतुका।
अँधेरा — अन्धकार, तिमिर, अँधेरा-घुप।
अक्खड़ — उजड्ड, गँवार, बड़बोला, मुँहफट।
अखाड़ा — मल्लशाला, मल्लभूमि।
अगराइल — इतराइल, धधाइल, चोन्हाइल, उखमँजल।
अगिला — आवे वाला, बाद वाला, भावी।
अघाइल — खूब छक के खाइल, तृप्त भइल।
अच्छा — उत्तम, उम्दा, नीक, बढ़िया।
अड्डा — ठिया, डेरा, ठौर।
अदद — ठो, दाना।
अधिका — ढेर, बेसी, सबराह, बटोराह, डबलाह, निकहा।
आन्ही — आँधी, झक्कड़, तूफान, बउखी।
आफत — आपद, संकट, विपद्।
आँख — आँखी, अँखिया, नजर, नयन, निगाह, नेत्र।
आर — डड़ेड़, डड़ार, डाड़, मेंड़, मेंढ़ी, गेड़ी, पगार।
उमस — अउँस, उखम, अउल, हउलस गुमस।
ऊसर — बंजर, पड़ती।
ऐंठन — बल, मरोड़।
और — आ, तथा, आउर।
कंजूस — ठस, सूम।
कमीना — नीच, हीन, खोटा।
काना — एकाक्ष, कनौड़ा।
काबू — बल, बूता, तागद, परभूता।
कुइयाँ — इनार, कुआँ, कूप।
खटिया — खाट, चरपाई, खटोला, पटिहट।
खरीद — कीन, बेसाह, खरीदल।
खँखरी — पइया, पचकोइयाँ, पितुहा, खोंखड़ी, भोभड़, ढेंढर।

| | | |
|---|---|---|
| खम्भा | — | खम्हा, थूनी। |
| गरदन | — | घेंट, नट्टी, गला, नरेटी। |
| गुह | — | हगल, दिसा, मैदान, फराकित, झाड़ा, मइला, लेंड़। |
| गोड़ | — | टाँग, पैर, चरन। |
| गोद | — | अँकवार, गोदी, अंग। |
| गोदाम | — | कोठार, भण्डार, गोडाउन। |
| गोरा | — | गौर, गौरवर्ण। |
| गोहरा | — | उपला, कण्डा, कण्डी, चिपरी, थपड़ी। |
| ग्वाला | — | गोप, गोपाल, अहीर। |
| घइला | — | हाँड़ी, नादी, गगरी, मेटा, कूँड़ा, बेहुड़ी, चरूई। |
| घास | — | हरिअरी, दूभ, दूभी। |
| चनरमा | — | चाँद, चन्ना, चान। |
| चिरई | — | पखेरू, पंछी। |
| चेथरा | — | चिथड़ा, चिरकुट, लत्ता। |
| चंगेली | — | खाँची, दउरी, ओड़ी, डाला, डगरा। |
| छड़ी | — | छेंउकी, सटका, डण्टा, गोजी, पैना, सोंटा। |
| छप्पर | — | छान्ह, छान्ही। |
| जंगली | — | वन्य, बनैला, बर्बर। |
| जनता | — | प्रजा, लोग, सर्वसाधारण। |
| जल | — | नीर, पानी, सलिल, वारि। |
| जवानी | — | यौवन, तरुणाई, युवाकाल। |
| जादू-टोना | — | ओझाई, मंत्र-तंत्र, झाड़-फूँक। |
| जूता | — | बूट, पनही, चरणपादुका। |
| जेब | — | खलीता, पॉकेट। |
| जोर | — | डोरी, बरहा, जवर, डोर। |
| टाँग | — | टँगड़ी, लात। |
| टीस | — | चिनक, चमक, चिलक, टपक। |
| ठहाका | — | अट्टहास, खीखी, प्रहास, हाहा-हीही। |
| डंटा | — | पैना, सोंटा, लबेदा। |
| तंबू | — | खेमा, चँदवा, छोलदारी। |
| ताखा | — | आला, गवाक्ष। |
| तीखा | — | तीव्र, तीक्ष्ण, पैना, कड़वा। |
| थाना | — | चौकी, नाका। |

थूथन — थोबड़ा, नथुना।

थोथा — फीका, खोखला, सारहीन।

दरार — दराज, फाँक।

दीआ — दिअरी, डिबिया।

दूर — लमहरा, पाला।

धक्कम-धक्का — धक्कामुक्की, ठेलपेल, रेलपेल।

धमकी — घुड़की, धौंस, भभकी।

धूल — खाक, गरदा, धूलि, मिट्टी।

धोखा — चकमा, चरका, छलछन्द, झाँसा, दगाबाजी।

नखोरल — नकोटल, नकोचल, बकोटल, खँखोरल, ओकाचल।

नगीच — निअरा, नगीचा, भीरी, लगे।

पनपियाव — जलखई, कलेवा, खर-मिटाव।

पूरा — सउँसे, सारा, समूचा, सभ, कुल्ह, मय।

पाँकी — पाक, हाँचाड़, हाँच, कदई, कादो, कनई, लेब, लेवाड़, हील, हाँपाड़।

बकलोल — बउराह, बकचोन्हर, चोन्हर, चउपट, बोका, बमड़, भोद्दा।

बकरी — छेरी, पठरू, पाठी, छकरी।

बाछा — बछरू, लेरू, बछड़ा।

बस्तर — कपड़ा, वस्त्र।

बादल — मेघ, घटा, बदरी।

बिजली — बिजुरी, लवका।

बेआर — बतास, हवा।

बिहान — भोर, फजीरे, तड़के, झुल्फलाहे, अनगुत्ते।

बिदकल — बिजुकल, पिनकल, टिहुकल, तरकल, भड़कल, झनकल।

बबुनी — बबुई, बुचिया, बुची, बाची, बुचुनी।

बालम — बलमुआ, सइयाँ, मरद, भतार, साजन, मलिकार, घरवाला, पिया, रजऊ, ललन।

बेटा — पूत, लइका, लरिका, छँवड़ा।

बेटी — धीया, लइकी, छँउड़ी, लड़की।

भंडार — खजाना, मालघर, मालगोदाम।

भँड़ैती — मसखरी, ठिठोलियापन।

भवन — अटारी, इमारत, कोठी, हवेली।

भाँड़ — जोकर, नक्काल, बहुरूपिया, विदूषक।

| | | |
|---|---|---|
| भाई | — | बन्धु, भइया, भैया, भ्राता। |
| भिखारी | — | फकीर, भिक्षार्थी, भिखमंगा, याचक। |
| मंतरी | — | दीवान, वजीर, सचिव, सलाहकार। |
| मंदिर | — | देवस्थान, देवालय, धाम, उपासना-गृह। |
| मकान | — | घर, भवन, इमारत, हवेली। |
| मछरी | — | मछली, मीन। |
| मजाक | — | गाभी, गभिया, ताना, टोन, दिल्लगी। |
| रोग | — | अलाप-बलाप, बीमारी, मरज। |
| लंगा | — | लखैरा, लहेंड़ा, लफुआ, लुच्चा, आबाटी, राड़, लुहेड़ा, चाई, हुण्ड, लफन्दर, बेहाया। |
| लहकल | — | दहकल, दवँकल, तातल, तवँकल, धीकल, गरम। |
| लाठी | — | लउर, डण्टा, हूँरा, गोजी, सोंटा, बोंग, ठेघुँरी, पटकन। |
| विवाह | — | ब्याह, शादी, निकाह। |
| वेतन | — | तनखाह, सैलरी, मजदूरी, दिहाड़ी। |
| शरम | — | झेंप, मुँहचोरी, लाज, शर्मिन्दा। |
| शव | — | मुर्दा, मृतशरीर, मिटट्ी, लाश। |
| शिव | — | उमापति, कपाली, काशीनाथ, महेश्वर। |
| शुभ | — | मंगलकारी, मांगलिक। |
| संत | — | धर्मात्मा, मुनि, महात्मा, सिद्ध। |
| संसार | — | जग, जगत्, जहान, भुवन, लोक। |
| सखी | — | आली, दोस्त, गुइयाँ, सहचरी। |
| सजनी | — | गोरिया, रनिया, धनिया, पतुरिया, जानी। |
| सुरज | — | सुरुज, गोसाईं, आदित, दीनानाथ। |
| सामने | — | सोझा, सरोखा। |
| सुघर | — | नीक, नीमन, आछा, बढ़िया, भल, लुरगर। |
| साँझ | — | मुन्हार, गदबेर, गदबेरा, साँझी। |
| हँसी | — | मुस्कान, खिलखिलाहट, चकल्लस, ठिठोली। |
| हाथ | — | हस्त, दस्त, पाणि, कर। |
| होली | — | फाग, होलिका। |

●

परिशिष्ट - VI

# विलोम शब्द

अंदर — बाहर
अंधेरा — उजाला
अँजोरिया — अन्हरिया
अगाड़ी — पिछुआरी
अगिला — पिछला
अगुआर — पिछुआर
अच्छा — बुरा, बाउर
अझुराइल — सझुराइल
अधवाड़ — सउँसे
अनाथ — सनाथ
अपनाइत — दोसराइत
अबर — जबर
अमनिआ — जूठ
अमरित — माहुर
असली — नकली
आइल — गइल
आकास — पाताल
आगा — पाछा
आगे — पीछे
आज — काल्ह, बिहान
आजादी — गुलामी
आत्मा — परमात्मा
आदर — कुआदर
आदि — अन्त
आधा — पूरा
आपन — अनकर
आमद — खरच
इमरित — माहूर

इयाद — भोर
इयार — मुदई
इरखा — बेइरखा
ईमानदार — बेईमान
उजबक — चालाक
उज्जर — करिआ
उत्तिम — नीच
उभर — खाभर
उल्झल — सुल्झल
उल्टा — सीधा
उलार — दाब
ऊँच — नीच
ऊढुक — समतल
ऊसर — उपजाऊ
एक — अनेक
एकट्ठे — अलगे
एकता — अनेकता
एड़ी — चोटी
एहवात — मुस्मात
ओरचन — सिरहाना
ओरिआनी — बँड़ेरी
ओलार — दाब
औकात — बेअवकात
कंजूस — शाहखर्च, लुटाएवाला
कठिन — आसान, हलुक
कठेस — गील
कड़वा — मीठ
कपटी — सरल, सीधा

| | | |
|---|---|---|
| कपसल | — | निधड़क |
| कमी | — | बेसी |
| करिआ | — | गोर, उज्जर |
| कलमी | — | बीजू |
| कहल | — | अनकहल |
| काँच | — | पाकल |
| कायर | — | साहसी |
| कीनल | — | बेंचल |
| कुलबोरन | — | कुलउबारन |
| कुरूप | — | सुन्दर |
| कोप | — | किरपा |
| कोमल | — | कठोर |
| कोरा | — | अँवासल, पेन्हल |
| खखनल | — | मनभरल |
| खपसूरत | — | भेंभर |
| खरकटल | — | फूलल |
| खुदरा | — | थोक |
| खूबसूरत | — | बदसूरत |
| खूबी | — | खराबी, पय |
| गँझिन | — | फाँफर |
| गँहीर | — | छिछला, उथल |
| गइल | — | आइल |
| गदबेर | — | सबेर |
| गलीज | — | साफ |
| गाँव | — | शहर |
| गाढ़ | — | पातर |
| गामा | — | देहदूबर |
| गिरहथ | — | साधु |
| गिहिथिन | — | फूहर, बेलूरा |
| गुमसल | — | छेहर |
| घरजनवा | — | समहरिया |
| घरेया | — | बाहरी |
| घाट | — | कुघाट |
| घाटा | — | नाफा |
| घाम | — | छाँह |
| घिरना | — | परेम, प्रेम |
| चढ़ल | — | उतरल, गिरल |
| चमकल | — | मधिम |
| चर | — | अचर |
| चरफर | — | धीमर, सान्त |
| चल | — | अचल |
| चहेटल | — | भागल |
| चालबाज | — | सीधा |
| चालाक | — | बुरबक |
| चास | — | दोखार |
| चिचिआइल | — | चुप रहल |
| चीखल | — | बेचीखल |
| चीत | — | पट |
| चीन्हल | — | बेचीन्हल |
| चीन्हार | — | अनचीन्हार |
| चेतल | — | अनचेतल |
| चोर | — | साधु |
| छउकल | — | अस्थिर |
| छकल | — | छकावल |
| छरछर | — | गाढ़, मोट |
| छलिया | — | बिस्वासी |
| छाँह | — | घाम |
| छारन | — | नाया, कोरा |
| छिछला | — | गहीर |
| छितराइल | — | समेटाइल |
| छिलुही | — | सजाव |
| छूत | — | अछूत |
| छेंउकी | — | सोंटा |
| जगरम | — | सूतल |
| जड़बल | — | घमाइल |
| जब्बर | — | अब्बर |

जल्दी — देरी, विलम्ब
जवरे — अलगे
जवारी — बाहरी
जस — अपजस
जागल — सूतल
जाड़ा — गरमी
जात — कुजात
जाबल — खुलल
जाम — खुला
जिअतार — मुअतार
जिनिगी — मउअत
जीअत — मुअत
जीअल — मुअल
जुआइल — मोलायम
जेठ — छोट
जोड़ — घटाव
झमरल — फुहिआइल
झाँझर — गँझिन
टएट — झुकल, मोलायम, गुलगुल
टटका — बसिआ
टहकार — मधिम
टाँठ — मधिम
टीपल — बेटीपल
टीहुली — खुशामद
ठमलक — बढ़ल
ठसक — नेवर
ठाँव — कुठाँव
ठोस — खँखर, तरल
तँवाइल — सुस्ताइल
तातल — सेराइल
तारक — मारक
तीत — मीठ
तेज — मन्द
तोपल — उघारल
थऊँसल — फइलल
थथमाइल — फरहर
थोक — खुदरा
थोड़ — ढेर
थोपल — अँगेजल
दक्खिन — उत्तर
दब्बू — दबंग
दहार — सुखार
दानी — कंजर, सोम
दाब — उलार
दिन — कुदिन, रात
दिहल — लिहल
देव — दानव
धँसल — उठल
धनिक — गरीब
धरम — अधरम
धाकर — मुँहचोर
धार — भोथ
धीआ — पूता
नगद — उधार
नफा — नुकसान
ना — हँ
नामी — बेनामी
नियरा — लमहरा
नीक — बाउर
नीच — ऊँच
नीमन — बाउर
नुनगर — फींका
नेवर — टेंटिहा, टएट
पंडित — मूर्ख

पछुआ — पुरबइया
पढ़ल — बेपढ़ल
पद — बेपद
पनिगर — धीमर
परचित — अपरिचित
परदा — बेपरदा
पहिले — पाछे
पातर — मोट
पानी — बेपानी, आगी
पाप — पुन्न
पापी — धर्मी
पाला — गरम
पिछुआ — फुफुती
पुरान — नया
पेटकुनिया — चितान
फइल — कोताह, कोत, सकेत
फइलल — सिकुरल
फफराह — सकेता
फफाइल — अस्थिर
फरिछ — अंहारा
फाड़ल — सीअल
फुलाइल — कुम्हलाइल, मउराइल
बचपन — बुढ़ारी
बटोराइल — छितराइल
बड़का — छोटका
बड़ाई — हिनाई
बनल — बिगड़ल
बरल — बुताइल
बसगित — उदबास
बसावल — उजाड़ल
बांड़ — बिअहल
बाउर — नीमन
बागर — चल्हाक
बाढ़ — सुखाड़
बिअही — रखेलिन
बिआहल — कुँआर
बेटहा — बेटिहा
बेर — अबेर
भगवान — शैतान
भरल — खाली
भल — बाउर
भला — बुरा
भांड़ल — सरिआवल
भाई — मुदई
भाव — बेभाव, अभाव
भीतर — बाहर
भोगल — बेभोगल
मंगल — अमंगल
मउगा — मरद
मजगूत — कमजोर
मन — बेमन
मनभरू — खखाइल
मयगर — कठकरेज
मरद — निमरद
मरल — जीअल
माट्ठा — सजाव
माता — पिता
मान — अपमान
मामूली — कीमती, बेशकीमती
मालिक — नौकर
मिलल — बिछुड़ल
मोट — पातर
रकटल — मनभरू
रत — विरत
रतवाही — दिनचारी
रात — दिन

रीत — अनरीत
रीतल — भरल
रोपल — उखाड़ल
लकम — बेलकम
लगाइत — बेलगाइत
लगे — लमहरा
लमहर — छोट, नान्ह
लरम — गरम
ललछहूँ — पीअरहूँ
लाभ — हानि
लाल — पीअर
लालच — सन्तोष
लोक — परलोक
सगुन — अपसगुन
सतवन्ती — बेसवा
सन्मत — फुटमत
सपूत — कपूत
सभतर — एकजगहा
समय — कुसमय
सरग — नरक
सरद — गरम
सलज्ज — निर्लज्ज
सस्ता — महँगा
सहज — असहज
सही — गलत
साँझे — सबेरे
सुखद — दुःखद
सुखल — हरिअर
सुतार — कुतार
सुदिन — दुर्दिन
सुधा — मरखाह
सुन्नर — बदसूरत
सुपातर — कुपातर
सुबहित — कठिन
सुसुम — ठण्ढा
सुस्त — तेज
सूथर — कुरूप
सेयान — लइका
सोग — खुशी
सोगहग — खाँड़ा
सोझ — टेढ़
सोझा — पीछा, पिछुआरा
सोभग — सोंढ़
हड़बड़ — अस्थिर
हया — बेहया
हरख — बिसाद
हलुक — दमगर
हानि — लाभ
हित — अनहित, अहित
होनी — अनहोनी

## डॉ० अर्जुन तिवारी

**शिक्षा :** एम०ए०, पी-एच०डी०। हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास पर ऐतिहासिक शोधकार्य।

**अध्यापन-अनुभव :** पत्रकारिता एवं साहित्य का पी०जी० कक्षाओं में 34 वर्षों तक अध्यापन। काशी विद्यापीठ, पत्रकारिता विभागाध्यक्ष से सेवानिवृत्त।

**पुरस्कार :** उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सन् 1988 में अनुशंसित व सन् 1991 तथा सन् 1999 में नामित पुरस्कार से पुरस्कृत , दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा कर्नाटक द्वारा हिन्दी की विशिष्ट सेवा हेतु 1993 में सम्मान पदक से अलंकृत, बाबूराव विष्णु पराड़कर नामित पुरस्कार से तीन बार अलंकृत। राहुल सांकृत्यायन नामित पुरस्कार 2015।

**सम्पादन :** 'शाश्वत शिक्षाशास्त्र' एवं 'काशी विद्यापीठ कौस्तुभ गौरव ग्रन्थ', 'रामेश्वर टांटिया रचनावली'। व 'काका के बतकही' (भोजपुरी) स्तम्भ लेखन।

**प्रकाशित ग्रन्थ :** स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता; आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार; सम्पूर्ण पत्रकारिता; आधुनिक पत्रकारिता; जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यवहार; जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता; हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास; इतिहास निर्माता पत्रकार; कृषि ग्रामीण विकास पत्रकारिता; हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना; ब्रह्मर्षि देवराहा दर्शन; भोजपुरी साहित्य के इतिहास; भोजपुरी - हिन्दी - अंग्रेजी त्रिभाषी शब्दकोश; भोजपुरी - हिन्दी शब्दकोश; राष्ट्रपिता की पत्रकारिता, पराड़करजी : एक जीवनी; मीडिया समग्र आदि।

**हिन्दी प्रोत्साहन विशेषज्ञ समिति :** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू०जी०सी०) द्वारा गठित उच्च शिक्षा में हिन्दी प्रोत्साहन विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष मनोनीत। अध्यक्ष के रूप में अपनी सक्रियता से 16 विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग की स्थापना।

**स्थायी पता:** निदेशक, काशी पत्रकारिता पीठ, एन० 10/29 के०-1, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी-221106, मो० : 8765628058
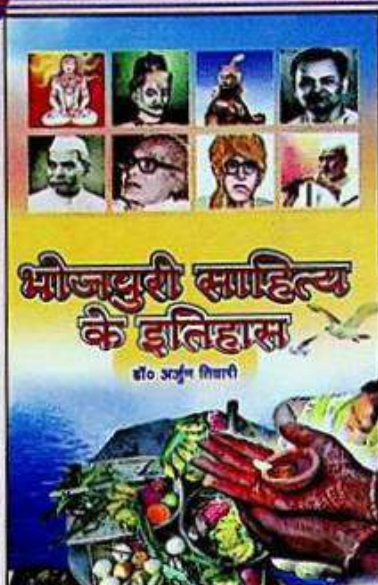
डॉ० अर्जुन तिवारी की
महत्त्वपूर्ण कृति
प्रथम बार 'भोजपुरी भाषा' में प्रस्तुत

# भोजपुरी साहित्य के इतिहास

"...Bhojpuri is the practical language of an energetic race..."
"The Bengali and the Bhojpuri are two of the great civilisers of Hindostan, the former with his pen and the latter with his cudgel."
—Grierson - Linguistic Survey of India

"...ऊहो दिनवा आई जब हमनी के मतारी भाखा सरताज बनी।"
— राहुल सांकृत्यायन

'**भोजपुरी साहित्य के इतिहास**' में डॉ० अर्जुन तिवारी लिखले बाड़े—'जन-जन के संस्कृति-सभ्यता के लमहर परम्परा होला, जवना के चूर में चूर मिला के जब साहित्य के साथे ताल-मेल बइठावल जाला त उहे इतिहास ह। भोजपुरी माई, माटी आ मनई के चित्त, चिन्तन आ चेतना में हो रहल परिवर्तन के साथे-साथ साहित्य में समसामयिक क्रमिक बदलाव के दस्तावेज के भोजपुरी साहित्य के इतिहास कहेके चाहीं।'

गुरु गोरखनाथ, संत कबीर, बाबू कुँवर सिंह, फतेह बहादुर शाही आ मंगल पाण्डेय के क्रांतिकारी भूभाग में राहुल बाबा, महेन्दर मिसिर, आचार्य महेन्द्र शास्त्री, भिखारी ठाकुर, रघुवीर नारायण, रामविचार पाण्डेय, प्रसिद्ध नारायण सिंह, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, रामेश्वर सिंह कश्यप जइसन सौ से अधिक अमर साहित्यकार भइले जेकर गरिमा के सांगोपांग रेखांकन एह ग्रंथ में बा।

**—डॉ० मैनेजर पाण्डेय, समालोचक**

*इनके 'भोजपुरी के रामचन्द्र शुक्ल' कहला, लिखला में हमरा सात्त्विक आनन्द मिलता।*

***—अरुणेश नीरन***

विश्वविद्यालय प्रकाशन
पो०बॉ० 1149, विशालाक्षी भवन,
चौक, वाराणसी - 221001
*Phone & Fax* : (0542) 2413741, 2413082
*e-mail* : sales@vvpbooks.com

₹750.00
ISBN:978-93-87643-11-6
9 789387 643116
www.vvpbooks.com